महाभारत।

आदिपर्व।

गजमुख सुखकर दुखहरण, तोहिं कहौं शिर नाय।
कीजै यश लीजै विनय, दीजै ग्रन्थ बनाय॥
जगदीश्वरको धन्य जिन, उपजायो संसार।
छिति जल नभ पावक पवन, करि इनको विस्तार॥
नृपहि दास दासहि नृपति, पवि तृण तृणहिं पषान।
जलधि अवनि मरु सरहि, उदधि करै भगवान॥

हिं आदि पुरुषको ध्यावों। जा प्रसाद शिक्षा सब पावों॥
परम अखण्डित रूपा। है सर्वोत्तम रूप अनूपा॥
इच्छाधर सञ्चारा। जाते देखत सब संसारा॥
जरमय छप्य असङ्गा। परम पुरुषकर रूप अनङ्गा॥
सर्वज्ञ लेप निर्लेपा। ता महिमा को कह संक्षेपा॥
नाम तरत संसारा। जासु नाम दुख शोक संहारा॥

क ब्रह्मते अगनित रङ्गा। ...
...ा माया सब देवता भयऊ। गुण निर्गुण ...
...रुषक वीज मूल पुनि धारहि। ...
हरि हर कृष्ण तु शाखा भयऊ। जन्म ... संहार न ...

एक ब्रह्म वहुरूप है, जानि जात नहिं भेद।
नाना छवि ताही विषे, महिमा भाषत वेद॥

ता महिमा वरनैं जगमाहीं। को समरथ ज्ञानी अस आही
सरबस ब्रह्म सूक्ष्म ओङ्कारा। जा महिमा वरणै सुर सारा
श्रीभगवान स्वरूपनिकाया। देव नाग सुर मुनि जन माया
त्रिगुणमयी माया संसारा। सत रज तम त्रय देव विचारा
जो मायाबल है विस्तारा। पुरुष रूप कत तासुसंभारा॥
माया ब्रह्म अछेद न कीन्हो। प्रबल योग मायाकर लीन्हो।
माया योग करै सु अपारा। देव दैत्य नर नाग संभारा

आपहि कर्म्म अकर्म्म करि, आप करत संहार।
माया योग उभय रचौं सर्व तासु विस्तार॥
ज्योति रूप है तासु गुण पुरुष पुनीत सुवास।
जा मायाकी प्रवलता स्वामी कौन प्रकास॥

सो गुण कर्म्म कछुक विस्तारा। भाषिय जाहि त्रिगुण सं...
कृष्ण स्वरूप धरे जगमांही। माया रूप रचा महि...
सो लीला जगमहं विस्तारा। कथा रहस्य रङ्ग ...
...निरंजन पुरुषप्रधाना। कही व्यास मुनिगुणताके

अरित्र कोउ भेद न पावहिं । कै भाषा संक्षेपहि गावहिं ॥
नी जो व्यास बखाना । श्रीभगवन्त चरित जिन जाना ॥
यह रच्यो प्रथम महाभारथ । लक्षश्लोक परमपुरुषारथ ॥
कोउ न मिल्यो जगमाहीं । तब गणेशकर ध्यानकराहीं ॥
कहि गणेश हम लिखिहैं सोई । बोलत बचन रुकै नहि कोई ॥
व्यास बूझि गणपतिकी इच्छा । निज बुधि उनहुक लीन्ह परिच्छा ॥
भलेहि रुकै नहिं बचन हमारा । विन बूझे न लिखे तुम पारा ॥
ऐसे हि व्यास श्लोक वनावैं । बीच बीच कछु कूट सुनावैं ॥
तिन्हें समुझिवे कारण तवहीं । गणपति धरहिं लेखनी जवहीं ॥
तौलों व्यास करैं अस रचना । गणपतिलिखैं बहुरि सोइ रचना
व्यास मुनी भारत निर्मायो । वैशम्पायन शिष्य पढ़ायो ॥
जनमेजय राजा अवतारा । धर्मरूप अष्मताकुमारा ॥
एक समय मुनि व्यास जु आये । राजसभाके मांहिं सिधाये ॥
पूजार्चा तव राजा कीन्हों । हर्ष गात कछु पूंछे लीन्हों ॥
तवही देख्यो तुम महभारथ । कौरव पाण्डवकर पुरषारथ ॥
न प्रकार चरित्र [illegible] । मारे कौरव पञ्च कुमारा ॥
अस विचार करि याक, [illegible] तोहिं प्रसाद ।
राजा सु [illegible] पुनीत कहानी । जाते [illegible] चित विषाद ॥
ऋषि वशिष्ठ जानै संसारा । कामधेनु ता [illegible] अवसर नाहीं ॥
ऋषि वशिष्ठ सुरपुरके मांहीं । तहां अष्टवसु रहहि अपारा ॥
अष्टवसू के ऋषि अवतारा । तिन वशिष्ठके गृह पगु [illegible] ॥
आदर बहुत ऋषैकर कीन्हो । भोजन बहुत प्रकारक दीन्हो ॥

ब्रह्माके मन मोह भो हरो रूप सो ज्ञान ।
मारस्मार तन प्रबल अति लग्यो नैनके बान ॥

शन्तनु राजा गये शिकारा । ब्रह्मा शन्तनु गेह सिधारा ॥
ब्रह्मा रानीके ढिग गयऊ । करि बहुयत्न कामसुख लयऊ ॥
कीन्हे हरण अमोघा रानी । राजा सुनु मैं कहौं बखानी ॥
ब्रह्मलोक जब ब्रह्म सिधाये । शन्तनुराजा गृह तब आये ॥
अबहीं रति रस हमसों लयेऊ । साज अहेरक देखत भयऊ ॥
राजा तब जाना विरतन्ता । माया धरेउ कोउ जानेउ अन्ता ॥
रानी कथा सबै विस्तारा । शन्तनु लज्जित क्रोध अपारा ॥
अन्तःपुर शान्तनु तब गयेऊ । देखत रानी चक्रित भयेऊ ॥
दूखी जानि बधन नहिं करेऊ । तब राजा सङ्गति परिहरेऊ ॥
सो रानी बहु लज्जा पाई । गङ्गाजी में प्राण गंवाई ॥
आगे सुनु राजा मन जानी । शन्तनुके घर नहिं है रानी ॥
वंशरहित सो सुत है नाहीं । यही सोच राजा मनमांहीं ॥

सोचवन्त सो राजा, वंशरहित निज आह ।
अस विचार करि थाके, जनमेजय नरनाह ॥

राजा सुनहु पुनीत कहानी । जाते सर्व पापकी हानी ॥
ऋषि वशिष्ठ जानै संसारा । कामधेनु ता गृहसञ्चारा ॥
ऋषि वशिष्ठ सुरपुरके मांहीं । तहां अष्टवसु रहहिं सदाहीं ॥
अष्टवसू कै ऋत्रि अवतारा । तिन वशिष्ठके गृह पगु धारा ॥
आदर बहुत ऋषैकर कीन्हो । भोजन बहुत प्रकारक दीन्हो ॥

तबै अष्टवसु धेनुहि देखा। भयउ पाप मन हेतु विशेषा
अष्टवसू निज गृहकहं गयेऊ। दिना दोय तब वीतत भयऊ
एक दिना मन मन्त्र दृढ़ाये। वंधु कनिष्ट मुनि गृहे पठाये
तबहि वशिष्ठ ध्यानमहं पाई। अष्टवसू मम गाय चुराई
गौ वसिष्ठकी चोरी कीन्हा। क्रोधितऋषै शाप तब दीन्हा
आपन गवस चोर भो आपा। मानुष जन्म मृत्यु परितापा

मनुष जन्म तुम होउगे, भुगतौ लोक मंभार।
शापै दीन्ह वशिष्ठ तब, अति क्रोधितसञ्चार॥

अष्टौवसू श्राप जब पाये। ता पाछे मुनि विनती लाये
भयेउ श्राप अब करहु उधारा। भये वशिष्ठ प्रसन्न अपारा
मनुष रूप जब तजब शरीरा। तबहि उधार सुनहि मुनिधीरा
यहै हमार अनुग्रह आही। बहुत काल रहि है तनु नाही
युद्ध काल विग्रह तब हुइहैं। रणमें मरन तौ प्रान नसइहैं।
सावधान होय सुनहुं विचारा। जनमत होयहैं तोर उधारा॥
यही प्रकार अनुग्रह कीन्हें। आठौ वसुहि महादुख दीन्हें॥
राजा सुनु मायाके हेता। ऐसे मुनि हुइ गये अचेता
ताते जो चरित्र अनुसारा। नानारूप अनेक प्रकारा
योगी मध्य सर्व परधाना। ब्रह्म विष्णु हर रूप प्रमाना॥

सोइ विष्णुकी माया, मोहत नर मुनि देव।
जन्ममृत्युकी जातना, सुनु जनमेजय भेव॥

देवन मिलि कीन्हविचारा। अष्टौवसु जन्महि संसारा

तब देवन गङ्गा हंकराई। शाप हेतु तब कह समुझाई ॥
तुम्हरे गर्भ जन्म परभावैं। अष्टोवसू मुक्त तनु पावैं ॥
मानुषरूप धरौ अवतारा। जन्म वर्षलौं गर्भ मँझारा ॥
गङ्गा जाना पर उपकारा। करि माया मानुष तनु धारा ॥
खोजा सबहि जगत संसारा। कहां जाउं को पुरुष हमारा ॥
करै विचार कहै तहं बाता। शन्तनु भूप सबै जगज्ञाता ॥
राजा तबै अखेटक गयऊ। वनमहं गङ्गा दर्शन दयऊ ॥
शन्तनु मोहे देखत नारी। तब गङ्गासन कह्यो विचारी ॥
कौन रूप वन कारण काहा। कहो सत्य सो हमहीं पाहा ॥

गङ्गा बोली बात असि, देवाङ्गन हम जान।
वाचाबन्ध सोई पुरुष, कन्या कहा बखान ॥

राजा हर्षित वाचा कीन्हो। तब गङ्गा यह बोलै लीन्हो ॥
कौनौ कर्म करब हम राऊ। तामहं भङ्ग देव जनि पांऊ ॥
तादिन हमहिं न पैहो राजा। यहि वाचासों बँध है काजा ॥
तब राजा घरको लै आये। हर्षवन्त बाजन बजवाये ॥
राजा रहै हर्ष मनमाहीं। परमहर्ष सो बासर जाहीं ॥
बहुतक दिन बीते यहि भाऊ। बालक एक गर्भ जन्माऊ ॥
राजा हर्ष बहुत मन कीन्हा। बहुत दान विप्रनकहं दीन्हा ॥
रानी प्रसव भई जिहि वारा। बालक लैकै जलमहं डारा ॥
अन्त प्राण बालकके गयऊ। विस्मय मनमहं राजा भयऊ ॥
कहन नहीं कछु वाचा बांधे। रहा दुःख हिरदयमहं साधे

यहि प्रकारसों गङ्ग तब, सात पुत्र जल डार।
वाचा बँधे हित राजा, महा दुखित भरतार॥

अष्टम गर्भहि भा सञ्चारा। तब शन्तनु विनती अनुसारा॥
सात पुत्रके नाशे शाना। यह सुत हमको देहो दाना॥
हंसिकै गङ्गा तब यह कही। इतने दिन तुम्हरे सङ्ग रही॥
वाचा छल आजुहू भा आनी। हमहैं गङ्गा कहत बखानी॥
अष्टम राजा आप बचाया। यह कनिष्ट जो अष्टम आया॥
यह वृत्तान्त कहौं तोहिंपाहीं। राजा सुनो कथा मनमाहीं॥
कामधेनु वशिष्ठकी आही। अष्टौवसू हरण कर ताही॥
याही पाप शाप उन दीन्हौं। मानुष कर्म चोर इन कीन्हौं॥
ताते शाप लेउ समुदाई। यहै कनिष्ठ हरण कर गाई॥

यहै हेतु हम मनुष तनु, गङ्गा कहत विचार।
पर उपकारक कारणै, मैं रहि साथ तुम्हार॥

गङ्गा पुत्र गोद कर लीन्हा। स्वर्गहि लोक गमन तब कीन्हा॥
इन्द्र वरुण यम पावकपाहीं। औ दिग्पाल मिलायो ताहीं॥
सबते कहा पुत्र यह मोरा। ताते दरश करौं जो तोरा॥
सबहिं कृपा कीजै यहि काजा। गङ्गा भाष्यो देवसमाजा॥
रणमें अजय होइ वर देऊ। पुत्र हमार जानु यह भेऊ॥
सबहि देवता कहि तब बाता। रणमें अजय होय यह माता॥
जबलग अस्त्र रहै करमाहीं। तीनि लोक कोउ जीतहि नाहीं॥
सौंपा शन्तनुको तब जाई। और कहा बहुतक समुझाई॥

ौर एक कङ्कण तब दीन्हा । हर्षि गात राजा लै लीन्हा ॥
ाके हाथ बराबर होई । ताकर व्याह करब नृप सोई ॥

यह कहिकै तब जान्हवी, भई जु अन्तर्द्धान ।
राजा एहिं पालही, सबलसिंह चौहान ॥

ांच सात वर्षनकर भयऊ । परशुरासपहं पढ़ने गयऊ
रशुराम किरपा बहु कीन्हा । विद्या राजनीति सब दीन्हा ॥
स्त्र शस्त्र बहु सिखे अपारा । आप समान कीन्ह संसारा ॥
ृगुपति बहुत दया तब कीन्हा । आपसमान धनुर्द्धर कीन्हा ॥
गहि जो विद्या भीषम आये । वैशम्पायन कथा सुनाये ।
यहि प्रकार तब भीषम भयऊ । महाहर्ष शन्तनु मन ठयऊ ॥
आगे कही कथा विस्तारा । सावधान होइ सुनौ भुवारा ॥
जैसे व्यास मुनी अवतारा । सत्यवतीके गर्भसंक्षारा ॥
जैसे सत्यवती अवतारा । तासुपुत्र मुनि व्यास कुमारा ॥
सुनत कथा पापनकर नासा । पावत अन्त परम पदवासा ।

भारत कथा सुपुण्यफल, राजा सुनु विस्तार ।
सबलसिंह चौहान कह, गुण गोविन्द अपार ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

वैशम्पायन करत बखाना । जनमेजय राजा सुनि ध्याना ।
वसु नाम राजा मधुवंसा । अतिही भील वीर अवतंसा ।

चन्द्रावती तासु पटरानी। रूप शील नहिं जाइ बखानी
रजस्वला सो रानी भयऊ । तादिन राउ अखेटक गयऊ
मारे साउज मृगा अपारा । जल आश्रम राजा पगु धारा
सरवर एक अनूप सुहावा । नाना जन्तु कमल बहु छावा
कमलमाहिं भंवरा इक आही। केलि करत भंवरीके पाही
राजा देखि कामवश भयऊ। भूलि ज्ञान राजाकर गयऊ।
रानी रूप हृदय धरि राऊ। वीर्य्यपात भो वाही ठांऊ।
राजाकहं देवी वर आही। तासु तेज मिथ्या नहिं जाई

मन विचार कर राजा, पक्षी शुकहि बुलाइ।
पद्मपत्त दोना कियो, ताहि वीर्य्य सौंपाइ॥

भाष्यउ राउ पक्षिसों बानी। देहु वीर्य्य यह जहं है रानी।
कहि सन्देश तुरत मो आवहु। तब पक्षी तुम बात सुनावहु॥
पक्षी वीर्य्य चलेउ लै तबहीं। आधो मारग पहुंचो जबहीं॥
नदी एकके ऊपर आयो। पक्षि एक देखन तब धायो॥
गहेसि जाय निज जानि अहारा। दूनो पक्षिन युद्ध संचारा।
युगल बुन्द जलमहं पर सोई। महायुद्ध पक्षिनमहं होई॥
जौन बुन्द जलमाहीं डारा। एक मच्छि तब कीन्ह अहारा
दूओं पक्षी लरत सु जाहीं। दोना गिरा ताहि वन जाही॥
भरद्वाज जेहि ठाहर रहेऊ। दोना देखि महामुनि कहेऊ॥
...नि मच्छि सो करै अहारा। गर्भवन्त होइ जलमझारा॥

बहुत दिना तब बीतिगे, विधि परपञ्च उपाइ ।
धीमर एक अखेटकहं, मच्छिहेतु तहं जाइ ॥
सोही मच्छि जालमहं परी । दीरघ मच्छि देखि सुख करी ॥
सासाराम तहांकर राऊ । धीमर मछ ले गये तिहि ठाऊ ॥
राजा मच्छि देखि विस्तारा । तब मच्छीकर उदर विदारा ॥
तासु उदर जो देखि भुवारा । कन्या एक अरु एक कुमारा ॥
राजहि मन भो हर्ष अपारा । बोल्यउ बचन समय अनुसारा ॥
मच्छदेश पति राजा सोई । निश्चय राजा जानहु होई ॥
कन्या नृप केवटको दीन्हा । मच्छोदरी नाम त्यहि कीन्हा ॥
बहुत कहे केवटसों राऊ । केवट पालत कन्या भाऊ ॥
सात वर्षकी कन्या भयऊ । नदीमाहिं सो कन्या गयऊ ॥
केवट व्याधी तनमों गही । नाव घाटमें कन्या रही ॥
यहि प्रकारते राजा, सुनो और विस्तार ।
त्यहि मारग पाराशर, आयो जो पगु धार ॥
नदीघाट पाराशर जाई । मच्छोदरिको देख्यउ आई ॥
कन्या देखि मोहि मुनि गयऊ । कामातुर पाराशर कहेऊ ॥
लग्न देखि ऐसा मुनि ताही । जन्महि पुत्र सो पण्डित आही ॥
कन्यापाहि कहा मुनि वाता । सरिताघाट काम संख्याता ॥
काम ज्ञ अनी पञ्चशर मारा । इस्त्री मानहु वचन हमारा ॥
रतिदानहि दे हमको नारी । सुनि कन्या लज्जा भइ भारी
कन्या कहा बाल तनु मोरा । जानों काह कामगति तोरा ॥

देखहि त्रिवनमांहि नर नाना । कैसे तुम आपो (?) निदाना ॥
देखहि त्रिवनमांहि नरनारी । कैसे मांगहु रति एहि नारी ॥
ऋषय कहत तब वचन विचारी । योजनगन्धा नाम तुम्हारी ॥
यौवनवन्त होहु जगमाहीं । अन्य पुरुष (?) होवै एहि नाहीं ॥

यौवनवन्ती भइ सुता, अरु सुगन्ध तनु आन ।
दशोदिशा अंधियार भा, कन्या दिय रतिदान ॥

रतिरस पाराशर तब कीन्हा । व्यासदेव जन्महि तब लीन्हा ॥
जन्मेउ बालक गर्भसंस्कारा । पिता सङ्ग तब वन पगु धारा ॥
पुत्रहेतु रोवत सो रानी । तबै व्यास अस कहउर बखानी ॥
विष्णू माया जन्म हमारा । कौन काज तुम करो खंभारा ॥
तपके काज पिता संग जैहौं । सुमिरत मात तुरतही ऐहौं ॥
कन्या कह मम भयो कलङ्का । लोक लाज कर्महु भौ वङ्का ॥
पाराशर भाख्यो विस्तारी । आशिष मम तुम होहु कुमारी ॥
पाराशर वन तबहीं गयऊ । व्यासदेव पुत्रहि संग लयऊ ॥
कन्या तब अपने गृह आई । यह वृत्तान्त सुनो हो राई ॥
ऐसो व्यास देव अवतारा । भाख्यो मुनिवर सुनो भुवारा ॥

व्यासजन्मकी कथा यह, सुनु राजा धरि ध्यान ।
पुण्य कथा श्रीभारत, जा सुनि पाप नशान ॥

शन्तनु राजा केतिक काला । उपजा चित्त हेतु सो बाला ॥
प्रथमै गङ्गा कङ्कण दीन्हा । जगत सकल उपमान सो कीन्हा ॥
दूजे कर होत सो नाहीं । खोज्यो सकल जगतके माहीं ॥

मत्स्योदरि केवटकै बारी । ताके करमहं भयो विचारी ॥
राजा कहै सुनो सुत बाता । ब्याहब सो कन्या विख्याता ॥
भीषम कहै जातिकी हीना । कौन बुद्धि यहि विधिने दीना ॥
शन्तनुहठ कीन्हा यहि कारन । भीषम रचे ब्याह ब्योहारन ॥
भीषम केवटसन कह जाई । कन्या देहु नृपतिकहं भाई ॥
केवट तो मानत है नाहीं । हम धीवर वह राजा आहीं ॥
कैसे हुइहै मिलन हमारा । केवट कहा तजौ ब्यौहारा ॥
बहु प्रकार केवटते कहही । पिता हेतु भीषम मन गहही ॥
तब केवट एक रचेउ उपाई । भाखे वचन लहे चतुराई ॥
भीषम सुनत कहेउ तब बाता । सुनहू सत्य बचन सख्याता ॥
हमकहं चाह राजकै नाही । मङ्गल सत्य तातके चाही ॥
औरौ पुत्र पात्र नहिं राजा । एकौपुत्र तोर सो राजा ॥
कन्या जितनी सकल जहाना । सो सब मोरे मातु समाना ॥
चन्द्र सूर्य्य साखी सुर तीनी । यह परतिज्ञा भीषम कीनी ॥
केवट कह बाचा करि लेऊँ । तब कन्या राजाकहँ देऊँ ॥
मम कन्याके गर्भ ऽवतारा । सोई राज्य करब संसारा ॥

भीषम तब कीन्हों सोई, वचनबन्ध परमाउ ।
हमको राज्य न चाहिये, पिता होहु कल्यान ॥

भीषम प्रण कीन्हों ता पाहा । जगतमाहँ ना करों विवाहा ॥
योगीरूप रहों सेवकाई । कन्या देउ पिताको जाई ॥
बाचाबँध जब भीषम कीन्हा । केवट रानिहि कन्या दीन्हा ॥

कन्या लै भीषम गृह आये। शान्तनु महाआनन्दित गाये ॥
ताके करमहं कङ्कण भयेउ। राजक काज करै ता लयेऊ ॥
शान्तनु राजा कीन्हो व्याहा। वेदविधान यज्ञ अवगाहा ॥
ऐसे शन्तनु व्याही जाई। सत्यवती जु नाम सो पाई ॥
सत्यवती पटरानी भयऊ। राज्यभोग तब शन्तनु कियऊ ॥
चित्राङ्गद भयो एक कुमारा। चित्तवीर्य्य दूसर अवतारा ॥
दूनौं पुत्त भये नृप बारा। महाबली गुण रूप अपारा ॥
चित्ताङ्गदहि राज्यतब दीन्हा। कछुकहिदिवसराज्यउनकीन्ह ॥
अन्तकाल शन्तनुको भयऊ। स्वर्गलोक राजा तब गयऊ ॥

क्रिया कर्म्म शन्तनु जु कर, कीन्हों दोउ कुमार।
सत्यवती मन शोक है, तरुण अवस्था भार ॥

देशराज्य भीषम रखवारा। चित्ताङ्गद भो राजभुवारा ॥
महायशी राजा यह भयऊ। वैशम्पायन राजहि कहेऊ ॥
भीषमजो प्रतिपालहिं राजहिं। धर्म्मशास्त्र बांचत हरिकाजहि ॥
सत्यवती कन्या जो आहे। सञ्जयनाम पुत्त एक आहे ॥
सोउ रहे राजाके पाहा। भारत कथा सुनहु नर नाहा ॥
यहि प्रकार भारत विस्तारा। आदि पर्व्व संक्षेप पसारा ॥
कहत होत बहु कथा अपारा। राजा सुनु यह बहु विस्तारा।

भारत कथा जु पुण्यफल, कहतहि पाप विनाश।
सबलसिंह चौहान कह, सुनतहि भक्तिप्रकाश ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

वैशम्पायन कथानुसारा । जाते पार तरै संसारा ॥
राजा सुनो कथा विस्तारा । काशीराजा वीर भुवारा ॥
कन्या तीनि तासु घर रहंई । तिनके नाम सुनो तव कहंई ॥
सबे जेठि अम्बिका माना । सबते छोटि अँबलिका जाना ॥
बरषैं दश बीते जब तासू । तबहिं स्वयम्बर करेउ प्रकासू ॥
देश देशके राजा आये । सत्यावती कतहुँ सुनि पाये ॥
भीषमपाहिं कहा तब रानी । बन्धु विवाहो कन्या आनी ॥
जीति स्वयम्बर कन्या लीजै । दूनों बन्धु व्याह करि दीजै ॥
जीति स्वयम्बर कन्या ल्यावो । पुत्र हमारो लै मति जावो ॥
यह सुनिकै भीष्म रथ साजा । काशी गये जहाँ सब राजा ॥
तीनों कन्या रूप अपारा । पटभूषणयुत यत्न सँभारा ।
मनवाञ्छित वर चाहत सोई । कर जयमाल उपस्थित होई ॥

तीनों कन्या एक संग, जयमाला लिये हाथ ।
मनवाञ्छित वर चाहतीं, आये बहु नरनाथ ॥

तीनों कन्या एकहि साथा । भीषम जाइ गह्यो त्यहि हाथा
तीनों कन्या रथहि चढ़ाई । हाँका रथ तब चला उड़ाई ॥
कन्या आरत नाद पुकारा । रण ठाढ़े तब सबै भुवारा ॥
भयो युद्ध तब वरणि न जाई । भीषम जीते सब वरियाई ॥
गाजन अस्त्र अनेक प्रहारे । भीषम वीर काटि सब डारे ॥
देवनको वर भीषम पाहीं । को जीतै सन्मुख रणमाहीं ॥
हारे सब राजा बलधारी । भीषम लैगयो तीनउँ क्वांरी ।

तीनों कन्या गृह लै आये । सत्यवती माता सुख पाये ॥
चित्राङ्गद अम्बिका बियाही । विचित्रवीर्य नाम उर नाही ॥
दोउ बन्धु दुइ कन्या ब्याही । अम्बालिका कह भीषमपाही ॥
हरण करि लाये सु तुम, गह्यो बांह्यो बांह ।
जो आपन सुख चहो तुम, हमसन करो विवाह ॥
भीषम कह प्रण हवै हमारा । भामिनि भोग तजा संसारा ॥
भामिनि भोग पुत्र जो होई । राजवंश दुइ होई सोई ॥
हम तजि राज्य तातके कारन । भामिनिभोग तजा संसारन ।
कन्या सुनतहि भई निरासा । रोवति चलि भृगुपतिके पासा
भीषमकेर गुरु उन जाना । ता कारणतहँ कीन पयाना ॥
जाइ दुःख भृगुपतिसों कहे । भीषम पाप करत जो अहे ॥
हरि लायो मम कारण ब्याहा । ताते कहौं बात भृगुनाहा ॥
परशुराम क्रोधित मन भयऊ । कन्या लै भीषमपहँ गयऊ ॥
भीषम पाहि कह्यो भृगुनाथा । तुम हरि लाये पकर्यो हाथा ।
स्त्री भोगहु राज्य सुख, तजा पिताके काज ।
अब जो ब्याह सु कीजिये, होत जन्म कुलराज ॥
परशुराम तबहीं अस भाषहिं । जीतो युद्ध हमारे साथहि ॥
वचन हमार करो परमाना । नातर रण ठानहु मैदाना ॥
तोहिं जीति हौं कन्या देऊं । भृगुनन्दनका है यह भेऊ ॥
भीषम प्रण करिकै रणठाना । गुरुशिष्य कीन कठिन सन्धाना ।
सात दिनालों भा रण भारी । दोऊ वीर महा धनुधारी ॥

सुर वरदानिक भीषम आही। जगतमांहि को जीतन चाही॥
तिहो मारु करै भृगुनाथा। जय नहिं पायो भीषम साथा॥
आत दिनालौं भो रण भारी। भीषम युद्ध भयो अनुहारी॥
हुतक शर मारे भृगुनाथा। जय नहिं पायो भीषम साथा॥
भृगुपति अस्त्र भये सब हीना। तव अकुलाय श्राप यह दीना॥

गुरु अपमान जु कीन तुम, क्षत्रिय है संसार।
अस्त्रहीन है मृत्यु तव, सन्मुख रणमञ्झार॥

कीन्हयो क्षत्रिय गुरु अपमाना। तव अपमान तजौं रण प्राना॥
और प्रतिज्ञा यहै हमारा। जेतक क्षत्रिय जगतमँझारा॥
इन्हैं अस्त्र देवैं अब नाहीं। यहै प्रतिज्ञा अब मनमाहीं॥
परशुराम तौ यह कह जाई। भै निराश कन्या वहि ठाई॥
रण करत हारे भृगुनाथा। हमको विधना कीन्ह अनाथा॥
धिक है जीवन जन्म हमारा। अब धिक रहौं जगत मञ्झारा॥
तव भीषमपहँ कहे रिसाई। तोकहँ भीषम मारब जाई॥
मोरे पाप तोर शिर भारा। मो दरशनते रण संहारा॥
यहै श्राप भीषमकहँ दीन्हा। तव कन्याहि सरा*रचि लीन्हा॥
महादुखित पावक तनु जारा। सोई कन्या भइ जरि छारा॥

यहि प्रकारतें कन्या, तजि पावकमें प्रान।
सोई जन्मी द्रुपद घर, ताहि शिखण्डी मान॥

राजा सुनो कथा परवेशा। विदर देशमहँ एक नरेशा॥

* चिता।

स्वद्र नाम ता कन्या अहई । ताहि स्वयम्बर कीन्हा चहई ।
सो कन्या हरि भीषम लीन्हा । चित्रवीर्य्यको दासी कीन्हा
वैशम्पायन कहत वखानी । सुनु राजा तुव वंशकहानी ॥
भीषम महावीर जग जाना । बानावरि नहिं वीर समाना ।
देश राज प्रतिपालन करई । राजाकाज सदा मन धरई ।
भारत कथा पाप नहिं रहई । तृणसमान अघ पावक जरई ।

महभारत यह भाष्यऊ, कीन्हो अलप वखान ।
सबलसिंह चौहान कह, सर्व पाप क्षय जान ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

राजा सुनो कथा सवधाना । बैशम्पायन करत वखाना ॥
चित्रांगद राजा पुरमाहीं । प्रेम रु हर्ष सदा मनमांहीं ॥
इक दिन राजा गये शिकारा । महा अगम कानन मझारा ॥
तह चित्राङ्गद गन्धर्ब रहई । राजा देखि क्रोध सो करई ॥
मानुष ह्वै कै गन्धर्ब नाना । अब निश्चय करि तजिहै प्राना ॥
बनमें गन्धर्ब तबै प्रचारा । चित्राङ्गदसों रण विस्तारा ॥
गन्धर्ब वीर बाण सो मारै । पैदल हय दल सब संहारै ॥
महामार तब भै बनमाहीं । भीषम खबर पावतो नाहीं ॥
राजा कहं गन्धर्ब तब मारा । एक न बचा सबन संहारा ॥
गन्धर्ब गये स्वर्ग अस्थाना । देश राज सब व्याकुल नाना ॥

भीषम चित चिन्ता भई, कहं गये बन्ध नरेश ।
बहु प्रकारते खोजहीं, कतहु न मिल्यो संदेश ॥
क्रिया कर्म ताहीकर कीन्हा । चित्रवीर्य्यको राज्यहि दीन्हा ॥
सत्यवती सो व्याकुल होई । पुत्रके हेतु मरत सो रोई ॥
भीषम ज्ञान बुझावै ताहीं । करि विचार या मनके माहीं ॥
वारूप अरु कन्तक घोगा । ताके ऊपर पुत्रवियोगा ॥
त्रिकाल गङ्गासुत जाई । रात्रि दिवस बहु कथा सुनाई ॥
जाते मनै शान्ति दृढ़ आवै । नीति कर्म सो कथा सुनावै ॥
दिन केतिक तौ ऐसे गयऊ । चित्रबीर्य्य तब पचैं लयऊ ॥
पर्व रात्रि माताके पाहीं । भीषम कहा कवै निशिमाहीं ॥
आप चित्त कै राजा जाई । देखि पराक्रम जाइ दुराई ॥
भीषम उत्तम असन डसाई । माताको तहं लै बैठाई ॥

आप ज्ञान उपदेशते, भाष्यउ तहां पुरान ।
जाते माता थिर रहन, प्रकट होइ मन ज्ञान ॥

रहे कर्म्म देख्यउ तब राई । त्राहि त्राहि करि चलेउ पराई ॥
तब मनमें नृप करै विचारा । मनसा पाप न मिटै हमारा ॥
प्रातकाल नृप रचेउ उपाई । तब पूछो भीषमसों आई ॥
सुनो बन्धु एक शङ्का मोहीं । पुरुष अर्थ पूछौं मैं तोहीं ॥
मनसा पाप चित्तमें करै । कौन प्रकार जगतमें तरै ॥
गुरुजनपर जो पाप सँचारा । कैसे बन्धु होइ निस्ता
भीषम भाष्यो अर्थ पुराना । पूछि सहज मनमें अस

अनदोषहि जो दोष लगावै । तौ कुलजनको लगन सतावै ॥
काशीमें जो करै प्रवेशा । पातक हूं तन दहै नरेशा ॥
ताको पाप हरण तब होई । अर्थ पुराण बन्धु है सोई ॥

रच्छ रच्छ शर भर सजै, दाह करत जो पाप ।
तब बन्धव सो भाख्यउ, उऋणा होन सो पाप ॥

सुनिकै राजा विस्मय माना । कहा न काहुहि कोटि पयाना ॥
याहि भेद तौ काहु न पाई । तब राजा वाराणसि जाई ॥
तहां जाइकै दहेउ शरीरा । येही रूप तजा नृप वीरा ॥
पाछे भीषम जानै पायो । महाशोक तब मनमें आयो ॥
सत्यवती बहु रोदन करई । वंशनाश भो धीर न धरई ॥
महाशोक तब भीषम पायो । वंशनाश भो पाप बढ़ायो ॥
सत्यवती तब करै विचारा । पूर्व पुत्र तौ व्यास हमारा ॥
पितुके सङ्ग तपस्या जाई । ताहि ध्यान धरि लेहुं बुलाई ॥
सत्यावती ध्यान तब धारा । आये व्यास कृष्णकुमारा ॥
मत्स्योदरी कह्यो तब बाता । कर उपाय भो वंशनिपाता ॥

देखत हृदय दया भई, कहा वचन विस्तार ।
धीर्य्य धरो तुम मातजू, होब वंश अवतार ॥

बन्धु-वधुनके गृहमहं जाई । दृष्टिभोग करवै हम आई ॥
नग्न होय वस्तर तजि आवहिं । पुत्रदान विधनासों पावहिं ॥
वधू ज्येष्ठ अम्बे जेहि नामहिं । सत्यवती तब ताहि बखानहिं ॥
… डारिकै नग्न शरीरा । रहियो गृह सन्मानहं धीरा ॥

[illegible]नतो तब अस कहि जाई। सन्ध्यासमय व्यास तब आई॥
[illegible]कट स्वरूप भयानक होई। अम्बे पाहिं गये मुनि सोई॥
[illegible]वे कहं तब लज्जा आई। और हृदयमहं परम लजाई॥
[illegible]ते मूंदि नयन जो आई। ताते व्यास वचन कह जाई॥
[illegible]य पुत्र अन्धा अवतारा। महावीर जन्महि संसारा॥
[illegible]त्यवतीते भाष्यउ जाई। नयन मूंदिके हमपर आई॥

ताते अन्धा पुत्र होइ, जन्महि गर्भ तुम्हार।
वंश होय तुव जगतमंह, नहीं राज्य अधिकार॥

[illegible]रहिं अम्बिकाके गृह जाई। अँबिकाकेर चरित्र उपाई॥
[illegible]नाकुल लज्जा उन पाई। अशो गात पिंडोर लगाई॥
[illegible]ये मुनीश तासु गृह जबहीं। विकट रूप देखा मुनि तबहीं॥
[illegible]ष्टोगात श्वेत सब अहहीं। श्वेत वर्ण देखत भे सबहीं॥
[illegible]वेत रूप देखा तब चीन्हा। तहां व्यास अस बोले लीन्हा॥
[illegible]न्महि पुत्र गर्भ मझारा। पाण्डु होय तव पुत्र सुवारा॥
[illegible]वतीर्थ्यके दूसरि नारी। शूद्र सोहागिनि रहि सो भारी॥
[illegible]ासि समान रही सो ताहीं। व्यास गये ताके गृहमाहीं॥
[illegible]ूद्रा सुनि अनन्द तब पाई। बिहंसि वदन सो मुनिपह आई॥
[illegible]खत मुनि तब हर्षित भयऊ। तबहिं महामुनि अस वर दयऊ॥

तोर पुत्र जन्महि जगत, महाभक्त भगवान।
अन्तर्द्धान भये मुनी, कीन्हा तुरत पयान॥

पूरव कथा सुनो अब राऊ। तीनों बधू गर्भ उपजाऊ॥
ऋषि माण्डव तब तज्यो शरीरा। गये तुरत यमराजके तीरा॥
मुनिके नैना अन्ध समाना। यम देखत कीन्हो अपमाना॥
नयन मूंदि के करि नमस्कारा। क्रोधित मुनि तब वचन उचारा॥
मनसा फल तोहि मिलिहहि राऊ। अन्धकरूप जन्म जग पाऊ॥
यमराजा बहु आदर कीन्हा। बालदोष मुनिकहं कहि दीन्हा॥
शिशुपनमें तुम टीड़ी मारेउ। ता अपराध इहां पग धारेउ॥
तब मुनीश प्रति उत्तर दयऊ। शिशुतापनका दोष न लयऊ॥
नयन मूंदि यम रहे चुपाई। क्रोधित मुनि तब वचन सुनाई॥
शाप हमार लेहु अब राई। मनुषरूप जन्महु जग जाई॥
शाप देइ मुनि तेहि क्षण जाई। यमके मनहिं अँदेशा आई॥
जाना व्यासकेर उपकारा। शूद्रा गर्भहि जाय संचारा॥
विदुर भये तब तासु कुमारा। शूद्रा गर्भ लीन्ह अवतारा॥
अँबिका गर्भ पाण्डु अवतारा। सब शरीर पाण्डुर विस्तारा॥

अँबे गर्भ धृतराष्ट्र भे, महावीर बलवान।
यहि प्रकारते वंश भो, सबलसिंह चौहान॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

राजा सुनो कथा परकाशा। जाते होइ पाप सब नाशा॥
जति पुत्र कुम्भजे वखाना। कुन्ती भोजराज अनुमाना॥

दूसर पुत्र सिंहासनमाहीं । नृप गन्धार देश इक आहीं ॥
गन्धा नाम जो राजा अहई । गन्धारी कन्या घर रहई ॥
सो तौ शङ्कर भक्ति अराधे । इकशत सुत इक कन्या साधै ॥
तबहीं वर यह शङ्कर दीन्हों । भीषम यहै सुता तब लीन्हों ॥
सोई सुता स्वयम्बरमाहीं । भीषम हरि लाये तब ताहीं ॥
राख्यो मनमें अन्ध कुमारा । होन पुत्र ता शत अवतारा ॥
धृतराष्ट्रकका कीन बिवाहा । महाहर्ष भीषम मनमाहा ॥
गान्धारी तब कन्त निरीखै । दूनौ नयन अन्ध करि दीखै ॥

पिय देखा गन्धारि जब, अन्ध जन्म अवतार ।
बाँधी पट्टी नयनमहं, विधि यह लिखा लिलार ॥

धृतराष्ट्रकको आज्ञा लीन्हा । भीषम राज्य पाण्डुकहं दीन्हा ॥
राजा पाण्डु सबै जग जाना । आगे राजा सुनौ बखाना ॥
जो श्रीकृष्ण-पितामह अहैं । शूरसेन राजा तेहि कहैं ॥
कन्या पुत्र जो दश हैं ताही । ज्येष्ठ पुत्र बसुदेव जो आही ॥
कुन्तीभोज मित्र तो आही । शूरसेनकी कन्या ताही ॥
प्रथमहिं नाम तासुका अहै । कुन्तिभोज प्रतिपालन चहै ॥
शूरसेन सो कन्या दीन्हा । पुत्री कहि प्रतिपालन कीन्हा ॥
कुन्ती नाम दीन पुनि ताहीं । कन्या रहि राजा गृहमाहीं ॥
बहुत प्रीति कन्यापर करई । मनसा वचन कर्मना धरई ॥

परम हर्षसो कन्या, राजा गृहसों आव ।
वैशम्पायन भाष्यऊ, सुनु जनमेजय राव ॥

एक समय तब ऋषि दुर्वासा। आये कुन्तिभोज नृप पासा॥
भाषेउ श्राद्ध करब हम वासा। चारिमास रहिहौं तुव पासा॥
पै जो मानहु वचन हमारा। इच्छा भोजन देव अहारा॥
जब हीं इच्छा होय हमारी। तबहीं भोजन देहु निकारी॥
तप्त अन्न ततच्छणहीं पाऊं। जबहीं भोजन चाहब राऊ॥
राजा सुनि अन्तःपुर गयऊ। सबके पहं पूछत तब भयऊ॥
सब रानी तब कहैं बुझाई। कोउ न कहत करब सेवकाई।
कुन्ती तब भाषेउ नृप पासा। राखहु तात सुनिहि चौमासा॥
मैं तौ सेवा करिहौं ताहीं। भोजन देब जो मनमें चाही।
राजा राखेउ मुनिकहं जाई। कुन्ती मुनिसेवाको आई।

जब जो चाहत मुनि मनहिं, सो सो कुन्ती देय।
प्रेम हर्षसों महामुनि, बस कुन्तीकी सेय॥

सोई भयो महामुनि कहे। वर्षा चारिमास तहं रहे॥
कुन्तीभक्ति तुष्ट मुनि भयऊ। मालमन्त्र दुर्वासा दयऊ॥
मालमन्त्र जाको तुम ध्यावो। तौन देवको दरशन पावो॥
ऐसे मालमन्त्र तब दयऊ। मुनिवर बिदा भूपसों भयऊ॥
दुर्वासा तब बनमहं जाई। कुन्ती मनमें रच्यो उपाई॥
मन्त्र परीक्षा कुन्ती करई। सूरज देखि मन्त्र उच्चरई॥
सूर्य्य चन्द्र प्रत्यक्षै देवा। मन्त्र परीक्षा कीन्हेसि भेवा॥
बुद्धि नारी अज्ञाना। माला जपै सूर्यकर ध्याना॥

धरत ध्यान रविदेवकर, ततक्षण तब तहँ आउ ।
वर प्रसाद तब दीन्हों, पुत्र हेत तुव जाउ ॥

सुनत लाज कुन्तीकहँ भयऊ । दिनकरसन बोले यह लयऊ ॥
भो नहिं व्याह रहो मैं क्वांरी । भल वरदान जन्म भरि गारी ॥
भो कलङ्क तुम्हरे परसादा । कुन्ती मनमहं परम विषादा ॥
ह्वै प्रसन्न तब कह दिनमनी । नहीं कलङ्क तोर जग गनी ॥
कर्णमार्ग होय जन्म प्रमाणा । महावीर दानी जग जाना ॥ *
यह कहि अन्तर्गत रवि भयऊ । सूर्य्य प्रताप पुत्र सो ठयऊ ॥
कर्णमार्ग कर भो अवतारा । कुन्ती ताहि नीरमें डारा ॥
शूद्र अधीरथ धीमर नामहिं । सो लो गयो गङ्ग अस्नानहिं ॥
देखा सुन्दर बालक आही । सो लै गो अपने गृहमाही ॥
राधा नाम तासुकै नारी । प्रतिपालन कीन्हो तेहि भारी ॥

यहि प्रकारतै कर्ण भे, कुन्ती प्रथम कुमार ।
करि संक्षेप बखानेऊ, कीन नहीं विस्तार ॥

पांच सात वर्षके भयऊ । बालसङ्ग खेलन तब गयऊ ॥
सब मिलि देहिं कर्णको गारी । तेरी कहाँ पिता महतारी ॥
केवट लै प्रतिपाला तोहीं । जानत मात पिता नहीं ओहीं ॥
कर्ण सुन्यो लज्जा तब होई । सङ्करवर्ण कहत सब कोई ॥
गङ्गा तीर कर्ण तब जाई । तनु त्यागैका रच्यो उपाई ॥

* विद्यावान और बलवान ।

जबहीं तनु त्यागैका चहै। दिनकर हर्षि हाथ ना गहै॥
काहे तनु त्यागौ तुम बारा। मै जगज्योनि हूं पिता तुम्हारा॥
सुनतै हर्ष कर्ण तब माना। चरण पकरि कै अस्तुति ठाना॥
पिता हमार सूर्य परमाना। मोसम भाग्य न दूसर आना॥
विनती एक हमारी ताता। तुम तौ पिता कौन है माता॥

काके गर्भहि जन्म मम, कहहु कृपा करि नाम।
तौ चित मेरो होइ थिर, कीन्हीं कर्ण प्रणाम॥

तबहीं सूर्य परीक्षा कीन्हा। बस्तर एक कर्णको दीन्हा॥
अग्निचीर जानै संसारा। जो पहिरै सो मातु तुम्हारा॥
कै कै छल पहिरै जो कोई। मोर प्रताप भस्म सो होई॥
यहि प्रकार तब कर्ण बुझाई। अन्तर्द्धान भयो दिनराई॥
कर्ण बीर बहुते सुख पायो। बस्तर लै तब गृहको आयो॥
सो बस्तर गृह राखेउ जाई। बात सकल तब जाय बुझाई
यहै प्रकार कर्ण अवतारा। दानी वड़ा सुसूर्यकुमारा॥

वस्तर लै गृह राखेऊ, चित दै सुनहु भुवार।
विद्याके हित कर्ण तब, कीन्हीं हृदय विचार॥

परशुरामपहं चलसो जाई। विप्ररूप करि गे वहि ठाईं॥
परशुराम तब विद्या दीन्हा। निज समान धनुधारी कीन्हा॥
कर्ण चतुर्द्दश चले अन्हाई। परशुराम तब आगे जाई॥
कदम्ब पुहप हैं नाना। आभे हने नले बाण बाना॥

लरो तेल तौ हाथहि लाई। पाछे परशुराम तब जाई॥
देखेउ सब खण्डित हैं फूला। कर्ण बीर देखत तब भूला॥ *
भूमिप धरौं तो होई पापा। उछरै तबै कटोरा आपा॥
मारेउ वाण बाट सब सोई। लीन्हा रोकि कटोरा ओई॥
लैके खरी गये पुनि ताहां। नदी तीर भृगुपति है जाहां॥
कै अस्नान चले तब राई। वही वृक्षतर पहुँचे आई॥
परशुराम भाष्यो तब बाता। आधे हने कौन सख्याता॥

कर्ण कहा मैं काटेउ, सुनत हर्ष भृगुनन्द।
भयो शिष्य लापुल अब, मनमें भये अनन्द॥

शयन करेउ दिनकै भृगुनाथा। धरा कर्ण जङ्घापर माथा॥
वज्रकीट कीड़ा इक आई। कर्ण जङ्घ छेदनकर जाई॥
ताते रक्त जो तनुमहँ लागे। परशुराम चौंके तब जागे॥
क्रोधित परशुराम तब कहई। कह तू शिष्य जाति को अहई॥
हैं क्षत्रिय मोसों छल कीन्हा। पांच बाण तबभृगुपतिदीन्हा॥
कर्णपाहि तब कह परकाशा। विद्या दै का करौं विनाशा॥
पञ्चो बाणते मृत्यु तुम्हारा। वर औ शाप है दोउ हमारा॥
जबलगिवाण जो तोपहँ रहई। तबलगिजगतअजयतोहिकहई॥
रिपुके हाथ बाण जब जाई। मरिहो कर्ण कहा समुझाई॥
कर्ण बाण पांचो तब लीन्हा। अपने भवन गमन तब [illegible]

---

* यहि प्रकार देखि सब फूला।

कर्ण वाया लै जोगहिं राखा । चित आनन्द बढ़ो अभिलाखा ।
सदा रहहि अति हर्ष मन, कर्ण वीर गृह जाइ ।
भारतकथा पुनीत अति, सुनतहि पाप नशाइ ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

जनमेजय अब होउ सुध्याना । वैशम्पायन करत बखाना ॥
कुन्तिभोज नरपति परमाना । कुन्तीकेर स्वयम्बर ठाना ॥
ऐसे पाण्डुराज जगमाहीं । जीते जगत आप बलवांही ॥
धृतराष्ट्रकके अज्ञा माने ॥ राजा पाण्डु सर्व्व जगजाने ॥
देश देशके राजा आये । कुन्तिदेश सब भूप सिधाये ॥
कुन्ती देखा अगणित भूपा । देखे राजा अगणित रूपा ॥
कर्म लिखा को मेटनहारा । पाण्डु राउको कीन्ह विचारा ॥
जयमाला पाण्डवकहँ दीन्हा । याही भांति स्वयम्बर कीन्हा ।
कुन्ती पाण्डु भयो तब व्याहा । देश देश गवने नरनाहा ॥
दायजु दीन बहुत तब राजा । पाण्डव हर्ष परम सुखसाजा ॥
दायजु कन्या गृह लै आये । परम हर्ष तब भीषम पाये ॥
ऐसे कुन्ती पाण्डु विवाहा । सो सब कथा सुनौ नरनाहा ॥

यह गाथा जनमेजय, सुनौ वचन परमान ।
सुनत पाप सब नाशहीं, वैशम्पायन बखान ॥

ग। पा ण्डसबै जग जाना । परजा लोग हर्ष अतिमाना ॥

पुरी हस्तिना उत्तम साजा । भीषम प्रतिपालत हैं राजा ॥
मद्रसुदेश मद्रपति राऊ । कन्या इक ता गृह जन्माऊ ॥
माद्री नाम सकल जगजाना । समय संयोग स्वयम्बर ठाना ॥
भीषम वाहि जीति ले आये । पाण्डुराउको व्याह कराये ॥
ऐसी भई माद्री रानी । पाटेश्वरी दूहूं जगजानी ॥

पाण्डु नृपति जग जानह, आसैं सुनी प्रमान ।
भारतकथाते राजा, सर्व्वपाप क्षय मान ॥

पाण्डुवराज भयो रजधानी । कुन्ती और माद्री रानी ॥
देवराजके कन्या रहै । पाराशरी नाम त्यहि कहै ॥
भीष्मवीर तब कीन विचारा । विदुरहि व्याह तासु अनुसारा ॥
विदुरौ कह सो दीन बिवाही । प्रेम हर्ष सत्यावति आही ॥
प्रतिपालक तौ भीषम अहैं । राज्यदेशको रक्षा चहैं ॥
यहि प्रकार जन्मेजय राजा । तोरे वंशचरित्रके काजा ॥

विदुर पाण्डु धृतराष्ट्र का, तीनों बन्धु प्रमान ।
यह चरित्र तुव वंशके, सुनु राजा दै कान ॥

शङ्कर पर अनुकम्पा व्यासा । गन्धारी के गर्भ प्रकासा ॥
उदर गर्भ तब भो परकासा । बारह वर्ष गर्भमहं वासा ॥
महाकष्ट तब भइ गन्धारी । भेषज कहेउ उदर तब फारी ॥
उदरमांहि तौ नाहिं उवारा । व्यास तहां तब मन्त्र संचारा ॥
मन्त्रतेज गन्धारि बचाई । महा दुःख गन्धारी पाई ॥
मांसपिण्ड देखा गन्धारी । करते आप लिलारहि मारी ॥

शतपुत्तन हित शङ्कर ध्याये। एक पुत्र नहिं जानें पाये ॥
तब मुनि व्यास कहैं समुझाई। शत पुत्रहु होइहैं तुव भाई ॥
वचन एक मैं कहौं उपाई। सोई मन्त्र करो मन लाई ॥
चिन्ता तजि मानहु वच मोरे। शत आत्मज होइहैं अब तोरे ॥

एक शत कुण्ड खनाइके, घृत भरिये तामाहिं।
शत खण्डन करु मांस यह, डारो लै लै ताहिं ॥

शीतल जलसों करो पखारा। कुण्डहि प्रतिहौ होइ कुमारा ॥
सुनि गन्धारी कुण्ड खनाये। शतकुण्डनमहँ घृतहि भराये ॥
शीतल जलसों पिण्ड पखारा। एकोत्तरशत भाग सँचारा ॥
यक यक भाग कुण्डमहँ डारी। दोई भाग एकमहँ धारी ॥
भये तहां दुर्योधन बारा। प्रकटभये तहँ सकलकुमारा ॥
दूसर अंश इक कन्या जाना। और पुत्र सब भे बलवाना ॥
सो कलियुगको भो अवतारा। दुशला कन्या पुनि औतारा ॥
अँगुठ प्रमाण पुत्र अवतारा। तब प्रतिपालहि सबै कुमारा ॥
दुःशासन अरु बिबिसुत भयऊ। चित्रसेन विक्रम निर्भयऊ ॥
परभृत्य दुर्मुख इक बारा। बल्लासुर योधन अवतारा ॥
औरौ नाम अनेकन जाना। जन्मे वीर अन्ध हर्षाना ॥

शतपुत्तन प्रतिपालहीं, गन्धारी मन लाइ।
परमहर्ष तब भीषम, देखा वंश उपाइ ॥

दिन राजा पाण्डु शनरे। मृग विहारकर बन परवेशा ॥

दैवीगति कछु जानि न जाहीं । ऋषि यक भोग करै दिनमाहीं ॥
मृगस्वरूपको लै सञ्चारा । यहि अवसर राजा शर मारा ॥
तिया पुरुषके भेद्यहु बाना । दीन शाप तब सुनि परमाना ॥
इस्त्री भोग जबै परकाशै । ताही क्षणहि तोर तनु नाशै ॥
शाप देइ सुनि तजा शरीरा । महा शोचवश भा नृपवीरा ॥
शोचहि करै अपुत्री क्षयऊ । महाशाप मुनिवर सोहि दयऊ ॥
ताही बनमें ऋषि बहु अहैं । तिन्हें जाय पाण्डव नृप कहैं ॥
भीषमपाहिं कहेउ तिन जाई । ऐसो शाप मुनीश कराई ॥
ताते बनमें तप अब करिहौं । जा कारणते जगमें तरिहौं ॥

बन अखण्डके मांह तब, रहहीं पाण्डुनरेश ।
ऐस शाप यह पायऊ, कहा राउ अन्देश ॥

आये मुनि सब भीषम पासा । सब बृत्तान्त जाय परकासा ॥
भीषम सुनिकै पूछहि गाथा । कहां अहैं पाण्डव नरनाथा ॥
मैं उनको लै आवत जाई । वनोवास जहँ करिहैं राई ॥
भीषम चलेउ पाण्डु हैं जहां । दूनो रानि चलीं पुनि तहां ॥
कुन्ती और माद्री नारी । कन्तक पास चलीं अनुसारी ॥
आखण्डित बन पहुँचे जहां । भीषम गये तुरतही तहां ॥
बहुविधिते भीषम समुझावै । पाण्डवके मनमें नहिं आवै ॥
पाण्डव करत तहाँ वनवासा । रहिवे तात तजो तुम आसा ॥
यह प्रकार गङ्गज समझायो । पै पाण्डवके मन नहिं आयो ॥
याही बनमें रहेउ भुवारा । तब भीषम गृहको पग धारा ॥

कुन्ती अरु माद्री युगल, रहीं कान्तके पास।
अति वियोगते कुन्ती, विशभनाको साप॥
वनमें राजा हर्षित रहैं। कुन्ती माद्री सङ्गहि गहैं॥
महाशोकते राजा रहई। पुत्र हेतु चिन्ता मन गहई॥
तबै सकल मुनि भाषैं बाता। तजो शोक पाण्डव नरनाथा॥
तोर पुत्र होइहै बलधारी। यह आशिष है पाण्डु हमारी।
ऐसे रह तब वनहीं राजा। होत शोच पुत्रनके काजा॥
बिना पुत्रके कुल अँधियारा। कैसे पितर होइँ उद्धारा॥
तब कुन्ती बोली प्रिय बासा। मन्त्र एक है हमरे पासा॥
यह जो कालमन्त्र मम पाही। ध्यावों जाहि देवसो आही।
जौन देव आराधहि कुन्ती। तौन देव वर देइ तुरन्ती॥
ताते होय पुत्र अवतारा। कन्त तजौ मनको दुखारा॥
यहि प्रकारते कुन्ती, कन्तहि धीरज दीन।
मालामन्त्र हाथ लै, देव अराधन कीन॥
मालामन्त्र कीन परमाना। प्रथमहि धर्मकेर धरि ध्याना॥
ताते धर्म युधिष्ठिर भयऊ। महाहर्ष पाण्डव मन ठयऊ॥
दूजे पवन केर धरि ध्याना। ताते भीम भयो बलवाना॥
दोनों पुत्र भये तब भारी। तब फिरि मनहिं विचारेउ नारी॥
अब काको मन धरिये ध्याना। कै विचार इन्द्रहिकहं ठाना॥
अर्जुन जनमेउ महाकुमारा। इन्द्रक तेज भयो अवतारा॥
अर्जुन नाम सो भयउ कुमारा। इन्द्रतेज तब भयो संसारा॥

माता हर्षवन्त तब भाखै। अर्ज्जुन नाम पुत्रकर राखै॥
पाण्डवराय देखि सुख पाये। श्यामस्वरूप देखि मन भाये॥
नयन विशाल श्याम है देहा। पाण्डव राउ करत बहु नेहा॥
श्यामल रूप देखि पितु भाखै। कृष्ण सुनाम पिता तब राखै॥

दुई नाम तब प्रथमहीं, मात पिता धरि ताहिं।
प्रेम हर्ष तन बनविषे, राज रहैं सुखमाहिं॥

माद्री पुत्र हेतु मन लाई। कुन्ती बहिनी बैन सुनाई॥
तब कुन्ती मालावहि दीन्हा। औ पुनि नाम मन्त्रकहि दीन्हा॥
माद्री मात मन्त्रतब पाये। तब अश्विनीकुमारहि ध्याये।
ताते पुत्र भयो अवतारा। नकुलनाम जानत संसारा॥
तब मालाकर तेहि जाई। अन्तर्द्धान भयो वहि ठाईं॥
मन्त्रक तेज शक्ति जब गयऊ। कुन्ती महा दुःख तब कियऊ॥
पुत्रनको प्रतिपालहि माई। प्रेम हर्ष राजा तब पाई॥
चारि पुत्र हैं दुइ हैं माता। प्रेम हर्ष पाण्डव नरनाथा॥
इहां पाण्डव वनमें रहई। उतही भीष्म देशमें रहई॥
राज दियो दुर्य्योधन राऊ। प्रतिपालैं भीषमसों भाऊ॥

राजा भयऊ अन्धसुत, पाण्डु रह्यो वनवास।
अब राजा सुनु आगे, कहत कथा तवपास॥

मृगन वरनहि पाण्डु भुवारा। पाण्डु राउ तब गयो शिकारा॥
भानु अस्त होई विस्तारा। रानी मनमा करै विचारा॥
तादिन माद्रि रजस्वल भयऊ। पूरण दिन नहान तब कियऊ॥

माद्री कह कुन्तीके पाही। जब लग पति आवें घरमांहीं ॥
सूरज रथ राखो अटकाई। जाते राजा भोजन खाई ॥
सन्मुख रवि बैठो सो रानी। सूरजरथ तहँ जो ठहरानी ॥
पाण्डव राइ तबै गृह आये। दिवस जानिकै अन्नहि खाये
पाछे माद्री उठि गृह जाई। रातौ भई तुरत गृह आई ॥
तब राजा आश्चर्यहि कियऊ। कुन्ती सकल भेद तब कहेऊ ॥

माद्री रूपहि देखिकै, इस्थिर भये जो भानु।

सुनत पाण्डु राजा तबै, लगे मैनके बानु ॥

माद्रीपह राजा तब जाई। करि रति केलि ज्ञान भुलवाई ॥

ऋषिहि शाप तब आइ तुलाना। अन्तकाल भे पाण्डव प्राना
गर्भवती माद्री तब भई। पाण्डव रूपति देह तजि दई ॥
देखा पाण्डु भयो तनु नाशा। दो रानी तब रुदनप्रकाशा ॥
दाह कर्म राजाकर कीना। गर्भ हेत माद्री रह हीना ॥
कछु दिन गये पुत्र अवतारा। माद्री तनहि तजा संसारा ॥
कन्तके शोक माद्री गयऊ। सुत प्रतिपालन कुन्ती कियऊ ॥
सहदेव नकुल माद्री नन्दा। तीनि पुत्र कुन्तीके बन्दा ॥
सहदेव अरु नकुल कुमारा। दोनो पुत्र माद्रिके बारा ॥
तीन पुत्र कुन्ती सञ्चारा। पाण्डव पुत्र जानि संसारा ॥
पांच पुत्र कुन्ती तब पाला। माद्रीकेर भयो जब काला ॥
...पि ब्राह्मण सब करत उपाई। भीषमपाहि कहा तब जाई ॥

पाण्डव न्टपति रु माद्री, वनमें तजा शरीर ।
पांच पुत्र प्रतिपालने, कुन्ती करत गम्भीर ॥

ऋषिवरते भय पञ्च कुमारा । पाण्डव न्टपति वंश अवतारा ॥
कुन्ती पांच पुत्र लै रहई । शत बालक गन्धरिके अहई ॥
भीषम सुन्यो तुरन्त सिधाये । कुन्तीकहँ घरही लै आये ॥
पांच सात वयके तब भयऊ । प्रतिपालन भीषम तब ठयऊ ॥
खेलनको जब जात समाजा । कौरव पाण्डव एकहि साजा ॥
पांच पुत्र कुन्तीके आहीं । ताहि समान एकसौ नाहीं ॥
खेलि भीमसों सकेउ न कोई । दुर्य्योधन तब चिन्ता होई ॥
दिन दिन बालक पांचौ ऐसे । केहरिके समान हैं जैसे ॥
एक एकते पांचो भाई । सुकल पच्छ ससिकरसम पाई ॥
कुरु राजा कहं चिन्ता होई । इन समान नहिं हम सब कोई ॥

दुर्य्योधनको चिन्त होइ, पांच देखि बरियार ।
रिपु विचार देखै तहा, कुरुपति मन खभार ॥

इति षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

राजा सुनौ जु कुन्ती अहई । पांचपुत्र यहि ऐसे कहई ॥
तुम्हरे पिताकेर यह राजू । कर्म्म दोषते भयो अकाजू ॥
सुनिकै पांचौ चिन्ता करहीं । पिताको राज हृदैमह धरहीं ॥
खेलन करन जात सब साथा । पांचौ बान्धव औ कुरुनाथा ॥

खेलन भीम कहँ यह भाया। [illegible] हमार करो नरनाया।
हमरे पिताकेर यह देशा। [illegible] कह पाय नरेशा।
खेलत भीम और सौ भाई। भीम [illegible] [illegible] न कोई।
एक वृक्षपर है सब भाई। चढ़े जाइ तब भीम लगाई॥
धाइ वृक्ष तब भीम हलायो। गिरे सबै तौ थाह न पायो।
पेड़ हलाय दीन तो हाँका। परे भूमि जिमि सब फल पाका।

भीमसेनको करि हसी, हर्षत हैं सौ भाइ।
बहुप्रकार दुर्योधन, मनमें करे उपाइ॥

एकहि बार गहैं दश भाई। पटकि भीम तब जरस घुमाई।
सदा विवाद भीमसों होई। शत भाई जीता नहि कोई।
जह वे खेलन करहिं पयाना। बलवान्तव तहकर अपमाना।
चिन्ता करि दुर्योधन राई। भीमहि मारन रच्यो उपाई।
महाबली सो मरत न मारा। दैके गरल करौं संहारा॥
इकदिनप्रीति बहुत तब कीन्हा। छलकरि गरल भीमको दीन्हा।
महाबली सो भीम अपारा। भोजनमांहि गरल सञ्चारा॥
खाते गरल चेत ना रहई। हर्षि गात दुर्योधन कहई॥
तब गङ्गामें दीन बहाई। बूड़े भीम पतालहि जाई॥
भोगवती गङ्गा है जहा। बहते भीम पहुँचे गे तहाँ॥
तहा वीर तब पहुच्यो जाई। गङ्गा धार रह्यो अटकाई॥

नागसुता अज्ञानको, आई सुनो सो राय।
देखि कलेवर भीमको, सुता हर्ष तब पाय॥

ङ्कर शाप देखि कै बारी। ताकहँ कन्या बरै बिचारी॥
निकहं राजा पूछै सेऊ। मृतक स्वामि कौनै विधि भयेऊ॥
ङ्कर शाप हेतु सुनु राई। प्रतिदिन हर पूजै सो जाई॥
जै नागकि सुता महेशा। पुष्प रु वेलपत्र धर वेशा॥
किदिन फूल और नहिं पाये। बासी पुष्पहि जाइ चढ़ाये॥
ाते हरहि क्रोध बहु कीना। दीन शाप तब यह परबीना॥
ृतक पुष्प लै पूजेउ मोहीं। मृतकै पुरुष प्राप्ति होइ तोहीं॥
ब कन्या यह विनती लाई। मोच्च शाप कब होय गुसांई॥
हर भाखेउ मृत्युक वर पाई। पाछे अमृत पान कराई॥

सोई शाप हित कन्या, भीमहि दीन जिआय।
अतिसुन्दर पति देखिकै, हृदय बहुत हर्षाय॥

खबरिहेत सो लाइ सुवारा। नागसुता यह प्रीति विचारा॥
तबहीं वर कीन्हे उ मन लाई। पाछे तबहिं शेष पह जाई॥
अमृत देके भीम बचाये। पुर पाताल भीम सुख पाये॥
चारि बन्धु कुन्ती महतारी। महा शोक कीन्हीं तब भारी॥
भीम केर उपदेश न पावा। महाशोक कुन्ती मन आवा॥
कुन्ती कह हम जन्म दुखारी। कहाँ गये सुत भीम हमारी॥
महा शोच भे चारिउ भाई। कहूँ न खोज भीमकर पाई॥

चारि बन्धु, कुन्ती सहित, पावत शोक अपार।
यहि प्रकार राजा तहाँ, रहि गो भीम पतार॥

यक दिन भीम गये चलि तहाँ। अमृत सात कुण्ड हैं जहाँ॥
सातौ कुण्ड कीन्ह तब पाना। भागे रक्षक नाग पराना॥
शङ्कर सुन्यउ सकल व्यवहारा। मनमें कीन्हे क्रोध अपारा॥
खायउ अमृत उदर अघाई। मृत्युलोकको सुमिरेउ भाई॥
चलेउ सुभीम मृत्युपुर जबही। महादेव वेग पुनि तबही॥
महा मारु कीन्हेउ संहारा। शङ्कर भीम तु पुरी पतारा॥
महादेवको क्रोध अपारा। तब त्रिशूल ले उदर जु फारा॥
अमृत सातौ कुण्ड निकारी। हर्षित गात महेश पुरारी॥
मृत्यु क भीम भवानी जाना। महादेवसों कीन्ह बखाना॥
धन्य धन्य तुम वीर अपारा। खायो अमृत पुरी पतारा॥

धन्य बीर बल साहसी, गौरी कहत विचारि।
कृपा करो अब स्वामी, देहु जीव सञ्चारि॥

जीव दान शङ्कर तब दीन्हा। उठ्यो भीम तब रिस बहु कीन्हा
रहु रहु कहि तो उठा जुझारा। महादेव तब हर्ष अपारा॥
हर्षवन्त बीर बल धामा। महादेवको कीन्ह प्रणामा॥
केहरिनाद तहाँ तब कीन्हा। तुरतहि नाम वृकोदर दीन्हा॥
हर्षित गात भीम बलवाना। महादेव तब कीन्ह पयाना॥
वासुकि महा हर्ष तब भयऊ। नाना मणी भीमकह दयऊ॥
बिदा मांगि तब भीम जुझारा। तब चलनेको हृदय विचारा॥
*तब भीम बिदा तब भयऊ। अहिलमतीशोकहित्यहिठयऊ

* नागसुता तब रही पतारा॥

विविध भांति समुझायो ताहीं । कछु दिनमें ऐहौं तुम पाहीं ॥
चले हर्ष नरपुरको आये । मातु बन्धु तब दर्शन पाये ॥
मिल्यउ पुत्र हर्षित महतारी । दुर्योधन अचरज भा भारी ॥
दीन्हो विष पुनि मरिय जियाये । वर्ष दिना बीते पुनि आये ॥

कुन्ती माता हर्ष तब, हर्षित धर्म कुवार ।
कै संक्षेप बखानेऊँ, भारत कथा अपार ॥

धर्मराज यह कह तब बाता । भीम आदि सुनियो मम भ्राता ॥
सावधान तैं रहब सभारा । दुर्योधन है शत्रु हमारा ॥
एकहि सङ्ग रहब सवधाना । यहही मन्त्र धर्मसुत ठाना ॥
यह विचार करि पांचौ भाई । विस्मय रहैं सचेत सदाई ॥
यहि प्रकार पाण्डव रह ताहाँ । पांचौ बन्धु सचेतन माहा ॥
महावीर वृकओदर अहे । कौरव सब मन शङ्का रहे ॥
आपै आप रहै सवधाना । वैशम्पायन करत बखाना ॥
यहि विधिते तो भो अवतारा । कुरु पाण्डव दोउ बंश भुवारा ॥

सुनु राजा जनमेजय, भारतकथा अनूप ।
यहि प्रकार ते उत्पति, कुरु पाण्डव दुइ भूप ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

राजा सुनो कथा अनुसारा । कुन्ती हर पूजा विस्तारा ॥
सोइ लिङ्गको यह परभावै । राज निमित पूजा मन लावै ॥

कुन्ती पूजै प्रति दिन जाई । औ गान्धारी पूजन आई ॥
कुन्ती भेद न जान गँधारी । नहिं कुन्ती गन्धारि नारी ॥
यहि प्रकारते पूजा ठावहिं । एक एकको देख न पावहिं ॥
प्रतिदिन तो यह पूजा करहीं । दूनों तिय हरिभक्ति सँचरहीं
राजेश्वर महीश जगजाना । प्रतिदिन तव पूजत परमाना ॥

सुनु राजा जनमेजय, आगे कथा बखान ।
भारतकथा सु पुण्यफल, जासे पाप नशान ॥

भीषम् कीन्हे उ हृदय विचारा । विद्यावन्त न एक कुमारा ॥
कुरु पाण्डव दोऊ सो अहहीं । विद्यावन्त न एको रहहीं ॥
द्रोणाचार्य्यकि चिन्ता करही । जो आवै विद्या सब्बरही ॥
भृगुपतिकेर शिष्य जो अहै । विद्याशास्त्र ज्ञान तो रहे ॥
यह तौ चिन्ता भीषम पाई । खेलनको सब बान्धव जाई ॥
सब बान्धव अरु कुरुपतिसाथा । खेलन गेंदहि कुवँरन हाथा ॥
बिधिवश गेंद कूपमें परई । सब मिलि शोच तहाँ सब करई ॥
कन्दुक परेउ कूपमहँ जाही । कोऊ काढि न सकतो ताही ॥
कुरुपति गेंद लेन सो चहही । काढ़ो हठ करि राजा कहही ॥
बालक रूप कहैं सब कोई । काढ़ै गेंद समर्थ न होई ॥

यहि प्रकारते बाल सब, करते युक्त उपाय ।
बहुत प्रकार विचारन, गेंद काढि नहिं जाय ॥

ताही समय द्रोण गुरु आये । द्रुपद साह जो मान गवाँये ॥
[illegible]जय पूछे मुनि ठाई । किहि विधि द्रोण सो मान गंवाई ॥

वैशम्पायन कह सुनु राजा । द्रोणाचार्य रहे जेहि साजा ॥
पर्‌यो दुकाल अन्न नहिं पायो । देश छाड़ि तब द्रोण सिधायो ॥
द्रुपद राजके नगरहिं आये । द्वारपालतें खबर जनाये ॥
ब्राह्मण एक आव नृपद्वारा । तुमते मिलन चहत एहि बारा ॥
नृप कह तुरतहि लेहु बुलाई । तब द्वारी तिन कहं लै जाई ॥
दण्ड प्रणाम कीन्ह उठि राजा । भक्ति कीन्ह पूजा बहु साजा ॥
पूछे नृपति कहांते आये । बड़े भागते दर्शन पाये ॥
आपचरित द्विज कह विस्तारा । तुम्हरे ढिग हम आव भुवारा-
निज देशहि जब परे दुकाला । तुम्हरे ढिग आये यहि हाला ॥
धरनत भृती देहु जो राई । तो कछु दिन रहि हौं एहि ठाई ॥

रहिये द्विज निज गृह जिमि, करिहौं तुव प्रतिपाल ।
वास करहु एहि नगरमहं, सुखते कह नरपाल ॥

दिनप्रति नृपति सुभोजन दयऊ । एहिविधि दिवस केतिकौगयेऊ
अश्वत्थामा पुत्रके नामा । खेलत खेल नगर शिशु ठामा ॥
निज निज गृह सब बालक चले । क्षीरोदन हम खाते भले ॥
तुमहु जाहु भजन करि आवहु । खेलहु खेल परम सुख पावहु॥
अश्वत्थामा निज गृह कहं आये । क्षीरोदन मातहि फरमाये ॥
भोजन देहु यहै हम खैहैं । खेलन खेल सिसुन संग जैहैं ॥
अति दरिद्र नहिं क्षीर संचारा । मांगत क्षीर हठी यह बारा ॥
तन्दुल धोय क्षीर कहि दीन्हा । यहि प्रकार तेहि भोजन कीन्हा
एक दिवस नृपके मन भाये । द्विज भोजन सांझा करवाये ॥

भोजन हित द्विज न्योतेउ राजा । गये द्रोण भोजनके काजा ॥
सुत समेत बैठे जेवनारा । चौर लाय तहं दीन्ह भुवारा ॥
भोजन करि सब निज गृह आये । प्रात चौर मातहि फरमाये
पुनि सोइ युक्ति करौ लै आना । सो नहिं भौ बालक मनमा
नृपके गृह खायउ हम चौरा । तुम आनत तण्डुलके नीरा ।

करत दुन्द सो बालक, भोजन नेक न खाय ।
तासु मात तब द्रोणते कहै बात सब जाय ॥

नृपते मांगु गाय एक कन्ता । यह बालक मम कीन्हो अन्त
द्रोणाचार्य कहै सुनु नारी । नृप ढिग नहि जाचन अधिकारी
जो नृप ढिग यह करौं प्रसङ्गा । देय न होय मान मम भङ्गा
तासु बधू हठ करि पठवाये । नृपके निकट द्रोण तब आये ॥
मित्र मोहि दीजै गोदाना । सो सुनि नृपति क्रोध मन आन
तुम भिक्षुक कहो मित्र कुवोला । देखत हों तुम हौ अति ल
समता होय मित्र तेहि कहिये । इतनो कर्षन कैसे सहिये
प तिनको कीन्हो अपमाना । देशहि छाड़ि कहो तेहि ज
खित हृदय विप्र गृह आये । पूछहि तिया कहां दुख पाये
'न मलीन कस कीन्हो स्वामी । द्विज भाषै बुधि तुम्हरे ज
प्रथम कहा मम रहे न माना । देश त्यागि नृप कहेउ निदान
सो सब भाषहु कहं चलि जाहीं । तिय भाषा मम वन्धव -
कृपाचार्य हस्तिनपुरमाहीं । चलहु वेगि अब जैहौं ताहीं
उठे तुरत तिय सङ्गहि लीन्हो । हस्तिनपुरी गवन तब कीन्हे

त रमणीय देखि एक ठामा । डेरा कीन्ह तहां विश्रामा ॥
ाचार्यके गृह नहिं गयेऊ । मान घटे कछु लाज न ठयऊ ॥
हंते भ्रमत द्रोण तब आयो । बालक तब सब देखन पायो ॥
पद समीप जान जो चाहा । द्वारपाल तव रोकेउ ताहा ॥
जापास जान नहिं दीनों । भयो उदास द्रोण मन हीनो ॥
हि अन्तर हस्तिनपुर आये । बालक सबसो देखन पाये ॥
खि करत ते गेंद के काजा । दुर्योधन सो बन्धु समाजा ॥
खि द्रोण तब कहेउ सुनाई । गेंद काढ़ि देहौं मैं भाई ॥
नुष माहि तृण शर सञ्चारा । पढ़िकै मन्त्र गेंदको मारा ॥
ंद उठाय सो ऊपर आयो । दुर्योधन तब आनन्द पायो ॥
ंद उठाइ जु लीन भुवारा । भीषमके पासहि पगु धारा ॥
ीषम पाहि कह्यो समुझाई । कन्दुक परेउ कूपमें जाई ॥

बहुत युक्ति हम कीन्हेऊ, गेंद काढ़ि नहिं जाइ ।
यहि अन्तर इक विप्रवर, तह सो पहुँचे आइ ॥

हम भाख्यो तुम काढ़ु गुसाईं । काढ़े गेंद वार नहि लाई ॥
देखत विप्र कहा तब बाता । कन्दुक काढ़ि दीन सख्याता ॥
सीकक शर सायक सन्धाना । कूप मध्य मारेउ तब बाना ॥
गेंद कूपतें बाहर आई । भीषमतें कह कुरुप सुनाई ॥
तब भीषम मन करत बिचारा । दूजो विप्र नहीं संसारा ॥ *

---

* ऐसा वार वारे को मारा ।

परशुरामकर शिष्य ललामा । द्रोणाचार्य नाम् को नामा ॥
करि आदर तब वेगि बुलाये । चरण धोइ आसन बैठाये ॥
भीषम वचन कहा तनपाहीं । आपु रहो हस्तिनपुर माहीं ॥
बालक सबतो अहैं हमारा । विद्यावन्त करहु अनुसारा ॥
यहि विधिविनय गङ्गसुत कीन्हा । पाँच ग्राम आचार्यहि दीन्हा ।
हर्षित द्रोण रहे पुनि ताहीं । इस्त्री पुरुष हर्ष मनमाहीं ॥

द्रोणाचार्य रहे तहाँ, पुरी हस्तिनामांह ।
यहि प्रकारते गुरु भये, सुनौ वचन नरनाह ॥

कुरु सौ बान्धव एक समाजा । पांच बन्धु पाण्डव तहँ साजा ॥
भीषम सौंपि द्रोणके पासा । और हर्ष सों वचन प्रकासा ॥
इन सबहिन को क्षत्रिय करिये । विद्या अस्त्रज्ञान सञ्चरिये ॥
अस्त्र शस्त्र सिखये मन जानी । हर्षित भीषम कहत बखानी ॥
सुनतहि द्रोण बहुतसुखमाना । जो तुम कहा सोइ परमाना ॥
विद्याशाला एक बनावा । उत्तम थल सो देखि सोहावा ॥
कुरु पाण्डव मिलि हे नरनाथा । विद्या पढ़त दोउ यक साथा ॥
अग्निबाण जलबाण कहाये । पवनबाण गुरु जानि सिखाये ॥
अहिकरबाण नागशर साधा । केकीबाण मोर बहु बाधा ॥
खगशायक पिपील प्रमाणा । अन्धकार औरहु रवि बाणा ॥

सगरी विद्या युद्धकी, सिखत सु गुरुके पास ।
बाणावारी अस्त्र सब, सीखे क्षत्रिय आस ॥

८ औसर सब रहे सुठामा । आयेउ एक भील तेहि ठामा ॥

कृपावन्त द्विजवर अब होहू । कहत द्रोण सो पढ़वहु मोहू ॥
द्रोण शूद्र लखि नाहिं पढ़ावा । सोऊ तुरतहि विपिन सिधावा ॥
द्रोणाचार्य मृत्तिकाकेरा । निर्म्मित कीन्हेसि तहं तेहि बेरा ॥
मूरति विमल सुआसन दीन्हा । भली भांति तेहि पूजा कीन्हा ॥
श्रद्धा भक्ति करै असलीन्हा । लोक विश्वास फलितविधि कीन्हा ॥
पूजै मूरति धर सन्धानै । द्रोण समान सो मूरति जानै ॥
पारथको बाणावरि माहीं । पावत नहिं कोई सुत ताहीं ॥ *
सबै लोग तब देत बड़ाई । धन्य धन्य पारथकी माई ॥
स्वर्ग पताल मृत्यु अस्थाना । कन्यसान पारथके बाना ॥
सदा कर्ण आवहिं पुनि ताहाँ । बैठत आनि द्रोणके पाहा ॥
परशुरामको शिष्य जु अहै । अतिही प्रीति द्रोणपर रहै ॥
राजनीति औ शास्त्र विधाना । द्रोणाचार्य सिखावै नाना ॥
प्रति वासर नाना व्यवहारा । पढ़त रु सुनत अनेक प्रकारा ॥

यहि प्रकार ते राजा, विद्या सिखवत ताहि ।
सौ बान्धव कुरु नाथ जो, पाण्डव पांचौ आहि ॥

इति अष्टम अध्यायः ॥ ८ ॥

राजा सुनौ कथा परवेशा । कौतुक इक बड़ भयो नरेशा ॥
कुन्ती शिवपूजन को जाई । यहि अन्तर गान्धारी आई ॥

---

* जे नाहिं कोई जगमाहीं ।

दासी सब ले सङ्ग गन्धारी । हरके मण्डप तब पगु धारी ॥
गन्धारी कुन्तीकहँ देखी । पूंछे बात तौ कहो विशेखी ॥
कारण कौन इहाको आई । ताकर भेद कहौ समुझाई ॥
कुन्ती करत शम्भु को सेवा । दूनों कहँ तब एकहि भेवा ॥
कहल गंधारी तू कत आई । राजस्त्री तौ पूजन जाई ॥
इहाँ सदा हम पूजत अहई । तू कत आइ गन्धारी कहई ॥
एतो गर्ब तोर भो आई । राजेश्वर हर पूजन धाई ॥

कुन्ती कह हम पूजती, प्रथमहि राज्य हमार ।
आदिहुते हम पूजती, कुन्ती कह सच्चार ॥

दूनी महा द्वन्द्व तब कीन्हा । एक एक कह गारी दीन्हा ।
महादेव तब भाष्यउ बानी । काहे दोऊ भई अयानी ।
जो पूजा कर भक्त हमारा । ताकर वश हम सुनौ विचारा ॥
शैलसता अर्द्धाङ्गी आहीं । ताहूकेर वश्य हम नाहीं ॥
पूजत श्रद्धा भक्ति जु कोई । ताके वश्य जगत हम होई
तजौ द्वन्द्व मानौ मैं कहऊँ । जो मो भक्त तास मैं अहऊँ
वचन एक भाषत मैं नारी । तजहु कलह अरु द्वन्द्व विचारी
कनक फूल अरु सगन्ध उपाई । जो कोउ पूजत आनि चढ़ाई
औ ताहीकर सुनहु विचारा । तासु एत तौ होइ भुवारा
ऐसा कहि हर अन्तरधाना । परम हर्ष गन्धारी माना ॥

कहत गन्धारी कुन्तिसे, महाहर्ष परिहास ।
कहो जाइ सब सुतनते, करो पुष्प परकाश ॥

कहि गन्धारी गृहको जाई। एवनते कहि तवहि बुझाई ॥
कनक सुफूल सहस बनवाई। दीजै एव तु हमको ल्याई ॥
राजा सुनतहि कनक मँगायो। चम्पा पुष्प अनेक गढ़ायो ॥
गढ़त सुनत तौ पुष्प उपाई। तव कुन्ती गृह विस्मय जाई ॥
बैठी जाय सोचगृह माहीं। रन्धन कछुक बनायो नाहीं ॥
बैठी जाय शोचके भवनहिं। भोजन अन्न तु कीन्हों कछुनहिं ॥
महादुःख मनमें उपजाये। विद्या पढ़ि आत्मज सब आये ॥
क्षुधावन्त भीमहि तव जाई। क्षुधा लागि भोजन दे माई ॥
कुन्ती तव उत्तर नहिं दीन्हा। महाक्रोध भीमहि तव कीन्हा ॥
तीनि बार तौ बोलि कुमारा। उतर न दीन मातु सिसकारा ॥
बांधन केर सभा सब रहे। सो तो भीम मातु सन कहे ॥

दोय पहरमें पठन करि, आये घरके माहिं।
अजहूँ भोजन है नहीं, माता बोलत नाहिं ॥

नितके पांहि दुःख सहि आवैं। घरमें कछु भोजन नहिं पावैं ॥
माता बोलि न उत्तर देई। कहु बन्धव का करैं कलेई ॥
माता देह समा सब अहै। खाऊँ जाइ वृकोदर कहै ॥
धर्मराज कह ऐसी बाता। भीमसेनको दे सख्याता ॥
माना क्षुधावन्त जो आही। कैसे कै सुत भोजन खाही ॥
मानावहं तौ पूछो जाई। मोरे काहे न बोलत माई ॥
राजा कह अर्जुन तुम जाहू। पूछो जाइ कौन दुख आहू ॥

पारथ गे माताके पासा। हाथ जोरिकै वचन प्रकासा॥
त्रिषा पड़ी क्षुधा तौ माई। भोजन हित आयो मैं माई॥
अजहूं रांधन कीन नहि, कौन दुःख मनमाहि।
सत्य सत्य जो माता, सो भाखहु हमपाहि॥
माता कहौ होव कह भूला। ऐसी बात भई अजगूना॥
पारथ कहो कहौ तुम माई। करब सत्य जो कीन्हा जाई॥
तब कुन्ती भाषै यह बाता। गन्धारी को द्वन्द सख्याता॥
कनकपुष्प पूजै हर जोई। तासु पुत्र महिराजा होई॥
उन सुवर्ण दीन्हों सो नाना। पुष्पहि गढ़त अनेक विधाना॥
हमहूँ कहाँ सुवर्णहि पाई। जाको पुष्प सुजाय चढाई॥
अर्ज्जुन कहा सुनो हो माता। यह तुम कहा कीन्हि बड़ि बाता॥
प्रातहि काल देब हम माता। रांधन करहु आपु सख्याता॥
सुनि कुन्ती आनन्दित भई। रांधन करन तबहिं चलि गई॥
भोजन पान करे सब कोई। राती काल प्रकट तब होई॥
कुन्ती कहती पार्थसों, आनो पुष्प तुरन्त।
प्रातकाल पूजन चहौं, शङ्कर देव अनन्त॥
प्रातकालको बेरा भयऊ। घरी दोइ निशि बाकी रहऊ॥
कुन्ती कहत देउ अब आई। पारथ कहा देउं अब माई॥
धनुषबाण तब अर्ज्जुन गहई। माता धीर धरौ अस कहई॥
मन व्यापक तब भार सम्भारा। महाबली अर्ज्जुन संसारा॥
भये अलोप गये सो बाना। जहाँ कुवेरकेर बगवाना॥

जहां कुबेरकेर बगवाना। तहं सो अर्ज्जुन मारे बाना॥
काटे तरुवर पुष्प उड़ाये। बाणके तेज पुष्प बहु आये॥
शिवकेमण्डप पुष्प जो आये। भीतर बाहर पुष्प सु छाये॥
शिवमण्डप फूलन सों पाटे। औरो बाण जु अर्ज्जुन छांटे॥
कनकपुष्प चम्पा अनुहारा। शोभा बहुत सुगन्ध अपारा॥
शिवमण्डप पुष्पनसों छाये। अर्ज्जुन पाहिं बाण तब आये॥

अर्ज्जुन कह सुनु मात अब, पूजो शङ्कर आय।
जितक फूल मन मानहीं, मण्डपमा लेउ जाय॥

कुन्ती सुनत हर्ष मन भई। करि अस्नान मण्डपहि गई॥
देखा पुष्प अनेक प्रकारा। पूजत कुन्ती हर्ष अपारा॥
तुष्टवन्त गिरिजापति भयऊ। आशिर्वाद कुन्तिकहँ दयऊ॥
तोर पुत्र होइ है महिराजा। पुरी हस्तिना नगर समाजा॥
यह वर दीन्हो तब त्रिपुरारी। कुन्ती तब गृहको पगुधारी॥
एहि अवसर गन्धारी आई। कनक थार बहु पुष्प भराई॥
जातहि देख्यउ मण्डप माहीं। अगणित पुष्प भरे ता आहीं॥
बाहर भीतर पुष्प सुहाये। तब कुन्तीकहं देखन पाये॥
पूंछै बात कुन्तिके पाहीं। कहौ पुष्प तुम पाये कांहीं॥
कुन्ती कह हम भेद न पायो। अर्ज्जुन पुष्प कहांते ल्यायो॥

तुष्टवन्त गिरिजापतिहि, मोहिं दीन्ह वरदान।
असकहि तबहीं उमापति, भये जु अन्तर्द्धान॥

उर्द्धस्वास गन्धारी लीन्हा। अपने गेह गवन तब कीन्हा

ज्यों गाय पुत्रके पाहीं। कुन्ती मन्य जननमें माहीं॥
ह पुत्र सों कहा पचासा। कहिके अर्जुन पुन्र्य भाषा॥
हा पुत्र हमरे सो भयऊ। चार्जुन जो पुत्रता य किमऊ॥
हादुःखमें भद्द गन्धारी। कहा राज्य धन वृथा हमारी॥
कल राज्य धन सहिकर होई। अर्जुन पुत्र धनंजय सोई॥
हि प्रकार दुःखित गन्धारी। कुन्ती तब उरहकी पसुधारी॥
र्जुन पाहि कहै तब वानी। मस्तक चूमि अशीशे रानी॥
न्य धनंजय पुत्र हमारा। आस हमारी एकअहारा॥
हु प्रकारते दीन अशीसा। वार वार तब चूमति सीसा॥

यह इतिहास पुनीत अति, सुनत पाप छुटार।
कुरु पाण्डव सब एकहौ, विद्या पढ़ि चटसार॥

इति नवम अध्याय॥ ९॥

गुरुके पहँ बैठे सब ताहा। नाना अस्त्र शस्त्र अवगाहा॥
एक बार चटसारै माहाँ। कर्ण आदि बैठे सब ताहाँ॥
यहि अन्तर भीषम चलि आये। तहाँ जायकै वचन सुनाये॥
को कस विद्या लखो कुमारा। करौ परीक्षा अब हमारा॥
गाउइ आए दिखावो सोई। काके विद्या कैसिक होई॥
सबही वीर अस्त्र तो करहीं। भीषम पाहिं सबै अनुसरहीं॥
दुर्योधन शत बान्धव धाये। पाछे पाँच पाण्डव आये॥

एकलव्य जो नाम किराता । आये कही द्रोणसों बाता ॥
देवलोक लख्यो तेहि वाना । वनते तज्यो अलोप्यो बाना ॥
भयो सिद्ध वन विचहि पाई । लेन परिक्षा नित हम आई ॥
जहां शिष्य सब देहिं परिक्षा । देखि रहा सो अपनी इच्छा ॥
देन परिक्षा सोउ तब नाथा । चलवै बान सो अतिहि अगाधा ॥
देखि द्रोण अचरज अति माना । कहां सिखी विद्या बलवाना ॥

पूछा द्रोण सिखे कहां, कहेउ तुम्हारे पास ।
विपिनमांहि प्रतिमूरति, माटी कीन्ह प्रकास ॥

तुमहीं गुरु मृतिकाके भयेऊ । भक्ति तुम्हारि तहां चलि गयेऊ ॥
द्रोण कहा गुरुदक्षिणा दीजै । जो चाहो सो अबही लीजै ॥
कर-अङ्गुठ तुम हमकहं देहू । दीन्हेसि उतर तुरत किन लेहू ॥
द्रोण कयो धर चलिहै कैसे । दोइ अङ्गुरी गहि आखेसि ऐसे ॥
सुनि सबही अति अचरजु लागे । सबै कहत यह परम सभागे ॥
भीषम कहेउ सुनहु हो पारथ । अब देखौं तेरो पुरुषारथ ॥
करत अस्त्र अर्जुन सब ताहाँ । सन्मुख तो भीषमके पाहाँ ॥
तबहि अस्त्र अर्जुनने कीन्हा । धन्य धन्य सब बोलि लीन्हा ॥
भीषम कहउ धनंजय पाहीं । त्वहिं समान कोउ जगमें नाहीं ॥

तोर अस्त्र अस देख्यउं बहुत मोर मन मान ।
तोहि समान कोऊ नहीं भीषम कहत बखान ॥

सुनिकै कर्ण कहन तब लागे । सभामांझ भीषमके आगे ॥
अर्जुनके इन कौन बड़ाई । हौन कौन कौरव घर भाई ॥

र अस्त्र जो देखन पावहु। तो अर्ज्जुनको ज्ञान भुलावहु॥
र्णा बीर तब अस्त्र जु करई। मानहु वज्र भूमिमें परई॥
म्पमान अवनी तौ होई। ऐसा अस्त्र कर्णा कर सोई॥
र्णाकेर पुरुषारथ देखौ। दुर्योधन-मन हर्ष विशेखौ॥
ालिङ्गन तब कर्णाहिं दीन्हों। मित्र बोलि सत्या तब कीन्हों॥
रूपति कहा मित्र परमाना। यहि जनमांहि बन्धु हम जाना॥
ाखी पञ्च देवता कीन्हा। मित्र प्रकाशि जगतमंह दीन्हा॥
ाजा कर्णा दोउ व्रत लीन्हों। पृहुमीमाहिं मित्र तौ कीन्हों॥

कर्णा और दुर्योधन तत्त्वण भये सँघात।
हर्ष गात दूनौ भये भीषमके सख्यात॥

न्हा कर्णा दुर्योधन पाहीं। आशा एक मोर मनसाहीं॥
ल्लयुद्ध देखो तुम राऊ। हारत कौन कौनके दाऊ॥
ुनिकै अर्ज्जुन सह्यो न पारा। क्रोधवन्त कर्णाहिं परचारा॥
ोणा गुरू अर्ज्जुनते कहै। तोरे सन्मुख शत्रु न रहै॥
हावीर अर्ज्जुनको जाना। मल्लयुद्ध करिवेको ठाना॥
ुत्र सनेह इन्द्र नभ छाये। पुत्र हेत सूरज चलि आये॥
ुद्ध साज साजे हैं दोऊ। चकित भये देखत सब कोऊ॥
किरपाचार्य्य कहै तब बाता। पाछे युद्ध करौ सख्याता॥
ंश अर्ज्जुन जग जाना। आपन वंशकु करौ बखाना॥

सूर्य्यपुत्र तुम कर्णा हो मात पिता नहिं जान।
कौने मुख कीन्हों चहौ अर्ज्जुनसों मैदान॥

कर्ण तबै सुनि लज्जा पाई। तब दुर्योधन कहा सुनाई॥
राजा जौन छत्र विधि भाई। सहसो क्षत्रिय उत्तम राई॥
वरणो विक्रम राजा सोई। अर्जुन कर्ण तुल्य जो होई॥
आधो आसन राज्य हमारा। राना कहे सु कर्ण तुम्हारा॥
अधिरथ तब यह सुनि जो पाई। पार्थ कर्ण जहँ होइ लड़ाई॥
पुत्रके हेतु तुरतही धाये। सभा माँझ तत्क्षण ही आये॥
कहते पुत्र ईन्दं नहि काजा। होइ सो देख्यो राजहि राजा॥
सभा माहिं यह वचन सुनायो। कर्ण लजाके माथ नवायो॥
भीमसेन भाषैं यह वानी। सुनो कर्ण तुम अति अज्ञानी॥
क्षत्रिसभामें बैठ्यउ जाई। नेक न लाज चित्त तुव आई॥
क्षत्रि सभाके योग्य नहिं अरे हीन अज्ञान।
सुनत कर्ण तव कोपेउ सबलसिंह चौहान॥
क्रोधित कर्णहिं सूर्य्य निहारा। प्रकटि सूर्य्य तब सभामँझारा॥
भाखे रवि तुम पुत्र हमारा। कौन हेतु मन करत खँभारा॥
यह कहि सूरज अन्तर्द्धाना। सभा सबै तब अचरज माना॥
रविको पुत्र सभा सब जाना। दुर्योधन तब करत वखाना॥
मूढ़ वृकोदर रे अज्ञाना। वचन हमार सुनौ दै काना॥
कुम्भ अगस्त्य जन्म जो भयऊ। शृङ्गिगर्भ शृङ्गीऋषि लयऊ॥
द्रोणाचार्य सकल अवतारा। जानौ तौ सर्वज्ञ सँसारा॥
गङ्गा गर्भ भीष्म अवतारा। शान्तनु सुत जानै संसारा॥
नहि दुर्योधन धर्मकुमारा। इन प्रतिपालन कीन्ह तुम्हारा॥

दुर्योधन भाषै यहि दर्पहिं। सुनहीं बात धर्मसुत नृपहिं॥

दुर्योधनकी बात यह सुनी सकल दै कान।
लोग सभा सब उठे तब सन्ध्या भो परमान॥

कछु दिन तौ यहि विधिते गयऊ। विद्या पढ़ि संपूरण भयऊ॥
गुरुदच्छिणा सबहि तब दीन्हों। हर्षि द्रोण गुरु भाष्यो लीन्हों॥
अर्जुनसों तब भाष्यउ बाता। स्वारथ मोर करो सख्याता॥
द्रौपद राजा मित्र हमारा। सारि किरीट राज्य बैठारा॥
अर्द्ध राज्य वै हमहीं दीन्हा। शपथ कीन्ह तबही हम लीन्हा॥
थातौ राजै दै वन गयऊँ। पूरण तप मैं एलि तहँ कियऊँ॥
द्वारपाल जाने नहिं दीन्हों। मेरो तौ अपमानहिं कीन्हों॥
ता कारण मैं मांगत येहू। द्रुपदहिं बांधि चरणतर देहू॥
अर्जुन सुनतहि तुरत सिधाये। द्रुपद पाहि सो युद्ध लगाये॥
लगत बाण तब अर्जुन साधे। द्रुपदराजको तुरतहि बांधे॥

नागफांस सों बांधेउ लै आयो गुरुपास।
द्रुपद बहुत लज्जित भयो विनय कीन्ह परकास॥

कह्यो मित्र मैं तो नहिं जाना। मेरो कीन्हों है अपमाना॥
गुरु द्रोण किरपा तब कियऊ। अब नहिं ऐसे भ्रममें परऊ॥
बन्धन खोलि जु बिदा कराये। महाहर्ष द्रोण गुरु पाये॥
आशिरवाद तुरतही दीन्हा। धन्य धन्य अर्जुनको कीन्हा॥
कीन्हेउ शिष्य तुम स्वार्थ हमारा। अबते पारथ नाम तुम्हारा॥
तुम्हरे सम्मुख खल विनाशा। गुरु हर्ष होइ वचन प्रकाशा॥

यही प्रकार प्रस्त व्यवहारा। भयो सभा सो सुनहु भुवारा ॥
अपने गृह पारथ तब जाई। परमहर्ष भो देखत साई ॥
पाण्डव या विधि सुनो कहानी। जाते होय पाप सब हानी ॥
सुनि मनवांछित सो फलपावहि। अन्तकाल वैकुण्ठ सिधावहि

पाण्डवविजयी कथा यह राजा सुन दे कान।
विजय होय सब जगत में शत्रु होय क्षय जान ॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

राजा सुनहु कथा सवधाना। जाते पाप होय क्षय नाना ॥
दुर्योधन तब रचा उपाई। पाण्डव पुत्र प्रबल भे आई ॥
भीमसेन अति दुष्ट जु अहई। सदा विवाद जु हमसे करई ॥
भाषा जाय तातके पासा। दुर्योधन नृप होय उदासा ॥
दिन दिन होत सबै बरियारा। तात करो कछु मन्त्र विचारा ॥
पांचो कण्टक राज्य हमारा। राज्य हमारि तु कहैं विचारा ॥
निशिदिन देखि क्रोध हम पावहिं। सदादुष्ट भीषम परभावहिं ॥
करो तात कछु मन्त्र विचारा। होइ निकण्टक राज्य हमारा ॥
जानो तात सत्य मनमाहीं। राज दुष्ट तो पांचो आहीं ॥
ये तो सोच होत मन माहा। शत्रु हमार निकासे आहा ॥

ता कारण सुनु तात अब, भला न होइ सो होय।
शत्रु रहत है निकटही, कम कास भला जु होइ ॥

दुर्योधन भाषे यहि कृपहिं। सुनहीं बात धर्मसुत भूपहिं॥

दुर्योधनकी बात यह सुनी सकल दै कान।
लोग सभा सब उठे तब सन्ध्या भो परमान॥

कछु दिन तो यहि विधिते गयऊ। विद्या पढ़ि संपूरण भयऊ॥
गुरुदक्षिणा सबहि तब दीन्हों। हर्षि द्रोण गुरु आप्यो लीन्हों॥
अर्जुनसों तब भाष्यउ बाता। स्वारथ मोर करो सुख्याता॥
द्रौपद राजा मित्र हमारा। मारि किरीट राज्य बैठारा॥
अर्द्ध राज्य वै हमहीं दीन्हा। शपथ कीन्ह तबही हम लीन्हा॥
थाती राजै दै वन गयऊँ। पूरण तप मैं पुनि तहँ कियऊँ॥
द्वारपाल जाने नहिं दीन्हों। मेरो तौ अपमानहिं कीन्हों॥
ता कारण मैं मांगत येहू। द्रुपदहिं बांधि चरणतर देहू॥
अर्जुन सुनतहि तुरत सिधाये। द्रुपद पाहि सो युद्ध लगाये॥
लगत बाण तब अर्जुन साधे। द्रुपदराजको तुरतहि बांधे॥

नागफांस सों बांधेउ लै आयो गुरुपास।
द्रुपद बहुत लज्जित भयो विनय कीन्ह परकास॥

कह्यो मित्र मैं तो नहिं जाना। मेरो कीन्हों है अपमाना॥
गुरु द्रोण किरपा तब कियऊ। अब नहिं ऐसे भ्रममें परऊ॥
बन्धन खोलि जु बिदा कराये। महाहर्ष द्रोणा गुरु पाये॥
आशिरवाद तुरतही दीन्हा। धन्य धन्य अर्जुनको कीन्हा॥
कीन्हेउ शिष्य तुम स्वार्थ हमारा। अबते पारथ नाम तुम्हारा॥
म्हरे सन्मुख मल विनाशा। गुरु हर्ष होइ वचन प्रकाशा॥

यही प्रकार ग्रन्थ व्यवहारा। भयो सभा सो सुनहु भुवारा॥
अपने गृह पारथ तब जाई। परमहर्ष भो देखत साई॥
पाण्डव या विधि सुनौ कहानी। जाते होय पाप सब हानी॥
सुनि मनवांछित सो फलपावहि। अन्तकाल वैकुण्ठ सिधावहि

पाण्डवविजयी कथा यह राजा सुन दे कान।
विजय होय सब जगत में भल होय क्षय जान॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

राजा सुनहु कथा सवधाना। जाते पाप होय क्षय माना॥
दुर्योधन तब रच्यो उपाई। पाण्डव पुत्र प्रबल भे आई॥
भीमसेन अति दुष्ट जु अहई। सदा विवाद जु हमसे करई॥
भाषा जाय तातके पासा। दुर्योधन नृप होय उदासा॥
दिन दिन होत सबै बलियारा। तात करो कछु मन्त्र विचारा॥
पांचौ कण्टक राज्य हमारा। राज्य हमारि जु कहैं निचारा॥
निशिदिन रहि क्रोध हम पावहि। सदा हृदय अधिक पछतावहि॥
करौ तात कछु मन्त्र विचारा। होइ निष्कण्टक राज्य हमारा॥
बोलो तात सत्य सत्भारी। राज दुष्ट ते पांचौ भारी॥

दुर्योधन भाषै यहि रूपहिं । सुनहीं बात धर्मसुत नृपहिं ॥

दुर्योधनकी बात यह सुनी सकल दै कान ।
लोग सभा सब उठे तब सन्चरा भो परमान ॥

कछु दिन तो यहि विधिते गयऊ । विद्या पढ़ि संपूरण भयऊ ॥
गुरुदच्छिणा सबहि तब दीन्हों । हर्षि द्रोण गुरु भाख्यो लीन्हों ॥
अर्ज्जुनसों तब भाख्यउ बाता । स्वारथ मोर करो सज्ञाता ॥
द्रौपद राजा मित्र हमारा । मारि किरीट राज्य बैठारा ॥
अर्द्ध राज्य वै हमहीं दीन्हा । शपथ कीन्ह तबही हम लीन्हा ॥
थाती राजै दै बन गयऊँ । पूरण तप मैं पुनि तहँ कियऊँ ॥
द्वारपाल जाने नहिं दीन्हों । मेरो तो अपमानहिं कीन्हों ॥
ता कारण मैं मांगत येहू । द्रुपदहिं बांधि चरणतर देहू ॥
अर्ज्जुन सुनतहिं तुरत सिधाये । द्रुपद पाहि सो युद्ध लगाये ॥
लगत बाण तब अर्ज्जुन साधे । द्रुपदराजको तुरतहि बांधे ॥

नागफांस सों बांधेउ लै आयो गुरुपास ।
द्रुपद बहुत लज्जित भयो विनय कीन्ह परकास ॥

कह्यो मित्र मैं तो नहिं जाना । मेरो कीन्हों है अपमाना ॥
गुरु द्रोण किरपा तब कियऊ । अब नहिं ऐसे भ्रममें परऊ ॥
बन्धन खोलि जु बिदा कराये । महाहर्ष द्रोण गुरु पाये ॥
आशिरवाद तुरतही दीन्हा । धन्य धन्य अर्ज्जुनको कीन्हा ॥
कीन्हेउ मित्र तुम स्वार्थ हमारा । अबते पारथ नाम तुम्हारा ॥
तुम्हरे सन्मुख खल विनाशा । गुरु हर्ष होइ वचन प्रकाशा ॥

यही प्रकार भक्त व्यवहारा । भयो सभा सो सुनहु भुवारा ॥
अपने गृह पारथ तब जाई । परमहर्ष भो देखत माई ॥
पाण्डव या विधि सुनौ कहानी । जाते होय पाप सब हानी ॥
सुनि मनवांछित सो फलपावहि । अन्तकाल वैकुण्ठ सिधावहि

पाण्डवविजयी कथा यह राजा सुन दे कान ।
विजय होय सब जगत में भल होय क्षय जान ॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

राजा सुनहु कथा सवधाना । जाते पाप होय क्षय माना ॥
दुर्योधन तव रच्यो उपाई । पाण्डव पुत्र प्रबल भे आई ॥
भीमसेन अति दुष्ट जु अहई । सदा विवाद जु हमसे करई ॥
भाषा जाय तातके पासा । दुर्योधन नृप होय उदासा ॥
दिन दिन होत सबै बरियारा । तात करो कछु मन्त्र विचारा ॥
पांचौं पाण्डव राज्य हमारा । राज्य हमारि जु कहैं पिचारा ॥
निशिदिन देखि क्रोध हम पावहि । सदादुष्ट औषध परखावहि ।
करो तात कछु मन्त्र विचारा । होइ निष्कण्टक राज्य हमारा ।
जानो तात सत्य मनमाहीं । [illegible] तो दांचो नाहीं ॥
[illegible] होत सब [illegible] ।

तराष्ट्रक मन्त्री हंकारे। वैठि इकान्तहि मन्त्र विचारे ॥
न्त्रिनते राजा तव कहई। मोर पुत्र तौ राजा अहई ॥
ाण्डव पुत्र राज्य मन लावे। पिता !राज्यके सवहि सुनावे ॥
रौ मन्त्र मन्त्री अनुसारा। होइ निकएटक पुत्र 'हमारा ॥
तराष्ट्रको बात सब सुनी। मन्त्री मन्त्र करत हैं पुनी ॥
न्त्री कह सब मन्त्र विचारा। सावधान ह्वै सुनौ भुवारा ॥
र्ब्बल शत्रु जानिके राई। निश्चिन्तहि ह्वै रहौ न भाई ॥
द्ध करन औ यत्न प्रकाशा। जाते शत्रु होय तव नाशा ॥
ाधिहिसे सब हो सवधाना। जाते व्याधि न होत निदाना ॥
त्रु दुर्ब्बल अग्नि समाना। चणमा भस्म करै जग जाना ॥

व्याधि शत्रु अरु नदी जल, स्त्री पावक अरु नीर।
इन विश्वास न मानिये, सुनौ मन्त्र सो धीर ॥

रिये यहै मन्त्र ठहराई। तत्कालही जु जाइ नशाई ॥
ीरज कीन्ह सिद्धि तौ होई। करै उतायल भुलवै सोई ॥
ह कहिके मन्त्री सब आये। मन्त्र विचारन को मन लाये ॥
ालो नाम जु मन्त्री अहई। दुर्योधन राजासों कहई ॥
न्त्र हमार सुनौ जो राऊ। करो एक परपञ्च उपाऊ ॥
ाच भवन करिये निर्माना। तामहँ जारहु शत्रु निदाना ॥
हि मन्त्र सबही ठहराई। यत्न करौ जो होइ सहाई ॥

सौ वान्धव मिलि मन्त्र करि, गये पिताके पास।
प्रेमहर्ष मनमें बहुत, करत वचन परकास ॥

दुर्योधन दुश्शासन अहैं। सो सब बात तात सों कहैं ॥
लाक्षा भवन करो निर्माणा। जामें पांचौ तजिहैं प्राणा ॥
सुनिकै मन्त्र सबन मन भावा। वरुण नगर में महल बनावा ॥
लक्ष भवन की आज्ञा पाये। वरुण नगरमें महल बनाये ॥
पठये विदुर देखिबे काजा। कीन्हों लक्षकेर सब साजा ॥
देखत विदुर चकृत तब भयऊ। यह तो पापकि रचना ठयऊ ॥
विश्वकर्मा ते विदुर सुनायो। तहाँ सुरङ्ग एक बनवायो ॥
ताके ऊपर खम्भ लगावा। याहि प्रकार विदुर बनवावा ॥
रत्न मुद्रिका करसों लीन्हा। यवई बोलि हाथ तब दीन्हा ॥
दुर्योधन जानैं नहिं जैसे। भाई सुनौ मन्त्र यह ऐसे ॥

यहि प्रकार ते विदुर करि, गे दुर्योधन पास।
उत्तम ठांव भवन भयो, कहिन बात परकास ॥

लक्ष भवन यहि रूप बनाये। कुन्तीको धृतराष्ट्र बुलाये ॥
भीमरु दुर्योधन इक ठाऊ। बनत नाहि अस बोलत राऊ ॥
वरुण नगर में महल बनाये। तहँ तुम रहौ परम सुख पाये ॥
सुनिकै कुन्ती सच करि माना। करि प्रणाम तब कीन पयाना ॥
पांचों पुत्र सङ्ग लै लीन्हा। वरुणनगर तुरन्त शुभ कीन्हा ॥
देखा उत्तम महल बनाये। परमहर्ष तब कुन्ती पाये ॥
ब्राह्मण भोज प्रतिष्ठा कीन्हा। विविध दान विप्रनकहँ दीन्हा ॥
[illegible] नाम एक व्याधा रहै। पञ्च पुत्र एक इस्त्री रहै ॥
[illegible] गये [illegible] मांहि शिकारा। गृहमें स्त्री पांच कुमारा ॥

बनमहं जन्तु एक नहिं पाये। महासोच व्याधा मनलाये।
एक मृगी तब देखा, गर्भवन्त बनमांहि।
परसवकाल निकट भयो, व्याधा देखा नाहि॥
चारो दिशि तब घेरा जाई। दक्षिण दिशि महं जाल बिराई॥
उत्तर पावक पूरब श्वाना। पश्चिम दिशिमहं बान सन्धाना॥
मृगी सुगर्भ व्यथा उपजाये। चहुदिशि बन्ध उबार न पाये॥
तब तो मृगी करै हरि ध्याना। यहि औसर राखो भगवाना॥
दीनबन्धु आरतिके नाशन। बन्दि उधारो यह गजडासन।
अपनो तन बैरी है आपौ। दुःख समुद्र मांह मन कापौ॥
बहु प्रकारते अस्तुति करी। तब रचना कीन्ही यह हरी॥
घटा पवनते जाल उड़ाये। नीर वृष्टि के अगनि बुझाये॥
व्याघ्र भक्ष्य करि स्वानहिं धाई। परो वज्र व्याधा सिर जाई।
हर्षित मृगी प्रसव तब करी। आरत दुखभंजन श्रीहरी॥
कष्टमांह जो सुमिरै, आरतनाद प्रमान।
आरतभञ्जन नाम है, सबलसिंह चौहान॥
व्याधा तेहि बन छाड़ेउ प्राना। क्षुधावंतलिय सुत सब जाना
जाना आज रह्यो बनमाहीं। एकौ जन्तु तु पायो नाहीं॥
ब्रह्मभोज कुन्ती जो कीन्हो। सोऊ देश सुन्यो जो लीन्हो॥
उहां गये कछु पाण्डव भाई। पांचौ पुत्र सङ्ग ले जाई॥
देखि कुन्ति तब पूछति बाता। जानि कौन उत्तम सख्याता।
नरी कहै पाण्डु सख्याता। कुन्ती नाम मोर सुनु माता॥

मम सुत अहैं युधिष्ठिर देवा । अर्ज्जुन भीम नकुल सहदेवा ॥
सो सहदेव पुत्र लघु अहै । सुनि हर्षित मन कुन्ती कहै ॥
पति सन नाम देउ सख्याता । हम तुम दोनो भये संघाता ॥
भोजन पान करी परमाना । राति रही तहं करि अस्थाना ॥

निशा भोग जब रावि सो उल्का पावक लाव ।
बाढ़े धूम्र अन्ध भो पावक प्रबल बढाव ॥

पघिले लाख सो चुइ चुइ परै । कुन्ती बिकल सो रोदन करै ॥
युद्ध भीम सहदेवहि कहै । जानो पन्थ कौन दिशि अहै ॥
तब सहदेव कहै हंसि बानी । खम्भ ठांव पूछे सुज्ञानी ॥
यह तो खम्भ उखारहु साईं । उत्तम मारग विदुर बनाई ॥
भीम सो खम्भ उखार्यो नाहा । उत्तम मारग देख्यो जाहा ॥
चले तीन मारग सब साईं । कुन्ती माता संगहि लाईं ॥
गदा भूलि भीम तब आवै । ताहि लेनको फेरि सिधावै ॥
लैके गदा चले जब ताका । लागी रसना पावक हाका ॥
तबही भीम विनय अति कीन्हें । पावक पाह कहे तब दीन्हें ॥
आप समान एक सो देहौं । आज्ञा सत्य सत्य तव पैहौं ॥

धर्म्मज विकल कृष्णको टेरयो। हे यदुनाथ अग्निने घेरयो॥
रक्षा करहु नाथ दुखहारी। हम अनाथ हैं शरण तुम्हारी॥
कीन्हो कृपा भक्त भयहारी। धर्म्मराज भरोस भयो भारी॥
धर्म्मपुत्र बोले तब बानी। भ्राता गणित करो सज्ञानी॥
तब सहदेव गणित करि भासा। ज्योतिष भेद करे परकासा॥
भीमसेन यह खम्भ उखारें। तौ प्रभु यहि दुख शीघ्र उबारें॥
मारयो गदा वृकोदर तबहीं। टूटयो खम्भ सुरङ्ग भयो जबही॥

पावक सन विनीत करी, गदा लीन्ह तब वीर।
पाँच पुत्र माता सहित, बनहिं चले मति धीर॥

सुरङ्ग मार्ग तब कीन पयाना। पहुँचे नदी तीर परमाना॥
करि अस्नान चले तब राई। बन बन चले जु पांचो भाई॥
कुन्ती माता को सङ्ग लीन्हा। यही प्रकार गमन तब कीन्हा
लाक्षा गृह पावक तब जारा। लागी जाइ स्वर्गसों धारा॥
नगर लोग सब रोदन करई। पाण्डव विना धीर नहिं धरई
हाय युधिष्ठिर वृकुदर बीरा। हा कुन्ती तुम तजे शरीरा॥
हा माद्रीसुत तव बल धारी। नगर लोग रोदन कर भारी॥
पांच पुत्र ले जरी सो ताहीं। व्याधा तिया पुत्र जो आहीं॥
धृतराष्ट्रक राजा के पाहा। दूतन बात कही सब ताहा॥
रोदन महा भयो भयकारा। धृतराष्ट्रक रोदन विस्तारा॥

विदुर आदि रोदन करैं, नगर लोग विस्तार।
कपट रूप धृतराष्ट्रक, रोदन करत अपार॥

क्रियाकर्म्म तब तिनको कीन्हा । विप्र बुलाय दान बहु दीन्हा ॥
याहि प्रकार दुष्ट मन राजा । दुर्योधन कीन्हो पुर साजा ॥
यहि विधि लाचाभवन जरावा । जरत पाण्डवन कृष्णबचावा ॥
श्रीहरि सदा भक्त रखवारा । नाशहिं पाप उतारहिंभारा ॥
सुनु राजा जनमेजय बाता । याहि प्रकार वंश विख्याता ॥

आदि पर्व गाथा सुनौ, कहौं भाषि संक्षेप ।
श्रवण पठनते राजन, रहत पाप नहिं लेप ॥

इति एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

सुनुराजा अब कहौं बखाना । कुन्ती वनकहं कीन पयाना ।
पांचौ पुत्र संग करि लीन्हा । तबहिं प्रवेश महावन कीन्हा ॥
थकित भई तब कुन्ती माता । क्षुधा तृषाते दुर्व्वल गाता ॥
भीमैं कुन्तिहि कन्ध चढ़ाई । सहदेव नकुल गोद लै जाई ॥
धर्मराज अर्जुन दोउ भाई । एक गोद में दोऊ चढ़ाई ॥
महाबली हैं भीम भयङ्कर । प्रलयकालमें जैसे शङ्कर ॥
यहि प्रकार ते वन पग धारी । चले जात सुमिरत गिरिधारी ॥
चलेजात मानहुँ अति रङ्का । महाबली है भीम अशंका ॥
सन्ध्या कालहि उतरे जाई । क्षुधा तृषा लागी बहुताई ॥
कुन्ती दुःख सहै नहिं भारा । क्षुधा तृषा ते तनु विकरारा ॥
इक वृक्षहि तर राखिनि जाई । भीम करन जल हेत उपाई

जलके हेत वृकोदर, बहु वन खोजत जाइ ।
चारिबन्धु अरु कुन्ती, तब निद्रा बहु आइ ॥

वनमहं भीम लयो जल जाई । पत्र पलाशक दोना लाई ॥
जल ले भीम चले तब धाई । मातु सहित सोवें सब भाई ॥
निद्रामग्न पांच जन होई । करहि विलाप भीम बल सोई ॥
बनके मध्य मिलो जल नाई । करत विलाप भीम बहुताई ॥
माता देखि भीम दुख नाना । विधिचरित नहिं जातबखाना ।
विचित्रवीर्य्यकेर बँधु अहै । शूरसेन न्टप कन्या कहै ॥
पाण्डुक रानी जननि हमारी । क्षुधा तृषा ते दुःखित भारी ॥
भूमिहि मांहि परे सब भाई । क्षुधा तृषाते अति दुख पाई ॥
राज्य देश सब छूट हमारा । सहे दुःख वनमांझ अपारा ॥
जासु तेज जहँ वीर भुवारा । तासु दुःख अस सहै को पारा ॥
धृतराष्ट्रक दुर्बुद्धि विचारा । जन्मेउ वंशहि धर्म्मविसारा ॥
दुर्योधन पापी मति भारा । कर्ण आदि सबहैं अविचारा ॥

करत विचार जु भीमतहँ, चारि बन्धु हैं सैन ।
कुन्ती जननी सहित सब, रोइ भीम कह बैन ॥

ताही समय हिडम्बक दानो । वहि वन रहै सो कालसमानो ॥
मानुष गन्ध पाय विशेषा । उच्च वृक्ष चढ़ि के तब देखा ॥
देखेउ मानुष छः जन अहै । बहिनि हिडम्बीते यह कहै ॥
मानुष को धरि ले आवहु । परमानन्द ते भोजन पावहु ॥

सुनत हिडम्बिनि आई तहाँ। भीम आदि बन्धव सब जहाँ ॥
देखि हिडम्बिनि भीमहिं कैसा। महादिव्य पर्व्वत सम जैसा ॥
देखि भीम कहं मोहित नारी। तब यहि भांति वचन उच्चारी ॥
बन्धव मोर हिडम्बहि नामा। हमको तिन पठयो यहि कामा ॥
सहित तुम्है छः बन्धव कारण। यह देखौ आई हति मारण ॥
रूप तुम्हार मोर मन लागा। कामदाण हिरदय में जागा ॥

परिचय देहु न आपन, भाखहु नाम विशेष।
परम सुन्दरी कौन सो, कत बन कौन प्रवेश ॥

तुम्हहि वरण चाहत हौं आपहि। पै हिडम्ब शंका मन आवहि ॥
सुनत वृकोदर भाषेउ बाता। यह सुन्दरी अहै मम माता ॥
ये मम बन्धव हैं ये चारी। यह कन्या ते कहा विचारी ॥
जो इन आयउ पास हमारा। तौ हिडम्ब का करै तुम्हारा ॥
[illegible] बन्धव का करिहैं। काहू के डर हम नहि डरिहैं ॥
सुनत हिडिम्बिनि हर्षित भयऊ। तबहि वृकोदर [illegible] ॥
[illegible] देखि [illegible]। क्रोधित ह्वै [illegible] ॥
[illegible] भगिनि मानुष तनुधारी। [illegible] ।

मेरि पियारीभै यह नारी। तै मतिहीन चहत है मारी॥
जेतक वल तनु अहै तुम्हारा। देखव तेज आज परचारा॥
सुनत हिडम्ब क्रोधसों कहै। आजु काल जाना तव गहै॥
धावा क्रोधवन्त इक वारा। गहिकै कर दैत्यहि फटकारा॥
पराजाइ दश धनुके पारा। तुरतहि उठि धावा विकरारा॥
भीमहिं दानव धरि फटकारा। आपु तेजतै भीम सँभारा॥
वृक्ष उखारि दैत्य लै धावा। भीम वृक्ष तव एक चलावा॥
वृक्षहि वृक्ष निवारण भयऊ। वृक्षयुद्ध तव निष्फल गयऊ॥
दूनों महाबीर वल योधा। दूनौं सरस आपने क्रोधा॥
कुन्ती सहित जो बन्धव चारी। छूटी निद्रा चेत सँभारी॥

देखा तहा हिडम्बि को, रूप अनूप तरङ्ग।
देखत कुन्ती देवि तब, पूंछत ताके सङ्ग॥

कहौ कहा तुम अपनो नामा। कौन हेत कीन्हों वन ग्रामा॥
को तुम देव दैत्य की नारी। आपन अर्थ कहौ विस्तारी॥
करि परणाम हिडम्बिनि कहई। हमतौ जाति राक्षसिनि अहई।
भाइ मोर हिडम्बक नामा। तिन हमंहीं पठये यहि कामा॥
पुत्र सहित मारण तुव हेता। यहि कारण हम आइ सचेता॥
पुत्र तुम्हार देखि हम पावा। मोहित भई मोह मन आवा॥
हमतौ वरै पुत्र तुव कारण। बन्धु मोर तौ आयो मारण॥
तुम्हरे सुतसों तेहि रण ठाना। संगर महा होत मैदाना॥
त बात तब चारौं भाई। तुरतहिं देखि भीम तेहि ठांई॥

महायुद्ध दानव के साथा। अर्जुन कहा भीमसों गाथा॥

भर्म करौ जनि बांधव, दुष्ट जन मारव आइ।

नातर तुम वैठो इहाँ, हम यहि मारन जाइ॥

पारथ वचन सुनत [illegible] क्रोधा। पार्थ दैत्यको अतिवल योधा॥
तव दानवको भीम पछारा। मुष्टिक घाउ उदरपर मारा॥
लागत घाव भव्द् वहराना। परा भूमिमें छाँड़ेउ प्राना॥
मारयो दैत्य हर्ष तव कीन्हा। दुष्ट दैत्यको यमपुर दीन्हा॥
कन्या सो मानुष तनु धारी। भीमके सङ्ग करत सुख भारी॥
नाना गिरि वन पर्व्वत देखा। पांच वन्धु अरु कुन्ती पेखा॥
सङ्ग हिडम्बिनि पियके पासा। द्वीप द्वीप देखा परकासा॥
हिडिम्बिनि गर्भ पुत्र अवतारा। नाम घटोत्कच वीर अपारा॥
घटोत्कच सु नाम विस्तारा। अस्त्र भस्त्र सिखये विस्तारा॥
तवहि हिडम्बी कहत बुझाई। जाउँ देश तव आज्ञा पाई॥

यम सुमिरख जवही करौ. देखा वचन तुम्हार।

जो आज्ञा तुव पावऊँ. जाउँ देश अनुहार॥

ऐसी पुत्र कहै यह वानी। सुनतै भीम हर्ष अति मानी।
सुमिरन आऊं पास तुम्हारे। जाउ देश अवही [illegible]॥
[illegible] पाहि भीम सों कहई। आन देशको जाना चहई॥
[illegible] आज्ञा तव कुन्ती दीन्हा। लै संग पुत्र गवन [illegible]॥
[illegible] कथा मन लाई। लै सुत देश हिडम्बी [illegible]

पांचो बन्धव वनमें रहैं। राजा आगे मुनिवर कहैं॥
देश देश अरसत ही राई। माता सँग लै पाँचौं भाई॥
कुन्तीको दिन वनमहँ गयऊ। इकदिन व्यासके दरशनभयऊ
कुन्ती कीन्हो मुनिहिं प्रणामा। पांचौं बन्धु चरणपर जामा॥
दुखी देखि पाण्डव वनमाहीं। करुणा कीन व्यासमुनि ताहीं
आशिर्वाद व्यास तब दीन्हों। औ कुन्ती सों बोलि लीन्हों॥
सुत तुम्हार होइ नृप संसारा। दुष्टन केरो बल संहारा॥
मानहु इक उपदेश हमारा। एकचक्रय ग्राम संवारा॥
ब्राह्मण एक अहै तो ताहां। इस्थिर होहु ताहि गृह साहां॥

एकचक्रको नगर यह, तहां रहो तुम जाइ।
यह कहि व्यास सिधारयो, कुन्तीको समुझाइ॥

कुन्ती एत सङ्ग सब लीन्हा। तब यकचक्रनगर शुभ कीन्हा
रहे जाइ इक द्विजके गेहा। भीख मांगिकै पालत देहा॥
पाचो बन्धु मांगि ल आवैं। जननीको लैकै पहुँचावैं॥
माता रांधत करत सुसारा। अर्द्ध भीमको देत अहारा॥
आधा चारि बन्धु औ माता। भोजन करैं प्रेम सुख गाता॥
बहुत दिना बीते यहि देशा। माता सहित जु धर्म्मनरेशा॥
ब्राह्मण गृहमें रुदन जो करई। महा विलाप चित्तमहँ धरई॥
रोदन सुनेउ विप्रगृह माहीं। कुन्ती मन चिन्ता तब आहीं॥
पुत्री पुत्र नारि लै साथा। रोदन करत बहुत द्विजनाथा॥
कौन दुःख तोहिं भा द्विजराई। भीमके पाहँ कहत समुझाई

ऐते दिन द्विज गृह रहे, कहा दुःख द्विज पाव।
भीमसेनके आगे, कुन्ती कहत सुभाव॥

जाते द्विजकि आपदा हरई। सोई भीम करौ तुम सहई॥
यह तौ है निज धर्म्म हमारा। कुन्ती तब यह कह्यो बिचारा।
ब्राह्मण दुःख जो क्षत्रिय देखहि। टारै दुःख सो क्षत्रिय लेखहि
इनके घरमें बास हमारा। अब चहिये इनको दुख टारा॥
यहै धर्म्म है पुत्र हमारा। यही धर्म्मते उतरब पारा॥
धर्म्म करत जो पै दुख होई। तबहुँ धर्म्म नहिं छाँड़त कोई॥
धर्म्महिते होई धन राजा। धर्म्महिते होई शुभ काजा॥
तातै भीम कहत समुझाई। जाते द्विजको दुःख नशाई॥
सुनत वृकोदर करै विचारा। कौन दुःख जो है करनारा॥
जो माताकी आज्ञा होई। अवशि विचार करब हम सोई॥

मात पिताकी आज्ञा, पुत्र करत परमान।
धन्य जन्म ताको जगत, पावै पद निर्वान॥

भीमसेन माता समुझाई। कौन दुःख द्विज पूंछहु जाई॥
टारौं दुःख प्रतिज्ञा यहै। भीमसेन माता सो कहै॥
मारौं दुष्ट दैत्य संहारौं। जो संकट द्विजके सो टारौं॥
अब माता पूछो तुम जाई। कौन हेत रोवत द्विजराई॥
माता ताको धीर धरायो। जो कुछ कष्ट पूंछि सो आयो॥
कुन्ती नहै हर्ष मन भई। तब द्विजपहँ सो पूंछन गई।
रोवै ब्राह्मण करै विलापा। रोवत पुत्र एक पुनि बापा।

कन्या रोवति आप पुकारी । विकलवंत तव बहु द्विजनारी ॥
ब्राह्मण कहत जबै लग ताहीं । तुम तीनों रहि हो गृहमाहीं ।
पुत्र कहा जो मैं चलि जाऊं । पितुके ऋण उबार तौ पाऊं ॥
स्त्री अरु कन्या कहैं, हम जैहैं चलि ताह ।
तुम रहिहौ जो जगतमें, बहुतक होइ विवाह ॥
रोवत हैं चारों बिलखाई । तव कुन्ती पूंछनको आई ॥
कौन दुःख रोदन करु भारी । सो तुम हमसे कहो विचारी ।
हम हैं तुम्हरे गेह मंझारा । तुम दुख छूटै धर्म्म हमारा ॥
सोई दुःख कहौ द्विज मोहीं । सत्य कहौं दुख का द्विज तोहीं
मैं तो करब दुःख परत्राना । मम आगे तुम करौ बखाना ॥
हम तौ दुःख छुटाउब भाई । तव आशिष हमार दुख जाई
आशिष तोर यहै कल्याना । रोदन तजिकै करौ बखाना ॥
तुव रोदन देख्यो अति राई । कारण हम पूंछन को धाई ॥
कौन दुःख केहि त्रासते, रोदन विस्मय आहिं ।
ब्राह्मणिपै कुन्ती तबै, पूंछै हित गहि बाहिं ॥
तबै ब्राह्मणी कहै विचारी । आपदा मोरि सकै को टारी ॥
नाम बकासुर दैत्य जु आहै । प्रतिदिन सो मानुषबलि चाहै ॥
एकचक्र नगरी कर राजा । मानुष एक खात नित साजा ॥
वर्ष पांचमा यक घर परै । ता घरको नर भक्षण करै ॥
यक मनुष्यको चहै अहारा । सो आपद है आजु हमारा ॥
... जनको शक्तिहि नाहीं । यह चरित्र होवै गृह माहीं ॥

[illegible] पुत्र पुनि घर अहै। काहि देउ रोवत द्विज कहै॥
जो सब जाइ नगर भुवारा। धारिउ जनको करहि अहारा॥
भागै तीन लोक नहिं जाऊं। यहि विचारसहँ दुःखहि पाऊं॥
सुनि कै कुन्ती सुतपहँ जाई। भीमादिक जहँ हैं सब भाई॥

तव कुन्ती कह विप्र सुनु, अस्तुत वचन सुधार।
नगर तुम्हारे रहतहै, है तौ धर्म्म हमार॥

एक पुत्र घर कन्या एका। तुम दोउ प्राणी कहे विवेका॥
पांच पुत्र वल अहै हमारा। तहँ तो करौं तोर उपकारा॥
भीम नाम जो सुत है मोरा। देखा नयनन ताकर जोरा॥
मारेउ दैत्य एक वल धारी। सोई पुत्र मोर वल भारी॥
कुन्ती धीर विप्र कहँ दीन्हा। आइ भीम ते वैसे कीन्हा॥
सुनत भीम भा काल समाना। अवहिं वकासुर तजिहै प्राना॥
मारि वकासुर करौं निपाता। भाख्यो भीम सत्य यह वाता॥
सव लोगनकर करव उधारा। तवहिं वृकोदर नाम हमारा॥
भोजन कछुक देहु मोहि माता। मारि वकासुर करव निपाता॥

[illegible] भोजन अरु अन्न कछु वांधि लयो कसि फेंट।
[illegible] करत चले तव करन दैत्य सों भेंट॥

[illegible] नहांते जाई। अरे वकासुर खासि न आई॥
[illegible] तो खासि न मोही। जेहिते मरन दना अब तोही॥
[illegible] दै भोजन करही। सुनतै क्रोध वकासुर [illegible]॥
[illegible] कछु दीन्हा। भीमसेन तव भोजन कीन्हा॥

मारि हँकारि जहां वकराई। सुनतहि क्रोध वकासुर धाई॥
चला वकासुर क्रोधित अयना। देखि भीमको अपने नयना॥

भोजन करते ठाढ़तहँ, देखा दैत्य प्रकास।
क्रोधवंत तव भाष्यऊ, रूप वर्णि नहिं जास॥

देखत दैत्य करत उपहासा। मनमहं परम क्रोध परकासा॥
दूनौं हाथ दोरिकर मारा। करेउ न शङ्का पवनकुमारा।
धाय दैत्य तब गो लपटाई। एक चपेटा जाय लगाई॥
खातहि अन्न वृकोदर वीरा। वकासुरहिं तव धरेउ शरीरा॥
करिकै अचमन भीम सुजाना। वाम हस्त ते गह्यो निदाना॥
तव फटकारि दैत्यकहं दीन्हा। उठिकै कोप महावल कीन्हा॥

वृक्ष एक लै धावा महावीर वलधीर।
भीम गह्यो तरु एक तव रच्यो युद्ध गम्भीर॥

वृक्षहि वृक्ष निवारण भयऊ। महाक्रोध तव दानव ठयऊ।
वृक्ष उखारि एक कर लयऊ। दैत्यके मस्तकसों पुनि दयऊ॥
तवहिं वकासुर वृक्ष उखारा। महाक्रोध करि भीमहिं मारा
वृक्ष वृक्ष ते निरफल जाई। महायुद्ध प्रकटत भो आई॥
तव फिरि मल्लयुद्ध दोउ ठाना। उठ्यो गर्द लोपित भे भाना।
हाथ हाथ उर उर लपटाना। महामार नहिं जात वखाना॥
ठोकत जांघ बजावत तारी। पहिरत काछ भिरत संभारी॥
नगर लोग सव अचरज माना। भिरे वीर दोउ मेरु समाना।
पीछे भीम हु उठे रिसाई। पकर्‌यो तवै वकासुर धाई॥

पीठि उपर जङ्घा दियो भारा । धरि ग्रीवा तब भूमि पछारा ॥
मुखते रुधिर धार बहिराना । परा भूमिमें छाँड़ेउ प्राना ॥
मारि बकासुर भीमं भुवारा । सो द्विजकर आपदा उधारा ॥

मारा भीम बकासुरहि, द्विज हरष्यो मनमाह ।
कुन्ती परमानन्द भै, सुनो बात नरनाह ॥

इति द्वादश अध्याय ॥ १२ ॥

हर्षितगात द्विज आशिष दीन्हा । पूजेउ भुजा हर्ष मन कीन्हा ॥
मारि बकासुर भेटेउ भाई । कुन्ती चरण भीम परे जाई ॥
रहे तहाँ पुनि हर्षित गाता । सुनु जनमेजय कुलकीवाता ॥
तब व्यास मुनि आये तहां । चक्र नगर पाण्डवहें जहां ॥
पांडव सबै कीन्ह परणामा । मुनिसों कह पूरे मन कामा ॥
आसन दीन्ह कीन विश्रामा । तब बोले वच व्यास ललामा ॥
पांचो बन्धुन कहत बुझाई । कन्या एक अहे सुनु राई ॥
[illegible] नप करि शङ्कर आराधे । न्टप र विजय वर इच्छा बांधे ॥
महादेव सेवा मन लाये । तुष्टवंत गिरिजापति आये ॥
मांग मांगु बोलत गंगाधर । हर्षित कन्या मांग्यो नव वर ॥

पति पति देवहु वचन कहि, मांगे पांचो बार ।
भुवन विजय वर शंकरहि, पूरण आश हमार ॥

तुष्टवंत शंकर तब कहही । जो तुम्हरे मन इच्छा अहहीं ॥

पांचौ पति शुभ होइ तुम्हारा। भुवन विजय जीतहिं संसारा॥
सुनिकै विलखि वदन भै वारी। तब शंकर ने कहा विचारी॥
पति नहिं दीन कलंक लगाये। भल शंकर पूजा वर पाये॥
शैलसुता तब अरथ सुनाई। पूर्व्वजन्मकी कथा बताई॥
तुव पतिते कुरु होव संहारा। पुहुमीकेर उतारब भारा॥
पुरवै शाप केर फल पाये। पाछे शङ्कर वचन सुनाये॥
तुव पति कौरव वंश संहारा। यह वर शङ्कर दीन्ह उदारा॥
द्रोपदराज केर सो बारी। व्यास कहैं यह भेद विचारी॥
दोय वन्धु तासू के अहैं। ताका भेद व्यास मुनि कहैं॥
धृष्टद्युम्न द्रोणको मारै। शीखण्डी भीषम संहारै॥
यहि प्रकार ते व्यास बुझाई। सुनत चले जहं पांचौ भाई॥

तीन ग्रामके निकट महं सबै रहे तब जाय।
यह उपदेश व्यास दै गये महावन राय॥

सुनिकै पञ्चबन्धु मनभाये। जोइ व्यास उपदेश बताये॥
हर्षित चले परम सुख पाई। वन वन माह चले सुनुराई॥
कुन्ती मातु सङ्गमहं जाई। व्यास-उदेश हृदयमहं ध्याई॥
चले देश पञ्चाल-उदेशा। विपिनमाहं तब कीन्ह प्रवेशा॥
तपोरूप हैं पांचो भाई। कुन्ती मातु सङ्गही जाई॥

तापस वन पाण्डव चले, कुन्ती माता संग।
अमित देश वन उपवन, देखत चले सुसङ्ग॥

चलत फिरत आये पुनि तहां। मणिपुर ग्राम एक है जहां।

तहं गन्धर्व्व केर अस्थाना । चित्ररथहि विश्रामहि जाना ॥
तासु रहस्य कथा सुनि राई । चित्राङ्गद तेहि कन्या जाई ॥
निर्तत रहे गर्व्व तेहि कीन्हीं । तबै चित्ररथ शाप सुदीन्हो ॥
ताल भङ्ग हमहीं दुख भारी । ग्राह होसि ता कारण बारी ॥
ताते ग्राहक भई सो नारी । रहत तहां सरवर मझारी ॥
पांच बन्धु कुन्ती महतारी । तासु नगर पहुंचे अनुसारी ॥
चारौ बान्धव इत उत जाहीं । भिक्षा हेतु नगरके माहीं ॥
पारथ गे नहानके काजा । ग्राह रहै सो सर सुन राजा ॥
पारथ सरवर प्रविशे जाई । सोई ग्राह चरण गह्यो आई ॥

पूर्व्व शाप परसंगते, मोक्ष कहै तब ताहि ।
पारथके पग पर्शते, शाप सिन्धु तरि जाहि ॥

दिव्य रूप सो नारी भयऊ । पारथ पाहिं विनय तब कियऊ ॥
ताते पारथ पद गहि आई । तुरतहि मुक्त शाप सों पाई ॥
पूर्व शाप पिताकी पाई । भा उधार तुम परशि गुसांई ॥
ताते हमहुं सत्य करि जाना । तुम पारथ जानत परमाना ।
मैं तव पद छांड़ौं अब नाहीं । चलौ हमारे पितुके पाहीं ॥
मैं तव दासी पारथ जानौ । कपटहेतु तुम जनि भय मानौ ॥
पारथ कहै सुनौ बरनारी । जो तुम आशा करौ हमारी ।
तासु नगर रहौ बर नारी । तो पुनि पैहौ दरश हमारी ॥
यहि प्रकार धीरज जब दीन्हा । तासु बचन तब [illegible]

करिस्नान तव पार्थ जू, गये तुरत निजवास।
पांचौ बान्धव तहं रहैं, प्रात चले परकास॥

चित्राङ्गद तब भई उधारा। पांच पाण्डवा तव पगुधारा॥
ब्राह्मण रूप चले तौ आई। नाना देश सो देखत जाई॥
मांगत खात चले तौ ताहां। पांचल देश देश है जाहां॥
चलतहिं देशनिकट तव गयऊ। महाहुलास चित्तमहं भयऊ
कृष्णदेव द्वारावति अहैं। मनमें बहुत विचारत रहैं।
द्रौपद राजा केरि कुमारी। शङ्कर पुजि पायो वर भारी।
इच्छा बर जो मांगहिं लीन्हा। पांच पतिन वर शङ्कर दीन्ह
ता कारण हरि करैं विचारा। पांच वन्धु हैं पाण्डु कुमारा
कुन्ती संग कहां धौं अहैं। मनहींमन श्रीपति ता कहैं॥
कन्याका शङ्कर वर अहैं। ता कारण हरि शोचत रहैं॥
ई कन्याकै पति जो होई। सकल कौरवा मारै सोई॥
पूरुब शाप भवानी पाई। तातै पांच पतिहि निरमाई॥

धर्म्मराज अरु पार्थ जो, भीमसेन बलवीर।
नकुलरुसहदेवकुन्तिका, कौने वन केहि तीर॥

सब जानत हैं अन्तर्य्यामी। भक्तहेतु जन्मे जगस्वामी॥
यहिं प्रकार शोचत भगवाना। कुरुदलपाप पहाड़ वखाना
दुष्टमनुष्य जन्म जो पावैं। साधुन कष्ट सदा मन भावैं॥
ऐसे श्रीपति करैं विचारा। मारत दुष्ट सन्त प्रतिपारा॥
मोर भक्त जन सङ्कट पावै। तातै मन उद्वेग जनावै॥

श्रीपति तबै गरुड़ हंकारा। तासों कहते नन्ददुलारा॥
भक्त मोर जो पाँचौ भाई। कौने वन हैं देखहु जाई॥
भेंट होइ तौ कहि सब बाता। द्रोपदकन्या चरित सख्याता॥
पञ्चालदेश रहौ तुम जाई। तहाँ स्वयम्बर होई भाई॥
कोइ स्वयम्बर जीतिहि नाहीं। तब पारथ जीतिहि वह ताहीं॥
सब राजासो अइहैं ताहां। द्रौपदनगर स्वयम्बर जाहां॥
दुष्ट लोग जानै नहिं पावैं। जाते मन उद्वेग बढ़ावैं॥
भाखेव मन मत करौ खम्भारा। मङ्गल सकल है साधु तुम्हारा॥
साधु कष्ट दुष्टहि अभिलाषा। तुष्टवन्त देवन तव भाखा॥

कन्या तासु अनूपहै, सब सों मङ्गलदाय।
भाखु जाय विनता सुत, पांचबन्धुकेठाय॥

गरुड़ कीन बेगिय परणामा। आज्ञा पाय चलेउ तेहि ग्रामा॥
वन वन सब सों खोजत जाई। नाना देश उपवन आई॥
पांचौंपाण्डव कहुँ नहि पाये। खोजत गरुड़ अनेकन ठांवे॥
इतही धर्मति राज बखाना। चारहु बन्धु हैं अग्नि समाना॥
पूर्व व्यास जो कहा विचारी। पञ्चाल देश की करहु तयारी॥
ब्राह्मण रूप रहतहैं ताहाँ। पञ्चालदेश नगरके माहाँ॥
हमरे श्रीपति अहैं सहाई। कारण कौन सोचिये भाई॥
सब जगत के तारण हारा। सन्त तारि दानव संहारा॥
धर्मराज की बातां सुनी। चारों बन्धुन मनमहँ गुनी॥
पाच बन्धु माता सङ्ग लीन्हें। तहँ मन चाहे तहाँ गमन कीन्हें

खोजत गरुड़ गये तब तहां। पांच पण्डु अरु कुन्ती जहां॥
देखत धर्मराज हर्षाना। मानहु दरश दये भगवाना॥
क्षेम कुशल श्रीकृष्णक सुने। परम हर्ष आनन्दित गुने॥
तब खगपति यह कह्यो सन्देशा। सुना सँदेश सु धर्मनरेशा॥
गरुड़ मिले यहि अन्तर आई। पाण्डवपांहि कहत समुझाई॥

श्रीपति कहेउ विचारिकै, सुनौ धर्मके राज।
पञ्चालदेश नृपकन्यका, तासु स्वयम्बर काज॥

द्रुपदराजघर द्रौपद वारी। तहां स्वयम्बर होइहै भारी॥
ताते श्रीपति हमहिं पठावा। सो सब बातमें तुम्हें सुनावा॥
सो कन्या पारथको बरै। कर्म लिखा सो कैसे टरै॥
ताते तुम अब चलिये ताहां। पाञ्चल देश द्रौपदी जाहां॥

कृष्ण संदेशते हर्षित, धर्मराज सुनि पाव।
भक्तिवश्य हरि जानेउ, उपजेउ हर्ष सुभाव॥

यह कहि गरुड़ तुरन्तहि गयऊ। धर्मराज हर्षित मनभयऊ॥
सुनि सन्देश चले अतुराई। कुन्ती सह वे पांचौ भाई॥
पाञ्चलदेश पाण्डवा जाहां। दक्षिण दिशा नगर के माहां॥
तापसरूप रहे तहँ जाई। भीख मांगि कै दिवस गवांई॥

तहां रहे सब पाण्डवा, तप स्वरूप धरि भेश।
यहि प्रकारसे पाण्डवा, रहते पञ्चल देश॥

सबतो दरशन चरण सम्हारे। आरतिभञ्जन कृष्ण हमारे॥
हैं हरि भगवाना। जाके नाम होव पतित्राणा॥

सब दिन सन्त हेतु तनुधारी। देत मारि सन्तनकहं तारी॥
हरिचरणन कहँ ध्यावहि ताही। रहे नगर द्रौपदके माही॥
द्रौपद राजा करै विचारा। कन्या गृह जो अहै हमारा॥
सो तो देवन कह्यो पुकारी। पारथको वरिहै यह नारी॥

लक्षागृहमें ते दहेउ, मेरे मन अन्देश।
देव वाक्य मिथ्या नहीं, करिहौं तासु उद्देश॥

तब राजा पूछत है भेऊ। सुत द्रौपदको कैसे भयेऊ॥
जैसा उपजा यादव नाऊं। ते दूनौं न्टप द्रौपद ठाऊं॥
पूर्व्व यज्ञ राजा तप कीन्हा। ते दोऊ मुनि आहुति दीन्हा॥
अग्निकुण्ड में जन्मेउ वारा। धृष्टद्युम्न शिखण्डि कुमारा॥
नाम द्रौपदी सो निर्मयऊ। जन्मै जन्म कन्याको भयऊ॥
देव वचन ते कन्या भयऊ। वेदन स्वर्ग वाणिनी कियऊ॥
यह कन्या ते कुरुबल नाशा। नभबाणी देवन परकाशा॥
यहिके भर्त्ता अर्ज्जुन होई। जाते कुरुवंशहि नशि सोई॥
पुरवाणी तब यह तब सुनी। पुत्र ते मृत्यु होइहै गुनी॥
द्रोणाचार्य है जाकर नाऊं। धृष्टद्युम्न तेहिप्राण नशाऊं॥
[illegible] पूरब तो सुनी। द्रुपदराज तब मन में गुनी॥

लाख भवन में दाह सुनि, मन में करै विचार।
[illegible] मिथ्या नाहिं, पारथ है संसार॥

[illegible] पावै। [illegible]
[illegible]। [illegible]

धनुषयज्ञ जब रच्यउ भुवारा । जाको मानुष कहेउ न पारा ॥
अति विस्तारिक कुण्ड खनाये । तेल कड़ाहे बीच धराये ॥
ताके तरे हुताशन लागी । जाको देखि वीरता भागी ॥
गाड़ा खम्भ वज्र कर ताहा । ऊपर खम्भ मच्छ कर आहा ॥
हीराकनि के नयन बनाये । ताके तरे सो चक्र भ्रमाये ॥
निशि दिनसो फिरतो विकरारा । देखत तजत धर्म संसारा ॥
जो कोऊ यह धनुष चढ़ाई । वेधत राहु बाणते आई ॥
मीन नयन में बेधहि बाना । सो कन्या पावहि परमाना ॥

यहै यन्त्र निर्माण करि, पठवा जगत सन्देश ।
जहां जौन नरनाह हैं, क्षत्रिय जो जेहि देश ॥

सावधान होय सुनहु नरेशा । देश देश पठये सन्देशा ॥
धनुष चढ़ाय खरग भौ पाऊ । मीन नयनमें मारे घाऊ ॥
सो कन्या पावै यह कोई । चारो वरण होय किन सोई ॥
यहै मन्त्र मनमहं ठहराई । द्रौपद राजा रच्यो उपाई ॥
देश देशके क्षत्री अहई । न्योते राजा द्रौपद चहई ॥

यहै मन्त्र द्रौपद करो, पांच पाण्डु उद्देश ।
देश देश यह वारता, दूत करै परवेश ॥

सुनु राजा अब यह मन लाई । देशन देश दूत तब जाई ॥
दुर्योधन बान्धव शत भाई । द्वारावती कृष्णपहं जाई ॥
सुरसरराज कलिङ्ग भुवारा । चित्रसेन राजा विस्तारा ॥
औरो देश अनेक भुवारा । सब तो जान राव विस्तारा ॥

देशन देश दूत फिरि आये। पाछे राजा वीर सिधाये ॥
दल साजे अरु किये सिंगारा। छत्रपती सब चलेउ भुवारा ॥
दुर्योधन कौरव सौ भाई। कर्ण सुशर्मा जेतिक राई ॥
चित्रसेन कलिङ्ग नरेशा। औरो भूप अमित परवेशा ॥
छप्पन कोटि पद्मदल आई। चल बल देव और पर राई ॥
शाल्यऽनुशाल्य आदि जे राऊ। द्रौपदपुर आये सब भाऊ ॥

एक एक सब राजा, दलबल सङ्गहि आय।
चले बहुत गर्वते, द्रौपदपुर कहं जाय ॥

सब कर आदर राजा कीन्हे। इच्छा भोजन सब कहं दीन्हे ॥
सब जन बैठे सभा बनाई। नानारूप वरणि नहि जाई ॥
द्विज सबलोके सङ्गहि साहीं। पांचो पाण्डव बैठे ताहीं ॥
तब द्रौपद नृप बोलन लागे। सबै भूप जनौके आगे ॥
राजसभा बैठे हैं जहां। तापसरूप पाण्डु हैं तहां ॥
[illegible]ठि सभा सब साज बनाई। नानारूप वरणि नहि जाई ॥
कन्या सब शृङ्गार तब कीन्हा। हाथमाहि जयमाला लीन्हा ॥
सब राजनको कन्यहि देखा। रूप अनूप जात नहि लेखा ॥
सब कहं देखि द्रौपदी नयना। धृष्टद्युम्न बोलेउ तब बयना ॥
[illegible] बेध जाके बल होई। वरि है द्रौपदि कन्या सोई ॥
[illegible] द्रौपदिहि सुनाई। चीन्हीं [illegible] जाई ॥
[illegible] दुःशासन अहई। विकर्ण [illegible] कहई ॥
[illegible] सुशर्मा भूपति भारी। चित्रसेन [illegible] ॥

एक एक सब राजन, देखा कन्या ताहि।
महावीर पुरुषारथी, बैठ सभाके मांहि॥

कन्या रूपते मोह भुवारा। आप आपुको करै शृंगारा॥
सुर आये सब चढ़े विमाना। यदुवंशी तहँ कौन पयाना॥
हलधर और प्रद्युमन वीरा। श्रीकृष्ण अनिरुद्ध गँभीरा॥
देव दुन्दुभी बाजत बाजा। अंतरिक्ष देवन रसकाजा॥
महावीर राजा हैं जेते। क्षत्री वीर पराक्रम तेते॥
तब कुरुनाथ शल्य अनुसारा। अश्वत्थामा आये भुवारा॥
अलिंग कलिंग के देश भुवारा। भोजवंश वीरन पगुधारा॥
पुत्र रु पौत्र वीर यदुवंशी। एकै एक करत पर हंसी॥
धनुष माहँ गुण देनके काजा। भये समर्थ न एकौ राजा॥
चक्र सुदर्शन कृष्ण पवाँरा। माया लोप लखैको पारा॥

चक्रराय प्रत्यक्षक, फिरता है दिन सोय।
राहु वेध भूपति करो, नहिं समर्थ जग कोय॥

तब भीषम बोले कहँ लागे। धृष्टद्युम्न कुंवर के आगे॥
हमतो व्याह करब नहिं भाई। पूरब शपथ कीन्ह हम राई॥
हमहिं जो लखिकै छेदन करई। कुरुपति को कन्या सो वरई॥
यह कहिकै तब शारंग लीन्हों। चरणभारते गुणबहु दीन्हों॥
तबहि शिखण्डी दरशन दीन्हों। महा खेद भीषम मन कीन्हों॥
जबहीं लक्षा शिखंडि कुमारा। तबहीं धनुष हाथ ते डारा॥

गुण उतारि तुरतहिं सो डारा। देखि शिखण्डी भीषम हारा॥
द्रोणाचार्य कोपि उठि जबहीं। भीषम वीर हारि गे तबहीं॥
करि प्राक्रम तब धनुष चढ़ाये। बाण हाथ तब तुरत चलाये॥
चल्यो सु बाण तेज गति धाई। लाग चक्रसो परो भु आई॥

लज्जित भे तब द्रोण, कृप, हारे सर्व्व भुवार।
सब राजा लज्जित भये, द्रौपद मन खम्भार॥

पारथ तपोरूप तहँ रहे। देखा हारि भूप सब गहे॥
द्विज समान ते पारथ आये। सब द्विज तौ परिहास मचाये॥
यक द्विज कहा जातहो काहा। हारे वीर महाबल माहा॥
महावीर नृप क्षत्री हारे। कन्या लाभ विप्र पगु धारे॥
सुना देखि द्विज बाउर भयऊ। यह कहि द्विज बैठारन लयऊ॥
गहियो भुज विप्रन बैठारा। वीर महाबल बैठ न पारा॥
पारथ उठे फेरि द्विज गह्यऊ। धर्म्मपुत्र तब द्विजगन कह्यऊ॥
जानि पराक्रम जाते तहां। बेधी राहु चपल दल महां॥
आपन तेज आप सब जाना। कारण कौन करो परमाना॥
कहिके विप्र छांड़ि तब दीना। पहुँच्यो जहाँ यन्त्र है मीना॥

कहत वीर सब राजहू, यों गुण सारँग लाव।
तौ यह विप्र होय नहि क्षत्रिय महा स्वभाव*॥

राजा करैं सबै उपहासा। [illegible] विप्र [illegible]।
पारथ दीठि [illegible]। [illegible] तेज [illegible]

* [illegible]

पारथ तब भुज धनुष चढ़ाये । अलख पञ्चसर गुरुते पाये ॥
सारा बाण क्रोध तब होई । मीन नयनमें बेधेउ सोई ॥
राहु बेध पारथ तब कीन्हा । हर्षित इन्द्र दुन्दुभी दीन्हा ॥
देखि विप्र हर्षित सुख पाये । वेदध्वनि आनन्दते लाये ॥
सबै भुवार देखि कहैं बाता । सबको मानमथ्यो द्विजज्ञाता ॥
गये पार सर निकसे जबहीं । झूठ मूठ बोले सब तबहीं ॥
लाज पाय तब पारथ वीरा । दूजे बाण गहे रण धीरा ॥
मारे मीन नयनमें बाना । अच्छे शर पारथ सर जाना ॥
और शस्त्र पारथ तब मारा । द्रुपदसुता जयमाला डारा ॥
देखत विप्र हर्ष सब कीन्हे । वेदध्वनि करिवे सब लीन्हे ॥

परम हर्ष सब ब्राह्मण, वेद उचारन हेत ।
जयध्वनि शब्द करत सब, क्षत्रिय भये सचेत ॥

देखत सब क्षत्रिय कह बाता । ब्राह्मण नहि क्षत्रिय सख्याता
अस्त्र गहे क्षत्रिय परचारा । भय नहिं कीन्हे मनहिं मझारा
द्विजको विधि क्षत्रिय अपमाना । एक मतै भे भूप अयाना ।
द्रुपदहि मारो नगर उजारो । कन्या पावक माहीं डारौ ॥
राज्य देश तौ देहु बहाई । पै इक विप्र बधो नहिं जाई ॥

यह विचारिकै भूप सब, द्रुपद गुरूपर धाव ।
पार्थ राहु को बेधेऊ, क्षत्रिय लज्जा पाव ॥

तब राजा शरणो द्विज आवा । पारथ धनुष हाथ पर भावा ॥
अस्त्र गहे राजा परधारा । अभय कीन्ह तहँ मन मंझारा ॥

कर्ण वीर धनुषहि लै धाये । दुर्योधन चक्रहि ते आये ॥
अर्जुन कर्णहि पूर्व विरोधा । कर्ण वीर बल अर्जुन योधा ॥
तपके तेज विप्र रण ठाना । चेति सूर्य्यसुत तब पछिताना ॥
जब देखा यह तौ कुरु राजन । लज्जा भई वीरके काजन ॥
दुस्सासन भगदत्त भुवारा । जयद्रथ सोमदत्त बरियारा ॥
जरासन्ध औरौ शिशुपाला । शल्यावधि जेतक भूपाला ॥
भूरिश्रवा सुशर्मा वीरा । अलिंग कलिंगके हैं रणधीरा ॥
शल्या शल्य और चितकरना । काशीपति विराटपुर बरना ॥

अंशुमान अरु कीचक, बलि अरु जितक भुवार ।
सकल वीर सब कोपेउ, यह द्विजकर संहार ॥

[illegible] शक्ति बाण की धारा । मुद्गर खड्ग अस्त्र परिहारा ॥
असंख्य शस्त्र द्विजपर सब वर्षे । महाराज दुर्योधन हर्षे ॥
[illegible] वीर पारथ सब पेखी । बाणहिं बाण परत सब देखी ॥
[illegible] बाण असंख्य अपारा । माया कीन्हेउ देव भुवारा ॥
[illegible] दुइ गुण ताहाँ आये । सो पारथ सारंग मनलाये ॥
[illegible] पाण्डव नन्दन । बरषत बाण बाणके खण्डन ॥
[illegible] आसमान भो अँधियारा । प्रलयकाल प्रकटेउ संसारा ॥
[illegible] छिपनेउ भाना । गज अनेकके मस्तक बाना ॥
[illegible] बहु मारा । अर्जुन एक अनेक भुवारा ॥
[illegible] मण्डल अनवारा । महायुद्ध प्रकट [illegible] ॥

वहुत अस्त्र तव वरषत, मानो सावनधार ।
अर्जुन वीर अकेलो, क्षत्रिय वहुत भुवार ॥

पवनके पुत्र वृक्ष लै धाये । नकुल और सहदेव जो आये ॥
दोउ पुत्रन सँग द्रौपद राजा । महायुद्ध खेलन महँ साजा ॥
भीम तौ युद्ध शल्यते ठाना । रथते शल्य परा मैदाना ॥
मातुलराज शल्य कहँ जाना । छाँड़े ताहि वधे नहि प्राना ॥
हाहा करि सब ब्राह्मण धाये । दशों दिशामें शोरमचाये ॥
कर्ण वीर तब बोल्यो बाता । तपको हेतु द्विजन के ताता ॥
सुनि सब राजा भये सक्रोधा । दशों दिशा तव करैं विरोधा ॥
महा मार कीन्ही प्रभुताई । दशों दिशाते छेड़ा जाई ॥
दशो दिशाते वर्षत वाना । महायुद्ध नहि जात वखाना ॥
जौन दिशाको पारथ ताकै । क्रोधवन्त वीरन रण हाँकै ॥

जौनो दिशि राजा सबै, क्षत्री वीर अपार ।
भार होत जेहि दिश सबै, तेहिदिशिपरतपुकार ॥

क्षत्री छेकि लगे शर मारन । सौते सहस सहस्र हजारन ॥
वरषत बाण वुन्दगण घोरा । पारथ बाण हाथ तव जोरा ॥
पारथ बाण चहूँ दिशि मारै । यूथ यूथ क्षत्री सँहारै ॥
जौनि दिशा पारथ शर मारै । भागैं वीर न कोउ संभारै ॥
जौनि दिशा हेरै जहँ जोई । सन्मुख रणमहँ रहै न कोई ॥
विप्र मुनीश हते जहँ जेते । करत विचार कहैं सब तेते ॥
जयजय शब्द विप्र सब कीन्हा । त्रिपात्रितिजगमुतवोलै लीन्हा

दशो दिशा पारथ के बाना। छत्री न्रपति सबै भहराना॥
भागेउ दल पैदल असवारा। पारथ विजय कीन्ह तेहिबारा॥

जोतिभई द्विज कहत तब, विस्मय सबैभुवार।
विप्र नाहिं यह छत्रि है, न्रप सब करत विचार॥

राजा सब तब करत विचारा। नहीं विप्र छत्री अवतारा॥
दुर्योधन तब करै विचारा। छत्री जानब येही वारा॥
शकुनी पाहि कहत अस दाता। कहियो जाइ विप्र सख्याता॥
ब्राह्मणकुल तुम करो विवाहा। छत्री कुल हेतु केहि चाहा॥
धन सम्पति मनमानो लीजै। यह कन्या कुरुपतिको दीजै॥
शकुनि गयो तब हाथ उठाई। पारथ पाहि कहा समुझाई॥
पारथ सुनी बात यह काना। क्रोध भयो तब पावकमाना॥
भीमसेन तब मारण धाये। पारथ क्रोधित बान सुनाये॥
राजा पाहि कहो तुम जाई। बात कहत लज्जा नहि आई॥
गहु धनु समरथ नहि भयऊ। छत्री मर्म कहा तब ग्यऊ॥

भानुमती जो रानि है, सोइ आनि मोहिं देहु।
धन कुबेरको भवनसम, जो चाहो सो लेहु।

सो सुनि क्रोध भयो कुरुराऊ। महा मार करने मन लाऊ॥
कर्ण द्रोण दुशशासनधावे। पै पारथ पै जीति न पावे॥
महा मार तिनहिनसों होई। बीच परे [illegible] कोई॥
[illegible] सब मारेउ बाना। ज्यों भादौं मेघ [illegible]॥
[illegible] क्रोधित मारत हैं सर। होनलगी तब मार [illegible]

पारथ बान हने यहि रूपहिं। प्रलयकाल मानो यम भूपहिं॥
पारथ शरते दल भहराना। भागे चलौ वीर निदाना॥
कहै करण हँसिकै तब बाता। देखौं कवन विप्र सख्याता॥
मारे बाण करण करि क्रोधा। महावीर अर्जुन है योधा॥
करणबाण जब पारथ जाना। क्रोधवन्त होय बाण सँधाना॥
बाण बाणते होत विनासा। ब्राह्मण शोर कर्‌यो चहुं पासा॥

मारु मारु करि पारथ, छाड़त बाण अनन्त।
कुरुदल सकल विहण्डेउ, जनु गज सिंह समन्त॥

महा मारु जब थिर नहिं होई। बीच बीच ब्राह्मण सब कोई॥
राजा सकल पराभव पाये। हारे वीर जो अस्त्र गंवाये॥
अस्त्रते हीन भये सब राऊ। करणकेर उर लागे घाऊ॥
काटे धनु गुन पारथ बीरा। कौरव सब भौ हीन शरीरा॥
कौरवदल भौ सब अपमाना। सब क्षत्रिय राजा बहु जाना॥
आगे सब क्षत्रिय बल हारे। हरष भये सब विप्र निहारे॥
राजा सबै परम भय पाये। हारि वीर सब अस्त्र गँवाये॥
अस्त्रहि हीन भये सब राऊ। अपने अपने देश सिधाऊ॥
राजा सबहि देश तौ गयऊ। परमहर्ष सब पाण्डव भयऊ॥
द्विज स्वरूप हैं पांचौ भाई। जीते हर्ष स्वयम्बर आई॥
द्रौपद राजा अचरज पाये। क्षत्रिय सब तौ मान गँवाये॥

जीति स्वयम्बर पाण्डवा, तब कन्या लै जाइ।
परम हर्ष मग धावे, जहाँ कुन्ति है माइ॥

कुम्भक नामक द्विज जो अहई। ताके गृह में कुन्ती रहई ॥
द्रौपद राजा करत उपाई। भेद लेन कहँ पुत्र पठाई ॥
धृष्टद्युम्न गुपित तौ जाई। देखत अचैं हेतु उपाई ॥
पाँचौ बन्धु गये तब तहाँ। कुन्ती मातु बैठि है जहाँ ॥
माता पाहिं कहा तब जाई। तव प्रसाद हम भिक्षा पाई ॥
माता कह्यो भलो भो काजा। पांचौ बन्धु भोग कर राजा ॥
पाछे पारथ भेद बताई। विजय नाम अरु कन्या पाई ॥
विजयनाम सब द्विजन धराई। कुन्ती सुनत लाज तब आई ॥
पुनि कुन्ती तौ करत बखाना। कर्म्मकोलिखा होतनहिं आना ॥
वचन हमार न मिथ्या होई। पाँचौ बन्धु भोग कर सोई ॥

यहि विधि एती गोद करि. कुन्ती देवी ताह।
पाँच पती यहि कारण, सुनौ वचन नरनाह ॥

धृष्टद्युम्न यह देखा ताहां। वह चरित्त सब कुन्ती पाहां ॥
गुप्त भये देखा मन लाई। यहि अन्तरहि कृष्ण तब आई ॥
बहुन प्रकार हर्ष तब माना। पूजेउ चरण हर्ष भगवाना ॥
बहु प्रकारते कृष्ण बुझाये। धीरज दै यदुपतिहु सिधाये ॥
द्रौपद सुत देखेउ प्राकर्मा। जाइ पितासों भाषेउ मर्मा ॥
राजा सुनो हर्ष सब पाये। रथ चढ़ि तहँवां आइ सिधाये।
सुत संग लै राजा तहँ जाई। पाण्डव कहँ सब देन बड़ाई
[illegible] सहित घरहि लै आयो। [illegible] राजा तब पायो
[illegible] साज बहुत विस्तारा। दिये पाण्डवो [illegible]

रनिवासे कुन्ती तब गई। बन्धुन संग परम सुखलई॥

प्रेम हर्ष ते रहेउ तहँ, पाण्डव पांचौ भाइ।

राजा परमअनन्द सों, मङ्गल बात चलाइ॥

परचै दीन युधिष्ठिर राऊ। परम हर्ष तब द्रौपद पाऊ॥
पाण्डव नाम सुने पुरवासी। देखन धाये प्रेम हुलासी॥
द्रौपद राजा कहत बुझाई। तब विवाहको बातचलाई॥
तुम हौ जेठे धर्म्म कुमारा। उचित बरौ तुम कह्यो भुवारा॥
धर्म्मराज बोले, तब बाता। वचनएक भाष्यो मम माता॥
पांचौ बन्धव बरहिं कुमारी। सुनत द्रुपद विस्मय भा भारी॥
माता आज्ञा मेटि न जाई। धर्म्मराज बोले समुझाई॥
द्रुपद कहा तुम धर्मकुमारा। कौन शास्त्रमें कहहु विचारा॥
एक पुरुषके तिय बहु जाना। नारिकेर पति होत न आना॥
धर्मराज बोले तब बाता। शास्त्र सर्व्व जो आज्ञा माता॥

यहै बात कहतहि सुनत, कथा प्रसङ्ग उपाय॥

त्यहि अन्तर वा ठौर में, व्यास मुनीशहि आय॥

पूर्व्व कथा तब व्यास सुनाई। व्यास वचन द्रौपद सुनिपाई॥
शङ्कर वचन सुना जब काना। छूटेउ भ्रम तब द्रुपद सुजाना॥
लग्न धराइ व्याह संचारा। पांच बन्धुको व्याह विचारा॥
भो विवाह दायज बहु लायो। रथ घोड़ा गज बहुतक पायो॥
पाण्डव कहँ पूजन तबकीन्हा। कन्या धनहि दानबहु दीन्हा॥
कहा उचित यह काजा। जब तुम होव महीपति राजा॥

यहि प्रकार ते पांचौ भाई। द्रौपदके घर रह तब जाई ॥
प्रेमहि हर्ष रहैं सुख पावैं। हर्ष अनन्दित दिवस गँवावैं ॥
यहि प्रकार जनमेजय, भयो द्रौपदीव्याह।
सबलसिंह चौहान कहि, सुनतहि परम उछाह ॥

इति त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

सुनु राजा रहें पांचौ भाई। तौ सब अर्ध दुर्योधन पाई ॥
शकुनी कर्ण दुशाशन आये। सबसों राजा वचन सुनाये ॥
नन्दिन सहित गये सब तहां। अन्धरायको मन्दिर जहां ॥
धृतराष्ट्र जान्यो व्यवहारा। करो मन्त्र जयहोइ तुम्हारा ॥
विदुर न पावे भेद बखाना। तैसे मन्त्र करो परमाना ॥
दुर्योधन बोले तब बाता। द्रुपदकैर बल है विख्याता ॥
द्रुपद पाहिं पठवो समुझाई। राज्यपाट धन लीजै भाई ॥
पाण्डवन्हतें तुम देउ निवारी। तुम हमरे हो प्रीतम भारी ॥
पाहिं न पठवो दूती तहां। रानि द्रौपदी पास है जहां ॥
करि उपहास सुजाइके, अति आदर हैं नाह।
तब लज्जित है द्रौपदी, त्यागब पाण्डव चाह ॥
[illegible] बीर कोइ जाई। [illegible] भाई ॥
[illegible] सों पांडव [illegible]। जो कोउ [illegible] कर्ई ॥
[illegible] नाहि [illegible]। [illegible] भाई

यहतो बात सुनत सख्याता। कर्ण कहै राजासों बाता॥
जेतक मन्त्र कहा तुम धीरा। एकहु मन्त्र होब नहिं बीरा॥
सजग रहैं वे पांचौ भाई। मारि न सकिहौ कोऊ पाई।
सुनतहि धृतराष्ट्रक अस कहई। कर्ण बात नीकी तें कहई॥
भीषम द्रोण विदुर बुलवाई। मन्त्र करो कछु आनउपाई॥
ऐसे सबै मन्त्र तब करहीं। एकै एक वचन अनुसरहीं॥
भीष्म कहेउ यह मन्त्र हमारा। जो मानो मम वचन भुवारा॥

जस धृतराष्ट्रक तुम अहौ तैसे पाण्डु हमार।
गन्धारी अरु कुन्तियक, सो मैं कहौं विचार॥

औ जैसे कुरुराज भुवारा। तैस युधिष्ठिर धर्मकमारा॥
अपन पुत्र औ पाण्डुकुमारा। इक समान ते जानु भुवारा।
जो राखौ मम वचन सनेहू। बांटि राज्य दूनौकहँ देहू॥
उनके क्रम सब राजा सांचे। महा महा आपद सों बांचे॥
केतक जीवन है जगमाहा। अयश जाइ लीजै नरनाहा॥
याहै मन्त्र द्रोण मन माना। कपट रूप धृतराष्ट्रक जाना॥
दुर्योधन कपटी परमाना। भीषम केर मन्त्र तब माना॥
धृतराष्ट्रक भाषै परमाना। आपु विदुर तुम करो पयाना॥
आनौ जाइ कुन्ति कहँ साथा। बन्धुन सहित धर्म्मनरनाथा॥
पांचो बन्धु साथ लै आवो। हमरे वचन सो जाइ सुनावो॥

होकर हर्षित विदुर तब, तुरतहि कीन पयान।
जहां द्रुपद राजा अहैं, पहुंचे ताही थान॥

द्रुपदराजसों जाइ बखानो । धृतराष्ट्रक पठवा मोंहिं आनो ॥
अर्द्धराज्य देवै निज सोई । तव पाण्डवको अतिसुख होई ॥
सत्यबात तो विदुर बखाना । सो सुनि धर्म्मपुत्र सुखमाना ॥
द्रौपद बहुत बड़ाई कीन्हा । द्रुपदराजने आज्ञा दीन्हा ॥
कुन्ती सहित द्रौपदी लीन्हा । अहोभाग्य पांडवको चीन्हा ॥
पहुंचे जब निज देशहि जाई । धृतराष्ट्रक तब कीन उपाई ॥
भीषम द्रोण कर्ण बलबीरा । आगे पठये हर्ष शरीरा ॥
आगे होइ लेनेको आये । नगर लोग सब देखन धाये ॥
कुन्ती अन्धहि कीन प्रणामा । सब बन्धव पहुंचे निजधामा ॥

मिले धर्म्मसुत बन्धु शत, बैठे सभा मंझार ।
प्रेम हर्ष भीषम तहां, कीन्ही प्रीति अपार ॥

तब धृतराष्ट्र कहा असि बाता । कुन्ती सहित सुनो सबभ्राता ॥
आधा राज देब हम राजा । इन्द्रप्रस्थ जहां लग साजा ॥
सो सुख भोग करो तुम जाई । धृतराष्ट्रक तब कहेउ बुझाई ॥
राजा कहँ कीन्ह्यों परणामा । परम हर्ष कीन्हों तब यामा ॥
कुन्ती सहित द्रौपदी साथा । प्रेमहि हर्ष चले नरनाथा ॥
इन्द्रप्रस्थ में कीन्ह्यों थाना । रजधानी आपनि [illegible] ।
शुभग शकुन करि भे तव राजा । [illegible] ।
परम हर्ष मन राजा भयऊ । सर्व्व कलेश नाश [illegible]
[illegible] दुख मे नाना । पाई राज्य [illegible]

यहि प्रकार तव धर्म्मसुत, राजा तहँवां आइ।
वैशम्पायन महामुनि, तिनसों कहत बुझाइ॥

जैतापुरमहं गढ़वनवाये। पांचौ भाइ रहैं तहं जाये॥
राज करैं तहं धर्म्म नृपाला। पुत्रक भांति प्रजा प्रतिपाला॥
नगरक लोग सबै सुख पाये। धर्मक राज हर्ष मन भाये॥
घर घर परजा करहि अनन्दा। सतयुग राज भये हरिचन्दा॥
वैर व्याधि नगरहि नहि कोई। मङ्गलचार घरहिं घर होई॥
पूजहिं विप्र हृदय धरि ध्याना। जानि सुपात्र देहिं वहुदाना॥
द्विज अरु वैष्णव कृष्णस्वरूपा। पूजै राजा हर्ष अनूपा॥
हर्षित भये परम भगवाना। जनदुखहरनो जाको बाना॥
इष्टरु मित्र हर्ष तब पाये। पाण्डवपुत्र राजमहं आये॥
ऐसे राज्य युधिष्ठिर पाये। वैशम्पायन कथा सुनाये॥

पाण्डव कथा विजय यह धर्म्मनीति जग जानि।
साहस सत्य वसत जेहि जात पाप क्षय मानि॥

केतक दिवसराज्यतव कियऊ। एक दिना नारदमुनि गयऊ॥
राजा आगे कहैं बखानी। मन्त्रएक तुम सुनु नृपज्ञानी॥
तोहिं हेतु हम मन्त्र बखाना। सुनौ करो हिरदयमा ज्ञाना॥
सुन्दउपसुन्द हते दुइभाई। महावीर बल विक्रम राई॥
यक स्त्री तिन दुइ ते भाई। स्त्री हेतु विरोध उपाई॥
यहि कारण तब दोउ जुझारा। आपु आपु में भे संहारा॥
पत्नी तुम पांचौ भाई। ताकारण हम कहत बुझाई॥

जासु विरोध होइ नहिं राऊ। सो राजा तुम करौ उपाऊ ॥
द्रौपदिका प्रतिपाल दुराऊ। ताते होइ सबहिं सुख भाऊ ॥
ऐसा कहि नारद परिमाणा। दीन्हों सबै बांधि निर्माणा ॥

नेम बाँधि मुनि दीन्हेउ, कहा राउ सन बात।
जो कोइ यह लंघन करै, सुनो बचन नरनाथ ॥

नेम उलंघन करै जु कोई। बारह वर्ष वास बन होई ॥
यह कहिकै तब नारद जाई। पाचो बन्धु रहे तब राई ॥
नेम समय द्रौपदिके साथा। आप अवतमें करै विलासा ॥
एक दिन राव युधिष्ठिर ठाऊ। द्रुपदसुता आई सति भाऊ ॥
तहँ। अस्त्र सब पारथ केरा। ऊह्रख्यर इक ब्राह्मण टेरा ॥
पारथ पारथ करै पुकारा। पारथ सबहे काज तुम्हारा ॥
तस्कर एक मोर धन लीन्हों। जात चला मो म कहि दीन्हों ॥
सुनि पारथ तब आतुर भयऊ। अस्त्रकार्य तुरतहि तब गयऊ ॥
नारद बचन कि सुधि नहि राहा। गये द्रौपदी राजा जाहा ॥
आतुर में वहि मन्दिर जाई। देखत पारथ लज्जा पाई ॥

लज्जा पाइ अस्त्रगहि पारथ आयो धाय।
छीनि तुरत तस्कर तहाँ, द्विजधन लीन्ह छुड़ाय।

फिरि [illegible] के पारथ आये। धर्म्मराज कहँ बात सुनाये ॥
[illegible] तीरथके काजा। [illegible] नरनाहा ॥
[illegible] मुनिहि जो भाखा। [illegible] ॥
[illegible] पारथ तब जाई। [illegible] ॥

संन्यासी कर रूप बनाई। पारथ बनोवास तब जाई॥
नाना तीरथ देख्यो ताहाँ। नाना वन उपवन के माहाँ॥
तब पारथ के मनमा आई। अनन्त नागको देखहुँ जाई॥
भोगवती गङ्गा है जहाँ। तहँ अस्नानकरौं अम कहाँ॥
यह विचारि पाताल सिधाये। शेषनाग के दरशन पाये॥
भोगवती महँ करि अस्नाना। शेषनाग परम सुखमाना॥
प्रेमक भक्त प्रबल धनुधारी। इन्द्रकुमार अमित गुणधारी॥
अजयन मृत्य लोकमा आही। कन्या मोरि उन्हीं पै आही॥
नाम उलूपी कन्या रहै। सो पारथ को देनो चहै॥
यह विचारि कै पारथ पाही। कन्या सोतो दीन्ह्यो व्याही॥
प्रेम हर्ष तब पारथ भयऊ। शेषनाग कन्या को दयऊ॥

सग कन्या लै पारथ, मृत्य लोक तब आय।
सोइ उलूपी नारिहै, प्रेम हर्ष मन पाय॥

शेष दई तब उलुपी नामा। सँग लै आये मणिपुर ग्रामा॥
पूर्व समय चित्राङ्गद नारी। मणिपुर माँह अहै सो नारी॥
सङ्ग उलूपी आये तहा। चित्राङ्गद युवती है जहाँ॥
चित्राङ्गद विवाह तब कीन्हा। गजरथ दान बहुत तब दीन्हा॥
रहैं तहा पारथ सुख पाई। चित्राङ्गद उलुपी सँग लाई॥
केतिक वर्ष उलपी साथा। उपबनमा तब हर्षित गाता॥
नागराज को उपवन रहै। पांच वृक्ष दाड़िमके अहै॥
चौं पेड़ दिखाये जाई। उलुपी पाहिं कहा समुझाई॥

जबहीं लगु हरि अन्तर रहैं। पारथ मर्म्म जगत मैं कहैं ॥
मृत्यु समय पाँचौं तरु जरै। मृत्यु लोक जो पारथ मरै ॥

यहै रहस्य परीक्षा, कहेउ उलूपी प हिं।
प्रेम हर्ष मन पारथ, रहते मणिपुर माहिं ॥

कछु दिन बीते यहि परकारा। चित्राङ्गद देह गर्भ सँचारा ॥
गर्भ के माँह बास जबलयऊ। बभ्रुवहन उदरमें भयऊ ॥
गर्भ बा[illegible] नारी भय सोई। मन उदास पारथ तब होई ॥
[illegible] वर्ष कहा बनवासा। सोतौ कीन्हेउ भोग विलासा ॥
[illegible] वि[illegible]ार पारथ मनलाये। मनको भेद न काहू पाये ॥
[illegible] कहे तो पारथ गयऊ। पाछे तिया महादुख लयऊ ॥
[illegible] करै दुखी तहँ नारी। पारथ गे बन हमहिं बिसारी ॥
[illegible] बनोवास कहँ गयऊ। चित्राङ्गदहि पुत्र [illegible] भयऊ ॥

बभ्रुवाहन नाम तेहि, प्रतिपाले मन लाइ।
बभ्रुवाहन राज भये, मणिपुर नगर उपाइ ॥

[illegible] गमन तीर्थ उपदेशा। नाना वन उपवन परवेशा ॥
[illegible] गोदावरि परशे। गङ्गासागर हर्षित [illegible] ॥

संन्यासी कर रूप बनाई । पारथ बनोवास तब जाई ॥
नाना तीरथ देख्यो ताहाँ । नाना वन उपवन के माहाँ ॥
तब पारथ के मनमा आई । अनन्त नागको देखहु जाई ॥
भोगवती गङ्गा है जहाँ । तहँ अस्नानकरौं अम कहाँ ॥
यह विचारि पाताल सिधाये । शेषनाग के दरशन पाये ॥
भोगवती महँ करि अस्नाना । शेषनाग परम सुखमाना ॥
प्रेमक भक्त प्रबल धनुधारी । इन्द्रकुमार अमित गुणधारी ॥
अजयन मृत्य लोकमा आही । कन्या मोरि उन्हीं पै आही ॥
नाम उलूपी कन्या रहै । सो पारथ को देनो चहै ॥
यह विचारि कै पारथ पाही । कन्या सोतो दीन्ह्यो व्याही ॥
प्रेम हर्ष तब पारथ भयऊ । शेषनाग कन्या को दयऊ ॥

सग कन्या लै पारथ, मृत्य लोक तब आय ।
सोइ उलूपी नारिहै, प्रेम हर्ष मन पाय ॥

शेष दई तब उलुपी नामा । सँग लै आये मणिपुर ग्रामा ॥
पूर्व समय चित्राङ्गद नारी । मणिपुर माँह अहै सो नारी ॥
सङ्ग उलूपी आये तहा । चित्राङ्गद युवती है जहाँ ॥
चित्राङ्गद विवाह तब कीन्हा । गजरथ दान बहुत तब दीन्हा ॥
रहैं तहा पारथ सुख पाई । चित्राङ्गद उलुपी सँग लाई ॥
केतिक वर्ष उलपी साथा । उपबनमा तब हर्षित गाता ॥
नागराज को उपवन रहै । पांच वृक्ष दाड़िमके अहै ॥
पाँचौं पेड़ दिखाये जाई । उलुपी पाहिं कहा समुझाई ॥

जबहीं लगु हरि अन्तर रहैं। पारथ मर्म्म जगत मैं कहैं ॥
मृत्यु समय पाँचौं तरु जरैं। मृत्यु लोक जो पारथ मरैं ॥

यहै रहस्य परीक्षा, कहेउ उलूपी पाहि।
प्रेम हर्ष मन पारथ, रहते मणिपुर माहि ॥

कछु दिन वीते यहि परकारा। चित्राङ्गद देइ गर्भ सँचारा ॥
गर्भ के माँह वास जबलयऊ। वभ्रुवहन उदरमें भयऊ ॥
गर्भ वास नारी भय सोई। मन उदास पारथ तब होई ॥
बारह वर्ष कहा वनवासा। सोतौ कीन्हेउ भोग विलासा ॥
यह विचार पारथ मनलाये। मनको भेद न काहू पाये ॥
बिना कहे तो पारथ गयऊ। पाछे तिया महादुख लयऊ ॥
रुदन करै दुखी तहँ नारी। पारथ गे वन हमहि बिसारी ॥
पारथ वनोवास कहँ गयऊ। चित्राङ्गदहि पुत्र तब भयऊ ॥

वभ्रुवाहन नाम तेहि, प्रतिपालै मन लाइ।
वभ्रुवाहन राज भये, मणिपुर नगर उपाइ ॥

पारथ गमन तीर्थ उपदेशा। नाना वन उपवन परवेशा ॥
गौतम औ गोदावरि परशे। गङ्गासागर हर्षित दरशे ॥
गङ्गा प्राग तो परशे जाई। नैमिष दर्शन करेउ जु आई ॥
मथुरा वृन्दावन तब देखा। यमुना नदि तव परशि विशेखा ॥
चारों दिशा भर्मना कियऊ। प्रदक्षिणा धरती को दयऊ ॥
पारथ सब भरमे संसारा। संन्यासीके रूप मँझारा ॥

जहँ लग तीरथ जगमें अहैं। देखा सब पारथ मुनि कहैं॥
परकट कीन्हेंउ तब संसारा। नारद वचनक हेत विचारा॥
तीरथ भर्म्म गमन किय, देखा अगणित देश।
नारद वचन के हेतु कहँ, पारथ सहेउ कलेश॥

इति चतुर्द्दश अध्याय॥ १४॥

वैशम्पायन कहत बखानी। सुनु जनमेजय नृप सज्ञानी॥
जहं लगि तीर्थ जगतमहं अहैं। देखे सब तीरथ मुनि कहैं॥
धर्म्मराज अन्देशा करई। पारथ हेतु तौ विस्मय धरई॥
कौन देशकहँ पारथ गयऊ। यहि चिन्ता में राजा भयऊ॥
पारथ देखा वन वन नाना। नारद वचन हेतु परमाना॥
पारथ तहां तो हर्षित जाही। जहां मुनी कौण्डिन्या आही
पारथ कहँ तब मुनि जो देखा। पूँछत रूप संन्यासी वेखा॥
कौन हेतु वनको पगु धारा। तब पारथ यह वचन उचारा॥
पांच बन्धु औ द्रुपदी रानी। नारद नेम करि दीन्ह्यो आनी
नेमोलंघन करै प्रकासा। बारह वर्ष जाइ वनवासा॥
एक दिना तौ धर्म्मभुवारा। द्रुपदी सङ्ग रहे सुवनारा॥
आरत नाद विप्र यक करई। मेरो धन तस्कर सब हरई॥
नारद वचन बिसरि तौ गयऊ। अस्त्र हेतु तब गृह में गयऊ
राजा देखत लज्जा पाये। राजा आपु तो लाज लजाये॥

नारद वचन सनक्षि मन माहा । तब हम तीरथ भर्मन चाहा ॥
यहि कारण तब सुनिहि बुझाई । पारथ तीरथ भर्मन जाई ॥
नाना वन तो देखत जाई । वन उपवन अगनित सब ठाई ॥
काश्मीर तब देखेउ जाई । नगरकोट रानीके ठाई ॥
औरौ तीरथ सकल तु देखा । पर्वत विपिन जात नहिं लेखा ॥
रेवा पर्वत देखा जाई । तहँवां दर्श कृष्णकर पाई ॥
परम हर्ष तब पारथ भयऊ । श्रीपतिके पग बन्दन कियऊ ॥
कृष्ण पार्थ को लाये ताहाँ । द्वारावती नगरके माहां ॥

पारथ कहँ लै राखेऊ, प्रेमरु हर्ष अपार ।
घरवर प्रति यदुवंशि हित, नितनित देत अहार ॥

यकदिन तबै सुभद्रा देखी । बलदाऊ सन कहा विशेखी ॥
कहत बात सुभद्रा ताहा । यह तो वीर तपी नहिं आहा ॥
काम स्वरूप तेज तनु तासू । प्रेम सदा हिरदय परकासू ॥
कहत भेष ना जानहुँ ताहीं । प्रेमै सदा रहै मन माहीं ॥
यकवार जो कौतुक होई । क्रीड़ा करहि सखी सब कोई ॥
चितै सुभद्रा तौ पारथहीं । प्रेमै सदा रहै मन मनहीं ॥
तब सुभद्र पारथ पहिचाना । और भेद जानहि भगवाना ॥
और न जानत यादव कोई । पारथ हेतु सुभद्रा सोई ॥
यक वार सुभद्रा ताहाँ । चलि अस्नान चढी रथमाहाँ ॥
अस्नान द्वार पारथ यदुराई । तःने द्वार सुभद्रा जाई ॥
पारथवीर विलंब जनि लाऊ । वेगि आपने धाम सिधाऊ ॥

पारथ धाइ चढ़ो रथ जाई। लै के सुभद्र चल्यो तव राई॥
कृष्ण आदि औरो यदु जेते। सजे युद्ध को क्रोधित तेते॥
पारथ रथ रोंका तव ताहाँ। मारो वाण तो यदु दलमाहाँ॥
तबै सुभद्रा कहत विचारी। मै रथ हांकौं तुम करु मारी॥
तवहिं सुभद्रा रथहि चलाये। पारथ वृन्द वाण वरषाये॥
बाये हाथ गहे धनु जाना। गहे चाप औ धनु सन्धाना॥
दायें हाथ चलावै वाना। महावीर नहि जात वखाना॥

यक समान शर द्वै करे, देखा तव वलदेव।
हल मूषल तव हाथ लै, कोपि चले सुनु भेव॥

नारायण सेना तव साजा। यदुकुल मतो वाजने वाजा॥
क्रोधवन्त वलदेव भे जवहीं। आये कृष्ण वुझाये तवहीं॥
तपी रूप पारथ है भाई। मम आज्ञा कन्या लै जाई॥
कहि वलदेव तो वात वुझाई। मोहिं काहे नहि वात जनाई॥
अवै बोलावो पारथ भाई। करि विवाह तव सौंपहु साई॥
तव श्रीपति पारथहि बोलाये। कन्या लै पारथ तव आये॥
वेदके मतसे भयो विवाहा। हर्ष होइ वलदेव तो काहा॥
बड़ावीर पारथ हम जाना। दोऊ हाथ चलावत वाना॥
दोउकर धायक एक समाना। अति धनुधारी सब जगजाना॥
यहप्रकार पारथकी करनी। वारह वर्ष अन्त भौ धरनी॥

वारह वर्ष वास वन, ऐसे गये सिराइ।
लेके सुभद्रा पारथ, अपने गृह तव आइ॥

ो।उनि निजदेशहि सो आये। नारि सुभद्रा सङ्गहि लाये॥
कृष्ण समेत राज्यको आये। प्रेम हर्ष आनन्द तब पाये।
एक समय श्रीकृष्ण हैं साथा। पारथ सङ्ग आदि नरनाथा॥
विप्र रूप पावक सख्याता। कही जो आइ सभामें बाता॥
मुनियों बात हमार विचारा। मरुत् नाम जो तहां भुवारा॥
बारह वर्ष यज्ञ तब कीन्हा। मुसलधार तिन आहुति दीन्हा॥
हि कारण व्याधी तनु भयेऊ। तब पावक ब्रह्मासन कहेऊ॥
ह्मा कहं लोभ तैं कीन्हो। तेहि कारण व्याधी तैं लीन्हो॥
पर होइ कृष्ण अवतारा। पारथ सन तुम्हार उद्धारा॥
कारण हम आये याही। हमरो नाथ निबेड़ा चाही॥
वाचा करो तो मांगौं, कहा वचन परमान।
तब हरि पारथ भाषहीं, कीजै सत्य बखान॥
होइ व्याधि तनु नाशा। सोई वचन करौ परकाशा॥
क कहि यह बात बखाना। इन्द्र केर आहैं बगवाना॥
पक्षी तरु हैं तह नाना। ताहि देहते व्याधि नशाना॥
वन दहे पाव जो साई। तौ हमरी तनु व्याधि नसाई॥
ानल हैं हम संसारा। करो हमार यहै उपकारा॥
ायो कृष्ण धनञ्जय सोई। करि परतिज्ञा भाषत दोई॥
ी जाइ सो वनहिं जरैये। जाते आपु परम सुख पैये॥
के अस्त्र चले पुनि ताही। नर नारायण दूनों आहीं॥
न देखा नयनन जाई। मारि बाण बुन्द सम आई॥

शर पञ्जर वन ऊपर भयऊ। वन भीतर पावक निर्मयऊ

पावक वन माही लगी, सुरपति क्रोध अपार।
प्रलय कालके मेघ सब, आयउ वैर सम्भार॥

वर्षेसि नीर सबै वन तहाँ। पावक जरै खण्डि वन जहाँ
अन्धकार मेघन घनसाजा। अतिही क्रोधवन्त सुरराजा॥
एकौ बुन्द जल भेदत नाहीं। भै निशङ्क पावक वन खाहीं
पशु पची अरु तरुवर जैते। पावक सकल जराये तेते॥
जीव जन्तु सब करैं पुकारा। दानव दैत्य भयो सब छारा।
मय दानव यक सुनहु राई। सो पारथपहँ विनती लाई।
तुम्हरी शरण राखु नृप मोहीं। कबहुँक करब काज हम तें
पारथ सुनेउँ हर्ष मन भारी। देहु छांड़ि भाषत बनवारी
पावक पाहिं धनञ्जय भाखा। सो दानव जारतही राखा
पारथ की अस्तुति वह ठाना। तुम पारथ दीन्हीं जिउदान

पारथ हर्षित प्रेममन, पुलकित सबै शरीर।
खाण्डव वनदाहन करै, पावक प्रकट गम्भीर॥

घुर्सिनाम यक नागिनि रहै। सोई सदा खण्डिवन अहै॥
पावक जरै भागि सो जाई। तेज पुञ्ज आकाश उड़ाई॥
पारथ देखि बाण परिहारा। पंखकाटि पावक महँ डारा
सो जरि भस्मभई पलमाहीं। पावक सब खाण्डव वन दाहीं
प्रसन्नभे पावक परमाना। दीन्हेउ श्वेत बाहिनी नाना।
महादेव आराधेउ जबही। बाहन श्वेत दिव्यरथ तबही॥

वैदेवता परसन होई । यक यक बर दीन्हेउ सब कोई ॥
ह कहिकै वैश्वानर जाई । गृह आये पारथ यदुराई ॥
कु दिन तहां रहे भगवाना । पुनि द्वारावति कीन पयाना ॥
ये द्वारका श्री यदुबीरा । पाण्डु रहे सब हर्ष शरीरा ॥

यहि प्रकार जनमेजय, तोर वंशगुणमान ।
प्रेमकथा अद्भुत सुनहु, सबलसिंह चौहान ॥

इति पञ्चदश अध्याय ॥ १५ ॥
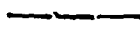
जा सुनौ वचन परमाना । परम रहस्य कियो भगवाना ॥
कै एहुप एक नारद आना । लै दीन्हों तब श्रीभगवाना ॥
श तो दीन रुक्मिणीपाहीं । सतिभामा क्रोधित भइ ताहीं ॥
रिजात एहो भगवाना । सतिभामा लाये भगवाना ॥
रुक्मिणि बहुतै दुखपाई । यहिते सरस फूल मनलाई ॥
श्रीपति गे पारथ पासा । जाय वचन कीन्हें परकासा ॥
ली वनहि तुरतही जैये । सुगंधराज पुष्पन लै ऐये ॥
रथ गये धनुश शर लयऊ । कदलीवनमें प्रविशत भयऊ ॥
न फूल रच्छ रहे तहा । जाइ अर्थ हनुमतसे कहा ॥
सुनि हनू क्रोध तब भयऊ । पारथ पाहिं कहन तब लयऊ ॥
ो एहुप पूजत रघुराई । चोरी करत चोर अन्याई ॥

पारथकह तब रामको, करत बड़ाई कीश ।
जान्यो सब पुरुषार्थ हम, जौन राम अवधीश ॥

मोहिं समान कौन धनुधारी। क्रोधी पारथ कह्यो विचारी॥
शारङ्गहाथ गहे रघुनाथा। ढोये कस पर्वत कपिनाथा॥
कहौं न प्रभुता सुनु हनुमाना। बांधे सिन्धु पलकमहँ जाना।
झूंठ वचन कस कहत अयाना। बांधौ सिन्धु न हतिहौं प्राना
सुनु रे कोश महा अज्ञाना। क्रोध कियो पारथ बलवाना॥
पारथ हनू सिन्धुतट आये। बाण वुन्द पारथ तब लाये॥
सौ योजन शरबांधि सवारा। हनूमान विस्मय अतिभारा॥
देखि कहैं हनुमत यह बाता। सेतूपर हम जाब सख्याता॥
यद्यपि बांध रहै दृढ़ होई। मानहुँ सत्य धनुर्द्धर सोई॥

पारथ कही बात यह, भरे गर्व अहङ्कार।
केतक बार तुम्हारही, करौं पार संसार॥

तब हनुमान क्रोध अतिपायो। उत्तर दिशा क्रोधकरि धार
योजन सहस वदन विस्तारा। औ लीन्हेउ पुनि बहुत पह
देखिरूप विस्मय संसारा। रोम रोम प्रति बँधे पहारा॥
आये तुरत समुद्रहि तीरा। आपुहिआपु लड़तदोउ वीरा
पारथ देखत भूलेउ ज्ञाना। सुमिरेउ तबहिं चरण भगवा
अपने मनमें श्रीपति जाना। भयो विवाद पार्थ हनुमाना
हनू भार को जगमें सहै। तीनि लोकको उलटन चहै॥
यहै विचार करैं यदुवीरा। कमठरूप तब धरेउ शरीरा॥
शरको बांधि पार्थ पुल कीन्हा। तेहिमधिजाइपीठि हरि दी
हनू भार पीठोपर धारा। रक्त बहायो बदन सो फारा।

रक्त वर्ण तब देखेउ, करि विचार हनुमान ।
मोरभार संभार को, को है जग में आन ॥

रि ध्यान श्रीकृष्णको पाये कूदि हनू तट ऊपर आये ॥
नेन रुधिरै देख्यो बनवारी । पारथ हन् तौ अस्तुति सारी ॥
ोपतिकह दोउ एक समाना । पारथ बीर और हनुमाना ॥
ाहि प्रकार प्रीति परमाना । श्रीपति तब से अन्तर्द्धाना ॥
ारथ सखा भये हनुमाना । यहिप्रकार ते ऋषिहि बखाना ॥
ाके एहुप ले पारथग एऊ । श्रीपतिएहुप रुक्मिणी दयऊ ॥
ाररवती रहत बनवारी । पारथ धन्य कहत गिरिधारी ॥
है रहस्य कथा सुनु राऊ । तोरे वंश चरित्र उपाऊ ॥
न्द्रप्रस्थ तव पाण्डव रहहीं । कौरव दल हस्तिनपुर वसही ॥
ेम अनन्दित सकल रजाई । वैशम्पायन कथा सुनाई ॥

पांडव विजय कथायह, सुनत पाप को नाश ।
बहुविस्तार न कीन्हेउँ, करउँ संक्षेप प्रकाश ।

कहैं बात तब श्री यदुराई । पारथ धन्य धन्य भक्ताई ॥
ोहिं समान भक्त नहिं कोई । औ.र जगतमें है नहिं होई ॥
ारथ कहे सुनो जगतारण । मिथ्या कहो आप केहि कारण ।
ोहिं समान जगत वहुतेरे । तीनि लोक में अहैं घनेरे ॥
मै पानको क न संभारा । नाथ जो तुमहिं सहाय हमारा ॥
ऐसा ना कहहू । तुम्हें समान जगत नहिं कतहू ॥

और अहै तो आनि देखाऊ। झूठि बात केहि हेतु सुनाऊ॥
पारथ कहै जो आज्ञा पाऊं। नाथ आनि अगणित दिखराऊं॥
तब श्रीपति यह आज्ञा दीन्हा। पारथ गमन ततक्षण कीन्हा॥
खोजेउ पारथ सब संसारा। माया हरि जानै को पारा॥

कोइ न पायो आपु सम, मनमें करै विचार।
सब जगकर्त्ता हरि अहैं, माया जेहि संसार॥

तब पारथ मन कीन्ह विचारा। हीन वस्तु देखा संसारा॥
विष्ठा देखा पारथ तहँवाँ। बाँधि वस्त्र ले आये जहँवाँ॥
श्रीहरि अग्र कहै तब बाता। खोजा सबहिं जगत सख्याता॥
मोहि समान जगत नहिं कोई। पायो नहिं कहा प्रभु सोई॥
सर्व जगत्के अन्तर्यामी। गूढा गूढ़ जाने तुम स्वामी॥
एक कहहिं तौ हमहिं समाना। सुनौ देवपति तुम भगवाना॥
आपै अग्र दिखाइ न जाई। हृदय प्रेम जानहु यदुराई॥ *
महा प्रफुल्लित श्री भगवाना। धन्य धन्य पारथ बलवाना॥
हारि देव मैं तो सब जाना। मोरे अर्द्ध अंग तुम प्राना॥
मोर तोर है एक शरीरा। काहे दीन होत हौ बीरा॥

मनुष्य रूप तुम पार्थ हौ, आपै श्री भगवान।
नारायण जानो हमहिं, सुनियो बचन प्रमान॥

विष्णु नाम मोरा परमाना। विवसतनाम तोर जग जाना॥
विवसत नाम पार्थको दयऊ। सुनत हर्ष तब पारथ भयऊ॥

तब विष्ठा को दीन्हों डारी । करि अस्नान परे पग भारी ॥
परे कृष्ण के चरणन जाई । प्रेमहि हर्ष भये यदुराई ॥
कछु दिन रहे पार्थ पुनि ताहीं । बिदा होय आये घर माहीं ॥
अपने गृह तब पारथ गयऊ । प्रेमै हर्ष जगतपति भयऊ ॥
पाण्डव जय भारतहि बखाना । जनमेजय सुनिकर सुखमाना ॥

भारत कथा पुनीत अति, जाते पाप विनास ।
श्रवण पानके करतही, यमपुर छूटे वास ॥

जो फल ब्रत एकादशि कीन्हें । जो फल होइ भूमिके दीन्हें ॥
जो फल कोटिक कन्या दीन्हें । जो फल सबतीरथ के कीन्हें ॥
जो फल होय शरणके राखे । जो फल होय सत्यके भाखे ॥
जो फल यज्ञ धर्म करवावै । सो फल या भारत सुनि पावै ॥
भारत कथा सुनै अरु गावै । ताके पाप निकट नहिं आवै ॥
जो फल रणमें प्राण गँवाये । सो फल श्री भारत सुनि पाये ॥
भारत कथा एकाग्र परवेशा । सावधान होइ सुनो नरेशा ॥
बढे धर्म पाप क्षय जाई । आयुर्बल होवै अधिकाई ॥

नदी सुनत सुमारग, मानुष ज्ञान प्रकाश ।
सबलसिंह चौहान कहि, होइ परमपद वास ॥

इति षोडश अध्याय ॥ १६ ॥

महाभारत।

सभा पर्व।

सुमिरि व्यास गणपति चरण, गिरिजा हर भगवान
सभापर्व भाषा गनत, सबल सिंह चौहान ॥
सत्रह सौ सत्ताइसै, संवत शुभ मधु मास।
नवमी अरु गुरु पच्छसित, भै यह कथा प्रकास ॥

सुनु राजा आगे विस्तारा। जैतापुर नृप धर्म्मकुमारा ॥
प्रजा लोग आनन्दित रहै। वैशम्पायन नृपसों कहैं ॥
नगरी धर्म्म पाप नहिं ताहां। धर्म्मपुत्र राजा हैं जाहां ॥
सुखी लोग सब हर्षित रहहीं। कोउ काहूते वैर न करहीं ॥
देवस्थल पुष्करणी अहैं। ब्राह्मण सब हर्षित तहं रहैं ॥
मनसा दान सुचाहत पावैं। धर्म्म व्यतीत दान नहिं भावैं ॥
झूठ वड़ाई औ चतुराई। सुनेउ न कोउ ता पुरमहं आई ॥
श्लोक वेद पुराणकहानी। श्रवणन सुनै प्रेमसौ बानी ॥

देवलोक समतामें सोहैं। देखत हरष देवपति मोहैं॥
वेद वचन अरु शास्त्र जो, सब नर करत प्रमाण।
और न मानत कोउ कछु, मिथ्या नहीं बखान॥
सनु राजा यह कथा रसारा। सभापर्व्व बनमें विस्तारा॥
एक बार नारद मुनि आये। धर्म्मराज को वचन सुनाये॥
तुम राजा हो धर्म्मकुमारा। पण्डुतात जानत संसारा॥
पिता तुम्हार स्वर्गमहं राजहिं। देवसभा नहिं बैठन पावहिं॥
देवराज भाखेउ यह बाता। पुत्र तुम्हार जगत विख्याता॥
राजसूय मख कर सुत जबहीं। सभा बैठिहौ तुम नृप तबहीं॥
यहि कारण हम आये राऊ। राजसूय आरम्भ कराऊ॥
नृप दिग्विजय प्रथम परमाना। लच्छ नरेश निमन्त्रण आना॥
ब्राह्मण और अपोष्वर अहहीं। यज्ञमाहिं दच्छिणा बहु चहहीं
ताते राजा तुमहिं सुनावा। सुनतहि राजाके मन भावा॥
पांचौ वन्धु विचारिकै, भाखेउ मुनिपहं बैन।
जाहु द्वारका हरिकहं, लावहु पङ्कजनैन॥
नारद सुनै हरष मन पाये। चले द्वारकापुर हरषाये॥
द्वारावति तब पहुंचै जाई। पुरी देखि तब परम सुहाई॥
श्रीपति पहं तब नारद जाई। गृह गृह प्रति देखे हरि आई॥
जो गृह देखि तहां यदुराई। चकित नारद देखा आई॥
कं ने हेतु कहत भगवाना गृह गृह मांहि फिरत परमाना॥
नारद कहै मरम नहिं पाये। कौन लियासो हरि मन लाये॥

श्रीपति कहे सर्वमय अहौं। रवि प्रकाश घट घट प्रति रहौं॥
सबही पाहिं हमारो वासा। यहि प्रकारते पुरवहुं आसा॥
तुमतो हेतु सबै लियो चाही। कौन हेतु आये पुरमाही॥
तब नारद अस्तुति बहु कीन्हो। पाछे नृपति निमन्त्रण दीन्हो॥

धर्म्मराजके यज्ञ हित, पायो हमें जुवार।
यज्ञ पुरावहु जाय प्रभु, चलिये नन्दकुमार॥

सुनतहिं कृष्ण हरष मन भयेऊ। तुरतहि चलनक उद्यम कियेऊ
सङ्ग समाज गये प्रभु ताहां। धर्म्मराज जेतापुर जाहां॥
पहुंचे जाय मिले सब पाहा। यज्ञ अरथ तब राजा काहा॥
कृष्णहु कह उत्तम है राऊ। राजसूय अब यज्ञ कराऊ॥
अब प्रथमहि दिग्विजय करैये। पाछे यज्ञ अरम्भ बनैये॥
लक्ष नरेश निमन्त्रहु राई। यज्ञ महा भाखेउ यदुराई॥
धर्म्मराज भाखेउ हरिपाहीं। एतिक धन हमरे तौ नाहीं॥
कैसे यज्ञमांह मन धरिये। लक्ष नृपति सम्भाषण करिये॥
मनहि विचारेउ सारङ्गपानी। दिगजय करन प्रथम तब ठानी
जरासन्धको मारा चहिये। धर्म्मराजसों मन्त्र जो कहिये॥

श्रीपति कहै विचारिकै, सुनौ धर्म्मके राज।
दिगविजय हि धन आनिहौ, सोच करौ केहि काज॥

जेते दुष्ट नृपति जग आहैं। जीति जीति धन लै हौ ताहैं॥
ज कै मति तब माना। जोई मन्त्र करैं भगवाना॥

दिग्विजयक मन्त्रहि ठहरैये । जीतहु दुष्ट सबै धन लैये ॥
प्रथम उतर दिशि पारथ जाई । देश अनेकन जीति लराई ॥
अगणित नृप दुष्टमति जेते । बीर धनञ्जय जीतेउ तेते ॥
पूरब दिशा भीम तब गईऊ । नाना बीर धीर वश किईऊ ॥
जीते पूर्व भीम सब जाई । देश देशके जीते राई ॥
दक्षिण जेते राव नरेशा । कुरुह्रपते जीतेउ देशा ॥
नकुलबीर तौ पश्चिम जाई । नाना देशन जीते राई ॥
चारि दिशा जीतेउ सब भारी । पाये धन तब बहुतै भारी ॥

दिग्विजयहि करि आये, चारो बन्धु सुजान ।
जैतापुर आनन्दित, देखत श्रीभगवान ॥

जैतापुर आनन्द बधाई । देश देश जीते सब राई ॥
जहं लगि भूपति पापि निहारा । ते सब जीते धर्म्मकुमारा ॥
पाये धनरु अपूब तहं नाना । जीते सबै हस्तिना आना ॥
राजा हरिके भक्ति मन धारा । यहि अन्तर एक यत्न सञ्चारा ॥
श्रीहरि पाहिं दूत सो आवा । बन्दी राजा सबै पठावा ॥
जरासन्ध बन्दी कै राखेउ । साठि सहस्र दूत तब भाखेउ ॥
ते सब हरिचरणन्हको ध्यावें । प्रभु तिनुको यह बन्दि छुड़ावें
सुनि हरि दूतन्ह कह मसुकाई । कहौ दूत राजाते जाई ॥
सब दल सह जो मोकहं ध्यावे । कौना रूप मोक्ष सो पावे ॥
गौरव देय कहौ हरि ताही । कै परणाम दूत तब जाही ॥

बन्दौ नृप तव हरषि कै, हरिको कीन्हो ध्यान।
वैशम्पायन मुनि तव, राजा पाहं वखान॥

पारथ वीर वहुत धन आना। वहुत समग्री करि निर्माना॥
ऋषि मुनि सब कहं न्योति बुलाये। जैतापुर आनन्दित आये॥
विश्वदेव मुनि तहं तव आये। भरद्वाज मुनि तहां सिधाये॥
गौतम अरु अत्री मुनि ताहां। विश्वामित्र महामुनि जाहां॥
अङ्गिरा भृगु सुमन्तक मुनी। मुनि कौण्डिन आये तव पुनी॥
पराशरक व्यास तब आये। कश्यप मुनि पुनि तहां सिधाये॥
कुम्भज ऋषय सहस तहं आये। नृपके सखसहं सकल सिधाये॥
सहस्र अठासी मुनि हैं जेते। राजसूय आये सब तेते॥
राजा सबको पूजा करहीं। परमानन्द महा चित धरहीं॥
उद्धव हरिके सङ्गहिं अहै। औरो यदुवंशी वहु रहे॥
यज्ञका साज करै तब काजा। जैतापुर आनन्दके साजा॥

यज्ञ साज निरमानत, सङ्ग लिये यदुराय।
पांच वन्धु अति हरषित, सुनु राजा मन लाय॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

अब नृप सुनहु कथा मैं जाई। तब हित हेतु कहत हैं सोई॥
कुरु पाण्डव सोहैं द्वौ आछे। जस समाज वरणौं मैं पाछे॥
[illegible] द्वौ वसैं सुखारी। भतिहगअंधराज्य अधिकारी॥
[illegible] हिसेन सौंपि सवदीन्हा। बढ़िचलु निजसुतन्नृप कीन्हा

कानि राज्यपदकी अतिभारी। भीष्म द्रोण भे अज्ञाकारी॥
सोहत दुर्योधन नृप गादी। भूमि पाण्डु नन्दन के सादी॥
इन्द्रपस्थमहँ पूरब ओरा। कुरु समाज सोहत घन घोरा॥
बसत तहां सब भूप समाजा। भीषम बाहुलीक महराजा॥
बिदुर कृपागुणनिधि सुखधामा। रविनन्दन अरु अश्वत्थामा॥

भरद्वाज-सुत आदि भट, दुर्योधन रुख देखि।
करत काज कुरुनाथ संग, निशि दिन रहत विशेखि॥

बन रम्य सोहहिं बहु भाँती। त्रिदसपुरी देखत सकुचाती॥
हिं थल ते गत पश्चिम आसा। योजन नव कुंतीसुतवासा॥
ां युधिष्ठिर राजहिं राजा। विपुलसम्पदा सहितसमाजा॥
तहग दीन्हें नगर पचीशा। धर्मनन्द कीन्हें धरी शीशा।
ोधनहि राज्य सब दीन्हा। धर्मराज कछु सर्ष कीन्हा॥
म अनेक नरेशन केरी। जीति धर्मसुत लीन्ह घनेरी॥
ुन भीमसेन बलदाई। जीति लिये जहँ तहँ सुवराई॥
नब दंड देहि नृप धर्महि। नहिं डरपहिं कुरुराज कुकर्महिं॥

आवहि विपुल नरेश, जीते प्रथमहिं पांडु जे।
करहि विनय उपदेश, देहिं दण्डमति हगसुतहि॥

दण्डकुरुपति गृह आवहिं। करिविनती अनेकसमुझावहिं॥
ुतन की अति भयमानी। दण्ड पठाइ देहुँ रजधानी॥
बिन भय मिलन न जावहिं। गुप्तरूप धनदण्ड पठावहिं॥

इन्द्र समान राज्य नृप करई। चलै सुमार्ग सत्य नहिं टरई
नीति निपुणता जगमहँ छाई। प्रजालोग सुख लहहिं अघाई
सम्पति गृह-कुवेर ते भारी। राज वन्धु सब अज्ञा कारी
मयकी सभा वनाई जोहै। रचना अद्भुत लखि मन मोहै
महल अनेक वने शोभा के। लखि मन मोहै सुर ईशाके॥
जलअगाधथलनहिंलखिपरई। जहँ थलहगजलमनहुँ घुमर
लखिविचित्रथलचितभ्रमिजाई। फिरसँभरतनहिंकोटि उप
भीमसेन अर्जुन नकुल, लघुभ्राता सहदेव।
महाबीर बहुभुज वली, करहिं नृपतिको सेव॥
नृप पदवी शिर कौरव केरी। तिनते अधिक धर्मनृप केरी
इकदिन धर्मराज मन आजा। राजसूय करि होई काजा
निजमन्त्री अरु बन्धु बुलाये। करिमत ठीक व्यास पहँ आये
भाइन सहित चरणशिर नावा। कुशलपूछिऋषि कंठलगा
ऋषिकृपपाइ धर्ममहिपाला। कहेउ मनोरथ सकल सुआल
जांइ पार तौ करौ उपाई। नत चुप साधि रहौ ऋषिरा
कह ऋषि कुशल मनोरथतोरा। करहिं भूप वसुदेव किशो
सुनत नरेश विदा पुनि मांगी। ऋषिपदपरशि चलेअनुराग
निज मन्दिर नृप आतुर आये। देश देशकहँ पत्र पठाए॥
लिखि अनेक विधिविनयबड़ाई। दीन्ह पत्र हरिनगर पठा
प्रियपरिजन परिवार अरु, हलधर सहित कृपालु।
सबइ आइ करुणायतन, कीजे मोहि दयालु॥

सुदेव द्वारका विराजत । बलयुत यदुबंशी सब राजत ॥
क दिन माधवके मन आई । जाहि कछु गजपुर कै सुधिपाई ॥
धो हलधर सभा घनेरी । चरचा करत पाण्डवन केरी ॥
हुविधिकरत बिचार खरारी । तेहि अवसर आये चर चारी ॥
तपाणि तव खबरि जनाये । सुनि यदुनन्दन तुरत बुलाये ॥
ाय सबन नायो तहँ माथा । उठि कै पत्र लीन यदुनाथा ॥
चि सभा महँ सबन सुनाई । दूतन दीन्हेंउ बास देवाई ॥
हि अवसर ऋषि नारदआये । हरि गुण गावत बीणा बजाये ॥

ऋषिहि देषि करुणायतन, कीन्हेंउ दण्ड प्रणाम ।
सहित सभा उठिमुनिचरण, धर्यो शीश निजराम ॥

ान सुआसन अति अनुरागा । प्रभु करजोरि रजायसु मांगा ॥
न सनाथ आगमन तुम्हारे । निज जन जानि नाथ पगुधारे ॥
ा कृपालु करि मोपर दाया । आगम हेतु कहौ ऋषिराया ॥
ि बोले ऋषि सहित सनेहू । तुमहिन उचित वचन प्रभु येहू ॥
दर्शन त्रिभुअनमहराजा । यहिते अधिक कवनबड़ काजा ॥
हरि केवल हेतु हमारा । भक्त कहेउ कछु चलती वारा ॥
ेद नृपति भूप शिशुपाला । देत सुरन दुख कठिन अराला ॥
सकल दुर्गपला विलासी । करतदशाननादि कै हाँसी ॥
ि करन मैं आप विधाता । संहरण करना अरु त्राता ॥
ौ नाथ पंच कर वासी । करहु कृपाल महज सुखरासी ॥
समाज्य यहि निपट उलंघा । पटइय शीश सुदर्शन मंघा ॥

सुने श्रवण ऋषिमुख वचन, कृपासिन्धु भगवान ।
भ्रुकुटि भंग कीन्हेउ मनहुँ, उदयकेतु अस्थान ॥
रिसवश युगल बिलोचनलाला । कहे इनऋषिवचिहँ शिशुपाला
काटौं शीश चक्र गहि हाथा । करौं नाथ सुरनाथ सनाथा ॥
सुनि अस दे अशीश ऋषि नारद । ब्रह्म सभा गे ज्ञानविशारद
कह हरि उद्धव हलधर तेरे । तात परम असमंजस मेरे ॥
धर्म नरेश निमन्त्रन कीन्हा । ऋषि नारद यह आयसु कीन्हा
युगल कर्म कर्त्तव्य हमारे । करा न बिना शिशुपालहि मारे ।
अति बल धर्मराजके भाई । जीते जे नरेश समुदाई ॥
हम बिन यज्ञ युधिष्ठिर करिहैं । गये बिना शिशुपाल उबरिहैं
कहहु युगल तुम मंत्र बिचारी । पितु सम हो हमरे हितकारी
जो कछु करत मोर अपराधा । सो नहिं सकत नेकु करि बाधा
दाहत लोकपाल शिशुपाला । सो यह होत हृदय मम शाला
सुनत शत्रुबध सुरति करि, नैन तरेरे राम ।
फरकत अधर सरोष अति, बोले बाणी बाम ॥
राखहिं भूलि रिपुहिंजे जीती । उदयन होन कहत असनी
यहि प्रकार रिपुमूल उखारी । उदित यथा तम नाशि तमा
कीन्हे बिना शत्रु पद नाशा । करिय प्रतिष्ठाकी जनि आ
त्रविन रजहि पंककरिदीन्हें । थिरनहिंरहत यतन बहुकीन
बलगसुखनविदिततनधरको । जीवन जब लग एको अरि
सिरविशशिहिराहदुखदेता । सब सर तब सहाय कुके

अहिजिमि सत्य भतृहरि सोई । देखि ठाढ़ि रोमावलि होई ॥
हमन डरत सपनेहुरणकालहि । भा रोमांच सुनतशिशुपालहि ॥
ताते अब न नागपुर जाहू । रिपु जग जीवत कतनहिं काहू ॥
महिषमती पुर लीजै घेरी । सजहु बाजि गज सैन्य घनेरी ॥
गत दिन यदुकुल कै तलवारी । लड़ा न दामिनिकै छबिभारी ॥
अब उडुगण तरवारि तरङ्गा । लहै सुछबि रविकिरणिन सङ्गा ॥
बलि शिशुपाल प्राणहतकीजै । करैं धर्म्म मख आयसु दीजै ॥
असकहि करनलगे मदपाना । उगिलत वमत वचन करिनाना ॥
नि उद्धव ते सैन बुझाई । तुम कछु कहहु कहेउ यदुराई ॥

सत्य सत्य यह बात, भाषे मूशलपाणि जो ।
सुनत मन्त्र मम तात, उद्धव यदुनन्दनकहेउ ॥

ज जीति शिशुपाल न जैहै । भूप समूह सहायक ऐहै ॥
समूह राजयक्ष्मा जिमि । नृपसमूहशिशुपालप्रबलतिमि ॥
घपरे प्रभु मारिय ताही । सहसा कर्म्म उचित अस नाहीं ॥
र न हितदायक जग तोसे । करत धर्म्म मख नाथ भरोसे ॥
विहीन करिहै मख नासा । होइहै धर्म्म नरेश उदासा ॥
है विपुल भूप मख माहीं । बांधि बांधि तब मारिय ताहीं ॥
युगल वनत अस कीन्हें । प्रथम ताहि तुमहीं वर दीन्हें ॥
मन अधिक एक अपराधा । करिहौं तब प्राणनके बाधा ॥
अइहैं सब राजा । खुलि जइहैं रिपु निज समाजा ॥
सुनत हरि उद्धव बानी । भे पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी ॥

हने निशान साजि बहु सेना। उठी धूरि जनु अर्क रहे ना॥

हलधर ऊधो सात्यकी, अपर लोग सब साथ।
निज नरेश के द्वारपर, जात भये यदुनाथ॥

उग्रसेन ते मांगि रजाई। इन्द्रप्रस्थकहँ चले गोसांई॥
हरिपुरते दल चले समूहा। चतुराननसुखजिमितुनिजूहा॥
आवत सुन्यउ धर्म्म महराजा। मिलन चले सँगसुभटनमाजा।
आवत देखि कृष्ण रथ त्यागा। हलधर सहित उमँगि अनुरागा
मिलत न प्रीति हृदय कहिजाती। पुनिपुनि भेंटिउ द्दावतछाती
रविनन्दिनि तट दल समुदाई। दोउ नृपति विश्राम कराई
हरि बलदेव लोग कछु साथा। चले अवास धर्म्म नरनाथा॥
सकल बन्धु तेहि अवसर आये। हरिहिबिलोकिनयनजलछाये।

मिले वृकोदर बिजयनर, युगल बन्धु हरषाय।
पूछी कुशल कृपालु तब, कही युधिष्ठिरराय॥

कुशल देखि तब चरण मुरारे। जो तुम दीन जानि पगुधा
हलधर कीन्ह कृपा सब भाँती। अरु सात्यकि ऊधो संघा
आये प्रभु मोहिं कीन सनाथा। प्रणतारत भञ्जन यदुनाथ
सभा मध्य हरि हलधर गये। शुभ सिंहासन बैठत भये॥
धर्म्म महीप कहत मृदुवाणी। गे अन्तःपुर शारँगपाणी॥
मिलिरानिनकहँ सहित हुलासा। बहुरि गये कुन्ती के पास
न्दत चरण देखि अनुरागी। पुनि पुनि कण्ठ लगावनलागी
सुता पूछत कुशलाता। परमानन्द प्रफुल्लित गाता॥

कछुक मधुर पकवान मिठाई । द्वारे हलधर दीन पठाई ॥
राम सहित नृप भोजनकीन्हा । उद्धवसहित सात्यकी दीन्हा ॥
राम बहुरि अन्तःपुर आये । उद्धव सात्यकि सङ्ग लगाये ॥
कुन्ती रामहिं आवत जाना । आगे चलि कीन्हेउ सनमाना ॥
चरणन परे मातु उर लाये । भूप सहित पुनि द्वार सिधाये ॥

वहाँ द्रौपदी हर्षयुत, करत विविध सनमान ।
भोजन करवायो हरिहिं, बहुरि खवायो पान ॥

यदुपति कछुक घरीतहँ रहिकै । चलत भये रानिनतेकहिकै ॥
आये धर्म महीपति पासा । बिछो प्रयंकु सेज शुभवासा ॥
तहाँ पौढ़ि प्रभु सोवन लागे । रहा याम दिन यदुपति जागे ॥
पुरी सभा बहु गायन आये । सकलकलामहँ कुशल सोहाये ॥
जागि धर्मसुत राम जगाये । परम सुखद आसन बैठाये ॥
आसव पान राम तब कीन्हा । होय नृत्य अस आयसु दीन्हा ॥
राम वचन सुनि गायन गाये । बहु प्रकार करि नृत्य रिझाये ॥
एहिविधिदिनप्रति सहित सनेहा । कछुदिन कृष्ण रहे नृपगेहा ॥
प्रहुत यज्ञ दिवस नियराना । आवत तहाँ महीपति नाना ॥
जरासन्ध सुत प्रबल भुवारा । आइ तहाँ दल कीन्ह जोहारा ॥
भेंट देइ रहतु शिविर भुवाला । तेहि अवसर आये शिशुपाला ॥
धर्मराज तब नकुल बुलाये । मनभावत शुभ वास देवाये ॥
देश देशके भूपति आये । धर्मराज पद शीश नवाये ॥
भेंट अनेक भूप तब लावहिं । करहिं प्रणाम वास शुभ पावहिं ॥

परहिं ते चरण कृष्णके आई। पुनि पुनि धर्मसुतहि गिरनाई॥
बीर वृकोदर आदिक मिलिकै। बैठहिं भूप मभइ सब हिलिकै॥
भई भीर पाण्डव दरबारा। कोउ न पावत और दुवारा॥
तब बोले हँसि शारँगधारी। कुरुपति कहँ अब लेहु हँकारी॥
चरवर वोलि नरेश तब, दीन्ह्यों तिनहि रजाइ।
लै आवहु कुरुनाथकहँ, करहि-सभा मम आइ॥
बहुरि बुलाय एक चर लीन्हा। गङ्गासुतहि निमन्त्रणदीन्हा॥
बाहुलीक गृह एक पठावा। करि बहु भांति विनय समुझावा॥
द्रोण कृपा गृह मन्त्र पठाई। लिखि अनेक विधिविनय बड़ाई।
विपुल दूत नरनाह बुलाई। दै पूगीफल नृप समुझाई॥
जे सब बिपुल नागपुरवासी। सचिव महाजन जे गुणरासी।
पृथक पृथक कहि नाम नरेशा। पठये चर बहु करि उपदेश
सुनत निदेश प्रजाजन आये। नैमन्त्रित अरु विनहिं बुलाये
आवहिं चले प्रजा बहुतेरे। ग्राम ग्राम प्रति यूथ घनेरे॥
उचित अवास दीन सब काहू। मखदरशनहित अतिउत्सा
चरवर वहां नागपुर गये। सबकहँ देत निमन्त्रण भये॥
गयो दूत कुरुपति दरबारा। दीनपत्र बहुवार जोहारा॥
तब कुरुपति शकुनी हँकराये। बांचिपत्र सब भेद सुनाये
पूंछि मन्त्र आज्ञा नृप कीन्ही। सजि निजसैन दुन्दुभीदी
भीषम द्रोण कर्ण सजि आये। कृपाचार्य सब साजबना
...ल चलत भयो कुरुराई। बाजत पटह भेरि सहन

गजअरुढ़ कुरुपति छबिपाई । चहुँदिशि तुरंगरहे ठहनाई ॥
चरवर कहेउ कि कुरुपति आये । धर्म्मनरेश सुनत सुखपाये ॥
बन्धु बुलाइ सकल तिन लीन्हें । मिलहु जाय नृप आयसु दीन्हें
बन्धु सकल अरु सुभट समाजू । चले भीम भेंटन कुरुराजू ॥
तब उठि साथ चले यदुनन्दन । जेहिमग आवत कौरवनन्दन ॥
प्रथमहिंमिले पितामह आगे । हरिहि देखि रथ तजि अनुरागे ॥
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा । बाहुलीक विकरण सरदारा ॥

अति आदर मिलि सबनकहँ, भीमसहित यदुराय ।
कियो नकुल सहदेवसँग, बास करावहु जाय ॥

नाना भांति करहु सेवकाई । असकहि अग्र चले यदुराई ॥
मिलहिं बरूथ सुभट मगमाहीं । करत जोहार चले सब जाहीं ॥
विदुर दीख यदुनन्दन आये । द्रोणसमेत त्यागि रथ धाये ॥
[illegible]नि पुनि कृपासिन्धु भगवाना । मिलेबहुतविधि करिसन्माना ॥
[illegible]ब पारथहि कहे यदुराई । सुथल शिविर करवावहु जाई ॥
[illegible]वदुर समेत रम्य अस्थाना । पारथ गुरुसंग कीन पयाना ॥
[illegible]ीम समेत चले यदुराई । आगे आवत लखि कुरुराई ॥
विविध भांति बाजत बहुबाजा । हय हींसत गर्ज्जत गजराजा ॥
कुरुपति भीमहिं आवत देखा । सहित रमापति सुन्दर भेखा ॥
[illegible]कुनी करण सहित अनुरागे । तब कौरवपति कुञ्जरत्यागे ॥
तब कुरुपतिहि मिले यदुराई । विविध भांति पूछी कुशलाई ॥
[illegible]ाये भीमसेन अनरागे । कीन जोहार भेंटधरि आगे ॥

अतिहित मिलत भये कुरुराई । चले समेत समाज लिवाई ॥
जहँ यमुनातट निपट सुपासा । दीन तहां कुरुनायक वासा ॥
पटल वितान गड़े बहुतेरे । डेरा परे कुरुपतिहि केरे ॥
यदुपति बहुरि सभामहँ आये । समाचार सब नृपहि सुनाये ॥
सुनि नरेश तब अति सुखलहेऊ । तुरत बोलि मन्त्रिनमन कहेऊ ॥
सब समाज सब साजहु जाई । हय गज रथ दल द्रव्य बनाई ॥
धर्म्मराज कर आयसु पाये । निज निज कारज सकल सिधाये ॥

इहां करण शकुनी सहित, नृप भय प्रातःकाल ।
शिविरशिविरमिलिभूपतिन, गयेजहांशिशुपाल ॥

तेकुरुनाथहि आवत जाना । आगे मिले त्यागि अभिमाना ॥
तहँ कुरुनाथ रहे कछु काला । भये विदा कहि सकल हवाल ॥
देखत धर्म्म प्रताप महाना । जात चले मनकृत अनुमाना ॥
राजत जहाँ पाण्डुकुलदीपा । उतरे चहुदिशि विपुलमहीपा ॥
लै लै भेंट घरन ते आये । कुञ्जरपुर नरेश वहु छाये ॥
बहुत भेंट पाण्डव के आवत । हम राजा बिन हेतु कहावत ।
कुरुपति यह देखत निज नैनन । शोचतमनमहँकहिकहिबैनन
एक नगरमहँ दुइ अधिकारी । भयो बड़ो यह अनरथ भारी
अबलग जगतविदित लघुभाई । ते अब भये तुल्य बलदाई ॥
जगती बहु पदवी थल थोरे । ते अब भये बरोबरि मोरे ॥
गजपुर चहिदिन एक दुहाई । करि हैं आज्ञा भङ्ग प्रजाई
अवज्ञा जे नृप केरे । मरण नीक तेहि जीवन तेरे ॥

हमकहँ दण्ड न देहिं ते, देहिं धर्म्मजहि जाइ ।
छलबल करि बध कीजिये, अस कछु होइ उपाइ ॥

यहि विधि गे कुरुनाथविताना । नित्य निमित्त करत अख्याना ॥
इहाँ धर्म्मसुत संग सब भाई । हलधर उद्धव अरु यदुराई ॥
सुभट सकलदिग्गि शोभा पाये । प्रथमहिं बाहुलीक गृह आये ॥
करि नरनाह विनय कर जोरी । गये पितामह भवन बहोरी ॥
हरिहिते अभिवादन कीन्हा । उठि गांगेय लाय उरलीन्हा ॥
मिलि हलधरहि प्रेमयुतहोते । कुशलप्रश्न पूछी सबहीते ॥
मांगि विदा सुतधर्म्म सिधाये । द्रोणभवन अति आतुरआये ॥
आचार्य अरु द्रोणकुमारा । विदुर ज्ञाननिधि परम उदारा ॥
सबहि यथोचित मिलि नरपालू । विनय सप्रेम कहेउ निजहालू ॥
मांगी विदा चले नरनाथा । द्रोणकुमार भयो तब साथा ॥
...भवन कुरुनाथ चले जब । फिरे सहित हरि हलधर उद्धव ॥
...नि कहेउ हेतु अख्याना । है कछु भेद धर्म्मसुत जाना ॥
...व हलधरकी भौंह तिरीछी । फैलि रही यह बात सुतीछी ॥
...हि परस्पर सबविलखाहीं । विग्रहदेखि परत भलनाहीं ॥
सबकुलबन्धु अरु द्रोणसुत, सुभटसमाजविशाल ।
आवत देखे धर्म्मसुत, सपदि उठे शिशुपाल ॥
...न ए भेंटेउ नृपशिशुपाला । पूंछिकुशल कहिमङ्गलवाला ॥
...मिलकर भोरहि सबकीजे । वेगि जाव मैं आयसु दीजै ॥
...गङ्गसुत गृह नृप आये । यहि प्रकार सब भूप मनाये ॥

आये बहुरि सभामहँ राजा । बोलि लीन सब सचिवसमाजा ॥
मखशाला कहँ अब तुमजाहू । अद्भुत रचहु कहेउ सबकाहू ॥
तिन पुनि शकट अनेक पठाये । कदलीखम्भ विपुल भरि आये ॥
षोड़श सहस खम्भ कञ्चनके । चहुँ दिशि सोहत हैं मञ्चनके ॥
हरित मणिनके पञ्च मँगाये । पद्मरागके पुष्प सोहाये ॥
सोहत मध्य अनूप चँदोवा । कहि न जाय जानैं जिन जोवा ॥
गजमुक्ताझालरि चहुँ पासा । रङ्ग रङ्ग रत्नन की भासा ॥
षोड़श सहस खम्भ कदलीके । रचि दीन्हें अस्तम्भन नीके ॥
मखशाला अति चित्र बनाई । देखि विश्वकर्मा सकुचाई ॥
बुध जन विपुल देखि अनुरागे । बहुविधि चक्र बनावन लागे ॥
आये धौम्य घटज ऋषिव्यासा । शौनक नारद शुक दुर्वासा ॥
शुक्राचार्य बृहस्पति आये । कश्यप विश्वामित्र सोहाये ॥

यहि विधि अट्ठासी सहस, आय गये ऋषि जानि ।
नृप प्रणाम कीन्हेउ सबहिं, जोरि जोरि युग पानि ॥
मखमण्डल महँ वास, दीन महीपति महिसुरन ।
जहँसबभांति सुपास, यत्न बैठे आहुति चले ॥

बहुरि नरेश सभा महँ आये । दुर्योधनपहँ दूत पठाये ॥
लावहु सहित समाज लेवाई । चले दूत नृप आयसु पाई ॥
जाय देखि कुरुपति दरबारा । आवहि मिलन महीपआगारा ॥
कीन्ह जोहार नृपहिं तेहिकाला । कहेउ बोलावत धर्मभुवाला ॥
न मांगेउ नरनाह तुरङ्गा । शकुनी करण दुशासन सङ्गा ॥

तजि हय द्वार तहाँ पगु धारा । जहँ नृप धर्म्मराज दरबारा ॥
अर्ज्जुन भीमसेन दरबानी । लै आवहिं राजन सनमानी ॥
सभा भेद नहिं जान महीशा । जल तजि थलहिंचलेअवनीशा ॥
भीम कहा कुरुपतिहिं सुनाई । दहिने पन्थ न आवहु भाई ॥
कपटी भूप क्रोध करि साना । पवनतनयकर कहा न माना ॥
जानेउ तर्क करत यहि बीचू । जलमग मोहिं बतावत नीचू ॥
लै सरोष अग्र नरनाहा । लागे बूड़न बारि अथाहा ॥
हाकार भीम करि धाये । चहुँ दिशि लोग दौरि सब आये ॥
हि कर धाय दुशासन लीन्हा । नृपहिं वारिते बाहेर कीन्हा ॥

करि अस्नान नरेश तब, पहिरे वसन नवीन ।
चहत चलन तेहि मग सँभरि, जहँ अर्ज्जुन आसीन ॥

पर महल सुता पञ्चाला । तेहिं देखे ये सकल हवाला ॥
सि कहेउ सब सुनहु सहेली । जानत हौ कुलरीति पहेली ॥
सुवन जिमि प्रगट भयेरे । मनहुँ शृङ्ग करशायल केरे ॥
कहि वचन द्रुपदकी जाता । हँसी ठठाइ सुनी नृप बाता ॥
म दुशासन अरु कुरुराई । अपर न काहू सो सुनिपाई ॥
नरेश मन क्रोध अपारा । कहेउ न कछु आगे पगुधारा ॥
न पाँवड़े बहु पट लागे । चलत नरेश भये पुनि आगे ॥
भीम कुरुनाथहि कहेऊ । कपट सनेह सदा तुम रहेऊ ॥
मग तुम कहँ दीन बताई । तहाँ न गयो कपट वश भाई ॥
हि भीम ठाढ़ ह्वै रहेऊ । कहतवचन आएसिमहँ भयऊ ॥

पिता अन्ध क्यों सूझै पूता। हँसे भीम करि तर्क बहूता॥
कौरवनाथ सुनी सो बाता। क्रोध कृशानु जरे सब गाता॥
तब नरेश अस मन अनुमाना। हमहिं बुलाय कियो अपमाना॥
तेहिते अधिक पाण्डवन केरा। होय सफल तब जीवन मेरा॥
यहि विधिनृपनिजमनअनुमानी। गये जहाँ पाण्डव दरबानी॥
आवत नृपहि विलोकि तब, उठे पार्थ हरषाइ।
करि जोहार पुनि पाणि गहि, ते गये सभा लेवाइ॥
बहु लज्जा कछु क्रोधकि ज्वाला। गयो नरेश सभाको माला॥
उठे धर्म नृप आवत देखी। कृष्णसहित सबसभा विशेखी॥
लखिहलधरकहँ कुरुकुलदीपा। कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा॥
मन वांछित वर आशिष पाई। मिले बहुरि धर्मज कुरुराई॥
लीन नरेश निकट बैठाई। नीके रहेउ सुयोधन भाई॥
रुच वचन तब कुरुपति कहेऊ। हम नीके तुम नीके रहेऊ॥
धर्मसुवन कह मधुरी भासा। कुशल हमारे सोहत पासा॥
बैठे कमलनयन यदुराई। अपर कुशल हम कौनि बताई॥
मनहुँ रोषविवश कुरुनाथा। भौंह सिरोरि मुच्छ धरि हाथा॥
राते नयन करत चहुँ ओरा। तब बोले वसुदेव किशोरा॥
कुरुपतिके गर्व्वौ अधिक, देखिपरत मुख क्रूर।
असकहि विहँसे मधुरहरि, सहितसभा भरि पूर॥
व्यङ्ग वचन सुनि यदुपतिकेरे। अरुणनयन कुरुनाथ तरेरे॥
मुसकानि वारि सुधिकेकै। रहे कुरुपतिहि अहित [illegible]

खे भूप सुख वचन खरारी । लागे किङ्कर करन बयारी ॥
ना भाँति सुगन्ध सिंचावा । अतरगुलाब सकल छिड़कावा ॥
ह नृप तात सुनहु नरनाहा । आये पिता न कारण काहा ॥
रसमस्त रनिवास बुलावा । कोऊ एक भूलि नहि आवा ॥
नककाजसकलविधि भारी । आई कस न मातु गन्धारी ॥
ते कुलपति वचन सोहाये । हम नरेश सबको बंदि आये ॥
हेउ धर्म्मसुत तुम्हरे आये । हम नरनाह बहुत सुखपाये ॥
ये भीष्मादिक सरदारा । सबप्रकार भलभयो हमारा ॥
तुम मम आयसु उरधरहू । यज्ञकाज सब निजकर करहू ॥
बोले कुलनाथ महीशा । आयसु होइ करौं धरि शीशा ॥
उ धर्म्मसुत सकल खजाना । कञ्चन रौप्य रत्नमणिनाना ॥
लोह ताम्रादिक जेते । अनुचर राखिदेहु निज तेते ॥
री रतनदविना कोउ आवै । अपर कहा हमहूं नहि पावै ॥
लागे जेहिभाँति विधाना । करेहु ताततहँनिज मनमाना ॥

धर्म्मायसु कुलनाथ सुनि, बोलि सकल जन लीन ।
कञ्चन कोष विशालपर, राखि मञ्जुनिकहँ दीन ॥

कुलपतिरसुतहि हँकारा । सौंपि रत्नमणि गण भण्डारा ॥
परतीति विना जन कोई । पावै धनद सुरेश कि सोई ॥
सानन्द नरनाह बुलाये । रौप्य ताम्रके कोश सुहाये ॥
सौंपि कुलनाथहि दीन्हा । पुनि उल्का बुलाइ नृपलीन्हा ॥
गो धातु लोह सब भारी । कुलपतिकीनताहि अधिकारी ।

देखि धर्म्मसुत सकल बनावा। दुशशासनहिं बहोरि बुलावा॥
मम हित तुमहि परिश्रम भाई। कहेउ दुशासन होइ राई॥
सुनि असवचन भूपसुख माना। सौंपि दीन सब मोदीखाना
मोदी भवन दुशासन आये। थल प्रति गतगन वैश्य टिकाये
चिह्ना सकल नरेशन केरे। आवहि चलि दुशासन नेरे
सनद पाइ पुनि मोदीखाना। जाइ तुलावहि विविध विधान

इहाँ धर्म्म नरनाह तब, विकरण लीन बुलाइ।
बसन कोष सौंपे सकल, कहि मृदु वचन बनाइ॥

बहुरि नरेश दुमंत बोलाये। सौंपि महिषि गोवृन्द सोहाये
द्विरदहि बहुरि बोलाइ नरेशा। सौंपि गयन्द यूथ उपदेशा॥
दुर्दर्शनहिं सो बहुरि बुलावा। सौंपि तुरङ्गम साज सोहा
सहदेवहि बोले नरनाहू। भाजन भवन तात तुम जाहू॥
ईन्धन धन गृह सकल जे भाई। राखि देहु तुम अनुचर ज
शिविर शिविर प्रति शकट भराई। पठवहु जाइ नृपनकहँ
असकहि बहुरि धर्म्मधुर धीरा। जात भये रविनन्दन तीरा।
कहेउ भ्रात यह काज तुम्हारा। कीजे कछु श्रम अङ्गीका
कह रविसुत मम कारज होई। माथे मानि करब हम सो

धर्म्मनन्दकहँ यज्ञमहँ, दानकर्म्म बहु होइ।
तुम सबपर शिरताज हौ, करिय कृपा करि सोइ।

न आदिक जे करता। सबन बोलि कह पाण्डव भर

सु कर्ण करहिं जस जाहीं। फेरहु पल न करहु न नाहीं॥
हिं जो जब रविकुल केता। करब सकोच न सो तब देता॥
सुत कहेउ करन यह काजू। मख गृह गये धर्म्म महराजू॥
यह बनी वस्तु विधि नाना। मेवा मधुर विपुल पकवाना॥
लहि भूप कौन अधिकारी। लागे करन अनेक तयारी॥
ये चतुर विद्वान बुलाई। जिन देखे मख विपुल कराई॥
सङ्कल्प ऋषिनके आगे। धरहिं ते बोलहि चतुर सभागे॥
ये मख ऋषि सहस अठासी। अपर विप्र जे गुणगणरासी॥
कार भोजनादि सेवकाई। सौंपि पार्थ कहँ धर्म्म जराई॥
कुरुपतिहि सबहि हँकरा। करण दुशासनादि सरदारा॥

कहे दुर्वचन भीम बहु, द्रुपदसुता मम संग।
कइ न्टप कीजे अवशि सोइ, यज्ञ होहि जेहि भंग॥

कर्ण अवशि शिर धरहू। दान प्रमाण त्यागि तुम करहू॥
ासन हि कहेउ नरनाहू। विपुल सोध पठवहु सबकाहू॥
ा द्विगुण त्रिगुण करि दीजै। यश लीजै मख भङ्ग करीजै॥
ह न देश कोष जब सोई। मखविध्वंस हँसी तब होई॥
ह न तब कोइ धर्म्महिराजा। चलहि न छत्र न बाजहिंबाजा
विधि भूपति आयसु दीन्हा। सादर सबनमानि शिरलीन्हा
रण कहेउ युगल करजोरी। सुनियें विनयकृपानिधि मोरी॥
। द्रोपदी कृत अपराधा। न हिं न धर्म्मसुवनकृत बाधा॥
अनर्थ सिर तासु बिसाई। नाथलोक परलोक नभाई॥

बिहँसि नरेश कहो सुनु भ्राता । भीम ससैन द्रुपदको जा
कीन्हेउ खल्ल वचन अपराधा । धर्म नवैग प्रबल्ल कन अ
चाहत होन युधिष्ठिर राजा । होत भंग सम पद पति ल
बन्धु नीति अस कहति पुकारि । नहि कल्याण भल विन
नीतिअधर्मननेकविचारिय । जेहिनिधितेहिनिविमल हिर
जहँलगि चहिये करिये हानी । कहतपुकारिनीति अमि

सुनि भ्राता मुख वचन अस, विकरण रहे चुपाय
नृप आयसु सब शीश धरि, चलत भयो शिरनाय

होतप्रात याचक गण जागे । जहँ तहँ वंश प्रशंसन लागे
आवहिं विप्र वृन्द बहुतेरे । चहुँ दिशि करन वितान
सुनि अस शोर उठे तब जागे । देन दान रविनन्दन ला
लेखक मन्त्री करण बुलाये । पत्र याचकन विप्रन पाठै
कोउ तुरङ्ग गज कोउनिधिपावा । कोउ मणिहाटक भारस
भोजन वसन लहैं पुनि कोई । कोउ अतिरङ्क धनदसम है
जहँ रविनन्दन चारि देवावहिं । याचक जाहिं बीस तहँ
सज्जन कुशासन दीजे आना । वस्तु पठावत विन अनुस
चिद्धाढ्गिुण तिगुण करि दीन्हे । देतकि बार बीसगुण कं
यहि विधि करहि अधर्म अनेका । छटन हेत धर्मसुत टे

लखि अनरथ अति सात्यकी, हृदय परमदुख पाय
सकल कथा निस्तारते, भीमहिं कह्यो बुझाय ॥

भीम हृदय पुनि भो दुख भारा । आये देखि सकल व्यवहारा ॥
भयो रोष उर अति दुख पाये । सात्यकि सहित कृष्णपहँ आये ॥
कहेउ भीम हरि परम अकाजू । भयो नाश युगलोक समाजू ॥
निपट यज्ञ यह अनरथमूला । हमपर भयो ईश प्रतिकूला ॥
असकहि कहेउ सकल इतिहासा । चलत न गदगद विक्रमभासा
प्रभु यहि कृत्य योग जगमाहीं । सकल सुरेश धनद रहि नाहीं ॥
सुनि अस भीमहिं गहवर जानी । धरहु धीर कह शारँगपानी ॥
हत वृथा तुम हमहि सन्देशा । कहहु जाइ जहँ धर्म्मनरेशा ॥
। कीजै हम कौन उपाऊ । कीन्ह भूप करता कुरुराऊ ॥
हु न होत अब कौन हमारा । करै भाग्य सब जो करतारा ॥
तुम कहहु नरेशहि जाई । मन भावत तस करैं उपाई ॥
बन्धु सकल अरु सचिवगण, बोलि भीम सब बात ।
कहत भयो गद्गद गिरा, सुनत गये जरि गात ॥
सुतहि सब दूषण देहीं । कौन कुसाज साज बिन जेहीं ॥
भीम सँग सकल समाजा । चले जहाँ कुन्तीसुत राजा ॥
नृपहि हत सकल प्रणामा । दहुरि एकान्त गये लै धामा ॥
कहत भीम कर जोरी । सुनहु नाथ विनती इक मोरी ॥
सात्यकी लखि अस रङ्गा । बहुरि कहेउ निजगमन प्रसङ्गा ॥
चितसकल देखिजिमिआये । सब प्रसङ्ग कहि सकलसुनाये ॥
सम वचन कहेउ भगवाना । कुरुपति केर कुकर्म बखाना ॥
अस महिमि भूमि नृप परेऊ । धीरधुरीण धीर पुनिधरेऊ

उठि बैठे नृप मञ्च विशाला। बोले भीम नाइ पद भाला।
अब नरेश मोहिं देहु रजाई। कुरु अनुचर सब देउँ उठाई।
जिनकै कीरति जगत प्रशंशी। करिहैं काज सकल यदुवंशी।

सास्बसहित अनिरुद्ध, प्रद्युम्नादि कुमार जे।
ते सब विगत विरुद्ध, करिहैं कारज नाथ तव॥

जनि विचार कीजे नृप आना। दूनकर उचित करब अपमान।
जो कदापि कर आयुध धरिहैं। तौ पुनि कठिनगदासम म...
मतिहग वंश वीर अस को है। रहै ठाढ़ मम सन्मुख जो है।
तुम नृप यज्ञकरो सजि साजा। मैं मदनाश करौं कुरुरा...
वेगि भूप मोहि देहु रजाई। देहुँ भगाइ कुरुपतिहि र...
यदुवंशिन प्रति थल पुनि राखो। कीजे दूरि पाप अभिलाखौ।
सब विधि मूढ़ चहत उपहासा। मतिहगवंश करों सब नास।
कहेउ धर्म्मसुत चुप करि रहऊ। भूलि न बात बन्धु असकह।
जन्म प्रयन्त सदा निज जाना। करिय न काहूकर अपमा...
निज कृत कर्म्म मूढ़ फलपैहैं। हमहिं न स्मारमण विसरैहैं।
कहेउ भीम अबहींलग राजा। नहिं भारी कछु भयउ अ...
बड़ अकाज होई अब आगे। यह कुरुनाथ धर्म्मपथ त्यागे।
आयसु देहु युधिष्ठिर राई। करौं वाद कुरुपतिसन जाई।

कहउ भूप अनुचित न अब, बोलहु बश अज्ञान।
हम समेत कुरुनाथ कर, होत तात अपमान॥

मन मायहि के रघराजू । ताते हम सौंपेउ सब काजू ॥
न कछु यदुवंशिनपाहीं । गृहतजिअनतउचितअसनाहीं ॥
विधिप्रिययदुवंशिनत्यागी । कौनआजु सो ममशिर लागी ॥
अपमान किये बड़ि-हानी । रहहु चुपाइ तात असजानी ॥
तलागि होइ अपराधा । नहिं जग बुध करिहैं उपवाधा ॥
अपमान बचे निज होई । दोष न धरहिं विबुधगण कोई ॥
हि तात न हँसी हमारी । सदा सहायक गिरिवरधारी ॥
निश्चय आवत मन मोरे । तात तजहु परतीति न भोरे ॥
ल चहहु आन अपमाना । तिनकर सदा करत भगवाना ॥
जिय जानि शोक परिहरहू । यज्ञकाज सब प्रमुदित करहू ॥
हि सो जु करहिं भगवाना । तुमहिं हमारि शपथ पितुआना
हिं प्रकट बात यह होई । राखहु सकल हृदयनिज गोई ॥
जके वचन सोहाये । निजनिजकारज सकलसिधाये ॥
लखि अनरथ यदुवंशमणि, निज विचार मन कीन ।
आठौ सिद्धी निद्धि नव, बोलि सु आयसु दीन ॥
धर्म्मराज भण्डारा । होइ तहाँ अब वास तुम्हारा ॥
कोटिन मग किन कोई । घटै न सो परिपूरण होई ॥
मम काज न भंगा । करहिं न जग जेहि अयशप्रसंगा ॥
महि कहहु सिख एहू । धर्मज बास कोश अब लेहू ॥
कुबेरपति अति सेवकाई । निज यश हेतु द्रव्यपर जाई ॥
नमानि के करिलासू । करेहु विविधतुम आदरतासू ॥

सो हमहूं तुमहूं मिलि कीजै। लेश कलेश न भक्तहि दीजै।
कीन्ही बिदा सीख दै भूरी। सब भण्डार भयो भरि पूरी॥
निकसतसकलवस्तुबिधिकोटी। कोषप्रमाण होत नहिं छोटी
यह चरित्र कीन्हे भगवाना। मर्म न दूसर जानत आना॥

धर्मज भट निज यूथ सँग, गये देखि सब कोस।
सुमिरत यदुनन्दनचरण, पुनि पुनि करत भरोस॥
आयौ दिन शुभ यज्ञकर, गहगह हने निशान।
मखमण्डलमहँ धर्मसुत, प्रातहि करि असनान॥

प्रथम विभूतिसुखदसबकाला। तापर डासि नागरिपछाला
कुश आसन मृगचर्मसोहावा। चित्रगलीचा अतिसुखपाव
द्रुपदसुता अरु पति जगतीके। पहिरे यज्ञ विभूषण नीके
वेद मन्त्र द्विजकरहि उचारा। आसन धर्मराज पशु धारा॥
जहँ तहँ विपुल बाजने बाजे। आसन धर्म नरेश विराजे
प्रथम भूप पूजे गणनायक। सोहत साथ आपु कुरुनायक
जहलागत मणि कञ्चन काजू। तहँ हर्षत बहु कौरव ज
ऋषिगण देव पुजावन लागे। चक्र नवग्रह अति अनुरागे
यज्ञ क्रिया जस वेदन वरणो। धर्मनरेश करत तस करणी
श्रुति मारग जसपूजन कयऊ। यामचारि गत वासर
हवनसमय अब अति नियराना। आवन लगे महीपति न
मख मण्डल देखन तेहिकाला। आये सहदेवहिं।

यातुधान लखि सहित समाजा। कर गहि बैठारत कुरुराजा॥
बहु सनमान करत महिपाला। बैठारे जहं मञ्च विशाला॥
तेहि अवसर आवत भये, नरनाहनके वृन्द।
बैठारत शकुनी करण, कुरुपति सहित अनन्द॥
भीष्म द्रोण विदुर तब आये। कर गहि दुश्शासन बैठाये॥
मगहराजके बान्धव आये। आसन परम सुहावन पाये॥
जिनकी कीरति जगत प्रशंशी। तेहि अवसर आये यदुवंशी॥
रासब प्रिय हल आयुध हाथा। तेहि पाछे आवत यदुनाथा॥
उद्धव सात्यकि सहित कुमारा। कर गहि भीम पार्थ बैठारा॥
पुरोहित होन हुताशन काजा। ग्रन्थि निबन्धनकर महराजा॥
आचार्य कुरुपतिहि बखाना। अब नृप समय आइ नियराना॥
शिर तिलक करै अब कोई। राजसूय करता तब होई॥
पखारि चरण नरनाहू। करै बहोरि वरण सबकाहू॥
तिलक भूपति शिरकरई। तब नरनाह श्रुवा अनुसरई॥
कुरुपति वालमीकिसन, कहेउ वचन शिर नाइ।
नाथ तिलक करि यज्ञहित, लीजैं चरण धुवाइ॥
कहेउ आदिकवि कश्यपहि, तिन घटसुतहि सुनाइ।
यहि विधि सब सबसों कहत, उठत न कोउ ऋपिराइ॥
व्यासम्मवऋषिअसकहहीं। सकलभुवनपति सो अहहीं।
हि बिलोकत उठत न कोई। आवै जो सर्व
हि उठैं रमापति आछे। सब ऋषिवृन्द

कहे भीम अब वेगि खरारी । उठत न होत अकारजभारी ॥
सुनि अस धर्म्मराज रुख पाई । ठाढ़ भये उठि सहज सुहाई ॥
त्यागि मञ्च मन अति हर्षाई । मृगपति ठवनि चले यदुराई ॥
लखिशिशुपालक्रोधअतिकीन्हा । चर्म कृपाण हाथ गहिलीन्हा
गरजि जलदइव गिरा गंभीरा । कहेउ नीच सुनु रे यदुवीरा ॥
नहिंजानत निजजाति प्रभावा । सकलसभामहँ उठिशठ ध

अब जनि पग आगे धरहु, नतु मम चलत कृपान ।
तासु वचन अवलोकि तब, ठाढ़ रहे भगवान ॥

कुरुपतिआदि कुटिल मनहरषे । मानभङ्ग लखि हलधर मर
चहत ताहि मूशलगहि मारन । पुनिपुनि उद्धव करतनिवा
फरकत यदुवंशिनके.बाहू । जहँ तहँ सब बरजैं सबकाहू ।
करत कोप शिशुपाल समाजा । वरजिवरजिराखत ऋषिरा
थरथर कांपत सब नर नारी । कहहि होत यह अनरथ भा
विकल होत अति धर्मजराजा । सबविधिआपन जानिअका
भीम कहेउ मृदु वचन सुनाई । दमघोषक सुत रहो चुपाई
जनि दुर्वचन कहिय अब भारी । होई अनरथ निपट पछा

भीम वचन दमघोषसुत, सुनि कछु कान न कीन्ह
कहेउ दुर्वचन बहु हरिहि, प्रभु कछु उतर न दीन्ह ॥

रे शठ निपट जातिकरहीना । नागनगरते भये कुलीना
ऋषि वृन्दन आगे । रञ्चक कानि न कीनि अ

हम बैठे सब विपुल भुवारा। ज्येठ बन्धु कहँ लघु करि डारा ॥
बड़ आश्चर्य्य द्विजनके आगे। चरण अहीर धुवावन लागे ॥
अब द्विजवृन्द भये पुनि कैसे। शूद्र न मानत गुरुकहँ जैसे ॥
प्रथम ग्वालगृह प्रकट अभागा। पुनि यदुवंश कहावन लागा ॥
भयो वर्णसङ्कर जगजाना। सबकर मूढ़ करत अपमाना ॥
सुनि कटु वचन उठे यदुवंशी। राखहिं उद्धव आदि प्रशंशी ॥
पारथ भीम आदि सब योधा। कहत न कछुक जरत उरक्रोधा ॥

निज मन्दिर लखि आगमन, कछु न कहत तेहि पास।
शोचविवश नृप धर्मसुत, लखि यदुनन्द उदास ॥

हर्ष विवश कुरुनायक आदी। विस्मयवशसबऋषिसनकादी ॥
सुनहु [illegible] कह नृप मृदुबानी। रहहु चुपाइ काज निजजानी ॥
मख विध्वंस होइ मम ताता। तुमकहँलाभ कवनि बड़िबाता ॥
बचन न मानत धर्मजकेरे। कहत हरिहि बहुवचन करेरे ॥
घूमि बैठु निज आसन जाई। नत ह्वै है मख भङ्ग लराई ॥
धर्म्म नरेश बन्धु युत नीचू। धोवत ग्वालचरण मखबीचू ॥
हरि उदास सुनि बचन तिरीछे। आगे चलत न घूमत पीछे ॥
देखि दशा यदुनन्दन केरी। करुणा हृदय हलधरहि घेरी ॥
म[illegible] न सकत गहिउद्धव राखत। पुनिशिशुपालवचनअसभाषत

विप्रवृन्द की कानि तजि, चरण धुवावन जान।
बीरहीन जानै अवनि, मूढ़ न मन हिमियान ॥

यहिविधि कहतविपुल दुर्व्वादा । विनघन होत गगनमहं नादा ॥
भा दिग्दाह उलूक पुकारे । महि डगमगत उदित भे तारे ॥
यातुधान कटु कहत अनेका । कृत अपराध अधिक शत एका ॥
बोलन चहत अपर कटुबानी । कहेउ समुभनव शारंगपानी ॥
अब रसना जनि चपल चलाई । नत जैहै शिरसहितउड़ाई ॥
कहिअसवचन नयन रतनारे । कालरूपकर चक्र सँभारे ॥
लागेउ घूमन चक्र कराला । कहेउ वचन गम्भीर कृपाला ॥
अब न वचन निकसै मुखतेरे । नत जैहौ यमसदन वसेरे ॥
सुनि कर गहेउ चर्मकरवाला । कहि दुर्वचन उठे शिशुपाला ॥
जातुधानभट उठेउ सरोषा । यदुजनअस्त्रगहहिंकरिरोषा ॥
पारथ झपटि धनुष गुणदीन्हा । गदा उठाइ पवनसुतलीन्हा ॥
मख दीक्षित नृप रक्षण हेतू । गये युगल भट पहुँचि सचेतू ॥
झपटि झपटिभटआयुध गहहीं । धरुधरु मारुमारु धरु कहहीं ॥

भीष्म द्रोण शकुनी करण, दुर्योधन नरनाह ।
ठाढ़ सजग जहँ धर्मसुत, जासु भङ्ग उत्साह ॥

विकल धर्मसुत धरै न धीरा । उमहे यातुधान यदुवीरा ॥
रक्षणमख समाज ऋषि धीरन । कुरुपति ठाढ़कियेनिजवीरन ॥
भीम दुशासनादि भट भारी । रक्षहिं यज्ञ समाज सुखारी ॥
अस मन चाहत कौरवराजू । होइ महामख भङ्ग समाजू ॥
गजपुर भयो कोलाहल भारी । मनहुँ प्रवेश कीन यमधारी ॥
शोकवश भलअजाता । मोहिं दारुणदुख दीनविधाता ॥

कुन्ती आदि सकल नरनारी । विकल होहिं निजकर उरमारी ॥
व्यासआदि सब धर्मनरेशहि । समुझावत करि वहु उपदेशहि ॥
इहाँ होत वहु हाहाकारा । दामिनि सम दमकहि असिधारा ॥
विपुल सहायक जे भटभारी । आइ गये शिशुपाल पक्षारी ॥
वहु यदुवंश सहायक राजा । आये साजि बजावत बाजा ॥

हल मूसल निज पानि, गहेउ रेवतीरमण जव ।
परम रोपवश जानि, उद्धव करत प्रबोध वहु ॥

केवल एक छाँड़ि शिशुपाला । अपर न होइ जीव वधकाला ॥
जवलगि तुम नहिं करौ प्रहारा । चलौ न अपर मनुज हथियारा
ह्वै सरोष भय देहु देखाई । यातुधान जेहि जाइँ पराई ॥
जेहि विधि धर्म जाइ मखभङ्गा । होइ तात सोइ तजिय प्रसङ्गा
परम चतुर उद्धव सुख बानी । हलधर लीन्ह सकल शिरमानी ॥
उत शिशुपाल प्रचारत आवा । बार बार हरि चक्र फिरावा ॥
पाणि सुदर्शन भेष कराला । डरत न कटुक कहतशिशुपाला ॥
प्रलय समय जिमि शङ्कर केरे । तेहि प्रकार हरि नयन तरेरे ॥
त्यागेउ हरि वहुवार भ्रमाई । करत रमापति शम्भुदोहाई ॥
रवि सम तपत सुदर्शन धाये । दनुजन देखि महा भयपाये ॥

ताके कण्ठ सुदरशन, बूमेउ बार हजार ।
शीश काटि प्रभु रुख निरखि, गयो विष्णु आगार ॥

शीश विहीन रुण्ड महि परेऊ । देवन देखि सुमनभरि करेऊ ॥

यदुवंशिन असि चर्म उठाये। दनुजन देखि महाभय पाये॥
मूशल पाणि गहेउ हलधारी। दनुजन देखि भयो भय भारी॥
अति भयभीत निशाचर भागे। पीछे यदुवंशीगण लागे॥
चपरि संभारि समरमुहाहीं। चलन न अस्त्रभाजिजेहिजाहीं॥
यहिविधि निशिचरनिकर पराने। जहँ तहँ गये जात नहि जाने॥
धावन धर्महि खबर जनाई। नाथ विजय यदुनन्दन पाई॥
चक्रपाणि गहि रूप कराला। काटेउ दमघोषक सुत भाला॥
भयवश देखि अमित प्रभुताई। गये निशाचर सकल पराई॥
खण्डित शीश परेउ शिशुपाला। महाराज भूतल यहि काला॥
सुनत सषि कह धर्मसुत, हरि यह नीक न कीन्ह।
अपर कहहु केते सुभट, यमपुर शासन दीन्ह॥
एक चैद्य विन कह हलकारा। अपर न गयो युगल दिशिमारा॥
सुनि सरोष भय कुरु नरपाला। भृकुटीकुटिलविलोचनलाला॥
फरकत अधर कहन अस लागे। द्रौणी द्रोण धर्मसुत आगे॥
उचित न मखमण्डलमहँ ऐसी। भई पितामह बात अनैसी॥
मखहित प्रथम निमन्त्रण दीन्हा। भवन बुलाइ तासु वध कीन्हा॥
यज्ञादिक कारज यश हेतू। अपयश पूरिरह्यो भरिखेतू॥
मख विध्वंस भयो सब भांती। निपट बन्धु ये वंश कुजाती॥
तात यत्न कीजै अब सोई। अपयश भंग जौन विधि होई॥
करिय साज सजि समर बहोरी। जेहि संसार धरै नहि खोरी॥
महि हीन होइ यदवंशी। की जग रहै न कुरु कुलवंशी॥

द्रोण पितामह सजग ह्वै, गहहु हाथ हथियार।
होइ नाथ यदुकुल सकल, नतु अब वंश हमार॥

सन्मुख समर यदुन सन लेहू। जियत न जान द्वारकहि देहू॥
महारथिन निज धनुष चढ़ाये। सजग भये नृप आयसु पाये॥
निजदल नृप संदेश पठावा। करहु समरहित सकल बनावा॥
धर्मराज रुख लखि सब भाई। सजग ठाढ़ भे धनुष चढ़ाई॥
दीख विदुर भा अनरथ भारी। आयो धर्म नरेश पछारी॥
कहउ शुभ यह अनुचित ताता। उचित तुमहिं नहिं शत्रुअजाता
विन शिशुपाल हेतु मखरच्छा। अपर वीर हरि वधे न इच्छा॥
यदुपति सदा करत हित तोरा। करत शत्रुवत अन्धकिशोरा॥
सब विधि चहत तुम्हार अकाजू। ताते सजत समरहित राजू॥
हरि तव यज्ञ सफल करवैहैं। नृप निज चलत बिगार करैहैं॥
सुनि असवचन भीम मनमाना। भूप विदुर सब सत्य बखाना॥
दुष्टरूप कुरुनाथ स्वभाऊ। है हमरे सब कछु यदुराऊ॥
पठै संदेश द्रौपदी रानी। हरिसनसमर किये बड़ि हानी॥

धर्मराज सुनि सुनि बचन, निजमन करत विचार।
हरि वियोग इत अयश उत, उरदुख दुसह अपार॥

पुनि धीरजधरि धर्म नरेशा। कह्यउ विदुरमत भल उपदेशा॥
कह सुनधर्म पितामह पासा। नाथ तुम्हार सदा हम दासा॥
चब करि यतन करहु प्रभु सोई। मखरच्छा अबते कछु होई॥
तब कुरुपतिहि देउ समुझाई। जेहि न होइ हरिसंग लड़ाई॥

कहेउ बात भलि जस मनमोरा। मैं समझावों अंधकिशोरा॥
अस कहि भीष्म तहां पगुधारा। जहं कोपत कुरनाथ भुवारा॥
नृपहिं पितामह बहु समुझाये। सहित समाज धर्म्मपहं आये॥
कहत काह पूंछत कुरुनायक। कहेउ नरेश होइ ज्यहि लायक॥
अब यह विमल पितामह बानी। हमतुम सकलनकरिय शिरमानी॥
कह कुरुनाथ उचित मत एहा। समर सरोष त्यागि सन्देहा।
जिन नहिं नेकु कानि मममानी। दीन उतारि नरकमें पानी॥
नीच होत तौ वध उचित, तुल्य समर अब योग्य।
अपर यतन करि अयशते, कबहुंन होब अरोग्य॥
बाहुलीक कह सुन नृप बानी। सत्य विवेक धर्म्मनयसानी॥
जेहि सब वधेउ दनुजकुल टीका। करब तासु असकहबननीक॥
जबते भा हरि जन्म पुनीता। वचन बली दुष्टन कहं बीता॥
को जग मिलहितुमहि समयोधा। करत समरयदुपतिहिप्रबोधा॥
हरिसन जे भट रणकुन भारे। मानुहं मरे प्रथमके मारे॥
तातसमुझि परिहरहु कुमतिही। सोह नसमर तुम्है यदुपतिही॥
चलिहि न विक्रम सहित सहाई। नाहक प्राण गंवैहौ जाई॥
चलिहि चक्र हल मूशल नाना। हरि हलधर करिहैं घमसाना॥
तब कहिहौ पछिताइ हम, काह कुमारग कीन्ह।
तेहि अवसर हलधर सहित, यदुपति दर्शन दीन्ह॥
राम हल मूशल हाथा। आगे तेहि पीछे यदुनाथा॥

चर्म्म कृपाण गहे कर माहीं । उग्ररूप छूटत रिस नाहीं ॥
यादव सात्यकि दुहुंदिशि आवत । अस्त्रगहे बहु यदुपति धावत ॥
कहेउ कृपालु धर्म्म श्रुति पांहीं । हम शिशुपाल वधे मखमाहीं ॥
यदपि भई यह बात अयोगू । दोष तुम्हार न देहैं लोगू ॥
अब तुम साजसाजि मख करहू । जनि विस्मयमन रञ्चक धरहू ॥
नत कीजै हमहूं तुम सोई । कइहि वचन कुरुनायक जोई ॥
जो दमघोष सुवनकर अंगू । होइ जो प्रकट करै रणरंगू ॥
मृतक परेउ जो महि शिशुपाला । ताहि पठावहु भुवनभुवाला ॥
सज्ञ करहु सेनापति जाई । आवहि दण्ड बांधि वरि आई ॥
जे नृप दण्ड चैद्य कहं देता । पठवहु निजचर सेन समेता ॥
आवहि दण्ड सवनप्रति बांधी । भूप भई महि त्रिगत उपाधी ॥

धर्म्मराज सुनि हरि वचन, कह अस उचित न नाथ ।
वध बुलाइ करि दण्डहित, पठइय निजजन साथ ॥

तासु तनय वध समुझि दुखारी । पुनि यहदण्डविपतिवड़िभारी
कह प्रभु उचितजोति कहवाता । नृपकह दण्ड विचारन ताता
निज सेनापति भूप बुलावा । कहेउ यथा हरि आयसु पावा ॥
आवहु दण्ड बांधि सब तेरे । नहि शिशुपाल सुतनके नेरे ॥
गुम कहेउ यह हरि नहिं जाना । चैद्य राखि रथ कौन पयाना ॥
माहिष्मती नगर पहुंचाई । लीन्हें छांड़ि अपर मुवगाई ॥
कह शिशुपाल सुतनते एहू । हो अदण्ड तुम दण्ड न देहू ॥
अपर नरेश करें कोउ भीरा । वेगि जनावत धर्म्मज तीरा ॥

सब हम करब सहाय तुम्हारी। धर्म्म दोहाय नगर तब भारी॥
अस कहि बहु विधि धीरज दीन्हा। आपु गमन हस्तीपुर कीन्हा॥

इहां तुरत यदुवंश मणि, आयसु दीन कराय।
बाजे विविध निशान घन, सबन दीन बैठाय॥

याम निशागत यह सब भयऊ। पुनि यदुनाथ महामख ठयऊ॥
जस मखमारग वेदन वरणा। कीन धर्म्मसुत तब आचरणा॥
भयो तिलक पूर्णाहुति कीन्हा। छत्र धराय राज्यपद दीन्हा॥
बाजे विपुल शङ्ख घरियरा। भेरि धेनु मुख पवंगि दुबारा॥
विपुल दान द्विजवृन्दन पाये। ऋषियन अशन पान करवाये॥
भै बकशीश याचकन भारी। शतयोजन नहि रह्यो भिखारी॥
जहं जहं बारमुखी बहु नाची। नगर नगारेकी ध्वनि माची॥
कछुदिन सबहि राखि नरनाहा। करि सतकार समेत उछाहा॥
न्टपन विदा हित आयसु मांगे। चलती वार निपट अनुरागे॥
साजि बाजि गज वाहन नाना। दुर्योधन दल कीन पयाना॥
फिरे पाण्डुनन्दन पहुँचाई। उद्धव राम सहित यदुराई॥
वाहुलीक पद पुनि शिरनावा। गङ्गसुतन ते आशिष पावा॥
विदुरहि मिलत नाथ जगतीके। भेंटत राम कृष्ण अतिनीके॥
कीन्ह विदा अति पुलक शरीरा। गे सुतधर्म द्रोण गुरु तीरा॥

गुरुहि नाय शिर भेंटि पुनि, अति हित द्रोणकुमार।
मगमहँ मिलि रविनन्दनहि, जात भये आगार॥

यदुवंशिन मिलि धर्म सुवारा। कीन्हेउ अशन अनेक प्रकारा ॥
सकल बहोरि सभामहँ आये। कोउ विश्राम करत सुख पाये ॥
कोउ खेलत बहु पंसासारी। खेलत कौतुककी बलभारी ॥
देखत नृत्य गान सुन कोऊ। कोउ मृगयाहितसजतसजोऊ ॥
हरि हलधरयुत धर्म्मनरेशा। लखि मन सकुचत कोटिसुरेशा ॥
जेहिमारग निकसत कुरुचन्दा। देखिपरत बहु याचकवृन्दा ॥
आवत लखि कुरुनाथ सवारी। कहहि प्रशंसि प्रचारि प्रचारी ॥
दुर्योधन आदिकन सुनाई। करै धर्म्मसुत केरि बड़ाई ॥
काहे न होहिं धर्म्मसुत भारी। जिनके तुम समान भण्डारी ॥
दानकृपाण निपुण सब भाँती। भूप दशा कैसे कहि जाती ॥
जासु किङ्करन के मन ऐसे। आपु नरेश होहिं धौं कैसे ॥

रहे न जगमहँ रङ्क कोउ, सब नर धनपद पाव।
तासु कोशकीरति-विमल, कहहु मनुज किमिगाव ॥

कुरुपति धर्मसुयश सुनि कानन। विहरतहृदय मनहुँ पविबानन ॥
अनिगकुचतजनुअवनिसमाई। यहिविधिकुरुपतिमन्दिरजाई ॥
करन बनै नहि काज नशाना। पुनिपुनिधृगनिजजीवनजाना ॥
विभव विलोकि युधिष्ठिरकेरा। कुरुपति उर संशयकृत डेरा ॥
भोरहि उठे धर्म्मसुत राजा। हलधर कृष्ण समेत समाजा ॥
बैठ सभा मन्दिर महँ जाई। दूतनकही खवरि असि आई ॥
प्रभु यह नागनगर भल बसई। अमरावती जानि लघु हँसई ॥
का कोउ रङ्क न अस यहि धामा। तुमते हीन जासु गृहनामा ॥

सबके गृह मणि कञ्चन रासी। दास अनेक अनेकन दासी॥
गज रथ चपल तुरङ्गम छाये। गृहगृहजनुहरि धनद वसाये॥

प्रथम जयति तव जयकरण, जय कुरुनाथ भुवाल।
कहहिं परस्पर रङ्क ते, जिन कीन्हों धनपाल॥

धर्मराज तब दान पताका। विदित रसातल भूतल नाका॥
दूतवचन सुनि अतिसुखमाना। बहुरि नरेश करत अनुमाना॥
कहत दूत सब जो निधि मेरे। भे तस रङ्क नागपुर केरे॥
यहि मन्दिरते जिमि मैं एका। प्रगट तथा धनवान अनेका॥
नेक कोश मम भयो न खाली। दानदशा सुनि भूतल हाली॥
सो यह द्रव्य कहाँते आई। पूंछेहु भीमहिं भूप बुलाई॥
सुनि नृपवचन पवनसुत हाला। कहेउ भयो यदुनाथ दयाला॥
सत्य तुम्हारि समुझि मनमाहीं। त्राता अपर दीख कोउ नाहीं॥
देखि अनाथ दया प्रभु कीन्ही। राखिलाजकरुणानिधिलीन्ही॥
कुरुपतिचहत भङ्गमख कीन्हा। कृपासिन्धु सोइ करै न दीन्हा॥

रही प्रीति उर छाइ, यदुपतिकी करणी समुझि।
दशा न सो कहि जाइ, जोरि पाणि विनवत हरिहि॥

जय राधाबर हलधरसोदर। जयतिदयानिधि जय दामोदर॥
जय जय जय वृन्दावन बासी। लक्ष्मीपति वैकुण्ठनिवासी॥
निज जन हेतु सदा तुम त्राता। ममपतिराखिलीनतुमजाता॥
हलधरे सहित जयति जय जोरी। राखेउ लाज दयानिधिमोरी॥
वचन कह दीनदयाला। रही तुम्हारि लाज सब काला॥

तुम सरीख जे भूतल राजा । नहिं तिनकर नृप होत अकाजा ॥
कह नृप नाथ सुनौ गिरिधारी । एक हृदय मम संशय भारी ॥
चैद्य जाहि निजधाम पठावा । रोष मोहिं केहि कारण आवा ॥
विदुर बुझाइ कह्यउ ममपाहीं । तब सन्तोष भयो मनमाहीं ॥

हँसि बोल्यउ यदुवंशमणि, तुमहिं उचित यह भाव ।
नीतिधर्म उर वसत है, कस न रोष उर आव ॥

जो नृप होत अज्ञ अविचारी । करत न रोष सभय लखिरारी ॥
आवत जहाँ निमन्त्रण दीन्हें । शत्रु मित्र तहँ उचित न चीन्हें
अनुचित खोरि धरत सबलोगू । समता तासु कहत वधयोगू ॥
यशहित भूप यज्ञ तुम ठयऊ । अयशविलोकि क्रोधउरभयऊ ॥
तदपि नीच असज्जहि थल पैये । करिय विनाश विचार न लैये
कौन क्षमा तुम अस जिय जानी । यह वधयोग अमङ्गलखानी
मुनि नृपधर्म परम सुखपाये । हलधर कृष्ण समेत नहाये ॥
उद्धव सात्यकि राम सोहाये । प्रथम कृष्ण कुन्ती गृह आये ॥
अशन पानकरि सहितसजूहा । माँगी विदा चले दल जूहा ॥

बहु प्रकार रानीन मिलि, कुन्ती पद शिर नाय ।
प्रद्युम्नादि कुमार जे, माँगत सबहि रजाय ॥
चढे सकल निज निज रथन, चले निशान बजाय ।
पुर बाहर लग धर्मसुत, फिरत भये पहुचाय ॥

गये द्वारकहिं जब यदुराई । बैठे सभा धर्मसुत आई ॥
करहिं धर्मसुत राज्य सुखारी । सुखसब जोगवत आन्धव चारी ।

अभिमनु आदि विलोकि कुमारा । लहत मोद मन धर्म भुवार
एक दिन बाजि चढ़े नरनाथा । सुभट समाज चले बहु साथा
आपुबाहरू बन्धु बर चारो । धाये बन्दी विरद पुकारो ॥
अभिमनु आदिक साथ कुमारा । सहिमनी नगरी पगुधारा ॥
आगे मिलेउ चेदसुत आई । कीन अनेक भाँति पहुनाई ॥
अभय बाहँकरि ताहि बलाये । कहि अदण्ड नृप निज पुर आये
धर्म नरेश जानि सब लायक । दण्ड पठाइ देहि नरनायक ॥

यहिविधि विपुल प्रताप नृप, बसत नागपुरमाहिं ।
सबलसिंह लखि जासु गति, धनद शक्र सकुचाहिं ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

जनमेजय कह ऋषि कहहु, सकलकथा विस्तारि ।
परमप्रीति कुरु पाण्डवन, नाथ भई किमि रारि ॥
कह ऋषि सुनु नृप गजपुरबासी । कुरुपाण्डवचरित्र सुखरासी
सुनत होइ नर विनय प्रयासा । सिद्धि कामना सुरपुर वासा ॥
आयो देखि धर्म मख जबते । निशि न नींद कुरुनाथहि तबते ॥
बन्धु विभव लखि परम उदासा । यतन विचारतकेहिविधिनासा
गजपुर दूसरि फिरत दोहाई । सुनि जरिजात गात कुरुराई ॥
इकदिनकुरुपतिसचिव बोलाये । शकुनी करण दुशासन आये ॥
कृत सबही कुरुकुलदीपा । होइ नाश जेहि धर्म महीपा ॥

कीन्ह सबनमिलि यह मत ठीका। जोरि समूह समर अब नीका
कीजै सकल बन्धु अब घेरी। चहुँदिशि धर्मज भवन गरेरी ॥

पितहि पूंछि अनुचित उचित, तस कीजै तब काज।
उचित मन्त्र शकुनी कह्यो, सबके मन भल आज ॥

करण दुशासन नृपमन माना। बुद्धिचक्षु पहँ कीन पयाना ॥
सन्द्यय दीख कि कुरुपति आये। करि सतकार विविध बैठाये ॥
नानिइण चरण धरैं सब शीशा। पावहिं मनभावती अशीशा ॥
शकुनी कह्यो सुनो महराजा। तुम्हरे सुतहि रोष वड़ लाजा ॥
पाण्डव सभा प्रबल इन देखी। अति विस्मय वश रूपविशेखी ॥
तहँ कछु भूप भयो अपमाना। ताते दुर्योधन दुख माना ॥
कीन अवज्ञा गजपुर माहीं। भीमकानि मानत कछु नाहीं ॥
एक राज्य महँ भे दुइ राजा। कीन मन्त्र यह जानि अकाजा ॥
[illegible] जोरि कीजे रणरीती। लीजै धर्म्म नरेशहि जीती ॥

बन्धुमित्र अरु पुत्र सब, दल गरेरि करि नास।
देश कोष लीजै सकल, धर्म्महि यमपुर वास ॥

[illegible] शकुनी मुखवानी। बोले वचन देखि बड़ि हानी ॥
मन्त्र तुम्हार हमहिं नहि भावत। देशवाम अस वचन कहावत
[illegible] जिनके मन ऐसे। जीते जाहिं पाण्डुसुत कैसे ॥
[illegible] बनचारी। करि न सकहिं रण [illegible] ॥
[illegible] नहि हारे। तासु न बिगरहि [illegible] ॥
[illegible] को धर्म कमारा। जहँ जगदीश [illegible] ।

उनते समर न पैहौ पारा। अब सुत जनि यह करहु विचारा
धर्मराज अपराधविहीना। करत तात तुम मन्त्र अलीना॥
सुनि शकुनी बोले बहुरि, भूप कही भलि बात।
हारि जीति कीन्हें समर, कुरुपति जानि न जात॥
दूतकर्म्म हमनिपुणौ कुरुपति। पंसासार ख्याल अद्भुत गति।
कपट अच्छ भावै मन जोई। सुनहु नरेश परै तब सोई॥
कपटभेंट पाण्डवन बुलाई। जीति लेब सब अच्छ खेलाई॥
ऐहै धर्म्म महीपति आछे। युद्ध जुवां पग धरै न पाछे॥
देश कोष नृप सकल लगाइहि। जीति लेब सब रहिनहि जाइ
युद्ध किये पाण्डव नहिं हरिहैं। उनकर पच्छ कृष्ण तब धरिहैं।
जीते ख्याल न बढ़िहि विरोधू। कही न कोउ अनुचितकर क्रो
भूप हमारि मानि सिख लीजै। अपर बात जनिचित्त धरीजै।
कपट भेद करि पाण्डवन, जीतहु देहु निकारि।
एकछत्र महि भोग बहु, रहै न कण्टक धारि॥
सुनिकुरुपति मनभयो अनन्दा। जनु चकोर पाया निशि चन्दा
पुनिपुनि शकुनीकेरि बड़ाई। करै लाग कुरुपति हर्षाई॥
भलगुण तात गुप्तकरि राख्यो। ममहित हेत तातसोइ भाष्यो।
नीक लाग मत अन्ध नरेशहि। पुनिपुनि शकुनीकहु उपदेशहि
पूछहु तात विदुर पहँ जाई। परम भक्त गुणनिधि मम भाई॥
यादवकुल जिमि उद्धवज्ञानी। तिमि कुरुवंश विदुर सज्ञानी॥
कुरुनाथ विदुरगृह आये। शकुनि दुशासन सङ्ग सोहाये।

देखि विदुर मन अति अनुरागा। आसन दीन रजायसु मांगा॥
शकुनी वरणि कहेउ सब साजा। तुमहिं मन्त्र पूंछत कुरुराजा॥

उनकहँ दीन्हेउ विभव विधि, तुम जनि करहु खंभार।
निज सेवाते कौन वश, केशव जो करतार॥

विदुरवचन कुरुपतिहि न भाये। तुरत पितामहके गृह आये॥
करत प्रणाम धरणि धरि शीशा। देखि गंगसुत दीन अशीशा॥
सत्यव्रत के वैठ समीपा। कही कथा कौरव कुलदीपा॥
जो तुम सुत पूछहु मम हीका। कहब रहा अस कहव न नीका
नृपमुखवचन चहिय नयलीन्हें। राज्य न रहत ताहि तजि दीन्ह
भल न रिझाउव इन बातनते। जीत न उनके उतपातन ते॥
जस उन सुभट समर महिजीते। मख कारज कीन्ह मन चीते॥
अस मखयहिकुलकाहु न कीन्हा। जगउठिगयो याचकनचीन्हा
मरेउ न हरि हलधरके मारे। युग करि जरासन्ध ते फारे॥
को अस सुभट भयो यहि वंशा। जासु करिय वहुवार प्रशंशा॥

जे नर मानत जीति निज, हारि मानि तिमि लेत।
विदित करहिं जय अजय तजि, तेहियमभलिसिखदेत॥

तुम अब तात रहउ चुपसाधी। जनिकीजै करि यतन उपाधी॥
यह मन नृपतुम अस ठहरायो। करिसोवत जिमिसिंहजगायो॥
भीष्मवचनकुरुपतिसुनिलीन्हा। नाहिन कछुप्रतिउत्तरदीन्हा॥
दुर्योधन शकुनीसहितनरेशा। विषसम लाग अमियउपदेशा
कीन्ह द्रोणकहँ दण्डप्रणामा। लहेउ अशीश होउ मनकामा।

कहि शकुनी सबहेतु सुनावा । द्रोण द्रोणसुत मनहि न आवा
भरद्वाजसुत कह सुनु राजा । हमतुम्हार वांछित शुभकाजा ॥
आयसु जासु रमापति करई । तासु पराजय समुझि न परई
करहु न सो दुर्योधन राजा । जेहि पीछे बड़ होइ अकाजा ॥
गुरुमुख वचन नरेश सुनि, जानी जनकी बात ।
भीष्म नाइ मांगी बिदा, गये जहाँ रविजात ॥
आदर बहुत तरणिसुत कीन्हा । रत्न सिंहासन आसन दीन्हा
कहेउ रजायसु होइ नरेशा । प्रभु आगमन मोहिं सन्देशा ॥
तेहिअवसर कुरुपति सुखपाई । शकुनी विधिवत कथा सुनाई
कह रविसुत नृपसनु मतमोरा । बोलि लेहु सब भूप किशोरा
यमघट कालनिशा नियराई । कार्त्तिक मास शरदऋतुपाई
खेलत द्यूत सकल संसारा । तबहिं बोलाइहि पाण्डुकुमारा
लखि नहिं परहि कपट चतुराई । यह सलाह रविसुत मनमा
दुर्योधन सुनि अति सुखमाना । पुनिपुनि भेंटत करत बखान
आतुर उठि शकुनी करण, मग कृत वाकविलास ।
सबलसिंह कह तब गये, गंधारीके पास ॥
इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

———

न्ह प्रणाम मातुपद भूपति । दैअशीशआसनप्रमुदितअति
रु मनोरथ निज नरनायक । करिय न तात बात बेलायक

दीन्हो ईश तुमहिं ठकुराई । बैठि रहहु निज भवन चुपाई ॥
सुतजगजन्म सफलकरिलीजे । बन्धु विरोध कदापि न कीजे ॥
मातु वचननृप मनहिं न आये । भानुमती गृह आपु सिधाये ॥
शकुनी आदि भवन निज गये । नृप सेज पर शोभित भये ॥
भानुमती ते सकल हवाला । कहि पूछेउ कौरव कुलपाला ॥
जोरि युगल कर कौरव रानी । कहेउ नाथ सुनिये सम्वानी ॥
करिय न बन्धु विरोध कलोते । सजग भये पुनि जाहिं न जीते ॥
नहिं भाये रानी वचन, निज वश कहेउ भुवार ॥
होत प्रात आये सभा, हने निशान अपार ॥
आये कुलपति निजसदशाला । बैठ चित्रमारी नरपाला ॥
चरवर बहु कुरुनाथ पठाये । बोलि बोलि सब भाइन लाये ॥
आये शकुनी करण दुशासन । करि जोहार बैठे निजआसन ॥
सकल बन्धु आये तिहि तीरा । लक्ष्मण कुंवर आदि सं भीरा
नाइ नाइ शिर नृपहिं जोहारी । जहँ तहँ सोहतहैं भट भा[illegible]
पनिपवँरिन दरवानि समाजा । विपुल विभव राजत कुरुरा[illegible]
पूछेहु सबहिं भरतकुलकेतू । कहि विस्तार कहेउ सब हे[illegible]
निज निज मन्त्र न राखहु गोई । सब मिलि करहुकरवहम [illegible]
प्रथम मन्त्र जो शकुनि बखाना । ठीक नीक सबके मनमा[illegible]
एकछत्र कीजिय धरणि, है पाण्डव वनवास ।
सकल कह्यो मत ठीक यह, कुलपति हृदयहुलास ॥
[illegible] जोरिकर दोड । नाथ [illegible]

जिन कीन्हेउ वशत्रिभुवननाहा। जगदुर्लभ प्रभु ताकहँ काहा॥
रक्षक जासु रमापति राजै। तासु कहिय क्यहि भांति पराजै॥
कौरवनाथ कह्यो असि बानी। सुनु ममवचन बन्धु सज्ञानी॥
पाण्डव जीति सकै किन कोई। कहहु शेष कीजै वश सोई॥
जाके शीश धरी सब धरणी। पाण्डवकी केतिक है करणी॥
शेष दिनेश जाहि किन जीते। विजय न एक धर्म्मसुतहीते॥
सकलकहहिं सो वचन प्रमाना। एक कहहिं कीजै जनि काना॥
अस कुरुनाथ कहेउ मुसक्याई। दुश्शासन बोल्यो शिरनाई॥

नाथ कीजिये बातयह, सत्यसत्य मतमोर।
मैं अनुचर करिहौं सकल, कुरुपति आयसु तोर॥

बन्धु वचन सुनि नृप सुखपाये। शिल्पकार वह तुरत बुलाये।
जाय सजहु तुम सदसि सुहाई। देखत जाहि चकित सुरराई॥
तब लगि रचना रचहु सँवारी। द्यूतदिवस जब आव दिवारी॥
सब थवई नरनाह पठाये। अनुचर साथ विपुल तिन पाये॥
लोककाष्ठकरसुनिसुनिआवहिं। रचहिसभानृपआयसु पावहिं॥
सात मास महँ करि निपुणाई। दीन्हो मनहुँ नवीन बनाई॥
दुर्योधन नृप सभा निहारी। बैठहिं दिन प्रति होहिं सुखारी॥
सुन्दर मास दमोदर आवा। कालनिशाथल अति नियरावा॥
शकुनी कर्णहिं पूछि नरेशा। पत्र पठाइ दिये प्रतिदेशा॥

कालनिशा जागरणहित, आवहु सब भुवराइ।
द्यूतखेल खेलहु इहां, करहु सभा मम आइ॥

मेलव हम अरु धर्म्मकुमारा । देखहु आय सकल सरदारा ॥
दुर्य्योधन कर आयसु पाई । गजपुर सब आये भुवराई ॥
सुखद शिविर पाये सब काहू । बहु सतकार करत नरनाहू ॥
कुरुनन्दन तब विदुर बुलाये । जाहु धर्म्मपहँ कहि पठवाये ॥
धर्म्मराज गृह विदुर सिधाये । तुरँग सवार साथ शतधाये ॥
चपल तुरङ्गम विदुर सवाँरा । जात चले पाण्डव दरबारा ॥
विदुर आगमन सुनि सुख पाये । आगे मिलन धर्मसुत आये ॥
बहुरि सभा लैगयो भुवारा । सादर सिंहासन बैठारा ॥
पनिपनि भूप रजायसु माँगत । प्रीतिविलोकिविदुरअनुरागत ॥

हृदयविचारत नख लिखत, कौरवकी मतिपोच ।
हाथी हरहट मद गलित, नाहि न शील सँकोच ॥

सुनहुतात मम आगम काजा । तुमहिं बोलावत हैं कुरुराजा ॥
अभिवादन करि कहेउ सँदेशा । आये मम गृह विपुल नरेशा ॥
द्यूतहेतु हम साजि उछाहू । सो तुमहूं आवहु नरनाहू ॥
रहे कालनिशि जागहु आई । देखहु मम समाज समुदाई ॥
अपर नरेश गुप्त सुनु बाता । कुरुपतिके मनहै छल ताता ॥
शकुनीकरणसहितदुःशासन । चाहत तुमकहँ देश निकासन ॥
यहै मनोरथ जीतव यूपा । कहूं कहेउ यह भेद न भूपा ॥
तुमहि परमप्रिय जानिसुनावा । करउ भूप जो बनहि बनावा ॥
कहन भये अस धर्म्मज राई । सुनहु सचिव भीमादिकभाई ॥
कर्णनिके रुषा भै भारी । हमकहँ जीतन कहत हँकारी ॥

तुमहिं प्रात कुरुनाथ बोलावा। दूग्तकर्महित साज सजावा॥
कहेउ भूप सञ्जय सुनु बानी। मिलब प्रातसबकहँ हमआनी॥
सुनि सञ्जय उठि आतुर आये। धर्मवचन कुरुपतिहि सुनाये॥
सुनहु भूप सञ्जय कह्यो, यह कह धर्मज राइ।
स्वजन सहित कुरुपतिहि मैं. प्रात भेंटिहौं आइ॥
सबलसिह सञ्जय वचन, सुनि कौरव कुलनाथ।
जात भयो विश्राम थल, युवती वृन्दन साथ॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

तेहि रातीकर भयो विहाना। पाण्डवगये द्रोण अस्थाना॥
सङ्ग भूमिसुर साधु समाजा। नमत द्रोणपद पाण्डवराजा॥
परत दण्डवत धर्मज चीन्हा। द्रोण उठाय लाइ उर लीन्हा॥
पाइ अशीष भेंटि सब भाई। मिले द्रोणनन्दन पुनि आई॥
पूंछी कुशल प्रश्नन्टप आछे। तब कुरु कही कुशल सब पाछे॥
कहहु कुशल सब धर्मकुमारा। बोले वचन भूप श्रुतिसारा॥
नाथकुशलसबविधि अनुगामी। तबअशीश मोरेशिर जामी॥
माँगी विदा भूप शिर नायो। तुरत पितामहके गृह आयो॥
परशि चरण न्टप द्वौकरजोरा। लखि हरषे मन गंगकिशोरा॥
पुत्र युधिष्ठिर भद्र तव, होइ सो आशिष दीन्ह।
करणी कुरुपतिकी समुझि, सजलनयन कछु कीन्ह॥

करत हास्य भीमादिक सब, लखि कौ...हित साज सजावा॥
यहि प्रकार आनन्दते, बिगत भई ...तसवकहँ हमआनी॥

तेहि अवसर सञ्जय तहँ आये। लै संदेश ... कुरुपतिहि सुनाये॥
खेल। जस चलहु नृप आगू। तुमहिं ...र्मज राइ।
सञ्जय वचन भूप सुनि लीन्हा। नहिं ...टिहौं आइ॥
विप्रवृन्द तेहि अवसर आये। प्रथम भूप उ...लनाथ।
दीन्हें सबन यथोचित आसन। बहुरि चाप के ...साथ॥
गायक नर्तक बहुत दुराई। रहे चुपाइ नृप ल...
वेदऋचा द्विज वृन्दन गाये। मुनि वश प्रेम स...
आवहिं विदुप सकल गुण पूरे। विविध प्रकार ...
होतहि प्रात धर्म के जाये। गन्धारी गृह आतुर आ...स्थाना॥
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई। दीन्ह अशीश मातु...राजा॥

दासी वृन्द विशाल, दीन्हें मञ्च अनेक धरि, ...लीन्हा॥
बैठे धर्मनृपाल, सचिव सखा भाइन सहि...न आई॥

कनक प्रयङ्क विराजत रानी। जनु सोहत कैलाश... सब पाछे॥
उठि नरनाह रजायसु मांगा। वन्दि मातु ... ॥
अति बल कुलनन्दन के भाई। सबके भवन धर्मसुत जाई॥
अटन सबहि गये दिन चारी। आई कालनिशा भयकारी॥
दीपक आइ धर्मसुत कीन्हा। विपुलद्रव्य महिदेवन दीन्हा॥
कीन्हेउ आइ बुद्धिहत एका। धरि दीन्हें मणिदीप अनेका॥
पुर प्रकटि रही उजियारी। भयो विनाश निशा तम भारी॥

उ युगल तनु प्रेमप्र ताही समय, सभा भवन कुरुनाथ ।
ढ़ेचलुके मन्दिर —दुश्शासनकरण, सौबल शकुनी साथ ॥
...र डारि गलीचा । अद्भुत वसन परे विचबीचा ॥
...नायक जाई । आवन लगे नृपति समुदाई ॥
...सुत आये । भूरिश्रवा वृषसेन सोहाये ॥
...रुद्ध उलूका । सगाहय बन्धु चतुर अहिमूका ॥
...बिन्दु सुवेशा । सैंधवपति अरु शल्य नरेशा ॥
...र तीस हजारा । रहत सदा जे कुरु दरबारा ॥
...ति निजस्वहितेतू । अच तकरहिं कौरव कुलकेतू ॥
... वकील घनेरे । जे हित करत नरेशन केरे ॥
भेंटि...यक के अरु भाई । आये साथ सुभट समुदाई ॥
धर्म...हि अवसर गे आइ, वेतपाणिगण गुरु निदेश ।
...भवन बैठाइ, यथा उचित आसन सबन ॥
...ोण कृपा भीषम करण, आवत लखि कुरुनाथ ।
...सहित सभा संभ्रम उठे, बैठारे गहि हाथ ॥
...बहु नगर पुरवासी । सचिव महाजन जे सुखरासी ।
...हि नरेश कीन्ह सत्कारा । आवत देखे द्रोणकुमारा ॥
...आदर अनेक नरनाहू । कहेउ धर्मसुतपहँ तुम जाहू ॥
...नवल नव ...रि जनावत । सहित समाज युधिष्ठिर आवत
... धर्मराज पगु धारा । जहँ तहँ भूप बहुत नर नाहा ॥
... आतुर दुर्योधन । बैठारे करि विविध प्रबोधन ॥

अति प्रताप कुन्ती के बालक। सोहत सभा प्रजापनिपालक॥
तेहि अवसर कुरुपति सुखपाये। पंसासारि दुश्शासन लाये॥
दीन्ही धरि अजातरिपु आगे। कर गहि भीम विलोकन लागे॥
सो कुरुपति निज हाथ डसाई। लिये धर्म्मसुत अच उठाई॥
फरकेउ अशुभ नयन भुजबायें। उर थरहरेउ छौंक भइ बायें॥

दिये धर्म्मसुत डारि, परेउ न पांसा जो कहेउ।
शकुनीलीन सँभारि, फेंकउ कहि नहिं पव परेउ॥

धर्म्मराज पांसा महि मारे। बोले वचन नयन रतनारे॥
खेल हमार अहै कुरुपतिते। शकुनीते खेलहिं केहि मतिते॥
कहहु कुमन्त्र लागि श्रुतिमाहीं। युद्ध जुवा लायक तुम नाहीं॥
शकुनी लज्जित निपट सभामा। कुरुपति हृदयरोषतरुजामा॥
हृदय रोष ऊपर छल कीन्हा। विहँसि राइ प्रतिउत्तर दीन्हा॥
हम शकुनी कह न्टप बैठारा। यामे कछु न अकाज तुम्हारा॥
शकुनी हारहि सो हम देहीं। अङ्गीकार जीति करि लेहीं॥
हम हारे शकुनीके हारे। बड़ि अनुचित न्टप ज्ञान विचारे॥
जो निज हानि भूप तुम जानो। निज किंकर तुमहू कोउ आनो॥

हम खेलब तवसाथ, होइ नीच सब भांति जो॥
कह्यो वचन कुरुनाथ, शकुनी तो शिरमोर मम॥
धरहु भार निज शीश, बैठारहु किन साहनी।
हमहिं न ओछि महीश, मैं खेलब न्टपसदसिमहँ।

धर्म्मराजसन भीम तब, कहन लगे कर जोरि ।
छल है जुवां न खेलिये, सुनिये विनती मोरि ॥
लि नरेश कीजै निज राजू । शकुनीते खेलिय केहि काजू ॥
तिहित भीमसेनकै बानी । युगल बन्धु पारथ मनमानी ॥
रजत सकल धर्म्ममहराजहि । भीष्मादिकसबसहितसमाजहि ॥
ानि पांसा अब धर्म्म चलावहि । वाम विधाताकुछ नहिंभावहि ॥
ोनहार को सकत मिटाई । बोले धर्म्मराज सुनु भाई ॥
ो यह बोलत कुरुपति बाता । छलविहीन लागत मोहिं ताता ॥
ुती धर्म्म कांछ हम कांछे । युद्ध युवां पग परइ न पाछे ॥
ाक दिशि काल प्रचारहि जबहूं । क्षत्रिधर्मधरि मुरिय न तबहूं ॥
ाहिमा फिरि आपुसिकर बीचू । पाछे पांव धरै सो नीचू ॥
अस कहि धर्मनरेश तब, पांसा लीन उठाय ।
दशा संकटा कठिन है, निपट रही नियराय ॥
मन्द वर्षपति गतबल भयऊ । रवि कुदृष्टि मूरति थलगयऊ ॥
मन्द ग्रह अशुभपरे थलहीथल । वर्षप वर्ष त्रयोदश निर्ब्बल ॥
कहहि विदुषजन नृपहिं अरिष्टा । महाराज दिन तुमहिं अरिष्टा
जबअमवचनसुनहि कुरुनायक । लागहिहृदयकठिनजनुसायक ॥
भावीवश नृप मनहि न भाये । भाषि दावँ निजअक्ष चलाये ॥
पुनि शकुनी कर लीन उठाई । कहेउ करण कुरुपतिरुखपाई ॥
धर्मज वृथा न बड़ श्रम कीजै । पांसा में कछु होड़ ददीजै ॥
बर्महि कण्ठते गजमणिमाला । सो धरिदीन धर्म महिपाला ॥

हरितमालमणि कुरुपतिराखो। पांसा चलन लगे बलभाखो॥
कपट अक्ष शकुनी सम्भारे। कहत परत सोइ बिनहिंविचारे॥
होत जीत कुरुनायक केरी। हारे धर्मज वस्तु घनेरी॥

ताही समय बुलाइयो, निज कुरुनाथ दिवान।
आयो आयसु मानि सोइ, परम प्रपञ्चनिधान॥

हारि जीति जो होइ हमारी। सोतुमसकललिख्योसम्भारी॥
आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई। लागेउ करन शूद्रपति सोई॥
रहे जे धर्मकोश गम्भीरा। जीति लिये मुक्तामणिहीरा॥
मोती रतन जवाहर जेता। मूंगा कञ्चन कोष समेता॥
शकुनीकपट अक्षबल जीते। चितभ्रम धर्मज भे सुखवीते॥
जीतिवस्तु धर्मज गृह राखी। बोलहि निकलभूमिपतिसाखी॥
शकनी पुनिपुनि अक्षचलाये। जीति देखिकुरुगण सुखपाये॥
परहिं न धर्मराजके पांसे। चकित लोग सब देखि तमासे॥
आदि वरादि लोह अरु चांदी। रहेउ न शेष ताम्र कोशादी॥
द्रव्य जो होत धातु षट दोई। रहेउ न धर्मराज गृह कोई॥

शकुनी अक्ष सँभारिकै, फिरि लीन्हेउ निज हाथ।
कपट भेदमह दक्षअति, पक्ष धरे कुरुनाथ॥

अष्टधातु आयुध भयकारे। क्षणमह सकल धर्मसुतहारे॥
तरकस कवच धनुष दस्ताना। चर्म त्रिशूल कटार कृपाना॥
शक्ति कराल अस्त्र सब चीन्हें। पृथकपृथक धरि धर्मज दीन्हें।
अक्ष शकनीं छलकारी। यहिविधि गये धर्मसुत हारी॥

तब शकुनी छल अक्ष चलाये । कोरे कागज जीति लिखाये ॥
धरेउ धर्म महिषीगण गाई । जीते शकुनी अक्ष चलाई ॥
व्याघ्र कुरङ्ग शृगाल शशादी । कानन नर वानर चित्तादी ॥
पक्षी बहु विचित्र बहु भांती । रङ्ग रङ्गके अगणित जाती ॥
कनक पींजरा सोहहि पांती । लखि शोभा भारती भुलाती ॥

नृपआयसु अनुचर सकल, सेवहिं खगमृग वृन्द ।
प्रथम नाम कहि धर्मसुत, धरे विगत आनन्द ॥

करते शकुनि अक्ष जब डारैं । धर्म हारि सब लोग पुकारैं ॥
वाहन रथ शिबिका सुखपाला । उष्टर महिषी शकटविशाला ॥
यक यक भिन्नभिन्न धरिदीन्हें । शकुनी जीति कपटवललीन्हें
धरेउ नरेश तुरङ्गम सामा । कहेउ पृथक शाला प्रति नामा ॥
यहिप्रकार धरि धर्मज वाजी । हारे सकल तुरङ्गम ताजी ॥
लखि आपन सबभांति बनाऊ । रोम रोम हरषे कुरुराऊ ॥
धर्मज नयन वामभुज फरके । भयवश अङ्ग धकाधक धरके ॥
रहेउ न चेत भयो मति भंगा । धरेउ धर्मसुत यूथ मतङ्गा ॥
देश देश जहँ मत्त समाजा । धरेउ दावँ प्रति धर्मजराजा ॥

पँासा शकुनी पाणि गहि, देत भूमि जब डारि ।
करत कुलाहल लोग सब, निजनिज दाव पुकारि ॥

हारे धर्मराज गज सर्वा । शकुनी अक्ष लेइ सहगर्वा ॥
रहत सदा जे भूपति सङ्गा । शेष रहे ते सकल मतङ्गा ॥

पृथक पृथक कहि भूपतिनामा। धरेउ नरेश जिनहिं विधिवामा॥
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे। भइ शिरहारि धर्मसुत केरे॥
चकित लोग सब देखि तमासा। कहैं न परत धर्मसुत पाँसा॥
पुनिपुनिपरतदावँ कुरुपतिको। को जानै परमेश्वर गतिको॥
सुनिकर सरुष धर्मसुत पाहीं। बाह्लीक आदिक पछिताहीं॥
शकुनी पाण्डवसुतहि प्रचारा। लीन जीति भाजन भण्डारा॥
कञ्चन आदिजड़ितमणिभाजन। हारे सकल धर्म महराजन॥

वसन कोश गये हारि, रङ्गरङ्गके अति सुभग।
दीन्हे पाँसा डारि, शकुनी साँचे कपटके॥
देश देशके पाण्डवन, देत भूप अवनीश।
सकलपत्रधरिदावँपर, दीन्हेउ धर्म महीश॥

शकुनी पासा तमकि चलाये। कुरुपतिजयतिनिशानदिवाये॥
बोलि लिये तब धावन चारी। द्विरज दुमत्त दुमुख दुर्द्धारी॥
कहेउ कि हम जीते नृपभारी। जे नहि मानत आनि हमारी॥
एक विहीन धर्म महिपालहि। जे न डरत सपनेहुँ रण कालहि॥
ते अब सहज जीति हमपाये। विनप्रयास विधि ताप बुझाये॥
पठवहु बोलि सकल नरनाहू। आवहिं नहि सेना सजि जाहू॥
देहिं दण्ड नत आनहु बाँधी। देश देश प्रति करहु उपाधी॥
दण्ड चतुरगुण दशगुण लेहू। मिलहि न तेहिं मम शासनदेहू॥
दुर्योधन कर आयसु पाये। निजनिजकारजसकलसिधाये॥
। .. अनेक बुलाये। देश देश लिखि पत्र पठाये॥

मिलहु आइ आतुर निपट, त्यागिसकल सन्देह ।
देहु दण्ड कुरुभूपतिहि, नत जैहौ यमगेह ॥
जहं कहुँवीर धीर नृपजाना । साजिविकटदल कीनपयाना ॥
जिनते वैर भाव अधिकाई । करि उपाय तहं करैं लराई ॥
सुपनेहुं पाण्डुसुवन बल पाई । कौन अवज्ञा जेहि सुधिआवै ॥
करहिं उपाधि तासु संग नाना । जेहि विधिहोयतासुअपमाना ॥
दण्ड चतुरगुण शतगुण लेहीं । लखिबलहीन त्यागितबदेहीं ॥
काहुहि बांधि लेहिं करि सङ्गा । काहुहि करहिं समरमहंभङ्गा ॥
यहकुरुपतिअतिशय सुखपावा । दुर्दर्शनहिं वहोरि बुलावा ॥
तात सजहु तुम दल चतुरङ्गा । लेहु धीर भट यूथप सङ्गा ॥
महिषमती नगरी कहँ जाई । धरिआनहु निशिचर समुदाई ॥
जहं शिशुपालसुवन विख्याता । किये दण्डविनु शत्रु अजाता ॥
दण्ड बांधि लीजै उचित, कीजै अवशि पयान ।
सजि दल दुर्दर्शन चले, वाजन लगे निशान ॥
देखि युधिष्ठिर अति दुखपावा । दुर्योधनते वचन सुनावा ॥
नीति नरेशन के असि होई । जो जस दण्ड उचित सो देई ॥
यहअदण्डकृत सुनशिशुपाला । तुम पठये दलअतिविकराला ॥
जो हैं है महि दीन हमारी । तुम ते ना पाई भिखियारी ॥
मखमह गयो तासु पितु मारा । दियेदण्ड विनु युगलकुमारा ॥
तुमहि उचित यह है मतिवन्ता । लेहु दण्ड जनि वर्षप्रयन्ता ॥
यह प्रतिपालहु बात हमारी । मनभावहि तस करहु अगारी ।

तुमहि नरेश उचित यह बाता। बार बार कह शत्रु अजाना॥
धर्मराजके बैन, सुनि बोले कुरुनाथ तब।
हमैं उचित यह है न, करिय दण्डबिन चैद्यसुत॥
अवनी प्रति अदण्ड करिदेहौं। हम तजि राज्य कमण्डलुलेहौं॥
तवमुख कहत बनत यह बानी। गे जरि गात तेज बल हानी॥
भीमसेन फरके भुज दण्डा। अधर फरहरत रोष प्रचण्डा॥
पारथ भयो विलोचन लाला। लखि आनर्थक धर्मभुवाला॥
नाहिंन समय रोषकर भ्राता। किमि समुझै मूरख अज्ञाता॥
परम सुजान चतुर जे वीरा। समय विचारि धरैं मन धीरा॥
जाहि अभय हम दीन बसाई। अब तापर दारुण भय आई॥
सकल हारिकर मोहिं न शोचू। जस यह परेउ परम सङ्कोचू॥
निज नयन लखि न मोहिं, होत दुसहदुख निपट लखि।
तात न तेहि विधि सोहिं, समय जानि धीरज धरहु॥
शपथ हमारि हजार, आयसु बिन जनि करिय यह।
त्यागहु सकल विचार, तात भये अपमान कर॥
तब बोले सहदेव सभागे। का देखो देखिहो अब आगे॥
अबते भूप ख्याल तजि दीजै। रचत प्राण भवन मग लीजै॥
नत दुर्योधन नृप अति नीचू। मारहि सबहिं बुलाय कुमीचू॥
नहिं सहदेव वचन मन भाये। धर्मराज कर अक्ष उठाये॥
भीम बहोरि कहेउ सुनु भ्राता। चारियाम यामिनि रहिजाता॥
सपाद दिवस चढ़ि जाई। अब अवसर नृप चलिय नहाई

भीमवचन सुनि कह कुरुराजा। शकुनीते भागे बड़ि लाजा॥
प्रथम हीन करि चहत न खेले। तासु सङ्ग बड़ि हास पछेले॥
कुन्तीसुत सुनि अति दुख पाये। राखि दाँव बड़ अच्छचलाये॥
परे न धर्मज अच्छ, शकुनी लीन उठाय कर।
कपट भेदमहँ दच्छ, पुनि पाँसा फेंको चहत॥
धर्म्मराज निजराज्यसब, धरि दीन्हें यक दाँय।
जीति लीन्ह शकुनी सकल, विन श्रम कपट उपाय॥
धरन लगे नरदेव, राज्यसकल चित भ्रम वसो।
कहि दीन्हेउ सहदेव, चारिवर्ण ब्राह्मणविना॥
ब्राह्मण कहहु जाहिं किमि हारे। सब प्रकार शिरमौर हमारे॥
लखि सहदेव केरि चतुराई। विहँसि रहे कुरुनाथ चुपाई॥
राज्य जीति कुरुनायकलीन्हो। गहगह जयति दुन्दुभी दीन्हो॥
कपट वितान शेष जे रहेऊ। सो धरि वहुरि धर्मसुत कहेऊ॥
सहित समाज धरे सहदेऊ। शकुनी जीते छल वल तेऊ॥
देश कोश समेत धरि दीन्हा। नकुलजीति कुरुनायकलीन्हा॥
पारथ धरेउ सहित सवसामा। हयगजवसन कोशधन ग्रामा॥
कुरुपति जीति धनञ्जय पाये। परमानन्द निशान दिवाये॥
धरेउ दाव नहिं रहेउ सँभारा। हारे भूप सकल परिवारा॥
वहुरि भूप युत सहन भण्डारा। हारे भूप सकल परिवारा॥
हारि गये कुरुनायक जीते। गयो रंक पद भागि महीते॥
दीन्हें द्विजन याचकन दाना। हयगजभूमि रतनमणि नाना॥

गजपुर रहेउ न रंक अभागो। केवल धर्म धुरन्धर त्यागो ॥
चितभ्रम चकित अजातअरि, धरि शरीर निज दीन्ह ।
धर्म धुरन्धर धीरधर, नहिं विचार कछु कीन्ह ॥
दीन्हें शकुनी अच्छ उखारी। किङ्कर भये धर्मसुत हारी ॥
छूटि राज्यपद दास कहाये। भये अचेत रहे गिर नाये ॥
पुनिपुनि शकुनी कहेउ नृपाहीं। जो कछु शेष रहा गृह माहीं
उठतख्याल अब सो धरि दीजै। पाछे पगधरि अयश न लीजै॥
धर्म सुतहिं कुरुनाथ प्रचारा। गूढ़ गिरा करि वारहिं वारा ॥
तुम नृप विदित सत्य ब्रतधारी। परहिं न पद ये कर्म पछारी॥
अटपटि कुरुनन्दनकै बानी। समुझि न परी तर्कछलसानी॥
उर वरि उठी रोष दुखज्वाला। धरेउ भूप तनया पञ्चाला॥
बान्धव प्रियजन अति दुख भरेऊ। मानहु अन्ध महानद परेऊ॥
शकुनीं सबन पुकारि, साखी करि नरनाह बहु ।
दीन्हेउ पाँसाडारि, हारि गये नृपधर्म सुत ॥
लखि अनरथकी बात, भीमादिक भाई सकल ।
भस्म भये सब गात, मानहु विनु मारे मरे ॥
धर्मराज तनु सुधि बिसराये। करते उठत न अच्छ उठाये ॥
भयो शोकवश धर्मभुवारा। मनहु कमलवन परेउ तुषारा ॥
भीषम विदुर निपट दुखपावा। द्रोण कृपा महि शीश नवावा॥
बाहुलीक उर दुख अधिकाई। गये सभा तजि गृह अकुलाई॥
विस्मय वसि द्रोणकुमारा। का धौं कौन चहत करतारा॥

सचिव महाजन गजपुरवासी । बिलपत विकल परी जनु फाँसी
समुझि समुझि कुरुनाथसुभाऊ । होत हृदय नहिं धीरज काऊ ॥
रविसुत शकुनी उर आनन्दा । मनहुँ उदधि लखि पूरणचन्दा ॥

दुःशासन आदिक अनुज, सकल प्रफुल्लित गात ।
रोम रोम कुरुनाथ के, हर्ष न हृदय समात ॥

हीर चीर गज वाजि लुटाये । द्विजन दान नानाविधि पाये ॥
भे याचक गण सकल अयाची । बिजय नगारे की ध्वनिमाची॥
जीती कुरुपति पाण्डव रानी । कहेउ धर्म्मसुत ते यहबानी ॥
अनुचर भयो समेत समाजा । करहु मानि मम आयसु काजा ॥
कह्यउ युधिष्ठिर आयसु होई । माथे मानि करब हम सोई ॥
हरख बदन करि कह कुरुराई । द्रुपदसुता अब देहु मँगाई ॥
सदसि बीच सुनि निर्भय बानी । रोषज्वाल अति उर सरसानी॥
धरि धीरज रिस सो उर मारी । मूर्च्छि परेउ नृपअवनिदुखारी॥
रह्यउ न चेत कह्यउ कछुनाहीं । अटकि रहेउ मणिखम्भनमाहीं ॥

सबलसिह धर्मजदशा, लखी न काहू आन ।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहि, परम रोष सरसान ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ १ ॥

सुनिये नृप निज वंश के, एनिचरित सुखदाय ।
बोले दुर्योधन बहुरि, कामीप्रात बुलाय ॥

एक प्रानकामी अहि नामा । करत सदा कौरवपति कामा ॥

अतिगम्भीर वचनन्टपकह्यऊ। धर्म्मराज महराज न रह्यऊ॥
भये आजुते दास हमारे। सब परिवार द्रौपदी हारे॥
सो न युधिष्ठिर देत मँगाई। द्रुपदसुता तुम आनहु जाई॥
ल्यावहु सभा द्रुपदकी जाता। तुम सबविधि प्रपञ्च मगज्ञाता॥
कह्यउ सँदेश गये पति हारी। अब तुम सेवहु सेज हमारी॥
सुनत प्रातकामी उठि धावा। आतुर धर्म्म शिविरकहँ आवा॥
दुर्योधन कर सकल सँदेशा। कह्यउ शील तजि सकल भदेशा॥
चलहु सभा बोलत कुरुनाथा। नतु धरि लै जै हैं निज नाथा॥

सुनत सूत मुखवात, भयवश काँपी द्रौपदी।
विकल भये सब गात, कौरवनाथ सुभाव लखि॥

धरि धीरज कह द्रुपदकुमारी। सुनहु सूतपति बात हमारी॥
कस यह वचन कहा कुरुराई। राजसभा तिय केहिविधि जाई॥
कह्यो सूत यह आयसु मोहीं। धरि लैजाहुँ सभामहँ तोहीं॥
सुनत निठुर सारथिमुख बानी। अति सरोष दुर्योधन रानी॥
कहेउ सूत ते वचन रिसाई। जाति परत तुम्हरे शिरआई॥
भूले कहे भूल कहि तेरे। गये बिसरि भुज पाण्डवकेरे॥
समुझि परत यह हेतु विशेखा। चहत नयन तव यमपुरदेखा।
बोलेउ सूत सुनहु महरानी। आयउँ मैं न्टप आयसु मानी॥
वचन तुम्हार शीश धरि जैहौं। दोष न मैं कुरुपतिपहँ पैहौं॥

सुनत सारथी के वचन, तुरत दीन दुरियाय।
रूख देखि रानी वदन, गयो भागि भय पाय॥

कहि सन्देश सकल तेहिदीन्हा । सुनिकुरुनाथक्रोधअतिकीन्हा ॥
दुःशासनहिं बुलाय नरेशा । कह्यउ सरोष सूत सन्देशा ॥
पुनिपुनिकहतरोष दासअति । केशपाशिधरिल्यावघसीटति ॥
यह शठ पाण्डुसुवन भय पाई । कहेउ न मूढ़ द्रौपदील्याई ॥
भीम बाहु लखिकम्पित गाता । अजहूँ गहवर कहत न बाता ॥
सबते प्रिय निज जीवन जानी । सकल मूढ़ नहिं धीरज आनी ॥
चलेउ दुशासन आयसु मानी । आयो द्रुपदसुता जहँ रानी ॥
आवत सरुष दुशासन देखी । पाञ्चाली भय ग्रसित विशेखी ॥
कहेउ दुशासन सरुष रिसाई । चलु बोलत दुर्योधन राई ॥

दुःशासनके वचन सुनि, द्रुपदसुता अकुलानि ।
हमरे तुम सहदेव सम, कहत जोरि युग पानि ॥

तात नीति मग देखु विचारी । कैसे जाय सभामहँ नारी ॥
जबलगिहम शिरते न अन्हाहीं । पूरुषमुख देखन कहँ नाहीं ॥
मैं रज अवल एक पटधारी । सभा गये पति जाय तुम्हारी ॥
तात चलै कर अवसर नाहीं । नत जातिउँ मैं कुरुपतिपाहीं ॥
भीष्मादिक क्षत्रिय बहु राजा । जात सभामहँ तियकहँलाजा ॥
तात एकान्त बोलि कुरुराई । मैं सब विधि कहतिउँ समुझाई ॥
मम शिक्षिते समुझाइ नरेशा । कहेउ तात अतिभल संदेशा ॥
दुःशासन तब नैन तरेरे । सुनु री हारि गये पति तेरे ॥
कस न विचार कौन तिन गूढा । त्वहिं समुझावतिजिमिमैंमूढ़ा ॥

चलति न तैं तिय सदसिकहँ, करति उतर प्रतिगात।
जोरि युगलकर द्रौपदी, कहति विकल अति बात॥
सुनहु तात तुम नीतिनिधाना। मो मगनहिंतुमजोनहिजाना॥
तुम कहँ तात शपथ व्रत मोरी। कहउतातनहिं राखेउँ चोरी।
कहहु सत्य तजि जीवन पापू। हारे नृप मोहिं प्रथम कि आपू॥
हारे होहिं प्रथम निज रूपा। किङ्कर भये मिटाउ पद भूपा॥
दासन के गृह होइँ न रानी। नीतिविचारिसमुझुमसवानी॥
छूटि गये सब नात हमारे। नृप हारे हम जाहिं न हारे॥
जो मोहिं प्रथम धरेउ नरनाथा। त्यागिलाजचलिहौंतवसाथा
ह्वै किङ्करी करौं सब काजू। जो कहिहैं कौरव शिरताजू॥
बेगि समुझि प्रतिउत्तर दीजै। आयसुहोयअवशिसोइकीजै॥

सुनि दुःशासन वचन अस, धायो नैन तरेरि।
हारि गयो अज्ञान पति, नीति विचारति चेरि॥
कहत कटुक दुर्वाद, रोष भरो धावत भयो।
देखि जात मर्याद, भयवश भागी द्रौपदी॥

जात पुकारत आरत वानी। देखिदुशासनअति रिसमानी॥
झपटि केश लीन्हेंउ गहिहाथा। चलेउघसीटतजहँ कुरुनाथा
देखि दशा दासिनके बृन्दा। करहिंविलापविपतिपरिफन्दा॥
दुर्योधन कर सब रनिवासू। विलपतगिरतनयनमगआँसू॥
परी धर्मसुत शिविर तरापा। गजपुरसकल शोकवशकाँपा॥
दुशासन द्रौपदि बारा। निकसत नागनगर गलियारा॥

देखि दशा विलपहि पुरवासी। जड़ जङ्गम खगमृगनृपदासी॥
जेहि मग निकसत अन्धकुमारा। देखि वज्र उरजात दरारा॥
देखत सब जहँ तहँ बिलखाहीं। होत शोर जेहि मारग माहीं॥
देखि झरोखन महल ते, दासी वृन्द हवाल।
जायजायरनिवासप्रति, विदितकीन्हततकाल॥
मनअसिगति कौरवगणरानी। विलपहिसकलहृदयहतिपानी॥
दुर्गति सुनत द्रौपदी केरी। करुणाभवन भवनप्रतिघेरी॥
नाघत पँवरि पँवरि प्रतिजाता। द्रुपदसुता परवश विलखाता॥
मोहिं छुड़ावत मातु गंधारी। बार बार कह द्रुपदकुमारी॥
भीतर दासिन खबरि जनाई। तजि पर्यङ्क जननि उठिधाई॥
हा पती हा धर्मज प्यारी। बलि बलि जाय मातु गन्धारी॥
छूटे केश उघरि गयो चीरा। विलपति दासीगणसँग भीरा॥
आवन जानि मातु गन्धारी। गयो दुशासन वेगि अगारी॥
जबलगि रानि द्वार पगु दयऊ। राजसभा दुःशासन गयऊ॥
कोउ मुसक्यात द्रौपदी देखी। करत मूढ़ कोउ तर्क विशेखी॥
करत दया कोउ धीर, कोउ धिक कह दुःशासनहि।
तजत नयन कोउ नीर, कोउ निन्दत भीमादिकन॥
द्रुपदसुताके केश, गहि खैंचत कुरुपति अनुज।
बैठे सकल नरेश, मध्यसभा तहँ लै गयऊ॥
सिंहासन सोहत कुरुराई। जाय समीप दीन ठढ़ियाई॥
चहुँ दिशि चकितचितैपांचाली। राजसभा लखि अरथरहाली॥

लज्जावश नहिं रहेउ सँभारा। श्रवत नयन मगते जलधारा॥
अति सुन्दरि लखि द्रुपदकिशोरी। कामिन केरि भई मतिभोरी॥
कहहिं जासुगृह द्रुपदकिकन्या। धन्यधन्य पाण्डवपति धन्या॥
पुनि पुनि दुःशासनहिं सराहीं। है बड़ि भागि गही जेहि बाहीं॥
धन्य आजु दुर्योधन राई। आयेसु जासु मानि धरि आई॥
लोचनलाभ हमहिं जेहि दीन्हा। सफल जगतमहँ जीवन कीन्हा॥
धर्मदशालखि कोउदुखपावहिं। कोउपछिताइशीशमहिनावहिं॥

दुःशासन कह द्रौपदी, का रोवत वे काज।
होत न आये सदसिमहँ, चेरिनको बड़ि लाज॥

भीषम विदुर नाव महिशीशा। द्रोण कृपा उर शोच सरीशा॥
सकल धर्मशीलन दुख पावा। नीचनके उर आनन्द छावा॥
शकुनी करण अनन्द समीछे। दुर्योधन करि नयन तिरीछे॥
दुःशासन ते कहेउ प्रचारी। वसनहीन करु द्रुपदकुमारी॥
लै बैठारि देहि मम जानू। बान्धव वेगि कहा मम मानू॥
उठे दुशासन आयसु मानी। विकरण कहत जोरि युग पानी॥
तब मुख वचन न सोहत ऐसे। कुरुकुल तिलककहततुमजैसे॥
वृद्धद्रोण गुरु भीषम आगे। तुम नृप कहत लाज भय त्यागे॥
देश देशके भूपति राजत। तुम दुर्बचन कहत नहि लाजत॥
ज्येष्ठ बन्धुके जो तिय होई। मातुसमान कहत श्रुतिसोई॥

तदपि तासु उतारि पति, तुम हारी कुरुराज।
अब असकहत कि जो सुने, होत-नीचउरलाज॥

पूरण शशिमहँ कीरति तोरी। जनि महीश डारहु करिघोरी ॥
मानि विनय मम प्रभु अनुरागी। देहु द्रुपदतनया अब त्यागी ॥
धर्म्मराज सँग बिन अपराधू। कौन नाथ तुम कर्म असाधू ॥
विकरण वचन धर्मनय साने। सुनि सरोष रविनंद रिसाने ॥
सुनु विकर्ण तवतनु शिशुताई। वृद्ध वचन नहिं शोभापाई ॥
छोटे वदन कहेउ बड़ि बाता। सुनिकिमिसकैमहिपगुरुज्ञाता ॥
है यह सभा सकल गुणखानी। तुमनिजजानिअधिक सज्ञानी ॥
गाल फुलाय वचन कहिदीन्हा। चाहत है सबका लघु कीन्हा ॥
वयस न भूपनके मत योगू। जानततुम न हँसत सबलोगू ॥

खेलत सब मिलि बालकन, जाय शरासनवान।
सीखदेउ जनि भूपतिहि, हौं तुमशिशु अज्ञान ॥

बालक इव गृह भोजन करहू। निजमनअहमित नेक न धरहू ॥
दुर्योधन आयसु शिर धरहू। गृह कारज सबसादर करहू ॥
कहविकर्णान्टप सुनु मत जीको। अब नहिं होनहार कछुनीको ॥
जस नृप तस मन्त्री बुधवाना। असकहि गृहनिज कीन्ह पयाना
पुनि सकोप कहत कुरुराजा। द्रुपदसुता मम देख समाजा ॥
नयनहीन सब सूझत नाहीं। बोलेउ तोहिं सभा महँ ताहीं ॥
है यह सभा अन्धन्टप केरीं। केहि प्रकार सूझै री चेरी ॥
है हम सुवन अन्धनृपतीके। भीम सहिततुम जानत नीके ॥
अन्ध तुम्हें किमि देखै कोऊ। देखहु सबहि भीम तुम दोऊ ॥

देखन हित अन्धी सभा, तुम कहँ लीन्हबुलाय।
कीन्हेउ मम अपमान जिमि, तुम अपने गृहपाय॥

अब द्रौपदी वसन निज त्यागू। वैठि जांघ ममकुरु अनुरागू॥
अन्धी सभा न देखै कोई। जानत गति हमहीं तुम दोई॥
आये चतुर पाँच पति तेरे। भे बिन नयन सभा मिलि मेरे॥
सूझत तुम समेत वह भीमहिं। करहि न रोष वृकोदर जीमहिं
बहुरि विलोकि दुशासन ओरा। मानत नैं नहि आयसु मोरा॥
वेगि द्रुपदतनया नँगियाई। लै मम जानु देह बैठाई॥
भूपवचन सुनि भीम कराला। निकसत रोमरोमप्रतिज्वाला॥
लपट नयनमग प्रकट विलोकी। लीनगदा रिसरहत न रोकी॥
बान्धव सकल भीम रुख पाई। भये सरोष सुभट समुदाई॥
पारथ पाणि गही असि मूठी। कह नृपहोनि सत्यममझूठी॥

धर्मज वदन निहारि. विकल सकल रिस मारि उर।
दीनगदामहिडारि, भीम विकलपारथ अतिहि॥

रहे पाण्डुसुत सब शिरनाई। वारिज नयन वारि सरसाई॥
चलेउ दुशासनरोष रिसाता। कह कुरुपतिहिविदुरअसिवाता॥
वचन हमार भूप सुनि लीजै। पीछे अम्बरहरण करीजै॥
प्रथम कथा शुभ सुनह नरेशा। अधिधर्माब्राह्मणइकदेशा॥
राक्षस इक प्रहर्ष अति भारी। कीन युगुल मिलि मित्राचारी।
इक पुत्र दुहन के होई। निर्भय सकल भांति भयसोई॥

गये काल भे युगुल सयाने। मित्राचार परस्पर माने ॥
गये अहेर दोउ इक दाई। फिरत विपिन कन्या इक पाई ॥

राक्षससुत तो यह कही, कन्याको हम लेह ।
विप्र कहै दे मित्र मोहिं परी दुहुन अवरेह ॥

युगुल परस्पर शोर मचावा। पुनि यह मन्त्र ठीक ठहरावा ॥
जाकहँ चाहै अब यह कन्या। पावै सो यह त्रिभुवनधन्या ॥
आगत गे कन्याके पासा। करहु दया जापर विश्वासा ॥
जासु हृदय डारहु जयमाला। पावै सोइ कहु वचन रसाला ॥
कन्या कहेउ सुनौ मतिवन्ता। जो सरिष्ट सोई मम कन्ता ॥
राक्षस कहेउ कि मैं गुणवाना। कह द्विज मैं सबविधि सज्ञाना
भागरत अग्निशर्मपह पाये। कहेउ बाद निज पद शिर नाये ॥
कहु सो को सरिष्ट को नामी। भाषहु सत्यवचन तुम स्वामी ॥

पुनि पुनि विनती करतहौं, कहिये करुणाऐन ।
मित्र पुत्र निज पुत्रते, तब बोले द्विज बैन ॥

इनमें वाद विनाश न होऊ। जाउ महर्षि तीर तुम दोऊ ॥
करैं विवाद करत स्वर ऊंचे। तुरत जाय तेहि भवन पहूँचे ॥
तब महर्षि पूंछन मन लाई। का आगरत हौ तुम दोउ भाई ॥
तब वे कहन लगे निज स्वारथ। ज्यहि प्रकार जस भयो यथारथ
तुम महर्षि करि कहौ विचारा। इनमा कौन सरिष्ट हमारा।
राक्षस सुनत मौन होइ रहेऊ। तब विचारि दुर्वासन कहेऊ

कश्यप ऋषिहि पूंछि मैं आवों । वेगि यथारथ तुम्है सुनावों ।
उठि प्रहर्ष ऋषिके गृह जाई । कीन प्रणाम चरण शिरनाई ।

कीन्ह विनय कर जोरिकर. बैठेउ आयसु पाय ।
ऋषि पूछेउ आये कहाँ, कहिये राजनराय ॥

ऋषि वचन सुनि प्रीति समेता । लाग्यो कहन प्रहर्ष सचेता ।
अग्निशर्म सुत औ सुत मोरा । कौन विपिनमहँ झगरा झोरा
झगरत आये द्वौ मम भवनहि । कौन सरिस्ट कहौ हमरवनहि
कह कश्यप सुनु राक्षसराऊ । झूठ वचन तुम कहेउ न काऊ ।
जो सुत होय तुम्हार सरिष्ठा । तौ सब सत्य कहौ मतिनिष्ठा
होय श्रेष्ठ जो विप्र कुमारा । कहेउ असत्य न त्यागि विचारा
कहे असत्य अधोगति जाई । लक्ष वर्ष सो नरक रहाई ॥
ऐसे थल यह उचित न ताता । भूलि असत्य कहेउ जनि बाता

कश्यपऋषिहि प्रणाम करि, राक्षस निज घर जाय ।
दुनहुनके आगे वचन, कहन लाग समुझाय ॥

कह राक्षस सुनु ब्राह्मणपूता । तव पितु हमते सरस बहूता ॥
मातु तोरि है बड़ी सयानी । हमरे सुतते तुम बड़ ज्ञानी ॥
सत्य कहा राक्षस जिउ बधिका । दुइसै वर्ष आयुमें अधिका ॥
अन्त न कण्ठपरी यमफांसी । भा कमलापति नगरनिवासी ॥
सत्य असत्यकेर अस बीचू । होत दृष्टी जस सौंच असौचू ॥
बीचु अनीति नीतिकर भारी । जनु रजनी अँधियारि उजारी ॥
कही विदुर नृप नीकि न रचना । जनि बोलहु अधर्म्म असवचना

नागफाँसकर नहिं अंदेशा । जो तुम करत अधर्म्मनरेशा ॥
मुनिअसवचनविदुरदिशिताकी । भ्रुकुटिकीनकुरुपतिरिसबाँकी

भ्रुकुटिभंग कुरुनाथ लखि, विदुर रहे चुप साधि ।
थरथर कम्पति द्रौपदी, दृष्टि विलोकि उपाधि ॥
परी विपतिवारीश, लखि दरकत उर बज्रको ।
धीर न धरत महीश, निज समुझावत द्रौपदी ॥

कपट द्यूत शकुनीते हारे । विधि यहगतिलिखिदीनलिलारे
अहह दैव दिवसनकर फेरू । गिरिते रज रज होत सुमेरू
रणमध्य पति पाँच हमारे । महावीर रण टरत न टारे ॥
मोंहि उबारि होन कब देहैं । उठिकै भीम अवशि सुधि लेहैं ॥
बहुरि सभा यहि भूप अनेका । समरथ शूर एकते एका ॥
जाननहार धर्म्मपथकेरा । क्षत्रिय भीषम आदि बड़ेरा ॥
यदपि न भूपहि कहिनि निहोरी । तौ परन्तु लैहैं सुधि मोरी ॥
गङ्गासुत चुपाइ किमि रहिहैं । आखिर उठि राजासन कहिहैं॥

अनुचित होन न पाइहै, लैहैं मोहिं छुड़ाइ ।
आजु पितामहते सरिस, धीर वीर को आइ ॥

न गुरु द्रोण सभामहँ सोई । जिनते अस्त्र सिखे सब कोई ॥
भारद्वाज तनय रण शूरा । लैहै मोहिं छुड़ाय जरूरा ॥

होइ मोरि रुचि पूरण भ्राता । आलिङ्गन करि द्रुपदकि जाता ॥
अतिशय विकल द्रौपदी कांपी । लेतराहु चन्द्रहिंजिमिझांपी ॥
इत उत दिशा दुखित मन हेरी । केहरि मनो मृगी वन घेरी ॥
भीषम,द्रोण करण दिशि चितई । निजपुतिदेखि आगमनवितई ॥

सकल सभा दिशि देखि पुनि, चितई पांडव ओर ।
भीमहिं देखि सरोष पुनि, वरज्यो धर्मकिशोर ॥

बहुरि कह्यो कुरुनाथ प्रचारी । उठ्यो दुशासन रिस करि भारी ॥
आतुर कहत वचन कटु धावा । मनहुं कृतांतराज चलि आवा ॥
एक पाणि लीन्हें गहि केशा । यक कर वसन गहे यमभेशा ॥
सकल सभाजन त्रियगति हेरी । ग्राम ग्राम गज नगर वसेरी ॥
बहु अवनीपति जे जन साधू । वूड़त वारिधि शोकअगाधू ॥
धीरनके मुख जोवत अहई । चहत पितामह अव कछु कहई ॥
निश्चय द्रोण चुपाइ न रहिहैं । अवशि वचन गंगासुतकहिहैं ॥
कृपाचार्य्य गतिपतिलखि वामा । रहिहैं किमिचुप अश्वत्थामा
यहिविधिनिजमनकरतभरोसा । शील धीर जे मारग दोसा ॥

जे शठ कायर क्रूर, मानभंग सब विधिचहत ।
सकल सभा भरिपूर, करत मनोरथ पृथक पुनि ॥

पकरिसि वसन दुशासन जाई । सक्षम प्रचारत पुनि कुरुराई ।
वीर धुरीण रहे चुप साधी । भ्रोगतभयेसकल अपराधी ॥
लखि दुर्दशा द्रुपदतनयाकी । शोकजाल पाण्डवउर बांकी ॥
ि नयन वही जलधारा । रहे नाइशिर पाण्डुकुमारा ॥

निपटविकललखिपाण्डुकिशोरा । नहिंबिदरतउरकठिनकठोरा ॥
तदपि दुष्ट अस तेहि थलमाहीं । जे हरषत मन धरषत नाहीं ॥
दुर्य्योधनकर प्रबल प्रतापा । तपत मनहुँ रवि द्वादश तापा ॥
अति करुणा सबके उर होई । प्रतिउत्तर करि सकत न कोई ॥
भीष्म द्रोण कुरु विभव विलोकी । रहे चुपाइ सके नहिं रोकी ॥

तीक्ष्ण भृकुटि सरोष लखि, अति कुरुनाथ भुवार ।
सकल सभा भयवश विकल, कांपहिं वारहिं बार ॥

कृपाचार्य उर शोच अपारा । कहि न सकैं कछु द्रोणकुमारा ॥
कोउ शिर नाय रहे सकुचाई । अस्रुपात कोउ कृत दुखदाई ॥
जे नृप धीर वीर बल भारी । जानि सत्यलखिहोहिंदुखारी ॥
परकहि न कछुकहि काहुहि काऊ । दुर्योधनकर समुझि सुभाऊ ॥
बारबार कह कौरव राजू । वेगि दुशासन करु यह काजू ।
खैचन लाग बसन गहिपानी । द्रुपद सुतातब अति अकुलानी ॥
तनया बिकल द्रुपद नृप केरी । छूटी आश सकल दिशि हेरी ॥
काल रूप लखि कौरवनाथा । जाय रहेउ चित जहँ यदुनाथा ॥
नारायण वचन सुनु मेरे । कौन विलापकलाप करेरे ॥
बहन बिरह सिन्धु रघुनाथा । जिमि गहिलीन भरतकरहाथा ॥
जिमि कपीश सुग्रीव उबारा । राखि बिभीषण रावण मारा ॥
ध्रुवहिं निरादर किय पितुमाता । ताकहँ नाथ भयो तुमत्राता ॥
तुम बिन नाथ सुनै को मेरी । करि विलाप दै हांक करेरी ॥

भुज उठाय हरिनगर दिशि. पाहि पाहि पुनि टेरि ।
कृष्ण कृष्ण राधारमण. दीन्ही हाँक करेरि ॥

दैत्यदलन प्रहलाद उबारण । लागहु मम गोहारि जगतारण ॥
मम अनाथ के नाथ गोसाईं । सो न होइ लज्जा जेहि जाईं ॥
तुम बिन आरत पच्छ गही को । राख रमापति लाज गईको ॥
पाण्डव त्यागी सुद्धि हमारी । तुम जनि त्यागहु गिरिवरधारी
बैठे सभा सकल अघधारी । कोउ न चहत छुड़ावन नारी ॥
परवश लाज जात हरि मेरी । त्रिभुवन नाथ शरणमें तेरी ॥
बीते काल दयानिधि ऐहौ । मोहिं उघारि देखि पछितैहौ ॥
ग्राह ग्रसे गज कीन पुकारा । तब तुम नाथ न लायहु बारा ॥

गोकुल बूड़त घेरि वन, जिमि रच्छा तुम कीन्ह ।
नाश्यो मातलिसूतमद, गिरिवर कर धरि लीन्ह ।

ते तुम नाथ कहाँ गिरिधारी । यह पापी खेचत मम सारी ॥
खैंचि वसन मम करिहि उघारी । का करिहौ तब आय खरारी ॥
गये लाज प्रभु विरद न रहिहैं । तुमहिं कृपालुकाहकोउकहिहैं ॥
सरवस हरेउ बचेउ इक बसना । सोऊ हरत बचावत कस ना ॥
दवा जरत जिमि गोपन राखा । कौरव अग्नि दीन्ह गृहलाखा ॥
तब तुमहीं यदुनाथ उबारा । दीनदयाल कहाँ यहि बारा ॥
दारिद दहि द्विजके दुखकाटे । धनपतिसरिस सदनधन पाटे ॥
जिमि गुरुसुत आनेउ यदुराई । राखि लेहु मम लाज न जाई ॥

श्रीपति दीनदयाल अब, तुम पति राखहु मोरि।
फिरि हरि कैसी करहुगे, जब पट लैहैं छोरि ॥

नीच सभा प्रभुस्वहिं नँगियावत । करुणासिन्धु धाय किन आवत ॥
द्रुपदसुता लखिविकल पुकारा । प्रणतपाल हरि त्रिरद सँभारा ॥
द्वारावति तजि नाँगे पाँयन । आतुर आइ गये नारायन ॥
प्रथम पाहि मुखते जब काढ़ा । प्रकटे वसन रूप पट बाढ़ा ॥
वसन रूप धरि वसन समाने । धीरज द्रुपदसुता उर आने ॥
खैंचेउ प्रथम जोर भरि जेता । निकस्यो वसन वसन मग तेता ॥
देखि चरित्र क्रोधते पागा । परमरोष करि खैंचन लागा ॥
खैंचत वसन मूढ़ यहि भाँती । मथत्सागरसुरअसुरकिपाँती ॥
कलनी सनहुँ शेष भइ सारी । दुःशासन जनु देवसुरारी ॥
खैंचत सरुष दुशासन सारी । निज तनु पुरवत वसन खरारी ॥

देखि वसनके बाढ़ि. अति प्रेमवश द्रौपदी ।
भइ रोमावलि ठाढ़ि. विनय करत गद्गद गिरा ॥

गयो शोच मन भयो अनन्दा । जनु चकोर पायो निशि चन्दा ॥
सच्चिदानन्द मैं तव बलिहारी । जय गोपाल गुवर्द्धनधारी ॥
जय शार्ङ्गधर जय असुरारी । जय मनमोहन कुञ्जविहारी ॥
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा । कमलनयन शोभा शतकामा ॥
पीताम्बरधर धरणीपालक । जय वसुदेव-देवकी-बालक ॥
जय तव कर सरोज यदुराया । कीन्ह्यों जेहि कर मोदर दाया ॥
जे पद गगनिन सम हित धाये । दुःशासन कर दर्प नशाये ॥

भुज उठाय हरिनगर दिशि, पाहि पाहि एनि टेरि।
कृष्ण कृष्ण राधारमण, दीन्ही हाँक करेरि॥

दैत्यदलन प्रह्लाद उबारण। लागहु मम गोहारि जगतारण॥
मम अनाथ के नाथ गोसाई। सो न होइ लज्जा जेहि जाई॥
तुम बिन आरत पच्छ गही को। राख रमापति लाज गईको॥
पाण्डव त्यागी सुद्धि हमारी। तुम जनि त्यागहु गिरिवरधारी
बैठे सभा सकल अघधारी। कोउ न चहत छुड़ावन नारी॥
परवश लाज जात हरि मेरी। त्रिभुवन नाथ शरणमें तेरी॥
बीते काल दयानिधि ऐहौ। मोहिं उघारि देखि पछितहो॥
ग्राह ग्रसे गज कीन पुकारा। तब तुम नाथ न लायहु बारा॥

गोकुल बूड़त घेरि वन, जिमि रच्छा तुम कीन्ह।
नाश्यो मातलिसूतमद, गिरिवर कर धरि लीन्ह।

ते तुम नाथ कहाँ गिरिधारी। यह पापी खैंचत मम सारी॥
खैंचि वसन मम करिहि उघारी। का करिहौ तब आय खरारी॥
गये लाज प्रभु विरद न रहिहैं। तुमहिं कृपालुकाहकोउकहिहैं॥
सरवस हरेउ बचेउ इक बसना। सोऊ हरत बचावत कस ना॥
दवा जरत जिमि गोपन राखा। कौरव अग्नि दीन्ह गृहलाखा॥
तब तुमहीं यदुनाथ उबारा। दीनदयाल कहाँ यहि बारा॥
दारिद दहि द्विजके दुखकाटे। धनपतिसरिस सदनधन पाटे॥
जमि गुरुसुत आनेउ यदुराई। राखि लेहु मम लाज न जाई॥

श्रीपति दीनदयाल अब, तुम पति राखहु मोरि।
फिरि हरि कैसो करहुगे, जब पट लैहैं छोरि ॥
कौन सभा प्रभु स्वहि नँगियावत । करुणासिन्धु धाय किन आवत
द्रुपदसुता लखिविकल पुकारा । प्रणतपाल हरि विरद सँभारा ॥
द्वारवति तजि नाँगे पाँयन । आतुर आइ गये नारायन ॥
प्रथम पाहि मुखते जब काढ़ा । प्रकटे वसन रूप पट बाढ़ा ॥
वसन रूप धरि वसन समाने । धीरज द्रुपदसुता उर आने ॥
खैंचेउ प्रथम जोर भरि जेता । निकस्यो वसन वसन सग तेता ॥
देखि चरित्र क्रोधते पागा । परमरोष करि खैंचन लागा ॥
खैंचत वसन मूढ़ यहि भाँती । मथसागरसुरअसुरकि पाँती ॥
करनी मनहुँ शेष भइ सारी । दुःशासन जनु देवसुरारी ॥
खैंचत सकष दुश्शासन सारी । निज तनु पुरवत वसन खरारी ॥
देखि वसनके बाढ़ि, सति प्रेमवश द्रौपदी ।
भइ रोमावलि ठाढ़ि, विनय करत गद्गद गिरा ॥
गयो शोच मन भयो अनन्दा । जनु चकोर पायो निशि चन्दा ॥
कृष्णचन्द्र मैं तव बलिहारी । जय गोपाल गुवर्द्धनधारी ॥
जय शारँगधर जय असुरारी । जय मनमोहन कुञ्जविहारी ॥
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा । कमलनयन शोभा शतकामा ॥
पीताम्बरधर धरणीपालक । जय वसुदेव-देवकी-बालक ॥
जय नव कर सरोज यदुराया । कीन्हेउ जेहि कर सोपर दाया ।
जे पद मगमिज मम हित धावे । दुःशासन कर दर्प नशावे ॥

जय मधुसूदन यदुपति स्वामी। जयत्रिलोकपतिअन्तर्यामी॥
जय अघारि जयजय अविकारी। जय जय जय केशी-कंसारी॥
जय मम लज्जा राखनहारे। जयति यशोदा-नन्द-दुलारे॥

जय कृपाल करुणायतन, जयति कौशल्यानन्द।
मोरपक्षधर मुरलिधर, जय जय आनँदकन्द॥
जयति सच्चिदानन्द हरि, ईश्वर जगदाधार।
राखौ लज्जा जानि निज जय मम नाथ उदार॥

निर्भय हर्ष विवश पञ्चाली। कहि चिरधारति जयवनमाली॥
जय जयकार पूरि एनि रहेऊ। दुष्टन विना सवन जय कहेउ॥
देवन देखि सुमन झर कीन्ही। गहगह गगन दुन्दुभी दीन्ही॥
बाढ़त देखि वसन चहुँ फेरा। मन थिर भयो पाण्डवनकेरा॥
हरि प्रताप दिनकरसम भयऊ। कौरवमिसकिकुमुदसमगयऊ॥
हरिहि पुकारति द्रुपदकुमारी। खैंचत मरुष दुशासन सारी॥
करत जोर बहुभांति दरेरा। बाढ़त वसन सकल चहुँफेरा॥
अरुण श्याम सित रङ्ग हरेरे। भांति भाँतिके वसन घनेरे॥
पीत रङ्गके बहुत निकारे। पीताम्बरके ओढ़न हारे॥

मिश्रित रँग के पट बढ़े, थके दुशासन हाथ॥
देवन उ देखे नहीं, ते पुरये यदुनाथ॥

आपु वसनतनु धरि भगवाना। बढ़ये विविध रङ्ग परिधाना॥
द्रुपदी चष पुतरी प्रभु कीन्ही। विरदावलिमूरति करिदीन्ही॥
चीर दुशासन हारा। अम्बर मनहुँ देवसरिधारा॥

द्रुपदसुताके अम्बरते रे। हारे भुजा दुशासनकेरे॥
निकसे पट विचित्र बहुतेरे। नहिं समात मन्दिर ढूपकेरे॥
दशसहस्र गजबल थकि गयऊ। दशगज अम्बरहरण न भयऊ॥
निपट होत लखि अनरथबाता। नाना भाँति होत उतपाता॥
शिवा यज्ञशालामें बोली। ढहे भवन धरणी जब डोली॥
अशुभ शब्द कृत रासभ श्वाना। मेघन बिना व्योम घहराना॥
हींसे सकल तुरङ्ग, हयशालामहँ बार इक।
चिघरे मत्त मतङ्ग, निज निज आश्रम विकल सब॥
भयो दाह दिग कररत कागा। तदपि न वसन दुशासन त्यागा॥
बदनि विलोकि तजै पुनि धरई। अनत गहै पुनि सो परिहरई॥
विदुर दीख भा अनरथ भारी। गे ज्यहिगृह विलपत गन्धारी॥
कहेउ रिसाइ मन्द सुनु मोहीं। होत अकाज न सूझत तोहीं॥
कृष्ण आजु द्रुपदी तनु व्यापे। वसन बढ़ाइ विरद अस्थापे॥
नहि होवहि सुतधर्म्म अकाजू। जिनके यदुनन्दन महराजू॥
सदा दासकर करत सहाई। प्रणतारतभञ्जन यदुराई॥
जे हरि हन्यो निशाचरराजू। सहि दुख निज भक्तनके काजू॥
मैं जानी सब बात तुम्हारी। नहि अज्ञानग्रसित गन्धारी॥
जानि विकल प्रह्लाद जिमि, जो हरिभक्त अनन्य।
सहि श्रम निकस्यो खम्भते, कश्यप हन्यो हिरन्य॥
अब अनेक उतपात, देखि परत अनरथ निपट।
हान चहत मोद बान, तव तपबलने थपि रही॥

अब ते रानि कहा सुनु मोरा। भाग्य अभाग्य होन अब तोरा॥
वसन छुड़ाव दुशासन करसन। चलन चहत नतु चक्रसुदर्सन
गन्धारी सुनि अति दुख पाई। विलपत विदुरसङ्ग उठि धाई॥
मतिदृग सुत खैचत इन चीरा। थक्यो पराक्रम भयो अधीरा॥
भुज थकिगयो बढ़त नहिं जाना। वसनत्यागिमनअतिखिसियान
निज आसन बैठेउ शिर नाई। मनहुँ रङ्क निधि पाइ गँवाई॥
दुर्योधन न्टप बैठ उदासा। मानहुँ भयो राजपदनासा॥
श्रीहत भयो सकल सदभङ्गा। निपट विकल अपमानतरङ्गा॥
सुनत शोर मारग श्रुतिकेरे। पूँछत मति दृग सञ्जयते रे॥
होत कहाँ यह हाहाकारा। सञ्जय कहै सहित विस्तारा॥

सुनत दशा दुख पाय, संजय कर गहि पाणि निज।
सभा विलोक्यो जाय, कुरुपतिकी अनरथकथा॥

मध्यसभा कंचन सिंहासन। सो धृतराष्ट्र न्टपतिकर आसन॥
बैठि गये तहँ मतिदृग जाई। परम रोष नहिं वरणि सेराई॥
दुःशासनकहँ न्टप दुरिआई। शठ कुरुकुल तैं दीन लजाई॥
दुर्योधनपर क्रोध अपारा। कहि कटु बार बार धिक्कारा॥
त्यहि अवसर आई गंधारी। कहि दुर्वचन कीन्ह रिस भारी॥
कीन्हों दुष्टकर्म्म तुम नीचू। परिहो अधम नरकके वीचू॥
दीन्हेउ सरुष शाप गंधारी। कह मतिदृग सुनु द्रुपदकुमारी॥
पुत्रवधू जे सकल हमारी। मन क्रम वचन अधिक तुम प्यारी॥
संग शठन कीन अपराधा। भौ मम वृद्धापनमहँ बाधा॥

एति तोहि मम सपथ भ्रात, मन वांछित वरमांगु।
दुष्टन कौन कुकर्म्म सो, मम दिशि ते सब त्यागु॥

अब तुम मम निहोर शिरमानी। करहु क्षमा अपराध भवानी॥
वेगि मांगु एतौ वरदाना। तुमसम मोहि न प्रिय कोउ आना॥
धर्म्मराज कुरुपति प्रिय मोरे। नाहिंन सुता तदपि सम तोरे॥
बारबार न्टप कह वर मांगू। द्रुपदसुता मन सुनि अनुरागू॥
बोली वचन जोरि युग पाणी। सुनहु नरेश सत्य मम वाणी॥
मोहि समेत सकल परिवारा। दासभाव भे पाण्डुकुमारा॥
सो नरेश मांगे स्वहि दीजे। दासभाव बिन सकल करीजे॥
वाहन अस्त्र देहु सब काहू। कीजै वेगि विदा नरनाहू॥
सनिहग कहेउ तोहि मैं दीन्हा। मांगु अपर कछु आयसु कीन्हा

सुनहु पिता कह द्रौपदी, मन वांछित वरदान।
मैं पायो तुम्हरी कृपा, नाथ सपथ न्टप आन॥

तव प्रसाद अव कुरुकुलकेतू। फिरि होइहै सुखसम्पनिकेतू॥
ब्राह्मन विप्र मांगें वर चारी। कहत वेद अस नीति विचारी॥
ना़ी नीति वैश्य कुल दोई। मांगे एक शूद्र सुत होई॥
सुता एक वध् ललानी। लीन्हें मांगि तीनि वर जानी॥
[illegible] मोहि पिता मनोरथ मोरा। नरनायक मम मानि निहोरा॥
[illegible] चतुर बुलाये। सबके वाहन अस्त्र देवाये॥
[illegible] वाहन गहि आयुध हाथा। चले अवास धर्म्म नरनाथा॥

परसे चरण बुद्धिदृगकेरे । बोले भूप युधिष्ठिरते रे ॥
लज्जाविवश वचन सुनि तोरा । हे सुत होत विकल मन मोरा ॥
वचन तोर सुनि तात, लज्जित अवनि समान मैं ।
मोहिं अछत यह बात, पुत्र परम अनुचित भई ॥
होइ तुम्हारि परम कल्याणा । सुनु अशीष मम वचनप्रमाणा ॥
जीति तुम्हारि राज्य सबलीन्हो । दुर्योधन अनीति बड़िकीन्हो ॥
सो मे तुमहिं देत निज पानी । लीजे सुत प्रसाद मम मानी ॥
मतिदृगआयसु शिरधर लीन्हा । शीश नवाय गमन गृह कीन्हा ॥
प्रथम नरेश कीन्ह जहँ डेरा । दीन्ह त्यागि त्यहि ओर न हेरा ॥
पटल वितान सेन चतुरङ्गा । चपल तुरङ्गम मत्त मतङ्गा ॥
सकल धर्म्मनन्दन तजि दीन्हा । सहित कुटुम्बभवनमगलीन्हा ॥
मिले विदुर मारगमहँ आई । जात भये निज भवन लेवाई ॥
रानिनसहित नृपहि अन्हवाये । खान पान विश्राम कराये ॥
ह्वां उठि कुरुपति सभाते, गे सब निज निज धाम ।
खान पान असनान करि, शेष दिवस रह याम ॥
द्रोण करण भीषम शकुनि, निज निज गृह मग लीन ।
खान पान विश्राम पुनि, सब भूपालन कीन ॥
प्रथम करो असनान पुनि, भोजन करि कुरुनाथ ।
सबलसिंह आयो सभा, दुरद दुशासन साथ ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

सुन्दर कनक प्रयङ्कपर, शयन करी कुरुराय।
विदुर भवनहैं धर्म्मसुत, कही चरचरन आय॥
सुनि नरेश मन अति दुखपाये। सौबल शकुनी करण बुलाये॥
सहित दुशासन करत सलाहा। बोले दुर्योधन नरनाहा॥
जीत्यो राज धर्म्मसुतकेरो। दीन्हो बहुरि पिता सोइ फेरो॥
जीती अवनिपिता तजि दीन्हा। सो हमरेहित अतिभलकीन्हा
छूटे भूप दासगतिते रे। लेत भूमि असिधार गरेरे॥
शासन राज्य उचित मत ताते। किङ्करता विनु धर्म्मज जाते॥
अब तुम यतन बतावहु सोई। मृषा मनोरथ मोर न होई॥
परवश होत मनोरथ खाली। संशयविवश उठत मन हाली॥
कौरवबल कछुसरेउ न काजू। मयोजानि मम परमकाजू॥
अबते कीजै यत्न कछु, विदुरभवन सुनधर्म।
है अबहीं सुनिये सचिव, कह कुरुनाथ कुकर्म॥
गुप्त शत्रुगति प्रकट भई सो। आपस बीती प्रीति गई सो॥
गई लाभ भा सचिव हमारा। मारत शत्रु गयो दिन मारा॥
यह अनरथ अब सजग भईते। बहु उतपात करैं हमते ते॥
सुनि कुरुनाथ वचन अनुरागे। सब मिलि मन्त्र विचारन लागे॥
पंच ठीक मत नृप सुख पाये। बहुविधि सौबल मिस्र पठाये
धर्मनरेश विदा उत मांगी। विदुर पठाइ फिरे अनुरागी।
निज गृह जान युधिष्ठिर राई। सौबल मिल्यो बीच मग आई
बैठ्यो आहार माथ महि लाई। कहनलगेउ पुनि वचन बनाई

युक्ति सहित करि छल चतुराई । निज वश कीन युधिष्ठिर गई ॥
चलहु नरेश कुरुपतिहि जीती । लीजै बैर दूअतकरि नीती ॥

वहि अनीति शकुनी करी, शठ समेत कुरुराज ।
होत दुसह दुख हृदय मम, गति तुम्हारि लखि लाज ॥

सोइ गति होई कुरुपतिकेरी । हृदय हुताश ज्वाल तव मेरी ॥
करि बहु यतन नृपहि पलटाई । कुरुसमाजकहँ गये लिवाई ॥
करि बहु प्रीति सभा बैठारी । मंगवाई पुनि पँसासारी ॥
भावी प्रबल मेटि को सकई । बरजि बरजि सबप्रियजन थकई ॥
धर्म राज कर अच्छ गहे जब । विहसि वचन यह कृष्ण कहेतब ॥
का अब धरत युधिष्ठिर राऊ । कह नृप जो कहिये कुरुराऊ ॥
हारहि सो अस कुरुपति कहई । द्वादश वर्ष विपिन सो रहई ॥
कन्द मूल फल करै अहारा । उदासीन इव सब आचारा ॥
हारै सो निज भवन न जावै । आतुर कानन पन्थ सिधावै ॥

होइ बैठ जेहि थल यथा, तस कानन मग लेइ ।
अन्न अशन अरु राज्य सब, सो तजि तृणइव देइ ॥

अनुचर अपर लेइ नहि सङ्गा । एक त्यागि निजवंशप्रसङ्गा ॥
तापस तनु धरि कानन जाई । देइ महीपति चिह्न दुराई ॥
यहिविधि द्वादश वर्ष वितावै । नेम सहित तेरहौं जब आवै ॥
ग्राम निवास करै अज्ञाता । वर्षदिवसकहिजाय न जाता ॥
मिलै न खोज रहै यहि भाँती । वर्ष त्रयोदशइ जब जाती ॥
ज्य चौदहौं आये । खोज त्रयोदशइ बिन पाये ॥

जो कदाचि त्यरहीं सुधि पाई। द्वादश वर्ष बहुरि वन जाई ॥
जब जब खबरि तेरहीं पाई। तब तब सो कानन मग जाई ॥
मिले न खबरि तेरहीं जासू। सो पुनि करै राज्य निज वासू ॥

भीष्मादिक सब थरहरे, सुनि कुरुपतिकी बात ।
कहि प्रमाण धरि दाउँ सोइ, दीन्हों शत्रु अजात ॥

कह सौबल सुनु धर्मकिशोरा। होइ खेल शकुनी सँग मोरा ॥
मैं खेलौं तुम्हारी बदि राजा। देखौ शठ शकुनीकर काजा ॥
बोले कुरुजन धर्मज बाता। छल कहि भूलब शत्रुअजाता ॥
कर गहि अक्ष युधिष्ठिर राऊ। मानि प्रमाण धरौ सोइ दाऊ ॥
बरजत रहे सकल हितकारी। केहि विधि मिटै जो होनेहारी ॥
तमकि धर्मसुत अक्ष चलाई। परेउ दांव शकुनीकर आई ॥
छल खेलार अचित शकुनीते। पुनि पुनि हारिगये नहि जीते ॥

हारेउ दाउँ अधर्म-अरि, चुपकि रहे शिर नाय ।
बिजयनगारे किंकरन, हने सो आयसु पाय ॥

लूटन सभा देश गृह कोशा। लखि उर शोक होत सहरोषा ॥
चितै सकल दिशि धर्मज ज्ञानी। बोले श्रवत नयनजलपानी ॥
मनु शठ तैं सब लाज गंवाई। भयसि वृथा क्षत्रीकर भाई ॥
सम जीति देखहु मुसक्याई। धिक धिक त्वहिं जननीके भाई ॥
हम नाहिं शठतें नहिं हारे। लाज राख कहँगये तुम्हारे ॥
[illegible] तोहि सम लायक। [illegible] कुलनायक ॥
[illegible] हरि शठनीती। [illegible] न देखहु [illegible] ॥

धिकधिककितवकहिहवअभिमानी। दीन्हेउमृदत्यागिममवानी
नाहिं कछु कुरुपतिकेर कुकर्मा। नहिंगक्कनीकृत कर्म अधर्मा
समरथ भीष्म द्रोण संपाती। तिन्हेंदोष देइय कहिभांती
रे शठ भयसि पाप कर मूला होत न मूढ़ हृदय तव शूला
देखि दशा मम लाज तजि, रहे मूढ़ चुप साधि।
कहि न सकहि कोउ नीच कछु, छन कुरुनाथ उपाधि
सुनु अधर्म निज काल बिताई। जो न विनाश करौं तवआई
तौ न गहौं शर चाप कृपाना। करौं त्याग क्षत्रीकुल वाना।
अस कहि भूप अग्र पगु धारा। कहत रोषवश पवनकुमारा।
गरजि जलदसम नयन तरेरे। बोले चितै दुशासनते रे॥
निपट नीच तवबुद्धि पिशाची। निश्चय मीच शीशपर नाची
जेहिकर बसन द्रौपदीकेरे। गहि खैंचेउ करि जोर घनेरे॥
सो उखारि डारौं भुज तेरे। दाह बुताय हृदय तव सेरे॥
ठोकि जंघ बैठहु कहि चेरी। भइ मतिभ्रम कुरुनायककेरी॥
चहत कुशल करि सिंह जगाई। वैनतेय बलि वायस खाई।
होत यथा यह बात अयोगू। तेहिविधि हमहिं हँसतसबलोगू
सुनत सभा अस कहत पैं, सब प्रतिबचन पुकारि।
तबलग धिक मोहि कुरुपतिहि, जब लग डारौं मारि॥
सङ्गरभूमि गदा लै हाथा। जङ्घ भङ्ग करिहौं कुरुनाथा॥
कहे वचनकर फल देखरावौं। तौ मै क्षत्रियवंश कहावौं॥
.धि बिताइ कहा मम मा.न। जो न विनाश करौं तव जानू

तौ हम होइँ निरयपथगामी। पन्नग-योनि जन्म परिनामी॥
बैठु जंघ मम द्रुपदसुताते। कहेउ सो दुर्योधन मुख जाते।
निज पदते मरदउँ मुख सोऊ। बन्धु हमार बोध तब होऊ॥
दिवस बिताय गदाधरि लरिहौं। अन्ध नरेश वंश संहरिहौं॥
तिय तजि पुरुष न राखौं एका। मति दृग वंश सत्य मम टेका॥
कृष्ण शपथ नृपचरण दोहाई। बीते दिवस करब सब आई॥

अस कहि निज कर गहि गदा, भीम चले नृप साथ।
बोले पारथ रोषवश, जो कुमार सुरनाथ॥

सुनु रविनन्द अधम मलरासी। कीन्हेउममविस्मयतजि हासी॥
धरणी नम करिहौं शरमारी। करौं प्रतिज्ञा सत्य हमारी॥
वृद्ध पितामह द्रोण हमारे। निज नैनन सुख देखन हारे॥
धन्य धन्य सब लायक केरे। निज निज नैन परम सुख हेरे॥
जन्म प्रयन्त सत्य व्रत कीन्हा। अन्तकि वयस लाभ भल लीन्हा॥
शर सागर कौरव कुल बोरौं। भीष्मादिक चलिन शिरफोरौं॥
तौ मैं कुन्तीसुतशुचि साँचा। काटौं तव शिर कठिन नराचा॥
मोहि अजातशत्रु कै आना। बीते दिवस करौं मन माना॥
अस कहि चले युधिष्ठिर सङ्गा। बोले नकुल रोष भरि अङ्गा॥
सुनु रे कर्ण पापकर अंशा। करौं विनाश सकलनर वंशा।
जियकों न आदि सुत तोरे। होइहैं नाश सकल कर मोरे।

सबलसिंह कहि नकुल अस. गये युधिष्ठिर पास
जो न करौं यह सत्य सब. होइ नरक मम वास॥

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

कह ऋषिराय सत्य सुनु राजा। मष्ट रहे कुरुनाथ समाजा॥
तब सहदेव शकुनितन हेरी। भृकुटि भङ्ग करि नयन तरेरी॥
शकुनी तब मति ईश भ्रमाई। नीच मीचु करि यत्न बोलाई॥
द्यूत हराय कियो छल भारी। कौन सकल दुर्द्दशा हमारी॥
जानेउ तुम इनके रिस नाहीं। ईर्षा लाज न कछु मन माहीं॥
जनि भूलेउ यहि भूलि विशेखी। बीते दिवस परो सब देखी॥
कुरुपतिनाश सहित परिवारा। होइ हैं ममकर मरण तुम्हारा॥
बीते अवधि शरासन धरिहौं। रिपुकृतकर्मप्रकटसब करिहौं॥
कृष्ण शपथ अरु धर्म महीशा। करौं समर तव खण्डित शीशा॥

बीते दिवस प्रमाण निज, करौं सकल प्रण साँच।
मतिदृगसुत कटि कटि गिरहिं, दाहनकरैं नराच॥

अस कहि चलन भूपपहँ चहेऊ। द्रुपदसुता तब रिसवश कहेऊ॥
सुनहु दुशासन रुधिर तुम्हारा। जब मम शिर होइबहै पनारा॥
बाँधब कच तब करि असनाना। कोटि भूप यदुपति के आना॥
अस कहि केश दिये छिटकाई। दुःशासन के रुधिर नहाई॥
जेहिविधि नाथलाज मम राखो। करेहुसत्यप्रण जनभा[illegible]
भङ्ग कुरुपति सुनिकाना। मैंसुखविपुललहव भगवाना॥

छूटत केश विगलित पञ्चाली । अति भयकार मनो कङ्काली ॥
तनु सुन्दरता भय गति दूरी । रोष कराल रहा भरिपूरी ॥
अस कहि द्रुपदकुमारि पुनि. चली युधिष्ठिर साथ ।
वल्कल लाये दासगण. लखि रुख कौरव नाथ ॥
जहि मग जात युधिष्ठिरराई । अग्र दिये धरि भाजन जाई ॥
दुर्योधन कर आयसु जोई । किङ्कर कहत जोरि कर दोई ॥
नृप वल्कल अब धारण कीजे । गृहमग तजि काननमगलीजे ॥
असमुनि भीम भयो मनरोषा । धिक कहि देत भुजनपर दोषा ॥
रोष तरङ्ग विलोचन लाला । कहेउ नाय धर्मज पद भाला ॥
हम नृपदास भये अब नाहीं । आयसु नीच करत केहिपाहीं ॥
राज्य त्यागि कानन मग जैहैं । तहं कुरुपतिका हमहिं सिखैहैं ॥
प्रथम द्रुपदतनया निज धारे । का नृप बहुरि जन्म धरि हारे ॥
जो न तजत मम नीच पछारी । चहतविलोकन मठ यमधारी
आयसु मोहि नराधिप देहू । विक्रम बन्धु देखि करिलेहू ॥
दुर्योधनहि प्रकट देखरावों । जो तुम्हार अनुशासन पावों ॥
तौ सौ भाई आजु सब. कुरुपति आदि बटोरि ।
मारि पठावों यमपुरन. नृप तव शपथ करोरि ॥
तासु सहायक है भगवाना । जौतव एक न पैहै जाना ॥
निज करुणा करि चीर बढावा । सो मम बाहु सहायक आवा ॥
मर्दि मरण जो यहि घलहोई । एक मम विस्मय कहु न कोई ॥
कर्णादिक छिन मारे मरिहैं । कृत्तिकगामि न एक उबरिहैं ।

सहिअसिविपतिनजीवननीका । समुझाइये महीपति जीक
पारथ कहेउ मोर मत एहू । वेगि नरेश रजायसु देहू ॥
तमकि तमकि निज अस्त्र उठाये । भजगदेखि कुरुगण भय
वल्कल वसन अनूप मोहाये । जे प्रथमहि कुरु किङ्कर लाये ॥

भीम वचत सुनि कुरुपनिहि. जाइ जनायो हाल ।
बुद्धिचक्षु सुत रोषवश. भयो त्रिलोचन लाल ॥
कहत भयो कुरुनाथ तब, यूथप सुभट बुलाइ ।
घेरि पवँरि मारहु सकल. जियत न पावहि जाइ ॥

भूपति आयसु धनुष चढ़ाये । सुभट समूह रोषवश धाये ॥
करण दुशासनादि भटभारी । घेरि पवँरि प्रति ठाढ़ अगारी
सातौ द्वार वीर ठढ़ि आई । कीन्हेउ वज्र किवार देवाई ॥
इत यह साज सजै कुरुराई । उत आयसु मांगत सब भाई ।
वेगि महीपति देवे योगू । करिये समर न कर्म्म अयोगू ।
रिस उर मारि बड़ दुख होई । कीन्हे समर मिटै नृप सोई
होई जीति तबन्टप भलिबाता । मरण नीक नहि शत्रुअगा
जो यहिविधि भइ जगत हँसाई । करब काह जग जीवनभ
कीन्हे समर भुजा सुख पावैं । अति कराल तनुताप बुझा
सुरपुर तात लहब सुखनीके । करिकरिखण्डखण्डकुरुपति
नतु नरेश जारत उर शोषू । मिलिहि न युगललोक सन्तो

पुनि पुनि अनुज सरोष अति, मांगत सकल निदेश
मन विचार कर कोटिविधि, बोले वचन नरेश ॥

बन्धुवचन अस भूलि न कहऊ । भयो अरोग्य अरुभि जनिरहऊ॥
जन्म प्रयन्त होम जिमि करई । अन्तकि वैस ताहि परिहरई ॥
निमिसहिशोगसकल दुखसेतू । चहत वेगारन अव विनहेतू ॥
वर्ष त्रयोदश भो मम लेखे । अव निज नयन उमापति देखे ॥
पशुपतीश देखिय नैपाला । डाकिनि देश भयंकर काला ॥
रामनाथ सम ईश्वर देखो । होइ है जीवन सफलविशेखो ॥
महाकाल उज्जैन अशेखो । अमरनाथ कश्मीर सो देखो ॥

विश्वनाथ वाराणसी, बहुरि देखि शशि भाल ।
मनहु बन्धु आनन्दयुत, कटिहि सहज सवकाल ॥

अस कहि भूपति चिन्ह दुराये । पहिरे वल्कल वसन सुहाये ॥
पहिरे वसन वेष अतिभारी ॥ द्रुपदसुतायुत वांधव चारी ॥
जब जहित पट चित उतारे । ते नरेश त्यहि थल सव डारे ॥
कुरु किंकरन परे पट पाये । गत दरिद्र धनवान कहाये ॥
बन्धु सुजनजन सङ्ग महीपा । आगे चले पाण्डु कुल दीपा ॥
उदासीन इव वेष बनाये । मनहुँ महातप तनु धरि आये ॥
जाहि पवँरि जहँ वल्कलधारी । धावहि सुभट समूह प्रचारी ॥
भो मग त्यागहि धर्मकुमारा । आतुर आवहि आनद वारा ।
छन्न किशार जहै तहँ पावहि । सायक तीर सरोप चलावहि ।

कहहु दुशासन शकुनि कहुँ, यूथनाथ भट वृन्द ।
देखि पवँरि प्रति धर्मसुत, गये जहाँ नरिन्द ।

सभा वर्ग धर्मसुत आये । वल्कल धर भग चापचढाये ।

विहँसि कहा सुनु शत्रुअजाता। तुमको द्रुपदसुता भइ त्राता॥
भ्रमरमध्य जिमि बोहित परई। गहि कर हाथ पार कोउ करई॥
त्राता नारि भली तुम पाई। कर्ण तर्क करि हँसे ठठाई॥
कछु नहिं कहा धर्म्म नरनाहू। बोले भीम भयो उर दाहू॥
सुनु रविनन्दन दूषण यासे। भेद न दर्म्मनि श्रुति परिभासे॥
द्रुपदसुता है जीति हमारी। हँसी न देखहु हृदय विचारी॥
होउ न अज्ञ विवश परतीती। देखहु पूंछि विदुर मन नीती
निज तनु होत प्रकट यक देही। वाम अङ्ग तिय परम सनेही
तीसरि जाति पुत्र निज होई। कहे विदुर यह प्रकट न गोई

सुनि न कहेउ रविसुत कछु, चुपकि रहे अरगाइ।
बोले धर्म्म नरेश तब, आरत वचन सुनाइ॥

मोहिं कर्ण अब मारग देहू। करि दुर्गति जनि जीवन लेहू॥
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं। दीजै पन्थ कवन विधि तोहीं
फिरे धर्म्मसुत सुनि असिवानी। श्रवत नयन वारिजमगपानी
जात पवँरि जेहिशत्रु अजाता। होत शोर तहँ जनु पविपाता
सुभट सरोष अस्त्रगहि धावहिं। लखिसुतधर्म अपरमगजावहिं
यहिविधिन्टपचहुँदिशिफिरिआये। मारु मारु तजिपन्थनपाये
भे अति विकल धर्मसुत जीमा। शिरधुनिकहतशोकयुतभीम
तुम्हारि क्षमा दुखदाई। करत शोल उर वज्र किनाई॥
मिलिहै कुरुपति भारी। भै न्टप कुपथ कुमीचु हमा

अहहदेव तुव गति अगम, मरे सोच बिन आइ।
मनकी मनहीमें रही, कहि विलपत सब भाइ॥
होत सभामहँ भूप रजाई। जियत न जात भवन कुरुराई॥
हमहि न रहत मरे कर शोचू। भा नृपदुखद तुम्हार सकोचू॥
इत नरहरि भार तुव नाथा। उत रण सुभटन कौरव नाथा॥
यह नरेश बड़ शोक समाजा। बीर बधे नहि होत अकाजा॥
जाहि बन्धु जन प्रिय जन मारे। हृदय शोक दुख होत हमारे॥
कह धर्म धीर युधिष्ठिर राई। सुनहु तात तुम तजि कदराई॥
सदा सहाय कहे करुणाकर। कस न खबरि लेहैं राधावर॥
द्रुपदसुता की लाज बचाई। तिनहि न बात बड़ी यह भाई॥
अस कहि लोचन वारि विमोचैं। विदुर समेत बन्धु सब सोचैं॥
सकल कहैं आरत वचन, त्राहि त्राहि यदुनाथ।
सजल नयन पुनि पुनि कहत, राधावर धुनि साथ॥
जानविकललखि द्रुपदकिशोरी। कहतघटोत्कच दोउकरजोरी॥
सुनो विनय मम धर्मकुमारा। विश्वम्भर रखवार तुम्हारा॥
अब नरेश मोहि आयसु देहू। जिमि निज किङ्कर इव कर नेहू॥
तब नरेश निज पृष्ठ चढ़ाई। सहित कुटुम्ब नाथ सब भाई॥
कौर दुर्योधन भवन उलंघा। जाउं भूप तब आयसु संघा॥
तबो महीपति आयसु देहू। करौं महात्मा तजि सन्देहू।
न तु यहि अवसर जहं कुरुराई। जाइ समीप देहु पहुँचाई।
आयसु बीर देहु मोहि राजा। तब पद सपदकरौं सोइ काजा।

कहेउ भीम कहँ हैं कुरुनाथा। तहँ मैं जाउँ गदा गहि हाथा॥

करु सुत सोइ उपाय, भूपति आयसु देहिं जो।
जियकी जगनि बुताय, सम्मुख लखि दुर्योधनहिं॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य, अवहीं जो कीन्हीं प्रथम।
होत शरीर असत्य, को जाने जीवन मरण

भीम वचन सबके मन भाये। आयसुमाँगिमाँगि शिरनाये॥
कहेउ धर्म्मसुत अबकी बारा। मानहु आयसु सकल हमारा॥
मारग यही विपिन कहँ लीजे। विग्रह वन्धु कदापि न कीजै॥
यहि प्रकार कहि धर्म्मकिशोरा चितै घटोत्कच ओरा॥
धन्य धन्य सुत भाग्य तुम्हारा। लीन उवारि सकल परिवारा॥
सब समेत अब सुत बड़भागी। काननपन्थ चलिय डर त्यागी॥
सपनेहुँ आन विचार न करहू। ममअनुशासन सुत उर धरहू॥
कहेउ सुभगशिष धर्म्मकुमारा। कीन सबन मिलि अङ्गीकारा॥
कुम्भोत्कच तनु धरेउ विशाला। छायोरूप श्याम कचलाला॥

होन लग्यो उतपात बहु, चले पवन उनचास।
अन्धकार माया प्रवल, दिवस नाथ उर त्रास॥

माया वश राक्षस की धारी। सब परिवार पृष्ठि बैठारी॥
सहित द्रौपदी धर्म्मज राई। दक्षिण भुजा लीन्ह बैठाई॥
बाम बाहुपर बान्धव चारी। भीमादिक लीन्हेउ बैठारी॥
नगर्जिचलनजबभयऊ। नृपकरजोरिविदुरसनकहेऊ॥
ासम आपु हमारे। शिशुपनतेसबविधिरखवारे॥

ममसुधिअव यादवपति लीन्हौ। रक्षा आपु जन्म भरि कीन्हौ॥
हरिते अधिक हितू तुम मोरे। पितुमातासम हितन निहोरे॥
अवते एक मोरि रखवारी। करेउ तात मम विनय विचारी॥
जो गृह रहै देइ दुर्योधन। तात निहोरे किहेउ प्रबोधन॥
तुम नहँ जात रहेउ कछुकाला। गयेदिवसदुखकटहिंविशाला॥
जब जब सुरति करै मम माता। करेहुप्रबोध विकललखिगाता॥
भोजन पान अधीन तुम्हारे। मातु प्राणधनके रखवारे॥

विपिन महा दुखरूप, ताते उचित न मातुसँग
कह्यौ युधिष्ठिर भूप, गहवर उर व्याकुल निपट॥
कहेउ प्रणाम हमार, तात मातुसन विविधविधि।
अस कहि धर्म्मकुमार. चकित चितै रोवन लगे॥

कहेउ विदुर नृप धीरज धरहू। आतुर गमन विपिनमग करहू॥
हम कुन्ती बहु विधि समझैहैं। रञ्चक शोक न शीश बिसैहैं॥
हमहि उचित विन कहे तुम्हारे। सब प्रकार पद सेवन हारे॥
नदीपवहेउनवअतिभलकीन्हा। महाविपतितजिधीरजदीन्हा॥
नाननहि काम यहाँके ठाढ़े। कुरु आयसु आवतभट गाढ़े॥
तुम कहँ करुणासिन्धु सहाई। दीन घटोत्कच कहँ पहुँचाई॥
गमन कीजिये भव अजाता। भये मरण नृपनीकि न बाना॥
विदुर वचन सुनि धर्म्म नरेशा। कहेउ मातु कहँ पुनि सन्देशा।
मोर प्रणाम कहेउ जननी ते। मिलिहौं वर्ष त्रयोदश बीते।

मोहिं न होय लवलेशदुख, तव प्रसाद बन जात।
बीते दिन पद देखिहौं, शोच परिहरिय मात॥
भीम सँदेश विदुरसन कहेऊ। मम दिशि तात मातुसन कहेऊ॥
कहेउ सहायक जो यदुराई। बीते दिवस गहौं पद आई॥
भयो हमार कठिन अपमाना। अमर शरीर तजत नहिं प्राना॥
होत न अब कछु कौन हमारा। का धौं अघ करिय करतारा॥
कुरुपति सदृश एक बिन रोरं। सब शठ देखि परत रिपु मोरं॥
कोउ सज्जन परमारथवादी। पापी सकल भीष्म द्रोणादी॥
तुम धर्म्मिष्ठ विदुर सब ज्ञानी। गदगदगिरा न पुनिकहिजानी॥
कह पारथ सुनु तात सुजाना। तुम समर्थ विज्ञान निधाना॥
कहब नविपति मातुसन भाषी। जेहिसुख लहहि नहोइँ दुखारी॥
करेहु यत्न सोइ तात, मातु लहै सुख शोच तजि।
करि कौरव कुलघात, दरशावों जननी वदन॥
पृथक पृथक मातहि कहेउ, निज निज स्वन सँदेश।
तेहि अवसरकरुणा निपट, वरणि न जाइ नरेश॥
बार बार कह द्रुपद किशोरी। सुरत करायहु मातहि मोरी॥
पूजनीय तुम श्वशुर हमारे। नहि सन्देश पठावन हारे॥
अनुचितत्तसब कुअवसर जानी। कहेउ मातुते मम प्रियबानी॥
पद सेवाकर अवसर आवा। भाग्यकठिनतबमोहिंभ्रमावा॥
जीवत राखहि जगदीशा। धरिहौं आइ चरणतर शीशा॥
प्रसाद सब पुत्र तुम्हारे। रहिहैं मोहिं समेत सुखारे॥

अस कहि विदुरचरण गहि रानी । बिलपत भाषत आरत बानी ॥
पुनि पुनि मिलत धर्म्म नरनाहू । बहेउ विलोचन वारि प्रवाहू ॥
तेहि अवसर कुरु आयसु मानी । चहुँदिशि वीर धीर अररानी ॥
गहे अनेक नग्न करवाला । रूप भयङ्कर धनुष विशाला ॥

धर्म्मसुतहि पारथ कहेउ, नाथ रजायसु होइ ।
अजन वार कौरव सुभट, कछुक दीजिये खोइ ॥
नहि भायो पारथ वचन, नाथ विदुरपद भाल ।
अरो घटोत्कच ते कहेउ, सत्य धर्म्म महिपाल ॥
लखि कुम्भोत्कच भूपरुख, आतुर वार न लागि ।
गर्जि तर्जि उच्चाट करि, गयो नागपुर त्यागि ॥
सबलिन्हि सुनि विदुरसुख, कौरवनाथ हवाल ।
हँ उदास शकुनी करण, बोलिलिये ततकाल ॥

इति सप्तम अध्यायः ॥ ७ ॥

इति सभापर्व समाप्त ।

महाभारत।

बन पर्व्व।

अब बनपर्व कथा यह, आगे सुनहु नरेश।
छाँड़ो देशहि धर्मसुत, कीन्हों वनहि प्रवेश॥
काम्यक विपिन रहे तहँ जाई। धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई॥
जहाँ विपिन है बहु विस्तारा। सिंह भालु वाराह अपारा॥
किर्म्मिर नाम दैत्य एक रहई। महा सो वीर पराक्रम अहई॥
ताके डर बहु तपी डराई। तेहिवन निशि वासर सोरहई॥
मानुष चाप पाइकै धायो। धर्मराज सन पूँछन आयो॥
किबर नाम अहै वन मोरा। को तुम वीर अहो बरजोरा॥
धर्मराज बोले यह वानी। पाण्डुपुत्र हैं सब जग जानी॥
भीम धनञ्जय नकुल कुमारा। सहदेव लघुहैं बन्धु हमारा॥
...। राज युधिष्ठिर अहहीं। सत्य वचन तोसें सब कहहीं॥
... ...ी अहै पटरानी। हारे राज्य लियो वन आनी॥

सुनत दैत्य हँसि बोलेऊ, विधि मोहि दीन्ह अहार ।
भीम नाम सो दुष्ट बड़, वैरी अहै हमार ॥
रहे बकासुर बन्धु हमारा । ताको भीमसेन संहारा ॥
सखा हमार हिडम्बक रहई । मारो ताहि दैत्य अस कहई ॥
सो विधि मोकहँ दीन्ह मिलाई । आजु मारिहौं पांचौ भाई ॥
शोणित करौं भीमकर पाना । तब संतुष्ट होइ मम प्राना ॥
यह कहि दैत्यरूप तब धारा । वृक्ष एक हँसि भीम उखारा ॥
माख्यो भीमसेन करि क्रोधा । किर्मिर नाम दैत्य बड़ योधा ॥
माग्यो वृक्ष तासु के माथा । क्रोधित भयो दैत्यकर नाथा ॥
एक एक जीति नहिं पायो । दूनों वीर जूझ मन लायो ॥
तब पर्वत इक दैत्य उपारा । भीमसेनके ऊपर डारा ॥
मारु मारु करिकै तब धावा । चन्द्रहि राहु ग्रसन जनु आवा ॥
उठेउ भीम तब क्रोध करि, मल्लयुद्ध तब ठान ।
जिमि सुग्रीवहि वालिसों, विविध भाँति मैदान ॥
एक एकते बीर अपारा । महासार जनु भा मझारा ॥
[illegible] दानव लरि लपटाहीं । है गा शब्द घोर बनमाहीं ॥
[illegible] जांघ बजावत वारी । लपटि जात होइ महा प्रहारी ॥
[illegible] और चपेटक घाऊ । एकहि एक बधो मन लाऊ ॥
[illegible] धूरि नभ जङ्गल जाई । जीवजन्तु बन छांड़ि पराई ॥
[illegible] भीम गह्यो तब ताही । दूनो हाथ दियो कटिमाहीं
[illegible] भीम पकरि गिरवारा । क्रोधवन्त होइ भूमि पछारा

आरत दानों कीन्ह चिकारा। मुखते चलौ रुधिरकी धारा॥
भीम दैत्य को जबहिं संहारा। छाँड़ेउतब जब प्राण निकारा॥
वधेउ दैत्य कहँभीम नुक्कारा। हर्षित भे तब पवनकुमारा॥
मिलि सब बन्धु हर्ष उरछाये। दुर्वासा तहँ देखन आये॥
साठि सहस्त्र शिष्य लै साथा। बोलेउ वचन सुनहु नरनाथा॥
हम सबकहँ भोजन करवावो। ना तरु ब्रह्म शापतुम पावो॥
क्षामवन्त पाण्डव सब भयऊ। तब द्रौपदिहरि समिरनकरेऊ।
सुमिरत श्रीहरि आये जबहीं। क्षुधावन्त भाषेउ तिन तबहीं।
भोजन नेकु न कछु गृह अहई। श्रीपतिसों यह द्रौपदि कहई।
भोजन भाजन लैकर आई। यक्कु रञ्चक भाजी तहँ पाई॥
यदुपति कछु न भेजन अहई। लावो पात्र सो यदुपति कहई।
पुनि कृष्णहि अस वचन सुनाये। तीनोंलोक तृपित होइजाये।
मुनिगणकेर उदर भरि आये। श्रीहरि द्वारावती सिधाये॥
दुर्वासाकह भीम बुलाये। भोजन हेतु चलो मुनिराये॥
दुर्वासा तब वचन प्रकाशा। कबहुँ न होइ भक्तकर हासा॥

यह कहि गे दुर्वास ऋषि. हर्षित धर्मकुमार।
सूर्य विनय करि द्रौपदी, पूजा करि विस्तार॥

ह्वै प्रसन्न तब रवि वर दीन्हों। मागु मागु यह कहि सो लीन्हें
कहा द्रौपदी धर्म उपाई। अन्नपूरणा देहु गुसांई॥
ह्वै प्रसन्न रवि तहँ अति दीन्हों। धर्मराज कहँ हर्षितकीन्हों।
दिन तहँ ब्राह्मणविधिनाना। भोजनकरैं बहुत सुखमाना॥

साठि सहस तहँ मुनिवर आये। नितप्रति तहँ भोजनकरवाये॥
ऐसे धर्मराज तहँ रहई। परम हर्ष वन भीतर अहई॥

ब्राह्मण भोजन प्रतिदिन, वनमें धर्म भुवार।
पाण्डव विजय रहस्यहै, सुने पाप सब चार॥

आगे सुनु जनमेजय राजा। धर्मराज कीन्हेउ जसकाजा॥
सरवर एक सुभग वन रहेउ। जलकारण सहदेवतहँ गयऊ॥
जलमें एक जन्तु तहँ रहई। पायो शब्द वचन सो कहई॥
को तुम जीव कहौ अब भाई। कहौ सो सब ममकथाबुझाई॥
प्रति उत्तर सहदेव न दीन्हों। तुरतहि ग्राह लीलि तब लीन्हों॥
यहि प्रकारतहँ चारिउ भाई। लीले ग्राह सरोवर जाई॥
धर्मराज तहँ करो विलापू। पाछे गये सरोवर आपू॥
जल भाजन देखेउ लवराई। तटमें चरण चिह्न है भाई॥
अरु वक चिह्न पाइ लखिराजा। तब चलिगयो सरोवरकाजा॥
लखि भाजन राजन तब गहई। पावन शब्द ग्राह तब कहई॥

को जीवत को जागता, कहौ भेद समुझाइ।
कहे विनाहि सरोवर, कोउ न जल लैजाइ॥

धर्मराज तब मनमहँ जाना। यही जन्तु कछु करयो विधाना॥
धर्मराज तब कह समुझाई। जीव जौन सो सुनु मन लाई॥
शरणपाल ममता मन रहई। सत्य छोड़ि मिथ्या नहि कहई॥
विष्णुभक्ति आनै करि ज्ञाना। प्रेमभाव मनमें जो ठाना॥
जाके हृदय कपट है नाहीं। परसेवक सो है जग माहीं॥

जीवै सदा सो भक्त कृपाला । तू किमि जीवै सुनु चण्डाला ॥
कहे वचन अस धर्म्मभुआला । तब छोड़ेउ सहदेवै काला ॥
फेरि कह्यो को जीवत प्रानी । धर्म्मराज तब कहेउ बखानी ॥
सेवा मात पिताकी करई । सदा धर्म्म हिरदयमहँ धरई ॥
पाप कपट जिय कबहुँ न जाना । जीवै सदा भक्त भगवाना ॥
तू किमि जीवै जो निज चोरा । परो अधम काल के फेरा ॥
इतनी सुनेउ ग्राह पुनि जबहीं । नकुलहिकहँ छाँड़ेउपुनितबहीं
और सत्य अपने जिय माना । हैं यह धर्म्मराज जिय आना ॥

को जीवत है जगतमें, सुनिये धर्म्मकुमार ।
सुनुरे पापी पातकी, धर्म्मज वचन उचार ॥

अपनीदेह हाट करि जाना । करै योग विधि वेद प्रमाना ॥
ये षटचक्र विदारैं कोई । जीवै सदा भक्तजन सोई ॥
तूतो भक्ति धर्म्म नहिं जाना । सदा मृत्यु मुख सुनु अज्ञाना ॥
इतना सुनि त्यहि अर्ज्जुन वीरा । उगिलि ग्राह ह्वै हर्ष शरीरा ।
पुनि तब ग्राह कही यहबानी । धर्मराज सुनि कह्यो बखानी
जीवत योग देह मह होई । भावत कर्म्म धर्म्म नहिं सोई ॥
कामी क्रोध लोभ अहँकारा । कालरूप जाने संसारा ॥
जीवै जो यह भक्त सुजाना । जीवै सदा भक्त भगवाना ॥
तू किमि जिये मूर्ख अज्ञानी । परो नरक चौरासी खानी ॥
भीम उगिलेउ तिहिबारा । विनयकीन्ह तिहि बारम्बारा

सुनिये भूपति धर्म्मसुत, जानत सब संसार ।
छुवो जो चरण शरीर मम, तब होवै उद्धार ॥
परश्यो चरण भूप तेहिं जबहीं । दिव्य रूप राजा भे तबहीं ॥
धर्म्मराज पूंछेउ हरषाई । कौन कहो गति कैसे पाई ॥
तबहि राउसों कहेउ विचारी । सुनहु धर्म्मसुत विपति हमारी ॥
हमनो यही श्राप हित पाई । ताते तव लीलेउँ सब भाई ॥
सो जब तुमहि चीह्नि हम पायो । तुमहीते उद्धार करायो ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

सुनु राजा यह कथा सुहाई । जौन हेतु हम यह गति पाई ॥
मैं एह बार अहेरे गयऊं । कर्म्महीन तबहीं सों भयऊं ॥
एक कहार मृतक ह्वै गयऊ । ममसँग अपर न एको रहेऊ ॥
पर्हं भूलिके सो वनमाहीं । विपिन सघन तह सूझेउ नाहीं ॥
बर्षा होनते दुख मै लहेऊ । करत तपस्या ऋषि वन रहेऊ ॥
तौन महाऋषि जान न पाये । तिन्हैं कहार तहां धरि लाये ॥
आनि पालकी माहि लगाये । निजपुरको फिरि तब हम आये ॥
द्वार धरी पालकी आई । बैठ मुनीश्वर पुनि तेहि ठाई ॥
भोजन पान खबरि नहि लयऊ । बासर गयउ राति पुनि भयऊ ॥
वासर बीते रैनिभै, कीन्हेउँ मैं उद्धार ।
प्रथम पहर मैं भाषेऊं, को जानत संसार ।

जीवै सदा सो भक्त कृपाला। तू किमि जीवै सुनु चण्डाला॥
कहे वचन अस धर्मभुआला। तब छोड़ेउ सहदेवै काला॥
फेरि कह्यो को जीवत प्रानी। धर्मराज तब कहेउ बखानी॥
सेवा मात पिताकी करई। सदा धर्म हिरदयमहँ धरई॥
पाप कपट जिय कबहुँ न जाना। जीवै सदा भक्त भगवाना॥
तू किमि जीवै जो निज चोरा। परो अधम काल के फेरा॥
इतनी सुनेउ ग्राह पुनि जबहीं। नकुलहिकहँ छाँड़ेउपुनितब॥
और सत्य अपने जिय माना। हैं यह धर्मराज जिय आना॥

को जीवत है जगतमें, सुनिये धर्मकुमार।
सुनुरे पापी पातकी, धर्मज वचन उचार॥

अपनीदेह हाट करि जाना। करै योग विधि वेद प्रमाना॥
ये षटचक्र विदारैं कोई। जीवै सदा भक्तजन सोई॥
तूतो भक्ति धर्म नहिं जाना। सदा मृत्यु मुख सुनु अज्ञाना॥
इतना सुनि त्यहि अर्ज्जुन वीरा। उगिलि ग्राह ह्वै हर्ष शरीरा॥
पुनि तब ग्राह कही यहबानी। धर्मराज सुनि कह्यो बखानी॥
जीवत योग देह मह होई। भावत कर्म धर्म नहि सोई॥
कामी क्रोध लोभ अहँकारा। कालरूप जानै संसारा॥
जीवै जो यह भक्त सुजाना। जीवै सदा भक्त भगवाना॥
तैं किमि जिये मूर्ख अज्ञानी। परो नरक चौरासी खानी॥
नत भीम उगिलेउ तिहिबारा। विनयकीन्ह तिहिं

सुनिये भूपति धर्म्मसुत, जानत सब संसार।
कुवो जो चरण शरीर मम, तब होवै उद्धार॥
परस्यो चरण भूप तेहि जबहीं। दिव्य रूप राजा भे तबही॥
धर्म्मराज पूंछेउ हरषाई। कौन कहो गति कैसे पाई॥
तबहि राउसों कहेउ विचारी। सुनहु धर्म्मसुत विपति हमारी॥
हमतौ यही शाप हित पाई। तातें तव लीलेउँ सब भाई॥
सो जब तुमहि चीन्हि हम पायो। तुमहीते उद्धार करायो॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

सुनु राजा यह कथा सुहाई। जौन हेतु हम यह गति पाई॥
मैं यह वार अहेरे गयऊं। कर्म्महीन तबहीं सों भयऊं॥
एक कहार मृतक ह्वै गयऊ। ममसँग अपर न एकौ रहेऊ॥
परेउँ भूलिकै सो वनमाहीं। विपिन सघन तहं सूझेउ नाहीं॥
कर्म्म हीनते दुख मै लहेऊ। करत तपस्या ऋषि वन रहेऊ॥
तौन महाऋषि जान न पाये। तिन्हैं कहार तहाँ धरि लाये॥
आनि पालकी माहि लगाये। निजपुरको फिरि तब हम आये॥
द्वारे धरी पालकी आई। बैठ मुनीश्वर पुनि तेहि ठाई॥
भोजन पान खवरि नहि लयऊ। वासर गयउ राति पुनि भयऊ॥
वासर बीते रैनिभे, कीन्हेउँ मैं उच्चार।
प्रथम पहर मैं भाषेऊं, को जागत संसार॥

तब मुनि कही तहाँ यह वाता। जन्ममृत्यु दुखसुख सँग ताता॥
क्षुधा तृषाते नित दुख सहई। करत बंध सो सुख नहि लहई॥
जानै यह जग दुःखसमाजा। सो जागै सब सोवत राजा॥
दूजे यहै चलाई वाता। जागै कौन कहो सुनि ताता॥
पुनि बोल्यो मुनि बात प्रमाना। योगी योग करै नित ध्याना।
काम रु क्रोध लोभ अहँकारा। बसै देहमें सब बटपारा॥
सदा ज्ञानते रहै सचेता। सोवत जागत रहै सो चेता॥
तीजे पहर पूछ मैं आही। सो सुनि बोले पुनि मुनिपाही॥
जो कोइ ध्यान करै जगमाहीं। ताको संकट परै न काहीं॥
दिव्यज्ञान करि हरिको जानै। हिंसा कपट हृदय नहि आनै॥
जो दुःखी सो संशय भरई। परवश ह्वै प्रचार सो करई॥
सो जागै सब सोवैं राजा। सोवै खोवै आपन काजा॥
चौथे पहर कहेउ को जागे। क्रोधित मुनि बोले सो आगे॥
सुनु मूरख जागै जो ज्ञानी। तू किमि जागै गृह अभिमानी
ग्राह होय राजा तैं जाई। भूप शाप ऋषिको यह पाई॥
तब मैं विनती कीन्हेउं, भा बड़ दोष हमार।
कीजै दया महामुनि, अब हमार उद्धार॥
बोले मुनि तब सहित कृपारा। द्वापर युग उद्धार तुम्हारा॥
पाण्डुपुत्र अइहैं वन माहीं। धर्मपुत्र धर्मी मन चाहीं॥
से अङ्ग होव उद्धारा। पुनि दीन्ह्यो वर याहि प्रकारा॥
राजा तव दर्शन पाई। मम उद्धार भयो अब आई॥

ाहि प्रकार ते पायउँ शापू। मेटेउ शाप कृपा करि आपू ॥
स्तुति करि राजा दिवि गयऊ। धर्म्मराज मन हर्षित भयऊ ॥
ाइन सहित हर्ष हिय भयऊ। तेहि थल वसे धर्म्म सुख लहेऊ॥
ुनो भूप जनमेजय बाता। सो जड़भरत हतो मुनिताता ॥

रहे हर्षि सो तेहि वन, परम मनोहर ठाय।
सहित द्रौपदी राजतहँ, अरु सब चारिउ भाय ॥

ब सो द्रुपद राज भगवाना। धृष्टद्युम्न सँग करेउ पयाना ॥
मलन हेतु सो वनमहँ आये। बहुविधि उन्हें कृष्ण समुझाये ॥
ुखसुख यह विधि कर तव राजा। हस्तिनपुर कर राज समाजा ॥
ाहि विधि मिले तिनहिं सो जाई। सहित द्रौपदी पाँचौं भाई ॥
ौम्यऋषिहिमिलिबहुसुखसाना। तबहिद्रुपदगृह कियोपयाना ॥
ाडव वसहि जौन वनमाहीं। काम्यक वन उत्तम है जाहीं ॥
हि दिन रहे तौन वनमहहीं। चारिउ बन्धु धर्म्मसुत रहहीं ॥

बहु दिन काम्यक वनहिंमें, रहै पांडु तहँ आइ।
ह्वै उदास पुनि धर्म्मसुत, छाँड़ो सो वन जाइ ॥

ावहि द्वैत वन पांडव गयऊ। मार्कण्डे मुनि दर्शन भयऊ ॥
ारद आदि सुने यह तबहीं। पाण्डव गये द्वैत वन जबहीं ॥
हा वसहि बहु द्विजय समाजा। पाण्डव शोक मिटैबे काजा ॥
ो सम्वाद बहुत विस्तारा। कछु संक्षेप सुनौ सुखसारा ॥
से द्वैत वन पाण्डव आई। तहाँ द्रौपदी बात चलाई ॥
हि वचन तब धर्म्म नरेशहि। विपिन वास बहु सहे कलेशहि ॥

पापी दुर्योधन जग जाना। शकुनी कर्ण दुशासन नाना॥
अन्ध नृपति कछु कहो न आई। सुनो धर्मसुत पाँचों भाई॥
हमहिं सहित उन वनहिं पठाये। दुर्योधन छल ख्याल न लाये॥
नेकु दया हिरदे नहिं लायो। कपट अच्छ करि वनहि पठायो॥

आपु सहेउ बहु दुःख वन, हमें सहो नहि जाइ।
दुर्योधन अपकारि सो, रानी कह्यो बुझाइ॥

नाना यज्ञ धर्म बहु कीन्हा। ताकर बहुफल विधि यह दीन्हा॥
भीम वीर अर्जुन धनुधारी। पलमा करें सकल संहारी॥
ये तुम्हरे वाचा के कारन। सकें न कौरव दल संहारन॥
आज्ञा देउ सुनो हो राऊ। मारें शत्रु देश तव पाऊ॥
क्षमा केर अवसर अब नाहीं। छिपिके रहब कहाँधौं जाहीं॥
क्षमाके समय क्षमा है भारी। क्रुद्ध समय कीजै हठि रारी॥
राजधर्म क्षत्रीके कर्मा। मारु शत्रु जिन कीन कुकर्मा॥
द्रौपदि केर वचन ये सुनिकै। बोले वचन धर्म मन गुनिकै॥
कहे वचन राजा तिहि ठांई। धर्म्महि सदा वेदमो आई॥
बारह संवत निजसुख हारा। चित्त क्षमा तेहि हेतु हमारा॥

किये क्रोध सम पाप नहिं, राजा कह्यो बुझाइ॥
क्रोध किये पुनि धर्म्म नहिं, भाषेउ पाण्डवराइ॥

दान धर्म्म सब कालहिं करई। परै दुःख तेहि जनि ꣲ ꣲ ꣲ
सब घटमें पुरुष प्रधाना। दुखसुख सब समान करिजाना॥

क पुरुष है सख दुख दाना। दूसर अहे न सुनु मम बाता॥
नत भीम क्रोधित ह्वै गयऊ। धर्म्मराज सन बोलत भयऊ॥
ोपै धर्म महासुख पाये। तौ वनको सहेत केहि आये॥
ौन धर्म्म महँ वहु सुख पाये। देखत देखत राज्य गँवाये॥
ौन धर्म दुर्योधन राऊ। राज्यको सुख सो सकल बनाऊ॥
ाज्ञा देउ वधौं सो भाई। फिरि पीछे लै जाउँ लेवाई॥
ुम्हहिं राज्य वैठारहु राजा। ऐसो जाइ करौं सब काजा॥
र्जुन धनुष खैंचि शर धारैं। इक च्णमें कुरुराज सँहारैं॥

तुम्हें हीन वल कौरवा, जानैं अपने जीव।
आज्ञा देवहु धर्मन्टप, कह्यो कोप करि भींव॥

ीम वचन सुनि राजा कहई। जुआं खेल हारे सब अहई॥
ाचा हारि करौ सत कर्म्मा। पीछे युद्ध कीजिये धर्म्मा॥
र्म्म न छाँड़व जबतक प्राना। धर्म्मते राज्यवृद्धि जगजाना॥
ाही समय व्यास तहँ आये। हर्ष हृदय पांडव समुझाये॥
तब इक मंत्र व्याससुनि कहेउ। सुनिकै धर्म्मराज सुखभयऊ॥
पुनि यह मंत्र जपो तुम जाई। पारथते तब कहेउ बुझाई॥
देउ मंत्र जपतै वर पैहौ। युद्ध जीति पृथ्वीपति ह्वैहौ॥
इन्द्र वरुण यम शंकर देवा। होत सबै परसन्नहिं सेवा॥
यह कहिकै ऋषिव्यास सिधाये। काम्यकवन पुनि पांडव आये॥
काम्यक पुनि भयउ प्रकाशा। पाँचौ बन्धु द्रौपदी पासा॥

यहि प्रकारते बनहिंमहँ, रहे पाण्डुसुत आनि।
जनमेजय नृप आगेह, वैशम्पानि बखानि॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

सुनु राजा रहें जौन प्रकारा। चारिउ बांधव धर्मकुमारा॥
केतिक दिवस रहे तिहि ठाहीं। इकदिन पारथ नृप सो का
आज्ञा होइ जाउँ मैं तहँवाँ। गौरीपति के दर्शन जहँवाँ।
आज्ञा पाइ चरण छुइ राई। चढ़ो हिमाचल पर्वत जाई॥
व्यास मंत्र जो विद्या देऊ। तौन मंत्र जपि ध्यान लगेऊ॥
फल औ मूल भषे त्रयमासा। पुनि दुइमास भयो उपवास
शंकर तब प्रसन्न ह्वै आये। पारथसों इमि वचन सुनाये॥
काहे तप कठोर तनु त्रासा। मन इच्छा सों करो प्रकाशा।
जो वांछा उर अहै तुम्हारे। होइ सिद्धि सुनु वचन हमारे
भये शम्भु कहि अन्तर्धाना। तेहि बन पारथ पुनि तप ठान

अन्तर्द्धान महेश भे, अरु अर्ज्जुन वर पाइ।
ह्वै प्रसन्न तप करत भे, शंकरसों मन लाइ॥

तप साधत बीते कछु काला। और चरित सो सुनौ भूवाला
[illegible] ॥

॥

॥

अहै नाम मुक दैत्य कुमारा। शूकर रूप घोर पुनि धारा ॥
पारथ के आगे से आई। रूप किरात महेश्वर जाई ॥
चला दैत्य तारकके काजा। करो विचार भूतके राजा ॥
गर्ज्यो शूकर पारथ आगे। ध्यान छांड़िके पारथ जागे ॥
धनुष बाण पारथ कर गहेऊ। तब किरात अर्जुनसन कहेऊ ॥
बहुत परिश्रम करि मैं आयों। बड़ो पराक्रम करि मै पायों ॥

तेहि चाहत है मारने, अरे मूढ अज्ञान।
अर्ज्जुन कहो न मानि तब, हन्यो तासु शिर बान ॥

कोलरूप तजि दानव भयऊ। तब किरात मन क्रोधित भयऊ ॥
मारेसि कोल आपने हाथा। पठवों तोहिं कोलके साथा ॥
यमपुर अबहिं पठावों तोहीं। तैं अब वीर विरोधेसि मोहीं।
जो शक्ती हैं तनु तुव हारी। ताते अस्त्र देहु परहारी ॥
सुनिकै क्रोध धनञ्जय ठाना। पुनि किरातपर वर्ष्यो बाना ॥
एकौ बाण न भेदेउ अङ्गा। विस्मय करि पारथ मनभङ्गा ॥
तब हसि शङ्कर वचन बखाना। और बाण तोहि करौं निदाना॥
अर्ज्जुन धनुष हन्यो वरजोरा। टूट्यो अस्त्र तौन पुनि घोरा ॥
अर्ज्जुन कह्यो किरात न होई। होय विष्णुको शङ्कर सोई ॥
माया वपु करि वञ्चेउ मोहीं। भयो चकित चिन्तामन सोही ॥

खड्गघाव जो मारेऊ, सो निष्फल ह्वै जाय।
तबहि वृक्ष यक लीन्हेउ, पारथ क्रोधितधाय ॥

शङ्कर भूत बाण अस मारा। काटि वृक्ष भूतलमें डारा ॥

तब पारथ मुष्टिक अस मारा। पौरुष करि अर्ज्जुनहिं प्रहारा॥
सात दिवस ऐसे रण कीन्हा। दिन अरु राति सांस नहिं लीन्हा॥
शङ्कर पुनि तहँ हाथ पसारा। अल्प तेजको पारथ मारा॥
लागत भूमि परेउ मुरझाई। छणक एक पुनि चेत सो आई॥
रहुरहु पुनिकहि उठ्यो प्रचारी। तब मो हृदय निहारि निहारी॥
प्रथमहिं पूज्यो शङ्कर जोई। पारथ नाहिं विलोक्यो सोई॥
सो माला हर गरे निहारा। देखि चकित भो पाण्डुकुमारा॥
निश्चय जान्यो शङ्कर होई। परेउ दौरि चरणनपर सोई॥
क्षमा करौ यह चूक हमारी। विन जाने कीन्हो मैं रारी॥
तब शङ्कर प्रसन्न चित भयऊ। इनकरि त्रिनै परम सुखदयऊ॥
मैं प्रसन्न हरि हर कहि दीन्हा। तब अर्ज्जुन प्रनाम सो कीन्हा॥
शची फाल्गुन नाम जो दीन्हो। नैना दिव्य भाल जो कीन्हो॥
औरो कहे वचन परमाना। अजय जगतमें हो निर्वाना॥
तोसों रण न जीत मैदाना। ऐसी शक्ति काहिके प्राना॥
देव दुष्ट गत पायेउ जाहा। सबै दुष्टको मारेउ ताहा॥
नाना अस्त्र इन्द्रते पाये। देव सभामें हर्ष उठाये॥
नाना देव अस्त्र वर ताहां। इन्द्रलोक मों पारथ जाहां॥
इन्द्र वरुण यम देव हैं नाना। अस्त्र अनेक चहै मति माना॥
यह स्वरूप पारथ तहं करई। वैशम्पायन राजही कहई॥

पशुपतास्त्र मन्त्रहि सहित, हर अर्ज्जुन कहँदीन्ह।
हर्षित गात धनञ्जय, चरणकमल गहिलीन्ह॥

तुमसँग युद्ध पार को पाई । ऐसी शक्ति न काहू भाई ॥
अस्त्र देइके पशुपति नाथा । अन्तर्द्धान भये गणसाथा ॥
हर्षवन्त कह पारथ बैना । मैं शङ्कर देख्यों भरि नैना ॥
धन जीवन जग आज हमारा । जो शङ्कर निज नैन निहारा ॥
पारथ बहुत हर्ष जिय पाये । तौने समय देव सब आये ॥
इन्द्रआदि सँग सब दिगपाला । पारथ ऊपर भयो दयाला ॥
नर नारायण सुरपति कहई । तुम नररूप जन्म सुत अहई ॥
भूमि सहै नहिं खलौ भारा । तेहि कारण अवतार तुम्हारा ॥
जेहिविधि अस्त्र जौन हैं जेते । भिखै देव हम तुमकहँ तेते ॥
यह कहि शक्र अस्त्र सब दीन्हें । मन्त्रन सहित समर्पण कीन्हें ॥

कालदण्ड यम दीन्हेऊ, वरुण दियो जलबान ।
वज्रदण्ड इन्द्रादिदे, हर्षित भो बलवान ॥

जब उपकार अग्निको कीन्हों । पावक अस्त्र तहाँ बहु दीन्हों ॥
ममअर्चि गाण्डिव धनु लीन्हों । नन्दिघोषरथ हुतभुक दीन्हों ॥
आपन अस्त्र यक्षपति दीन्हों । तबहीं इन्द्र कञ्चुकशिष दीन्हों ॥
मातलि साथ स्वर्ग कहँ ऐहो । अस्त्र अनेक तहाँ तुम पैहो ॥
यह कहिकै सुरपति तब गयऊ । रथसह सूत उपस्थित भयऊ ॥
देवसभा जब पारथ गयऊ । नाना अस्त्र इन्द्र तब दयऊ ॥
बहुविधि अस्त्र सिखाये ताही । इन्द्रलोक पारथ जहँ आही ॥
देव अस्त्रपढि सब विधि जानी । सुरपति जिष्णु परमसुखमानी

सिखै अस्त्र बहु पारथहि, देवपुरीमहँ जाय।
चिन्ता करत युधिष्ठिर, पारथ को हित पाय॥

कौने देश धनञ्जय गयऊ। चारिउ बान्धव शोचत भयऊ॥
कीन्हेउ शोच द्रौपदी रानी। तबहिं धर्मसुत कह्यो बखानी॥
विद्या महा व्यासते पायउ। तीने कारण वनहि सिधायउ॥
गौरीपति अवराधन गयऊ। कौन हेत जिय विस्मय भयऊ॥
हर पूजाते संशय नाहीं। है कल्याण लोक तिहुँ माहीं॥
होउ प्रसन्न शोच केहि काजा। इमि सबको समुझावत राजा॥
तप कारण पारथ तहँ जाई। सुनत भीम तब कह्यो रिसाई॥
जो वियोग पारथ सँग होई। प्राणत्याग करिबो सब कोई॥
प्रथमहिं आज्ञा देतेउ राजा। सहतेउँ कत यह दुखहि समाजा॥
क्षमा किये राजा कह पैये। दिनदिनदुखबहुविधिकिमिसहिये॥

राज्य देश सब छूटेउ, राव तुम्हारे हेत।
देहु रजायसु राज तुम, अबते होउ सचेत॥

मरिये शत्रु देश तब पाई। वनको दुःख सहो नहिं जाई॥
बारह वर्ष सहो दुख भारा। एक वर्ष अज्ञात भुवारा॥
अर्जुन वीर बड़ो धनुधारी। और सहायक श्रीवनवारी॥
राव तुम्हारी आज्ञा पावौं। दुर्योधन शतबंधु नशावौं॥
भीमके वचन श्रवण सुनि लीन्हें। धर्मराज उत्तर पुनि दीन्हें॥
भीम जो वचन बखानौ। दोष हमार सत्यकरि जानौ॥

सुनि मम वचन रहो अरगाई । पीछे वन्धु करो मनुसाई ॥
अब यहि समय रहो चुपखाई । तबै अपृवऋषितहँ चलिआई ॥
धर्मराज उर आनँद छाये । आदर देइ आसन बैठाये ॥
कहेउ आप सब वर्णि कलेशा । महादुखित होइ वरणि नरेशा ॥

तजेउ देश बहुदुख सहेउ, दुर्योधनके काज ।
आदि अन्त मुनि आगे, वर्णो दुख सब राज ॥

सुनिकै तव दुख कहो बखानी । मिटै न कर्म्म लिखा सुनुवानी ॥
तुमतो बड़ो दुःख नृप पाये । राज्य छोड़ि वनवासहि आये ॥
नल दुख सुनो मनहि धरि राजा । घटै पाप बहु सुक्र समाजा ॥
पांसे खेलि हारि सब देशा । रानी सँग बन कीन्ह प्रवेशा ॥
एकवस्त्र दोनों ढिग रहेऊ । सोऊ तजि राजा वन गयऊ ॥
पायउ सो दुख वहुवन जाई । छुटयो दुःख भे राजा आई ॥
ताको कहउँ सहित विस्तारा । सावधान होइ सुनो भुवारा ॥
तासु दुखहि सुनिहौ हो राऊ । सुनत प्राण धीरज ना राऊ ॥
पायउ पतिव्रता दुख जेता । तोम्पर कहो जाइ नहिं तेता ॥

सुनत दुखहि बहुनृपतिके, पारथ वीर न होइ ।
धर्मराज के आगे, कहत अपृव ऋषि सोइ ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

सुनु नृप है नैषध इक देशा। तहँ पुनीत नल नाम नरेशा॥
बहु विस्तार कहो नहिं जाई। लघुकरि ताहि कहौं समुझाई॥
इक दिन राव सरोवर जाई। पञ्जात हंस देखि बहु पाई॥
तबहीं हंस पकरि नृप जाई। रोइ हंस तब नृपहिं सुनाई॥
राजा वेगि छाँड़िदे मोहीं। कन्या एक मिलावों तोही॥
देश विदर्भ भीम नृप रहई। कन्या एक तासु गृह अहई॥
दमयन्ती विधि रूप सँवारी। देखि गिरा रति रूप निहारी॥
सुनतहि राज हर्ष मनलीन्हा। तुरतहि छाँड़ि हंसकहँ दीन्हा॥
राजा गे अन्तःपुर माहीं। देश विदर्भ हंस उड़ि जाहीं॥
उतरो जाइ हंस सो तहँवाँ। पारिजात फूले बहु जहँवाँ॥

उत्तम सरवर देखिकै, उतरो हंस विचारि।
विधि रचना सबसखीसँग, आई राजकुमारि॥

देखि हंस कहँ राजकुमारी। गहन हेत तब बुद्धि विचारी॥
तब वह हंसरूप अति धारेउ। निजवश कन्याको मनकारेउ॥
सुनु दमयन्ती बात हमारी। नैषध देश महीपति भारी॥
नल राजा उपमा को कहई। देखत रूप मोहि जग रहई॥
तब यह सफल तोर है रूपा। जो पति पावो नलसो भूपा॥
सुनि दमयन्ती हृदय जुड़ाना। हंसवचन सुनि हरषित प्राना॥
कह दमयन्ती करहु उपाई। जाते होइ मोर पति राई॥
स्वयम्बर उनकहँ वरिहौं। अरु काहूको चित्त न धरिहौं॥
वचन यह कहेउ बुझाई। जात अवहि मैं कहौं उपाई॥

उड़ो हंस तव पंख पसारी । देखि रही तव राजकुमारी ॥

हंस देश नैषधमहँ, राजहि कहा बुझाइ ।

कन्या मन तुमसों बसेउ, करहु हर्ष मनराइ ॥

राजा सुनत हर्ष मन कीन्हों । पूरवकथा कहन मनलीन्हों ॥

देखि सुताकर चितहि उदासा । रानी नृपसों वचन प्रकासा ॥

राजा सन रानी कह बाता । कन्या याग स्वयम्बर गाता ॥

सुनत वचन राजा मन भाये । देश देश तव विप्र पठाये ॥

राजा भीम स्वयम्बर कीन्हों । भूपन सबहि निमन्त्रण दीन्हों ॥

नल राजा कहँ नेवत पठावा । करि निज साज तुरङ्ग सिधावा ॥

नारद सुरपुर बात जनाये । चारों दिगपति सुनते धाये ॥

इन्द्र वरुण यम पावक अहई । चारिउ देव चले सुनि कहई ॥

मारग मांझ मिले नल राई । सुरपति वचन कहो समुझाई ॥

हम सब जात स्वयम्बर काजा । हँसिकै वचन कहो सुरराजा ॥

हमरे हेत दूत ह्वै जाहू । दमयन्ती हमसों करि ब्याहू ॥

चारि जने हम इक मनमाना । सुनि नल राजा बहुत लजाना ॥

बोले नल नृप मन्दिरे, रहैं बहुत रखवार ।

राजसुता पहँ कैसही, जाइ वचन उच्चार ॥

इन्द्र कहो मम आज्ञा होई । तुमहि जात देखि है ना कोई ॥

फिरि मन दुरित चले नृप तहँवाँ । राजकुँवरि अन्तःपुर जहँवाँ ॥

दूनों जन ते दरशन भयऊ । दुवो नृप मूर्च्छि तहँ गयऊ ॥

सखी धाइ तव शीतल नीरा । सींचेउ तव जल दुवो शरीरा ॥

दूनों चेत भये मन माहा। तब परचा दीन्हों नरनाहा॥
जौन प्रकार इहाँको आये। आवत काहु न देखन पाये॥
इन्द्र वरुण यम पावक आये। तेइ दूत करि मोहि पठाये॥
चारो जन कहँ मनमहँ धरहू। एक जनेकह स्वामी करहू॥
लज्जित ह्वै दमयन्ती कहई। देव नाग नर चित्त न अहई॥
देवलपति हम तुम कहँ जाना। देवनाग नहि कोउ मनमाना॥

जा दिन हंसहि रूपकह, तादिन मैं पतिजान।
देव नाग नर गंधरव, हृदय और नहि आन॥

राजा कहेउ दोष मोहि होई। कहैं देव हमहीं सब कोई॥
दूत ह्वै आपन काज सवाँरा। देव अवज्ञा दुख है भारा॥
कह कन्या रूप देवन साथा। पठयहु तुमहि होन नरनाथा॥
जिय अपने मन तुमहीं आनो। तुम तजि कैसे दूसर जानो॥
यह कहि कन्या न्रपहि बुझाये। देवन पै नल राजा आये॥
देव सबै तब पूछन लीन्हों। तबहीं नल यह उत्तर दीन्हों॥
मोहि छाँड़ि मन और न माना। मैं गुण रूप तुम्हार बखाना
सुनत देव से अन्तर्द्धाना। राजसभा नल करेउ पयाना॥
देश देश के राजा आये। अद्भुत भूषण रूप बनाये॥
चारिउ देव भये नल रूपा। लखि नहि परे सो एक स्वरूपा।

बैठ जहाँ नलराजा, सब कोर करि शृङ्गार।
सँगप्रोहित करमाललै, सभा मांझ पगुधार॥

सब कर नाम बताये। नल राजा कर नाम सुनाये॥

न्या देखि तहँा यह रूपा । पांचो जने बैठ नल रूपा ॥
विनय करत तब राजदुलारी । हे देवहु मैं शरण तुम्हारी ॥
निषधपति है स्वामी मोरा । करौ प्रकट पद वन्दत तोरा ॥
सुनिकै विनय दया सुर कीन्हें । आपन रूप बहुरि धरिलीन्हें ॥
चीन्हों नल तब राजदुलारी । जयमाला ताके उर डारी ॥
राजा सत्य वचन कह सोई । देव न तजि जनि हम मनमोई ॥
यहै प्रतिज्ञा सत्य हमारी । क्षण यक तुमहि करब नहिं न्यारी ॥
दीन्ह देवपति यह वरदाना । इन्द्रकहे सम पवन पयाना ॥
सुमिरत तुम ढिग तुरतहि ऐहौं । याते सदा सुकृत तुम देहौं ॥

पावक अग्नि शक्तिदै, वरुण दिये जलवान ।
धर्म्मविषे रति यम दई, से सब अन्तर्द्धान ॥

देव सबै वर देकर गयऊ । आशा भङ्ग सकलनृप भयऊ ॥
यहि प्रकार दमयन्ति विवाही । देवमन्त्र करि जो विधि गाई ॥
दाइज भीम नृपति बहुदीन्हों । है कैमिदाचलनचित कीन्हों ॥
बाजन शब्द मनो वन गाजा । नगर आपने आयउ राजा ॥
ऐसे आइ बसे राजधानी । नल राजा दमयन्ती रानी ॥
कैतिक दिवस बीति इमि गयऊ । नाना केलि रङ्ग रति भयऊ ॥
नृपके पुत्र प्रकट इक भयऊ । इन्द्रसैन अस नाम सो कहेऊ ॥
कन्या एक भई पुनि ताके । बहुतक हर्ष भई मन वाके ॥
ऐसे रँग रस राजा कीन्हों । इन्द्रसरिस उपमाकहँ दीन्हों ॥
धर्म्मवन्त नैषध पति राजा । पालै प्रजा पुत्रके काजा ॥

राज्य करै नल राजही, करिवहु धर्म्म प्रकाश।
दमयन्ती अरु राजा, पूजेउ दूनों आश॥

आगे सुनो धर्म्म भुव राऊ। देवलोक कर करेउ उपाऊ॥
बैठे सभा देवता जाई। कलियुग बैठ तहाँ सुखपाई॥
इन्द्र तहाँ इक बात चलाई। दमयन्ती राजा नल पाई॥
देवन केर करेउ अपमाना। नलराजाको पति करि जाना॥
सुनि यह कलियुग उठा रिसाई। बोलेउ वचन क्रोधजिय लाई॥
नलके निकट जात सुरराई। राज छोड़ावउँ निज वरिआई॥
कलियुग द्वापर दोनों भाई। पहुँचे नगर नैषधहि आई॥
द्वापरते कलि कह मुसुकाता। होइ अच यह सुनुमन बाता॥
हम अब विप्र रूप ह्वै जैये। चलिये अब पुष्करसों कहिये॥
पुष्करसों यह तब करिबाता। तुम अब जीतो नल कहँ ताता॥

जीति लेहु नलराजहि, कह कलियुग समुझाइ।
बैल रूप तब कलियुग, कहेउ तासु ते आइ॥

धरि यह रूप उन्हे समुझाई। नलपहँ जाउ स्वरूप बनाई॥
तहाँ पुनीत रहे नल राई। तिनके वदन प्रवेशहु जाई॥
एक समय वनमें नल राजा। तृषा लागि जल लीन्हेनि राजा॥
यहि प्रकार तब अवसर पाये। नल शरीरमहँ कलियुग आये॥
पुष्कर गे तब नलके पासा। जाइ करेउ यह वचन प्रकासा॥
हेतु आयउँ तुम पाई। आजु दुवो जन खेलिय भाई॥
राजाके मनमहँ आई। खेलन हेतु सो करेउ उपाई॥

दमयन्तीके वचन न भाये । नलराजा सब द्रव्य गँवाये ॥
सोन रूप जो लाव भुवारा । धरत दाउँ पलमहँ सबहारा ॥
गज तुरङ्ग हारे सब राऊ । एकौ वार न जीत उपाऊ ॥

बहुत दाँव नल लायऊ . हारेउ सब भण्डार ।
पुरजन मन्त्री सङ्ग ले, आये नल दरबार ॥

रानी अरु मन्त्री समुझाये । राजाके कछु मनहि न आये ॥
रानी कह सब हारे राजू । खेल न अब उठि चलु नलराजू ॥
रोइ कही छूटत सब देशा । झूठ वचन नहिं मानु नरेश ॥
एक सखी बोली तेहि पासा । पठवो पुत्र सासु के पासा ॥
वह सो आइ यहाँ ले जैहै । सुत कन्या विदर्भ पहुँचैहै ॥
कहियो और बात कछु नाहीं । पढ़न हेतु पठये तुम पाहीं ॥
सुत कन्या तब रथ बैठावा । सारथि देश विदर्भ पठावा ॥
पहुँचे वेगि सारथी तहँवां । देश विदर्भ भीम नृप जहँवां ॥
दमयन्ती पठये ले साथा । सुत प्रतिपाल करौ नरनाथा ॥
खेलो जुआँ कहेउ सो गाथा । चिन्तावन्त भये नरनाथा ॥

यह कहि सारथि तब चलो, राजहि कियो जोहार ।
बहुत देश तहँ देखिकै, अवध नगर पगु धार ॥

है ऋतुपर्णभूप के नाऊं । हय सारथी रहे तेहि ठाऊं ॥
राज्य सकल तब पुष्कर जीता । यह कलियुग कीन्हेउ विपरीता ॥
पुष्कर कहो रहो कछु अहई । दमयन्ती लावहु यह कहई ॥
सुनतराउ भो क्रोध अपारा । रानीके आभरण उतारा ॥

हारे वस्त्र आभरण जेते । राजस्थान आदि पुर तेते ॥
सर्ब्बस हारि उठे नल राजा । पांसा खेले भयउ अकाजा ॥
दमयन्ती जानी यह राजा । कियो चलन वनकेर समाजा ॥
रोइ चली दमयन्ती रानी । सो करुणा किमि करौं बखानी ॥
राज्य तजा वनवास सिधाये । ताकी करुणा जाति न गाये ॥
दासी दास बहुत बिलखाहीं । दमयन्ती नृप पाछे जाहीं ॥
चले जात नृप राजसों, पुरजन धीर धराय ।
दमयन्ती नृप ऊपमा, रामचन्द्र सो जाय ॥
पुष्कर दूत फिरे सब गाऊं । नलराजा कर लेव न नाऊं ॥
उनहिं कोउ जो भोजन देहीं । पकरि ताम कारागृह देहीं ॥
नगर लोग नृप पाछे जाहीं । भयवशहोइबहुतबिलखाहीं ॥
बाहर नगर रहे दिन तीनी । भोजन खबरि न केहू लीनी ॥
क्षुधावन्त तब राजा भयऊ । पक्षि एक नहँ देखत भयऊ ॥
सुनु रानी यह वचन हमारा । यह पक्षी है आजु अहारा ॥
आपन वसन तासु पर डारो । सो पक्षी लै गगन सिधारो ॥
गा अकाश तब बोल्यो बयना । हमैं न अब तुम देखौ नयना ॥
खेलि अक्ष सब राज्य गवांवा । वसन हीन तबहीं सुखपावा ॥
राजासुनि यह चकित भयऊ । बसन लिये वह पक्षी गयऊ ॥
राजा कह रानी सुनहु, क्षुधावन्त भे प्रान ।
परमहंस यह देहते, चाहत कियो पयान ॥
पहिर्यो नरनाहा । रानी सङ्ग चले गहिबाँहा ॥

मयन्ती धीरज धरि कहई। दुखसुख नारि पुरुष सब सहई॥
ले राह राजा अरु रानी। द्वै राहैं तब आइ तुलानी॥
त्त्याद्दिशि इक मारग जाई। रानीसन बोले नलराई॥
सर मारग तुनु सनलाई। देश विदर्भ सूध यह जाई
य पितागृह सुख तुम रहऊ। संग हमारे दुख किमि सहऊ॥
नी सुनत भरे जल नयना। रोदनकरति कहति असबयना॥
न्त चित्त है तुम थिर नाहीं। ऐसे वचन कहत मुख माहीं॥
तिके दुखलों तिय दुखहोई। पितुको राज्य काम केहि सोई॥
ो तुम दुख वन सहो अपारा। तो पति सुख हमार सब छारा॥

कुण्डिनपुर कह चलो न्टप, जो मनमाने कन्त।
तुमकहँ देखत भीमन्टप, करि हैं प्रेम अनन्त॥

ोले राव भीम न्टप पाहीं। ऐसे रानि जाब हम नाहीं॥
मको पन्थ देखावत कन्ता। कौनकाज पितु राज्य अनन्ता॥
ले जात वन गहन गँभीरा। रानी सहित धर्म न्टप धीरा॥
क वृक्षतर वनहिं मँझारी। सोयउ राउ सङ्ग लै नारी॥
खि राउ उरमें बह सोगा। देखो विधि कीन्हों कस योगा॥
विश्वभिजिनकहँ देखेउ नाहीं। सो मम सङ्ग फिरत वनमाहीं॥
रे सङ्ग विपिन दुख पैहैं। बहु सन्ताप कहांलों सैहैं॥
ाउँ याहि तजि जो वनमाहीं। आखिर पिता भवन सो जाहीं॥
यह विचार न्टपके मन आये। कलियुग हृदय धर्म उपजाये॥
सन अद्धं लीन्हों पुनिराजा। दयाहीन कलिके वश साजा॥

छण आवै नल निकटही, छणक चलै तजिमोह।
करै विचार अनेक विधि, कबहुँ करै मन छोह॥

भीमसुता तजि चलिये राजा। बहु रोदनकरि चले अकाजा॥
गये राव मन बहुदुख पागी। भीमसुता तहिअवसर जागी॥
चहुँदिशिचितैचकितचितभयऊ। हाहा करि बहु रोदन ठयऊ॥
अहा स्वामी कन्त हमारे। तजिमोकहँ बन कहाँ सिधारे॥
प्रथमहि कहों न छाँड़ब तोही। जबलगिघटबिचजीवनमोहीं॥
यहि दुख जीवन जात हमारा। बचन झूंठ नृप भयउतुम्हारा॥
कीन्ह्यों सेवा सदा तुम्हारी। कौनि चूक भै कन्त हमारी॥
आज्ञाभङ्गकबहुँ नहिं कीन्हा। केहिहितत्यागिहमहि दुखदीन्हा॥
धीरज आइ देउ जो नाहीं। कैसे प्राण रहैं बन माहीं॥
कहौ नाथ कैसे तुम रहऊ। हमहिछोड़िकिमिधीरजगहऊ॥

सघन विपिन महँ रोवती, दमयन्ती बिलखाइ।
कौने अवगुण कीन्हेउ, दीन कन्त दुख आइ॥

सर्प एक तब सन्मुख आवा। रानी पद मुख भीतर लावा॥
रानी विकल बहुत बिलखाई। हाय कन्त मोहि राखो आई॥
नैषध देश स्वामि जब जैहौ। कहो कन्त मोकहँ कहँ पैहौ॥
व्याध एक तहँ देखेउ जाई। बधिक सर्पकहँ टारेहु आई॥
बधिक सर्प कहँ डारेउ मारी। पीड़ित काम कह्यो सुनु नारी॥
वश्य होइ बोलेउ बानी। केहिहित वनमें फिरो भुलानी॥
तो कहँ चिन्ता आई। नलको मनमें पुनि पुनि ध्याई॥

रानीशाप वधिक कहँ दीन्हा। तुरतभस्मतेहिखलकहँकीन्हा ॥
करत विलाप चली वनमाहीं। गिरि कंदर वन ढूढ़त जाहीं ॥
कोई नलको कहै न आता। रोवत रानी अति बिलखाता ॥

भृगु वसिष्ठ मुनि अंगिरा, नारदमुनि जहँ आहिं।
करिविलापतबरानिसों, पहुँची तेहिथलमाहिं ॥

जाइतिनहिं कीन्हेंउ परणामा। आपनदुःख कहो तब बामा ॥
सबमुनिमिलियहआशिषदीन्हों।मिलिहैंनलसुनिजियसुखकीन्हों ॥
अन्तर्द्धान भये मुनिराई। चिन्ता उर रानीके आई ॥
सपनो सो मनमें यह जानी। मानुष जन्म कहा तबरानी ॥
कर्म वश्य वन फिरौं भुलानी। ऐसे शोचि रानि अकुलानी ॥
नलको खोजत बहु दुखपाये। आपनपतिकहँ देखि न पाये ॥
नायक कहो नगर को जैये। खोजो जाइ कर्म गति पैये ॥
बन महँ ढूँढि बहुत दुख पाये। ग्राम नगर खोजो चितलाये ॥

चली संग वनराजके, बसे एक वन आहिं।
सिंधुर यूथप बहुत तहँ, निकसे त्यहि वनमाहिं ॥

कचरि गये तहँ बहु बनिजारा। हाय हाय सब करै पुकारा ॥
दमयन्ती देखो तब ताहीं। बहुत लोग कचरे वन माहीं ॥
दमयन्ती कह करत विलापा। मैं बचि गई कौन वश पापा ॥
कीन्हों गमन बहुत दुख पाई। दिना आठ दश h्य सिराई ॥
नाम सुबाहु सो राजा आही। उत्तम नगर चित्तवर जाही ॥
तौन नगरमहँ पहुँची आई। लरिकनतहँदुखदीन्ह बनाई ॥

मनमें दुःख अहै तेहि भारी । बावरिरूप फिरहि तहँ नारी ॥
ऊपर महल भूप महतारी । देखोतिननिज नयन निहारी ॥
तब रानी यक सखी पठाई । दमयन्ती कहँ सँग लै आई ॥
तब पूछेउ राजा महतारी । आपनि व्यथा कहौ सुकुमारी ॥
दमयन्ती यह भाष्यउ, हम मानुष अवतार ।
करौ कहालगि बास बहु, विधि दुख लिखा लिलार ॥
कह्यउ रावकी तब महतारी । रहौ गेह काहू सुकुमारी ॥
दमयन्ती बोली यह बाता । रहै धर्म्म रहिबे तहँ माता ॥
होइ जौन शुचि सेवों चरणा । ऐसी होइ रहिहौं तेहि शरणा ॥
ब्राह्मणसों पूछति मैं बाता । जाते सुख पावों मैं माता ॥
सुनि राजकी मातु बखाना । पुत्री कह्यउ सो वचनप्रमाना ॥
ममकन्या जो अहै सुनन्दा । रहै तासुसँग कहि आनन्दा ॥
तहाँ जाइ दमयन्ती रहई । नलकी कथा सुनो जस अहई ॥
इक वनमें दावानल लाग्यो । तहँ इक सर्प जरे दुख पाग्यो ॥
ऊँचेस्वर तब कीन्ह पुकारा । हाविधि मोकहँ कौन उबारा ॥
मैं नारदको डसिकै लीन्ह्यों । अचलशापमोकहँ ऋषिदीन्ह्यों ॥
चलि नहि सक्यों हेतुतेहि, वनमें लागी आगि ।
कौन उबारै आनि अब, जरत सकौं नहिं भागि ॥
तबहि भूप मन दया जु आई । तुरत जाइ तेहि लियो उठाई ॥
न्याल पैग दश जाहू । तब हमार होई निरवाहू ॥
ो पैग गनि ताहू । दशौ पैग बोले नरनाहू ॥

दशोपेग जब कह्यो भुवारा। काटग्रोनलके मांझ लिलारा॥
श्याम स्वरूप भूप ह्वगयऊ। द्वै इक बसन मन्त्रदुइ दयऊ॥
एक मन्त्र पैहौ निज रूपा। एक मन्त्रते ह्वै हौ भूपा॥
यहि विद्या भय तोहिं न होई। यह गति तोरि कीन्ह मैं जोई॥
हैं ऋतुपर्ण अवधपुर राई। ह्वै सारथी रहो तहँ जाई॥
बाहुकनाम राखि तहँ दयऊ। यह तब कहि कर्कोटक गयऊ॥
शापहु ते सो भयऊ उबारा। गयउ भूप ऋतुपर्णके द्वारा॥

बाहुकनामा सारथी, रहो आपुके धाम।
होइ विकट हय जौन तुम, करौं शुद्ध ममकाम॥

ऐसे भूप हेतु तहँ जाई। भीम भूपमन चिन्ता आई॥
तबहीं विप्र समूह बोलाये। नल दमयन्ती खोज पठाये॥
बहुतक देश फिरे द्विज जाई। वीरबाहुपुर देखेउ आई॥
विप्र सुदेव देखि गो ताहीं। दमयन्ती मिलि जलकेपाहीं॥
ब्राह्मणको दमयन्ती चीन्हा। करि प्रणाम बहुरोदन कीन्हा॥
द्विजकोलै पुनि निज गृहआई। तबहिं सुनन्दा सब सुधिपाई॥
राजमातु तहँ दौरी आई। दमयन्ती कहँ चीन्हेउ जाई॥
भूपमातु पूंछी यह बाता। आपन देश नाम कहु ताता॥
भीम भूपके प्रोहित अहई। नाम सुदेव हमारो कहई॥
रोइ सुनंदा नृप महतारी अहोप्रथमनहिंकीन्ह चिन्हारी॥

सेवा कीन्हि हमारि बहु, नल राजाकी बाम।
मैं अनचीन्हे तुमहिसो, करवायों सब काम॥

भीमसों ब्राह्मण जाइ सुनायउ। राजा निज दल लोग पठायउ॥
कन्याको लै गयउ भुवारा। राजाभीम विदर्भ सिधारा॥
पाछे नल कर खोजन हेता। ब्राह्मण विदा किये नृपजेता॥
नामपर्ण बोले द्विज पाहीं। तिनसों अब दमयन्ती काहीं॥
बारह मास दुःख भो जाता। जाइ कहेउ तब द्विज सब बाता॥
मोर स्वयम्बर कहियो जाई। सुनत दुःख जो औरो पाई॥
आधो वसन तजो सिधिनारी। वनविचदीखन अशनविचारी॥
यहै बात सुनि रोवै जोई। जानेउ नल राजा सो होई॥
ब्राह्मण चल्यो खोज तहँ पाई। ग्राम ग्राम देशन प्रतिजाई॥
अवध नगर राजा गृह गयऊ। तहाँ जाइके यह दुख कहेऊ॥

सुनि बाहुक तहँ रोयऊ, ब्राह्मण पायउ आस।
यहै देखिके ब्राह्मण, गे दमयन्ती पास॥

दमयन्ती पूछत बिलखाई। कहो विप्र सब बात बुझाई॥
जननी पास गई तब नारी। ह्वै उदास तब वचन उचारी॥
नलकी खबरि कही समुझाई। मिलन केर सब करहु उपाई॥
मोर स्वयम्बर कहि समुझावो। विप्र सुदेवहि तुरत पठावो॥
अवध नगर ऋतुपर्ण नरेशा। कहै जाइ सम्मत उपदेशा॥
जो आजुहि नृप पहुँचहु जाई। तौ दमयन्ती पावहु राई॥
विन पहुँचै यहि बारा। यही प्रतिज्ञा चित्त विचारा॥
विप्रन समझाई। तुरत अवध पुर दीन्ह पठाई॥

सब यह हाल सुनावहु जाई। है ऋतुपर्ण सभा जेहिठाई ॥
तब राजा बाहुक हँकराई। एक दिवस महँ पहुँचउँ जाई ॥
आजुहि पहुँचउँ तहाँ सो, वरहुँ भीमजहि जाहि।
आजु करों पुरुषारथ, देख विदर्भहि आहि ॥
यह कहि विप्र तुरन्त पठाये। बाहुक रथहि साजिलै आये ॥
राजा ते यह कहि समुझाई। आजु विदर्भ देउँ पहुँचाई ॥
सुनतहि राव भयो असवारा। जोतेउ रथ सारथि तेहि बारा ॥
छूटि वसन तब करते परेऊ। लेन हेतु राजा मन करेऊ ॥
कहेउ सूत सत योजन राहा। लौटत पर लीन्हेउ नरनाहा ॥
इन्द्र केर चेला नरनाहू। वृक्ष बहेर मिला तेहि ठाहू ॥
देहु राव ऋतुपर्ण सो कहही। फूल पत्र फल येते रहही ॥
एकोतरसै फल अरु आता। भूमी माहिं परे झरि पाता ॥
इक संशय फल है तरु माहीं। पांचकोटि दल हैं तरु वाहीं ॥
बाहुक कह्यो उतरि हम गनिहैं। फिरतबार जो ममम्तिमनिहैं ॥
बाहुक हठ करिकै गनै, पत्र फूल फल ताहिं।
जो कछु भाषत राज भो, सो सब तरुमैं आहि ॥
बाहुक कह्यो कौन यह ज्ञाना। अक्ष विद्या यह राव बखाना ॥
बाहुक अक्ष दुगुन गनि दीन्हेउ। गणितमन्त्र राजा सों लीन्हेउ
जब नल भूप मन्त्र यह पाये। तबसों कलियुग चले पराये ॥
पूरब विष ज्वाला तनु लागा। तीन त्रासते कलियुग भागा ॥
थित सो भयऊ बहेरे माहीं। ताते पाप बहेरे आहीं ॥

यह कौतुक तब पारग भयऊ। पाछे देश विदर्भहि गयेऊ॥
तब पूछो यह भीम भुवारा। कहो आपजू कहँ पगुधारा॥
ह्वै लज्जित नृपकहेउ बुझाई। मिलन आपुकहँ आयन भाई॥
राजा बहुविधि आदर कीन्हा। उत्तम सदन वास तब दीन्हा।
दमयन्ती तब रची उपाई। नलको चीन्हां मनमें आई॥

करन रसोई साज सब, बाहुक पास पठाय।
पावक अरु जल नहि दियो, कीन्हों ऐस उपाय॥

पवनते पावन आनेउ पानी। पावक ध्यान अगिनिपुनिआनी
दासी डरी देखि व्यौहारा। दमयन्ती सों करत विचारा॥
दमयन्ती दोउ बाल पठाये। दासी सँग रथशालहि आये॥
देखि सुनत कहँ जल भरि नैना। बाहुक ते दासी कह बैना॥
क्षुधावन्त बालक सुनि लेहू। भोजन आनि कछुक इन देहू॥
तब बाहुक बालक कहँ दयऊ। लै बालक अन्तःपुर गयऊ॥
यह प्रसाद है मिष्ट प्रमाना। निश्चय नल दमयन्तीजाना॥
तब दमयन्ती आई तहँई। रथशाला बाहुक है जहँई॥
पछिले दुखकी कथा चलाई। सुनत रुदन कीन्हों नरराई।
रानी कहो कृपा अब करहू। माया तजौ रूप सोधरहू॥

करकोटकको ध्यानधरि, जप्यो मन्त्र शतआन।
पर्वरूप तब पायऊ, नलको तब पहिचान॥

[illegible] ७। बहुविनती राजा सन कियऊ
[illegible] सब दोष हमारा। मैं माया तब जानि न पारा॥

तब नर भीम अनुग्रह कीन्हीं। नृपऋतुपर्णकोबहुसुखदीन्हीं॥
नलहि पाइ तब हर्षित राजा। आज्ञा भै तब बाजे बाजा॥
सो ऋतुपर्ण बिदा तहँभयऊ। अवधनगर तब राजा गयऊ॥
तब नरवर भूपति पगुधारा। लैदल परिबन सङ्ग भुवारा॥
जा ऋतुपर्ण सों विद्या पाये। तब पुष्करपर जुआ लगाये॥
मन्त्र यन्त्र नल जेते जाई। हारो पुष्कर नृप को भाई॥
देश कोश साहस भण्डारा। रथ गज द्रव्य जो हतो अपारा॥
जीते नल पुष्कर जो हारा। फिरि क्रोधित ह्वै कहेउ भुवारा॥

दमयन्ती के दास तुम, कुटुम्बसहित हौ आन।
कलि दुख हमकहँ दीन्हेऊ, तुमहिं कहै को जान॥

पुनि नल भे नैषध के राजा। आज्ञा भइ बाजे तहँ बाजा॥
अर्द्ध वसन रानी लै दीन्हें। अर्द्ध फारि जो नलनृप लीन्हें॥
सबदेखि सो अतिदुख कियऊ। बैठे राजा दुख विसरयऊ॥
धार्मिक नल तब धर्म हि कीन्हों। एक ग्राम पुष्करको दीन्हों॥
ऐसे राजा दुख सो पाये। पुण्य वीर राजा कहवाये॥
वृहदश्व मुनि कह अनुसारा। सुनो युधिष्टिर धर्म्म कुमारा॥
यहिके सुने पाप तनु भागे। व्याधिहोयसो तनु नहि लागे॥
दुखी सुने सबदुख मिटिजाई। वन्दितहो त्यहि बन्दि छोड़ाई॥
राज्यते हीन सो राज्यहि पावै। जेहि दुख बहुत सुने च्चयपावै॥
होइहौ धर्म्मज तमहुँ भुवारा। जो यह कथा सुनेहु सुखसारा

वृहदश्वमुनि भाषेउ, धर्म राज सुख पाय ।
नशै पाप तनु सुख बढ़ै, नल चरित्र जो गाय ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

बहुदिन राजा ते वन रहेऊ । इक दिन नारद मुनि तहँ गयऊ ॥
नारद कहि सम्बाद अपारा । तीरथ वरन महातम सारा ॥
तेहि अन्तर मुनिके यह भयऊ । लोमशऋषिपुनितेहिथलगयऊ ॥
राजा देखत पूजा कीन्हेउ । अर्घ्यपाद्य दै आसन दीन्हेऊ ॥
लोमश कहेउ सुनहु भुवराई । मो कहँ तुम ढिग इन्द्र पठाई ॥
इन्द्रलोक इकदिन पगुधारा । देखा अर्जुन सभा मँझारा ॥
सिखे शस्त्र अरु अस्त्र अपारा । परम अनिन्दित आहि कुमारा ॥
पारथ हित चिन्ता तुम पाये । सुरपति ताते हमहि पठाये ॥
कहन कुशल पारथकी राजा । हम इतको आये यहि काजा ॥
सुनहु तहाँ हम जातहैं राऊ । राजा सुनत परम सुखपाऊ ॥
सहित बन्धु नारी नरनाथा । तीर्थराजको चलि मुनि साथा ॥
धौम्यनाम प्रोहित सँग लागे । चले जात मन अति अनुरागे ॥
तीर्थराज के दर्शन कीन्हें । परमहर्ष भूपति मन लीन्हें ॥
औरो पुनि तीरथ हैं जेते । परसे कहत न आवै तेते ॥
वन काशी अस्थाना गया सुरसरी आदि बखाना ॥
परसे तब राजा । चित उद्वेग धनञ्जय काजा ॥

न्धमदन पर्व्वत भे पारा। बदरी-आश्रम गये भुवारा।
बद्रुत सर तीरथ तब देखा। नाना वन पर्व्वत बहु लेखा॥

पुनि विन्दुत सर तीर्थ महँ, पाँचौ जने अन्हाइ।
पुष्प पत्र फल शोभित, देखत तरुवर जाइ॥

पूर्व्व ओरसे पवन उड़ाई। पुष्प एक तेहि सरमहँ आई॥
महँ सहसदल पुनितेहि माहीं। सुन्दर बहुत सुगन्धित आहीं॥
गलते फूल द्रौपदी लीन्हा। भीमसेनके आगे कीन्हा॥
भाइ सो फूल देवके लायक। सुनो वृकोदर हो मम नायक॥
वेगि अनुग्रह मोपर कीजै। यकशतपुष्प आनि मोहि दीजै॥
सुनिकै वचन वृकोदर कहई। देहौं आनि शोच जनि करई॥
धनुषवाण कर लै कर धाये। जौने दिशिसौं पवन ते आये॥
चलो सिन्धुसम भीम रिसाई। गन्धसदन गिरि देखउ आई॥
सो पर्व्वत गहवर वन भारी। नाना सर्प रहत विषधारी॥
नाना मोर नृत्य तहँ करई। कोकिलकुहकिहरषिजियभरई॥

छैयो ऋतु तहँ प्रकट शुभ, करत भवँर गुञ्जार।
अमृत सम फल लाग्यऊ, हरष्यो पवनकुमार॥

बहु वन भीतर हरषि अपारा। कुन्तीसुत जो पवनकुमारा॥
तेहिवनविहरत भीम सोफिरहीं। नादसिंहसम पुनिपुनिकरहीं॥
हने ग्राह मृग गैड़ा भारी। क्रीड़ाकर द्रुमिवनहिं मँझारी॥
भगे जन्तु पुनि वन के नाना। सिंह भालु मृग सबै पराना॥
गरजे भीम जन्तु सब भागे। कदलीवन देख्यउ यक आगे॥

महागम्भीर सो वह बन अहई। क्रीड़ित भीमसेन वन रहई
तोरेउ वृक्ष तौन वन नाना। मिष्ट पाक फल करिसो पाना
गरजै भीम करै फल पाना। जीव जन्तु सब शङ्का माना॥
तेहि बन माहँ रहै हनुमाना। शब्द सुनत सो करेहु पयाना॥
हनूमान तब देह बढ़ावा। उज्ज्वलरूप अनूप सोहावा॥

बोले कुवचन भीमसों, वन तैं कियो उजार।
मोरे हाथहि मरण तुव, भाषो पवनकुमार॥

यह कुबेर बन सब जगजाना। करत भोग यह कह हनुमाना॥
हनू सङ्ग जो बन रखवारा। दुओ वीर बल पुञ्ज जुझारा॥
तिन सब आइ कही यहबाता। भयोभीमसनि क्रोधते ताता
धनुष बाण पुनि करलै लीन्हेउ। युद्धवृकोदर बहुविधिकीन्हे
हते भीम जे वन रखवारा। तब कुबेर पहँ जाइ पुकारा॥
मानुष एक गहे धनुबाना। कदलीवन कीन्हेउ खरिहाना॥
हनूमान तेहि वरजन ठाना। सुना कुबेर आपु जो काना॥
आइ कुबेर हनू समुझाई। करो विरोध न तुम कपिराई॥
देखो तुम यह मानुष नाहीं। मानुष वेष देव कोउ आहीं॥
लेहु फूल खावो फल नाना। जेतिक मनमहँ होइ सुजाना।

हनूमान यह सुनतही, क्रोधहि बहुत बढ़ाइ।
फूलकाज विधि भीमसों, कीन्हों ऐस उपाइ॥

हनमान बोले यह बानी। सुनिये भीम वचन असजानी॥
लगि मैं यकबारा। लङ्का वीर बहुत संहारा॥

ागर नांधि लंक मैं जारा। महिरावण पाताल सँहारा ॥
है नेम मेरे मनमाहीं। मैं कछु प्रीति देखावत नाहीं
तना प्रेम आप करिलेई। पाछे फूल जान लै देई ॥
ह हमार लंगूर जो आही। ताते बात कहत तोहि पाहीं
ूमिते मम लंगूर उठावो। लै कै फूल जान तब पावो ॥
ुनतहि भीम कोप जिय गयऊ। टारनचित लँगूर सो करेऊ॥
ायें हाथ गह्यउ तब ताहीं। नेक न डोला सो महिमाहीं॥
फेरि बल कीन्हों भीम जुझारा। वज्र लँगूर टरत नहिं टारा॥

गहेउ गदा कर भीम जो, धरो भूमि महँ ताहि।
दोनों कर लँगूर सो, गहो भीम कर माहिं।

ारेउ भीम करेउ बहु करणी। कपि लंगूर न डोलत धरणी॥
ीमसेन यह मन मैं जाना। महावीर येहैं हनुमाना॥
ारो भीम ठाढ़ होइ रह्यऊ। हर्षि गात कपि बोलत भयऊ॥
ै प्रसन्न भाष्यो हनुमाना। मांगो वर जो तुम मनमाना॥
यह सुनि भीम कहन अस लागे। अमृतवचन हनुमानके आगे॥
जब कौरव कहँ मारन जाई। तब कपि करियो मोर सहाई॥
रामकाज कीन्हयउ जिमिभाई। तैसेइ होउ हमार सहाई॥
हनुमान बोले यह बाता। भीमसेन सुनिये यह ताता॥
पारथ के रथपर हम रहिहैं। रक्षा करत अस्त्र सब सहिहैं॥
ऐसे वचन कहे हनुमाना। भीमसेन सुनि बहु सुख माना॥

यह रहस्य राजा सुनो, हनू भीम व्यवहार।
दूनों पवनपुतवल, कह सुनि हृदय विचार॥
भयउ प्रसन्न कुबेर सुजाना। भीमसेन लखि बहु सुखमाना।
लेहु फूल जेते मन भावै। यहै हनू तव वात सुनावै॥
सुनतहि भीम हर्ष युत भयऊ। अपने गृह कुबेर तव गयऊ।
रक्षक कोउ बोलत कछु नाहीं। तोरत फूल जौन मन माहीं॥
विहरत भीम हरषि वन माहीं। सुमन सुगन्धित तोरेउ आहीं
भीमसेन वन में बहु गरजै। हांक सुनत पशु पच्छी लरजै॥
व्याघ्र सिंह अरु गज मतवारे। गैंड़ा महिष अनेकन मारे॥
भीमसेन के शंका भयऊ। भागि जन्तु तेहि वनते गयऊ॥
जनमेजय तव हर्षित भयऊ। वैशम्पायन कथा सो कह्यऊ॥
भीमसेन मन हर्षित, लीन्ह फूल करि हेत।
वैशम्पायन भाषत, सुनिये भूप सचेत॥

इति पंचम अध्याय॥ ५॥

धर्मराज मन चिन्ता भयऊ। कहँ ममबन्धु वृकोदर गयऊ॥
जिय अकुलाइ मनों उर दरकै। कुशकुन देखि वाम अँगफरकै
निश्चिरु भ्रात.खि बिस्मयराऊ। कुशलक्षेम विधि भीममिलाऊ
धौमर यह वचन विचारी। घटउत्क चसुमिरन अनुसारी
...त्क आये नृप पासा। का आज्ञा यह वचन प्रकासा।

जब राजा यह बोलत भयऊ । गन्धमदनगिरिभीमजोगयऊ ॥
नाना कुशकुन देखियत भाई । ताते चित चिन्ता अधिकाई ॥
तौनिउ बन्धु पुरोहित रानी । राजा कह यह वचन बखानी ॥
सबको सुत लै चलिये तहँवां । गन्धमदनगिरि भीम है जहँवां ॥
सुनत हरषि उठि करी प्रणामा । जो आज्ञा कहिये सो कामा ॥

पांचो जनहि चढ़ाइ पुनि, पीठि आपने आन ।
गन्धमदन पर भीम जहँ, कीन्हें तुरत पयान ॥

नाना वन सब देखत जाई । घटउत्कचके ऊपर राई ॥
वह इतिहास पन्थकर अहई । लिखे न जाइँ सूक्ष्म सो कहई ॥
गँधमादन पर्व्वत जेहि ठाई । धर्म्मराज प्रविशे तहँ जाई ॥
देखि धर्मसुत मन हरषाई । करमें धनुष भीमके आई ॥
अगणित रणमहँ मारे बीरा । वीर वृकोदर अभय शरीरा ॥
देखेउ राजहि पवनकुमारा । करि प्रणाम तब वचन उचारा ॥
भीमहि देखेउ अद्भुत रचना । लिये धनुष शर बोलेउ बचना ॥
देव समर सहाय कोउ नाहीं । अस साहस सुत तोंहि न चाहीं ॥
सुनत भीम बहु लज्जा पाये । घटउत्कच तब वचन सुनाये ॥
आज्ञा कौन मोहिं यहि ठाऊँ । रहौं कि निज आश्रममें जाऊं ॥
आज्ञा पाइ चरण शिर नायउ । अपने थल घटउत्कच आयउ ॥

रहे युधिष्ठिर तौन थल, चारि बन्धु इकसाथ ।
करतहर्ष बहुतै वनहिं, धर्म राज नरनाथ ॥

एक दिवस तहँ कौतुक भयऊ । मृगया हेतु वृकोदर गयऊ ॥

धौम्यपुरोहित लोमश जहँवां। गे मज्जनहित सरवर जहँवां॥
दोनौ बन्धु द्रौपदी साथा। आसन पर बैठे नरनाथा॥
जटा नाम इक दैत्य सो अहई। मनहिं विचारि तेहिसन क
यह तीनों जन पीठि चढाई। पवन वेग लै चला उड़ाई॥
धर्मराज बोले यह बानी। पाप कर्म कहकर अज्ञानी॥
हमकहं लिये जात केहिकाजा। बहुतहि नाहि बुझायउ रा
धर्म कथा सुनि भूपति पाहीं। हँमेउ दुःख सुनि मानत ना
चोर धर्म कह लम्पट नाना। निमरन काम न सब कोउ जा

छोड़ै ताहि न दैत्य सो, लैकर चलो उठाइ।
पर्वत कन्दर घोर बन, दानव लीन्हें जाइ॥

जानि दुष्ट तेहि धर्म भुवारा। ऊंचे स्वर बहु करी पुकारा॥
येहो भीम गयो कहँ भाई। परो दुःख हम ऊपर आई॥
आरत नाद जबै सुनि पायो लैकर गदा वृकोदर धायो॥
दूरिहि ते तब भीम निहारा। लिये जात सो धर्मकुमारा॥
तब सहदेव भूमिपर आयो। कूदि हांक तब ताहि सुनायो॥
तबहि वृकोदर धावत आवा गदा हाथ करि गर्जि सुनावा।
दैत्य अशङ्क मानि नहि शङ्का। हांकत वीर क्रोधकरि बङ्का॥
तबहिं द्रौपदी धर्मकुमारा। पीछे नकुल वीर बरियारा॥
तुरत भूमि बैठावा। देकर हांक भीम पर धावा॥
कहो निज मरणके काजा। पापी लै भाजे मत राजा॥

आजु मारि तोहि एक सर, पठवौं यमके पाहिं।
यह कहि गदा घात तेहि, दीन्ह्यो मस्तकमाहिं॥
[ग]दा घाव तब भीम सँभारा। तबहीं खल यक वृक्ष उपारा॥
[म]ारो वृक्ष भीमपर जाई। मारो गदा भीम पलटाई॥
[द]ोनों वृक्ष युद्ध परिहारा। मल्लयुद्ध तहं पुनि विस्तारा॥
[द]ोनों वीर लरैं वरजोरा। करैं युद्ध मानो घन घोरा॥
कम्पमान धरणीमहँ होई। प्रलय काल आवै जनु सोई॥
[म]ुष्टिक एके भीम तब मारा। छांड़्यो दैत्य प्राण तेहि बारा॥
परम हर्ष भो धर्मकुमारा। और अनन्दित भे परिवारा॥
आशिर्वादहि देत मुनि, राजा सूंघत माथ।
भुज पूजत लोमशऋषिय, हरषि आपने हाथ॥
परम हर्ष राजा तब पाये। कहि संक्षेपहि भारत गाये॥
पुनि सब मिलकै कीन्ह विचारा। बदरिकआश्रम गे त्यहिबारा॥
नाना पुष्प रम्य अस्थाना। रहे हर्षि बन राव लोभाना॥
संवत चारि वीति इमि गयऊ। पञ्चम वर्ष उपस्थित भयऊ॥
यही प्रकार रहे वन राऊ। धौम्य आदि मुनि भोजन पाऊ॥
नाना ज्ञान कथा तहँ, राजा करहि प्रकास।
चारि बन्धु हैं सङ्ग तहं और द्रौपदी पास॥
इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

कछु दिन राव बीति इमि गयऊ। धौम्य पुरोहितते नृप कहयऊ॥
पारथ बिन देखे मुनि गाई। मम चित चञ्चल रहै सदाई॥
पञ्चस वर्ष खोज अब करई। अर्जुन देखौं जल दृग ढरई॥
पूरव कह्यो पार्थ यह बानी। पंच वर्ष उपदेशौं आनी॥
धवलाचलपर दरश हमारा। निश्चय पैहौ धर्मभुवारा॥
चलौ सो पर्वत देखो जाई। पारथ दरश हेत कहँ राई॥
प्रोहित सहित द्रौपदी रानी। तीनों बन्धुक लोमश ज्ञानी॥
कीन्ह विचार चले सब तहँवा। पर्वतधवल आइ पुनि जहवाँ॥
लोमश धौम्य सङ्ग तय भाई। ज्ञानकथा बहु वर्णत जाई॥
प्रथम गन्धमादन गिरि देखा। पूरण बारि गात्र अवरेखा॥
सोह मालपृष्ठि तेहि पासा। धवला पर्वत परम प्रकाशा॥
फटिकशिला तह देखत भयऊ। दानव घोर तहाँ पुनि रहयऊ॥
रक्ष यक्ष दानव बहुत, सब कुबेरके दास।
सो पर्व्वत देखों तहाँ, पुरी कुबेर प्रकाश॥
देखि भीम तहँ राक्षस जेते। वेगिहि भीम संहारेउ तेते॥
तबहि कुबेर मर्म तब पाये। युद्धहेतु तब आपु सिधाये॥
तब प्रणाम करि धर्मकुमारा। शुद्ध वचन कहि युद्ध निवारा।
हर्षित ह्वै कुबेरपह गयऊ। धर्मराज तेहि पर्वत रहयऊ॥
अर्जुन देवलोकमह रहयऊ। अस्त्र अनेक सुरनते लहयऊ॥
शत्रु जे पाये। मारि सकल यमलोक पठाये॥
देव युद्धो हारा। सो मारे सब पाण्डुकुमारा॥

होइ सन्तुष्ट देव वर दयऊ । कौटअस्त्र तब वासव दयऊ ॥
समय एक तहँ सो सुर आई । बैठि सभामहं सभा बनाई ।
यम कुवेर जलपति वैश्वानर । बैठे और अनेक मुनिन्दर ॥

तब अर्जुन कहँ गोदले, बैठे देव भुवार ।
नृत्य करत तहँ नृत्यकी, हर्षित सभा मँझार ।

नाम उर्वशी अप्सर नारी । नृत्य करत सो सभा मझारी ॥
वीणा ताल मृदङ्ग बजाये । नाना रूप नृत्य लय लाये ॥
इन्द्रगोद सोवत बलवाना । मानो दूसर इन्द्र समाना ॥
पारथ देखि उर्वशी नारी । पीड़ित काम स्वरूप निहारी ॥
कामभाव तेहि अवसर भयऊ । नृत्यगीत बहुविधि तेहिठयऊ ॥
गीतिसहित अर्जुन तेहि हेरा । सो सुरपति देखेउ तेहि बेरा ॥
जो उर्वशी तुमहि वश करेऊ । तौनलियासुत तुमकह दयऊ ॥
अर्ज्जुन कहो जाइ जोहारा । इनते प्रकटो वंश हमारा ॥
उठ्यो अखारा नृत्य सेराना । अपने गृह सुर कियो पयाना ॥
सुरपति गे अपने अस्थाना । निज थल गे पारथ बलवाना ॥
अर्द्धनिशा बीती सो आई । तेही समय उर्वशी आई ।
अर्ज्जुनके मन्दिर पगु धारा । देखे लगे कपाट दुवारा ॥
बहुत यत्नकरि खोलि किवारा । अर्ज्जुनकहं लैनाम पुकारा ॥

चेत पाइ अर्ज्जुन तब, मनमें करै विचार ।
अर्द्धराति किमि उर्वशी, आई निकट हमार ॥

कहै धनञ्जय वचन विचारी । मम ढिग केहि हित आई नारी ॥

अर्द्धराति वीती पुनि गयऊ। निद्रावश्य देव सब भयऊ॥
जो कछु दुख है चित्त तुम्हारा। कहौ प्रान सो करों उधारा॥
राति जाउ अपने गृह नारी। पुरुष पियार एककी नारी॥
पारथ बात सुनी सो नारी। मोहि मदन कर है अनुसारी॥
हृदय समाना रूप तुम्हारा। काम व्यथा ननु जरत हमारा॥
सुनत धनञ्जय विस्मय माना। त्राहि त्राहि करि मूंदेउ काना॥
यक ब्राह्मणी दुजे सुरनारी। इन्द्र अप्सरा मातु हमारी॥
ऐसि बात अपने मुखमाहीं। भूलि वान जनिकहुमोहिपाहीं॥
सुनत उर्व्वशी व्याकुल भयऊ। दुखित ह्वै पारथते कह्यऊ॥

हम आई तुम आश करि, सो नो भई निराश।
जानेउँ अहैं नपुंसक, यह कहि वचन प्रकाश॥

तब यह शाप पार्थ कहँ दीन्हा। ह्वै उदास निजगृहमग लीन्ह॥
पारथ चित्त भयउ परितापा। पाप किये विन पायउँ शापा॥
होतहि प्रात उदित भे भाना। बैठे सभा इन्द्र सुर नाना॥
प्रात होत पारथ तहँ जाई। हाथजोरि तब कह्यउ बुझाई॥
काल्हि नृत्य जो नारी कीन्हा। निशिमें शाप हमैं तेहि दीन्ह॥
होउ नपुंसक दीन्हों शापा। ताते मों मन भा सन्तापा॥
सुनिकै इन्द्र महादुख पावा। तुरत सभामहँ ताहि बुलावा॥
इन्द्र कहै नारी कह कीन्हा। मो सुत कहा शाप तैं दीन्हा॥
सुनत उर्व्वशी लज्जा पाई। हाथ जोरि तब विनय सुनाई॥
शाप होय उपकारा। क्रोध न कीजै देव कुवारा॥

होइ इक वर्ष नपुंसक, न्टप विराटके देश।
सम्वत वीते शापते, होइ हो मुक्त सुवेश॥
यह वर तव पारथक हँ दीन्हा। अपने भवन गमनतबकीन्हा॥
तबहि इन्द्र पुत्तहि समुझाई। देव अस्त्र दीन्हेउ बहु आई॥
कुण्डल कवच इन्द्र तव दीन्हों। भाषेउ मुनि अर्ज्जुन शुभ कीन्हों
मिलि सब देव शंख शक दीना। जाके नाद शत्रु बलहीना॥
पाँच वर्ष सुरपुर महँ भयऊ। पारथ तबहि इन्द्रसों कह्यऊ॥
आज्ञा दीजै इन्द्र उदारा। परशौं पद कह धर्म्मभुवारा॥
सुनिकै इन्द्र तुरत वर दयऊ। तब रथ मातलि साजत भयऊ॥
भेंटि सकल सुर चढ़े विमाना। मृत्यु लोककहँ कियो पयाना॥
रथ प्रवेश करि आयउ तहँवाँ। धवल शिखरपर राजाजहँवाँ॥
फटिकवरण अति अनुपम, अति उत्तुङ्ग पहार।
चढ़ि विमान तहं पारथ, वहि परबत पगु धार॥
देखा पर्व्वत तहवाँ जाई। रानीसङ्ग बन्धु अरु राई॥
सङ्गपुरोहित अरु मुनि अहै। पारथ हेतु तो चितवत रहै।
यहि अन्तर पारथतहं आई। देखत हर्ष भये सब भाई॥
धर्म्मराज पारथकहं देखा। परम हर्ष हिरदयमहं लेखा॥
पारथ जाय करै परनामा। औ भेटे भाई बलधामा।
प्रोहितको कीन्हो परनामहि। परम हरष सबही मन मानहि॥
द्रौपदिकहं कीन्हो सनमाना। सबकर हर्ष भयो मनमाना॥
पारथ मिले बन्धुकहं जैसे। श्रोता सुनै होत फल जैसे॥

बैठे तहं सब हर्षित होई। पारथ कहै अर्थ सब सोई॥
पांच वर्ष कीन्हे जो काजा। श्रवण करो सो धर्मके राजा॥
सर्बकथा वृत्तान्त जो, पारथ कहै बखान।
नृपहिं धनञ्जय भाखेउ सबलसिंह चौहान॥
धर्मराज पारथकहं देख्यउ। पुनिनिजजन्मसफलकरिलेख्यउ॥
पारथ जाय चरण नृप गह्यउ। पूछो कुशल हर्ष बहु भयउ॥
सर्व्व कथा विस्तारसे, पारथ कियो बखान।
राजा आगे सहित विधि, बरख्यो बन्धु सुजान॥
जेहि विधि शङ्कर दरशन पाये। जिमि किरातह्वै हर तहँ आये
जैसो युद्ध भयो तेहि ठावा। सुरपति जैसे दर्शन पावा॥
जैसे रथ चढ़ि स्वर्गहि गयऊ। जैसे अस्त्र लाभ तहँ भयऊ॥
शाप उर्व्वशी जिमि वर दीन्हा। जैसे देव अस्त्र सब लीन्हा॥
धर्मराजकहँ सर्व्व जनायो। राजा धर्म्म हर्ष तव पायो॥
तेही समय इन्द्र तहँ आये। धर्म्मराजते कहि समुझाये॥
सर्व्वजीत वर जबहीं दीन्हा। अन्तर्द्धान इन्द्र तब कीन्हा॥
तबहीं मातलि रथ लै गयऊ। धर्म्मराज आनन्दित भयऊ॥
पुनि यह कथासो ऋषिहिसुनाये। घटउत्कच तेहि अवसरआये
करिप्रणाम सबके पद वन्दे। कहे वचन तब परम अनन्दे॥
देश छोड़ि करि राजा, आये दूरि पयान।
चल्यो सबै काम्यकवनहिं, हर्षित भये सुजान॥
बात यह सब मन भाये। तब सब कहँ फिरिपीठिचढ़ाये

सबको तै काम्यक बन आये । रहे तहाँ आनद बहु पाये ॥
काम्यकवनहिं बहुत दिन गयऊ । परमअनन्दित सब जनरयऊ॥
तहाँ बहुरि आये यदुनाथा । मिले आइ पाण्डवसुत साथा ॥
मिले कृष्ण पुनि धीरज दीन्हा । द्वारावती गमन पुनि कीन्हा ॥
अभ्यन्तर तब कथा सुनाये । मार्कण्डेय महामुनि आये ॥
बहु सम्वाद तहां मुनि कीन्हों । सो संक्षेप कहन मैं लीन्हों ॥
ऐसे पाण्डव वन महँ रयऊ । कथा प्रसङ्ग धर्म्म तब कह्यऊ ॥

पञ्च बन्धु अरु द्रौपदी, रहे पाण्डुवनमांह ।
भारत पुण्य कथा यह, जनमेजय नरनाह ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

ऐसे पाण्डव वन दुख पाये । दूत जाय कुरुनाथ सुनाये ॥
काम्यक वनमहं पांचो भाई । तबहिं विचार करैं शत भाई ॥
कर्ण दुशासन शकुनी राजा । मन्त्र कुमन्त्र करैं सब काजा ॥
बनोवास पाण्डव दुख नाना । वलकलवसन करैं परिधाना ॥
माथे जटा तपीके भेशा । देखिय शत्रु कियो उपदेशा ॥
देखब जाइ द्रौपदी पासा । सब मिलिकै करिबे उपहासा ॥
दुखमें शत्रु देखिये राई । याते आनंद और न भाई ॥
दुर्योधन दल साज करायो भीषम द्रोण भेद नहिं पायो ॥
और सबै रथ पैदर साजा । चले हर्षि दुर्योधन राजा ॥
काम्यक वनमें पहुँचे जाई । देखत ताहि हर्ष बहु पाई ॥

काम्यक बन देखा तबै, एक सरोवर आहि ।
देव रु किन्नर गन्धरव, केलि करैं तेहि माहि ॥
देव चरित्र सुनहु सज्ञाना । कुरुपतिको होइहै अपमाना
नाम चित्ररथ गन्धर्वराऊ । इस्त्री सहित सरोवर आऊ ॥
पत्निसहित सो क्रीड़न भयऊ । ताही थल दुर्योधन गयऊ ॥
दुर्योधन लखि लज्जा पायो । क्रोधवन्त गन्धर्व सुनायो ॥
अरे मूढ़ त्वहिं यह अहँकारा । ताकर फल तुम लहउ भुवारा ॥
हाथ अस्त्र बह गंधरब नाना । दियो तिनहिं आज्ञा परमाना ॥
मारु मारु यह आयसु दीन्हें । अस्त्र गहे सो धरि सब लीन्हें ॥
भयउ युद्ध सो क्रोधित होई । गंधरब मानुष सम नहिं कोई ॥
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा । यह लखिकर्ण क्रोध अति कीन्हा ॥
हाथ अस्त्र लैके तब धाये । गन्धर्व दलमें बाण चलाये ॥
गँन्धर्व दलमें बाण बहु, भयो भूमि अँधियार ।
ऐसे मारे कर्ण बहु, क्रोधित बाण अपार ॥
गँधरव सबै पराभव कीन्हें । हत लागे तब जात न चीन्हें ॥
मारेउ कर्ण खैंचि कर तीरा । चलउ रुधिर गन्धर्व्व शरीरा ।
अस्त्र अनेक करत परिहारा । रुण्ड मुण्ड गन्धर्व्व संहारा ॥
काहू हाथ कटेउ अरु पांऊ । काहू केर हृदय महँ घाऊ ॥
रुधिर नदी गंधरव रण भयऊ । भागे सबै मार्ग तब लयऊ ॥
सबकहं खोज न पाये । पाछे देखत कर्ण सिधाये ॥
पराभव इन्द्रकुमारा । हाथ धनुष शर तब परचारा ॥

तब गन्धर्ब्ब दुशासन मारा । परो दुशासन भूमिमँझारा ॥
रथते दुःशासन भुइं आये । लज्जावन्त महा भय पाये ॥
कर्णके सङ्ग तबै रण ठाना । महावीर दोउ एक समाना ॥

क्रोधवन्त गन्धर्वपति, मारे बाण प्रचण्ड ।
करण संभारि सक्यउ नहीं, कटे छत्त अरु दण्ड ॥

मारे रथ सारथि संहारा । हाथ धनुष गहि करण भुवारा ॥
मारे तब गंधरब शर नाना । शरन तेज रज भयो निदाना ॥
कुरुदल सबै पराभव कीन्हा । दुर्योधनहिं बांधि पुनि लीन्हा ॥
पाण्डवकर बैरी मैं जाना । रहो तोहिं दुख देहौं नाना ॥
कुरुपति कहं बांधे लिय जाई । देखेउ भीमसेन तब धाई ॥
देखि हर्ष मन आये तहँई । रहे धर्मसुत पुनि जेहि ठहँई ॥
जोरि हाथ राजासन कहई । ऐसो दुख दुर्योधन सहई ॥
दुर्योधनहि बांधि लै जाई । चलिकै राज्य करौ सब भाई ॥
महा अधर्मी शत्रु भो नाशा । मिल्यउ राज तुवबिनहिप्रयासा ॥
तबहिं राव यह कहो बखानी । कसे नाश भयउ अज्ञानी ॥

कौन प्रकारहि हेतुकहु, कैसे शत्रु विनाश ।
सो सब मम आगे कहौ, कीन्हों भीम प्रकाश ॥

कहो भीम राजहि समुझाई । गा अखेट दुर्योधन राई ॥
विधि रचनाते गँधरब आयउ । युवतीसँग सर क्रीड़ा ठायउ ॥
गया तहँ दुर्योधन राऊ । गँधरबगण रण तहाँ उपाऊ ॥
कर्ण आदि सेना सब भागी । छाँड़ेउ राजहि परम अभागी ॥

गन्धर्वराज महाबल करेऊ। दुर्योधनहि बाँधि लै गयऊ॥
सुनत धर्मसुत विस्मय भयऊ। भीमसेनते यहि विधि कयऊ॥
नीतिशास्त्र नहिं जानत अहहू। मूरखरूप सदा तुम रहहू॥
तब पारथते यह कहि राजू। लेउ छुड़ाइ सुयोधन आजू॥
बन्धु बन्धुसों कलह प्रमाना। बन्धु बन्धुको बल जगजाना॥
तुमहीं तुरत लयावहु भाई। गन्धर्व कहँ तुम दै बिचलाई॥

जो गन्धर्व छांड़ै नही, तौ तेहि करब सँहार।
मारि निपातौ धरणिपर, कुरुपति लेहु उबार॥

आज्ञा सुनि पारथ तहँ जाई। हांक दई गन्धर्वहि आई॥
देखत पारथ गन्धर्व नाना। शीघ्रवन्त तब करेउ पयाना॥
तब विचार गन्धर्वन कीन्हा। दुर्योधनहिं डारि तब दीन्हा॥
तब पारथ असबाण चलाये। भूमिस्वर्ग सोपान बनाये॥
बाणनपर लै राजा आये। धर्मराजके दर्शन पाये॥
धर्मराज यह कह सो लीन्हा। यह गति तुमहिं कहौ्याहकी॥
ऐसो गर्व करिय जनि भाई। जाते अपनो मान गवाँई॥
दुर्योधन सुनि लज्जा पाई। मरण हेतु कछु करेउ उपाई॥
तबहीं राज बोध बहु कीन्हा। मर्मवचन कहि धीरज दीन्हा॥
हम तुम भाई एक समाना। तोर मोर एकै अपमाना॥

हम तुम एकै बन्धु हैं, ताते कहा विचार।
यह सुनि पायो सुख अमित, पापी कुरु भुवार॥

राजा कह यह वचन सुनाई । मांगो वर पावउ तुम भाई ॥
धर्म्मराज बोले मुसुकाता । दुर्योधन न्टपसों यह बाता ॥
अवसर पाइ सुनो न्टप जबहीं । तुमते वर मांगब हम तबही ॥
कह्यउ सत्य राजा तब गयऊ । कुरुदल तेजहीन सब भयऊ ॥
राजा धर्म्म वही बनबासा । पूछहि तपसिन सहित हुलासा ॥
केतक काल रहे सुख पाई । एक दिना जयद्रथ तहँ आई ॥
अर्ज्जुन भीम रावके संगा । माद्रीसुत द्वौ चले रणरंगा ॥
मज्जन हेतु सरोवर जाई । तेही समय दुष्ट सो आई ॥
देखि अकेलि द्रौपदी रानी । लइ हरिके भाग्यउ अज्ञानी ॥
तीन समय पारथ तहँ आये । देख्यो चरित क्रोध जिय पाये ॥

भीम सहित पारथ बली. भेंटयउ दुर्म्मति जाय ।
भीम पछारो तासु को, परा भूमि महँ आय ॥

दूनौ कर शिर केश उपारा । बाँधे बोझ समान भुवारा ॥
खाना हीन रखउ तनुमाहीं । ऐसे लाय धर्म्मसुत पाहीं ॥
राजा देखि दया मन भयऊ । छाँडिय यह आज्ञा न्टप दयऊ ॥
जो कोइ पाप करै जगमाहीं । बिन भुगते छूटत सो नाहीं ॥
धर्म्मकथा कहि ताहि सुनायो । दयाधर्म्म भाषै मनलायो ॥
पापकर्म्मको फल तब पावै । नरक माहिं परलोक नशावै ॥
ऐसे ज्ञान बोध समुझावा । करि प्रबोध अस्नान करावा ॥
तब आज्ञा दै धर्म्म-नरेशा । गयउ द्रुमति सो अपने देशा ॥

धौम्य नाम प्रोहित तहां, धर्म्मराजके साथ।
बारह सम्वत पूर भे, कहो बात नरनाथ॥

अब अज्ञात वर्ष परमाना। कहां रहउं सो करहु बखाना॥
कुरुके दूत फिरैं सब ठांऊ। कहां दुरैं सो कहो उपाऊ॥
जो कोउ लखै गुप्त दिनमाहीं। बारहवर्ष फेरि वन जाहीं॥
तौ हमार दुख छूटत नाहीं। रहिये गुप्त कौन वन मांहीं॥
यह विचारि मनरोदन कीन्हा। हमैं विधाता बहु दुख दीन्हा।
धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई। धर्म्मराजते कह समुझाई॥
तुम तौ धर्म्मरूप हौ राऊ। विपतिकाल कादर कस आऊ॥
सुख दुख व्यापक है संसारा। चित्त धैर्य्य करु पाण्डुकुमारा॥
माया विष्णु गुप्त है राजा। गुप्त रूप देवनकर काजा॥
वामनरूप छल्यउ बलिराऊ। देव काज कीन्हि यह परभाऊ॥

रामरूप माया धरि, रावण कीन्ह सहार।
चित चिन्ता केहि हेतुकर, सुनिये धर्म्मभुवार॥

यहि प्रकार प्रोहित समुझाये। तबहि धीर राजा मन आये॥
पांच बन्धु अरु प्रोहित सङ्गा। करत तहां बहु कथा प्रसङ्गा॥
जयद्रथ बहु लज्जा जिय पावा। पार्थ भीम अपमान करावा॥
लाजवन्त हर सेवा ठाना। गङ्गाधर को कीन्हेउ ध्याना॥
बहुत प्रकार तपस्या करेऊ। पाण्डव जीति हेतु मन धरेऊ॥
प्रसन्न तब शङ्कर आयो। मांगु मागु वर वचन सुनायो॥
:. . . जयद्रथ कहई। जीता पांच पाण्डवन चहई॥

गङ्गाधर बोले यह बानी। पारथ तन मन शारँगपानी ॥
चारिहु बन्धु जीतिहौ राऊ। पारथकहँ जीते नहिं पाऊ ॥
यह वर तौ गङ्गाधर दीन्हों। जयद्रथ हृदय हर्ष वहु कीन्हों ॥
यह वनपर्व्व कह्यो मैं गाई। रहे बनैमहं धर्मज राई ॥
जे फल तीरथ करि अरु दाना। सिन्धु आदि सरिता अस्नाना ॥
जो किदार बद्रिकास्रम जाये। जगन्नाथके दर्शन पाये ॥
नाना दुख व्रतकरि जो सहई। सो वनपर्व्व सुने फल लहई ॥

कहि वनपर्व्वकथा यह, सुनु जनमेजय राय।
पुण्यकथा श्रीभारत, सबलसिंह कहि गाय ॥

इति अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

इति वनपर्व्व समाप्तः ।

महाभारत।

विराट पर्व।

कहे सकल वनपर्वके, ऋषि नरेशको ठाट।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषत पर्व विराट॥
धर्मराज तब विकलह्वै, सुमर्‌यो व्यास मुनीस।
नाशन दास कलेशहित, आये जिमि जगदीश॥

दण्डप्रणाम नृपति उठि कीन्हा। मुनिवरविहँसिलायउरलीन्ह
चारिउ बन्धु द्रौपदी रानी। परसेउ चरण व्यासके आनी॥
आय दीन मृग चर्म बिछाई। चरण धोय बैठायो आई॥
पातनको व्यजना कर लीन्हों। पवनकुमार पवन तब कीन्हों।
भाजन तब लै आई रानी। नकुल दीन्ह जल भाजन आनी॥
करि भोजन ऋषि शयन अनन्दे। सहदेव आय चरण तब वन्दे
कह्यो राउ नयनन भरि वारी। भलेहि नाथ मम सुरति विसारी।
[illegible]। कलेश वरणि नहिं आवा। अन्धसुवन मोहिं बहुत सतावा।
[illegible] करि भूमि कुड़ाई। सबहिं बोलाय सुनाय कराई॥

द्वादशावष जाइकै, विपिन बसेरो लेइँ ।
खोजनपावहिं तेरहीं नहीं राज्य हमदेइँ ॥

जो हम शोध तेरहीं पावैं । द्वादश वर्ष बहुरि बन जावैं ॥
मो हित दुरन बताबहु ठाऊं । कोहिवनकौनदेश,ऋषिजाऊं ॥
खोजत वर्ष मध्य जो पैहै । वहुरि वनै कुरुनाथ पठै है ॥
आज्ञा देउ रहौं तह जाई । जह सुखहोइ दुःख कटिजाई ॥
जाउँ तहाँ जहँ मोहि छपावै । कहुँ कुरुनाथ खोज नहिपावै ॥
कहेउ व्यास नृप सुनहु विचारा। है नहि अन्त छिपाव तुम्हारा॥
त्यागहु पकरि आइ सेवकाई । नृप विराट गृह रहौ छपाई ॥
सत्य वचन सुनु भूप हमारा । तहँ कटि जैहै काल तुम्हारा ॥
करौ विचार नृपति अब सोई । भीतर वर्ष न जानै कोई ॥

जाइ रहो वैराट में, जहाँ न जाने कोई ।
काल कटै विपदा घटै, अधिक अधिक सुख होइ ॥

ऊहै वीति विपति सुख पैहौ । नृपति फेरि धरणीपति ह्वै हौ ॥
जाइ रहो तुम देश पराये । रहिहौ सबसन शीश नवाये ॥
ओछी पूरी कहै जो कोई । सहियो विलग न मानव कोई ॥
मद साधे नृपताक दुराये । रखो जाति औ नाम छपाये ॥
हीन रूप ह्वै रखौ भुवारा । यामें होइ छपाव तुम्हारा ॥
बोलेउ राउ जोरि युग पानी । नाम सकल ऋषि कहौ वखानी ॥
आपममें कहिये हम सोई । होइ दुराव न जानै कोई ॥

नृपके वचन सुनत सुखपाये। व्यास सबनके नाम बताये॥
कंक नाम भूपतिको भाखा। नाम जयन्त भीम को राखा॥
नाम धनञ्जयको कह्यो, बृहन्नड़ा ऋषि व्यास॥
सैनी सहदेवहि कह्यो, सकल गुणनकी रास॥
बाहुक नाम नकुलको फेरा। सैरन्ध्री द्रौपदी केरा॥
काटहु कलह जाय नर देवा। गर्व छाड़ि कीजे सब सेवा॥
छांड़ि क्रोध रहियो तुम राजा। आयसुमानि करेहुनितकाजा॥
कबहुँ न करेहुगर्व अपकारा। सेयहुन्टपति समेत विचारा॥
रखो सदा सबको रुख राखे। परम अधीन दीन वच भाखे॥
निशिदिनकरेहु नयनलखिकाजा। जाते रहैं प्रसन्नित राजा॥
भीम आदि बरजेउ सब भाई। जनिकाहू सन करहि लड़ाई॥
जो प्रकट जानिहै कुरुराजा होइहै न्टपति तुम्हार अकाजा॥
यहिविधितबबहु शिषदये, गये व्यास ऋषिराज।
सोई मन्त्रनमें धरयो, मनसा वाचा काज॥
पाई परम सौख्य भूपाला। बसे कछुक दिन तेहि प्रणशाला॥
नितप्रतिसकलअहेरसिधावहिं। खगमृगअमितमारिलैं आवहिं॥
धौम्यमहितऋषिसहसअठासी। भोजनकरहिसहजसुखरासी॥
एकदिवस न्टप निकट बोलाये। कह्योव्याससोइवचनसुनाये॥
हम अज्ञात वास अब करि हैं। मिलै न सुधि तेहिदेशदौरिहैं॥
पुरोहित ममहितकारी। करोकहो भलि चहौ हमारी
बादि मिलेउ म्वहिआई। महि पर्यटन करौ तुम जाई॥

यह कहि नयन नीर भरिआये । बिदाकरतन्टप अतिदुखपाये ॥
सकलऋषिनकरिदण्डप्रणामा । विदाकिये कहिकहिसबनामा ॥
चलेसकलमिलिआशिषदीन्हा । नैमिषविपिनवासतिनकीन्हा ॥
करि अतिकष्ट करहिंजपयोगा । करुकासहितकरहिंप्रिययोगा ॥
कथा विचित्र महामुनि कहेऊ । जनमेजयमुनिसुनिसुखलहेऊ ॥
नेसनप्रश्नबहुरि न्टपकीन्हा । किमिअज्ञात वासउनलीन्हा ॥

व्यास सीखता ऋषि कह्यो, भा मन भूप उचाट ।
पांच बन्धु सङ्ग द्रौपदी, आये नगर विराट ॥

रवर निकट बैठ मत लीन्हा । कहेन छिपाइयतनकेचीन्हा ॥
रते कछुक दूरि वन रहेऊ । अन्धकूप ता भीतर रखेऊ ॥
मी वृत्तामध्य विराजाई । ताके निकट गयउचलिराजा ॥
स्त्र सनाह वसन वर त्यागी शमीवृत्त राखेउ बड़ भागी ॥
ीमसेन यक मृतक लै आई । वृत्तमध्य दीन्हों लटकाई ॥
ब तरु भयउ निकंटकसोई । याके निकट न अइहै कोई ॥
यहकहि फिरि सरवर तटआये । न्टपतिआपु द्विज रूपबनाये ॥
मबहिं राखि तहं चलेउ नराटा । गयो प्रथम तबनगर विराटा ॥

दरवानी द्विज देखिकै, अद्भुत रूप बिलोकि ।
कर्यो नगर पैसारन्टप, द्वारसके नहिं रोकि ॥

पैठत नगर शकुन न्टप भयऊ । भीमसेन सहदेव ते कहेऊ ॥
कैसे शकुन होत ये भाई । हमहिं गणितकरि देहुबताई ॥
ऐसे लक्षण मैं पहिंचाने । होइहै काज सकल मनमाने ॥

मिली बाल झालक मगलीन्है। धेनुबाल प्यावत सुखकीन्है
सुखमहँ दिवस बीतिहैं नीके। ह्वै हैं काज महीपति जीके
अशकुन एक होतहै भीमा। यहै शोच आवत है जीमा॥
लीलै मूष वाम मंजारी। बीते कछुदिन कलह पछारी॥
सरवर बन्धव चारि ठयेऊ। राजसभाचलि भूपति गयऊ॥
द्विजको रूप महीपति कीन्हें। अक्षमाल शिर चन्दनदीन्हे
लकुटिपाणि पुस्तकौ मोहाई। सभा मध्य पहुँचे सो जाई

दीन्ह अशीश ऋषीश तब, भेंटयो सहित सनेह॥
उठिविराट नृप विप्रलखि, शिरनायो युगनेह॥

कह नृप विप्र कहांते आयो। धमराज तुम पास पठायो॥
कहेउ वचन मो चलती बारा। करिहैं नृप प्रतिपालतुम्हारा॥
हम पर परम अवस्था आई। काटहु दिन विराट गृहजाई॥
मोसन वचन कहेउ यह सांचो। गिरिवर गुहा पैठिगयेपांचो॥
जाहु विराट महीपति पासा। उहां तुम्है सबभांति सुपासा॥
ब्राह्मण नृपति युधिष्ठिर केरा। जानौ सब गुण ज्ञान निबेरा॥
धर्मसुवन तुम पास पठावा। ताते निकट तुम्हारे आवा॥
सुनि महीप कीन्हों सनमाना। बैठारो गुण ज्ञान निधाना॥
कहौ नाम निज भूपति पूंछा। कहेउ नरेश सकलछलछूंछा॥
म्बहिंव्यासबखाना। सुनिचिंतिपतिकीन्होंसनमाना
ो ब्राह्मण परम अनूपा। अर्द्धासन बैठारेउ भूपा॥

प्रीति पुनीति भुवालकी, परमस्वच्छ द्विजदेखि
रह्यो युधिष्ठिर की सभा, है गुणवान विशेखि ॥
पुनि आयो तहं पवनकुमारा । आनि भूप कहं कीन्ह जुहारा ॥
दीरघ तनु दीरघ भुज दण्डा । निरखत कौतुकभयोअखण्डा ॥
नृपके निकट भीम जब गयऊ । देखि सभा सब चकृत भयऊ ॥
सकैं न बूझि सबैंभय पावा । कौतुक कौन देशते आवा ॥
है यह कौन परत नहिं चीन्हें । मल्लरूप दरवी कर लीन्हें ॥
चकित सभासद करहिं बिचारा । यह धौंकौनआहि करतारा ॥
आवत देखि विराट महीपा । बूझे वाहि बुलाय समीपा ॥
कित ते आये कौन तुम, कहा तुम्हारो नाम ।
कौनजाति केहि हेत कहि, आयो मेरे धाम ॥
सुनुनृप नाम जयंत हमरा । राज युधिष्ठिर केर सुवारा ॥
करौं विविध विधिसे जेवनारा । व्यंजन अमित बनावन हारा ॥
अति सुगन्ध युत मिष्ट सलोने । करौं पाक औरे नहिं होने ॥
जेहू कृतज्ञ भूप भूपाला । वकसतनितपटमणिगणमाला ॥
सरवर भीमसेन को राखत । अमृतसरिस वचननृपभाषत ॥
भोजन करत भीम के सङ्गा । पालि नृपति तनुकीन्हमतङ्गा ॥
सुनिविराटनृपअतिहितकीन्हा । रहउ बंधुसम आदर दीन्हा ॥
जिमि राखत तुव पाण्डुकुमारा । तेहिते हेतु हमार अपारा ॥
निरखे सरवरि भीमको, भूपति ताकी देह ।
तैसो वली विचारिके, ढिगराखे करि नेह ॥

निशा पाय अस पार्थ विचारा। केहि विधि नगरकरौं पैसा
होय दुराय न जानै कोई। सहदेव यतन बतावहु सोई॥
सुधि भूली तुमको किन भाई। सुरपुर असुर वध्यो जब जा
तब सुरनाथ कृपा अति कीन्हा। अस्त्रसिखाइमुकुटनिजदीन
तब उन एतभाव करि जाना। दीन्ह वास भीतर अस्थाना॥
देखि उर्व्वशी देह विसारी। भई कामवश सुरपति नारी॥
रति माँगी तुमते करि ईड़ा। पारथ करहु सङ्ग मम क्रीड़ा।
पूरण करो मोरि अभिलाषा। त्राहि त्राहि माता तुम भाषा
तब उर्व्वशी क्रोध अति कीन्हा। होवहु हिज्ज शाप यह दी
प्रात होत सुरपति पहँ जाई। शापकथा तुम सकल सुनाई
कहेउ सुरेश उर्व्वशी बोली। शाप अनुग्रह करो अमोली॥
सुनि सुरेश के वचन रसाला। कीन्हों शाप अनुग्रह वाला॥
जब चाहौ तब वर्ष प्रयन्ता। वृहन्नड़ा तनु होयहु सन्ता॥
सुरतियशाप आशिषा भयऊ। हिज्जरूप अर्ज्जुनह्वै गयऊ॥
भूषण वसन द्रौपदी केरा। तनु शृङ्गार कीन्ह बहुतेरा॥

तब वृहन्नड़ा ह्वै पार्थ, कीन्हों तियको रूप।
कंकन किंकिणि आदिदै, अभरण सजे अनूप॥
शिर सिन्दूर तमोल मुख, मेंहदी युत युगपानि।
जावक चरण मृदङ्गकौ, ध्वनिकीन्हौ तिन आनि॥

। द्वार नृप पाण्डुकुमारा। कहेउ जनावहु हे प्रतिहारा॥
। राज्य युधिष्ठिर केरा। आयों करि पुहमींको फेरा॥

सब नृप द्वार देशफिरि आयों । भोजन कहुँ न पेटभरि पायो ॥
जब वन चले युधिष्ठिर राई । कहेउमोहिं तब निकटबुलाई ॥
जायो भवन विराट भुवारा । तहं ह्वैहै प्रतिपाल तुम्हारा ॥
वेत पाणि राजा सन जाई । समाचार सब कहेउ बुझाई ॥
गायक द्वार एक प्रभु आवा । कहत युधिष्टिर मोहिं पठावा ॥

सुनि बोले भीतर नृपति, सब बूझेउ व्यवहार ।
सकल गान सङ्गीत लखि, कला चौंसठी चार ॥

नृपति युधिष्ठिर केर अखारा । करौं गान सङ्गीत प्रचारा ॥
गावहुँ मोहन राग रसाला । नाचि नाचि रिझवौं महिपाला ॥
अपनो गुण कहिवैनिज वानी । कहत भूप आवत गिल्यानी ॥
रहत रहे जे धर्म्म समाजा । मम गुण पूंछ कङ्कसन राजा ॥
विद्या पढी सकल नृप जेती । जानत सकल कङ्कऋषि तेती ॥
जब वन चल्यो युधिष्ठिर राई । कहेउमोहिंनिज निकटबुलाई ॥
सेवहु तुम विराट नृप जाई । मिलेहुमोहिंनिजकाल बिताई ॥
है समरत्थ विराट भुवाला । सो तुम्हार करिहै प्रतिपाला ॥

मैं पारथको सारथी, वृहन्नड़ा मम नाम ।
जीवन आयों आपुघर, लियो आइ विश्राम ॥

धर्मपुत्र करिकै वहु नेहू । पठयो इहाँ जानिकै गेहू ॥
इतनो भार हमारो लेहू । वस्तर अन्न वर्षभरि देहू ॥
लघु कन्या वालकन पढ़ाऊं । पूरणगति सङ्गीत सिखाऊं ॥
विद्याअमित वरणि नहिं जाई । अल्प दिवसमहं देउँ सिखाई ॥

भूप सुता उत्तरा कुमारी। सौंपी पढ़न योग सुकुमारी॥
फिर सहदेव पहूँचे आई। नृपसों वचन कहत शिरनाई॥
मैंतो धर्म्मपुत्र को ग्वाला। अतिशय कृपा करहिं महिपाला॥
निकसि दूरि वन वीथिन गयऊ। दै उपदेश पठै म्वहि दयऊ॥
करि जानौं गायनके माहू। अरु जानौं नव विधि हथियाहू॥
सो देखत गोधन कोइ हरई। कोनर जुरि ममसमता करई॥
वर्ष पञ्च इक धेनु चराई। सेवन करौं पञ्चशत गाई॥
सत्य वचन यह सुनहु भुवारा। सेनि गोप है नाम हमारा॥
मोहिं जयन्त कङ्कऋषि जानहिं। उन्हें बूझि भूपति तवमानहिं॥
सुनि तिन जानेउ बुद्धिविशाला। सौंपी सव सुरभी भूपाला॥

फेरि नकुल आये तहां, लीन्हें ताजनहाथ।
देख रूपकी राशितव, चकित भये नरनाथ॥
कौन देशको जाति कहु, कहातुम्हारो नाम।
केहि कारण वैराट कहि, देखो मेरा धाम॥

बाहुक राय युधिष्ठिर केरा। राखत मान सबै विधि मेरा॥
वे दुरिके वन गयो भुवारा। दै सबते हम कहं दुखभारा॥
काटर कूच्वर अश्व चलावों। योजन शत प्रमाण लै धावों॥
बूझहु कङ्क ऋषिहि गुण मेरो। आयो नृपति नाम सुनितेरो॥
मो कहं सौंपौ साहन जेते। करौं बयान सूध सब तेते॥
[illegible] भूपाल अमित सुखपावा। पाण्डसवन ते हेतु बढ़ावा॥
[illegible] मुख निन तेहिकाला। कहबाहुकतनचतुरभुवाला॥

सौंपेउ साहन नकुलकहं, हे भूपाल उदार ।
वहुरि सो आई द्रौपदी, भूपति भवन मँझार ॥
नगी किधौं पन्नग की जाई । कमला किधौं देह धरि आई ॥
रानिन सहित सखिनके वृन्दा । निरखैं मुखचकोर जिमिचन्दा ॥
कह रानी निज नाम बतावो । केहिकुलकी कुलवधू कहावो ॥
कहो जाति आपनि गुण ग्रामा । केहिकारज आइउ ममधामा ॥
पाण्डव सदन द्रौपदी रानी । दासी तासु लेहु स्वहिजानी ॥
मनेहु श्रवण तुव अमित वड़ाई । देखेहु द्वार विपति वश आई ॥
पतिसङ्ग चली विपिन जवरानी । मोसनकही विहंसियहवानी ॥
तुम गृह जाहु विराट भुवाला । काटेहुकालकछुक दिनबाला ॥
आइउं तुव सेवाकरन, सैरन्ध्री ममनाम ।
आज्ञादेहु कृपालु ह्वै, करौं यहां विश्राम ॥
बोली विहंसि वचन तव रानी । केहि सेवामें बह त सयानी ॥
चन्द्रवदनि सोइ वेगि वताऊ । सौंपौंतुमहिं सजितचितचाऊ ॥
भोजन मै करवावौं रानी । भूषण अङ्ग सजौं सुखदानी ॥
चुनि चुनि नये वसन पहिराऊं । लै दर्पण मुखद्युति दरशाऊं ॥
लै कुङ्कुम घनसार लगावौं । कुसुमावलि शुचिसेजवनावौं ॥
अतर लाय तनु पान खवावौं । तुम्हरी आज्ञा सदा वजावौं ॥
करिहौं दोय काज नहिं रानी । छुवहुं चरण नुहिं जूठनिखानी ॥
सैरन्ध्री वचन सुनि काना । रानी वहुत कीन्ह सनमाना ॥
तनया सम मेरे गृह रहियो । मोसन [illegible] ॥

हलुकी भारी कोइ न भाषहिं। सब कोई आदर तुव राखहिं॥
तुम थोरहिं कीजै सन्तोषा। निशदिन करौं तुम्हारो पोषा॥
सैरंध्री जोरि युग पानी। करत विनय सुनियो कछु रानी॥
रक्षक मोर पंच गन्धर्वा। निशिदिन मोहिं रखावत सर्वा॥
अति बलवंत भयानक सोई। रहे संग देखै नहिं कोई॥
सो वे अन्तरिक्ष के वासी। करैं प्रीति जानैं निज दासी॥
पाप बुद्धि देखैं स्वहिं कोई। करैं निवर्त होय किन जोई॥
जाको अन्न खाइये रानी। नापै रहिय सदा छल हानी॥
याते तुमकहँ प्रथम जनाई। पाछे जनि ठहेर कनि जाई॥
सत्यवचन सुर मोर सहाई। लखै कुदृष्टि जियत नहि जाई॥
राखी निकट परमहित मानी। निशिदिनप्रीतिकरतप्रतिरानी॥
सजत शृङ्गार सिखावत जोई॥ सैरंधरी वचन सोइ होई॥
काल पायकै पांडुकुमारा। मिलहिं समेत द्रौपदीदारा॥
सकल अवस्थानिजनिज कहई। फिरिबिलगायमौनह्वै रहई॥
जब भूपतिहि जोहारन आवहिं। प्रथमकंकऋषिकोशिरनावहिं॥
यहि विधि पांचौ पाण्डुसुत, और द्रौपदी बाम।
कालक्षेपपुनिकरहिंजिमि, क्षुद्रसकलगुणग्राम॥

इति प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

कछुदिन बीते नगरमो, गृहगृह प्रति उत्साह।
अपनीदुहिताको रच्यो, नृपतिविराट विवाह॥

देशदेश कहँ दूत पठाये । सकल क्षितीशपुहुमिकेआये ॥
सभा विचित्र रची तहँ राजा । जनुअमरावति रच्योसमाजा ॥
आपु लसैं जैसे सुरसांई । सब नरेश जनु सुर समुदाई ॥
सुरगुरुसम ऋषिकंक विराजा । अतिविचित्र तहबनीसमाजा ॥
कहूं नृत्यकारी नचिगावैं । कहूं नाटकी स्वांगदिखावैं ॥
नाचहिं कहुँ विदूषकरिजाला । कूजहिंकाँख बजावहिंताला ॥
गाल फुलावहिं करहिं तमासा । नानाभांति करहिं परिहासा ॥
वारमुखी बहु नाचहिं गावहिं । वाणी वेणु मृदङ्ग बजावहिं ॥
बाजहिं आउझ झांझ तंबूरे । मुनिमन हरत राग अतिपूरे ॥
चन्द्रवदन उर्वशी लजाहीं । जिनहिं देखिरतिद्युतिकछुनाहीं ॥
काहूं मल्ल लरहिं अति भारे । कहूंमेष अति लरहिं सिंगारे ॥
मत्त दन्ति कहुं लरहिं दँतारे । श्यामवर्ण पर्वत से कारे ॥

शोभा राज समाजकी, मोपै कही न जाय ।
देश देशके भूप सब, जुरें सुवेष बनाय ॥

मल्ल एक तहँ आव प्रचण्डा । दीरघ तनु दीरघ भुज दण्डा ॥
औ द्वै चरण कड़ा द्वौ पानी । पीतवसन शोभाकी खानी ॥
बड़ो भीर भूपन कै देखी । कही सभामहं बात परेखी ॥
अहङ्कार युत वचन बखाना । सुनहु महीप वचन दै काना ॥
जीति विदर्भ देश जे शृंगी । जीते मल्ल सरंग तिलंगी ॥
काशमीर लाहौर चँदेरी । वन्दर सब करनाटक हेरी ॥
अङ्ग वङ्ग कामरू मंझाई । औरौ देश विलोकेउं जाई ॥

मोसे मल्ल जुरैनहीं, कोउ न कौनउ देश ॥
है कोई मोसे जुरै, आज्ञा देहु नरेश।
सुनि सुनि सभा न बोलै कोई। मन साहस काहू नहिं होई।
नृप विराट को सुधि ह्वै आई। तब जयन्त कहं लीन्ह बुलाई
सुनि जयन्त ममआज्ञा मानो। मल्ल युद्ध तुम यासों ठानो॥
मैं अपने मन कीन्ह विचारा। तुम सुआर यह मल्लजुझारा॥
जो हारौ तो हारि न होई। जीते द्रव्य देइ सब कोई।
धरि मारौ जो मल्ल जुझारा। जगमहं होइहि सुयश तुम्हारा।
सुनि जयन्त बोल्यो कछु नाहीं। रहे चुपाय कङ्क मुख चाहीं।
कहेउ कङ्क किमि हृदय डेराना। करु जयन्त नृपवचन प्रमान।
तब जयन्त यह मल्लसों, कहो बात अरगाय।
हम तुमरससों खेलिये, लीजै सभा रिझाय॥
तूजो आनैं रोषमन, डारै भुजा उपारि।
हम परदेशी उदरहित, देहैं भूप निकारि॥
कहेउ मल्ल सुनु कौन विचारा। तैंकस कादर वचन उचारा॥
दीरघ भुजा वचन कह दीना। ऐसी कहै होय जो हीना॥
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये। तब-जयन्त यह वचन सुनाये।
करु अब जौन होय बल तोरा। जनिमानसिखलमोरनिहोरा॥
मल्ल युद्ध लागे दोउ करना। मुष्टिघात अरु घालहि चरना॥
युद्ध दोउयहि बिधि करहीं। लपटहिंधरहिंझमिझुकिपरहीं
फिरिकरिबलउठहिसँभारी। समबलयुगल न मानहिंहारी

तव जयन्त भुजबल अतिकीन्हा । मल्ल उठायडारिमहि दीन्हा ॥
करि बड़ क्रोध धरणि पर डारा । जनु सुरवज्र गिरिन को मारा ॥
उच्चरिउट्यो यह वचन सुनाये । अब मारौं खल तू कित जाये ॥
लै तव गुरज उठो अकुलाई । हनो जयन्त नासिका जाई ॥
विषम चोट यर हरेउ शरीरा । मूर्च्छि गिरेउमहि पाण्डववीरा
देखि कङ्क सैरंध्री जानी । हाइ हाइ करि अति अकुलानी ॥
चेति जयन्त उठो गल गाजी । जान न पाइहि अब खलभाजी॥
भूमिहिं सातवार धरि मारहुं । गहिरे गर्व दुष्टको गारहुं ॥
फेरिजुरेउ जिमि करि बलजोरी । कीन्ह प्राण विन मल्लमरोरी ।

मृतक तासु तनु क्रोधकरि, दीन्हों दूरि पवांरि ।
देश देशके भूपसब, करत बड़ाई भारि ॥

देखत सभा सवै नर हर्षे । वसन कनकमणि मोलन वर्षे ॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा । कहौं सुनौ अबभा जस काजा
मत्त गयन्द नृपतिको ऐसो । कज्जल गिरि भूधरहै जैसो ॥
कानि महावत की नहिं आवै । करै प्राण बिन जो द्विपपावै ॥
सुन्दर महल दिये महि पारी । गये निकट नर डारै फारी ॥
शूंडि दावि वहु वृक्ष उखारै । नहिं कुन्तल ते रहै सम्भारै ॥

बांधहु जाय गयन्द कहं, पठये नर नरपाल ।
सकैनिकट नहिं जाय कोउ, देखि देव विकराल ॥

जायभूप सन कथा जनाई । कोऊ निकट सकै नहिं जाई ॥
कैसेहु हाथ न कुंजर आवै । अबसो करिय जो भूपबतावै ॥

तब ययंत ते कहेउ बोलाई। गजहि पकरि ले आवहु जाई॥
क बांधहुं के डारहु मारी। पुरको कंटक देहु निकारी॥
जब नरेश की आज्ञा पाई। चल्यो वृकोदर अति हरषाई॥
सिंहनाद गरज्यो बलबीरा। तब गयन्द थरहरेउ शरीरा॥
पूंछ पकरि झकझकोरेउ ऐसे। दावत मृग कर चीता जैसे॥
दशन पकरि लै पहुंचो थाना। ज्यों अजयालीजै गहिकाना॥
बांधि ताहि भूपहि शिरनायो। तब जयन्त वसनन पहिरायो॥
यहिविधि बीते मासदश, नृपविराटके तीर।
कालक्षेप निशिदिन करैं, पांडुपुत्र बलबीर॥

इति द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

कीचकबली विशाल तनु, नृप तरुणीको बन्धु।
सहस द्विरदसमताहिबल, यौवनमद अतिअन्धु॥
शत बांधव कीचकके बली। बल अवगाहन नृपअस्थली॥
सोहत इक इक मातुके जाये। ऐसे सुभट महीपति भाये॥
एक दिवस कीचक हरषाई। निज भगिनीके मन्दिर जाई॥
रानी ढिग कीचक चलिजाई। कीन्ह प्रणाम चरण शिरनाई॥
बन्धु बिलोकि हृदय हरषानी। दीन्ह अशीश मुदितमनरानी॥
जन करत कनककी थारी। द्रुपदसुता तहं करत बयारी॥
चेरि कहं कीचक बीरा। काम विवश थरहरेउ शरीरा॥

इत भगिनी सन बचनबखाना । दासी बशहै रह्यो पराना ॥
तहं कीचक तनु दशा बिसारी । सैरिन्ध्री दिशि रहो निहारी
भयो कामवश बुद्धि भुलानी । छांड़िसिलोकलाजकुलकानी ॥
सैरन्ध्री अपने मन जाना । कामविवश यह खल बौराना ॥
ताहि सुनाय कहो सुनुरानी । अकथकथा कछु कहौंबखानी ॥
गन्धरव पंच महाबल भारे । ते ममसङ्ग निशिदिनरखवारे ॥
अन्तरिच्छ देखै नहि कोई । तुमकहं प्रथम सुनायों सोई ॥
मोहि कुदृष्टि विलोकै जोई । सो नर कठिन कालवश होई ॥

अवशि हनैं गन्धर्व तेहि, मोहिंविलोकै जाइ ।
बली होइकी निर्बली, जीवत बचै न सोइ ॥

यदपि सैरंध्री बिभवबखाना । कीचकमनहुं सुन्योनहि काना ।
कामअन्ध नहि सूझत तेही । विषअस छहरिगयो सबदेही ॥
भयो विकल सबदशा बिसारी । द्वौकर जोरि विनय अनुसारी ।
भगिनीसन बोला बिसवासी । मांगे देहु मोहिं निज दासी ॥
सोकहं मिलै मोहि यह इच्छा । मांगों लाज छांडि यह भिच्छा
मोहि दया करिकै यह दीजे । याकी बदि सहस्र तुम लीजे ॥
लाज छांड़ि कै करौं ढिठाई । करौ वचन फुर हृदय जुड़ाई ॥
होइ मोरि तौ जाउ लवाई । देउं बन्धु किमि वस्तु पराई ॥

द्रुपदसुताकी अनुचरी, देत मोहिं अति छोभ ।
यह मोरे जनु पूतरी, करौ बन्धु जनि लोभ ॥

जादिनप्रथम भवनमम आई । कन्या कै राखेउं मैं भाई ॥

कह मुनि सुनु कुरुकेतु भुवारा। सुनै न काम विवश मतवारा॥
रानी वचन कहे विधि नाना। कीचक सुन्यो न एकौ काना॥
बोली बहुरि वचन यह रानी। सुनहु बन्धु इक कथा पुरानी॥
द्रुपदसुता पति सङ्ग बनगयऊ। इनहिंपठाइ भवनमम दयऊ॥
रहै जीविका हित गृह माहीं। दासी मोरि बन्धु यह नाहीं॥
जाइय भवन दई नहिं जाई। देउं कौनि विधि वस्तु पराई॥
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये। क्रोधवन्त ह्वै वचन सुनाये

कहकैसे तू राखिये, दासी बलकरि लेहुं।
राज्यपाट सब छीनिकै, कोटि कोटि दुखदेहु॥

चेरी लागि नशावहु राजू। तोरे कहा सुधरि है काजू॥
अति बलवन्त बन्धुशत मोरे। राखि लेइ ऐसो को तोरे॥
सुन्यो कठोर वन्धु की बानी। बोली प्रेम क्रोध ह्वै रानी॥
पर तरुणीरत जे जग भयऊ। ते निजकरनीसों मिटिगऊ॥
जो चाहौ आपनि कुशलाता। फेरि कहौ जनि याकी बाता॥
रावण कथा सुन्यो तुम भाई। रामचन्द्र की नारि चुराई॥
सियाहरत नहिं लागि विलम्बा। नशोदशानन सहितकुटुम्बा॥
गौतमतिय लखि शक्रलुभाने। भयो सहसभग जगसबजाने॥
बोधेउ असुर पाप बश सोई। भयो खण्ड जानत सबकोई॥
ह्वै सकाम गिरिजा तनु हेरा। एक नयन बिन भये कुबेरा॥
शुम्भनिशुम्भअसुर अभिमानी। मोहा परमशक्ति जियजानी॥
प्रसिद्ध सकलजगखानी। अपने पाप मिटा अभिमानी

बन्धुवधूरत रघुपति जानो । मारेउ बालि हिये शरतानो ॥
परत्रियरतहित शठ मन्दीन्हा । पैहै फल खल आपनकीन्हा ॥

भगिनी मुखके बचन सुनि, किय पयान निजधाम ।
विकल महाजिय कल्ल नहीं, घरी मुहूरत याम ॥

कीचकको सुधिनहिं रहेऊ । सूनंमहल सैरन्ध्री लहेऊ ॥
काम अन्ध अञ्चल देहि गहेऊ । आतुरह्वै यहि विधि तव कहेऊ ॥
चित हमार तव रूपहिं पागा । भयो आसक सुधीर जयागो ॥
मेरे तरुणी भामि अनुहारी । मरुपरहोय सोहागिलनारी ॥
उत्तम भूषण वसन बनावै । अरु दासीको नाम मिटावै ॥
बचन तुम्हार मेटि नहि जाई । रहौ नारि मम हृदयभमाई ॥
सुनत वचन मन शङ्का आई । कहेउ सैरन्ध्री बचन बनाई ॥
तुमहिं देखि मोह्यो मन मोरा । कीन्हे प्रीति नाशहै तोरा ॥
गन्धर्व पञ्च मोहि रखवारी । दीरघ तनु मन विक्रम भारी ॥
मोहि छुवत व तुरते आवैं । सनु कीचक तुवप्राण नशावै ॥
तव मारे मम अपयश होई । मोकहं दोष देइ सब कोई ॥
या महं उभय प्रकार बिगारा । मरण तोर मम देश निकारा ॥
तुव भगिनी सुनि देइ निकारी । इहां जीविका उठी हमारी ।
यह सुनि कीचक अतिभयमानी । गई पराइ पाण्डु की रानी ॥
निशिदिन ताकहं नींद न आवै । धन सम्पति घरवार न भावै ।
बोलि दूतिका यहि विधि कहेऊ । वहदासी ममचितवसि रहेऊ

मनसा वाचा कर्म्मणा. तुम अव करहु उपाउ।
मृगनयनी निशिकरवदनि, मोपर भुरै लआउ॥
भुरै लै आउ सैरन्ध्री आवै। निजइच्छा मांगो तुम पावै॥
ाई दूतिका बिबिधि प्रकारा। लागी करन युक्ति उपचारा॥
हुत भांति दूती समुझायो। चित्त सरन्ध्री एक न आयो॥
यहां बिचार न वोलै सोई। आजकालहि कछुकाज न होई॥
ही मास द्वै अवधि हमारी। नहि जानै कुरुपति अपकारी॥
कीचक आतुर ह्वै उठि धायो। जहां सैरिन्ध्री तहं चलिआयो॥

सूने घरमों पायकै, गहे केश कर धाय।
अबकह राखै तोहि को. कौन छुड़ावै धाय॥

गन्धर्व महं गन्धर्व पति होई। मकै छुड़ाय तोहि नहिं सोई॥
गन्धर्वके बल तू अभिमानी। मोल छुड़ाय देइ अब आनी॥
यद्यपि बली रचक तू होई। मारै वुच्च होइ नहिं सोई॥
व्याकुल भई नीच वश रानी। गई लाज अव हृदय डेरानी॥
हरे कृष्ण नाम यह भाषी। दुशासनतें तुम पति राखी॥
सैरन्ध्री विनवै मृदुवाणी। त्रिविध प्रकार जोरियुगपाणी॥
यदपि विनयकृत विविध प्रकारा। सुनै न काम विवश मतवारा
बोला कामवश्य रिसि आई। तजौं तोहिं करि निज मनभाई॥
दासी कम कराइकै, त्रास देखावहुँ तोहिं।
मन भाई करौं, यही वाणि अब मोहिं॥

कैसेहु खल नहिं हठतज, अञ्चल डारोफारि ।
करतेकेश न तजैसो, अति अकुलानी नारि ॥
सरन्धी तब बुद्धि विचारी । विविध भांति कीन्हीमनुहारी ॥
रसते प्रीति बढ़तिहै जोई । तसनहिं कछु अनरसते होई ॥
दान मान पुन आदर धरई । परतिय सो अपने वश करई ॥
यथा बीजते द्रुम उठि जाई । तिमि रसकी प्रवीनि सरसाई ॥
निशदिन लिये रहै मनहाथा । बढ़ैहेतु तब परतिय साथा ॥
मिष्ट सुधा सम वचन सुनावै । इष्ट समान हिये बिचलावै ॥
कहत वचन पुरवै सब सोई । परपत्नी ताके वश होई ॥
यह कीचकहु सुन्यो ना चीन्हा । परतियवरवशकेहिवशकीन्हा ॥
जानत रसकी प्रीति नहिं, त खल एकौ बात ।
परनरुणीको मनदयो, तब तब सुख सरसात ॥
रहमिरहसि अब मनमिलै, तौलहि हँसि पर नारि ।
बौरायो यह वचन कहि, गूढ़ उपाय विचारि ॥
जं केश तब गृह अभिमानी । सैरन्ध्री गई जहँ रानी ॥
हे ऋषि सुनु कुरुवंश भुवारा । गये बीति पुनि इक पखवारा ॥
दीपमालिका के दिन रानी । बोली सैरन्ध्री सों बानी ॥
भोजन मिष्ट कछुक हित भाई । सुरापात्र दै आवहु जाई ॥
द्रुपदसुता सुनि अति अकुलानी । जाब मोर हां नीक न रानी ॥
कला मारि जीव वहि केरा । रानी जात न लागी बेरा ॥
यदपि सैरन्ध्री कथा बखानी । बरजत ताहि पठायो रानी ॥

पिये मत्त मद कनक प्रथङ्का । देखि सैरन्ध्री भयो सशङ्का ॥
अशन पान महि राखि परानी । धाय केश पकरे गहि पानी ॥
सैरन्ध्री तब वचन उचारे । गहत केश केहि हेत हमारे ॥
तुव मन बसेउ मोर मन सोई । दिनरति कीचक पशुगतिहोई ॥

रैनिगये तुम आयऊ, नाच अखारे जाय ।
शिथिलभयो यह बात सुनि, केश दिये मुकराय ॥
योगभोग सूनेसदन, वननिशि कीचकराय ।
जाउ तहाँ हौं आइहौं, यामय रैनि गवाँय ॥

जहाँ उत्तराकी चटसारा । होइ मिलाप हमार तुम्हारा ॥
खलते लाज वचन नहिं जानी । करि छल गई बहुरि जहँ रानी ॥
कीचक यह सुनि अति सुख पावा । कह्यो सैरन्ध्री वचन सुहावा ॥
जात भयो अपने गृहसोई । हेरन बाट निशा कब होई ॥
गई दुखित तहँ द्रौपदि रानी । है पतिभूप जहां सुखदानी ॥
कीचक कानि न एकौ राखी । सो गति बाम भूपसम भाखी ॥
आयसु अर्ज्जुनको नृप दीजै । कीचक मारै सो नृप कीजै ॥
यह कहिकै उपजी तनु तापा । ऊंचे स्वरकरि कीन्ह विलापा ॥
रोवत बाम श्वास नहि आवै । भूपति बहुत भाँति समुझावै ॥

मास दिवस बीते तिया, सो व्रत पूरण होइ ।
तौ लगि कालहि काटिये, लखै कछू नहि कोइ ॥

ध बीत कीचक संहारौं तबतिय और विचार बिचारौं ॥
लगे रहौ मन मारी । की वनवास करावो नारी ॥

सुनि नृपवचन विकल भै रानी । करत विलाप हिये अकुलानी॥
उतर देत नहिं बनहिं बनावा । नयनन नीरगरे भरि आवा ॥
रोदन करत चली तब रानी । गै पति अबपति बात न मानी ॥
बिलखि वदन तिय पहुँची तहाँ । हते वीर बल अर्जुन जहाँ ॥
नयन सनीर कहत नहि बानी । कथा समस्त बखानी रानी ॥
वरणी कीचक की अधिकाई । कह्यो भूपमन कछु नहिं आई ॥
दीन्ह जवाब धरणि के धरणा । आइउँ पार्थ तुम्हारी शरणा ॥
मेरो कहो गोसांई कीजै । हति कीचक जगमें यश लीजै ॥
तुमहिं अछत अस हाल हमारा । बल पौरष कहँ गयो तुम्हारा ॥

कह्यो पार्थ तब तियासों, करि अति क्रोध कराल ।
आज्ञा पावों भूपकी, शठहि वधौं उत्ताल ॥

जो भूपतिकी आज्ञा पावों । तौ कीचक यमलोक पठावों ॥
नृपकी कानि न तोरी जाई । तोरे कछु नहिं करौं उपाई ॥
सरवर नीर सबन के आगे । चलतीबार वचन नृप मांगे ॥
मम आयसु बिन कृत कठिनाई । कृष्णाचरण तेहि कोटि दुहाई ॥
नृपको वचन न मेटो जाई । मास दिवस तुम रहो चुपाई ॥
सुनत सैरन्ध्री अति दुखमाना । पारथको कछु वचन बखाना ॥
छूटो तुमहिं च्त्रि कुलवाना । तजेउ मानधरि वेष जनाना ॥
लाज हीन भयो पाण्डुकुमारा । तुमहिं जियत असहाल हमारा ॥
सो सुनि पार्थ रह्यो शिरनाई । माद्री सुतननीर चलि आई ॥

गई नकुल सहदेव पहँ, बिलखि वदन वरनारि ।
अधिकारी ता दुष्टको, सब विधि कही पुकारि ॥
कीचक बाँह हमारी गही । तुममें कहौ कहांपति रही ॥
मेरो कह्यो नहीं हँसि टारो । क्यों न आपने अरिकहँ मारो ॥
सहदेव नकुल कही सुनु रानी । मेटि न जाइ भूपकी कानी ॥
कह्यो नृपति म्वहिं बारहिंबारा । भ्राता यह न करेउ अपकारा ।
कटुक कहेउ सुनि लेउ चुपाई । काहुहि उतरु न दीजै भाई ।
बिन आज्ञा कृत करम दुरन्ता । जानौ पाप मोर वपु हन्ता ॥
तुव दुख देखि मोहिं कठिनाई । नृप आयसु मेटौ नहिं जाई
सहदेव नकुल बहुत दुखपावा । जोरिपाणि रानिहिं समुझावा
सुनिसुनि तेरे वचन अब, बाढ़त क्रोध अपार ।
मेटाजाय न नृपवचन विनयो बारहि बार ॥
मारौं कीचक क्षणकमहँ, भूपति आयसु पाय ।
करै अवज्ञा नारि अब, काकरि नरकहि जाय ॥
मास एक तू और निवारो । तब सकिहौं कीचक कहँ मारो ॥
इनहू ते तिय भई निरासा । पहुची भीमसेनके पासा ॥
सजल नयन भरि आंसू ढारे । मींजत नयन भये रतनारे ॥
पवनपुत तब यहि विधि जानी । विलखी ठाढ़ि द्वारपर रानी ॥
आयो द्वार लखे तिय नयना । ख्वात्तलेत कछु कहै न बयना ॥
बोली बिलखि आजु गृहमाहीं । कीचक दुष्ट गही ममबाहीं ॥
पै फिरी पुकारी । वे गुहारि लाग्यो नहि चारी ॥

अब तुम स्वामी रहो चुपाई । गहि सो दुष्ट मोहि लेजाई ॥
सुन्यो श्रवण जब सकल प्रसङ्गा । रोष बढ़ो विकसो तब अङ्गा ॥
लखि त्रियके मुखकै मलिनाई । दौरि गई दृग में अरुणाई ॥
बूझत वचन उतर नहि देतो । गहवर बयन नयन जल सेतो ॥
कीचकको सुनि तब सुख नामा । भयो सक्रोध भीम बलधामा ॥
देखत जो न वधौं चण जाई । कोटि युधिष्ठिर केरि दोहाई ॥

लीन्हीं मीच बुलायकै, नीच आपने हाथ ।
जीतो चाहत श्वाननर, सिंह बलीके साथ ॥

दादुर जुरा चहत हरि सङ्गा । चीतहि जीता चहै कुरङ्गा ॥
चहत कपोत बाज सन रारी । मूषक जीतन चहत मँजारी ॥
गर्दभ चहत मतङ्गहि ठेलो । चहत भुजङ्ग गरुड़सङ्ग खेलो ॥
तुमसन कही वचन कटुवाणी । अपने हाथ मीचु वहि मांगी ॥
कहेसि विलोम वचनतजि ज्ञाना ।यहिकर काल आय नियराना॥
सैरन्ध्री यहि विधि समुझाई । चल्यो भीम त्रियरूप बनाई ॥
नाच महल महँ बैठो भीमा । द्रौपद्रुझाय क्रोध करि जीमा ॥
तहाँ कामवश कीचक आवा । नारिजानि कुचपानि चलावा ॥
गहे भीम तब द्वौ भुज दण्डा । मल्लयुद्ध तहँ भयो अखण्डा ॥
कखिल भीम ताहि महि डारा ।चला पराय अधम हियहारा ॥
मोहि युधिष्ठिर भूप दुहाई । कीचकवधौं जियत नहि जाई ॥

कालसर्पसौं खेलेउ, कामलहरि अकुलाय ।
पूंछ मरोरी सिंहकी, अब जीवत नहि जाय ॥

पकरो भीम क्रोध करि धाई । भिरो बहुरि शठ ताल बजाई ॥
दो महँ हारि न कोई मानैं । कोपि अमितगति युद्धहि ठानैं
अतिबल भीमसेन तब कीन्हा । पटक्यो भूमि कंठपग दीन्हा।
मारि दुष्ट प्राणन विनकीन्हा । मृत उठाय पहुमि नव दीन्हा
महा खोहड़े राखो जाई । जानै पुरजन नहिं त्यहि भाई ॥
हारेउ भीम तहाँ बलवाना । परेउ अधम तनु मृत्यु समाना
सरत ढहेउ गृह शब्द अघाता । सुनि नरेश जागो अधराता
चाहेउ चलन खड्ग गहि पानी । बरजेउ युगल जोरि कर रा
नाम सैरन्ध्री तुव घर दासी । कीचक करी तासुसँग हांसी
गधरव पञ्च तासु रखवारे । जानि परी कीचक उन मारे ॥
चपकि रहेउ नृप तौ कुशलाई । सुनि त्रियवचन बैठ अरगाई ॥
कह मुनि सुनु जनमेजयराजा । कहेउसोभीम कीन्ह जसकाजा॥

मारि दुष्ट धरि खोहमें, मनकी व्यथा नशाय ।
अर्द्धनिशा सुत पवनको, निजथलपहुँचोजाय ॥
जागे पुरजन सदनप्रति, प्रातभये नर नारि ।
मृतकदेखि कीचक नहीं, कोउ नहिं सक्यो विचारि ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

अन्तःपुर चरवर वदन, सुधि पाई नरपाल ।
सचिव सभासद सुभटसँग, तहँ आयो तिहिकाल ॥

नृप विलोकि शङ्का उपजावा । सजलनयनमुखवचननआवा ॥
शोकविवश तनु दशा विसारी । करत विलाप ताप अनिभारी ॥
हियहिवध्यो जानिनहिं जाई । बारबार कहि नृप बिलखाई ॥
करियउपायमिलेज्यहिंशोधा । विनअरिनिधनमिटिहिंनहिंक्रोधा ॥
बंधु वचन सुधि ताच्छण पाई । भूपति की तरुणी तह आई ॥
रोदन करत बहुत अकुलानी । देखत भूप व्यथा तनुजानी ॥
अपने मनही महँ दुख माना । बारबार यह वचन बखाना ॥
कीचक कौन शूर संहारो । जासों युद्ध जुरो सो हारो ॥
यह नहीं घत और न आयो । भूलिरहेउ कछु साधन पायो ॥
मि महीप कह वचन बखानी। बोलीविलखि वदन ह्वै रानी ॥

रहै तुम्हारे धाममें, जहि सैरन्ध्री नाम ।
गन्धरव रच्छक तासुकै, रच्छत आठौ याम ॥
कीचक अति आसक्त ह्वै, गहि सैरन्ध्री बाल ।
नाही दिनते मैं लख्यो, घेरो है यहि काल ।

कीचक तिन गन्धर्व्वन मारे । नहि काहूपर गयउ उबारे ॥
वचलि क्रिया तासुकी कीजै । लैं लैं कुश सब अञ्जली दीजै ॥
रानी वचन श्रवण सुनि राजा । लागो करन क्रियाको साजा ॥
व कुतवालैं बोल्यो राऊ । प्रजालोग सब वेगि बोलाऊ
कीचकको घाटै जाऊ । विधिसों सर्व्व क्रिया करवाऊ ॥
स शवि कहहि नीचो अङ्गा । कुवतैं सुरूत होइ सो भङ्गा ॥
उत्तम जाति होय नर कोई । कुवै अङ्ग कीचक कर सोई ॥

गयो नृपति सुधि आय तुरन्ता । कहेउ लै आउ सुवारजयन्ता ॥
बार बार तासन कह राऊ । कीचक मृतक घाट लै जाऊ ॥
सुन्यो न वचन रहेउ चुपकाई । फेरि नृपति असकहेउ रिसाई ॥
तै मेटो बल वचन हमारा । मूढ कहां तव होइ गुजारा ॥
मरत्यउँ तोहिं मूढ़ अज्ञानी । मानत पाण्डु सुवनक आनी ॥
धर्म्मराज पठयो तकि मोहीं । सरवरि गनौ वन्धुकी तोहीं ॥
नृपके वचनश्रवण सुनि भीमा । कहेउवचनक्रोधित ह्वै सीमा ॥

मारो कीचक मैं कहां, कत कीजन है क्रोध ।
मो दुख मानत वादिनृप, अन्तहि लीजे शोध ॥
भोजन भाजन छाँड़िके, मैं नहिं अन्तहि जाउँ ।
मनसा वाचा कर्म्मणा, तुमकहं बहुत डेराउँ ॥
करौ कृपा नरनाहु, यहि विधिकही जयन्तसों ।
कीचकको लैजाहु, दूरि नगरते कृति करहु ॥
बन्धु कुटुम्बी सोइ, मृत्यु कही सों काढ़िके ।
कहा परी है मोहिं, ऐसे कर्म्म न हौं करौं ॥

बार बार इमि कह्यो भुवारा । कृति करवावहु जाय सुवारा ॥
देखि कङ्क ऋषि केर इशारा । तब जयन्त इमि वचन उचारा ॥
जो अब भोजनको कछु पावों । तौ कीचक लै घाटे जावों ॥
भोजन अमित भूप मँगवावा । बठि जयन्त तहां सब खावा ॥
मेवा बहु पकवान मिठाई । खात जयन्त न होत अघाई ॥
वै कीचकके सब भाई । बरणि विविध बल शील बड़ाई ॥

कह नरेश सुनु वचन जयन्ता । मृतढिग भोजन कर्मदुरन्ता ॥
राजा लोध्य करत कतदेरा । क्रियाकरनहित होत अबेरा ॥

करि भोजन बलवन्ततब, कौचक लियो उठाय ।
दूरि नगर ते घाट पर, मृतक उतारो जाइ ॥
इत कौचक के बन्धुसब, पकरि सैरन्ध्री बाल ।
जारन चल्यो कुबन्धुसँग, लियोचल्योतेहि काल ॥

जेहि हित मारो बन्धु हमारो । पकरि पांय वाके सङ्ग जारो ॥
बरजत गुरजन सो नहिं माने । काहू वचन चित्त नहिं आने ॥
करत विलाप द्रौपदी रानी । को राखै बिन शारङ्गपानी ॥
विविधभांतिसोंकरतविलापा । अतिशयकङ्कऋषिहिदुखव्यापा ॥
देखत रह्यो विराट भुवाला । सोउ न रोकि सक्यो तेहिकाला ॥
पकरि ताहि तहँवां लै आयो । कौचकमृतक जहां पौढ़ायो ॥
भरि भरि घृतघट केतिक आने । चन्दन अगर न जायँ बखाने ॥
तहं द्रौपदी अधिक सन्तापा । हा गन्धरव कहिकरतविलापा ॥
कवत मोहिं तुव बरत दरेरा । तुवबल थकितभयो यहिबेरा ॥

रुदन करत लखि द्रौपदी, गृह तब चल्यो जयन्त ।
क्रोध बढ़ेउ सब अङ्ग में, देखत कर्म्म दुरन्त ॥
वसन उतारि धरेउ कहूं, भीम भीम ह्वै धाय ।
फूलिगात दूनो भयो, उपमा कही न जाय ॥

है गये अरुण नयन रतनारे । उठो क्रोध नहिं रहत सम्भारे ॥
भृकुटि कुटिलअतिक्रोधप्रचण्डा । कालदण्ड सम द्वौ भुजदण्डा

कुधर समान कलेवर भयऊ। सरवरनिकटभीमचलिगयऊ॥
कर विचार करौं अब सोई। जेहिविधबचैंनिधनखलहोई॥
वेष छिपाय बन्यौं गन्धर्व्वा। कीचक बन्धु वधौं जेहि सर्व्वा॥
मरैं सकल सो करौं उपाई। जेहिखलएकजियतनहिं जाई॥
बसन उतारि खोह धरि दीन्हा। भीमरूप नव भीमहिकीन्हा॥
नवरूप तनु परम मनङ्गा। कीच चढ़ाइ लीन्ह सब अङ्गा॥

कीच चढ़ाइ सकल तनु, केश दिये मुकराय।
कर तरुवरलै वज्र सम, दै दिखराई आय॥

कीचक बन्धु भजे अकुलाई। कह गन्धर्व्व पहुँचि गा आई॥
भीम बटोरि वीर सब लयऊ। सुरजनु वज्र गिरिन को हयऊ॥
भीम लपेटि पङ्क तनु धायो। बड़े केश बहुधा मुकरायो॥
वेष भयानक लखि विकरारा। चहुँदिशिभागि चलेनरदारा॥
हने हाँकि कीचक के भाई। वृक्ष घात दै गर्द मिलाई॥
है निशङ्क सब लोथ उठायो। चिता बनाइ मकेलि चढ़ायो॥
ताके हाथ कहा हथियारू। सोसब बरणौं ताको सारू॥
कह जयन्त कछु बरणि न जाई। जब गन्धर्व्व पहूँचो आई॥
अधम भजे नर देखत जोई। करत पुकार भूपसन सोई॥

गये शेष तहँ नर जिते, कह्यो भूपसन जाय।
कर तरुवर गन्धर्व्वले, तेहि थल पहुँचो आय॥

रूप गहे द्रुम पानी। कीचककुलको घालिसिघानी॥
पठवहु सब योधा। लेयँ जाय तिन्हकरसब शोधा॥

जब यह वचन सुन्यो नृपकाना । भयो सशङ्क अचम्भव माना ॥
अङ्ग अङ्ग हालेउ सब गाता । मुखसे निकसिसकत नहिबाता ॥
वह अब कीचक भीम जराये। । फिरिजहँ द्रुपदसुता तहँआयो ॥
खलवधि भीम निकट जब गयऊ । रानीअङ्गन अति सुखभयऊ ॥
बोली वचन हास करि रानी । राख्यो तुम पाण्डव को पानी ॥
हता सो अर्ज्जुन भयो जनाना । तुमलगिरख्यो वंशकोवाना ॥
जब द्रौपदी कही यह बाता । भयो प्रसन्न भीम सब गाता ॥

गृहतन पठई द्रौपदी, आपु गये सर पास ।
न्हायधोय पहिरे वसन, आयो आपु अवास ॥
सरवर तर द्रुम डारिकै, आयो भूप निकेत ।
धाय धाय नर नारिसब, पूँछत करिकरि हेत ॥

पहुंचो भीम भूप दरबारा । समाचार कछु कहेउ भुवारा ॥
कहु जयन्त केसी भै भाई । कसे गन्धरव पहुंचो आई ॥
अरुण नयन देखोयुतक्रोधा । ताकी सरवरि और न योधा ॥
हाथ तमाल मनहुं यम दण्डा । कालदण्ड सम बाहु प्रचण्डा ॥
अति विशालतनु वेषकरोला । देखिय जनु कालहुके काला ॥
कीचक बन्धु हते बलभारे । सोतेहि मम देखत संहारे ॥
बड़े वीर मारे बलवाना । कोऊ भागि न पायो जाना ॥
तहँ नृप एक बुद्धि मोहिं आई । गिरिकन्दरमहँ रह्यो लुकाई ॥
रूप देव मम कीन्ह सहारा । भूप कृपा करि मोहिं उबारा ॥
निकरि न सक्योंतामुकीत्रासा । गिरि कन्दरभे देखि तमासा ॥

नीचे ऊपर काठ करि, कीचक दीन्हों डारि ।
आयो वीर कराल तहँ, जहँ सैरन्ध्री नारि ॥
ताके कान मांझ कछु कहेऊ । हौं समझ बैठो तहँ रहेऊ ॥
देखत सो उड़ि गयो अकासा । डारि दियो द्रुम सरवर पासा ॥
सुनत नरेश चित्त भयमानी । देवि रूप सैरन्ध्री जानी ॥
अरु गन्धर्व भक्ति उर राख्यो । निशिदिनन्टपसेवाअभिलाख्यो ॥
पाचौ बाधव कालहि पाई । भये एकथल सबजन आई ॥
कहा द्रौपदी न्टपहि सुनाई । चारि बन्धु तुम लाजविहाई ॥
द्रुपदकुमारि बार बहु भाखो । भीमलाज मेरी हठि राखो ॥
सुनत प्रसन्न भये सब भाई । कोउ सकै नहिं भेदहि पाई ॥
रही राति कछु प्रात तुलाना । गये सकल निजनिज अस्थाना ॥
यहिविधि बीते दिवस कछु, न्टपति विराट निकेत ।
दुरे रहे पाण्डव सकल, कालक्षेपके हेत ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

वैशम्पायन सों कहो, जन्मेजय यह बात ।
कहौकथाममवंशको सुनत न श्रवण अघात ॥
ऋषि चितदै सुनहु भुवारा । कथाविचित्र अमियरससारा ॥
न्टप यह सुधि पाई । कीचक केहुँ मारे उग्रतभाई ॥
कयौं ते पूछि नरेशा । कीचकवधबड मोहिं अँदेशा ॥

सहसनागबल अति बरियारा । कहौं कर्ण केहिं कीचक मारा ॥
सुनत कर्ण इमि कह्यो बखाना । कहौं सुनहु नृप मैं जसजाना॥
मो मन उपजत यह सन्देहू । भीम कर्‌यो है कारज येहू ॥
पठवहु दूत तहाँ चलि जाई । सुधिलै खबरिगनावहि आई ॥
भूपतिकी आज्ञा जब पाई । पठयहु शकुनि दूत समुदाई ॥
चले दूत नहिं लागी बारा । पहुंचे देश विराट भुवारा ॥
सकल भांति तिन कीन्ह ढिठाई । तहां न सुधि पाण्डव की पाई
गये थकित असे हलकारा । आय नृपतिकहँ कीन्ह जुहारा ॥
जोरिपाणि तिन विनय सुनाई । पाण्डवको कहुँ सुधि नहिंपाई
सकल विराटपुरी हम देखी । लेत शोध तहँ रहे विशेखी ॥
जेहि मारे कीचक सौ भाई । सो कछुभेद जानि नहिं जाई ॥
देखे न पाण्डुसुवन तेहिठावां । सुन्यो श्रवणनहिं एकौ नावां ॥
कह्यो दूत नृप सों वच येहू । सुनि नरेश मन भा सन्देहू ॥

भूपति मन संदेहकरि, बोले भीषम द्रोन ।
पुर बिराट कीचक वधे, केहिधौं कारण कौन ॥
कीचकको संहारिहै, भीम विना नहि और ।
कह्यो द्रोण गजसहससम, सुभटनको शिर मौर ॥

कहो सुशर्मा नृप सुनिलीजै । अब कछु और विचार न कीजै ॥
मै चमू कछु देहु सहाई । वेढ़ौं नृप विराटकी गाई ॥
जो यतनतें वे नहिं ऐहैं । धेनुहरण सुनि तुरतै धैहैं ॥
अभिहरण सुनि नहिं सहिहैं हैं । लागि गोहारि चले सब ऐहैं॥

होत युद्ध नहिं रहहि सँभारा। तहं खुलि नैहै गतु तुम्हारा।
भूपति अमित सैन सँगदीन्हीं। विदावेगि तेहि अवसरकीन्हीं।
गमनी सङ्ग चमू चतुरङ्गा। उठी धूरि छपि गयो पतङ्गा॥
शकुनि बोलाय कह्यो इमिराजा। अब मत्र करहु कटकका साजा

चलीचमू चतुरङ्गिनी, गज तुरङ्गके यूथ।
रथी महारथि अतिरथीं, सुभटपदातिवरूथ॥

चली सेन को वरणै पारा। बाजे गोमुख शंख नगारा॥
झांझ ढोल अरु भेरि बजाई। मारू राग सहित सहनाई॥
चलत न्टपहि अतिहोत अतंका। टेर नकीव भये वहु डङ्का॥
बिरद बखानि बन्दिजन बोले। हाली धरा धराधर डोले॥
दल कलिङ्ग भगदत्त महीपा। आये साजि नरेश समीपा॥
द्विरद दुमत्त दुशासन अली। शकुनी कृतवर्मा से चली॥
विकरण करण शल्य बलधामा। कृपाचार्य अरु अश्वत्थामा॥
सिन्धुराज लच्चन बलवाना। सजिसजिनिजदलहनैनिशाना॥
बाहुलीक गङ्गाधर राजा। न्टपकाम्बोज कीन रणसाजा॥
सौ बान्धव दुर्योधन केरे। औरौ सजे वीर बहुतेरे॥
भीषम द्रोण अलम्बुष साजे। सोमदत्त भूरिश्रव गाजे॥
दच्चिण दिशा सुशर्मा घेरा। उत्तर दिशि कुरुनाथ गरेरा॥

वन वीथिन छाये सुभट, लिये देश सब घेरि
बाँध्यो ग्वालसमूह तहँ, लीन्हीं धेनु खदेरि॥

कितक ग्वाल लिय बाँधि सुशर्मा । केतिक भाजिगये वशभर्मा ॥
ते नरेशपहँ जाय पुकारें । धेनु वृन्द हरि गये तुम्हारे ॥
सेनापति पठवहु बलदाई । शत्रु जीति गो लेइ छोड़ाई ॥
गोधन हरो सुशर्मा आई । उठि नरेश चलि लेहु छोड़ाई ॥
जो न नरेश होहु असवारा । तौनहि गोधन मिलिहि तुम्हारा ॥
और न सकहि सुशर्महि जीती । सुनु नरेश मन मान प्रतीती ॥
देखि सचिव दिशिन्हपतिसुजाना । करिसुधिकीचककोपकितान ॥

कीचककहँ सुमिरे न्हपति, यह कहि बारहिं बार ।
वा बिन सुरभी बेढ़ियो, को कहि लखै पुकार ॥
हरुये बोल्यो भूप तब, सेनापाल बुलाय ।
धाइ सुशर्मा वीर जे, सुरभी लेहु छुड़ाय ॥

उत्तर शङ्ख न्हपति सुत वीरा । औरो सजे अमित रणधीरा ॥
चले नरेश साजिकै साजा । बाजे विपुल जुझाऊ बाजा ॥
गज रथ अरु पदाति बहु सङ्गा । बहु कुरङ्गगति चले तुरङ्गा ॥
करि बहु यतन सुशर्मा हांकी । चलिनहिं सकत धेनुसबथाकी ॥
सहदेव खुरा व्याधि उपजावा । ताते धेनु सकत नहिं जावा ॥
तब लगि सुभट गये सब आई । बाजै पटह शङ्ख सहनाई ॥
पणव धेनु मुख भेरि समूहा । बाजे कटक भयो अति हूहा ॥
उभय कटकमहँ बाजन बाजे । करि करि नाद वीर सब साजे ॥
दुइ दिशि दल उमड़े घनघोरा । जहँ तहँ सुभट भिरें बरजोरा ॥
धन्धन्ध रण भयो असूझा । अपन बिरान परत नहिं सूझा ॥

विविध भाँति तनु अस्त्र प्रहारे। टरे न एक एकके टारे॥
उत्तर कुंवर आनि रण मण्ड्यो। बाणनते रिपु मैन विहण्डो॥
देखि सुशर्मा क्रोध अपारा। करि सन्धान सारथी मारा॥
करि अति नाद सुशर्मा गाजे। चढ़ि तुरङ्ग उत्तर रण भाजे॥
गयो नगर तन अति भयमानी। ले धनु शङ्ख कीन्ह रण आनी॥

शङ्ख सुशर्मा वीरते. परो आनि जब जोर।
महा भयङ्कर युद्ध भो, विशिख चले चहुंओर॥
विजय बृहन्नल घर रहो, पाण्डुपुत्र तहँ चारि।
देखत कौतुक युद्धको, सकै न कोऊ हारि॥

पञ्चबाण तब शङ्ख प्रहारे। ते शर काटि सुशर्मा डारे॥
शरबहु त्यागि कीन्ह अतिजूझा। मूर्च्छितकुँवरनयननहिसूझा॥
देखि सारथी रथी अचेता। दल पौछेगा यतन समेता॥
तब विराट नृप करि सन्धाना। एक बार मारे सौ बाना॥
तेशर विशिख सुशर्मा काटे। बाण पचीस क्रोध करि छाँटे॥
मूर्च्छित भयो विराट भुवारा। करिनिबन्ध निजरथपरडारा॥
वर्षन बाण सुशर्मा लागा। भयो अधीर कटक सब भागा॥
नृपहि बान्धि सब जीति सहाई। चल्यो धेनु लै शङ्ख बजाई॥

सहदेव वपुष गुवालके, कङ्क ऋषिहि शिरनाय।
टेरि सुशर्मा हाँकदै, भिरे ततत्क्षण जाय॥
मत्त करी दल तासुको, अंकुश टेर सुनाय।
फेरो बलकरि सिंह ज्यों, महा कोपि धर धाय॥

भयो युद्ध कछु कहत बनै ना । देखतथकित भई सब सैना ॥
मल्लयुद्ध तहँ भयो अपारा । लात घात मुष्टिका प्रहारा ॥
भिरहिंगिरहिंउठिलरहिंसँभारी । अतिबलयुगल न मानैहारी ॥
तबहि सुशर्मा बलकरि हारो । पोण्डुपुत्र गहि धरणि पछारो ॥
मल्लयुद्ध करि दल विचलायो । छोरिविराटहि दलपहँलायो ॥
भीमसेन गज यूथ सँहारे । पकरि तुरङ्ग तुरङ्गन मारे ॥
गहि पदातिके शीश उपारे । और सबै मल्लनको मारे ॥
बारहि बार भीम रण गाजे । सुनि सुनि नाद शत्रु सब भाजे ॥
नकुल कीन्ह तब खड्ग प्रहारा । कटी सेन बहि शोणितधारा ॥

बही सरित तहँ रक्तकी, गयो सुशर्मा भाजि ।
छोरि विराटहि लै चले, पाण्डपुत्र रणगाजि ॥

आय कङ्क कहँ नायो माथा । देखिसकलदल भयोसनाथा ॥
फिरी धेनु सुख भयो अपारा । गृहकहँ चल्यो विराट भुवारा ॥
उत्तर दिशि दुर्योधन राई । बेढ़ि लई सुरभी समुदाई ॥
द्रोण दुशासन अरु भगदन्ता । किते यूहलै चले तुरन्ता ॥
धेनु वृन्द यक कर्ण विलोकी । रथ दौराय लीन्ह तहँ रोकी ॥
मिथुना ग्वाल धेनु लै भाजा । तेहितहं खुराव्याधि उपराजा ॥
बहु विधि मारि ग्वालगण थाके । अचलभयोधनुचलन न हांके ॥
मिथना शाप कर्ण कहं दीन्हा । फलपैहो तुम आपन
जैसे अचल कीन्ह धनु मोरा । भारतमें अटकै रथ तोर

अपर ग्वालगण आइके, बहुविधि करी पुकार।
उत्तर उत्तरकी दिशा, वेढो धेनु तुम्हार॥

सुरभी शत हरिगई तुम्हारी। बैठ सुचिन्त सदन महंभारी॥
हरी एक दुर्योधन गाई। एक दुशासन लै हंकवाई॥
करिवर एक कर्ण हरि लीन्हा। कृतवर्मा आगे धरि दीन्हा॥
नृप भगदत्त गाय बहु तेरी। हरे यूथ चहुं ओर गरेरी॥
पीत श्याम सुरभी बहुचोरी। हरिलीन्हीं कपिला अरु धोरी॥
लक्ष्मन कुंवर हरे यक यूहा। लै कलिङ्ग यक धेनु समूहा॥
कुंवर पुकार श्रवण सुनु मेरी। हरी द्रोण सुरभी बहुतेरी॥
लिये जात धन अस्वत्थामा। उत्तर दिशि उत्तर बलधामा॥

ग्वाल विलापकलाप करि, उत्तरते बहुभांति।
कही तुम्हारी धेनु हरि, लीन्हें कुरुपति जाति॥

बाहुलीक गङ्गाधर गाई। हरि काम्बोज लीन्ह अगुवाई॥
सोमदत्त भीषण रण गाढ़े। शकुनी शल्य रोकि मग ठाढ़े॥
करतकुलाहल गिरिगिरिजाता। दीरघ दीरघ स्वर करिवात
कहतगोप करि बिबिधबिलापा। धेनुहरण सुनि तोहि न व्या
ऐसो धिक जीवन जग तोरा। शालत उर न वचन सुनि मोरा
उत्तर कहत सुनहु सब ग्वाला। सेनासहित न भवनभुवाला
रथ नहिं सारथि भाई। होत लेत मैं धेनु छुड़ाई॥
मेरा रथ हांकत कोई। कौरव जियत न छाँड़ौं कोई॥

हठकरि कह्यउ काज ज्यहिहोई। उत्तरको रथ हांकै सोई॥
सुनत वचन आतुरसो आई। सङ्ग मैरंध्री लीन्हि लेवाई॥

जाय पार्थपहँ रुदन करि, गई कण्ठ लपटाय।
मलिन वसन गुड़िया भई, खेलत न मोहिं सोहाय॥
सुन्योश्रवण यहिपुर निकट, आयो है कुरुराय।
तिनको भूषणवसन गुरु, मोकहँ देउ छिनाय॥

जबलगि वचन करौ फुर मोरा। तबलगि कण्ठ न छाँड़ों तोरा॥
भूषण वसन कौरवनकेरा। विन आने नहि होय निवेरा॥
अर्ज्जुनते उत्तरा कुमारी। बोली बहुरि नयन भरि वारी॥
भीषम द्रोण कर्ण उरमाला। दुर्योधनको मुकुट विशाला॥
देहु गुरु म्वहिं आनि छिनाई। यहिविधि वार वार रट लाई॥
कहत द्रौपदी श्रवणन बानी। सभाशुद्धि सब तौहिं भुलानी॥
बीती अवधि डरहु कहि काजा। लरहु निकटआयो कुरुराजा॥
क्षत्रिय युद्ध डरहिं जो पारथ। कर्म्म धर्म्म बहु ताहि अकारथ॥
का क्षत्रिय द्विज गाइन काजा। उठि न लरै कुल आवै लाजा॥
तुम सरसात प्रबल त्रिय नाहीं। जियडेरातजिमिपियपहँजाहीं॥

चित्तचाउ रत साहसी, महाबाहु बलधाम।
बृहन्नलाको रूपधरि, तुम छांड़उ वह नाम॥

ओहठिरह्यउचुपकितुमपारथ। करौ युद्ध है उत्तर स्वारथ॥
द्रौपदी श्रवणलगि बाता। भयहगअरुणफूलिसबगाता॥
उत्तर वचन रसाला। देहु मँगाय वसन मणिमाला॥

वर्षदिवसको अवधि वढि, गये और दिनवीनि।
कीजै युद्ध निशङ्क ह्वै, रहो कौनकी भीनि।
भयो वृहन्नल सारथी, रथ आरूढ्यो कुमार।
साजि कटक लीन्हों धनुष, कोपि गह्यो तलवार॥
गन्धर्बन जे मन्त्र सिखाये। सो पढि पार्थ तुरङ्ग उठाये॥
ह्वै सारथी वेगि रथ हांको। औघट बाट न कानन ताको॥
कौरवदल लखि सिन्धुसमाना। उत्तरके घट रह्यो न प्राना॥
गाजत गज हिंसत हैं घोरा। दुन्दुभि भेरिनाद अतिघोरा॥
शङ्खनाद पूरे सब कोई। मारु माह सब दलमहँ होई॥
द्वन्द घराट ध्वनि अति ठहनाई। मारू राग सहित सहनाई॥
रङ्ग रङ्ग बैरख फहराई। हरित पीत सित श्याम सोहाई॥
बाजत सेन सेन पर डङ्का। वर्णै बन्दिजन कहत अतङ्का॥
सारथि मन उत्तरकर जोरा। लै चलु भागि भवन रथमोरा।
बार बार तेहि विनय बखानी। एकौ वात न सारथि मानी॥
करत विनय सो नहिं सुनत, रथ त्याग्यौ अकुलाइ।
भाजत लखि उत्तर कुंवर, गहो पार्थ तब धाइ॥
बांधि धरो रथ ऊपर आई। सन्मख चल्यो सेनपर धाई॥
तब गुरु द्रोण पार्थ पहिचान्यो। सबहीते यहिभांति वखान्यो॥
बांधि रथी रथ ऊपर धारो। ह्वै निशङ्क रणको पगुधारो॥
गाहन सागर संग्रामा। भुजवल पैज करी बलधामा॥
जग ह्व सब धन बाणा। लेह शूल अरु शक्ति कृपाणा॥

द्विरद यूथ देखत अति भारी । भादौं जलदघटा जनुकारी ॥
रथके ठाट भूमि सब छाये । परै न भूपर तिल छिटकाये ॥
तुरंग पदाति विलोकि अपारा । भयो सशङ्क विराटकुमारा ॥

उत्तरसों सारथि कह्यो, भय न करहु कछु यङ्क ।
सकल निपातौं अरिचमू, रहियो आपनिशङ्क ॥
अस कहि फेरो तुरङ्गरथ, सुनि पाण्डवकुलदीप ।
पलकनबीतो विपिनमहँ, लैगे नगर समीप ॥
अन्धकूप तरुवर शमी, तापर धनु अरु बाण ।
वेगि लै आवहु मो निकट, गञ्जौं अरिदल प्राण ॥

सुनत वचन उत्तर हरषाई । त्यहि द्रुमनिकट तुरत चलि जाई ।
चढ़ेउ पार्थको आज्ञा मानी । अस्त्र सनाह विलोक्यो आनी ॥
पार्थ सुनौ मणिश्वेत सनाहा । श्वेतै धनुष श्वेतगुण आहा
आनौ वेगि छुवै मतिसोई । अस्त्रसनाह नृपतिकर होई ॥
फिरि देख्यो उत्तरा कुमारा । अर्जुनते यह वचन उचारा ॥
कनकरचितमणिखचितसोहाये । धनुषसनाह देखि युग पाये ॥
आयसु होइ डारि महि दीजै । कह पारथ यह कतमत कीजै ॥
यह सहदेव नकुल धनु गेरा । सहि न सकै मम खैंच दरेरा ॥
सो उत्तर छांड़ेउ अरगाई । और सनाह विलोक्यो जाई ॥
ट भांति उत्तर बल करेऊ । जब न उठयो तब सोपरिहरेऊ॥
न धनुष कवच हिय हारो । अर्जुनते इमि वचन उचारो ।

उठ्यो न धनुषसनाहकर, कोटि भांति बलकीन्ह ।
लोहमयी जनु वज्रसम, केहि निमित्त कै दीन्ह ॥
परी गदा गिरिवर समताई । है केहिका स्वहिं देव बताई ॥
कह अर्जुन उत्तरा कुमारा । याको सुनहु सकल व्यवहारा ॥
लोहमयी धनु कवच कराला । भीमसेनको गदा विशाला ॥
लावहु और करिय रणजाई । मग हमार देखत कुरुराई ॥
लाव वेगि धनु कवच हमारा । पल लागत जनु कल्प अपारा ॥
गृह जाहि भाजि कुरुराई । फिरि का करबयुद्ध महँ जाई ॥
जय तृण जाइ तहँ देख्यो । संभ्रम भयो कुंवर यह लेख्यो ॥
वत पाणि उत्तरा कुमारा । अहि है विशिखकरत फुंकारा ॥
वै किरीट स्वै कवच विलोका । रविसमतेज धनुष ऊवलोका ॥
ारथते तव कब्बउ कुमारा । धनु जनु दिनकर तेज पसारा ॥
त्र आयुध हम छुवन न पावै । व्याल रूप शर काटन धावै ॥
सुनु सारथि मम वचन सुहावें । मोपर अस्त्र न जांय उठायें ॥
यह सुनिकै पारथ हरषाई । कवच अस्त्र सब लीन्ह उठाई ॥
निर्गुण धनु गुण करि भोई, सूधे कीन्हें बाण ।
काढो गङ्गा भूमिते, धाये सकल कृपाण ॥
पहिरि कवच शिर टोपदै, निज धनु करि टङ्कोर ।
हांक्योरथ बहुकोप करि, पहुंचो कटक वहोर ॥
वीर धनुर्द्धर धीरकै, मनमहँ कछु न हारि ।
भा दुर्घट सब घटनमहँ, कौरवदल अनिकारि ॥

बैठो आनि ध्वजा हनुमन्ता । जाके बलको नहि कछुअन्ता ॥
करि अति क्रोध धनुपशर लीन्हों । देवदत्त शङ्खध्वनि कीन्हों ॥
चल्यो पार्थ निज रोष बढ़ाई । जीतन हित दुर्योधन राई ॥
सारथिते उत्तर कर जोरी । कहै सुनहु विनती कछु मोरी ॥
तुमते कहौं बृहन्नल बांची । सोते कहौ बात सब सांची
कौन आप स्वहि देउ बताई । सो मनको संशय मिटि जाई ॥
कह अर्ज्जुन भाषत सतिभाऊ । है ऋषि कङ्क युधिष्ठिर राऊ ॥
हौं अर्ज्जुन यह सुनहु कुमारा । भीम जयन्त तुम्हार सुवारा ॥
सैनी सहदेव नामहिं जानो । बाहुक नकुल सैन है मानो ॥

वह है रानी द्रौपदी, जेहि सैरन्ध्री नाम ।
कछु न भय चित कीजिये, जीतौं सब संग्राम ॥
तुम्हरी सुरभी सो हरी, लेत हमारो शोध ॥
अब सुन बीते सो अवधि, तब मैं कीन्हों क्रोध ॥

इति षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

उत्तर फिरि लागो चरण, सुनु स्वामी सति भाय ।
दशौ नाम अपने कहौ, तौ मो मन पतियाय ॥
कौरव वंश जन्म हम लीन्हा । अर्ज्जुननाम व्याससुनिकीन्हा ॥
थ सुर द्विरद उतारा । पार्थ नाम भा जगत हमारा ॥
ो बानकवच संग्रामा । कीन्हों सुनासीरको कामा ॥

भये प्रसन्न समेत समाजा । विजयी नाम धरो सुरराजा ॥
पुनि नरेश शिर मुकुट बँधावा । तहां किरीटी नाम कहावा ॥
द्रुपदनरेश सेन जब काटी । एक मिलाय मांस अक्समाटी ॥
पुनि विभत्सरसकरि रणराखा । नाम विभत्स द्रोण यह भाखा॥
धनपति जीति दण्ड लै आना । नाम धनञ्जय कृष्ण बखाना ॥
द्वी कर जोरि करौं संग्रामा । परो मव्यसाची तब नामा ॥
श्वेत तुरङ्गम रथ महि आऊं । भयो पूर्व तवाजी तब नाऊं ॥

रथ साजत मै युद्धहित. ध्वज बैठत हनुमान ।
नाम कपिध्वज जग विदित. याहीते तू जान ॥

शब्द होत रहे हमरो बाना । शब्द भेद जग नाम बखाना ॥
औरहु सुनो विराट कुमारा । हम तुम्हार कीन्हों अपकारा ॥
बार बार विनवों कर जारी । सो सब चूक बकसियै मोरी ॥
भीमसेन शत कीचक मारे । ते अपराधी हते हमारे ॥
बरबस गह्यो द्रौपदी रानी । मारेउ भीम मानि गिल्यानी ॥
मारेउ मल्ल द्विरद गहिलायो । तेरे गृह हम अतिसुख पाये
तुम्हरे आनि विपति सब डारी । वर्ष दिवसको अवधि हमा
द्वादश वर्ष विपिन है आये । तव छायामह अति सुखपाये
सुनि यह श्रवण विराट कुमारा । जोरि युगलकर वचन उच
हलुको भारी जो हम कहेऊ । आप समर्थ श्रवणसुख लहे
जो कछु हमते भा अपराधू । सो सब क्षमा करो तुम साधू

वीर धनञ्जय क्रोधकरि, चल्यो मबल रथहांकि।
अतिबलचले तुरङ्ग तब, रहे शिथिलहै थाकि॥
पाय तेज गन्धर्व्वको, अति बल भये तुरङ्ग।
कही द्रोण गुरु पार्थसों, कौन करै रण रङ्ग॥

आय धनुर्द्धर भा रण काज। सन्मुख करै युद्धको आज॥
कौरवलो नहिं धीरज धरिहै। कौन वीर अर्ज्जुनमन लरिहै॥
दल जैहै चहुं ओर पराई। युद्ध जुरै नहि कोउ समु हाई॥
सुनहु सकल ममवचन सुहावा। याते अधिक शोच उर आवा॥
प्रलयकाल जेहि करै मशाना। कोधौं महै पार्थकर वाना॥
कोटि उपाय करो सब सोई। अर्ज्जुन जीति सके नहि कोई॥
यहिविधिकहि गुरु द्रोणबुझावा। भयो अपर नृपचरितसुहावा॥
प्रथम पार्थ युग बाण चलाये। ते गुरु द्रोण निकट चलि आये॥

एक गिरो गुरुचरणतर, एक श्रवणढिग आइ।
करि प्रणाम पारथ कही, परो भूमिपर जाइ॥
तजे पार्थ पुनि वाण युग, गयो पितामह पास॥
परो चरण यक श्रवण महँ, कीन्हों आय प्रकाश॥

प्रथम पितामह पार्थ प्रणामा। तुमते कहौं सुनहु बलधामा॥
पुनि अर्ज्जुन यह कह्यो सदेशा। तुम सम्मुख रणमोहिं अँदेशा॥
क्षमब नाथ अपराध हमारो। कुरुपनि हमैं वैर है भारो॥
द्यूत करि भूमि छुड़ाये। तेरह वर्ष महादुख पाये॥
आजु भयङ्कर रारो। अब न पितामह लागि हमारो॥

यह कहि वचन बाणमहिजाई । कह्यउ पितामह सबनसुनाई ॥
कह भीषम अब अर्ज्जुन आवा । करहुसकलमिलि रणको दावा ॥
सकल सजगह्वै गहि हथियारा । करहु युद्ध जनि करहु अबारा ॥

कहेउ द्रोण गांगेय ते, सुनिये वचन प्रमाण ।
अज्ञालागि मोसे कह्यो, यह अर्ज्जुनको बाण ॥

तुम सन्मुखरण उचित न मोको । ताते विनय सुनायो तोको ॥
पटद्यूत करि विपिन निकारा । तेरह वर्ष सह्यो दुख भारा ॥
व न गुरु अपराध हमारा । करिहौं कटक सकल संहारा ॥
अस कहि बाण परो महिजाई । ह्वै सचेत सब करहु लराई ॥
तेहि अवसर अर्ज्जुन तहँ आई । देखैं सकल वीर समुदाई ॥
गर्जत जहँ तहँ धनुष चढाये । तहँ कुरुनाथ देखि नहिपाये ॥
उत्तरते यह पार्थ बखाना । सुनु विराट सुत वचन प्रमाना ॥
अपरनिधननिसरहिनहिं काजा । चल रथहाकि जहाँ कुरुराजा ॥
सुनि विराटसुत तुरँग उठाये । जेहिदलन्टपतितहँाचलिआये ॥
लीन्हों पार्थ भूपकहँ ताको । लै गा वेगि कुँवर रथ हाँको ॥
भीष्म द्रोण सेना सब धाई । पहुँचो निकट भूपके आई ॥
हाहा तून सेन महँ भयऊ । दल तीनो यक मिल ह्वै गयऊ ॥
कह नरेश सब वीर बोलाई । को रोकैं अर्ज्जुनकहँ जाई ॥

जीतन पारथ वीर हित, बीटक लियो कलिंग ।
अचल मेरुसों रण रचो, कियो कोटिरणरंग ॥

नृप कलिंग अर्ज्जुन बल पाई। दो दिशि बाणवृन्द झरिलाई॥
दश शर तब कलिंग नृप छांटे। आवत पार्थ बीचही काटे॥
पुनि अर्ज्जुन दूकबाण प्रहारा। कुन्तल नृप कलिंगको मारा॥
पुनिशर हन्यो कालके आंके। काटेउ गजके ध्वजा पताके॥
गजतजि चल्यो अपररथ आई। कीन्ह कलिंग युद्ध अधिकाई॥
तब कलिंग कीन्हों अतिकोपा। शरन मारि पारथ रथ तोपा॥
अग्नि बाण तब पार्थ पँवारा। सब शर भये निमिषमहँछारा॥
पुनि शतविशिखकलिंग चलाये। ते सब अर्ज्जुन मारि गिराये॥

पार्थ सहसदश बाण ते, हतो कोप करि वीर।
मूर्च्छित गिरो कलिङ्गरण, धरि न सकत दल धीर॥

इति सप्तम अध्यायः॥ ७

जब कलिङ्ग मूर्च्छितभयो, तब विकरण रणसाजि।
कोपि शरासन बाण लै, आयो सन्मुख गाजि॥
तब बिकरण करि कोप चलाये। भूमि अकाश बाणते छाये॥
घोर युद्ध कीन्हों यहि भांती। ह्वैगै मनहुँ दिवसमहँ राती॥
अतिशय अन्धकारतह भयऊ। परै न लखिदिनकरछपिगयऊ
करण हनोक्रोधकरि जियमो। तीस बाण पारथके हियमो॥
य बाण क्रोध करि छंड्यो। पलमहँ शर विकरणके खंड्यो
बाण पांडुसुत छांटे। हय गय मरे अमित रथकाटे॥

कोटिन अर्व खर्व शर मारा। काटिसेन वहि शोणितधारा॥
परी लोथ धरणी पर पाटी। बूझि न परै शीश अरु माटी॥
कहूँ जंघ कर शिर पद डारे। कहूँ कबन्ध परे महि भारे॥

तब विकरण चालीस शर, हन्यो कौशबलवन्त।
कोटि बाण पारथ हन्यो, संगर भयो अनन्त॥
तब विकरण साहसरहित, भूमि परो मुरछाय।
देखि कर्ण बलवीर तब, आयो धनुष चढ़ाय॥

धनुष चढ़ाय कर्ण ललकारे। कठिन बाण अर्ज्जुन पर मारे॥
ते शर सर्व जिष्णु रण खंड्यो। करि अति क्रोध सहसशरछंड्यो॥
ते सब विशिख कर्ण पुनि काटे। लाघव शर पारथपर छांटे॥
आवत देखे बाण अपारा। अर्ज्जुन अग्निबाण तब मारा॥
कर्ण बाण जारे सब आगी। लागी जरन सेन सब भागी॥
वरुण बाण तब कर्ण चलायो। चण भीतर सब अनल बुतायो॥
अर्ज्जुन शर बूड़त जब जाना। मारो तुरत पवन को बाना॥
तासु चलत गा नीर सुखाई। ध्वजा पताका छल उड़ाई॥
अहिशर करणत्याग तब कीन्हा। नागनसकलपवनभखिलीन्हा॥
तब अर्ज्जुन शिखिबाण चलाये। मोरन सकल सर्पसम खाये॥
रविसुत अन्धकार शरपाग्यो। देखत सब पच्छीगण भाग्यो॥
परै देखि नहि नयन पसारा। व्याकुलभयो विराट कुमारा॥
अर्ज्जुन ने तब वचन उचारा। प्राण जात अब करहु उवारा॥
तब पारथ रवि बाण प्रहारा। तम भा दूरि भयो उजियारा॥

तब रविनन्दन कोप करि, मारे पर्वत वान।
पारथ रथपर शैलगण, चहुँ दिशि ते फहरान॥
वज्र बाण तब पार्थ प्रहारा। सबगिरिभयोनिमिष महँछारा।
तब रविसुवन क्रोध उपजावा। पढ़ि मुमन्त्र यमबाण चलावा
पार्थ कठिन शर आवत जाना। मृत्युबाण कीन्हों सन्धाना
अस्त्र शस्त्र लड़ि शीतलभयऊ। रविसुतकोपिकठिनशरलय
सो लै अर्ज्जुन के उर मारा। वही प्रवाह रुधिर कै धारा॥
रविनन्दन विराट सुत ताका। मारो कठिन बाण दै हाँका
अब अर्ज्जुन रण करहु सभारा। करौं निधन सारथी तुम्हारा
अर्ज्जुन लये बाण कर चोखे। कहो कर्ण भूल्यो जनिधोखे॥
यम अरु इन्द्र वरुण चलि आवैं। सारथि छाँह छुवन नहिपावैं॥
सुनु रविसुत केतिक बलतोरे। सन्मुख युद्ध करहि जो मोरे॥
यहकहिकै अर्ज्जुन शरछण्डित। कीन्होंविशिखकर्णकोखण्डित॥
पुनि पारथकृत विशिखप्रहारा। भंज्यो तुरँग सारथी मारा॥
शतसहस्र शर भालक लीन्हें। रविनन्दन उर भेदन कीन्हे॥
अगणित बाण हृदयमहँलागे। सहि न सके रविनन्दन भागे॥
रण अर्ज्जुनको नेकहू, सहि न सको स्वह्न बान।
रणमण्डित तजिकोभयो, रविसों तेज निधान॥
यो पराय कुरुपति आगे। विह्वल वचन कर्णतहँ पागे॥
नरेशभा कठिन मशाना। सहि न सक्यों अर्ज्जुनके बाना॥
यह सुन्यो कर्ण मुखबाता। क्रोध कृशानु जरै सब गाता॥

बोल्यो नृपति कुटिलकरिभौंहैं । अरुण वर्ण भे नयनरिसौंहैं ॥
क्षत्रियकुल बालक रिस गारी । करत युद्ध पग परै पछारी ॥
आयो कर्ण युद्ध ते भागो । तुमहिं विलोकिमोंहिरिसलागो ॥
तुम अर्ज्जुन कहँ पीठि देखाई । भ बड़िलाज वरणिनहिजाई ॥
भूरिश्रवा मगहपति आगे । द्रोणहिं बोलि कहन नृपलागे ॥
तुम सब मैं पाले यहि कामहिं । पारथ जीतिसकै संग्रामहिं ॥

यह कहिकै कुरुनाथ तब, नेकु न मानी शङ्क ।
चल्यो निशान बजाइ रण, भयो महा आतङ्क ॥

भयोचलत अशकुन अतिभारी । रविके अछत फेकरिसि आरी ॥
त्रिभुवन नभमण्डल घहराई । रहे गिद्ध दल ऊपर छाई ॥
बोल उलूक भयङ्कर वानी । विन वारिदनभ वरसतपानी ॥
करैं काक कङ्क नभ ठाटी । चलहिं जम्बुगण मारग काटी ॥
रासभ श्वान भयङ्कर बोली । बोलत धरा बारबहु डोली ॥
गिरि गिरि परत शरासवपाणी । परतश्वानतजिनिकरिकृपाणी ॥
खास दास कर छत्र विशाला । परोटूटि अरु नृप मणिमाला ॥
दिशा धूम्रि धरणी पर छाई । गये नृपति के चमर उड़ाई ॥
अशकुन और भयो यक बाँका । भूपति रथको टूट पताका ॥

भै शङ्का भूपाल तव, कह्यो द्रोण सन बोलि ।
अशकुन कारण सकलगुरु, हमहि बातबहु खोलि ॥

कह्यो द्रोणगुरु सनु कुरुराई । कहतशकुन अतिविकटल.
ह है रहा कठिन संग्रामा । होहिनिराश सकलबलध।

कह्यो वचन शुभरवोचुपाई। बोल्यो कर्ण नृपनि सन आई॥
रण भाजे मोकहँ भै लाजा। अब मैं लखब पार्थसन राजा॥
यह कहि कर्ण हांकिरथ दीन्हा। बाण वृष्टि पारथ पर कीन्हा॥
देखि पार्थ लीन्हों शारङ्गा। पुनि रणरच्यो कर्णके सङ्गा॥
उभय वीर लागे शर मारन। भांति सहस हजार हजारन॥
तबरत्रिभुवनक्रोध अति कीन्हों। बाण पचीश फेंकपर दीन्हों॥
हांक मारि रथ ऊपर कुण्ड्यो। अर्ज्जुनते शर बीचहि खण्ड्यो॥
और पांच शर पार्थ चलाये। कर्ण बली ते काटि गिराये॥

कर्ण धनुर्द्धर क्रोधकरि, हन्यो नराच अचूक।
तेपारथ निज शरनते, काटि कियो दुइटूक॥

और सहसशरत्यागेउ पायल। ताते भयो तरणिसुत घायल॥
लक्ष बाण सेना पर मारे। हय गज रथ पदाति संहारे॥
पारथ करेउ युद्ध सरसाई। रणमहँ रक्त नदी वहि आई॥
मत्त मतङ्ग मरे जे भारे। भये सरिस दोउ ओर करारे॥
चमकत खड्ग मीनसम जाने। चर्म्म सेवार सरिस अरु ज्ञाने॥
अहिसम रुधिर नदीमहँसाङ्गी। जहँतहँ परी धूप जनु नांगी॥
शिरविन कवच सहितउतराहीं। जहँतहँ सुभट ग्राहजनुआहीं॥
वन शिर सेन जात पहिचाने। मनहुँ सूस जलमें उतराने॥
चक्र अमित उतराहीं। जनु आवर्त भ्रमत जलमाहीं॥
पत्र पुरइनि मनमानो। बहतढाल कच्छपसम जानो॥

भैरव भूत पिशाच सम, गावत करि करि हेत।
नाचत चौंसठि योगिनी, रुधिर पियत युत प्रेत॥
अन्ध धुन्ध रण भयो भयङ्कर। नाचत हँसत लेत शिरशङ्कर॥
कटकटाहिं जम्बुकरणधावहिं। पियहिंरुधिरमलखाहिं अघावहिं॥
गिद्ध आदि पक्षीगण धाये। रणमहँ भये तृपित मनभाये॥
उठहिं कबन्ध मुण्डविन धावहिं। धरुधरुमारुमारुगोहरावहिं॥
देखेउ कर्ण भिहावन खेता। लीन्होंधनुष कीन्हचितचेता॥
करि रिस शत सहस्र शर मारे। पाण्डु सुवन ते काटि निवारे॥
अर्जुन कोपि बाणदश त्यागे। काटे तुरङ्ग स्वासि डरलागे॥
भयो विरथ तब तरणिकुमारा। भयो आन रथ पर असवारा॥
करि रिस कीन धनुष टङ्कोरा। अशनिसमान शिलीमुखजोरा॥
हांक मारिकै कर्णचलावा। वीचहिं अर्जुन काटि गिरावा॥
समबल युगल कर्ण अरु पारथ। कीन्हों महाभयानक भारथ॥
सत सहस्र शर पार्थ निवारे। हय गज कटे सुभट बहुमारे॥
कीन्हों पार्थ कठिन संग्रामा। कोटिन सुभट गिरे बहुनामा॥
कर्ण धनुर्द्धर के हिये, एकबार सौ बान।
मारा अर्जुनकोपकरि, कीन्ह्यों कठिनमशान॥
तरणितनय कहँ मूर्च्छा आई। रथ सारथी दीन्ह पहुँचाई॥
दुःशासन तब युद्ध सँभारो। देखो कर्ण महाबल हारो॥
लै कर धनुष कोपि बलवाना। पारथ पर छाँड़े बहु बाना॥
ते शर जिष्णु काटि सब डारे। दश शर दुःशासन उर मारे।

पार्थ बाण सारथिके अङ्गा। बीस बाण ते हने तुरङ्गा।
चारि बाण काटे रथ चाका। सात बाणते ध्वजा पताका॥
पारथ कीन्ह कठिनशरजाला। करि फुंकारचले जनुब्याला॥
भये विरथ दुःशासन भाजे। शंखध्वनि करि पारथ गाजे॥
अर्जुन बाण बुन्द झरिलाई। कुरुसेन सब चली पराई॥

भारत अति पारथ कियो, मारो सेन अनन्त।
बाण शरासन साजिकै, तब आयो भगदन्त॥

आपन दल जब डोलत ताको। मत्त द्विरद आये नृप हाँको॥
दश सहस्र शर एकहि बारा। कीन्हों नृप भगदत्त प्रहारा।
ते शर पार्थ काटि महिडारे। लक्ष बाण करि क्रोधपवाँरे॥
पारथ बाण काटि भगदत्ता। आगे पेलि चल्यो मय मत्ता॥
निकट देखि अर्जुन धनुताना। मारो मगधराज उर बाना॥
चेत न रह्यो शिथिल अब अंगा। तब कुन्तल लै फिरेउ मतंगा
कोटिन अर्व खर्व शर छाँटे। भारत भूमि बाणते पाटे॥
रण सन्मुख जेतो दलपायो। मारि पार्थ यमलोक पठायो॥

अति सङ्कटभा कटक महं, सेना चली पराइ।
तब पारथ रणभूमिमें, गर्जो शंख बजाइ॥

इति अष्टम अध्याय॥ ८॥

पार्थबाण नहि सहिसक्यो, कुरुदल चल्यो पराई।
देखि द्रोणगुरु क्रोधकरि, आयो रथ दौराइ॥

हाँकमारि यह वचन सुनायो। पार्थ सँभारु द्रोण अब आयो॥
सुनि यह वचन पार्थ चलि आगे। करन प्रणाम गुरुसनलागे॥
देख्यो द्रोण नमित पद सोई। आशिष दयो मनोरथ होई॥
अस कहि गुरु कोदण्ड चढ़ायो। होहु सजग कहि बाणचलायो
सुनि अर्ज्जुन कहिलीन्हपिनाका। शर सन्धानि दीन पुनिहाँका
सजग अहौ कहि बाण चलावा। गुरुप्रेरितशर काटि गिरावा॥
लघ सन्धानि द्रोण शर मारे। ते सब पार्थ काटि महिडारे॥

सहस बाण सन्धान करि, पार्थ कियो रणरङ्ग।
रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरङ्ग॥

तब गुरु चढ्यो अपररथजाई। लै धनु बाण बुन्द झरिलाई॥
द्रोणविशिख यहभाँतिचलायो। भूमि अकाश बाणते छायो॥
ते शरपार्थ निमिष महँ काटे। दिशि अरुविदिशिबाणतेपाटे॥
कोपि द्रोण शर अनलप्रहारा। किये बाण अर्ज्जुनके छारा॥
सहस शिखा पारथ चहुँ ओरा। जारनचल्यो अनलकरिशोरा॥
वरुण बाण तब पार्थ चलायो। क्षण भीतर सब अनल बुतायो
कोपि द्रोण ब्रह्मास्त्र प्रहारा। नारायण शर पारथ मारा॥
अस्त्र अस्त्रतंभयोनिवारण। तबलागिनिशितविशिखअतिमारण
तब अर्ज्जुन करि क्रोध अपारा। वज्रबाण पुनि कीन्ह प्रहारा॥

तब धनु तानि द्रोणरणलायक । तड़प्यो सेनानी को सायक ॥
ताते इन्द्र बाण क्षय कीन्हों । तब पारथ मृतुअस्त्रहिलीन्हों ॥

मृत्यु अस्त्रलै द्रोणगुरु, कीन्हों तुरत प्रहार ।
सबलसिंहचौहान कह, चल्यो करत फुंकार ॥

संघट करि अकाश उड़िगयऊ । लड़त लड़तगोगौनलभयऊ ॥
परे भूमि दोनों शर आई । कह्यो द्रोण अर्जुनहि सुनाई ॥
सुनहु पार्थ रण करहु सम्भारा । अब नहिं होय तुम्हारउबारा ॥
असकहि महाकाल शर लीन्हा । पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा ॥
जान्यो पार्थ भयो अब मरणा । सुमिरे कृष्णदेवके चरणा ॥
छूटो जबहिं द्रोण को बाना । मुखपसारि लीन्हों हनुमाना ॥
तब अर्जुन यक बाण प्रहारा । रथ सारथी द्रोण कर मारा ॥
सहस बाण मारे गुरु अङ्गा । चारि बाणते वध्यो तुरङ्गा ॥
बिरथहि भयो द्रोण जब जान्यो । भूरिश्रवा आनि अरुझान्यो ॥
मारे अर्जुन के दश बाना । बीस बाण मारे हनुमाना ॥
द्वै द्वै शर तुरङ्गनके मारे । शिथिलभयो पग टरत न टारे ॥

तब पारथ अति क्रोध करि, मारो बाण कराल ।
मूर्च्छि गिरे भूरिश्रवा, सुधि न रही तेहि काल ॥

तब सारथि स्यन्दन पलटावा । लै नरेश के आगे आवा ॥
द्रोण अपर रथ कै असवारी । सन्मुख पार्थ जुरे धनुधारी ॥
गुरु बहुशर छांड़ेउ । आवत अर्जुन बीचहि खाँड़ेउ ॥
पारथ क्रोध अपारा । गुरु उरकठिन बाणयकमारा ॥

जबहि द्रोण कहँ मूर्च्छा आई। फिरेउ सूत स्यन्दन पलटाई॥
अर्ज्जुनकोपि धनुषधरि हाथहि। वधीसेन काटे बहु माथहि॥
परीं लोथ धरणी पर छाई। रणमहँ रुधिर नदी बहिआई॥
सबयोगिनि तहँ करत विहारा। ताल बजाइ करत किलकारा॥
भच्छहि मांस रुधिर पुनिपीवहि। आशिषदेहिं पार्थ चिरजीवहिं
जीत्यो पार्थ द्रोण संग्रामा। सुनि आयो तहँ अश्वत्थामा॥

पवन गवनसम द्रोणसुत, गयो तुरत रथहांकि।
विशिखचलायो क्रोधकरि, पारथकी दिशिताकि॥
सोशर काटे निमिषमहँ, कीन्हों पुनि शरजाल।
द्रोणतनयके उरहन्यो, अर्ज्जुन बाण कराल॥

लागत बाण भयो तनु पीरा। रुधिर धार गा भीजि शरीरा॥
धनुष चढ़ाय द्रोण सुत छांड़े। दिशिऔ विदिशिवाणसबमांड़े॥
ते शर अर्ज्जुन काटि निवारे। द्रोणी हृदय बाण दशमारे॥
भा अतिक्रोध द्रोणसुत जियमें। मारा शर अर्ज्जुनके हियमें॥
फूटि कवच निसरेउ शर पारा। बहत प्रवाह रुधिरके धारा॥
अर्ज्जुन अन्धकार शर मारा। कुरुदलमध्य भयो अँधियारा॥
व्याकुलकटक भागिसब गयऊ। प्रभा अस्त्र द्रोणीगुणादयऊ॥
ताते फैलि रह्यो उजियारा। अर्ज्जुन निशितविशिखतबमारा॥

तब रण कोप्यो द्रोणसुत, खंड्यो अर्ज्जुन बान।
भाषापर्व विराट यह, सबलसिंह चौहान॥

इति नवम अध्याय॥ ९॥

वैशम्पायन से कहौ, जन्मेजय शिरनाय ।
कौन्ह कृतारथमोहि तुम, अद्भुत चरित सुनाय ॥
कह मुनि सुनु जन्मेजय राई । कथा विचित्त श्रवण मनलाई ॥
गुरु सुत दर्पण बाण चलायो । भूमि अकाश आरसी छायो ॥
देखि अनेक द्रोण सुत पायो । पारथके उरमें भ्रम छायो ॥
परत देखि बहु अश्वत्थामा । काके सङ्ग करौं संग्रामा ॥
यह कहि पार्थ चलायो बाना । कौन्हद्रोणसुत कठिनमथाना ॥
लड़तलड़तद्दोदलमिलिगयऊ । द्रोणीकोपि खड्गकरलयऊ ॥
कौन्ह प्रहार द्रोणसुत डाटा । धनु गुण पारथको तबकाटा ॥
तब अर्ज्जुन करि क्रोध अपारा । निजअसिकाटि मारथोमारा ॥
पुनि मारे द्रोणी के बाजी । भयवशगयोयुद्ध तजि भाजी ॥
अर्ज्जुन धनुगुण साजिकै, कौन्ह विशिख संधान ।
रोंक्योतब जयद्रथचलि, साजिशरासनबाण ॥
सिन्धुराज दश विशिख चलाये । ते सब अर्ज्जुन काटि गिराये ॥
पुनि मारेउ पारथ इक तीरा । कवच भेदिगा छेंदि शरीरा ॥
सिन्धु नृपति तब मूर्च्छा आयो । स्यन्दन डारि सूत लै जायो ॥
तबकरिक्रोधशकुनिचलिआयो । अर्ज्जुनको बहुबाण चलायो ॥
ते शर काटयो पाण्डु कुमारा । पुनियकबाण शकुनि उरमारा ॥
बाण लगत तनु मोह जनावा । तबहिंसूत रथ फेरि चलावा ॥
कोपिकियो संग्राम तब, पार्थ हन्योबहुतीर ।
पारथके एकहु विशिख, सहि न सकत कोउ वीर ॥

शकुनी गिरत शल्य चलिआये । पारथपर बहुविशिख चलाये ॥
सो शर अर्ज्जुन काटि निवारे । बाण पचीस शल्य उर मारे ॥
भयो विकल व्यापी बहुपीरा । गयोभागि उर रह्यो न धीरा ॥
रथ आगे पुनि पार्थ चलावा । जीति युद्ध तब शंख बजावा ॥
बाहुलीक गङ्गाधर आये । नृप काम्बोज युद्धहित धाये ॥
सोमदत्त करि क्रोध अपारा । लैकर धनुष सेन ललकारा ॥
कीन्हसकल मिलियुद्धप्रचारा । चहुँदिशिग्रसिअर्ज्जुनकहँमारा ॥
शूल सांगि कोऊ शर बरसा । कोउअसिघातहने कोऊफरसा ॥
देख्यो पार्थ ग्रसे चहुँओरा । करि अतिक्रोधपार्थ शर जोरा ॥
भये एकते विशिख हजारन । कौरवदल लाग्यो संहारन ॥
कापि पार्थ बहु बाण प्रहारे । सोमदत्त को दल सब मारे ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर सारत । सन्मुख आनिजुरे सबमारत ॥
लैकृपाण कर पार्थ उठोतब । मारिभगायदयो बलकरि सब ॥
भजे शूरते नहि फिर हेरत । रणमें पार्थ दौरिकै घेरत ॥

पार्थ बाण नहिंसक्योसहि, कुरुदल चल्यो पराइ ।
धनुटङ्कोरेउ क्रोधकरि, सोमदत्त तब आइ ॥

लै सौ विशिख पार्थ पर छांड़े । शक्रसुवन तेहि बीचहिं खांड़े ॥
कह अर्ज्जुन कुरुपति बनकाढा । शकुनी कर्ण मन्त्र सुनिगाढा ।
तुमहुँ कीन्ह नहिं न्याय हमारा । मारन हेतु धनुष कर धारा ॥
अबनहिंबचहु वचनसुनुसांचा । असकहि पारथ हन्यो नराचा ॥
लाग्यो विषम बाण उरजाई । सोमदत्त कहँ मूर्च्छा आई ॥

बाहुलीक हांक्यो रथ आगे। करन युद्ध पारथ सन लागे॥
लैकर धनुष कीन्ह संधाना। अर्ज्जुन को त्याग्यो सौ बाना॥
तेशरपार्थ काटि सब दीन्हा। पाथ सहसशर त्यागनकीन्हा॥
बाहुलीक ते शर सब काटे। लच्छ बाण अर्ज्जुन रथ पाटे॥

आवत देखे बाण जब, पारथ गहि कोदण्ड।
पलमहँ खंड्यो सकलशर, कीन्होयुद्ध अखण्ड॥

शतसहस्रशर एकहि बारा। बाहुलीक उर पारथ मारा॥
रथअचेतह्वै गिरत विलोका। गङ्गाधर पारथ कहँ रोका॥
बाण शरासन कृत सन्धाना। अर्ज्जुन पर छाँडे बहु बाना॥
ते शर खंडि पार्थशरत्याग्यो। सोमदत्त सुत उरसो लाग्यो॥
परेउ मूर्च्छि गंगाधर जबहीं। रणकाम्बोज कीन्ह पुनितबहीं॥
आवतही अर्ज्जुन बलवाना। हृदय माक्ष मारेउ यकबाना॥
लागत चेत न रह्यो शरीरा। रथ सुरझाइ गिरेउ रणधीरा॥
द्विरद दुमत्त क्रोध करि धाये। लच्छन कुँवर अलंबुष आये॥
सङ्ग चमू चतुरङ्ग घनेरी। लीन्हों पाण्डुसुवन कहँ घेरी॥

शङ्क न मानत पार्थ भट, यद्यपि अस्त्र अनेक।
डरत न गजसेना निरखि, सिंहबलीजिमिएक॥

घेरि पार्थ सब करहिं लड़ाई। सेन किधौं वर्षाऋतु आई॥
घोर घने गज दीरघ धाये। पावस जलदघटा जनु छाये॥
[illegible]त वर्ण गजदन्त विभांती। सो जनुउड़त गगन बक पाँती॥
चमर जहँ तहँ दल माहीं। राजहंस जनु गगन उड़ाहीं॥

वन गजत बाजत जे डङ्का । असिप्रहारजनुविज्जु दमङ्का ॥
नुजनु सुरपति धनुशविशाला । बुन्द मनहुँ वरषत शर जाला ॥
र्ज्जुन मनहुँ वीर रस पागे । शर समूह पुनि मारन लागे ॥

प्रलय कालके पवनसम, पार्थ वाण हहराइ ।
आइ फँसे कुरुदल भजे, नीरदसे भहराइ ॥

द्विरद दुमत्त कीन्ह अति कोपा । शरन मारि पारथ रथतोपा ॥
पारथ कीन्ह तुरत सन्धाना । अरिशर खण्डि हने बहुवाना ॥
द्ध विशिख ते द्विरथ प्रहारो । दुइ शर लै दुमत्त उर मारो ॥
रे मूर्च्छि रण दूनौ भाई । लच्छन कुँवर जुरे तब आई ॥
अर्जुन उर मारे दश वाना । सत्तरि बाण हने हनुमाना ॥
रुधिर धार भीज्यो सब अङ्गा । पारथ कोपि लीन्ह शारङ्गा ॥
एहिविधिकीन्होंविशिखप्रहारा । रथ सारथी कुँवरको मारा ॥
प्रेरेउ वहुरि बाण बहु साजी । कीन्हनिधनकुरुपतिसुतवाजी ॥
भये अरूढ़ कुँवर रथ आना । कीन्हों बहुरि विशिखसन्धाना ॥
तब पारथ करि क्रोध अपारा । अशनिसमान बाण उरमारा ॥

मूर्च्छि परा रणभूमि महँ, जब कुरुनाथ कुमार ।
साजि अलम्ब ष धनुष शर, कीन्हों युद्ध अपार ॥

गहिकर धनुष अलंबुष धाये । पारथरथ सन्मख चलिआये ॥
सात कोटि दानवगण साथहि । धाये सकल धनुषधरिहाथहि ॥
धरि बांधहु दानवपति टेरो । धरु धरु मारुमारु कहिघेरो ॥
कोई कीन्हों शर शक्ति प्रहारा । मुद्गर गदा शूल केहुँ मार

परशु कृपाण चले गहि मारन । कोउखञ्जरकोउपरिघकटारन ॥
कोउ कर सुभटभुशुण्डीलीन्हें । महा मारु पारथ पर कीन्हें ॥
भिण्डिपाल कोउ वृक्ष उपारी । केहुँ गिरिशिला पार्थ परडारी ॥

सातकोटि दलदैत्यको, करि करि क्रोधअपार ।
सबमिलिकीन्हों पार्थपर, निजनिज अस्त्रप्रहार ॥
कियोहस्तलाघवअतिहि, सबको बाणकृपाण ।
रोंक्योपारथ असुरबहु, मारिकियो बिनप्राण ॥

मारि पार्थ घाल्यो दल बानी । असुर सेन भहराइ परानी ॥
दनुज राज तब करि सन्धाना । पारथ पर प्रेरेउ शत बाना ॥
ते शर काटि पार्थ रण कोपा । बाणन मारि दैत्य रथ तोपा ॥
ते शर दैत्यराज सब काटे । बाणन मारि पार्थ रथ पाटे ॥
अर्जुन अग्निबाण फटकारा । सब शरकटे निमिष महँछारा ॥
स्यन्दन सूत तुरङ्ग जरिगयऊ । अन्तर्द्धान असुरपति भयऊ ॥
प्रकट गयो स्यन्दन असवारा । सम्मुख चला करत ललकारा ॥
बधौं पार्थ तोहिं एकै बाना । काल तुम्हार आय नियराना ॥

यहसुनि पारथतब कह्यो, दनुजराजसों बात ।
किये बड़ाई निजबदन, नहिंकछुबलसरसात ॥

हम तुम करिय आजु संग्रामा । जोतै युद्ध होय बल धामा ॥
असकहि पार्थ लीन्ह शारंगा । दनुजराजके बधे तुरंगा ॥
सतबाण करि क्रोध पवांरो । स्यन्दन भञ्जि सारथी मारो ॥
असुर स्यन्दनचढ़िआयो । पारथ कह बहु बाण चलायो ॥

पाण्डु पुत्र सब शायक खंड्यो। लक्षबाण दानवपति मंड्यो॥
तेऊ विशिख काटि महि डारे। बहुरि धनञ्जय बाण पँवारे॥
आवत देखि पार्थ को बाना। दनुजराज कीन्हों संधाना॥
आवत शर अर्जुन के काटे। खण्ड खण्ड करि बीचहि पाटे॥
देखि पार्थ करि क्रोध अपारा। तुरङ्ग सूत दानवको मारा॥
यहिविधि पार्थ औसरथ भञ्जेउ। अरु अनेक दलबादल गंजेउ॥
सके न जीति हारि हिय मानी। तबहिं अलम्बष माया ठानी॥

मारुमारुकहि दनुजपति, गयो अकाश उड़ाय।
वर्षनलाग्यो गिरिशिखर, अन्धकार उपजाय॥
सिहनाद करि गगन महँ, गर्ज्जत बारहिंबार।
विटपचलायोक्रोधकरि, विविधभाँतिहथियार॥

इति दशमअध्याय॥ १०॥

दत्य युद्धते विकलभे, तब उत्तराकुमार।
पारथ राखहुप्राण अब, यहि विधि करत पुकार॥
दीन वचन सुनि पाण्डुकुमारा। पढ़िरविमन्त्र बाण तब मारा॥
सहसकिरणिशरकीन्ह प्रकाशा। भयोतुरत मायानिशि नाशा॥
पुनि अर्ज्जुन कीन्हों सन्धाना। मारे दैत्यराज उर बाना॥
परोधरणिखसि मूर्च्छितभयऊ। स्यन्दनघालि सूतलै गयऊ॥
देखि युद्ध कृतवर्म्मा धाये। शङ्खध्वनिकरि हाँक सुनाये॥

मैं आयों पारथ रहु ठाढ़ो। मनावधि तेरो मन बाढ़ो॥
असकहि कृतवर्म्मा रण कोपी। करिशरजाल दीन्ह रथतोपी
कोटिन अर्व खर्व शर छाये। शर पञ्जर करि पार्थ दवाये॥
अर्ज्जुन अनल बाण नव मारे। विशिख असंख्यजारिभव डा
कृतवर्म्मा करि क्रोध अपारा। कठिनबाण अर्ज्जुन उर मारा॥

लग्यो कठिन शर पार्थ उर चनयुत भयो शरीर।
लीन्ह शरासन क्रोधकरि, पाशुपत रणधीर॥

करि अतिक्रोधशिलीमुखछांटेउ। कृपकोधनुषशकसुत काटेउ
कटे धनुष कृत शूल प्रहारा। बीचहिपार्थत्र काटिमहिडारा
करि रिस छाँड़यो शक्तिप्रचण्डा। शरनमारि अर्ज्जुन द्वै खण्ड
पुनि पारथ करि क्रोध कराला। कृतउरहन्योविशिखतेहिकाल
बाण लगत तनु मोह जनायो। नव कुन्तलगज फेरि चलायो
कृपाचार्य्य कीन्हों सन्धाना। अर्ज्जुन पर छाँड़े बहु बाना॥
आवत पार्थ काटि महि डारे। सहस बाण करि क्रोध पावाँ
ते नराच कृत बीचहि खांड़े। लच्छ बाण पारथ पर छाँड़े॥
कठिनविशिखअर्ज्जुनगुणदीन्हों। आवतबाणसकलचयकीन्हो

पुनि किरीटि अति क्रोधकरि, मारेबाण अनन्त।
रथ तुरङ्ग पैदल गिरे, मतवारे मैमन्त॥

अर्ज्जुन बहु कुरुकटक निपातो। कृप तब भगो क्रोधते तातो॥
न उरमारे दश बानहि। साठि बाण मारे हनुमानहि॥
धनुष पार्थ रिसि आना। कृपके उर मारे दश बाना॥

दश शर हन्यो सारथी अङ्गा। बीस बाणते हन्यो तुरङ्गा ॥
चारि बाण काटे रथ चाका। पांच बाणते ध्वजा पाताका ॥
भयो विरथ कृप चढ़ि रथ आना।पुनि अर्ज्जुन तेहि कीन्ह मधाना॥
कृपाचार्य बहु विशिख पवांरे। अर्ज्जुन सकल काटिमहि डारे ॥
लक्ष बाण तब पार्थ चलाये। आवतही कृप काटि गिराये ॥
कृपाचार्य्य तब धनु कर लीन्हो। महा मारु पारथपर कीन्हो ॥
तब अर्ज्जुन करि क्रोध अपारा। वज्र बाण कृपके उर मारा ॥

जब कृप रण मूर्च्छित भयो, गयो कटक भहराइ।

तब उत्तर कुरुनाथ ढिग, पहुँचो रथ दौराइ ॥

पार्थहि देखि नृपति ढिग आयो। तब भीषम कोदण्ड चढ़ायो
तब अर्ज्जुन भीषमढिग हेरा। कीन्हों चितहि शोच बहुतेरा ॥
उत्तर सनहु पितामह जाये। परशुराम जिनयुद्ध हराये ॥
अस कहि कीन्हों दण्ड प्रणामा। आशिष दयो होय मनकामा
पुनि अर्ज्जुन कुरुपति दिशिताका। उतर कुमार वेगि रथ हाँका
नृपदिशि जात पार्थ अवलोका। शर सन्धानि गङ्गसुत रोका ॥
जात कहा कहि बाण चलावा। सो शर अर्ज्जुन काटि गिरावा
पारथ दीन बाण गुण चोखा। भीषमपर छाँड़यो करि रोखा।

आवत देख्यो युद्धमहँ, जब अर्ज्जुनको बान।

परम क्रोध करि गङ्गसुत, कीन्हों विशिख सँधान ॥

हाँक मारि शर कीन्ह प्रहारा। आवत बाण काटि महि डारा
पुनि भीषम निजतेज सभारो। पारथकहँ बहु बाणसिधारो॥

ते शर कीन्ह पार्थ शत खण्डा। हन्योक्रोधकरिविशिखप्रचण्ड
लख्यो गङ्गसुत आवत बाना। शर सन्धानि शरासन ताना
शन्तनुसुत काटो करि रोखा। तज्यो वाण पारथपर चोखा
ते शर अर्जुन काटि निवारे। भीषम ते यह वचन उचारे॥
धनुष संभारि पितामह लीजे। सावधान मोसन रण कीजे
यह कहि अर्जुन बाण चलायो। कौरवदल बहु मारि गिराये
द्विरद लच्च मारे असवारे। अश्वपदादि असंख्य सँहारे॥
दशसहस्र स्यन्दनवध कीन्हों। रुण्डमुण्ड कछु जात न चीन्हे
शोणित सरित वही विकरारा। काक कङ्क कृत मांस अहारा
पियहिं रुधिर जम्बुक पल खाहीं। कटकटाहिं फेकरैं हुआ
गिद्ध खाहिं पल उड़हिं अकाशा। शङ्कर देखहिं युद्ध तमाशा
जहँ तहँ बहु कबन्ध उठि धाये। मारु मारु कहि शब्द सुनाये

भयो भयङ्कर खेत अति, अर्जुन कीन्ह मशान।
नाचत चौंसठि योगिनी, करिकरि शोणित पान॥

भीषम देखि क्रोध जिय आना। कीन्हों कठिन बाण सन्धा
होय सक्रोध नराच प्रहारो। रथकहँ तीन पैगपै टारो॥
पुनि भीषम कीन्हों सन्धाना। पारथके मारे सौ बाना॥
लच्च बाण हनुमानहिं मारे। अष्ट विशिखते तुरंग प्रहारे॥
भीषम यह मन्त्र विचारा। करौं निपात विराटकुमारा॥
बाण कीन्हों सन्धाना। छूट्यो विशिख पार्थ तब जाना॥
सरोष शिवसाधक लीन्हों। ताते मृत्यु अस्त्र क्षय कीन्हों॥

हन्यो शिलीमुख तानि धनु, ह्वै सरोष पारत्थ ।
सहस पैग पीछे टरो, शन्तनु सुतको रत्थ ॥

पुनि रथ हाँकि गङ्गसुत आयो । पारथपर बहुविशिख चलायो ॥
तब पारथ कीन्हों रिस भारी । ध्वजा खण्डि भीषमकी डारी ॥
कोटि बाण सेनापर मारे । हय गज रथ पदाति संहारे ॥
मारि बिछाय दियो दल ऐसो । प्रलयपवन कदलीवन जैसो ॥
क्रोध सहित पारथ-शर छूटे । भीश सेन केतिकके टूटे ॥
कटे जानु जंघा यक बाहौ । चले भाजि रणते नहिं चाहौ ॥
करि अतिक्रोधधनुषशरसाँध्यो । नागफाँस केते भट बाँध्यो ॥
पारथ बाण वृष्टि जब ठानी । भयो विकल-कुरुसेन परानी ॥

तब भीष्म अति क्रोध करि, मारे तीक्ष्ण बान ।
शतलागे पारथ हिये, शतसहस्र हनुमान ॥

तब अर्जुन करि क्रोध अपारा । तुरंग सूत भीषम को मारा ॥
भयो विरथ गङ्गासुत जबहीं । पूरो शङ्ख पार्थ रण तबहीं ॥
भीषम आय चढ़ो रथ आना । अर्जुनपर पुनि शर सन्धाना ॥
दुर्योधन सब बांधव आवे । चहुँ दिशि ओर पार्थके धाये ॥
मूर्च्छाविगत द्रोणगुरु जागे । तानि शरासन सायक त्यागे ॥
कर्ण आदि जागे सब वीरा । लै लै पाणि शरासन तीरा ॥
चहुँ दिशि गाँसि पार्थकहँ लीन्हा । बाणवृष्टि क्रोधित ह्वै कीन्हा ॥
मुद्गर गदा शूल कोउ मारेउ । साँगि सेल कोउ खड्ग प्रहारेउ ॥
लग्यो चक्र फरसा कोउ मारा । केहुँ मारेउ कोतहु हथियारा ॥

कोटिन सुभट भुशुण्डी लीन्हें । महा मारु पारथपहँ कीन्हें ।
तदपि पार्थ मन नेकु न मुरई । शर सन्धानि प्रबल रण करई ।

जब जान्यो रथपसितभो, कीन्ह विशिखसन्धान ।
पारथ छाँड्यो क्रोध करि, रण महँ मोहनवान ॥

पारथ मोहन बाण चलावा । जो शर कृष्णदेव सिखरावा ॥
मोहे सब कौरव बल वीरा । परे मूर्छि नहिं चेत शरीरा ॥
भयो गङ्गको आशिष सांचा । नहिं मोहेउ भीषम रण बांचा ।
उत्तर पठयो पार्थ प्रचारी । पट भूषण सब लेहु उतारी ॥
चल्यो पार्थकी आज्ञा मानी । पहुंचो निकट भूपके आनी ॥
कुरुपति और बीर बहुतेरे । भूषण वसन मुकुट सबकेरे ॥
लेत कुँवर एकहु नहिं जागे । रथ लै धरे पार्थके आगे ॥
दुर्योधनकी मूर्छा जागी । निज दिशिदेखिलाजअतिलागी ॥
पार्थविजय लखि रिस उपजायो । लैकर धनुष युद्ध हित आयो ॥
जाग्यो सकल सुभट समुदाई । चले युद्ध हित धनुष चढ़ाई ॥
भीषम आइ वरजि दल राख्यो । अरु यह वचन भूपते भाख्यो ॥
लरे एक ह्वै सब मिलि धायो । अर्ज्जन ते रणजय नहिंपायो ॥

चुप ह्वै रहहू गृह चलो, पारथ अति बलधाम ।
लज्जा ह्वै हे भूप सुनु, तजि भागे संग्राम ॥

नृप अति दुखपावा । क्रोधविवशमुखवचननआवा ॥
श्वास व्याल जिमि लेई । लगे वज्रवत उतर न देई ॥
भीषमने बोल्यो बिलखाई । गई पितामह बिगरि बड़ाई ॥

कह भीषम अबलगि नहिं लाजा। भाज्यो कटक भूप नहिं भाजा।
ताते नृप वर्ण्णत मैं तोहीं। कारण समुझि परो सब मोहीं॥
अर्जुनपर दयालु भगवाना। तुमते सहि न जाइ नृपवाना॥
रण भागे तुव जगत हँसाई। ताते भवन चलो कुरुराई॥
जीते पारथ सकल समाजा। तबलगि विजय न भागेराजा॥
भाजे सकल सेन किमि झारी। विनु नरेश भागे नहिं हारी॥
भीषम वचन सुनत कुरुराई। फिरे भवनसँग भट समुदाई॥

भीषम आयसु मानिकै, दल लै चल्यो अवास।
धावन धाय गयो तबहिं, नृप विराटके पास॥
जीति उत्तरैं अरिचमू, कौरव गयो पराइ।
सुत सपूत कीन्हो विजय, भाग्य तिहारे राइ॥

भूपति खेलत पंसा सारी। सङ्ग कङ्क ऋषि लै सुखकारी॥
सब जन सुतकी कीरति गावैं। हर्ष नृपति आनन्द बढ़ावैं॥
बारबार नृप निज मुख वरणी। उत्तर कीन्हि अमानुषकरणी॥
रथ चढ़ि एक न सङ्ग समाजा। सेन सहित जीत्यो कुरुराजा॥
भीषम द्रोण कर्ण कृप हारे। और कहाँ जग जीव विचारे॥
उत्तरसम जग कोउ न जुझारा। भयो कबहुँ नहिं होनेहारा॥
बार बार नृप कीन्ह बड़ाई। कह्यो कंक ऋषि तब मुसुक्याई॥
विजय बृहन्नल जेहि कटक, सो कत जीतो जाइ।
जुरै युद्ध संग्राम थल, कालहु देइ भगाइ॥

इतनी सुनत भूप उर जरेऊ। राते दृग करि बहु रिस भरेऊ॥
तत्क्षणही नरनाह विराटा। हन्यो कङ्कऋषिपांस लिलाटा॥
छूटे रुधिर द्रौपदी धाई। अंजलिमें ले लीन्हों आई॥
निरखि भूप मन चिन्ता मानी। कह्यो सैरंध्री भेद बखानी॥
बिन जाने चित होत अँदेशा। कह्यो सैरंध्री सुनहु नरेशा॥
भूतल रुधिरपरै जो एहू। द्वादश वर्ष न बरसै मेहू॥
यह कहिकै भूपति समुझायो। भीमसेनके उर दुख आयो॥
फरकत अधर नयन भे राता। चाहत भीम कियो उतपाता॥

महाक्रोध लखि भीम उर, धर्मपुत्र दै सैन।
बरजो केहरि क्षुधित ह्वै, युक्तकहूँ यह है न॥

उत्तर कुँवर भवन चलि आयो। भूपतिसों यह वचन सुनायो।
आजु बृहन्नल सब दल जीतो। कौरव गयो युद्धते रीतो॥
मारि शूर सबदीन्ह भगाई। प्रबल पवन जिमि मेघ उड़ाई॥
भयो मौज नृप धाम सिधावा। भीतर उत्तर बोलि पठावा॥
युद्धकथा सिगरी कहि दीनी। सारथिकी शरजाल प्रवीनी॥
है अर्ज्जुन जिन कौरव मारे। दिवस इते यहि ठौर निवारे॥
यहि प्रकार सुतकहि समुझाये।सुनि विराट तब अतिसुख पाये॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राई। कथा विचित्रश्रवण सुखदाई॥

धर्मपुत्र नरनाहसों, अर्ज्जुन बोल्यो बैन।
जाने हम सब कौरवन, अब कछु चिन्ता है न॥

तेरह वर्ष दिवसदश, बीतिगये यहिभाव।
अब बैठो शिर छत्र धरि, गुप्त करत कत नाथ॥
दीन्ह त्रास कुरुनाथ निकारा। बसि वनवास सहे दुखभारा॥
छूटे अशन वसन घर नासा। अन्नहीन कीन्हों उपवासा॥
भूख प्याससे भये वियोगी। उदासीन जैसे रह योगी॥
बलविहीन तुमको नृप जानी। अन्धसुवन कछुकानि न मानी॥
आयसु होइ जीति अपराधी। भुजबल जीति लेउ महि आधी॥
करि सन्धान बाण शर धारा। बोरौं कुरुप सहित परिवारा॥
देहु निदेश धनुष संधानौं। भूप मरे कौरव सब जानौं॥
यहि विधि कहत परस्पर बाता। बीति रैनि गै भयो प्रभाता॥
प्रातहोत शिर छत्र धरि, धर्म्म पुत्र सुख पाय।
दान दियो बहु याचकन, विप्रसमूह बोलाय॥
बान्धव चारिउ जोरि कर, ठाढ़े भये सुजान।
करनहार सब राजके, करत भूप सन्मान॥
नहिं वाहन पदत्राण नहिं, उत्तरसहित विराट।
नृपतियुधिष्ठिरचरणउठि, राख्यो आनि लिलाट॥
भई ढिठाई होइ जो, सो क्षमियो अपराधु।
चूक न मानत दासकी, भूप बड़े जे साधु॥
बिन जाने करवाई सेवा। क्षमहु चूक बड़ि भइ नरदेवा॥
ओछी पूरी चित मत धरियो। भूप अनुग्रह हमपर करियो॥
मम गृह रही द्रौपदी रानी। दासी भाव आज लग जानी॥

बहु प्रकारसे टहल करार्इ। सो सब छमा करहु तुम रार्इ॥
अस कहि परो चरण करजोरी। कीन्ह विनय बहुभांतिनिहं
मन बच कर्म दास तव स्वामी। कीजै कृपा जानि अनुगा
कह्यो भूपसन बारहिंबारा। सविनय वचनविराटभुवारा॥
सुनत युधिष्ठिर आनन्द पाये। करि सन्मान विराट बुझाये

विपति हमारी सब हरो, राख्यो पुत्र समान।
तोसों तोहिं न दूसरो, महिमण्डल नृप आन॥

तुव पटतरि को दीजे आना। उऋण होउँ नहिं अपने जाना
तुम सबको दीनो सब भलि है।तुव कीरति जगमें नृप चलि
नित नित नेति बढ़े अतिभारी। भयो भूप तुव भुजा हमारी
जीत समर सुरभी जे आनी। ज्यतनी त्यतनी जाकी जानी।
ते सब सबको ताको दीन्हीं। सबको विदा महीपति कीन्हीं
पहुँचो जाइ नगर कुरुराजा। सन्ध्यासमय समेत समाजा॥
बैठ्यो भवन मानि गिल्यानी। भये स्वप्न भत अन्न न पानी॥
कुश बिछाय कृत सैन भुआला। हरि दानव लै गयो पताला॥
दानवराज बहुत समुझावा। तुम लगि भूप हमारो दावा॥
जो तुम प्राण त्याग करि दीन्हा।जग मिटि गयो दानवीचीन्ह
भटतनु करि सकल प्रबेशा। करब युद्ध जनि करब अँदेशा।

करहु युद्ध कदराइ तजि, छाँड़हु सब सन्देह।
प्रविशहिं सबको देहमें, दैत्य आइ करि नेह॥

यहि प्रकार कुरुपति समुझाये। दैत्य सन्न मृतलोक पठाये॥
यहि थल सैन कियो तो राई। कुश साथरी गयो पोढ़ाई॥
गयो दनुज पुनि असुर समाजा। प्रात होत जाग्यो कुरुराजा॥
द्रोणौ कर्ण तहां चलि आये। कहि निज भेद भूपसमुझाये॥
नरकासुर द्रोणी के अङ्गा। भा प्रवेश नृप सुनहु प्रसङ्गा॥
लोहकर्ण तनु कर्ण समानो। यहि प्रकार सब दानव जानो॥
तेहि अवसर आये सब योधा। दनुज नाम कहि नृपति प्रबोधा॥
यहिविधिकह्योनृपतिवलधामा। मारि पार्थ जीतब संग्रामा॥
कत दानवतनु सकल प्रवेशा। करहु युद्ध नृप तजहु अन्देशा॥
सुनि नरेश अतिशय सुखपाये। शकुनी वोलि मन्त्र ठहराये॥
जाय दूत जहँ धर्म्मनरेशा। उनते यहिविधि कह्यो सन्देशा॥
अवधि साधि तुम कीन्ह प्रकाशा। द्वादश वर्ष करहु वनवासा॥
यहि विधि भूपति दूत पठावा।नृपति युधिष्ठिर पै चलिआवा
सहित द्रौपदी पांचो भाई। वैठ देखि यह वात सुनाई॥

प्रकटे भीतर अवधिमें, फेरि करहु वनवास।
मिति सो पूरण कीजिये, तव तुम करहु अवास॥
कहि सब विधि मलमासकी, समुझायो सो दूत।
समुझि ताप बैठो तहां, जिमि सुरपुर सुरदूत॥

इति एकादश अध्याय॥ ११॥

उत्तरसों कीन्हों मतो, नृप विराट तेहिवार।
दुहिता दीजै अर्जुनहिं, करि विवाहशुभ चार॥

अर्जुन ताहि नृत्य सिखरायो। निशि वासर गुण गान बतायो॥
सो दुहिता ताको अब दीजै। अब कछु और विचार न कीजै॥
यह कहि भूपति दूत पठायो। अर्जुनते यह बात सुनायो॥
तोहिं सुता नृप अपनी दीन्हीं। हेतु विवाह करन चित लीन्हीं॥
सुनत पार्थ यह वचन सुनावा। मैं दुहिता सम जानि पढ़ावा॥
बात कहत तोहिं लाज न आई। मिथ्या वचन कह्यो दूत आई॥
मो सुतको दुहिता यह दीजै। आनन्दसों यह कारज कीजै॥
यह कहि पार्थ दूत पलटाई। तेहिं विराटसों कह्यो बुझाई॥
सो सुनिकै भूपति सुखपायो। बूझि मुहूरत मङ्गल गायो॥
गावत आनन्दसों नर नारी। भूप युधिष्ठिरको दे गारी॥
नैमिषवासिन अवधि बिताये। ताही समय धौम्य ऋषि आये॥
करि प्रणाम पाण्डव सब भाई। पकरे चरण द्रौपदी आई॥
समाचार कहि भूप सुनाये। सुनत धौम्यऋषि अतिसुख पाये॥

दूत द्वारका नगरको, पठवहु अति सुखपाय।
बार न लागी बाटमें, कही कृष्णसों जाय॥

दीनानाथ दयालु गुसाईं। कह्यो प्रणाम भूप सब भाई॥
पासिन्धु कृत दास सहाई। द्रुपद सुताकी लाज बचाई॥
आश प्रहलाद पुकारे। हरी त्रास हरणाकुश मारे॥
भूप यह त्रिभुवन राई। सदा रहत तुम मोर सहाई॥

तुम्हरी कृपा विपति भै दूरी । ह्वै दयालु कीन्हीं सुख भूरी ॥
अभिमनु व्याह रचो है राजा । आइय यहां समेत समाजा ॥
अभिमनुमातु सहित यदुराया । बोलेउ भूप चलिय करि दाया ॥
ह्वै दयालु दीन्हीं सुख भारी । करी दूरि प्रभु विपति हमारी ॥

करि आये हौ करतहौ, करिहौ सदा सहाइ ।
सहितमातु अभिमन्यु लै, आपुहि पहुँचौ आइ ॥
गये कृष्णभगिनीसहित, लै अभिमनुकहं साथ ।
उठे देखि सुख पायकै, धर्म्मसुवन नरनाथ ॥
मिलिकै शारङ्गपाणिको, लैआये निज गेह ।
अस्तुतिवन्दनयुतकरत, मनवचक्रम करि नेह ॥

द्वौ कर जोरि कृष्णके आगे । करन विनय कुन्तीसुत लागे ॥
श्री यदुनन्दन मुनिजनवन्दन । कल्मषहर सबदुष्ट निकन्दन ॥
जगतारण खलवदनविदारण । दुखतारण गजराजउधारण ॥
जग पावन सन्तनमन भावन । व्रजछावन गिरिवरनखलावन ॥
जनमन रञ्जन भवभयभञ्जन । दनुजनिमर्द्दन भवधनुगञ्जन ॥
कंस विनाशन प्रभु गरुड़ासन । यदुवंशी अवतंसप्रकाशन ॥
असुरनिवारण मुनिजलपारण । कुञ्जविहारण गणिकातारण ॥
जगधर नगधर पीताम्बरधर । हरि दामोदर हलधरसोदर ॥
सिन्धु सुतावर श्रीराधाधर । सर्व्वनिवारण सर्व्वदेवपर ॥
जनकसुताभूषण भवभूषण । सुररिपुदूषण तलतलपूषण ॥
भक्तन हितकर हर निशिचारी । शुभगतिकारी भवभयहारी ॥

करि अस्तुति श्रीकृष्णको. भूपति अतिसुखपाय।
नगर कम्पिला द्रुपदगण, दीन्हों दूत पठाय॥
सुनि सन्देश फूलि हिय गयऊ। द्रुपदनरेश पयानहि कियऊ॥
गजरथ साहन तुरी तुषारा। सबदलयुत वाहन भण्डारा॥
पांचाली सुत पांचौ साथा। पहुंचो पुर विराट नरनाथा॥
विदुर गेहते कुन्ती आई। मिली सुतन अति आनन्द पाई॥
द्रुपदसुता ताके पद वन्दे। सब मिलिकै सब जन आनन्दे॥
बनते बली घटोत्कच आये। निज माताकहं सङ्ग लगाये॥
नगरराज गिरिते चलि आयो। काशिराज भूपति मन भायो॥
जरासन्ध पटनाको राजा। आयो सुतन समेत समाजा॥
शूरसेनकहं दूत पठाये। सुनत सन्देश वेगिलहं आये॥
धर्मपुत्र तब राजसमाना। विविध अनुज सब बुद्धिनिधाना॥
शुभघटिका शुभ लग्न गणि, शुभ बारहि सो पाइ।
रच्यो व्याह अभिमन्यु को, मङ्गलचार कराइ॥
भावँरि पारथ देखि कृत, पांचौ भाय हुलास।
कर्‌यो व्याहविधिवतसकल, धौम्यसहितऋषिव्यास॥
दोऊ कुलकी रीतिसों, करि विवाह सुखदानि।
वाजी गज रथ हेममणि, दीन्हों नृप सुखखानि।
भले विरदावलि गावत। सिन्धुर वाजि घने नग पावत।
गुणी राग बहु साजत। ताल पखाउज आउज बाजत
वरणै सब आनन्द संयुत। वासरहू निशि कौतुक अद्‌भुत

भाँवरि परतीं वेदन उच्चरि। दोऊ कुलकी रीति सबै करि॥
तेहि औसर विराट नरनाथा। दयो राखि कुश कन्या हाथा॥
व्यास आदि वेदध्वनि कीन्हीं। स्वस्ति बोलि अर्ज्जुनसुत लीन्हीं॥
विविधभाँतिबाजध्वनि माची। जहं तहं वारमुखी बहु नाची॥

अभिमन्यु कहं दीन्हीं सुता, हरषे भूप विराट।
धर्म्मपुत्तसुख पायकै, लसत अनन्दित पाट॥
बोलि मयासुरको रच्यो, सुन्दर सहस बनाय।
नृपतियुधिष्ठिर यों कह्यो, अर्ज्जुन निकट बुलाय॥
सुनि अर्जुन गुणधाम, मयदानव बोलो तुरत।
धवल सवाँरोधाम, खचि खचि रचि रचि जन्म निज॥

मय दानवकहं पार्थ बुलायो। रचहु धाम यह कहि समुझायो॥
रचहु भवन यहि भांति बनाई। चित्र विचित्र वरणिनहिं जाई॥
रत्न रत्न रचि सदन बनाये। हरित पीत मणिश्वेत सुहाये॥
दीसत उज्जल श्वेत अटारी। नील छत्र कमल घटा जनु कारी॥
भूमि त कतहुँ प्रसाद सतुङ्गा। खचितअरुणमणिरचितउतुङ्गा॥
को कवि उपमा तासु वखाने। देखत कौतुक देव भुलाने॥
पद्ममणिन रचि जाल बनाये। भूप रहनहित भवन सुहाये॥
मय दानव यह रचना ठानी। जहँ तह थलह जहातहँपानी॥
क्षत्रिय द्वारमन मानि प्रतीती। करत प्रवेश मिलत तहँ भीती॥
देखिय तहां रतन्न देवाला। रच्यो तहां दृभद्वार।

बैठत नित्य सभा जहँ राजा। तेहि देखत ऐरावत लाजा॥
पुर अन्तर विरच्यो शुचिधामा। तहँ रनिवास केर विश्रामा॥
वहुत भौर युत न्टप दरवारा। को कहि तासु बखानै पारा॥
हय हींसत सिन्धुर बहु गाजत। निशिवासरदुन्दुभितहँवाजत॥
बैठे तहँ न्टप साज बनाई। कहत वन्दिजन विरद सुनाई॥

भीम पार्थ सहदेव नकुल, बैठे कृष्ण सुजान।
पण्डितगण मण्डित रहत, सबलसिंह चौहान॥

इति द्वादश अध्याय॥ १२॥

सोमवंश न्टपधर्म्म सुत, शोभित शक्र समान।
चारि बन्धु सरि देवको, दुष्ट दलन बलवान॥

अञ्जलि जोरि जोरि युग पानी। कृष्णादेवते विनय बखानी।
जहं जहं परी विपति जब भारी। करि सुधि हरी तुरत,बनवा
दया सिन्धु सोइ करिय विचारा। मिलैं वेगि जेहि देश हमार
अह हरि हरहु अशेष कलेशा। करहुदूरि प्रभु मोर अन्देशा॥
अन्धपुत्र कीन्हों अपकारा। कपट दूत करि मोहि निकारा॥
धाम धाम गज वाजि छिनाई। लहि सम्पदा सबै कुरुराई॥
ो चीर दुशासन आनी। कीन्ह न कानि विकल भै रानी॥
नवन्धु कहि द्रुपदकुमारी। राखु राखु बहु वार पुकारी॥
ुस सब बैठि रहे शिर नाई। करि सहाय तुम लाज बचाई॥

करि आयेहौ करतहौ, सेवक सदा सहाय
करी वन्दना कृष्णकौ, धर्म्मपुत्र भुवराय ॥
द्वौ करजोरि भूप अनुरागे । करत विनय कमलापति आगें ॥
कच्छप वपुधरि सागर थाहन । मत्स्यरूप शङ्खासुर दाहन ॥
वन्दन मुनिजन सनक सनन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
शूकररूप रदनधरधरणीधर । खल हिरण्याक्षहि पतितप्राणहर ॥
भूतल खल दल दुष्ट निकन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
नरहिततनु प्रहलाद उबारयो । हिरण्यकशिपुनखउदरविदारयो॥
सेवक कष्ट हरण जगवन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
छलि बलि बान्धि पतालपठावन । वामन वपुधरि भूतल आवन
काटत सब माया दुख द्वन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
परशुपाणि क्षत्री मद नाशन । रघुकुलकमलदिनेशप्रकाशन ॥
रामचन्द्र दशरथ कुलनन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
कंस कुटिल असुरन भयकारी । केशीमर्दन अजिर विहारी ॥
पीत वसन तनु चर्चितचन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
बौधरूप धरणीपर धरिहौ । कलकी है दुष्टन संहरिहौ ॥
यह कहि नृपति कीन्ह पदवन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन॥
विनय मानिकै करि कृपा, दुर्योधनपहंजाव ।
समुझायो बहु विधि उन्ह, बचै गो तनुको दाव ॥
बिहंसि कृष्ण तबहीं उठिधाये । नगर हस्तिनापुर चलि आये ॥
सुनि कुरुनन्दन अनुज पठाये । सभामध्य लै कृष्णहि आये ॥

लेइहि कोपि गदा जब पानी। गाजिहि भीमसेन रण आनी ॥
हांक सुनत कुरुदल भहराई। जिमि विग देखि भड़ समुदाई ॥
अर्ज्जुन कोपि धनुष जब धरिहै। कौरव मारि प्रलय करि डरिहैं ॥
पार्थ वाण सहि सकै न कोई। नरकिन देव दैत्य जिन होई ॥
लैकर खड्ग नकुल बलधामा। अवगाहहिं सागर संग्रामा ॥
सहदेव युद्ध जुरे कर क्रोधा। तुव दल रोकि सकैको योधा ॥
कुलको कलहन त्यागिहि कोही। ऐसो भाव तजै अब तोही ॥
छांड़त मान न बात अनैसी। है तुम्हरे मनमहं नृप कैसी ॥

पार्थध्वजापर बैठिकै, गरजै पवनकुमार।
धर्म्मराजके धर्म्मते, होइहि नाश तुम्हार ॥
कृष्ण उठे यह वचन कहि, तिनको यह समुझाय।
भावी सो कैसे मिटै, को करि सकै बचाय ॥
नगर हस्तिनापुर तवै, कुन्ती पहुंची जाय।
समाचार श्रीकृष्णजू, सकल कह्यो समुझाय ॥
दुर्योधन मति परिहरी, देत न पाँचौ ग्राम ॥
दैवेको कहु का चलौ, श्रवण सुनत नहि नाम ॥

दुर्य्योधन उर बाढ़ो गर्वा। कहत जीतिहौं भारत सर्वा ॥
सो सुनि कुन्ती अति दुखपावा। हरिहिं दीख देखिनयन जलछावा ॥
मो सम जगत दुखी नहि कोई। भयो न है आगे नहि होई ॥
[illegible] दुखित देखि यदुराई। कहि हरिचन्द्रकथा [illegible] ॥
[illegible] रानी। [illegible] ॥

दशन घात सब वृक्ष ढहाये । सरवर पैठि जलज सब खाये ॥
पुरइनि तोरि मिलायो कीचा । अति रव करि गर्जा सरवीचा॥
मालाकार भूप सन जाई । समाचार सब कहेउ बुझाई ॥
महाराज यक आव वराहू । मूरतिवन्त सोह जनु राहू ॥
त्यहिं सब उपवनकीन्ह उजारो । खनि तड़ाग काँदो करिडारो
सुनि महीप पुनि रिस उपजाई । चल्यो तुरगचढ़ि दल अधिकाई
लै नरेश संग सुभट अनेका । चहुं दिशि जाय वाटिका छेका॥
तब नरेश कह भुजा उठाई । सुनहु श्रवण दै भटसमुदाई ॥
ज्यहिदिशिजाइ निकरि वाराहा । त्यहि जारों तनु तेज कराहा॥
पुनि वराह मन विस्मय आई । निकस्यो निकट भूपके जाई ॥

जाको दिशि ह्वै मैं कढ़ौं, करैं भूप तेहि दाह ।
यह विचारकैन्टप निकट, निकरो आइ वराह ॥

मारन चल्यौ भूप शर साजी । चल्यौ वराह मरुतगति भाजी ॥
तब नरेश करि चपल तुरङ्गा । गयो अकेल न दूसर सङ्गा ॥
परम गहन द्विज रूप बनाई । दीन ऋषीष मुनीश्वर आई ॥
नृपति विलोकि अचरज माना।करि प्रणाम यह बचन बखाना
पूरण मोरि भाग्य मुनिराया । दीन्हों दरश कीन्ह बड़ि दाया ॥
यह सुनि मुनि बोल्योसुसक्याता ।आयों तुमहि श्रवण सुनि दाता॥
पूरण करहु मनोरथ मोरा । बाढ़ै सुयश जगत नृप तोरा ॥
कह नृप अस भाषौ जनि मोरे । तुमकहँ कछु अदेय नहिं मोरे
बार बार मुनि बचन दृढ़ाई । नृपमन विप्र सुदृढ़ करवाई ॥

रोहिताश्व सुत भयो कुमारा। जनु ऋतुराज लीन्ह अवतारा॥
एकछत्र वसुधा नृप केरी। ऋधिसिधि रहै भवन जिमिचेरी॥
निन्नानवे यज्ञ नृप कीन्हा। सवई करन हेतु चित दीन्हा॥
यह नरेश मन मनसा आई। करि शत यज्ञ होहुँ सुरराई॥
सो सुधि सुनासीर कहुँ पाई। भे शक्र मुख गा कुम्हिलाई॥
उर न चैन अति भयो अँदेशा। गाधिसुवनपहं गयो सुरेशा॥

विश्वामित्रहि सो कही, सुरपति विपति सुनाय।
राखो चहो जो इन्द्रपद, तौ कछु करो उपाय॥

करै जो यज्ञ सिद्धि हरिचन्दा। लेइ इन्द्रपद सुनहु मुनिन्दा॥
करिय उपाय महामुनि सोई। जाते यज्ञ सिद्धि नहि होई॥
कातु अवधेश उपद्रव दावा। जो मुनीश तुम चहौ वचावा॥
सत्य हीन हरिचन्द्र नरेशा। करहु मोर तव मिटै अन्देशा॥
सो सुनि गाधिसुवन सुखपायो। हँसि सुरेश ते वचन सुनायो॥
यदपि न हमहिं उचित सुन राजा। करिय अकारण परअपकाजा॥
तुम आगमन परो म्वहिं भारा। करव शक्र हम काज तुम्हारा॥
सो उपाय हम करव सुरेशा। जाते नशै तुम्हार कलेशा॥

सत्यहीन हरिचन्द्र करि, करौं तुम्हारो काज।
इन्द्रपुरी का अवधको, तुरत छुड़ावौं राज॥

[illegible] प्रकार शक्रहि मुनि बोधा। विदा कीन्ह बहुभांति प्रबोधा॥
[illegible] वराह वपु आपु बनाये। कौशिक अवधपुरी चलि आये॥
[illegible] वराह नृपनि फुलवारी। दल फलमूल अशन कृतभारी॥

दशन घात सब वृक्ष ढहाये। सरवर पैठि जलज सब खाये॥
पुरइनि तोरि मिलायो कीचा। अति रव करि गर्जा सरबीचा॥
मालाकार भूप सन जाई। समाचार सब कहेउ बुझाई॥
महाराज यक आव वराहू। मूरतिवन्त सोह जनु राहू॥
त्यहि सब उपवनकीन्ह उजारी। खनि तड़ाग काँदौ करिडारी॥
सुनि महीप पुनि रिस उपजाई। चल्यो तुरंगचढ़ि दल अधिकाई॥
लै नरेश संग सुभट अनेका। चहुँ दिशि जाय वाटिका छेका॥
तब नरेश कह भुजा उठाई। सुनहु श्रवण दै भटसमुदाई॥
ज्यहिदिशिजाई निकरि वाराहा। त्यहि जारों तनु तेज कराहा॥
पुनि वराह मन विस्मय आई। निकस्यो निकट भूपके जाई॥

जाको दिशि ह्वै मै कढ़ौं, करैं भूप तेहि दाह।
यह विचारकैभूप निकट, निकरो आइ वराह॥

तारन चल्यौ भूप शर साजी। चल्यौ वराह मरुतगति भागी॥
सब नरेश करि चपल तुरङ्गा। गयो अकेल न दूसर सङ्गा॥
परम गहन द्विज रूप बनाई। दीन समीप मुनीश्वर आई॥
नृपति विलोकि अचम्भव माना। करि प्रणाम यह वचन बखाना॥
पुरण मोरि भाग्य मुनिराया। दीन्हों दरश कीन्ह बड़ि दाया॥
यह सुनि मुनि बोल्यो मुसक्याता। मागों तुमहि श्रवण सुनि दाता॥
राजा करहु मनोरथ मोरा। बाढ़ै सुयश जगत नृप तोरा॥
[illegible] भूप अस भाषी जनि मोरी। तुमकहँ कछु [illegible]॥
बार बार मुनि वचन सुनाई। [illegible]॥

मांगो राजपाट भण्डारा । तापर और कनक सो भारा ॥
देन कह्यो नृप पुर जब आये । गाधिराज सुत सङ्ग लगाये ॥

　　दीन्ह नरेश मुनीशकहं, राज पाट भण्डार ।
　　विहँसि गाधिसुत तब कही, स्वर्ण देहु सौभार ॥

जो नहिं राय देहु तुम मोरा । नाशै सकल सत्य नृप तोरा ॥
कह नरेश मैं सर्ब्बसु दयऊ । रानी तनय मोर तनु रखऊ ॥
कह हरिचन्द्रवचन छल हानी । लीजै वेंचि मुनीश्वर ज्ञानी ॥
गाधिसुवन सुनि अतिसुखपाये । लै निज सङ्ग बनारस आये ॥
सात दिवस मग अन्न न पानी । कीन्हों नृप न नेक अरु रानी ॥
अठयें दिवस गङ्गके तीरा । चहत पान जलविकल शरीरा ॥
तब द्विज कहेउ नरेश सुनाई । विना कनक जो तू जल खाई ॥
होइहि सत्य धर्म्म तुव छारा । फिर न प्रतिग्रह करब तुम्हारा ॥
सुनि नरेश मन अतिदुख पाये । बैठि गङ्गतट शीश नवाये ॥

　　रोहिताश्व अति तृषित ह्वै, तब थरहरो शरीर ।
　　मूर्च्छि परे तनु विकल अति, जन्हसुताके तीर ॥

करत विलाप विकल अति रानी । अञ्चल बोरि लिआई पानी ॥
तब द्विज इमि रानीते बोल्यो । जाना सत्य धर्म्म तुव डोल्यो ॥
स्वर्ण दिये विन जल मुखडारा । कुँवर वदन गा धर्म्म तुम्हारा ॥
सुनि रानी मन अति दुख व्यापा । बैठि गङ्ग तट करत विलापा ॥
. . . जप्यो मुनि राई । वारह कला तपै रवि आई ॥
तेज कछु वरणि न जाई । रानी नृपति गिरेउ मुरछाई ॥

विनय कीन्ह नृप बारहिंबारा। तुमते प्रकट्यो वंश हमारा ॥
सो तुम दया छांड़ि प्रभु दयऊ। सुनि नरेश प्रभु शीतल भयऊ॥
कृपादृष्टि देख्यो नृप रानी। सहित कुँवर तनु ताप बुझानी ॥
रविप्रसाद तनु अतिबल भयऊ। छुधा पियास त्रास मिटि गयऊ॥
तब मुनि संग नरेश लवाई। बैठि राजमारगमहँ आई ॥
बोलि सबनते वचन सुनाये। विक्रय हेतु मनुज हम लाये ॥

सबहिं सुनाय मुनीश पुनि, कहि इमि बारहिं बार।
तीनि मनुजको मोल हम, स्वर्ण लेहिं से भार ॥

रानिहि निरखि रूप अधिकाई। सुनि माता वेश्या तहं आई ॥
मोल करनको कीन्ह प्रचारा। कह ऋषि कनक अर्द्ध सौ भारा॥
भार पचास स्वर्ण म्वहिं दीजै। बालक सहित बाम यह लीजै॥
दीन्ह हिरण्य अर्द्ध सौ भारा। रानि सहित लै चली कुमारा ॥
वेश्या तें कर जोरि सयानी। बोली वचन दीन ह्वै रानी ॥
लीन मोल तुम जीव हमारा। कौन काज हम करब तुम्हारा ॥
गणिका कह्यो रानि ते बानी। कारज सुनहु हमार सयानी ॥
नाचि गाय जग पुरुष रिझाई। दान पाइ जीविका चलाई ॥

पर पुरुषनते प्रीति करि, द्रव्य लाइये धाम।
हावभावकरि मनहरिय, कौन दोष यह काम ॥

रवि मण्डलते बहु कपि आये। बारमुखिनकहँ त्रास दिखायें॥
गणिकन विकल विप्रसन जाई। कथा अलौकिक सकल सुनाई॥
त्यागो जो लिय द्रव्य हमारा। तुम यह लेहु पुत्र अरु दारा॥
बारमुखी इमि वचन सुनाये। सत्यकेतु द्विजतहं चलि आये॥
तिन तब बूझेउ सकल प्रसङ्गा। सुनि दुख लह्यो महामुनि अङ्गा॥
कनक मँगाय दीन्ह मुनि ज्ञानी। वेश्यनते लीन्हों सुत रानी॥

कन्या करि राखी भवन, करि सनेह मुनिराय।
द्विजपत्नीकहँ प्रीति करि, अधिक अधिक सरसाय॥

नृपकहं लीन्हों मोल चण्डारा। दीन्हों कनक अर्द्ध सो भारा॥
कालसेनरह त्यहि का नाऊं। लै हरिचन्द्रहिं गा निज ठाऊं॥
कही दानवी सकल कहानी। सौंप्यो नृपकहं घाट मशानी॥
तहां मृतक जो नर लै आवै। विनादण्ड कृतिकरन न पावै॥
मुद्रा पञ्च वसन युग देई। मरन देहु कृति जब लै लेई॥
मिलै दण्ड सो लै नृप धीरा। घट भारि लेहु गङ्गको नीरा॥
नित प्रति कालसेनके आगे। धरैं जाय नृप अति अनुरागे॥
कह्यो नाम नृपसन त्यहि वागा।सुनि सुमहीपति पाँयन लागा॥
सुनु स्वामी हरि याम मनाऊं। मोरे कतहुँ गाँव नहिं ठाऊं॥
ह विधि ताहि भूप समुझाई। पहुँचो प्रात घाट सो आई॥

यहि विधि बीते कछु दिवस, सुनि है सर्प कराल।
डस्यो आनि पुनि नृप तनय, प्राण तजे ततकाल॥

सत्यकेतु कुश समिध हित, वनकहँ कीन्ह पयान।
द्विज तरुणी ता चण गई, करन गङ्ग असनान॥
रानी निरखि शोच उपजावा। करत विलाप दुसह दुखपावा॥
अर्द्ध वसनते कुँवर ओढाये। अर्द्ध वसन निजदेह छिपाये॥
लैगइ तुरत गङ्गके तीरा। रुदन करत अति विकल शरीरा॥
चाहत जल डारौं त्यहि काला। आयो भूप रूप चण्डाला॥
लखि मृदु कुँवर नयनजल मोचे। भयो दुसहदुख नृप अतिशोचे॥
स्वामिभक्ति सुधि भूपहि आई। तब रानीकहँ कह्यो रिसाई॥
निठुर वचन बोल्यो तबहिं, रानीसों नरनाह।
दण्ड दिये बिनु जनि मृतक, कीजै सरित प्रवाह॥
कह रानी ये भूमि भुवारा। रोहिताश्व यह तनय तुह्मारा॥
अस कहि कीन विलाप कलापा। बोल्यो नृपति सहित परितापा॥
मैं हौं कालसेनको दासा। छांड़ि देहु मनते यह आसा॥
सुत्रा पञ्च वसन बिनु लीन्हें। मानौं मैं न कोटि विधि कीन्हें॥
मम पाणि तुम बेचि बहाई। अब नृप द्रव्य कहां हम पाई॥
वसन कुँवरको लेहु उतारी। लेहु बेचि मम आसिष मारी॥
सुनि नरेश कहं क्रोध न पसा। पकरि केश [illegible] ले खड्ग॥
मारन चह्यो खड्ग गहि पाणी। तब यह भई गगनमहँ बाणी॥
मत मारो तनु कहतहि, [illegible]।
[illegible] धीरज धरो, धन्य धन्य [illegible]
[illegible]

परे चरण नृप कण्ठ लगाये। रानीके बन्धन छुटवाये॥
ह्वै प्रसन्न तब श्रीभगवाना। भूपति कहँ दीन्हों वरदाना॥
अब नृप करहु अवधपुरवासा। अन्तकाल आयहु ममपासा॥
करी कृपा हरि कुँवर जियाई। अन्तर आप भये सुरराई॥
प्रभुकी कृपा नगर निज आये। अचल राज्य माता उन पाये॥
नहि उनके दुखको कछु छोरा। तिन देखत केतिक दुख तोर
शिव प्रसाद मिटि जैहै सोई। धीरज धरहु नीक अब होई॥
यहि प्रकार कुन्ती समुझाई। विदुर भवन गे सङ्ग लिवाई॥
करि भोजन तहँ शारंगपानी। कीन्ह शयन सब राति सेरानी

प्रात होत श्रीकृष्णजू, दुर्योधन के पास।
गये फेरि हितसों सुबुधि, कीन्हें वचन प्रकास॥
कहो हमारो कीजिये, पांच ग्राम दै देहु।
बन्धु एकसो पांचसों, निशि दिन बढ़ै सनेहु॥
दुर्योधन नृप कृष्णके, वचन सुने तेहि काल।
प्रतिउत्तर हरिसों कह्यो, भये विलोचन लाल॥
नित हरि शालै शाल हरि, कितहि शलावत आनि।
करौं अपाण्डव भूमि सब, धरौं न कुलकी कानि॥

सो सुनि वचन कृष्ण नहिं भाये। ह्वै सक्रोध यहि भाँति सुनाये
कोपि भीम रणमें दल गाजहिं। सुनत नाद कौरवदल भाजहिं॥
गदायुत पवनकुमारा। को तापर डारै हथियारा॥
.१ नकुल रु पाण्डुकुमारा।- तासम सकल-कौन संसारा॥

जब कोपहि लैं पाणि पिनाका। धीर न रहै सुनत रण हांका ॥
समुझत नहीं वचन सुनि मूढ़ा। परत सूझि नहिं गर्व अरूढ़ा ॥
अबहि न आवत चेत अभागे। समुझहि नीच मूढ़महँ लागे ॥

बोले शकुनि सरोष ह्वै, कहौ नृपति सों जाय।
कौन कानि याकी करौ, बाँधिलेहु सुख पाय ॥
दुख पायो भीषम विदुर, विकल भये सब गात।
चहत कियो अपमान सब, बनै नहीं कछु बात ॥

भीषम विदुर विकल प्रभु जानी। वदन पसारेउ शारंगपानी ॥
मुख भीतर देखो ब्रह्मण्डा। सभ्रम छायो चित्त अखण्डा ॥
देख्यो गगन सूर्य्य शशि तारा। देख्यो भूमि अकाशपतारा ॥
भूधर सरित सिन्धु अरु कानन। देख्यो सुर सुरेश सहसानन ॥
देख्यो शम्भु विरञ्चि मुनीशा। दानव दनुज सृष्टि सब दीशा ॥
कुरु पाण्डव देखे संग्रामा। जहँ तहँ मरेपरे बलधामा ॥
कृप कृतवर्म्मा अश्वत्थामा। कुरुदलमध्य बचौ यह नामा ॥
सात्यकि पञ्चबन्धु सुरत्राता। पाण्डव मध्य बचे ये साता ॥
यहि विधिचरित कृष्णदरशाये। भीषम विदुर चरण शिरनाये ॥

यहि विधि दरशायो चरित, भीषमको जगदीश।
वचन प्रकाश्यो विदुरसों, हरिपद नायो शीश ॥

सकल दुर्योधन मर्म न जानत। शिव त्रिभुवनलौं नहिं मानत
ऐसो करत नृपता गहा। कुलकै धर्म नहिं यहि रहा ॥
[illegible] मोहि सो लिखा करतारा। कह भीषम यह [illegible]

कह मुनि सुनहु मुकुटवरधारी। शोच हरण सन्तनहितकारी॥
चले कृष्ण नृपको समुझाई। पहुंच्यो धर्म्मपुत्र पहं आई॥
पञ्च बन्धु पद शीश नवाये। बैठि कृष्ण यह वचन सुनाये॥
सूचम महि तुमको नहिं देता। उद्यम कीन्हों भारत हेता॥
विना युद्ध महि कबहुं न दैहै। जो जीतै सोई सब लैहै॥
बार बार कह बात कन्हाई। विना युद्ध कौने महि पाई॥

वीरभोग ह्वै जीति रण, क्रूर तजैं कदराय।
अस्त्र गहौ भारत रचो, लीजै सबै बचाय॥
कृष्ण कही सबके मते, मनमानी यह बात।
धर्म्मराज बन्धुन सहित, भये प्रसन्नित गात॥

इति त्रयोदश अध्याय॥ १३॥

इति विराटपर्व्व समाप्त।

उद्योग पर्व्व।

विधि हरि हर गणपति गिरा, सुरमुख पाइ नियोग।
सबलसिंह चौहान कहि, भणत पर्व्व उद्योग॥

कह ऋषिराइ सुनहु कुरुकेत। कथा सुभग मुद मङ्गल हेत॥
जब हरि धर्म्मराज पहँ आये। मिलत हृदय अति आनंद छाये॥
गहे चरण भीमादिक भाई। बैठे अति प्रसन्न यदुराई॥
तब सुधि पाइ विराट भुवारा। आये सभा सहित परिवारा॥
उत्तर सखा कुँवर दोउ साथा। आइ चरण परसे यदुनाथा॥
उठे भूप मिलि भये सुखारे। गहि भुज निज समीप बैठारे॥
सतन समेत द्रुपद महाराजा। धृष्टकेतु त्यहि सभा विराजा॥

काशिराज बैठे सभा, शूरसेन नरनाह।
जरासन्धसुतसात्यकी, नृप सब सहित उछाह।

पाञ्चाली सुत पांचौ वीरा। घटोत्कच्छ अभिमन्यु रणधीरा।
हरि समीप बैठे नरनाथा। अर्जुन भीम नकुल [illegible]

कह मुनि सुनहु मुकुटवरधारी। शोच हरण सन्तनहितकारी॥
चले कृष्ण नृपको समुझाई। पहुंच्यो धर्मपुत्र पहं आई॥
पञ्च बन्धु पद शीश नवाये। बैठि कृष्ण यह वचन सुनाये॥
सूच्चम महि तुमको नहिं देना। उद्यम कीन्हों भारत हेता॥
बिना युद्ध महि कबहुं न दैहै। जो जीतै सोई सब लैहै॥
बार बार कह बात कन्हाई। बिना युद्ध कौने महि पाई॥

वीरभोग ह्वै जीति रण, क्रूर तजें कदराय।
अस्त्र गहौ भारत रचो, लीजै सबै बचाय॥
कृष्ण कही सबके मते, मनमानी यह बात।
धर्मराज बन्धुन सहित, भये प्रसन्नित गात॥

इति त्रयोदश अध्याय॥ १३॥

इति विराटपर्व्व समाप्त।

उद्योग पर्व्व।

विधि हरि हर गणपति गिरा, सुरमुख पाइ नियोग।
सबलसिंह चौहान कहि, भणत पर्व्व उद्योग॥
कह ऋषिराइ सुनहु कुरुकेतू। कथा सुभग मुद मङ्गल हेतू॥
जब हरि धर्म्मराज पहँ आये। मिलत हृदय अति आनंद छाये॥
गहे चरण भीमादिक भाई। बैठे अति प्रसन्न यदुराई॥
तब सुधि पाइ विराट भुवारा। आये सभा सहित परिवारा॥
उत्तर सखा कुँवर दोउ साथा। आइ चरण परशे यदुनाथा॥
उठे भूप मिलि भये सुखारे। गहि भुज निज समीप बैठारे॥
सनन समेत द्रुपद महाराजा। धृष्टकेतु त्यहि सभा विराजा॥
काशिराज बैठे सभा, शूरसेन नरनाह।
जरासन्धसुतसात्यकी, न्टप सब सहितउछाह॥
पाञ्चाली सुत पांचौ वीरा। घटोत्कच्छ अभिमन्यु रणधीरा॥
हरि समीप बैठे नरनाथा। अर्ज्जुन भीम यमल युगसाथा॥

प्रद्य म्नक अनिरुद्ध कुमारा। जाम्ववती सुत साम्ब जुझारा॥
बैठे यादव द्वादश जाती। सब परिवार पुत्र अरु नाती।
बैठे सब नृप सखा सुखारी। भोज वृष्णि अन्धकगण कारी॥
हरि समीप हल मुशलधारे। आसव पिये नयन रतनारे॥
नील निचोल आभूषण साजे। प्रभुके दक्षिण ओर विराजे॥
जाकहँ शेष कहै संसारा। सो बलभद्र सहैं जगभारा॥
औरौ देश देशके राजा। जुरे आनि तहँ सकल समाजा॥

भूपवामदिशि द्रौपदी, भूषण वसन उदोत।
मनहु प्रभाकरको सभा, जगर मगर द्युति होत॥

केहरिकटि मृगशावकनयनी। बोली विहँसि वचनपिकवयनी॥
दुर्योधन गृह भूप पठाये। कारज सकल नाथ करि आये॥
कह हरि वह एकौनहि मानहि। तृणसमानतिहु लोकहि जानी
कहे वचन हँसि शारंपानी। विनायुद्धमहि मिलिहि न रानी॥
सो सुनि धर्मराज दुख पायउ। वासुदेवते विनय सुनायउ॥
मानत सो न कुमारगगामी। अब उपाय कीजै का स्वामी॥
कही बिहँसि तब शारंगपानी। सुनहु नरेश प्रेम सज्ञानी॥
बैठे द्रुपद विराट भुवारा। पूंछि मन्त्र तस करहु प्रचारा॥
तस कछु मतो कहैं सब लोगा। कहेउ कृष्ण तस करियनियोग

बुद्धि बहिक्रम वृद्ध शुचि, ज्ञानवान पञ्चाल।
धर्मेश लवलनृप कहै, करिय यतन ततकाल॥

स्नेह वरिष्ठ भूप सब लायक। पितु समान तुम्हरे हितदायक॥
इनहिं पूंछि करिहौ जो काजा। होइहि सकल मनोरथ राजा॥
पूंछौ बैठि विराट भुवारा। इनते को हित चहत तुम्हारा॥
द्रुपद विराट कही यह बानी। सब जानत प्रभु अन्तर्य्यामी॥
अब प्रभु और न करहु विचारा। आयुध बांधि होहु असवारा॥
कोटिन विधि प्रभु यतन विचारे। मिले न महि कौरव विन मारे॥
सुनि यह वचन सात्यकी बोला। कहे नाथ इन वचन अमोला॥
मत हमार सुनि पावन वारी। जलै जियत कुरुपति अपकारी॥

तबलगकुशल न पाण्डुसुत, सुनिये दीनदयाल।
जबलग दुर्योधन जियत, ग्रसत न वाकहँ काल॥

आज्ञा नाथ मोहिं अब दीजै। मरै सकल कौरव सुनि लीजै॥
पारथते धनुविद्या पाई। कीन्ह निपुन सब अस्त्र पढ़ाई॥
यहि विधि रण जीतौ यदुनायक। कौरव निधन करनके लायक॥
सुनत वचन हलधरहि न भाये। क्रोधित नयन अरुण होइ आये॥
मोहि न भावत मन्त्र तुम्हारो। चहत सकल मिलि खेल बिगारो
धृतराष्ट्रके छोटे भ्राता। जानहु पाण्डु जगत विख्याता॥
वेद पुराण विदित सब काहू। होइ परन्तु जेठ नरनाहू॥
है जेठेको राजकुमारा। दुर्योधनहि राज्य अधिकारा॥
पहुंचन नहिं पाण्डवको दावा। नाहक सब मिलि वैर करावा॥

सुने श्रवण बलदेवके, मन्त्र जबै यदुनाथ।
लागे करन विवाद तब, निज भ्राताके साथ॥

दूरे प्रकट भये का वासा। मेटि को सकै पाण्डुसुत आसा॥
यहि प्रकार हरि कहि समुझावा।सुनत वचन हलधरहि न भावा॥
वाह्लीक कछु कौन न दावा। प्रथम पितामह अंश न पावा॥
राज्ययोग नहिं होत कनिष्ठा। करवावत तुम कान्ह अरिष्टा॥
हँसि बोले तब शारङ्गपानी। सुनहु तात यक कथा पुरानी॥
भे शन्तनु ते प्रथम देवापी। वाह्लीक भे मध्य प्रतापी॥
देखेउ ज्येष्ठ कुष्ठ तनु चीन्हा। ताते राज्य पितहि नहि दीन्हा॥
बाह्लीक मातुलपहँ गयऊ। शन्तनुनाम नृपति सो भयऊ॥
प्रथम ब्याह गङ्गाते कीन्हा। ताके जन्म पितामह लीन्हा॥
राज्य विचित्रवीर्य्यकहँ दयऊ। भीष्म ज्येष्ठ राजा नहि भयऊ॥
पूंछत द्रुपद सुनहु जगतारण। अंशहीन भीषम केहि कारण॥
महारथी सन और न पूजा। जेहिं समान जग भयउ न दूजा॥
बलते कवन छुड़ावत दावा। केहि कारण उन राज्य न पावा॥

प्रकटे शन्तनु गङ्गते, महाबाहु बलखानि।
अंश न पायो वंशको, कारण कहौ बखानि॥

सुनि श्रीहरि आये इन बातन। सुनहु पृषदसुत कथा पुरातन॥
भागीरथी ब्याहि सुख पाये। करि करार भवनहिं नृप लाये॥
बालक सप्त प्रथम उपजाये। तेइ नृप लै प्रवाह पहुँचाये॥
भीषम जन्म जगत जब लीन्हा।बाल विलोकि मोह नृप कीन्हा॥
भूप गङ्गा सुनि लीजै। अबकी सुत माँगे मोहि दीजै॥
मरि नृप कीन्ह करारा। पहुंचावों बालक तुव धारा॥

तुमहि भूप अब सुत प्रिय लागे। यह करार कीन्हों मैं आगे॥
अब तुम पुत्रलोभ जिय आना। निज प्रवाह हम करब पयाना॥
अपनो पुत्र प्रीति करि लीजै। जाहुँ भूप मोहिं आज्ञा दीजै॥
करहु नृपति अब तजि सन्देहा। राखहु हमहिं कि बालक देहा॥
कह नरेशमोहिशिशुप्रियलागत। जोरि पाणि तुमते यह मांगत॥
सुरसरि सुनि महीप मुखवानी। निज प्रवाह ततकाल समानी॥
नारि विरह दुख भूपहि व्यापा। विकल रैनि दिन कीन्ह विलापा॥
राज्य योग बीते कछु काला। भयो कुँवर दुख तजे भुवाला॥
परशुराम धनुविद्या दीन्हों। आपु समान महारथ कीन्हों॥
करहि गङ्गसुत राज्य प्रचारा। भूपघोसप्रतिरमन शिकारा॥

घूमत भूप अखण्ड वन, गयउ नदी के तीर।
देखि तहां कन्या नवल, पहिरे भूषण चीर॥
कीधौं रति सम मेनका, रम्भा रूप समान।
विज्जुलतासी देखि छबि, सम्भ्रम भूप भुलान॥

ठाढ नरेश नदीके तीरा। कामविवश अति विकल शरीरा॥
हांकि अश्व चलि गे नृप आगे। पूंछन वचन प्रेम सों लागे॥
केहि सुकृतीकी सुता सोहाई। कारण कवन नदीतट आई॥
तुमहि देखि लोभेउ मन मोरा। को तुव पिता नाम का तोरा॥
सुता निषादराजकी राजा। निशि दिन मोर नदीतट काजा॥
मीन राज व्योहार हमारा। मत्स्योदरी नाम द्विज रंगरा॥

आवत भस तनु कठिन कुवासा। देखि लोग दावैं निज नासा॥
यहि प्रकार कछु दिवस बिताये। यहि मग ऋषय पराशर आये॥

सरित तीर ठाढे भये, तपोमूर्त्ति अभिराम।
मोहि बिलोक्यो तरणिपर, विकल भयो वशकाम॥

मोहिं बिलोकि ऋषिप्रेम अभोरा। भयो कामवश विकलशरीरा॥
मांगो रति मुनि करि बहु छेड़ा। बोली मैं न भूपवश त्रीड़ा॥
कह मुनि हमहिं देव ऋतुदाना। लेहु शाप को वज्र समाना॥
क्रोधवन्त ऋषिको जब देखा। प्रतिउत्तर मैं दीन्ह विशेखा॥
मैं तुम्हारि पुत्री ऋषिराई। मलिन रूप अरु देह गँवाई॥
नीच जाति कृत अशन कुभोगा। नाहिंन नाथ तुम्हारे योगा॥
वरै पुरुष पितु शिष बिन जोई। कुलटा नाम कहावै सोई॥
मैं मुनीश तुव हाथ बिकानी। छोड्यो लोकलाज कुलकानी॥
तुमहिं बिलोकि राज अनुकूला। देखहु नाथ लोग दोउ कूला॥
अति कलङ्क लागी मुनि हमको। दिन रति नाथ उचितनहिंतुमको॥

ह्वै प्रसन्न तब ऋषि कहेउ, त्यागहु तरुणि विषाद।
तुव तन गन्ध कपूर को, होइहि मोर प्रसाद॥

ऋषि आशिष प्रसन्नचित भयऊ। कुटि विषाद शोकसब गयऊ॥
शशि समान तनु भयो प्रकासा। योजन भरि पूरेउ पुनिवासा॥
योजन भरि तनु वहेउ सुगन्धा। कह्यो नाम पुनि योजनगन्धा॥
[illegible]त आयेउ निज धामा। ताते सत्यवती तुव नामा॥
कीन्हें ऋषय चरित्रा। भयउ दिवस महँ राति विचित्रा॥

परेउ कुहिर दिनकर द्युतिनासा । रमितभयोमुनिसहितहुलासा
योजन भरि पूर्यो पुनि बासा । तनु सुगन्ध दुर्गन्ध बिनासा ॥
निशिके सरिसभयो अँधियारा । सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हों । कन्यारूप सदा तेहि कीन्हों॥
यहि प्रकार मोहिं दै बरदाना । ह्वै प्रसन्न मुनि कीन्ह पयाना॥
जब ऋषीश निज मारग गयऊ । भये प्रकाश कुहिर मिटि गयऊ॥
तनते भये व्यास ते जाना । प्रगटत बनको कीन्ह पयाना ॥

सत्यवती भूपालते, कह निज कथा प्रमान ।
भणित पर्व्व उद्योग यह, सबलसिंह चौहान ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

काम बिबश नृप बचन उचारे । सत्यवती चलु भवन हमारे ॥
सब प्रकार तुव मम सुखदानी । तुमकहँ लै करिहौं पटरानी ॥
करहु कवल नृप चलहु तुम्हारे । होइ महीपति पुत्र हमारे ॥
तुव करार आवहि केहि काजा । करहि कवल भीषम सुनु राजा॥
सुनि नरेश बहु दूत पठाये । गङ्गासुतहि बोलि लै आये ॥
सत्यवती सुनि सकल प्रसङ्गा । कीन प्रणाम प्रसन्नित अङ्गा ॥
चलहु पिता सङ्ग मातु उदारा । सब प्रकार मैं दास तुम्हारा ॥
सत्यवती सुनि आयसु दयऊ । धनि पितुभक्त जगत तुम भयऊ॥
करहु कवल हमते युवराजा । तनय हमार करैं तब राजा ॥
चलौं भवन तब पितुके सङ्गा । देहु बीच जग पावनि गङ्गा ॥

धर्म धुरन्धर धीर धर, देव अंश अवतार।
तुम समसत्यप्रतिज्ञ जग, भये न होनेहार॥

वचन पालि तुम राज्य न लेहौ। निश्चय मम पुत्रनको देहौ॥
तुम्हरे वंश प्रबल सुत होई। लेइ छिनाय राज्य पुनि सोई॥
तब शन्तनु भीषम प्रति बोले। हे सुत बैन नारि यह बोले॥
कीन्हे बिन उपकार तुम्हारे। नहिं चलिहै पुनि भवन हमारे॥
यहि बिन मैं न जियउँ सुनु शावक। जारत मोहि मदनविनपावक॥
शन्तनु वचन शोक मम खोले। सुनतहि तब गङ्गासुत बोले॥
सुनहु पिता तुम मोर करारा। निरखहुं मैं न नयन भरि दारा॥
किमि ह्वै है सन्ततिको साजा। करिहौं सत्यवतीसुत राजा॥
मात पिता श्रीहरि गुरु आना। सत्यवती सुनु वचन प्रमाना॥
जैसे हम गङ्गा कहँ जानब। त्यहिते सरिस मातु तुहिं मानब॥
करि करार शुभ यान चढ़ाये। नगर हस्तिनापुर लै आये॥
सब प्रकार निज लायक जानी। शन्तनुनृप कीन्हेउ पटरानी॥
चित्राङ्गद विचित्र सुत जाके। भये देव सरिवर नहिं ताके॥
तनु तजि नृप सुरपुर जब गयऊ। चित्राङ्गदहि राज्य पुनि भयऊ॥
गिरिकन्दरमहँ फिरत शिकारा। प्रबल सिंह ताको वन मारा॥
भये दुखित भीषम सुनि बाता। अतिशय विकल भई पुनि माता॥
सहित धरा धन सेन समाजू। दीन्ह विचित्रवीर्य्यकहँ राजू॥

आज्ञा लीन्हीं मातुकी, भीषम अति हरषाय।
काशिराजकी लै सुता, भ्राता व्याहिनि आय॥

याते राज्य न भीषम लीन्हा। राज्य विचित्रवीर्य्यकहँ दीन्हा॥
रानिन विवस भयउ नरनाहा। रमित रैनि दिन सहित उछाहा॥
राजकाज नृपको सब भूला। प्रतिदिन रहै नारि अनुकूला॥
द्वादश वर्ष भवनते राजा। कढ़ेउ न जान्यो दूसर काजा॥
गङ्गासुत कृत राज्य प्रचारा। भूपद्दिवसनिशि रमित विहारा॥
बल न रहेउ तनु नारि प्रसङ्गा। भयउ राजयक्ष्मा नृप अङ्गा॥
त्यागेउ प्राण राज तेहि रोगा। भये विकल जन त्यहिके शोगा॥
सत्यवती अतिकीन्ह विलापा। भीषम उर उपज्यो परितापा॥

धरि धीरज बैठे भवन. दुखित नयन जल रोकि।
माता सों कीन्हों मतो, वंश विहीन विलोकि॥

माता सुनहु व्यास जो आवै। कह भीषम वे वंश चलावैं॥
सुमिरन तुरत व्यासमुनि आये। अक्षमाल तनु भस्म चढ़ाये॥
जटाकलाप वाल अति भूरे। शोभित नयन अरुण पुनि रूरे॥
उठि भीषम चरणन शिर नाये। सत्यवती पुनि कण्ठ लगाये॥
सादर सिंहासन बैठारे। विनय कीन्ह दुख हरो हमारे॥
वंश विहीन बन्धु तुव भयऊ। भयो राजयक्ष्मा मरि गयऊ॥
अब करि कृपा ऋषिय अवतंशा। करिय प्रकट रानिनते वंशा॥
व्यास मातु की आज्ञा जानी। अन्तःपुर बैठे सुख मानी॥
कालहिहि कहेउ अम्बिका बोली। मुनिशय्या तुम जाहुअमोली॥
इनते सुत प्रगटो तुम जाई। बाढ़ै वंश राज्य अधिकाई॥

कहो अम्बिका मातु यह, बात न मोते होय।
कुलटा कहिहैं लोगजग. जाय धर्म्म सब खोय॥

येहैं व्यास विष्णु अवतारा। व्यापि रहो सगरे संसारा॥
तासु परश कीन्हें नहिं पापा। अस मन समुझि तजो परितापा॥
सत्यवतीको आज्ञा मानी। ऋषि ढिग गगई अम्बिका रानी॥
व्यास तेजते तनु थहराई। बैठि सकुचवश शीश नवाई॥
जिमि हिमगतकमलीकुम्हिलानी। थके वचन मुखआव न बानी
भयबश अङ्ग अङ्ग सब काँपो। सुरत करत लीन्हे मुख झाँपो॥
गये व्यास माताके पासा। निकट बैठि यह वचन प्रकासा॥

सहि न सकी मम तेज तिय, लिये ढाँकि दृगवार।
ह्वै है याके मातु सुनु, अचविहीन कुमार॥

सत्यवती सुनि अति दुख लहेऊ। पुनि पुनि वचन पुत्रसों कहेऊ॥
नयन विना राजा अधिकारी। होत नहीं सुत देख विचारी॥
करहु प्रकट अम्बाते बालक। सो कुरुवंश होइ प्रतिपालक॥
व्यास मातुकी आज्ञा मानी। अन्तःपुर बैठे पुनि आनी॥
कह अम्बाते योजनगन्धा। होइ अम्बिकाके सुत अन्धा॥
मुनि शय्याकहँ अब तुम जाहू। उपजै पुत्र होइ नरनाहू॥
आयसु माँगि गई मुनि तीरा। देखि तेज भयो पीत शरीरा॥
।॰ आलिङ्गन कीन्हा। होय भूपसुत आशिषदीन्हा॥
ह सत्यवतीपहँ आये। समाचार सब कहि समुझाये॥

सकल सुलक्षण होय सुत, महाराजके योग ।
पीत भई तिय देखि मोहि, होयपीत तनु रोग ॥
यह कहि वचन मातुके आगे । सुमिमग्न करन ब्रह्मको लागे ॥
कह्यो मातु अब सुत सुनिलीजै । अपने मन विचार यह कीजै ॥
पहिते अधिक न दूसर भोगा । अन्ध एक सुत यक युतरोगा ॥
देहु एक सुत अबकी वारा । विष्णु भक्त जानै संसारा ॥
कहेउ व्यास माता सुनि लीजै । शय्या पठै अम्बिका दीजै ॥
सत्यवती सुनि ताहि बुलाई । सुनत अंबिका शीघ्र डोलाई ॥

एक बार माता करौं, वचन तुम्हार प्रमान ।
बारमुखी सम मो तिया, बार बार ऋतुदान ॥

सत्यवती कह बालक काजा । तुम ऋतु करो छोड़िकै लाजा ॥
तासुहि निकट सखी कहि आई ।मुनि समीप परिचरी पठाई॥
भये रसित जानेउ मुनि गनी । निलज देखि दासी पहिचानी ॥
आये मुनि माताके आगे । कथा समस्त कहन पुनि लागे ॥
याते होवहि प्रकट कुमारा । परमभक्त जानहि संसारा ॥
माता सत्य कहौं मैं तोहीं । पुनि छल कीन्ह अम्बिका मोहीं ॥
मोहि विलोकि परम भयपाई । पठई और आपु नहि आई ॥
निपट निलज्ज देख मैं सोई । काशिराजकी सुता न होई ॥
मातासों यह कहि चले, मुनि वनको सुखपाइ ।
भये अम्बिकाके तनय, धृतराष्ट्र तनु आइ ॥

से अम्बाके पाण्डुकुमारा। वंश विभूषण जग प्रतिपारा॥
दासी योनि विदुर अवतारा। विष्णु भक्त अरु परम उदारा॥
प्रथम अम्बिकाके सुत भयऊ। अन्ध जानिकै राज्य न दयऊ॥
भीषम बाहुलीक मत कीन्हा। अम्बासुतहि राज्य नहिं दीन्हा॥
पाण्डुहिं सिंहासन बैठायो। तिलक कियो शिरछत्र धरायो॥
राज्ययोग पुनि राजकुमारा। नाहिंन भ्रातजात अधिकारा॥
यहि प्रकार हरि कहि समुझावा। द्रुपद नरेश सुनत सुख पावा॥
सुनि बलदेव कही यह बानी। सुनहु बात यह शारंगपानी॥
भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी। दुर्योधनके आज्ञा कारी॥
विना युद्ध देइहि महि नाहीं। जीति को सकै कृष्ण उन पाहीं॥
कर्ण समान बली संसारा। नाहिंन प्रकट कौन करतारा॥
हम अपने मनमें करि बूझा। को हरि करिहि कर्णते जूझा॥
सुनतहि वचन नयन रतनारे। भये क्रोध नहिं रहत सँभारे॥

बोले हरि बलदेव ते, भ्राता करहु बिचार॥
धर्मराजके अंशको, कौन छुड़ावनहार॥
करौं नाश कौरव सकल, जो न देइ नृप अंश।
हतौं द्रोण भीषम करण, बाहुलीकयुत वंश॥

यदपि बली कुरु युध संसारा। मोते रण नहिं तासु उबारा॥
चक्र पाणि गहि मस्तक फारौं। राज युधिष्ठिरको बैठारौं॥
यह करतूति न करि दिखरावौं। नहिं वसुदेवको तनय कहावौं॥
[illegible] अंश धर्म नृपकेरा। गावै अयश जगत सब मेरा॥

बल देखि सुनौ बलभाई । करत कर्णकी आपु बड़ाई ॥
अर्ज्जुन भीमसेन बलदाई । नहि त्रिभुवन इनकी समताई ॥
अति हठ हनूमानते कीन्हा । सके न जीति सखा करि लीन्हा॥
ह्वै किरात गिरिपर रण कीता । वनोवास जिन शङ्कर जीता ॥
असुर सेवन्त कवच बलवाना । जाके रण सुरपति भय माना ॥
सो अर्ज्जुन पलमहं संहार्यो । इन्द्रहि इन्द्रासन बैठार्यो ॥
जिन बांधे शरसों सोपाना । ऐरावत धरणी जिन आना ॥

बाणन कीन्ही बाट नभ, हाथी लियो उतारि ।
कुन्तीसो पूजन कियो, सजल भई गन्धारि ॥
धनपति छांड़ो दण्ड लै, जीते सब भूपाल ।
पारथसों बल वान जग, भयहु न कवने काल ॥

जब विराटपुर कौरव घेरा । बेढ़ी गाय अहीरन टेरा ॥
भीषम द्रोण कर्ण सब आये । अर्ज्जुन एक सबन बिचलाये ॥
एक एक सब मिलि मिलि लरेऊ । तब उन पारथको का करेउ ॥
बाणन मारि सकल विचलाये । फेरी धेनु नगर फिरि आये ॥
देव दैत्य दानव बलभारी । जहँलगि रचे सृष्टिविधि भारी ॥
तीनों लोक अस्त्र गहि आवे । पारथ सो रणजय नहि पावे ॥
महदेव दक्षिणकी जय कीन्हा । लङ्का दण्ड विभीषण लीन्हा ॥
नकुल वारुणी दिशि बलभारी । जीत्यो सिन्धु तटी लघुभारी ॥
भीमसेन सब पूरब ओरा । निजभुजबल जीत्यो बरजोरा ॥
एकचक्र नगर बकासुर मारा । जरासन्ध कीन्हों दुइ फारा ॥

मारि हिडम्ब हिडम्बी व्याही। वन्धु को जीति सके रणमाही।
जिन मारा कीचक सौ भाई। सकै वन्धुको अंश छुड़ाई॥
धर्मराज मरि को संसारा। तजेउ न धर्म सहेउ दुखभारा।
भीम पार्थ करि हैं सकल कौरवकुल संहार।
धर्मराजके शत्रुको. मरत न लागौ वार॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २ ॥

प्रश्न बहुरि कुरुवंशमणि, कीन्हो पद शिर नाइ।
कह ऋषि जनमेजय सुनो. कथा श्रवण मन लाइ॥
बलदिशि देखि बहुरि हरि बोले। भ्राता सुनौ कहत मैं खोले।
अनहित चहत धर्मसुतकेरा। जान्यहु परम शत्रु सो मेरा॥
कह बलदेव सुनहु हरि भ्राता। रचि राख्यो यह कलह विधाता
तुम कहँ धर्मराज प्रिय जैसे। मम प्रिय दुर्योधन नृप तैसे॥
जो सात्यिकी वीरवर होई। मम संग्राम करै शठ सोई॥
है यह बात मतेकी भाई। कुरु पाण्डवकी प्रीति निकाई॥
कहि यह वचन विदा पुनि भयऊ।बल चलि नगर द्वारकै गयऊ
तब नृप कह्यउ सुनहु बनवारी। कहेउ राम मत नीक विचारी
करत युद्ध कटिहै परिवारा। मोकहँ जग कहिहै धिक्कारा॥
है बन्धु बन्धु सन मारे। कलह नीक नहिं मन्त्र हमारे॥
भूमि अरु मिटै लड़ाई। सोई अब कीजै यदुराई॥

कहेउ बिहँसि तब वाल कन्हाई । अरिपर दया परम कदराई ॥
बैठि सबै सबको मत लीजै । मिलै भूप महि सो अब कीजै ॥
कहेउ नकुल यह मन्त्र हमारा। सुनहु सकल मिलि करहु विचारा॥
सत्य वचन न्टप सुनु हम पाहीं बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं
भीमसेन अर्ज्जुन मन भायउ । कहेउ बन्धु भल मन्त्र दिखायउ ॥
द्रुपद विराट कहे मत नीका । तब बोलेउ यादवकुलटीका ॥

कहो कृष्ण भूपालते. सुनिये मन्त्र हमार ।
विन दलसों कछु बल नही, विदित सकल संसार ॥
जहँलग तुम्हरे अंशके, भूमिभूप भुवराइ ।
सजि निज दल आवै सकल, दीजै पत्र पठाइ ॥

कह मुनि सुनहु वचन कुरुराई । कथा बिचित्र श्रवण मन लाई
सुनिहरि वचनन्टपति मन भायो । देश देशकहं पत्र पठायो ॥
पुनि हरि द्वारावती सिधायो । द्रुपद सेन हित निजपुर आयो ॥
सजि दल देश देशके राजा । न्टप विराटपुर जुरो समाजा ॥
नगर चन्देरीके भूपाला । धृष्टकेतु आये तेहि काला ॥
अक्षौहिणी चमू यक सङ्गा । हय गज रथ पदचर बहुरङ्गा ॥
सब कवची खड़गी धनुधारी । सर्व्व शूर महावल भारी ॥
उत्तर पुर बिराट न्टपकेरा । कीन्हे धर्म्मराय कढ़ि डेरा ॥
अक्षौहिणी धर्म्म न्टप केरी । भई न्टपनकी भीर घनेरी ॥
ताही समय द्रुपद न्टप आये । अक्षौहिणी सङ्ग निज लाये ॥
धृष्टद्युमन पुत्र रण रङ्गी । चौंसठि न्टपति द्रुपदके सङ्गी ॥

द्रूमर न्टपति शिखण्डी आये । भीपमवधहित विधि उपजाये
चारि बन्धु षट सुत दश नाती । आयो अयुत द्रुपदके जाती
सबही महारथी बल भारी । सन्नाही खड्गी धनु धारी ॥

धृष्टसेन आये तबै, लै निज सेन गम्भीर ।
• कवची खड्गी कुण्डली, धनुधारी सब वीर ॥

जरासन्ध सुत न्टप सहदेऊ । सेन सहित आये न्टप तेऊ ॥
अक्षौहिणी एक सङ्ग लीन्हें । धर्म्मराज हित रण मन दीन्हें ।
काशिराजकी सेना आई । अरु आये न्टपगण समुदाई ॥
बाहर निकसि विराट भुवारा । उतरे शंख सहित परिवारा ।
अक्षौहिणी सङ्ग निज लीन्हें । डेरा धर्म्मराजढिग कीन्हें ॥
गज रथ औ असवार पदाता । अक्षौहिणी जुरेउ दल साता ॥
घटउत्कच निज साथ सिधायो । पांच कोटि राक्षस सग लायो
भूप पञ्चनद के जे वासी । आये सेन सहितबलरासी ॥
श्टङ्गी सिन्धुकच्छके राई । आये सकल ससेत सहाई ॥
चालिस सहस जुरे तहँराजा । को वरणै न्टप सेन समाजा ॥

बन्धुन युत बैठे सभा, धर्म्मराजके रूप ।
जुरे आइ त्यहि थल सबै, देश देशके भूप ॥

इति तृतीय अध्याय: ॥ ३ ॥

जनमेजय मुनिते कह्यो, कहो कथा मनलाइ ।
सुधि पाई कुरुनाथ जब, तब कस कीन्ह उपाइ ॥

चरवरमुख कुरुपति सुधि पाई । जोर्‌यो कटक युधिष्ठिर राई ॥
तब नरेश मन शंका आई । शकुनि कर्ण कहँ लीन्ह बोलाई ॥
द्रोणी और दुशासन आये । बैठि सकल मिलि मन्त्रदृढ़ाये ॥
दुर्योधन कहि श्रवण सुनाई । दूत वचन मुखपहँ सुधिपाई ॥
सुनत अजात शत्रु दल जोरा । अक्षौहिणी सप्त घनघोरा ॥
सुनहु सचिव कीजे केहिभांती । भयवश परी नींद नहिं राती ॥
सुनि यह उतर कर्ण तब दीन्हा । नृपतुमशोचअकारथकीन्हा ॥
पञ्च बन्धु सात्विक यदुराई । अरु नरेश सब शत्रु सहाई ॥
द्रुपद-विराट सेन सजि आवै । मारौं सकल जान नहि पावै ॥

यम कुवेर वरुणेन्द्र मैं, जीति सकौं दिगपाल ।
मानुष मोते को जुरै, अभय होहु भूपाल ॥

सुनि यह वचन भूप सुख पायो । साधु साधकरि हृदयलगायो ॥
कर्ण समान धर्म्म व्रतधारी । नहिं त्रिभुवन हमार हितकारी ॥
तन मन वचन न जानै आना । मम कारज नहिं दुर्लभ प्राना ॥
मिलै न हितदायक जग तोसे । रहत सदा मैं कर्ण भरोसे ॥
जा दिन युद्ध परै कठिनाई । मित्र मित्रसुत करहिं सहाई ॥
पाण्डव निधन कर्णके लायक । बंधु सरिस मेरे हितदायक ॥
जब यहि भाँति प्रशंस्यो ताहीं । बोल्यो करि विचार मनमाहीं ॥

कियो रङ्कते राउ तुम, राखत मान हमार।
तिल तिल तनु कटि कटि गिरहि, ताके प्रति उपकार

स्वामिकाज लगि शीश समर्प्यो। जुरे काल रण नाहिनडर्प्यो
जुरे युद्ध करणो नृप मेरो। देख्यो कहौं कहा वहुतेरो॥
करि अति क्रोध शिलीमुखजोरों। शर सागरपाण्डवदलवोरों॥
भूप न करिय पोक कछुजीमा। सकैं जीतिनहिं अर्जुन भीमा॥
रणमहँ बांधि युधिष्ठिर राई। जयति पत्त देहौं लिखवाई॥
मेरे बल समान नहिं पारथ। सकै न जीति थकै पुरुषारथ॥
सुनत तबै द्रोणी रिस बाढ़ो। तीक्षण वचन वदनते काढो॥
पारथको सरि भट संसारा। भयो जगत नहिं होनेहारा॥

कह्यो द्रोणसुत भूप सुनु, ऐसो को संसार।
पारथशर अति कठिन है, सहै युद्धको भार॥

सुनहु भूप अब कथा पुरानी। पार्थ-चरित मैं कहब वखानी॥
प्रथम द्रोण अरु द्रुपद मिताई। सो प्रसङ्ग नृप सुनुचितलाई॥
जब बिराट गणनाथ छिनावा। हारिसमर नृप कानन आवा॥
मिले पिता नृप यमुना तीरा। देखियुगल दृग भयो सनीरा॥
गहिपद नृप प्रणाम तबकीन्हेउ। होहुअभयमुनिआशिषदीन्हेउ
भरद्वाज अरु प्रसद मिताई। अतिशय नहीं सुनहु कुरुराई॥
द्रुपद खेलैं इक सङ्गा। बढ़ी परस्पर प्रीति अभंगा॥
द्रुपद जब कह्यऊ। भये क्रोधसुनि द्रोण न सह्यऊ॥

कहेउ द्रोण सुनिये द्रुपद, बधि विराटगण आजु ।
सकल देश पञ्चालको, तुमहि करावौं राजु ॥

बधि विराट तोहि राज करावौं । द्रोण नाम तब विप्र कहावौं ॥
हतौं शत्रु मैं एकै बाना । तौ स्वहिपरशुरामकी आना ॥
जेन मित्र दुख होहिं दुखारी । पाप मूल दुर्गति अधिकारी ॥
अस कहि लीन्ह शरासन बाणा । द्रुपद सङ्ग लै कीन्ह पयाना ॥
कहेउ भूप यह चलतो बारा । करो निधन जौ शत्रु हमारा ॥
आधो राज्य विप्र सुनु तोरा । पुनि मानव भरि जन्म निहोरा ॥
असकहिनगरनिकटचलिआये । पाणि शिलीमुखधनुपचढ़ाये ॥
सो सुनि सकल शत्रु गण धाये । ब्रह्म अस्त्रते द्रोण जराये ॥
द्रुपदहि सिंहासन बैठारा । काढेउ छत्रतिलक शिरकाढ़ा ॥
द्वादश वर्ष द्रोण सुनु राई । बसे कम्पिला सखअधिकाई ॥
हमरे हेतु धेनु मुनि यांचो । दयो न्टपति करिबुद्धिपशाचो ॥
मित्र जानिकर शाप न दीन्हा । करेउ निधननगरैतजिदीन्हा ॥

गजपुरको तब द्रोण मुनि, कीन्हो तुरत पयान ।
पहुँचे वासर सातमहँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

गदखेल खेलतसबै, जुरे बालकन साथ ।
तुमफेंकेउनब रोंकेऊ, भीम ओड़िकैहाथ ॥

छांड़ेउ गेंद कूपमें गयऊ। तुमसबमिलिविस्मयवशभयऊ॥
ताही समय द्रोण तहँ आयउ। बालक कहल देखिचुपकायउ॥
सींक धनुष शर द्रोण सँधानो। गेंद काढ़ि दीन्हे तृ आनो॥
लिये तुरत भीष्मपहँ आये। सकल चरित बालकन सुनाये॥
देखि पितामह मन अनुमानेउ। आये द्रोण सत्य जियजानेउ॥
चलिकै मिले गङ्गसुत आई। सभा मध्य लै गयऊ लेवाई॥
अर्घ्यपाद्य सिंहासन दीन्हा। चरण धोय चरणोदक लीन्हा॥
लक्ष धेनु पुनि दीन्ह बिआऊ। दीन्हेउ बहुरि पञ्चशतगांऊ॥

जोरि पाणि कीन्ही विनय, भीषम पद सिरनाय।
बालकसौंपे बोलि सब, कीजै निपुण पढ़ाय॥

अस्त्रसिखायनिपुणजबकीन्हा। तुमसबमिलिगुरुदक्षिणदीन्हा॥
अर्ज्जुन दीन्हेउ जीति बदाऊ। सहस एकदश संयुत गाऊ॥
पदगहि वचन कह्यो यह साँचो। आयसु करा चहौ जो याँचो॥
कह अर्ज्जुन आयसु जो दीजै। आज्ञा होइ नाथ सो कीजै॥
कह गुरु द्रव्य लेउँ नहिं तोरा। कीजै सफल मनोरथ मोरा॥
द्रुपद मित्र कीन्हों अपमाना। ताते माँगत हौं यह दाना॥
बांधि चरणतर दाबो आई। चुकेउ तात अभिमत मै पाई॥
कुरु पाण्डवकी मिली सहाई। घेर्यो नगर कम्पिला गाई॥
सुनेउ द्रुपद अरिसेना आई। निकरेउ तुरत निशान बजाई॥

चारि चमू द्वै मिलिगई, भयो घोर संग्राम।
हय गज रथ लाखन परे, सुभट कटे बहुनाम॥

द्रुपद कर्णते सरस लड़ाई । महायुद्ध कीन्हेउ प्रभुताई ॥
शोणित बाण द्रुपद उर लागा । क्रोध अनल उर अन्तर जागा ॥
हन्यो कर्णके चारिउ ओरा । असिनिकारि सारथिफिर फोरा ॥
विरथ देखि तब गे कुरुनायक । धनुष तानि छाँड़े बहु सायक ॥
देखत युद्ध द्रुपद शर छांड़त । करते धनुष भूप तव डारत ॥
करि अतिक्रोधविशिखबहुत्याग्यो । भई विकल सेनासवभाग्यो ॥
भीमसेन लज्जा जिय आयो । अर्ज्जुनते यह वचन सुनायो ॥
करि प्रण देन कहेउ तुम दाना । अबकर गुरुहित पार्थ नशाना ॥
भा पारथ उर क्रोध कराला । रिसवसभयेविलोचन लाला ॥
अर्ज्जुन कहन सूतते लागे । लै चलु हांकि वेगि रथ आगे ॥
सुनि सारथी हांकि रथ दीन्हा ॥ देवदत्त शङ्खध्वनि कीन्हा ॥
गाण्डिव धनुष बहुरि टङ्कोरा । चौदहभुवन भयो रवघोरा ॥
पुनि पारथ दीन्हो शरजाला । लीन्हबांधि रणद्रुपद विहाला ॥
पकरि द्रोण चरणनपर डारा । मित्र जानि मुनि नाहिन मारा ॥
दीन्ह छुड़ाय द्रोण पाञ्चाला । सुनु अर्ज्जुन करणी भूपाला ॥

शरसों वारिधि बांधि जिन, जीतेउ पवनकुमार ।
भयो न होनेहार कोउ, अर्ज्जुन सरि संसार ॥

पारथ कीन्ह अमानुष करणी । चित दै सुनहु कहवहम वरणी ॥
इन्द्रकील गिरिपर तपहेतू । गयो मन्त्र साधन वृषकेतू ॥
नेहियल धनुष बाणधरि दीन्हा । करि आचमन देहशुचिकीन्हा ॥
धरि उर ध्यान पार्थ तपसाधत । करि व्रतमौन शम्भु आराधत ॥

एक चरण द्वै भुजा उठाये । शिव शिव रटन परम हित लाये ॥
तप साधत बीते बहु काला । भयउ चरित यक सुनहु भुआला ॥
प्रथमहिं भीम बकासुर मारा । तासु बन्धु अतिशय बरिआरा ॥
पूर्व्वके बैर रोष बढ़ि आवा । धरि बराह तनु मारन धावा ॥
जब पारथ समीप नियराना । सो चरित्र शङ्कर सब जाना ॥
गङ्गाधर पिनाकधर आये । गणागणपति सब सङ्ग लगाये ॥

धरि किरात तनु हर चले, लिये हाथ हथियार ।
रक्षा हित हरि मित्रकी, करन असुर संहार ।

अर्ज्जुन ढिग शूकर नियराना । शिव शर जोरि शरासन नाना ॥
करि अतिक्रोध अधम तनु मारा । आधोनिकसि रहो शरपारा ॥
घुरघुरात पुनि पारथ ओरा । चला असुर मारन करि शोरा ॥
परेउ श्रवण शूकरवर बोला । सुनि रव दृग किरीटशिरखोला ॥
आवत यक वराह अति तीछे । आयुध धृत किरातगण पीछे ॥
होइ सरोष लीन्हों तब चापा । शर सन्धान कीन्ह करि दापा ॥
यहि विधि अर्ज्जुन बाण प्रहारेउ । निज प्रवेश हरशरहिनिकारेउ ॥
कह शङ्कर यह मोर शिकारा । मारेउ अधम न कीन्ह विचारा ॥

अरुणनयन भृकुटी कुटिल, बोले पार्थ रिसात ।
समुझि कहत तुव बात नहिं, रे रे अधम किरात ॥

नीच जाति अति अधम किराता । मूरखसमुझिन बोलत बाता ॥
... वचन कहत कटुबानी । अब तुव मृत्यु आइ नियरानी ॥
बलहीन न बल तनुमाहीं । मानत अधम निहोरा नाहीं ॥

यह सुनि गण क्रोधित होइ धाये । बाणनमारि पार्थ विचलाये ॥
षणमुख द्विरद वदन नहिं जीते । चले पराइ सकल भयभीते ॥
विकल सकलतनुशुण्ड हलावत । भागतशिवदिशि वचनसुनावत
भागे सब किरातगण भारी । बिन किरातपति भगे न हारी ॥
सुनि यह वचन शम्भुहँसि दीन्हा । गहि पिनाकसायककरलीन्हा
धूरजटी बहु बाण पँवारे । अर्ज्जुन कोटि काटिमहि डारे ॥
पारथ शर काटै शूलीधर । भयो युद्ध अति विकल परस्पर ॥
विजय बृहन्नलके संग्रामा । लरत न करत शम्भु विश्रामा ॥
तव चरित्र गौरीपति कीन्हो । अक्षय तूणके शर हरि लीन्हो ॥
गाण्डिवधनुष विजय तब लीन्हा । करि अतिरोषप्रहारणकीन्हा ॥
गङ्गाधर कीन्हेउ हुंकारा । फाटो धनुष भयो दुइ फारा ॥

नवै किरीटी क्रोध करि, कीन्हेउ खड्ग प्रहार ।
तिल भरि कटयो न शंभुतनु, विफल भयो असिधार ॥

अर्ज्जुन मही डारि तरवारी । मल्लयुद्ध पुनि कीन्ह प्रचारी ॥
लरि विलगाहिं वहुरिपुनिलरहीं । नानाभांति दावँ दोउकरहीं ॥
अर्ज्जुन पदकहँ हाथ चलावा । चहत उमापति भूमि गिरावा ॥
चरण परस कीन्हे जब हाथा । वरंब्रूहि बोल्यो गिरि नाथा ॥
अवमोहि अतिप्रसन्न जियजानू । मांगु तात अभिमत वरदानू ॥
असकहि शिवनिजरूपदेखावा । पञ्चवदन शशि अर्द्धसोहावा ॥
जटा कलाप शीश पुनि गङ्गा । चढ़ीसकलतनुभस्म अभंगा ॥
हृदय कपाल माल विकराला । उठत त्रिपञ्चनयनमहँ

भुजङ्ग भूषण दिग्पट धारी । अर्द्धअङ्ग गिरिराज कुमारी ।
अभय एक कर यक वरदाना । एक पाणिमहँ शूल महाना ।

एक पाणि डमरू लिये, नीलकण्ठ भगवान ।
वार वार कह पार्थते, मांगु मांगु वरदान ॥

जीते विना युद्ध गिरिजापति । मै वरदान न तुमते मांगति ॥
विन जीते रण मौलि मयंका । वर मांगौं वड़ कुलहि कलंका ॥
प्रथमहिं विजयपत्न लिखि दीजे । पुनि वर देहु कृपा प्रभुकीजे ॥
तुव पद सपथ कोटि हरिआना । ऐसे नहि मांगौ वरदाना ॥
हम हारे सुत सङ्ग तुम्हारे । होइ हौ विजय प्रसाद हमारे ॥
सुनि यह वचन पार्थ अनुरागे । अस्तुति करन जोरि करलागे ॥
जयगिरिजापति जय कामारी । चतुर वदन सेवित भुजचारी ॥
शारद शेष चरित तुव गावत । निगम नेति कहि पार नपावत ॥
वारहिंवार शक्र सुत भाखा । निज प्रण टारि मोर प्रण राखा ॥
अस कहि परे चरण अकुलाई । पाहिपाहि प्रभु जन सुखदाई ॥
गङ्गाधर त्रिशूलधर शङ्कर । दुष्ट दलन पालन निजकिङ्कर ॥
नीलकण्ठ सितकण्ठ शम्भुहर । महाकाल कङ्काल कृपाकर ॥

शृङ्गी शूली धूरजटि, कुण्डलीश त्रिपुरारि ।
वृषीकपर्दी मानकर, मृत्युञ्जय कामारि ॥

जयति सदाशिव सव गुणरासी । काशीपति कैलास निवासी ॥
न येह गिरा मगन हर भयऊ । पारथको या विधि वरदयऊ ॥
सुनहु प्रसाद हमारे । नाश होयँ सव शत्रु तुम्हारे ॥

होइहैं सफल सकल जे काजू। मिलि है तुमहिं अकण्टकराजू॥
यह कहि हर सब अस्त्रसिखायो। पुनि पशुपतिको भेदबतायो॥
परै पार्थ जब कठिन मशाना। तादिन शर कीजै सन्धाना॥
छूटत प्रलय शत्रु दल होई। त्रिभुवन रोकि सकै नहिं कोई॥
यहि विधि अर्ज्जुनको वर दयऊ। अन्तर्द्धान उमापति भयऊ॥
यक वलिष्ठ पुनि शिव वरदाना। कहहु भूपको पार्थ समाना॥
कहेउ वचन इमि द्रोण कुमारा। समुझाये बहुभांति भुवारा॥

गुरु बांचव सुख वचन सुनि, मौन भयो महिपाल।
पुनि शकुनी बोलेउ बहुरि, सबलसिंह उत्ताल॥

इति पञ्चम अध्याय॥ ५॥

मन्त्र हमार विचारि करि, सुनु मणि समुझि भुवार।
सबल शत्रु तुव धर्म्मसुत, जोरेउ सेन अपार॥
जोरेउ धर्म्मराज निज पच्छी। तुम दलहीन बात नहिं अच्छी॥
अवलग भूप चेत नहिं कीन्हा। देशकाल कछु परत न चीन्हा
पठवो पत्र करहु चित चेता। आवहिं नृप सब सेन समेता॥
तुम जानतहौ भीम सुभाऊ। अवसर परे न चूकत दांऊ॥
अरिदलयुक्त आपु दलहीना। करि बैठे कछु कर्म्म अलीना॥
सुनहु सकल मैं कहत पुकारे। फिरि सँभरिहि नहिं नाथसँभारे
बोलहु सकल भूप अब राई। अब विलम्ब महँ कौन उपाई॥

वरपर चढ़े खेलमहँ भीमा। डारेउ अवनि क्रोध करिजीमा।
राखत सदा वैर जिय माने। लखि प्रताप तुव रहत डराने।
जो दलहीन भीम करि पावै। भूप तुमहिं यमलोक पठावै
निज करणी नरपाल तुम, देखहु चितहि विचारि।
कसेहु जञ्जीरन सकल तनु, दियो गङ्गमहँ डारि॥
सो सुधि भूपहियेमहँ भूली। अजहुं उठत हियेमहँ शूली
पठवहु पत्र न करहु विलम्बा। क्षितिपति आवै सहित कुटु
है जेहिके जितनी नृप सासा। आवै साजि करन संग्रामा
खोलि पत्र सबको लिखि दीजै। अवकछुभूप विलम्ब न की
सुनत नरेश परम सुख पाये। देश देशकहँ पत्र पठाये।
श्रीपत्रिका दीन्ह सहिदानी। चलेउ राजकर आयसु मानी
सुनि निदेश पृहुमीपति राजा। आये सकल समेत समाजा
आये मगधराज भगदत्ता। असी लक्ष जाके मदमत्ता॥
रथनपती अरु वाजि अनेका। अक्षौहिणी सङ्ग दल एका॥
गदा चर्म्म असि तूण सोहाये। महापिनाक रूप दरशाये॥
रङ्ग रङ्गके सङ्ग पताका। अति उतङ्ग जनु चुम्बति नाका॥
बाजत बाजन विविध प्रकारा। पणव वेणु मुख शङ्ख नगारा॥
ऐरावत गजको तनय, दीन्हों तेहि सुरपाल।
मन्दर ते उन्नत कछुक, देह विशाल कराल॥
चरण स्रवत मद धारा। जनु झरना जल वहत पहारा॥
विशाल श्वेत सुर भङ्गा। मानहुँ रजत शैलके शृङ्गा॥

कञ्चन मणिमय रुचिर अँबारी। गजमुक्ता झालरि शुभकारी॥
तापर मगधराज असवारी। देखि स्वरूप शत्रु भयकारी॥
निन्नानवे सङ्ग ले राजा। चलेउ साजि निज सैन समाजा॥
युद्ध हेत सब साज बनाये। यहि प्रकार गजपुर कहँ आये॥
पुनि आयो कलिङ्गदल साजी। अगणित रथ पदाति अरुबाजी॥
सौ बान्धव अतिशय बलभारे। द्विरद लक्ष बहु सङ्ग मतवारे॥
द्वादश नृपति सङ्ग बलढाई। सैन विचित्र वरणिनहिं जाई॥
टोप मनाह पानि दस्ताना। असी लक्ष लीन्हे धनुबाना॥
 पटह भेरि करि शङ्खध्वनि, घुर्मतलाल निशान।
 आयो सजि गजपुर कटक, नृप कलिङ्ग बलवान॥
नगर हस्तिनापुरी समीपा। निज निज रुचिकृत शिविरमहीपा॥
आयो यमनराज त्यहि काला। एकविंश लीन्हें महिपाला॥
महाबली सब तेज तुरङ्गा। अक्षौहिणी अनी इक सङ्गा॥
बड़े धनुष अरु कवच विशाला। नील वसन तनु वेष कराला॥
हैं सब एक जाति के काछो। अस्त्र शस्त्र युत सेना आछो॥
नील रंगके श्याम पताके। पवन लगे नितत नभ बांके॥
बाजन विपुल अरम्बी बाजा। चढ़ि आयो लै सैन समाजा॥
 अक्षौहिणी कलिङ्गकी, परी गङ्गके तीर।
 तासु निकट कीन्हे शिविर, यमनाधिप रणधीर॥
सुनि आयो तहँ सुरथ कुमारा। सिन्धु नरेश वीर वरि
बड़े धनुर्द्धर अति बलखानी। नाम जयद्रथ शिव वरद

त्रिभुवन विदित जान सब कोई। नृप दुर्योधन कर बड़नाई॥
गज रथ वाजि पदाति अपारा। बाजत गोमुख शङ्ख नगारा॥
जाके दलहि ध्वजा पँचरङ्गा। अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा॥
कुण्ड वर्म्म तूणी धनु बाणा। धरे वीर सब चर्म्म कृपाणा॥
हस्ती रथ कोउ तुरँग सवारी। सप्त सहस्त्र भूप बल भारी॥
नगर हस्तिनापुर चलि आये। किये शिविर निज निजमनभाये

निज निज रुचि डेरा करत, प्रमुदित हिये भुवार।
दुर्योधन आदर किये, किये विविध सतकार॥

सजि सजि सेन नरेश अनेका। आये शूर एकते एका॥
यहि प्रकार आये सब भूपा। कीन्ह शिविर सब निजअनुरूपा॥
प्रथम दूत कुरुखेत पठाये। सुनि सुधि दनुजराज चलिआये॥
नाम अलंबुष वीर अभंगा। सात कोटि दानव दल संगा॥
नाना वाहन आयुधधारी। मेचकवरण घटा जनु कारी॥
नाना बिधि माया सब जानैं। त्रणसमान तिहुँ लोकहि मानैं॥
दानवराज द्विरद असवारी। गर्जत पुनि पुनि अतिबलभारी॥
पितुकरमधुज विदितजग जासू। बलिसुतबानि पितामहनासू॥
निजभुजबल सुरगण सबजीते। रहत सुरेश जासु भयभीते॥
कह मुनि सुनहु कथा कुरुराई। दल न होइ जनु पावस आई॥
घटासम निशिचर धारी। विज्जुछटा असि पाणि उधारी
घटाबिच पांति बलाकी। गर्जतरव सोहत अति बाँकी॥

गजघराटा भेरी पटह, गर्जत अति मनुजाद ।
नगर हस्तिनापुर निकट, भयो भयङ्कर नाद ॥
कौतुक हेतु विबुध गण आये । देखनको विमान नभ छाये ॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सुधि पाई । बाहर मिलेउ नगरके आई ॥
कीन्हेउ युगल परस्पर भेंटा । कुशल पूँछि मन संशय मेटा ॥
करि सन्मान अलंबुषकेरा । पुनि महीप करवायो डेरा ॥
सभामध्य फिरि गयउ कुमारा । अइ बड़ि भीर राज्यदरबारा ॥
ताही समय शल्य नृप आये । अक्षौहिणी संग इकलाये ॥
सभामध्य कुरुपति सुधि पाई । कीन्ह मन्त्र सबसचिव बुलाई ॥
बोले शकुनि भरतकुलटीका । मोते सुनिय मन्त्र यह नीका ॥
मिलिय सपदि आगे निसरि, करि बहु आदरभाय ।
देइ निमन्त्रण युद्ध को, शल्य लेउ अपनाय ॥
सबमिलि यहै मन्त्र दृढ़कीन्हा । आगे चलिकौरवपति लीन्हा ॥
मिलतउभयअभिवादनकीन्हों । तब कुरुनाथ निमन्त्रण दीन्हों ॥
मातुल चलहु हमारे धामा । आये लेन हेतु संग्रामा ॥
उनके कृष्ण सहायक एहैं । ताको सरि हम काह लगेहैं ॥
मातुल सुनु प्रसादविन तोरे । होइँ न सफल मनोरथ मोरे ॥
सुनिके शल्य कही मृदुवानी । सुनहु नरेश परम सज्ञानी ॥
धर्मराज नहिं मोहिं बोलाये । हम सुधि पाइ आपुते आये ॥
तुम चलि प्रथम निमन्त्रणदीन्हा । मोहिंमहीपअपनकरिलीन्हा ॥
हम छांडो भेनेनकर सङ्गा । सबते लरब भूप तुव सङ्गा ॥

भीम पार्थ सहदेव पुनि, नकुल सबनकर मोह ।
त्यागे तुम्हरे हेतु नृप, धर्म्मराजते छोह ॥
तजि नातेको नेह विचारा । अब दीन्हें हम सङ्ग तुम्हारा ॥
अब नृप धर्म्मराजपहँ जाइव । आतुरभेंटिसपदिपुनिआइव ॥
यहाँ राखि सब सेन समाजा । आवहु देखि युधिष्ठिर राजा ॥
नजपुर राखि सेन सब बाँकी । चला भूप चढ़ियान इकाकी
घुरघुरात रथचक्र कराला । मृदुरव करत किङ्किणीजाला ॥
पूर्वेत सङ्ग फहरात पताके । पवन लगे निर्तत नभ बाँके ॥
मिले न वर्ष त्रयोदश बीती । दरश लालसाकी अति प्रीती ।
पुलकित गात नयन जल छाये । यहि प्रकार विराटपुर आये ।

दरश लालसा उरअधिक, को करिसकै बखान ।
यहि विधि आयो शल्य नृप, सबलसिंहचौहान ॥

इति षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

धर्म्मनरेश सभा सुधि पाई । द्वारपाल इमि जाइ जनाई ॥
शल्य आगमनसुनि सुखपाये । लेन हेतु नृप भीम पठाये ॥
द्वारजाय अभिवादन कीन्हों । मातुल निरखिआमिषहिदीन्हों ॥
रथतजि चले प्रथम अनुरागे । भेंटेउ भीमसेन बढ़ि आगे ॥
[illegible]त गात नयनजल छाये । कुसलपूंछि तनु ताप बुझाये ॥
[illegible] प्रसन्नभये मिल भीमा । आये सभा शल्य अरु भीमा ॥

आवत निकट धर्मसुत देखी । मिले प्रेमयुत हर्ष विशेखी ॥
कुसलपूंछि तनु आनन्द छाये । पुलकित नयन सजलह्वै आये ॥
करत प्रणाम नकुल सहदेऊ । मिलेउ बहोरि सजल दृग तेऊ ॥
तेहि अवसर पारथ तहँ आये । मातुल देखि चषन जलछाये ॥
कीन्हप्रणाम निकट भये ठाढ़े । मिले बहुरि अति आनन्दबाढ़े ॥
अभिवादन तब करत नराटा । मिलेपार्थसुत द्रुपद विराटा ॥
पुनि आयो द्रौपदी कुमारा । भेंटन पुनि पुनि करनजुहारा ॥

सभामध्य नृप शल्यकहँ, तब लैगयो भुवार ।
बहु प्रकार आदरकियो, खान पान अधिकार ॥

शल्य नरेश कुशल बहुभाँती । पूछत नृपहि जुड़ावत छाती ॥
अहह तात विधिगति बलवाना । बनबसिसहेउदुसहदुखनाना ॥
तेरह वर्ष विपिन महं बीती । कुरुनन्दन यह कीन्ह अनीती ॥
तात कीन्ह छल सभा बुलाई । कपट-द्यूत करि भूमि छुड़ाई ॥
बहुअतिकीन्हशकुनिछलकारी । धर्म नरेश धर्म व्रत धारी ॥
जबते तुमकहँ देस छुड़ावा । तबते हम दारुण दुखपावा ॥
तुम्हरे विरह दिवस अरु राती । जलफतरह्योंजरतनितछाती ॥
गत तेरह संवत सुधि पाई । तुम्हें देखि गये नयन जुड़ाई ॥

आयो तुम्हरे मिलनको, छल कीन्हें कुरुनाथ ।
दयो निमन्त्रणयुद्धको, करि लीन्हों निज हाथ ॥

यामहँ धर्म अधर्म विचारी । कहौ करौं सिखमानि तुम्हारी ॥
तहाँ गये बिन धर्म नसाई । छाँड़त तुमहि परम कठिनाई ॥

तुमते नहिं दूसर संसारा। जाननहार धर्म ब्यवहारा॥
तज्यो न धर्म सकलतजिदीन्हा। त्यागेउ ना वचनै मग लीन्ह
तुम भगिनीसुत पांचो भाई। मोरे प्राणनते अधिकाई॥
कहौ विचारि करौं अव सोई। जाते धर्म लोप नहिं होई॥
सुनतहि धर्मराज हँसि बोले। मातुल सुनहु कहत मैं खोले॥
क्षत्रियधर्म्म कठिन नृप एहा। ताते त्यागहु तुम सन्देहा॥

दियो निमन्त्रण युद्धको, उन लीन्हों अपनाय।
कीन्हें और विचार अव, क्षत्रिय धर्म नशाय॥

तुम अब दुर्योधनके ओका। मातुल जाउ तजो सब शोका॥
तुम कौरवको कीन्ह गोहारी। अर्जुन कर्ण वैर है भारी॥
समरभूमि दोनों बलधामा। जव जुरि करहिं कठिनसंग्रामा।
आपु कर्णकी निन्दा कीजै। मांगत हौं मांगे यह दीजै॥
कहेउ शल्य सुनिये भुवराई। कारण सकल कहौ समुझाई॥
निन्दा किये कर्णकी राजा। यामें सफल बनत तुवकाजा॥
सो सुनि धर्मराज हँसि दीन्हा। ते उत्तर मातुलकहँ दीन्हा॥
निज निन्दा सुनि शत्रु प्रशंसा। घटिहै शल्य कर्णको अंसा॥

निज हीनी अरु शत्रुकी, सुनत बड़ाई कान।
रिसवश ह्वैहै कर्ण तब, सूधे लगि है बान॥

यह कहि धर्मराज समुझाये। एवमस्तु कहि शल्य सिधाये॥
बाहर नगर भीम पहुँचाये। विदा भये पुनि शीस नवाये॥
...।स नृप शल्य सुजाना। पुनि मतङ्गपुरगत बलवाना॥

दुर्योधन आदर करि लीन्हा । प्रीतिसहित अभिवादन कीन्हा ॥
उत्तम सदन शिविर करवाये । सुनहु भूप अब चरित सुहाये ॥
नगर कौशिलाको महिपाला । बृहदबली आयो तिहिंकाला ॥
अति दल चलत धरा पुनि हाली । सूर्य्यवंशकी धरे प्रणाली ॥
सुनि कुरुनन्दन अनुज पठायो । आदरते सब शिविर करायो ॥
बहु प्रकार सतकार करि, खान पान सन्मान ।
मिलत शिविर नित प्रति अधिक, सबलसिंह चौहान ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

हरिपद पङ्कज ध्यान धरि, ऋषय नयन जलपूरि ।
कह मुनि जनमेजय सुनहु, कथा अमियरसमूरि ॥
नगर अवन्तीते चलि आयो । भूप बिन्द अनुविन्द सुहायो ॥
लीन्हें संग चमू चतुरंगा । रथ पदाति गज वाजि अभंगा ॥
युधामन्यु अरु वीर तमोजा । आये सेन सहित कांबोजा ॥
राजा राजपुत्र बलवाना । आये अमित कटक विधि नाना ॥
सेना सहित उलूक नरेशा । पुनि गजपुरमहँ कीन्ह प्रवेशा ॥
जुरेउ हस्तिनापुरी समाजा । साठि सहस्र छत्रधर राजा ॥
इहां युधिष्ठिर पार्थ बुलाये । भ्राता सुनहु कृष्ण नहि आये ॥
ताते तुम लै आवहु जाई । दरश पाइ गत विपति बुझाई ॥
अर्जुन नृपकी आज्ञा पाई । चले तुरंग चरण शिर नाई ॥

वेगवन्त जोते रथ वाजी । लायहु तुरत सारथी साजी ॥
चले किरीटी अति हरषाई । चले जोवत मग वार न लाई ॥
सनयें दिवस गोमती नीरा । उतरि अन्हाये निर्म्मल नीरा ॥

जल निर्म्मल गम्भीर अति, वनज विपुल वहुरंग ।
मधुपमत्त गुञ्जत भ्रमत, कलरव करत विहंग ॥

आगे चलि द्वारावति देखी । मनमें भवन विचित्र विशेखी ॥
कनक रचित मणिखचितदेवाला । अष्टद्वार पुर लाग विशाला ॥
अति गभीर जलयुत पदवाना । उठत तरंग पयोधि समाना ॥
श्वेत रक्त मणि हरित बँधावा । परम अनूपम रूप सोहावा ॥
दक्षिण ओर समुद्र बिराजा । पश्चिम दिशि रैवत गिरिराजा ॥
कोटिन पुरमहँ उड़त पतंगा । हंस मयूर कपोत विहंगा ॥
निर्त्तत कोटिन केतु पताका । अति उतंग जनु चुम्बत नाका ॥
कोटिन गज कुन्तल लै आवैं । सरित घाट महं नीर पियावैं ॥
करत बिहार द्विरद मनवारे । गिरिसम वपुष झूलते कारे ॥
कोटिन बाजि साहनी आवैं । नीर पियाइ नदी अन्हवावैं ॥

अति उतंग पुरद्वारशुभ, मणिमय मंजु किवाँर ॥
कोटिन दरवानी खड़े, लिये हाथ हथियार ॥

कोटिन मणिमय रुचिर कँगूरा । अति उतंग नभ परस तजूरा ॥
जम्बूनद मणिगणयुत लाना । शोभित सभग सुरेशसमाना ॥
रंग रंग रत्नन की भासा । रविकर परसत करत प्रकासा ॥
शोभा कुन्तीसत देखत । जीवन जन्म सफलकरि लेखत ॥

यहि विधि पवँरि द्वार चलि आये । दरवाननिलखि शीशनवाये
कहे वचन सुधि करत तुम्हारी । संध्या समय रहे वनवारी ॥
रुक्मिणि मन्दिरते कढ़ि आई । सत्यकिसों इमि वचन सुनाई
बीते युगल मास सुनु भाई । अर्ज्जुनकी कछु सुधि नहिं पाई ॥
ताते वेगि विलम्ब न कीजै । लोचनलाहु निरखि चलि लीजे ॥
अस कहि शयन भवनमनदीन्हा । अर्ज्जुन सुनत हर्ष मन कीन्हा
तेहि अवसर दुर्योधन आये । शयन किये यदुनन्दन पाये ॥
ताके हृदय गर्व नहि थोरा । बैठेउ जाइ शिरहने ओरा ॥
गये पार्थ सोवत यदुनाथा । ठाढभये सन्मुख करि माथा ॥

परशि चरण ठाढ़े भये, हरि पाँयनकी ओर ।
हिये प्रीति अति मन विमल, श्रीसुरराजकिशोर ॥

ताही समय जगतपति जागे । देखेउ पारथ पाँयन आगे ॥
उठे सप्रेम देखि वनवारी । मिलन हेतु द्वौ भुजा पसारी ॥
अर्ज्जुन गहे चरण लपटाई । भुज गहि हरि लीन्हे उर लाई ॥
कुशल प्रश्न पूँछेउ वहुभाँती । पुनि पुनिमिलतजुड़ावतछाती ॥
तेहि अवसर कुरुनन्दन आये । अभिवादन कहि आप जनाये ॥
यदुपति कुरुनाथहि पहिचाना । मिलेवहुतविधि करिसन्माना ॥
गहि भुज लै समीप बैठाये । पूंछेहु नृप केहि कारण आये ॥
हँसि बोले दुर्योधन राजा । सुनहु कृष्णआयहुँजेहिकाजा ॥

करौ सहाय हमार तुम, जो कीन्हों वहु बोध ।
बहुत कहा तुमते कहैं, जानत वंशविरोध ॥

तातै तजि अब पाण्डव सङ्गा। तुम हरि होहु हमारे अङ्गा॥
क्षत्रिय धर्म्म सुनहु यदुराई। जाके भवन प्रथम जो जाई॥
सो ताहीको होइ सहायक। करहु विचार होइ जो लायक॥
आयउँ भवन प्रथम मैं तुम्हरे। हे हरि होहु सहायक हमरे॥
सुनि यदुपति बोले मुसुक्याई। दल बल हीन युधिष्ठिर राई॥
निज आगम कह आप विशेखा। हम प्रथमहिं पारथको देखा॥
वचन हमार भूप सुनि लीजै। करहु विचार वेगि सो कीजै॥
यह कहिकै हरि माया प्रेरी। भ्रम जाय तासु मति फेरी॥

चारि लक्ष गोपालगण, वाहन अस्त्र समेत।
एक ओर हम शस्त्र बिन, कहो भूप को लेत॥

होत प्रथम छोटे को ऊरा। पाछे लेइ जेठ को पूरा॥
यह कहि बिहँसे शारँगपानी। मुख देखत माया लपटानी॥
ज्ञानभङ्ग दुर्योधन भयऊ। हरिमुखनिरखिवचनयहकहेऊ॥
हे हरि नटवर बेष तुम्हारा। नाचत गावत लै परदारा॥
गजपुर सजि आये सब राजा। तिनमहँ कौन तुम्हारो काजा॥
तातै हरि सेना हम लीन्हेउ। तुमकहँ हम अर्ज्जुनको दीन्हेउ॥

कह्यो किरीटी विहँसि तब, सुनिये यादवराइ।
आपु हमारे पग धरिय, दल काऊ लै जाइ॥

सुनि हरि गण गोपाल बोलाये। मणिमयकुण्डलमुकुटसोहाये॥
मणिमय भूषणहार विराजत। जटितवसन तनुशोभाछाजत॥
.. कवच बड़े धनुधारी। शोभित मनहुँ बरात सुधारी॥

कञ्चन मणिमय स्यन्दन भारी। गजमुक्ता झालरि छबिभारी॥
सो दल दुर्योधनकहँ दीन्हा। करिसन्मानबिदाप्रभुकीन्हा॥
भयो प्रसन्न हिये महिपाला। चलेउ संग लै गणगोपाला॥
गयो बहोरि जहां बलदेवा। चरण परशि विनयी बहुसेवा॥
अर्ज्जुन साथ जात यदुनाथा। चलहु संग म्वहिकरहुसनाथा॥
उन पाण्डवको कीन्ह सहारा। सब प्रकार मैं दास तुम्हारा॥

भये युधिष्ठिर ओर हरि, सो जानत सब भेव।
मनसा वाचा कर्म्मणा, मैं तुम्हार बलदेव॥

अस कहिपरेउचरण कुरुनायक। नाथकृपाकरि होहुसहायक॥
राखत सदा भरोस तुम्हारा। तुम विन कौन मोर रखवारा॥
हलधर सुनेउ भूपकी वानी। बोले वचन दीन अति जानी॥
हम इत हरि उत बात न नीकी। सुनहु कहौं तुम्हरे हितहीकी
लेहु सेन संग मन्त्र हमारा। होई सोइ जो लिखा करतारा॥
अस कहि लच्च दीन्ह सँग योधा। विदा कीन्ह बहु भांतिप्रबोधा
दुर्योधन लै सँग सिधाये। कृतवर्म्माके मन्दिर आये॥
देखत नृप नृप आसन दीन्हा। बहु प्रकारते आदर कीन्हा॥

बैठारे आसन बिमल, करि बहुविधि सतकार।
कुशल प्रश्न पूछत नृपहि, अति हित वारहिवार॥

कहो भूप कछु आज्ञा दीजै। करि अनुकम्प काज सोइ कीजै॥
अतिशय कृपा करी कुरुनाथा। तुव आगम मैं भयों सनाथा॥
सुनि दुर्योधन वचन सुनाये। सुनहु भूप जेहि कारण आये॥

सो जानौ सब बात तुम्हारी। पाण्डव हमें बैर है भारी॥
उनके साथ आपु बनवारी। तुम न्रृप करहु सहाय हमारी॥
सो सुनि कृतवर्म्मा तब बोले। धीरवीर अरु समर अडोले॥
भूप तुम्हार साथ हम दीन्हा। यह प्रण मैं निश्चय करि कीन्हा॥
यह सुनिकै सेना हँकराई। भयउ अरूढ़ निशान बजाई॥
लीन्हें साथ चमू चतुरङ्गा। अक्षौहिणी एक न्रृप सङ्गा॥
कीन्ह हस्तिनापुरी प्रवेशा। करवायो तेहि शिविर नरेशा॥
सेन विचित्र देखि सुख माना। जीते युद्ध शकुनि मन जाना॥
कर्ण दुशासन बहुत अनन्दे। पुनि पुनि कुरुनन्दन पद बन्दे॥
यह सुधि धृतराष्ट्रक सुनि पाई। बहु अनन्द नहि हृदय समाई॥
यहाँ कृष्ण अर्ज्जुन सँग लीन्हें। अन्तःपुर प्रवेश प्रभु कीन्हें॥
रुक्मिणि सतभामादिक नारी। आईं सुनि अर्ज्जुनकहँ भारी॥
बैठे पार्थ सहित बनवारी। सतभामा तब चरण पखारी॥
जाम्बुवती जल भाजन लाई। पानदान लक्ष्मणा लयाई॥
रुक्मिणि अतर दान कर लीन्हें। सतभामा भोजन हित कीन्हें॥
यहि प्रकार आठौ पटरानी। अति हितकरत कृष्ण प्रिय जानी॥

हरि समेत भोजन किये, दियो रुक्मिणी पान।
सतभामादिक नारि सब, करत विविध सन्मान॥
कुशल प्रश्न पूछी सबन, अति हित बारम्बार।
है अभिमनु नीके तहाँ, सबके प्राण अधार॥

[illegible] पाइ देवकी आई। देखि युगल तनु आनन्द छाई॥

हरि अर्ज्जुन उठि कीन्ह प्रणामा । दीन्ह अशीष हाइ मनकामा
माता पुनि पुनि कण्ठ लगाई । बोली वचन नयन जल छाई ॥
तुम विन रहेउ हिये अति शोका । तेरह वर्ष वादि अवलोका ॥
सुनहु कृष्ण जो मन्त्र हमारा । प्राणहुते मोहिं अधिक पियारा ॥
तुमहिं त्यागि कहिं और न जाना । रक्षा तुम कीजै भगवाना ॥
कहि अस वचन देवकी रानी । अर्ज्जुन कहँ सौंप्यो गहि पानी ॥
हरि अर्ज्जुन उठि बार न लाये । निज पितुके मन्दिर चलि आये

करि प्रणाम अर्ज्जुनसहित, कहेउ कृष्ण सब भेव ।
दै अशीष आनन्दसों, बिदा किये वसुदेव ॥

निकरि पवँरिते बाहर आयो । तब श्रीहरि सात्यकी बुलायो ॥
होहु तयार सेन सजि भाई । हेरत बाट युधिष्ठिर राई ॥
सुनि सात्यकि निज सेन हँकारी । आयुध बाँधि लीन्ह असवारी
दारुक नाम सारथी साजी । स्यंदनभानु जानु लखिलाजी ॥
सुग्रीवादिक हय मचि आई । भे अरूढ़ हरि शङ्ख बजाई ॥
भुज गहि अर्ज्जुन सङ्ग चढ़ाये । पवन-वेग रथ हाँकि चलाये ॥
गमनी सङ्ग चमू चतुरङ्गा । उठी धूरि छपि गयउ पतङ्गा ॥
पारथ पूँछन विविध कहानी । कहत जात मग शारङ्गपानी ॥

पारथपूँछेउ जोरि कर, कहिये श्रीभगवान ।
शत्रुविजय अरु मोर हित, सबलसिंह चोहान ॥

इति अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

कहेउ कृष्ण अव सुनु मतमोरा। यामें है अर्ज्जुन हित तोरा॥
होइहै सकल शत्रुको नासा। मिलिहिराज्यतोहिंविनहिंप्रयास॥
जाके अंश मोर अवतारा। पालत सृजत हरत संसारा॥
सुमिरण करत शक्ति तुम सोई। पूरण सकल मनोरथ होई॥
सुमिरण कीन्ह शक्र फल पावा। जेहि प्रसाद सुरनाथ कहावा॥
विधि कर्ता अरु हर संहर्ता। जासु प्रसाद विष्णु जगभर्ता॥
पारथ करै तासुको ध्याना। सव प्रकार होइहि कल्याना॥
सो जानहु सब मोर स्वरूपा। प्रकृति पुरुष है एक स्वरूपा॥
करहिं भेद जे नर अज्ञाना। परहिं नरक पावहिं दुख नाना॥

भयउ बोध अर्ज्जुन कहेउ, कहिये श्रीभगवान।
जेहि प्रकार ते कीजिये, परमशक्तिको ध्यान॥

प्रेमातुर जानेहु भगवाना। लागे कहन शक्तिको ध्याना॥
दिशा वसन अरु शक्ति कराला। पहिरे उर मुण्डनकी माला॥
अंग अंग अहि भूषण नाना। शिवारूढ़ अरु वसत मशाना॥
मुक्तकेश अरु वदन पसारे। जिह्वा ललन दशन भयकारे॥
निकसत अरुण नयनतेंज्वाला। अष्टबाहु तनु श्याम तमाला॥
घुरघुर शब्द सहित घनघोरा। शिवानाद पूरित चहुँ ओरा॥
मुण्ड एक कर एक कृपाना। एक कर अभय एक वर दाना॥
एक पाणि मदिरा कर भाजन। एक पाणि शृङ्गीहितु बाजन॥

एक हाथ में खड़्ग धर, इक शूली वर धार।
उठत प्रभा नभतेजकी, रवि शत कोटि अपार॥

यहि प्रकार हरि भेद बतायो। अर्ज्जुन नयन मूंदि तब ध्यायो ॥
कीन्ह ध्यान क्षण एक वहोरी। अस्तुति करत दोउ करजोरी ॥
जयगिरिजा जयप्रणतपालिआ। असुर राज मृगयुद्ध जालिका ॥
महिषमर्दिनी मातुकालिका। नितभक्तनकी विपति घालिका ॥
जयजयजय महिषासुर मर्दिनि। अजाकुजा जयमातुकपर्दिनि॥
शिवा शम्भु घरणी शिव दूती। जेहि सुमिरे जग सकल विभूति
चण्डमुण्डदलनी अरु चण्डी। ललिता ललितरूपखल खण्डी ॥
धूमावती सती तुव सीता। होहिं काम सब अरिगण जीता ॥
रिपुखण्डन तुव नाम पुनीता। शीशहि जटाकण्ठ शुभगीता ॥
तारा तरणि तारनी गङ्गा। त्रैपुरकी त्रयताप त्रिभंगा ॥
कुला कुरू कुरु कुलमहरानी। गिरा हरा जय जय श्रीवानी ॥

छिन्ना तू बगलामुखी, वाराही जगमाय।
चरण शरण जगदम्बिका, कीजै वेगि सहाय ॥
करौ राजराजेश्वरी, मातंगी दुखहानि।
दँड दै दुष्ट बिपतिकै, राखि लेहु जन जानि ॥

साँची दुख दलनी जय बाला। करहु कृपा अब होहु दयाला ॥
प्रकटयो एक गगनथल ज्वाला। अस्तुति करै देव दिगपाला ॥
व्योम गिरा यह भयो महाना। माँगु माँगु अर्ज्जुन वरदाना ॥
गगन गिरा सुनि मन हर्षाई। बोलेउ पार्थ चरण शिरनाई ॥
मत विजय अरु न्टपकल्याना। मांगत मातु देहु वरदाना ॥

ह्वै प्रसन्न सुनि अर्ज्जुन बानी। एवमस्तु कहि गई भवानी॥
तब दारुक हय हांकि चलायो। चले मरुत गति बार न लायो॥
सात्यकि चले कृष्ण रथ सङ्गा। लीन्हें साथ चमू चतुरंगा॥
गयउ युधिष्ठिर कटक समीपा। किये शिविर तब सकल महीप॥
जहँ जहँ कोटिन तनिन बिताना। जहँ तहँ बाजें नौबनिखाना॥
गर्जत गज हींसत बहु घोरा। हाहाकार शब्द चहुँ ओरा॥
पुर विराट दल जुरेउ अपारा। नहि कोउ काहू जाननहारा॥
होत नाद घरियार घनेरा। ध्वजा देखि परखिय नृप डेरा॥

अन्ध धुंध दल नृपनके, परत न कतहूं जानि।
रंग रंग झंडा गड़े, भूपतिकी पहिचानि॥

तब दारुक हरि रथहि चलावा। पवँरि अजात शत्रुकी लावा॥
द्वारपाल तब जाहि जनाये। महाराज हरि अर्ज्जुन आये॥
बहुत अनन्द भूप मन कीन्हों। बाहर निकसि पँवरिते लीन्हों॥
कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा। रथते उतरि मिलेउ यदुनाथ॥
अर्ज्जुन मिलेउ चरण गहि धाई। दीन्ह अशीश युधिष्ठिर राई॥
कृष्ण समेत सभा पुनि आई। बैठे अति प्रसन्न सुख पाई॥
प्रभुकहँ सिंहासन बैठारा। बहु विधि नृप कीन्हों सतकारा॥
चरण धोइ चरणोदक लीन्हा। पावन भवन सींचि जल कीन्ह॥
अवसर भीमादिक भाई। परसे चरण कृष्णके आई॥

प्रीति सहित यदुवंश मणि, भेटे हृदय लगाय ।
बैठारे सन्मान करि, हर्ष सहित सुख पाय ॥
दुइ कर जोरि कृष्णके आगे । विनती करन धर्म्मसुत लागे ॥
हे प्रभु तुव करतूति महाना । थके चारि श्रुति अन्त न जाना॥
महिमा अमित वेद जो गावत । नेति नेति कहि नेति सुनावत॥
सहस वदन सो शेष बखानत । पुनि सोउकहत पारनहिंजानत॥
शारद सनकादिक सुर नाना । विधि नारद केहुँ पार न जाना॥
शिव सामर्थ जानि सब पावा । बहु प्रकार कहि नेति सुनावा ॥
यद्यपि निर्गुण वेद बखाना । जनहित सगुणहेत भगवाना ॥
मत्सरूप धरि वेद उधार्यो । हे प्रभु तुम शङ्खासुर मार्यो ॥
हाटकदृग धरणी हरी, सो लै गयो पताल ।
कीन्ह विनय सुर वोसनिशि, भयोप्रकट ततकाल ॥
धरि वराह वपु श्रीभगवाना । पैठि सिन्धुमहँ धरे विषाना ॥
अधम कनकलोचन तुम मारा । कीन्हेउ बहुरि धरणिविस्तारा ॥
व्याकुल जन प्रहलादहि जानी । होइ नरहरि मार्यो अभिमानी
हिरण्याक्ष निज लोक पठावा । हरीविपति हरिदास बचावा ॥
कमठ रूप धरि मन्दर लीन्हों । मथ्यो पयोधि सुरन सुखदीन्हों ॥
मधु हे नाथ असुर बौरायो । किये असुरसुर सुधा पिआयो ॥
ह्वै वामन अमरेश बचायो । बलिछलि बांधि पतालपठायो ॥
पुनि प्रभु परशुराम वपुधारेउ । अधमनरेश नाश करि डारेउ ॥
सकल भूमिको भार उतारा । कीन्हों बहुरि धर्म विस्तारा ॥

देखि देखि महिदेव दुख, धरणि विलोकिअनाथ।
कीन्ह दयाप्रभु अवधपुर, प्रगट भये रघुनाथ॥

रावण कुम्भकर्ण खल मारा। करि सनाथ महिभार उतारा।
कृष्ण रूप अब मम हितकारण। कीन्हेउनाथ धरणिपरधारण
जयमधुसुर अघनरक विनाशन। चक्रपाणि जय श्रीगरुड़ासन
केशी कंस हने चाणूरा। मुष्टिक असुर शकट अघ क्रूरा॥
जय वृन्दावनविपिन विहारी। महिमा अगम अपार तुम्हारी॥
होतहि प्रगट पूतना मारी। हरी ताप यशुदाकी भारी॥
तृणावर्त्त बौंडर ह्वै आवा। कण्ठ चापि प्रभु मारि गिरावा॥
मारेउ अधम भूप शिशुपाला। काटेउ सकल भूमिको शाला॥
विप्र सुदामा दारिद नाशा। पूजी सब प्रकार प्रभु आशा॥
जहँ तहँ परे दास तुव गाढ़े। करि सहाय सङ्कट ते काढ़े॥
गहेउ ग्राह गज कीन्ह पुकारा। आवत नाथ न लागी बारा॥
ग्राह मारि निज धाम पठावा। मिटीविपतिगजबिनयसुनावा
परी बिपति प्रहलाद पुकारा। पविते प्रकट न लागी वारा॥
असुरमारि पठयो निज लोका। निजसेवककहँ कीन विशोक
दशमुख हति बैकुण्ठ पठायो। भयविशोकसुरमुनिसुखपायो
तैसेहि कृपादृष्टि अवलोकी। हरहुविपतिम्बहिकरहुविशोकी

असकहि भूपति पदगहै, पाहि पाहि यादौन।
काटहु सङ्कट विकट अब, ह्वै दयाल दुखदौन॥

ह्वै प्रसन्न यदुवंश मणि, तब बोले हरषाय ।
गई विपति धीरज धरहु, धर्मपुत्र भुवराय ।
शरणागतपालक बिरद, बिदित भार संसार ।
ताते अब तन मन वचन, करब सहाय तुम्हार ॥

इति नवम अध्याय ॥ ९ ॥

अस नृप सुनहु कथा मनलाई । हरि सुधि पाइ द्रौपदी आई ॥
परशे चरण प्रेमयुत आनी । नयन नीर मुख कहत न बानी ॥
हरिहि देखिकै रोवन लागी । विह्वल वचन शोकते पागी ॥
हे प्रभु जब तुम यज्ञ कराई । द्वारावती गये यदुराई ॥
तब जो भई अवस्था मेरी । सो अब सुनहु जानि निजचेरी ॥
विभव देखि कुरुपतिहिन भावा । ह्वै उदास निज मन्दिर आवा
शकुनी कर्ण दुशासन आये । बैठि सबन मिलि मन्त्र दृढ़ाये ॥
दल बटोरि करि युद्ध दरेरा । लीजै राज्य पाण्डवन केरा ॥
करि मन बुद्धिचक्षु यह आई । सकल कथा तिन कहि समुझाई॥
बिन समझे अज्ञानतै, तुम मानत मन रोष ।
अब सुत करहु विरोध जनि, उनकर कछु नहि दोष ॥
उनते युद्ध न तुम वरिऐहौ । विना काज क्त वैर बढ़ैहौ ॥
कह्यो भूप तुम कहत विलोका । हमरे मते मन्त्र नहि नीका ॥
उन कहँ दीन विभव करतारा । तुमहि उचिननहि करब विगारा
बोले शकुनि तेज छलकारी । सुनहु भूप यह बात हमारी ॥

युद्ध करब जनि नृप अज्ञानी। हारि जीति कछु परत न जानी॥
मोहिं अक्षविद्या निपुणाई। लेइय जीति खेलि प्रभुताई॥
जीते ख्याल विरोध न होई। काढ़िय द्रव्यहीन करि सोई॥
सुनि मत धृतराष्ट्रक मनभायो। द्यूतहेत उन नृपति बुलायो॥
गये नरेश सहित परिवारा। सभा द्यूतको वरणै पारा॥
धरत दाँवं शकुनी यह भाखै। जीतौं जीति लेउ नृप राखै॥
जीतौं राज्य पाट भण्डारा। हय गज रथ समेत परिवारा॥
नहिं कछु भूपति धर्म्म विचारो। चारिउ बन्धु अपनपौ हारो॥
कह्यो शकुनि अब जो कछु होई। धरहु भूप हम जीतैं सोई॥
कह नृप धरहु द्रौपदी रानी। जीतब तेह कही यह वानी॥
यह कहि शकुनी पाँसा डारे। जीतेउ कुरु धर्मसुत हारे॥

भये दुखित भीषम विदुर, द्रोण रहे शिर नाय।
गये सभातें उठि तुरत, बाहुलीक अकुलाय॥

शकुनी कर्ण बहुत हरषाना। अतिशयसुख दुर्योधन माना॥
कहेउ प्रातकामीते बोली। मैं जीती नृप नारि अमोली॥
द्रुपदसुता पाण्डवकी रानी। ताकहँ मोहि मिलावहु आनी॥
कहेउ सँदेश धर्मसुत हारी। अब तुम दासी भइउ हमारी॥
मै अभिमत्त रूप पर तोरे। बैठहु आनि जंघपर मोरे॥
सकल नरेश आनि त्यहि कहेऊ। पाण्डवनाथ क्रोध उर दहेऊ॥
रिस करि कहेउ धीरधरि गाढ़ा। येरे अधम दूरि रहु ठाढ़ा॥
कौरवपतिके रिपु सोहूं। नीच सँभारि न बोलत तोहूं॥

तू शठ मोर प्रभाव न जाना। बोलत वचन सहित अभिमाना॥
यह सुनि भानुमती रिसवाई। जानत नीच मृत्यु तब आई॥
सुनि अस वचन बहुत भय पावा। सूत बहुरि कुरुपतिपहँ आवा॥
सुनत सँदेश बहुत दुख मानी। नहिं आवत कौरवपति रानी॥

दुःशासनते बोलिकै, कहेउ भूप रिसवाय।
गहिकै केश घसीटिकै, तुम लै आवहु जाय॥

यहि की बात सकल मैं जानी। लावा सो न भीम भयमानी॥
सुनत वचन दुःशासन आवा। चलहु वेगि तोहिं भूप बोलावा॥
यहि विधि वचन दुशासन कीन्हा। सुनु यदुनाथ उतरु हम दीन्हा
पूछति सत्य दुशासन चौंको। हारै प्रथम भूप की मोको॥
जो नृप प्रथम अपनपौ हारा। भये दास नहिं नाम हमारा॥
हारो होय प्रथम मोहिं राजा। दासी होत न मोको लाजा॥
सुनत दुशासन अति रिसमानी। गहिकै केश सभामहँ आनी॥
तब यदुनाथ मोहिं रिसलागी। कहेउ छोड़ मम केश अभागी॥
रजस्वला मैं यक पट धारी। मुंच मुंच रे शठ अपकारी॥

सभामध्य बैठे सबै, कौरव कुलसरदार।
लिये जात मोकहँ निलज, करत अधम अपकार॥

कस रिस करत पति न तुहि हारी। अब तुम दासी भई हमारी
चेरिनकेरि कवन बड़ि लाजा। चलु बोलत दुर्योधन राजा॥
मम गति देखि सकल रनिवासू। करत विलाप टरत दृगआँसू॥
सो सुधि गान्धारी सुनि पाई। करि विलाप पाछे उठि धाई॥

छूटे वार न चीर सँभारा। हा पुत्री कहि करत पुकारा॥
जब लगि कढ़ी भवनते रानी। नवलग नीच सभामहँ आनी
भीषम विदुर नाइ शिर लीन्हा।कृप अरु द्रोण शोच जियकीन्ह
शकुनी कर्ण बहुत सुख पावा। दुर्योधन यहि भाँति सुनावा॥

दुःशासन ते तव कह्यो, दुर्योधन मुसक्याय॥
वस्त्रहीन करि जंघपर, बैठारो तिय आय॥

सुनियह वचन शकुनिहँसिदीन्हा। विकरणदेखि क्रोधजियकीन्ह
उचित न त्वहिं कौरवकुलराजा। कहत विलोकिवचनतजि
ज्येठ बन्धु तिय मातु समाना। वर्णत आगम निगम पुराना
नाथ मानि अब विनय हमारी। छाँड़ि देहु अब द्रुपद कुमा
तुव कीरति जग पूर्ण मयंका। जनि लावहु नृपकुलहिकलङ्क
जब विकर्ण यहि भांति बखाना। सुनत वचन तब कर्ण रिस
अबहिं न बैस तोरि मतलायक। जाहु भवन खेलहु धनुशाय
सुनि यह वचन मौन है रहेऊ। दुःशासनते तव नृप कहेऊ॥

नग्न करो तुम द्रौपदी, निजकर वसन उतारि।
बैठारो लै जंघपर, यह रुचि बन्धु हमारि॥

भीषम द्रोण रहे चप साधी। पकरेसि वसन अधम अपराधी॥
लागेउ खैंचन चीर अभागी। भई विकल मैं रोवन लागी॥
मम गति देखि पतिन दुख पावा। अस्रपात करि महिशिरनावा
—टी आश भयउ दुख भारी। दीनबन्धु मैं तुम्हैं पुकारी॥
। ादवपति हा दामोदर। हे माधव हे हलधरसोदर॥

हे गोविन्द गिरिधर बनवारी। कृष्णकृष्ण कहि शरण पुकारी ॥
हे मुरलीधर राधानायक। वासुदेव अब होहु सहायक ॥
खेंचत वसन कुमारगगामी। राखहु लाज दया करि स्वामी ॥
नाथ वसनमहँ आए समाने। रही लाज कौरव खिसियाने ॥
खेंचत वस्त्र दुशासन हारा। अम्बरके लागे अम्बारा ॥
यह चरित्र देखा सब काहू। हाली धरा भयो दिग्दाहू ॥
विन घन आसमान घहराना। कौरव सभा सबहि भय माना ॥
भूप यज्ञशालामहँ आई। शिवा शब्द कीन्हों अधिकाई ॥
बोलत रासभ श्वान कुमारा। गगन दुष्ट पक्षी गण चारा ॥
खेंचत थकेउ दुशासन बासन। वसन छोड़ि बैठ्यो निज आसन॥
भीष्म नाय नृप बैठ उदासा। चकित भये सब देखि तमासा ॥

अम्बरहीन विलोकि नृप, बोल सकेउ नहिं बयन।
रक्षा कीन्ही करि कृपा, तुम प्रभु पङ्कजनयन ॥
तजी लाज अर्ज्जुन नकुल, धर्म्मराज भय मानि।
सहदेवा बोले कछुक, भीमसेन वलखानि ॥

कहत द्रौपदी करि करि रोसा।मोहिं न कुन्तिहिसुतन भरोसा॥
इन पति नाकछु पति न हमारी। तुम रक्षा कीन्ही बनवारी ॥
पूँछेउ धृतराष्ट्रक सञ्जयसों। होत कहा कहिये सो मोसों ॥
अन्धहीन कछु परत न जानी। सुनि सञ्जय कछु कथा बखानी
दुःशासनहि दीन्ह दुरि आई।करि प्रबोध म्वहिं निकट बोलाई॥
कीन्ह शक्ति मै नहिं कछुजाना। मांगु मांगु पुत्री वरदाना ॥

बुद्धिचक्षु करि क्रोध अपारा। बार बार पुत्रन धिक्कारा॥
तेहि अवसर गान्धारी आई। देखि अनीति सुतन रिसि आई॥
करेउ विलोक कर्म्मक्रमत्यागी। परिहौ नरक असाधु अभागी॥
धृतराष्ट्रक अति प्रीतिते, कहे मांगु वरदान।
दासभाव निज पाण्डुसुत, मैं मांग्यो भगवान॥
वाहन अस्त्र पतिनके देहू। विदा करिय अब करि नृप नेहू॥
कहो भूप दीन्हों मैं तोहीं। प्राण समान सुता तुव मोहीं॥
बुद्धिहीन इन कीन्ह कुकर्म्मा। छाँड़िनि लोकलाज कुलधर्म्मा॥
धर्म्मराय दुर्योधन पोच न। कहत सत्य मोरे द्वै लोचन॥
यह सकोच जानौ जिय भोरे। प्राणन अतिशय हैं प्रिय मोरे॥
द्रुपदसुता मम वचन प्रमाना। अब तुम माँगि लेहु वर आना॥
अब न मनोरथ पूजा आशा। यहि अन्तर पुनि वचन प्रकाशा॥
अभिमत मिलौ कृपा भव तोरे। तव प्रसाद होइहि सब मोरे॥
क्षत्रिय लेइ तीन वरदाना। विप्र चारि माँगै नहि आना॥
द्वै वैश्यस्य शूद्र कहि एका। माँगै अवर होइ अविवेका॥
वाहन अस्त्र देवाइकै, विदा कीन्ह महिपाल।
परसि चरण निज चढ़ि रथन, चले भवन तेहि काल॥
सौबल नाम शकुनि को भाई। मिल्यो पन्थमहँ गयउ लेवाई॥
प्रीति समेत सभा बैठायहु। पंसासार बहुरि मँगवा यहु॥
रहेउ सकल परिवारा। मिटै न जो प्रभु होनेहारा॥
न्हों अक्ष बदी यह बाजू। द्वादश वर्ष तजै सो राजू॥

विपिन वास करि वर्ष बिताई। करै न अन्न अशन फल खाई॥
वर्ष दिवस करि पुर अज्ञाता। करै निवास जानि नहिं जाता॥
लीन्हें खोज बहुरि बन जावै। काल बिताइ राज्य पुनि पावै॥
रहेउ न कछुक भूप हरि ज्ञाना। धरो दाँव कहि वचन प्रमाना॥
लीन्हों अक्ष शकुनि छलकारी। दीन्हों डारि गये नृप हारी॥

होइ उदास भूपाल तब, वनकहँ कीन्ह पयान।
कीन्ह प्रतिज्ञा क्रोध करि, भीमसेन बलवान॥

निन्दा कीन्ह अधम तैं मोरी। आई मीच दुशासन तोरी॥
जेहि कर केश गहे अभिमानी। गहे वसन नँगिआवन रानी॥
सभामाँझ खल कानि न मानी। सो उखारि डारौं तुव पानी॥
बहुरि जंघ ठोंकी कुरुनाथा। तोरौं जंघ गदा गहि हाथा॥
सुनहु सकल निज काल बिताई। कृष्ण शपथ करिहौं सब आई॥
सत्य वचन हरि सत्य हमारा। करिहौं सब कौरव संहारा॥
अर्ज्जुन कहौ कर्णके आगे। हँस्यो मोहिं सबते भ्रम त्यागे॥
शरण मारि जर्जर तनु तोरा। करिहौं कृष्ण शपथ प्रणमोरा॥
सहदेवहु शकुनीसन बोले। विषधर मनहुँ विषैरस खोले॥

द्यूत हराये नीच तोहिं, करि छलको अधिकार।
होइहि मोरे करनते, शकुनी मरण तुम्हार।

वर्षा तोहि नहिं अवधि बिताई। मोहि युधिष्ठिर भूप दोहाई॥
येही भाँति नकुल बनवारी। सभामध्य कीन्हों प्रण भारी॥
सहदेव कह्यो शकुनिते जैसे। कह्यो शल्यते राजा तैसे॥

हँसेउ मोहिं कछु कानि न मानो।करि बहुवार कितव अभिमानो॥
बीते काल न तोकहँ मारों। तौ नहिं धनुषवाण कर धारों॥
मोरे उर उपजा अति रोसा। प्रणकीन्हों कहिनाथ भरोसा॥
करि अस्नान रुधिर तुव धारा। बांधौं तव दुःशासन बारा॥
तुव बल प्रण ठानेउँ यदुराई। उचित होइ सम करिय उपाई॥
पुनि हम पाँच पाण्डुसुत रानी।श्रीमुख भगिनी कहत बखानी॥
तेइ तुम साक्षात भगवाना। पाण्डव हैं अतिशय बलवाना॥
तिनहिं अछत यह हाल हमारा। यथा अनाथ नाथ बिनदारा॥
तेरह वर्ष न बाँधे केशा। फिरत अजहुँ विधवाके भेशा॥

सुन्यो द्रौपदीके वचन, लोचन मोचत वारि।
कही प्रतिज्ञा कीन्ह मो, होइहि सत्य तुम्हारि॥
सबलसिंह चौहान कहि, भक्तिवश्य भगवान।
बैठारा पुनि द्रौपदी, करि बहुविधि सनमान॥

इति दशम अध्याय॥ १०॥

पूछेउ मुनि जनमेजय राई। कथा विचित्र कही मुनि गाई॥
सुनत श्रवण नहिं तृप्ति हमारा। कहिये नाथ सहित विस्तारा॥
भयो प्रसन्न सुनत नृप बानी। लागे कहन कथा मुनि ज्ञानी॥
ेह अवसर आये सब राजा। कृष्णसहित जहँ भूपति राजा॥
नाइ शिर हरिहि जोहारा। बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा॥

ताही समय द्रुपद नृप आये। सुतन सहित हरिपद शिर नाये॥
देखि नृपहि वसुदेव कुमारा। मिलि बहुरि आसन बैठारा॥
परसे चरण विराट भुवाला। सनमाने तब दीनदयाला॥
कह्यो भूप सुनिये यदुराई। अब करिये प्रभु कौन उपाई॥
हे हरि यतन बतावहु सोई। जामहँ मोहि परम हित होई॥
मोसम को जग और सभागी।अति दुख सह्यो बन्धु जेहि लागी॥
मोसम दुखी सुनहु भगवाना। भयो न भूपर भूपति आना॥
जान्यो कृष्ण भूप दुख पावा। कहि सुरराज कथा समुझावा॥

वृत्रासुरको बधन करि, भये सुदित सुरराज।
घेर्यो हत्या आनि तब, छूट्यो राजसमाज॥

विप्रवंश ताको अवतारा। सुनत कथा दुख मिटा अपारा॥
भाग्यो अमरनाथ दुख पाई। कमलनालमहँ रह्यो छिपाई॥
फिरि शतयज्ञ नहुष महिपाला। लह्यो इन्द्रपुर सुनहु भुवाला॥
सेवहि सब सुर सहित समाजा। सिंहासन बैठे नहुराजा।
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा। सेवहिं मनुज देव मुनि सर्वा।
रम्भादिक सुरतिय सब आवैं। करैं गान अरु नृत्य दिखावैं॥
आवैं सुरतिय करि शृङ्गारा। रमित रहैं नृप करन विहारा॥

यहि विधि राजसमाजते, बीति गये कछु काल।
अति प्रमोदते नृप सुनहु, कथा कहौं भूपाल॥

सो सुधि पाइ सभीत परानी। गुरुगृह गई भागि इन्द्रानी॥
मार्ग जीव यह विपति सनाई।मै प्रभु चरण शरण अब आई॥

बहु प्रकार मुनि धीरज दीन्हा। कीन्हो कृपा अभय पुनि कीन्हा॥
तब सुरगण गुरु सकल बुलाये। बांटि लेहु अब कहि समुझाये॥
सबपर छिटिकि जाइ सब पापू। मिटै सुरेशकेर परितापू॥
कीन्हों सब मिलि अङ्गीकारा। सबपर गयो पापको भारा॥
ऊसर भयो धरा जो लयऊ। प्रथम ज्वालहुत भुकमहँ भयऊ॥
लीन्हेउ वरुण भई जल काई। यहि प्रकार सब सुर समुदाई॥

भयो पाप बिन पाकरी, पूरि रह्यो सुख भूरि॥
पठये ढूँढ़न पाय कहि, गयो बिलोकत दूरि॥

पायक ढूँढि फिरे सब देशा। मिले इन्द्र नहिं भयो अँदेशा॥
सर्ब्ब कथा सुरगुरुहि सुनाई। मिलैं कतहुँ तब शची पठाई॥
ढूँढ़त फिरत विकल इन्द्रानी। मगमहँ मिले देव ऋषि आनी॥
कीन्ह दया तब दीन्ह बताई। कमलनालमहँ रह्यो छिपाई॥
इन्द्र भाग गिरिपर भय माने। मानसरोवर इन्द्र छिपाने॥
सुनि नारदके बचन प्रमाना। गई शची तहँ रोदन ठाना॥
कीन्ह बिलाप ताप तनु भारी। बार बार कहि नाम पुकारी॥
सुनि सुरेश मन दुख अधिकाई। निकरि कमलते दीन देखाई॥
तुमपर गुरु कीन्हों अनुरागा। दीन शाप करि सरन बिभागा॥
रह्यो न तव शिर अघ लवलेशा। बोलैं सुरगुरु चलिय सुरेशा॥

मोकहँ पठयो देवगुरु, लावहु वेगि बुलाइ।
वचन मानि फुर गुरु वचन, गये इन्द्र हर्षाइ॥

प्रणाम कीन्ह सुरराई। भे प्रसन्नमन आशिश पाई॥

बैठि इन्द्र पद नहुष नरेशा। मिलै राज तब मिटै अँदेशा ॥
मिलि राजा कहि गुरु सनमाने। दिवस पञ्चदश रहे छिपाने ॥
धर्म्म हीन करि नहुषहि राजा। तब पावहु तुम राजसमाजा ॥
यहि प्रकार सुरपति समुझाये। करि प्रबोध निज भवन छिपाये
कह्यो कथा अब सुनहु भुवाला भयो कामवश नहुमहिपाला ॥
पठये दूत बुलावहु जाई। बड़ अभिमान शची नहिं आई ॥
कह्यो जाइ नृप बोल्यो रानी। सुनत उतर दीन्हों इन्द्रानी ॥

जब चाहत सुरराज मोहिं, वाहन चढ़त नवीन।
जाइ लवाइ सो मानते, होइ मोर आधीन ॥

तेहि गद्दी नहु आइ विराजा। जाइ लवाइ जहां सुरराजा ॥
दूत जाय यह वचन उचारा। नहु नरेश मन करत विचारा ॥
कहि नवीन चढ़ि यान सिधावहु। शची बुलाइ भवनकहँ लावहु
तब देवन शारदा बुलाई। बैठि जीभ मति भूप भ्रमाई ॥
शिविका पकरि विप्रगण लाये। ह्वै आरूढ़ तब भूप सिधाये ॥
द्विजन शाप दीन्हों करि शोका। परै धरणिखल तजि सुरलोका
पुण्यक्षीण होइ नहु महिपाला। पर्यो धरापर सो ततकाला ॥
अमरनाथ निज पायउ राजा। भयउ वहैस सब साज समाजा॥
तैसे तुम पैहो महिपाला। धरहु धीर बीते कछु काला ॥

मङ्गलसिंह धीरज दियो, करि प्रबोध महिपाल।
लीन्हें बोलि नरेश तब, मन्त्रहेत त्यहि काल ॥

इति एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

कहेउ भूप अब सकल नरेशा। निज निज मन कीजिय उपदेश
नृप विराट कह यह मन मोरा। जबलग जिये शत्रु जग तोरा
मिलिहि राज्य नहिं कोटि उपाई। करिय भूपजस तुमहिंमोह
सुनत वचन कह द्रुपदकुमारा। मनहु सकल मिलि मन्त्र हमा
पहुंचत दूत तुरत अब कोई। समुझावै कुरुपति नृप सोई।
सुनत वचन हरिके मनभावा। द्रुपद पुरोहित बोलि पठावा।
अब तुम दुर्योधन पहँ जाई। नाना भांति कहेउ समुझाई॥
करि उपाय कीजै बुधि सोई। जामहँ विप्र भूपहित होई॥
पृथक् पृथक् कहि सबन संदेशा।विदा कीन्ह हरि करि उपदेश

अति प्रसन्न द्विजराज मन, ह्वै शिविका असवार।
नगर हस्तिनापुर तबै, जात न लागी वार॥

पहुँचे विप्र भूपके द्वारे। बोले वचन बोलि प्रतिहारे॥
धर्मराज हरि मोहिं पठायो। कहन संदेश भूपते आयो॥
वेतपाणि सुनि जाइ जनावा। बुद्धिचक्षु तब बोलि पठावा।
गयो सभामहँ द्रुपद-पुरोधा। त्रिकालज्ञ पूरण बुधि बोधा।
कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा। बैठारो निज बोलि समीपा॥
आशिर्वाद विप्र तब दीन्हा। नृपसन्मान विविधविधिकीन्हा।
द्रोण कर्ण सब बैठि समाजा। भीषम वाहुलीक महराजा॥
कृप अरु शल्य जयद्रथ भूपा। बैठे जहँ कौरव कुलदीपा॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सौ भाई। बैठे सभा सभेष बनाई॥
दत्त नृप बैठ सुजाना। द्रोणपुत्र गुणज्ञाननिधाना॥

भूरिश्रवा कलिङ्ग अरु, मकरध्वजो महान ।
बैठि सुबालकुमार तहँ, अरु उलूक बलवान ॥
विप्र सुनाइ कहा सब आगे । कहन सँदेश भूपते लागे ॥
मोहिं पठायो धर्म्मनरेशा । चित दै सुनहु महीप सँदेशा ॥
निकट बुलाइ धर्म्मसुत हमको । प्रथम कहेउ अभिवादन तुमको ॥
कहेउ बहोरि कृपा नृप कीजै । बीती अवधि राज्य अब दीजै ॥
किङ्कर जानि करिय अब दाया । हम तुम्हरे छाँडौ मति माया ॥
तेरह वर्ष सहे दुख नाना । सो हरि कियेउ विपति अवसाना ॥
दुर्योधन कीन्ही अनरीती । तुम्हरी कृपा विपति अब बीती ॥
मिटै कलह सो करिय उपाई । यहि विधि कही युधिष्ठिर राई ॥
चलती बार पार्थ मोहिं जाना । कहेउ प्रणाम नरेश सुजाना ॥
मोते कहेउ सँदेश जो, सो सुनिये दै कान ।
मेटो कुलको कलह अब, तुम्हरे सब बुधिमान ॥
कह्यो भीम मोहिं चलतीवारा । कहौं जो आयसु होइ तुम्हारा ॥
कही बात जो राखौं गोई । ताते पाप अधिकई होई ॥
कहे न होइ दूत शिर दोषा । ताते सुनिय भूप तजि रोषा ॥
हम तुम्हार अपराध न कीन्हा । करि छल तुम दारुणदुखदीन्हा ॥
बीते कछु दिन तुम फल पैहौ । समुझन अवनहि मनपछितैहौ ॥
लैकै गदा युद्ध जब करिहौं । सौ बांधव दुर्योधन मरिहौं ॥
करिहैं बन्धु जब विधवा-भेशा । तब करिहौ चित चेत नरेशा ॥
करिहुँ निपात सेन तुव काटी । दैहुँ मिलाइ मांस अरु माटी ॥

रक्त नदी तब बहंहि महाना। कर्ण आदि कटिहैं भट नाना॥
उठैं कबन्ध गिद्ध पल खैंहैं। तव नरेश आधो हम पैहैं॥

अबते चेतहु भूप तुम, सुनिकै वचन हमार।
समुझावो दुर्योधनहिं, वचन सबै परिवार॥

नकुल सँदेश सुनहु दै काना। बुद्धिचक्षु तुम अति अज्ञाना॥
अंश हमार समुझि नृप दीजै। अपने जियत कलङ्क न लीजै।
जो न देउ नृप अंश हमारा। होइहि युद्ध न लागी वारा॥
चलती बार भूप सहदेवा। करि प्रणाम विनयो बहु सेवा॥
छाँड़ो पिता हमारो मोहा। करि बहु दुर्योधनपर छोहा॥
अब यह समुझि परी मनमाहीं। उनके दुर्योधन हम नाहीं॥
मरे बालपन पाण्डु न देखे। तुम पितु हते हमारे लेखे॥
तुम्हरे ईक्षत हम दुख पावा। करि छल शकुनी देश छुड़ावा

परी विपति बनबन फिरे, सहे अशेष कलेश।
समुझावहु दुर्योधनहिं, मेटहु सकल नरेश॥

मोहिं बोलि वसुदेवकुमारा तुमते कहेउ नरेश जोहारा॥
जो कछु दीनबन्धु भगवाना। कहेउ सँदेश सुनिय दै काना॥
तुमते काह कहिय बहुतेरा। दीजै अंश युधिष्ठिर केरा॥
प्रथमहिं बहु प्रकार समुझावा। दुर्योधन के मनहिं न आवा॥
नत सो न बहुत अभिमाना। कालविवश सब ज्ञान भुलाना
ो विवेक पाप प्रिय लागा। उपज्यो हंसवंश जिमि कागा

लीन्हें अयश सकल यश खोई । बांस वंश महँ भयो घमोई ॥
कौरव कुल यश पूर्ण मयंका । भा दुर्योधन तिनहिं कलंका ॥

समुझावत तुम अबहि नहिं, सब जानत अज्ञान ।
बहुरि कह्यो सन्देश सब, सुनहु भूप दै कान ॥

चलत बार कह द्रुपद सन्देशा । सनहु कृपा करि कहत नरेशा ॥
अपने जियत कलङ्क न लावहु । कलह गोतको भूप बचावहु ॥
धृष्टद्युम्न ममसुत अरिखण्डी । अबलगु राखो वर्जि शिखण्डी ॥
कीजै सन्धि मिटै उतपाता । बढ़ै भूपकी कीरति दाता ॥
मैं सिख देत जानि सम्बन्धी । चक्षुहीन कछु बुद्धि न अन्धी ॥
वेगि उपाइ करहु नृप सोई । संधि होइ जेहि कलह न होई ॥
दुर्योधन अरु पाण्डुकुमारा । जानहु हेतु समान हमारा ॥
हम चाहत हैं तुम्हरे हितकी । करहु विचार होइ जो नीकी ॥

चलति विलोकि बुलाइ मोहिं, कह्यो विराट संदेश ।
सावधान होइ लाइ मन, सो अब सुनहु नरेश ॥

दुर्योधन कीन्हों अपकारा । धर्मराजकहँ देश निकारा ॥
तुम्हरे योग न बात अलीका । देखहु समुझि भरतकुल टीका ॥
करहु होइ जो नीक विचारा । यह नृप कहेउ विराट भुवारा ॥
विप्र वचन सुनि भा उरदाहू । विहँसि वचन बोला नरनाहू ॥
बहुत विप्र कत वाद बढावहु । पाण्डुसुतनको कुशल सुनावहु ॥
प्राण समान परमप्रिय जीके । हैं सब भ्रात जान मम नीके ॥
दुर्योधन इनने छल कीन्हा । द्यूत खेलाइ राज्य हरि लीन्हा ॥

करि कुबुद्धि यदि दीन निकारी। वनवसि महेउ विपति अतिभारी॥
द्रुपदसुता अतिशय सुकुमारी। देखे रूप न इन्दु तमारी॥
वनवसि फिरौ लाजसब त्यागी। कौन कुमति मम पुत्र अभागी॥

अबहूं तजत कुचाल नहिं, कालविवश कुरुनाथ।
अक्षहीन अरु ज्येष्ठतन, मैं तनु भयो अनाथ॥

सुनत विप्र नहिं मोर सिखावन भयो एकु स्तप्रवंशजिमिरावन॥
जैसे उग्रसेनसुत कंसू। प्रकट्यो कालनेमिकर अंसू॥
पितहि पकरि कारागृह डारे। तैसे यह कछु वश न हमारे॥
जबते धर्मराज वन गयऊ। तबते हमहिं दुसह दुख भयऊ॥
उनके विरह दिवस अरु राती। तलफत रहत जरत नित छाती॥
दुर्योधनहिं बहुत समुझावत। पै वाके कछु मनहिं न आवत॥
अबहौं बहुत भांति समुझैहौं। अपने चलत मिलाप करैहौं॥
असकहि बुद्धिचक्षु समुझाये। द्विज प्रबोधि अन्तःपुर आये॥
सञ्जय सङ्ग पाणि पकराई। भूप भवन कहँ गयउ लवाई॥

बैठारे मुनि सेजपर, गन्धारी दै पान।
सबलसिंह चौहान कहि, करन विविध सन्मान॥

इति द्वादश अध्याय॥ १२॥

षम और हरिद्विज रहेऊ कह्यो प्रणाम धर्मसुत कहेऊ॥
तुमतें कछु कह्यउ सन्देशा सुनहु पितामह तजहु अन्देशा॥

कुरुनन्दन कीन्हीं अपकारा । सुनि शकुनी शिख देशनिकारा ॥
रहे विपिनवसि जाय उदासी॥ तुम्हरी कृपा विपति सब नासी॥
मुये पाण्डु हम सबते बालक ।तबतो तुमहिं कीन्ह प्रतिपालक ॥
रहत सदा तुव चख अनुकूले । भलेहि नाथ हमरी सुधिभूले ॥
हैं हम नाथ कृपा अभिलाखी ।अनुचर जानि न फेरिय आँखी॥
सुनत वचन छाये जल कोये । करि सुधिविकल पितामह रोये॥

पुलकि गात गद्गदगिरा, भरि आये जल नैन ।
हैं नीके सब पाण्डुसुत, तब बोलेउ द्विज बैन ॥

तुम्हरी कृपा सहित परिवारा । कुशल अबहिलग पाण्डुकुमारा॥
सुनि भीषम यह वचन उचारा । उनहीं कुल राखै करतारा ॥
धर्म्मराज निज राज्यहि पैहैं निश्चय सब कौरव मिटि जैहैं ॥
दुर्योधनहिं गर्व अति भारी धर्म्मनरेश धर्म्मव्रत धारी ॥
सदा विश्वम्भर गर्व प्रहारी । धर्म्मक्षेमकर श्रीवनवारी ॥
पाण्डव क्षेम मानु विश्वासू । द्विज जानहु कौरवकुलनासू ॥
यहिविधि वचन विप्रते खोले । गङ्गासुत कुरुपतिसे बोले ॥
मानि वचन मम कलहबढ़ावहु । करहु सन्धिसबमिलिसुखपावहु
सुने वचन लागे जिमि सायक । ह्वै सक्रोध बोले कुरुनायक ॥
तुमहिं न उचित पितामह ऐसी । कही सभा सन बात अनैसी॥

तुमहिं त्यागि मन वचन कहि, हम नहिं जानै और ॥
उचित न कटु वाणी कहन, कौरवकुल शिरमौर ॥

अस कहि दुर्योधन दुख माना । उठि अपने गृह कीन पयाना॥

अपने भवन पितामह आयो। विप्र द्रोणते वचन सुनायो॥
कहे प्रणाम तुमहि गुरुभूपा। कौन विनय कछु मति अनुरूपा।
चतुर्वेद धनुर्वेद निधाना। आचारज नहि तुमहि समाना॥
हो समर्थ प्रभु सबहि प्रकारा। शाप देन अरु बाण प्रहारा॥
देव अदेव जगत भय मानत। तवतपतेज सकल उर आनत॥
शशिसमकोटिनदिशन प्रकाशा। कुरु पाण्डव तुम्हरे सबदासा॥
सब प्रकार जानत बुधिबोधन। तुमही समुझावत दुर्योधन॥

तपबल बुधिबल अस्त्रबल, विद्याबल बलवाह।
कर्म्म धर्म्म अरु ब्रह्मबल, विदित जगत सबकाह॥

तुव बलको भरोस उर मोरे। को हरि और न जानत भोरे॥
यह सँदेश अरु पुनि पद बन्दन। तुमने कहेउ पाण्डुके नन्दन॥
सुनत वचन भे द्रोण सशोके। कमल नयन जल रहत न रोके॥
पुलकित गात कृपा अधिकाई। विविधभांति पूछी कुशलाई॥
शिष्यवर्ग हैं सकल हमारे। द्विज द्रोणहुते अधिक पियारे॥
धर्मशीलनिधि पांचौ भाई। मोरे प्राणनते अधिकाई॥
ताते उनकी कुशल बतावहु। मोरे जियकी ताप बुतावहु॥
कह द्विज हैं पाण्डव सब नीके। नाथ तुम्हार दास जगतीके॥

दुर्योधन काढेउ विपिन, देखरायो अति त्रास।
रहत पाण्डुसुत कुशल हैं, तव चरणनकी आस॥
मनसा वाचा कर्म्मणा, नाथ तुम्हारो दास।
मानत ज्यों हरिको तुमहि, धर्म्म सहित विश्वास॥

कहि यह वचन मौन द्विज भयऊ ।उठि गुरुद्रोण भवनते गयऊ॥
विप्र सङ्ग लै अश्वत्थामा । करवायो गृह निज विश्रामा ॥
बहु विधि खान पान करवाई । शयन हेतु शय्या बिछवाई ॥
कीन्ह द्रोणसुत प्रीति घनेरी । पूंछी कुशल पाण्डवनकेरी ॥
अर्जुन भीम नकुल हैं नीके । प्राण अधार बन्धु ममहीके ॥
अभिमन्यु सहित सकल परिवारा । अरु आयो द्रौपदीकुमारा ॥
सबकी मोकहँ कुशल बतावहु ।भिन्न भिन्न कहि वरणि सुनावहु
उन हमको कछु कहेउ सन्देशा । सो द्विजकहन्टपसहितकलेशा॥

बड़ी विपति तेरह बरष, सही भूप कुन्तेव ।
सो वीती हरिकी कृपा, है नीके सहदेव ॥

यह कहि भूप नयन जल छाये ।गद्गद कण्ठ वचन नहिं आये ॥
देखी बहुत प्रीति अधिकाई । कुशल प्रश्न कहि विप्र सुनाई ॥
पाण्डव सकल सहित सुतदारा । कुशल आजुलग सब परिवारा
करहु यत्न कछु कहत पुकारे । यथा कुशल अब हाथ तुम्हारे ॥
अबते तुम भूपहि समुझावहु । कलह मेटिकै सन्धि करावहु ॥
कहेउ प्रणाम तुमहि कुन्तेवा । सुनत सँदेश कहौ सहदेवा ॥
हम जानत जिमि अर्जुन भीमा । तैसे तुमहि आजुलग जीमा ॥
इन भ्रातन वर विपति बँटाई । गुरु बांधव तुम सुधि बिसराई ॥
जानत सो कौरव जो कीन्हा । तुमहिनउचितकृपा नजिदीन्हा॥
कहेउ द्रोणसुत द्विज सुनि लीजै । अपने मन विचार तुम कीजै॥

खान पान सन्मान दै, सब प्रकार कुरुनाथ।
दासभाव सोते रहत करि लीन्हों निजहाथ॥
चित महं उनमन शोनि घनेरो। परवश भयो लागि नहि मेरो॥
अनभल चहत पाण्डवनकेरा। कारव वश मम फिरत न फेरा॥
अस कहि शयनकरन दरलागे। अब न्रूपसनह चरितजसआगे॥
यहां भूप मन शोच अपारा। कह सञ्जयते बारहिं बारा॥
देखि व परत मोहिं बान न नीका। दुर्योधनको चलो अलीका।
सुनत श्रवण नहिं कछु उनपानो। परो न नीद शोकवश रातो॥
भीम स्वभाव विदित सब काहू। अस कहि विकल भयोनरनाहू॥
तब न्रूप कहा सुनहु गन्धारी। समुझावहुनिजसुत अपकारी॥
सुनि सञ्जय पुनि तुरत पठाये। दुर्योधनहिं बोलि लै आये॥
रावण कुम्भकर्ण जिन मारा। सुरविजयी जानत संसारा॥
हयहयराज प्रचारि प्रचारी। काटेउ सहसबाहु बलभारी॥
केशी कंस अघा बका, मुष्टिक औ चाणूर।
धेनुक हति वृष पूतना, तृणावर्त्त खलक्रूर॥
मारयो वालि वत्ससुर नीचा। सुभट ताड़का अरु मारीचा॥
खरदूषण त्रिशिरादि कबन्धा। विपिनविराध असुरकृत बन्धा॥
शङ्खचूड़ भस्मासुर मारा। राख्यो शम्भु विदित संसारा॥
ते पाण्डवके भये सहायक। जीति को सके तात रघुनायक॥
न॰ वैर किये भल नाहीं। संधिनीकि समुझौ मनमाहीं॥
तुम्हरे हैं बन्धु न जीको। दीजै अंश बात यह नीको॥

तुव पितुके लघु वन्धु भुवारा। भये पाण्डु जानत संसारा॥
धर्म्मराज कछु पाप न कीन्हा। छल करि राज तात तुम लीन्हा॥
उन नहिं कीन्ह विरोध सुत, ना कछु लियो तुम्हार।
छल करि अच्छ खेलाइकै, तैं कीन्हों अपकार॥
अजहूँ कहो हमारो कीजै। मिटै विरोध अंश दै दीजै॥
अतिहित गन्धारीकी वानी। सुनी न श्रवण नेकु अभिमानी॥
धृतराष्ट्रक बहुविधि समुझावा। कालविबश कछुमनहिंनआवा॥
मातु पिताका वचन न माना। जस भावी तस उपज्यो ज्ञाना॥
भावीवश जानहु सब लोगा। भावीवश न होइ सब योगा॥
भावी सुमति कुमति उपराजै। हानि लाभ अरु विजयपराजै॥
कह वैशम्पायन सुनु राजा सुनि कुरुनाथ क्रोध उपराजा॥
हरि कहि परशुराम जग जाये। जीति पितामह वनहि पठाये॥
दानव देव मनुज वल भारी। भीषम पद कोउ नहि टारी॥
जीति सकल रण वन्धु विवाही। वानर रच्छ विदितसवकाही॥
गुरु द्रोण दशहू दिशि जीते। सुर अरु असुर जासु भयभीते॥
जो हठि कर्ण करै संग्रामा। करि नहिं सकै विजय घनश्यामा॥
कह्यो मातुसे जोरि कर, चुप करि रहु अरगाइ।
तिल भरि देउँ न जियत महि. सकै को टेक कुड़ाइ॥
अस कहि अपने भवन भुवाला। जात भयो राजा ततकाला॥
होतहि प्रात सभामहँ आयो। बुद्धिचक्षु द्विज बोलि …
कर्ण पक्षशत दीन्ह्यों दाना। कीन्ह दान नृप करि …

आजु कालिहि महँ सञ्जय ऐहैं। सत्य सन्देश यहाँको लैहैं॥
करि बहु यतन सुतन समुझाई। देहौं तात मिलाप कराई॥
कहि द्विजते यहि भाँति सन्देशा कीन्हविदा यहि भातिनरेशा
कहत प्रात सञ्जय को आवन। तिनके हाथ सन्देश पठावन॥

धृतराष्ट्रक आशिष कह्यो, लै पाण्डवको नाम।
नृपमण्डली जोहार करि, हरिको कह्यो प्रणाम॥

यहि प्रकार कहि द्विजवर बाणी। भूपसहित मुनि शारँगपाणी
गूढ़ गिरा समुझत मनमाहीं। और विचार कहौ कछुनाहीं॥
उन सगरो सञ्जय पर राखौ। हरिते कहत धर्मसुत भाखौ॥
तब हरि कहत चुपौ दिनचारी। आवैं जो न करिय पुनि रारी
बुद्धिवान पाञ्चाल पुरोहित। इनते को चाहत तुम्हरो हित॥
येऊ गये न कछु करि आये। कारज रह्यो सन्देश न लाये॥
इनते को जाइ अब ज्ञानी। बिहँसि बिहँसिकह शारंगपानी॥
सुनत बचन नृप द्रुपद लजाने। करी कृपा श्रीहरि सनमाने॥

हरिपदपङ्कज नाइ शिर, निज निज शिबिर भुवाल।
गये सकल प्रमुदित अधिक, हिये राखि गोपाल॥

इहाँ प्रात मतिदृग जब जागे। सञ्जय बोलि कहन असलागे।
धर्म्मराज हरि पहँ तुम जाई। कह्यो वचन निजमति निपुणाई।
कलह वटै ज्यहि सम्मति होई। बुद्धि विचारि कह्यो तुमसोई॥
द्विशिते पूछेउ कुशलाता। प्रीति समेत मनोहर बाता॥
मान कह तुमहिं सिखैये। करहु गहरु जनि तुम अवजैये

मुनि सञ्जय नायो पद शीशा। बिदाकीन्ह द्रुपदीन्ह अशीशा॥
रथ अरूढ़ ह्वै तुरत सिधाये। प्रमुदित धर्म्मराजपहँ आये॥
देखि पाण्डुसुत सैन महाना। सुरपति सरिस अचम्भौ माना॥
घण्टानाद मनुज रव नाना। होत कुलाहल सिन्धु समाना॥
पँवरि द्वार सञ्जय चलि आये। शयन किये हरि अर्ज्जुन पाये॥

द्वारपाल भीतर भवन, देखि सरोरुह नयन।
कनक पलँग अर्ज्जुन सहित, करत कृपानिधिशयन॥

दोऊ कर पुनि दोऊ पानी। चापत चरण द्रौपदी रानी॥
सञ्जय को आगमन सुनावा। द्रुपदसुता हसि बोलि पठावा॥
सुनि सन्देश अन्तःपुर आये। प्रीति सहित पुनि पद शिर नाये॥
हरुये चरण धरहु कह रानी। परैं जागि जनि शारँगपानी॥
चाप पाय प्रभु नयन उनीदे। अर्ज्जुन सहित उठे रविनीदे॥
जीवबन्धुको रंग लजाये। दृग विलोकि सञ्जय भयपाये॥
उग्ररूप देखत घनश्यामा। कम्पित तनु पुनिकरत प्रणामा॥
सञ्जय दिशि देखा यदुवीरा। बोले घनद्रव गिरा गँभीरा॥

कह सञ्जय दुर्योधनहिं, समुझावत तुम नाहिं।
मरो चहत सब मिलि शठहि, समुझि परी मनमाहिं॥

धर्म्मराजके देत न हीसा। अपने विभव करत बल खीसा॥
मस्तक काटि सहित परिवारा। लैहौं अंश बांटि दृढ़ फारा॥
भूलो अधम कर्ण बल पाई। वहि पापी सब कुमति सिखाई॥
मरै न जीति पार्थके आगे। मरिहै नीच एक शर लागे॥

जो कदापि अर्ज्जुन कदराई। हनहुँ चक्र गहि शम्भु दोहाई॥
सुनत वचन सञ्जय भय माना। करि प्रबोध अर्ज्जुन सन्माना॥
यदुनाथ कृपा अब कीजै। अभयदान सञ्जयकहँ दीजै॥
पारथ वचन मानि भगवाना। निज सेवक सञ्जयकहँ जाना॥
प्रीति समेत लीन्ह बैठारी। बोले मधुर गिरा बनवारी॥
हरि अर्ज्जुन सञ्जय सहित, चले युधिष्ठिर पास।
सबलसिंह हतसों करत, मगमें वागविलास॥

इति त्रयोदश अध्याय॥ १३॥

कह मुनि जनमेजय मुनि लीजै। कथा अमियसम पानहिकीजै
धर्म्मसभा हरि पारथ आये। सञ्जय सहित मोदमन छाये॥
धर्म्मराज आगे चलि लीन्हा। हरिहि समेत दण्डवत कीन्हा॥
अर्ज्जुन धर्म्मराज पद वन्दे। बैठि सभा हरिसहित अनन्दे॥
तेहि अवसर सञ्जय तहँ आये। करि विनती बहुपद शिरनाये॥
धर्म्मराज निज निकट बुलाई। बूझत कुशल सनेह बढ़ाई॥
कुशलप्रश्न कहि कहत सन्देशा। ज्यहि प्रकार कहि दीन नरेशा
मानत अबहिं नाहिं दुर्योधन। समुझैहौं करिकै बुधि बोधन॥
तुम सुत चुपकि रहौदिन चारी। होई मन भावती तुम्हारी॥
न कलह मिलाप कराई। देव तात तुव अंश देवाई॥
शाप कहौ कुशल पुनि बूझौ। है नृपकीरति तुमहि अबूझौ

जबते तुम कीन्हीं बनवासा । उर न चैन नृप रहत उदासा ॥
नितप्रति दुर्योधनकी निन्दा । करत कहत यहहै मतिमन्दा ॥
तुमपै कृपा रहत अधिकाई । चलन कहेउ निज निकटबुलाई ॥
आवहु तात देखि निज आंखिन । मानत मैं न औरहीं साखिन

भ्रात जात मम प्राण सम, जानत सब संसार ।
सुनि शकुनी सिख नीच यहि, काढ़े बिन अपकार ॥
दुर्योधन मति परिहरी, बैठि अलीकन बीच ।
दृगविहीन मै जरठ तनु, मानत बात न नीच ॥

यदपि न मानत बश कुटिलाई । करवैहौं मिलाप बरिआई ॥
गन्धारी आशिष कहि दीन्हा । कहिहौ सुतन कृपा पुनि कीन्हा
बिनकलंक नहिं दोषतुम्हारा । करि कुबुद्धिवहिविपिननिकारा ॥
तुमपर कृपा करत बनवारी । सकै तात को बात बिगारी ॥
सबबिधि सुत तुम्हार कल्याना । करिहैं कृपासिन्धु भगवाना ॥
गान्धारी आशिष सुनि काना । कीन्ह प्रणाम भूप सुखमाना ॥
पतिव्रता पुनि मातु हमारी । गन्धारी जानत श्रुतिचारी ॥
आशिष दीन्ह कृपाकरि भारी । सबप्रकार विधि बातसुधारी ॥

गन्धारी आशिषदियो, विविध भाँति सनमान ।
सुनु सञ्जय कह धर्मसुत, हो हमार कल्यान ॥

पूछो भीमसेन सञ्जयसे । कहेउ सँदेश पिता कछु हमसे ।
पापबुद्धि देखत को सीधे । सुतन नेह ममता महँ बीधे ।
निश्चित नृप जानत सब साधू । लीजै मान न कछु अपराधू ॥

तैसे मौन रहत दिन राती। है पुनि अंध सकलकुलघाती॥
सिखै कुचालि वचनमृदुभाखी। पापमूलशिधि दीन्ह न आंखी
है अति क्रूर सुभाव प्रपंची। भलवत तुमहिं भूप अब वंची॥
आँधर आपु अच्छ विन जाना। वहुपापी अब सकल जहाना॥
क्रूर वचन सुनि भूपति लरजे। रहउ चुपाइ भीम कहँ वरजे॥
होन न कहिय वड़ेनकहं भीमा। पातक वढ़त विचारहु जीमा
पिता समान पिताको भाई। कहउ न कछुनुमरहउचुपाई॥
उनकहँ पुत्र लोभ अति जीते। मोह हमार तज्यो कवहीते॥
भूप वचन सुनि भीम चुपाने। वोले नकुल वीररस साने॥

सुनु सञ्जय वह शठ अजहुँ, देत न अंश हमार।
दुर्योधन होइ कालवश, करत क्रूर अपकार॥

नहिंकछुकोउ वाकहँससुझावत। नाहक सवमिलिवैरवढावत॥
फिरि पाछे सब तुम पछितैहो। मरे युद्ध ते फेरि न लहिहो॥
भीषम विदित सत्यव्रतधारी। त्यागउ राज्यलोभ अरु नारी॥
विदुरभक्त बिज्ञान निधाना। गतविलोकिकहै सकलजहाना॥
सोमदत्त गङ्गाधर दोऊ। सवलायक जानत सवकोऊ॥
भूरिश्रवा वीरता माते। सकैं न युद्ध जीति सुर ताते॥
वाहुलीककी बड़ि प्रभुताई। जीतिधरा जिन वाँह पुजाई॥
सभा मांझ शठ द्रुपदकुमारी। केशपकरिचहकीन्ह उघारी॥
धनको विभव बिलोकी। कुरुपाण्डवकोउसक्योनरोकी॥
अरु द्रोण बड़े बलधामा। रह चुपके तहँ अश्वत्थामा॥

समुझिपरी सम्मति सबहीकी । कर्णहुकही बात नहिं नीकी ॥
एक एक जीतहि संसारा । उनहिं निदरि पावत को पारा ॥
एकौ कोऊ भये न सङ्गी । समुझिपरे सब पाप प्रसङ्गी ॥
जस उनके तस सकल हमारे । पाप बुद्धि करि केहुन निवारे ॥
सुनि सहदेव कहत सुन भ्राता । हैं हमरे रक्षक सुरत्राता ॥

नग्नकरन हित द्रौपदी, कीन्हों सबन उपाय ।
रही लाज पटना घटयो कृत सहाय यदुराय ॥

हैं यदुनाथ हमारि सहायक । कहौ कवन उत इनके लायक ॥
सुनि सहदेव ओर प्रभु हेरी । कह सञ्जय ते नयन तरेरी ॥
नीचनके बल खल बौराना । धर्म्मराजकहँ तृण सम जाना ॥
याही भूल सोचु शठकेरी । सञ्जय सत्य प्रतिज्ञा मेरी ॥
पाण्डुसुतनको काज सुधरिहौं । वंश नाश कौरव को करिहौं ॥
जो नहि देइ युधिष्ठिर अंशू । रहै न धृतराष्ट्रकको वंशू ॥
तातें तुम सञ्जय समुझावहु । धर्म्मराजको अंश देवावहु ॥
सुनि सञ्जय विनवै करजोरी । सुनहुनाथ इक विनती मोरी ।

अरुण नयन भृकुटी कुटिल, लखि हरिरूप कराल ।
सञ्जय शोच सङ्कोच वश, विनवत श्रीगोपाल ॥

दूत कर्म्म ते वचन बखाना । मैं तुम्हार अनुचर भगवाना ॥
दै सन्देश नरेश पठायो । सत्य वचन बलि तुमहिं सुनायो ॥
जसजस कहव कहौं तस जाई । दोष हमार कवन यदुराई ।
काज न काज भूप के हाथा । अस कहि प्रभुपद नायो माथा

परम चतुर सञ्जयकहँ जाना। बिहँसे कृपासिन्धु भगवाना॥
बुद्धिसराहि करी अतिदाया। प्रीतिसहित निजनिकट बुलाया॥
मोर संदेश तात कहि दीजो। निज नरेशते भय मति कीजो॥
राज्य युधिष्ठिरको तुम देहू। तजि अभिमान कलह किन लेहू॥
जो न सुनहु यह वचन हमारा। करहुँ निपात सकलपरिवारा॥

अंश युधिष्ठिरको तजहु, मानहु वचन हमार।
अनहित होइ न तोर नृप, बचै सकल परिवार॥

अस कहि पुनि राजीवविलोचन। रहे चुपाइ दास दुखमोचन॥
भीमसेन सञ्जयके आगे। कहन सन्देश क्रोध करि लागे॥
बैठि सभामहँ मारि चपेटा। फारौं गाल विदारौं पेटा॥
दुर्योधन क्षणमहँ संहारौं। दुःशासनके भुजा उखारौं॥
कौरव जियत जान नहिं देहौं। एकौ युद्ध भूमि जब ऐहौं॥
अबहीं नीक अंश मम दीन्हें। तबलगकुशलगदाकरलीन्हें॥
कह्यो पार्थ मत यहै हमारा। भीमसेन जो वचन उचारा॥
दीन्हें अंश मिटै सब रारी। समुझौ दिशिते कहेउ हमारी॥

समुझावहु निज तनय अब, देइ अंश नरनाह।
तात तुमहिं हित होइगो, अनहित तजु मनमाह॥

यह सन्देश कह्यो तुम मोरा। यामें भूप होत हित तोरा॥
भ्रात तात अरु तनय तुम्हारे। जैहैं भूप उभय दिशि मारे॥
नै तात सो करिय उपाई। होइ सन्धि जेहि मिटै लड़ाई॥
कहि दीन्ह सन्देशा। भल जानेहु तस कहेहु नरेशा॥

देउ भूमि तब मिटै लड़ाई। बाढ़ै भूप कीर्त्ति सुखदाई॥
असकहि सञ्जय फेरि पठाई। रहौ कृष्ण पद शीश नवाई॥
धर्म्मराजते विदा कराये। तब अरूढ़ होइ गजपुर आये॥
अन्तःपुर जहँ बैठ नरेशा। गावलगणि तहँ कीन्ह प्रवेशा॥
करि प्रणाम पुनि आप जनाये। सुनि महीप निजनिकटबुलाये
कुशलप्रश्न मोहिं सकल बतावहु। जो उनकह्यो सन्देशसुनावहु॥

गात कम्प गह्वर भये, कहि न सकत कछुबैन।
जो कछु कह्यो सन्देश नृप, पीतम पङ्कज नैन॥

धरि धीरज सञ्जय अस भाषत। सुनहु भूप कछु गोइ न राखत॥
अब उनके नृप सेन अपारा गजरथ अश्वपदादि असवारा॥
चालिस सहस भूप जिन जोरा। अचोहिणी सप्त घनघोरा॥
नृपति विराट द्रव्य समुदाई। दीन्हों द्रुपद राज्य यदुराई॥
विभव विलोकि धनेश लजाहीं। केहि पटतर दीजै कोउ नाही
है अब सरिस इन्द्र प्रभुताई। देखे बनै न वरणि सिराई॥
दीन्हों एक द्विरद भगवन्ता। शङ्ख वर्ण सुन्दर चौदन्ता॥
तापर भूप करत असवारी। मन्दरसे उन्नत है भारी॥
गन्धर्व्वन जे दीन्ह तुरङ्गा। चित्र विचित्र मनोहर अङ्गा॥
तेइ तुरङ्ग नकुलके घोरे। धावत चपल चपल शिर मोरे॥
अरुण वाजि सहदेव सोहाये। जीवबन्धुको रङ्ग लजाये॥

भीमसेनके हय सुनहु, चञ्चल चपल तुरङ्ग।
वायुवेग मग जात चपल. हरित सुश्यावे रङ्ग॥

श्वेत वर्ण अर्ज्जुन हय राजत। उच्चश्रवहु देखि मन लाजत॥
मुकुट समेत अमोलिक माला। करि अति कृपा दीन सुरपाला॥
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई। पहिराये जेहि मृत्यु न होई॥
अक्षै तूण दीन्ह्यो जलनायक। घटै न शर साधे जेहि सायक॥
तस पञ्चकर्ण धनुष गाण्डीवा। दीन्हों अनल जगनकी सीवा॥
देवदत्त दीन्हे भगवाना। शङ्ख अनूपम सब जग जाना॥
जासु महारव घोर प्रचण्डा। पूरित शब्द भेद ब्रह्मण्डा॥
वृषपर्वा की गदा विशाला। दीन्ह्यों भीम कहौ नन्दलाला॥
नकुलहिकी वर्णत तरवारी। दीन्ही अति प्रचण्ड वनवारी॥
शङ्कर नन्दिघोष रथ दीन्हा। अर्ज्जुनकहँ निर्भय पुनि कीन्हा॥

धर्म्मराज अब इन्द्रसम, विभव को सकै बखानि।
सुनहु भूप सन्देह नहि, जहँ श्रीपति सुखदानि॥

अर्ज्जुन कौन सखा हनुमाना। लङ्का विजय सकल जग जाना॥
सावधान होइ सुनहु नरेशा। अब पाण्डवको सुनौ सन्देशा॥
छल करि दीन्ह्यों विपिन निकारी। दीजै अंश न कीजै रारी॥
दुइमा भूप भलो जो जानौ। अब न विलम्ब वेगि सो ठानौ॥
याही भांति कह्यो यदुराई। तजहु अंश नहिं रचहु लराई॥
रणमहँ पकरि सुदर्शन पाणी। कौरव कुलकी घालौं हानी॥
करत अनीति कर्ण बलसेती। तेहिकी बात नीच कहु केती॥
ॡ सब कौरवदल मरिहौं। राज्य युधिष्ठिरको बैठरिहौं॥
अंश छांड़ि तुम देहू। तजि अभिमान अभयपद लेहू॥

सत्य सत्य तुमते कहौं, मैं उनकर सन्देश ।
सुनि उपदेश जो चित चहै, सो अब करहु नरेश ॥
सञ्जय वचन सुनत उर दहेउ । विकल विशेष भूप असकहेउ ॥
मातु पिता को करि अपमाना । कालविवश सिख सुनतनकाना ॥
सञ्जय मैं उठाय नहिं राखो । समुझावहुँ सब विधि तुमसाखो ॥
बल विहीनते जरठ न आंखो । सुनत न वचन पापअभिलाखो ॥
तृण समान मोको शठ जानत । सुनत श्रवण एकौनहिं मानत ॥
सुनि सञ्जय बोले मुसुकाई । सत्य नाथ कहि पद शिरनाई ॥
सब जानत तुम ज्ञान अरूढा । पुनि कहि गयो गिरा यहगूढा ॥
हमहूं नाथ तुम्हार सिखाये । सब प्रकार कहि भेद बताये ॥
जबहीं द्यूत तब तुमहिं न जाना । लाक्ष भवन विनमत निर्माना ॥
तजि मनकी अबरव अब, समुझावहु कुलनाथ ।
रहत रैनि दिनमें सदा, नाथ तुम्हारे साथ ॥
मेटहु कलह भूप सज्ञाना । जगभल कहै लहैं कल्याना ॥
होइ सुयश कीरति उजियारी । मिटै कलङ्क होइ सुखभारी ॥
होइ प्रसन्न त्यागि नृप सञ्जय । असकहि भवनगयेपुनिसञ्जय ॥
धृतराष्ट्र सबहिके आगे । सुतको करन धर्षणा लागे ॥
कपट द्यूत रचि नीच निकारा । कर्ण सौबलते करि अपकारा ।
सौबल शकुनी कुमत सिखावा । उन यह बन्धुविरोध करावा ।
सञ्जय वचन कहत हैं सांचो । सममप्रिय पुत्र एकसौ पांचो ॥
जो मन मम कल बैर करावत । सन्धि कराइ न कलह बढ़ावत ।

यह सम्भव तव बात अझूठी। तात न समुझि परत कछुझूठी॥
दीन्ह धरा धन साज समाजा। तुम कीन्हें दुर्योधन राजा॥
भीषम विदुर तुम्हारेइ अङ्गा। कृप अरुवाहुलीक तुम सङ्गा॥
द्रोणी द्रोण तुम्हारि सहायक। त्रिभुवन विजयकरनके लायक॥
धरि कारागृह देहु बँधाई। दुर्योधनहिं निविड़ पहिराई॥
निन्नानवे पुत्र बल भारी। तेइ नरेश तव आज्ञाकारी॥
औरै सुतहि राज्य नृप दीजे। फिरि मन चहै बात सो कीजै॥
सुनिनिष्ठुर सञ्जयमुख भासा। गयो जानि नृप भयो उदासा॥

सबलसिह चौहान कह, वाक्यविनाश बनाइ।
बोलेउ बिहँसि नरेशतव, सञ्जयको बहलाइ॥

इति चतुर्दश अध्याय॥ १४॥

जनमेजय सुनि मन अनुरागे। पूछै बहुरि ऋषे सौं लागे॥
कथा सुधा रस मोहि सुनाई। होत न तृप्ति श्रवण मुनिराई॥
अब प्रभु कहौ सहित विस्तारा। मिटै नाथ सन्देह हमारा॥
कह मुनि समुझि परै भ्रमत्यागे। चित्रबिचित्रचरितजस आगे॥
धृतराष्ट्रहि मन अति सन्देहा। कहत वचन सञ्जय से एहा॥
अतिदाह नींद नहि आवत। कलहदेखि मनशोच जनावत॥
. न॰. मम सुत अपकारी। कुलमहँ होत मिटतनहिं रारी॥

चुपके देन मिले नहिं शीशा। यह नहिं देनकहत अवनीशा ॥
अस विचारि असमंजस मोही। दुर्योधनखल अतिकुलद्रोही ॥

सञ्जयते बोले विलखि, करि चितचेत भुवार।
भ्रात जनाउत तनै दूत, बाढ्यो कलह अपार ॥

यामें उभय प्रकार विगारा। ताते मन कछु थिर न हमारा ॥
तुम सुत जाहु विलम्ब न लावहु। विदुर बुलाइ इहाँ लै आवहु ॥
सुनि सञ्जय उठि तुरत सिधाये। पलमहँ विदुर भवनकहँ आये॥
कुशआशन पर ज्ञान अरूढा। साधत योग बैठि गति गूढा ॥
कुण्डलनी तजि मूल उठाये। निरखत परम ज्योति सुखपाये॥
सहस पत्रको कमल जो फूला। तापर पुनि हरिध्यान अमूला॥
इड़ा पिङ्गला दूनो श्वासा। साधत करत सुषुम्नावासा ॥
नासा ऊपर करि अनुरूपा। निरखत निर्गुण ब्रह्मस्वरूपा ॥
रसना उलटि कण्ठ अवरोधी। सूधो कीन्ह कमल तनु शोधी ॥
मेरुदण्डसम आसन लीन्हें। पुनि षटचक्र विदारण कीन्हें ॥

पापिनि साँपिनि दुःखगति, करि रसना पुनिरोक।
पियत सुधारस यतनयत, जेहि तन रहत विशोक ॥

अङ्गन सहित योगगति साधी। करत ज्ञान पुनिलाइ समाधी ॥
तब सञ्जय करि यतन जगावा। चलहु वेगि अब भूप बुलावा॥
अर्द्धनिशा सुनि आयसु पाये। विदुर वेगि पुनि मन्दिर आये ॥
गान्धारी अरु भूप अकंता। अभिवादन पुनि कीन्ह तुरन्ता ॥
कहेउ नरेश विदुर इत आवहु। ममममीपणचिन्तनपनिवुनावहु॥

सञ्जय कह्यो सन्देशो जबते । मोकहँ नींद न आवत तबते ॥
अब उपाय कहिये कछु भाई । बुधि विचारि ज्यहिबचे लराई ॥
सञ्जयसों सन्देश नृप पाये । सो नरेश सब बरणि सुनाये ॥

कहेउ बिदुर तब भूपते, तुव सुत बश अभिमान ।
जो सिखवत मन मानि हित, करत न सो कछु कान ॥
देइ अमिय कोउ प्रीति करि, त्यागि करत विषपान ।
दुर्योधन मति परिहरी, विधिगति अतिबलवान ॥

कुरु नरेश को सब परिवारा । करहि नाश यह तोर कुमारा ॥
देखहु शठ हठ शील अभागी । प्रगटो यथा दारुते आगी ॥
हस्ती कुलहि न लागी बारा । एकहिसाथ करहि सब छारा ॥
शत कुमार गान्धारी जाये । वेश्या पुनि युयुत्सु उपजाये ॥
जब भये तनय एकशतएका । गर्दभ शब्द भयो अरु एका ॥
श्वान श्रृगाल भयङ्कर बोला । कररत काग धरा गइ डोला ॥
भूप यज्ञथल आनि श्रृगाली । करत फेकार क्रूर भयवाली ॥
सुरज्ञानिन इमि वचन उचारा । कुलनाशक नृप तनयतुम्हारा ॥
उपजेउ कह्यो हमारो कीजै । गढ़ा खोदाय गाड़ि अब दीजै ॥

पुत्रलोभते नहिं सुनेउ, तब सब रहेउ चुपाइ ।
होनी होइ सो होइ नृप, को करि सकै मिटाइ ॥

कुलघालक नृप तनय तुम्हारा । जगमहँ प्रकट कीन्ह करतारा ॥
...त बात करत चतुराई । अन्तर भूप अनीति सिखाई ॥
...ट निपुण अरु परसन्तापी । हौ तुम नाथ जन्मके पापी ॥

तुम्हरे मनकी जानन हारा। है नरेश सब दास तुम्हारा ॥
तुवभल चहत कहत अस वानी। स्वहिनरेश कछुलाभ न हानी ॥
विन पूछे भी यहहू कहहू। सहिदुखदुसहचुप्पपुनि रहहू ॥
जो पूछा तो करो अब, तजि मनकी अवरेव।
अंश युधिष्ठिरको तजहु, करि करुणा नरदेव ॥
जानेउ राव मर्म सब जाना। विदुरभक्त विज्ञान निधाना ॥
सो वहराइ कहत अस राजा। भ्राता सुनहु हिये जस भ्राजा ॥
अव उपाय कछु बन्धु वतावत। शोच विवश कछुनींदनआवत ॥
पाण्डुतनय ममतनय कुचाली। करत विरोधसुनहुगुणशाली ॥
सो मेटहु कछु यतन विचारी। सुनतविदुर मृदुगिरा उचारी ॥
पाण्डसुतनको कछु न अनीती। उन अपनेवल जो महिजीती ॥
सोऊ देत न तनय तुम्हारा। मिटैकलहक्यहिभाँतिभुवारा ॥
पितु पितामह अंश न देहू। जीति देहु करिये नृप नेहू ॥
लेहु सुयश मेटहु कलह, करि करुणा तुम राइ।
ऐसे होने पांडुसुत, जो वै रहैं चुपाइ ॥
वे नहि कालहुको भय मानत। तृणसमान तुव पुत्रन जानत ॥
है सहाय यदुनायक जाके। कस न होइँ निर्भयमन ताके ॥
कृष्ण भरोस मानि मनमाही। जीतत समर डरत कछु नाहीं ॥
अबलग मोहनिशा तुम शोचत। मननीके उनकहँ हम जानत ॥
वर्जन प्रभू युधिष्ठिर भाई। त्यहि कारण नृप रचौ लराई ॥
जब जब भीमसेन मन माखत। नवतववरा[illegible]

दुर्योधनकहँ नृप समुझाई। मिटै कलह सो करहु उपाई॥
है महिपाल बात यह नीकी। तुम्हरे कहत परम हितहीकी

मनसा वाचा कर्मणा, करि चित चेत भुवार।
समुझावहु दुर्योधनहि, अनहित वचै तुम्हार॥

जबलगि भीमसेन बलदाई। रचत युद्धनहि तलहि भलाई॥
क्रूर कर्म अति कुटिल सुभाऊ। है साहसी विदित सबकाऊ।
कालहुकी भय नेकु न मानत। सो नरेश नीके तुम जानत॥
यक्षराज अर्जुनते हारे। सो जाने सब भेट तुम्हारे॥
लंका पुर दाँड़ेउ सहदेऊ। सो तुम्हार जाना है भेऊ॥
शङ्कर शत्रु धनञ्जय जीते। देव अदेव जासु भयभीते॥
सके जीति नहिं पवनकुमारा। कीन्हें सखा विदित संसारा।
त्रिभुवनपति वैकुण्ठ विहारी। हैं तिनके सहाय गिरिधारी॥
है अनन्य हरिभक्त अतीवा। जीतै को पाण्डव बलसीवा॥
पश्चिम देश नकुल सब झारी। जीते यवनजाल बल भारी॥
ते सब धर्मराज अनुगामी। दीजे अंश बात सुनुस्वामी॥
कह भूपाल सत्य सुनुभाई। देत नीच नहिं मोरि देवाई॥
यह सुनिविदुर उतरपुनिदीन्हा। बर्जत रह्यों भूप जब कीन्हा।
तब रुख लखि मैं रह्यउँ चुपाई। कह्यउँ नाथ तुम सबै सुनाई
धन तुम कहँ दुखदाई। सुनहु नाथ नहिं मोरि सिखाई॥
योगनहिं लक्षण चीन्हों। नीकर्म त्यागि हम दीन्हों

राज छोड़ि नरनाह सुन, कबहुँ न होइ उछाहु।
करहि अवज्ञा पुत्त जब, तब नित नित पछिताहु॥
राज दियो दुर्योधनहि, पुत्नप्रीति ह्वै लीन।
तुम्हरो भोजनपान अब, नृप उनके आधीन॥

दुर्योधनकहँ कीन्हेउ नाथा। सर्वस भूप तजेउ निज हाथा॥
अब शोचत नहिं प्रथम सँभारे। अस कहि विदुर नयनजल ढारे॥
सुनौ भूप विधि रेख लिलारा। लिखी ताहि को मेटनहारा॥
दासी योनि जन्म जहँ पावा। ताते तात न बनै बनावा॥
हमहुँ विचित्रवीर्य के बेटा। मगमहँ चलत भई नहि भेटा॥
धनुविद्या भीषम जो दयऊ। सो मोहिनाथ विसरि नहिगयऊ॥
तुम अरु पाण्डव सखा हमारे। पातक होइ दोउके मारे॥
पाण्डु पुत्र तुव पुत्र अभागे। कलह विलोकि अस्त्र हम त्यागे॥
करि नहि सकैं ओर कोऊकी। समगति हम न भूप दोऊको॥

दुर्योधन अति मानते, श्रवण सुनत नहि बात।
परमचतुर गुणनिधि विदुर, समुझिसमुझि पछितात॥

अहो देव तुम मति हर लीन्हो। अतिकुबुद्धिकुरुनाथहिदीन्हो॥
हानि लाभ तुव वश मैं जाने। अस कहिविदुरबहुतपछिताने॥
धृतराष्टक मन शोच अपारा। कहत विदुरते वारहि वारा॥
दुर्योधन अति कीन अनीती। सो मैं भलीभाँति सब कीनी॥
सञ्जय गिरा मानि विश्वासू। जानेउ बन्धु भरत कुलनाशू॥
धनमदमत्त अधम अपकारी। कौन नगिनि भट द्रुपदकुमा

सोसुधिउनहिं विसरिकिमिजैहै। दुर्योधनके आगे ऐहै॥
अबहुँ न शठसमुझतसमुझावा। विन कारणको वैर बढ़ावा॥
अबस्वहिसमुझिपरतमनमाहीं। वादृशो कलह वार कछु नाहीं॥

दुर्योधनके मन वढ़ेउ, सुनहु विदुर अभिमान।
सिखवत मैं विधि कोटिते, सो कछु करत न कान॥

वीति गई यामिनि युग यामा। आवत नींद न मन विश्रामा॥
करहु विचार यतन अब सोई। जाते वन्धु वोध मन होई॥
भये विकल लखि मन दुखपावा। कौनवोध पुनिपद शिरनावा॥
आवाहन करि विदुर बुलाये। सनकादिकविधिसुतचलिआये॥
नृप प्रबोधि मनमोद बढ़ावे। पुनि मुनि सत्यलोककहँ आये॥
सञ्जय पठवो बोलि सुयोधन। लागे भूप करन सव वोधन॥
गान्धारी अरु विदुर बुझावा। कालविवशकछुमनहिंनआवा॥
सबकहँ प्रतिउत्तर पुनि दीन्हा।गयो भवनशिर कान न कीन्हा॥

भानुमती तब हँसि कह्यो, कहिये नाथ हवाल।
गये वेगि पितु भवनते, आये वहुरि भुवाल॥

अन्ध बधिर हठ शील अनामी। क्रूर कुबुद्धि कृपण अरु कामी॥
मत्त प्रमत्त जरठवश ओरे। नीचप्रसङ्गी अरु मति भोरे॥
ऐसे पितुको कहा न कीजै। पकरि ताहि कारागृह दीजै॥
नीचप्रसङ्गी पिता हमारा। दासीसुतहि दीन्ह अधिकारा॥
(२९) भूप जो विदुर सिखावत। ताते कछु मोमन नहिं आवत॥
कर जोरि कहत तब रानी। करि करुणा करिये मम वानी॥

देखहु समुझि भरतकुलटीका। पितुनिदेश परिहरब न नीका॥
सो सुनि अधम बहुत रिसवाई। कहिकटुवचनदीन्ह दुरियाई॥
भइ मनत्रासग्रसित तब रानी। गई पराइ भवन भयमानी॥
प्रातहि यहाँ धर्म्मसुत जागे। हरिहि समोद जगावन लागे॥

अस्ताचल हरनी रुचिर, इन्दु इन्दु उतमङ्ग।
खगु आवत सुखते सुखी, चूं चूं करत विहङ्ग॥
करतप्रकटपुनिप्रातरवि, बालक सहितउछाहु।
कूकूकपोतनको मनहुँ, प्राचीदिशिको राहु॥

अरुणचूड़ वर बोलन लागे। फूले कमल भ्रमर अनुरागे॥
चहत पक्षिगण तजन बसेरा। करत मधुर स्वरनाद बनेरा॥
चरन मानसर हंस सिधाये। उड़त हलावत परन सोहाये॥
सकुचे कुमुद उलूकनिवासा। अन्ध कूप लीन्हे मन त्रासा॥
यथा अनीति सुराज नशाने। वञ्चक चोर ससीत कृपाने॥
शशिद्युतिरखोचरणगिरि आधी। जिमिनिर्बल नृपविगत उपाधी॥
रविभयमानि भरन्यातकि आवा। मनहुँप्रतीची शशिहि छिपावा॥
नखवरवगत शिखशिखन त्यागे। करि सुदुख निर्त्तत सुख पागे॥

भयो प्रात अब करि कृपा, जागो राजिवनैन।
उचकि उठे सुनि श्रवणपुट, धर्म्मराजके बैन॥

तेहि अवसर बन्दीगण आगे। पुनि यदुवंश प्रशंसन लागे॥
धर्म्मराय हरिपद शिरनाये। एकटकि गात नयन जल छाये॥
परमानन्द प्रेम उर आवा। प्रफुल्लित देखि निमेष न लावा॥

श्यामसजलघन सरिस शरीरा। दृग राजीव हरण जन पीरा॥
आनन इन्दु सहित मृदुहासा। लोल कपोल मनोहर नासा॥
खलतदशन अतिद्युति दरशाई। तड़ितप्रभा जेहि देखि लजाई॥
उन्नतभालभ्रुकुटिश्रुति कुण्डल। जनुयुगरविअहिगहिशशिमण्डल॥
करत बिचार सुयश यह लीजे। अमि अँचवाइ अमरपददीजे॥
रवि रथ बन्धन कहि कर गाये। प्रतिउपकार करण जनु लाये॥
वृषभ कन्ध अरु कम्बुक ग्रीवा। अति विचित्र शोभाकी सीवा॥
क्रीट मुकुट शिर सोहविशाला। नवतुलसीदलगजमणिमाला॥

भुजप्रलम्ब पुनिकरकमल, सुख उदार केयूर।
उर विशाल रेखा उदर, रिपुमर्दन जनशूर॥

कटि केहरी उदर त्रयरेखा। कहि न सकैं छविकविशतशेषा॥
नाभि गँभीर देखि मति घुमरी। मानहुँ तरणितनयजलभ्रमरी॥
पीत वसन शोभित शुचि फेटा। सजलजलदजनुजटितलपेटा॥
जंघपीड़नी नयन निहारे। उपमा कहि न सकत कवि हारे॥
हरिपदते प्रकटी पुनि गङ्गा। धरी शीश पर वैरि अनङ्गा॥
तापदकी उपमा का दीजे। जोकछु कहिय सो अल्प गनीजे॥
शापशिला गौतम की नारी। जे पद परशि पलकमें तारी॥
जे पदपद्म पखारि निषादू। भयौ विदितजगविदितविषादू॥
जे पद पद्म चारि श्रुति गाये। चापत सिन्धुसुता उर लाये॥
[illegible] पद निरखि युधिष्ठिर राई। अति आनन्द न हृदय समाई॥
[illegible]लि करतभरतजललोचन। जय रुक्मिणीरमण अघमोचन॥

जयजय श्रीवृन्दाविपिन-वासी नाशी पाय ।
अविनाशी गति देततुम, दासन देव दुराय ॥
चरणशरण कहि नाम पुकारत । ताके नहिं गुण दोष विचारत॥
चरणशरण कहिद्विरद सुनायो । त्याग्यो गरुड़गगनपथ धायो ॥
कहुँ पट पीत गिरो कहुँ माला । हरीविपति पुनिदीनदयाला॥
ग्राहनिधनकरिशुभगतिदीन्हो । तहँ गजराज बिनयबहुकीन्हो॥
शापकथा कहि दोष मिटावा । पुनि गजेन्द्र निजलोक पठावा॥
शबरी नाम अपावन नारी । परी चरण कहि शरणपुकारी ॥
कृपा दृष्टि देखी बनवारी । चढ़ि विमान वैकुण्ठ सिधारी ॥
कृपा निषादराजपर कीन्हा । भालुकीश निज सम करिलीन्हा
रावण बन्धु विभीषण नामा । कीन्ह कृतारथ श्रीसुखधामा ॥
करि करुणा हरिलीन्ह बिषादा । भक्त शिरोमणि भे प्रह्लादा
जगजगनाथ अनुग्रह कीन्हा । अविचलपदवी ध्रुव कहँदीन्हा ॥
केशीहर कल्याणकर, कृपासिन्धु भगवान ।
क्रूर कुपूतनको सुगति, कवन देय विन कान ॥
वाल्मीकि उलटा जपे, कह्यो आधहो मान ।
सबलसिंह चौहानकहि, कीन्हों आपु समान ॥
इति पञ्चदश अध्याय ॥ १५ ॥

गणिकागीध अजामिलतारण । शापोपनि शोताम निवारण ॥
श्रीकमला कुच कुंकुममण्डन । जनकसुतादृगखञ्जनहविखण्डन ॥

हरिजनहृदयपयोधि मराला। रहत विहार करत सबकाला॥
गिरिवरधारी नाथ छबीला। नारायण श्रीकन्त रँगीला॥
माखनचोर चतुर्भुज स्वामी। पद्म गदाधर अन्तर्यामी॥
ताते विनय मानि प्रभु मोरी। दुर्योधन गृह जाहु बहोरी॥
मानहि सो न विवश अभिमाना। पुनरागमन करिय भगवाना॥
करि बहु यतन ताहि समुझावहु। अपनी दिशिते चूक न लावहु॥

समुझावहु प्रभु विविधविधि, जाइय अबकी बार।
होइहि होनेहार पुनि, जो विधि लिखा लिलार॥

सुनियहबचन कृष्ण हँसिदीन्हा। नीक विचार भूप तुमकीन्हा॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेऊ। बोलिय सकल भूप अब तेऊ॥
सब मिलि करहिं मन्त्र उपदेशा। कहेउ कृष्ण तसकरिय नरेशा॥
सुनि नरेश सोइ वेगि बुलाये। भीमादिक भ्राता चलि आये॥
द्रुपद विराट और सब राजा। धर्मराजपहँ जुरेउ समाजा॥
पुत्रन सहित द्रौपदी रानी। चलि आई जहं शारंगपानी॥
कह-हरि सुनहु सकलमनलाई। पठवत हमहिं युधिष्ठिरराई॥
सन्धिहेतु दुर्योधन भवनहिं। कहिये मन्त्र रहौ जनि मौनहिं॥
निजनिजमति जनिराखौ गोई। सब मिलिकहौ करिय अबसोई॥

धर्मराज सुनि हरिवचन, कही सबनते बात।
कहिये मन्त्र बिचारिकै, कृष्णदेव उत जात॥

द्द बिचारि सकलमिलि भाखौ। अबनिजमन्त्र गोइनहिंराखौ॥
.य ..।. कि कीजिय रारी। नीन बात अब कहौ बिचारी॥

कहेउ भीम वहिं कीन्ह कुकर्म्मा। त्यागेउ लोकलाज कुलधर्म्मा॥
केशपाणि धरि द्रुपदकुमारी। सभामध्य चह कीन्ह उघारी॥
समिरण तुमहिं दीन ह्वै कीन्हों। दीनदयालु राखि तबलीन्हों॥
लाक्ष सदन चलि हमहिं पठायो। अर्द्धरातिमहँ अनल लगायो॥
लीन्हेउ राखि तहाँते बाचे। हरिकीकृपा अनलनहिं आँचे॥
विषमोदक वहि नीच खवायो। रखउ न चत जँजीर मँगायो॥

कसेउ लोह गुण सकल तनु, डारि दियो ततकाल॥
परेउँ गङ्गकी धारमहँ, तत्क्षण गयों पताल॥

गयों भूमितल कछु सुधि नाहीं। छहरि गयो विषसवतनुमाहीं॥
सर्प लोक पहुँचो यदुराई। सुनि सुधि नागसुता तहँ आई॥
हँसिनि आइकरि मोहिं तमासा। नाना भाँति करैं परिहासा॥
विषतनु भरे खुलत नहिं नयना। कछुकछुसुनौं श्रवणपुटवयना॥
अस्तुति करै मोहिं लखि सोही। नागकुमारि कामवश भोही॥
आप महित मम सुन्दर ताई। वर्णत प्रीति करत अधिकाई॥
करै कष्ट तनु हरि हर ध्यावै। बड़े भाग ऐसे पति पावै॥
देवसना जाको ललचाही। नर नारी केहि लेखे माहीं॥
कर्कोटक-तनया सुनि बाता। आई मम समीप हरषाता॥
स्वामिय मोहिमुखसोहि जियायउ। ज्ञानिविपयननतापदुकायउ॥

महरावन पदपाणिगहि, करन प्रीति अधिकारि।
अमित देखि मोतन करन, बारहि बार दयारि॥

मृगनयनी हिमकरवदनि, पहिरे भूषण चीर।
तनु नवीन कटिखीन अति, व्याप्यो काम शरीर॥
म्वहिं बिलोकि तनुदशा बिसारी। चित्र पुत्तिकाकी अनुहारी॥
मम गति लीन्ह बढ़ी अनुरागा। त्यागे लाज मनोभव जागा॥
देख्यो नागसुता गति लोगन। जाइ जनायो तिनपुनिभोगन॥
नागसुता मानुष तनु रांची। भये सक्रोध बात सुनिसांची॥
गुणमञ्जरी मनुजपति लीन्हीं। केहुँ कर्कोटकसे कहि दीन्हीं॥
समुझि हिये यह बात अयोगी। चलासकोपित्रकणाद्दगभोगी॥
यहां कामबश छांडि बिचारां। बरहु मोहिं कह वारहिंवारा॥
मैं समुझाय कही तेहि पाहीं। गुणमञ्जरी उचित अस नाहीं॥
सुनि यह तोहिं निन्द सब लोगा। नागसुता नहिं मानुष योग॥
योगमनुजबर तुमहिं नहिं, देवयोनिमहँ व्याल।
काम बिवश बरबसहिये, पहिरायो जयमाल॥
क्रोधित व्यथा सप समुदाई। ग्रसनमोहिं तेहिथलमहँ आई॥
कोउफणएक उभय त्रयचारी। चपलजिह्व चखअतिरतनारी॥
पञ्च सप्त षट फणको सर्पा। कोउफण अष्टकरत अतिदर्पा॥
दशफण नाग पञ्चदश सोऊ। कोउ फणबीस तीसहै कोऊ॥
चालिस कोउ पचास फणयोगी। सत्तरि साठि असीफण भोगी॥
शत फण एक पञ्चशत एका। नाना बिधि फण सर्प अनेका॥
गिलत विष अरु द्दग रतनारे। आशीविष भारे तनु कारे॥
लाल श्वेत रँग नागा। हरित पीत अरु बिबिध बिभागा॥

ग्रसिनि आइ मोहिं रिस करि भारी।देखि विकल भै नागकुमारी
त्यहि अवसर कर्कोटक आये। चञ्चलजिह्व वदन फैलाये॥

श्यामवर्ण जनु जलद सम, रसना चलत निहारि।
खुले दशन अवलोकि पुनि, उपमा कहत विचारि॥

चपलजिह्वमुखविच अभिरामिनि।चमकतथिरनरहतजिमिदामिनि
श्यामवर्ण सित दशन विभांती। सघट घटामहँ जनु बगपांती॥
हरी मनहिं मन नागकुमारी। विनय कहै विधि विष्णु पुरारी॥
उमा रमा हे शारद माता। विनय करत राख्यो अहिबाता॥
तब सुमिरेउ भयहरण कृपाला। आयो गरुड़ सर्पकुलकाला॥
ताहि देखि सब उरग पराने। जहँ तहँ गये जात नहि जाने॥
कर्कोटक खगनाथ निहारी। बल भा थकित करत मनहारी॥
प्राणदान दै प्रथम बचाये। अब सक्रोध क्यहि कारण आये॥

पक्षिराज बोले विहँसि, सुनहु सर्प शिरताज।
पाण्डवके सन्देह नहिं, रक्षक श्रीव्रजराज॥

सो यदुनाथ चराचरस्वामी। जगतविदित मैं त्यहि अनुगामी॥
जो कुलकुशल चहौ अहिराई। मिलि पाण्डव कहँ वैर विहाई॥
वचन हमार मानि तुम लेहू। दुहिता भीमसेन कहँ देहू॥
गरुड़ वचन सुनि तजि सन्देहू। सुता विवाहि दीन्ह करि नेहू॥
गुणमञ्जरी सहित भगवन्ता। रह्यो शेषपुर वर्ष प्रयन्ता॥
सर्प दया करितहँ पहुँचाये। गजपुर धर्म्मराजपहँ आये॥

समाचार सुनि परम अनन्दा। रचा तुम कीन्ही ब्रजचन्दा
मन्त्र हमार सुनिय यदुनायक। कुरुपति निधन करनके लायक
बिन कारण काढ़े विपिन, कीन्हेसि शठ अपकार।
ताते कीजिय अवशि रण, यह मत नाथ हमार॥
भीम बचन सुनि पुनि सहदेवा। कह्यो नाथ सुनिये जगदे
उन हमार कीन्हों अपमाना। नाथ तुम्हार भेद सब जाना॥
केशाकर्षण शठ अपकारी। सभा मध्य करि द्रुपदकुमारी॥
भीषम द्रोण कर्णके आगे। रञ्चक कानि न कीन्ह अभागे॥
सो सुधि यदुनन्दन नहिं भूलत।सुमिरि सुमिरि अजहूं उरशूलत
भूप बचन गजपुरकहँ जैये। हे हरि युद्ध अवशि ठहरैये॥
सोवत जागत शरण तुम्हारी। बनै सो करिय उचित बनवारी॥
अतिकोरति सो धाम सतायो। सान्तनीकमिलिवचनसुनायो॥
युत प्रतिबिम्ब कृष्णके आगे। क्रोधित वचन कहन सब लागे॥
द्रुपदसुता यहि खल अभिमानी। नाथ तुम्हारि बात तव जानी॥
ताते और विचार न करहू। अब प्रभु दुर्योधनते लरहू॥
द्रुपद नरेश यहै मत राख्यो। सहित विराट शिखण्डी भाख्यो॥
सात्यकि धृष्टद्युम्न बलवाना। अभिमन्युकाशिराजमनमाना॥
धृष्टकेतु पटनेश मिलि, सबन करो मत ठीक।
शूरसेन यहि विधि कह्यो, और विचार न नीक॥
हरि कहत आपने जीकी। है बिन युद्ध बात नहिं नीकी॥
राज वहि शठ अपमाने। तुम समेत निर्बल करि जाने॥

और बात सब तजि घनश्यामा। तातें करिय अवशि संग्रामा॥
कहत नाइ शिर वचन घटूका। सुनिये नाथ क्षमा करि चूका॥
पाण्डव सहित अछत गोपाला। द्रुपदसुता पुनि फिरत विहाला॥

छल करि दुर्योधन अधम, काढ़ेसि हमहिं विदेश।
बांधे अजहुँ न द्रौपदी, गहे दुशासन केश॥

तेरह वर्ष गये हरि वीती। सुधि न लई केहुँ निपट अनीती॥
पाण्डव सबल जान संसारा। तुम ईश्वर वसुदेव कुमारा॥
तिनतें कछु निसरेउ नहिं काजा। मैं बड़ि लाज सुनहु ब्रजराजा॥
अब प्रभु दुर्योधन कहँ मारौ। द्रुपदसुताको शोग निवारौ॥
कोटिहु यत्न रहो जनि बरजे। गर्जत देखि चराचर लरजे॥
धर्म्मराज तब क्रोध निवारो। कहि प्रिय वचन निकट वैठारो॥
सब लायक तुमको हम जानत। है बड़ पाप भीतके मारत॥
ए हरि सम्मत कहत पुकारे। होइ नाथ भल मन्त्र हमारे॥

सुने वचन नरपालके, द्रुपदसुता अकुलाइ।
बोली हरिसों जोरि कर, चरणकमल शिर नाइ॥

क्रूर क्रूर नहि भूप हमारा। जानत तुम यदुवंश कुमारा॥
गहिकै केश सभा शठ आनी। मानत सो न कछुक गिलानी॥
इनतें होत भली सो नारी। रोदन करत पुकारि पुकारी॥
जो कछु क्रोध हिये हरि होई। सभामध्य वहि खल [illegible]॥
एहिप्रकार पाण्डुसुत नारी। इनके वह [illegible] नहिं [illegible]॥

अभिमन्यु आदि सप्तसुत मोरे। करिहैं विजय दास प्रभु तोरे
मम गति देखि लाज पञ्चालहिं। डरैं न कछु निडरैं रण कालहिं
बान्धव धृष्टद्युम्न बल भारे। भये कुण्डते सङ्ग हमारे॥
रणमहं लरें टरें नहि टारे। करिहैं विजय प्रसाद तुम्हारे॥
युधामन्यु मम बन्धु तमोजा। नाम शिखण्डी नयन सरोजा॥

मम गति देखि सलज्ज सब, करिहैं कठिन मशान।
अस कहिके पुनि द्रौपदी, सबलसिंह चौहान॥

इति षोड़श अध्याय॥ १६॥

कहेउ धनञ्जय सुनिये श्रीहरि। काढ़ेसि धर्म्मराज हीने करि॥
सब प्रकार जानत जगवन्दन। बलीछली अधमी कुरुनन्दन॥
कपट अक्ष शकुनी निर्मायो। करि छल कीन्हें नृप हरायो॥
औरौ छल कीन्ह्यसि भगवाना। सो चरित्र सुनिये दै काना॥
कुरु पाण्डव बालक सब भीरा। खेलत रहे गङ्गके तीरा॥
विषमोदक भीमहिंतहँ दीन्हों। तबते हम प्रतीति तजि दीन्हों॥
धर्म्मराज बन गयउ शिकारा। श्वानसङ्गयुत तुरँग सवारा॥
परम अकिञ्चन विप्र बुलायो। विषमोदक तेहि हाथ पठायो॥
स्वर्ण सप्तदश दीन अकोरा। पठयहु करहु परम हित तोरा॥
[illegible]क धर्म्मराजकहँ दीजे। पठये है कुन्ती कह दीजे।

अशन करायो यतन करि, कह्यो न नाम हमार।
करि विनती पठये द्विजहि, जहँ नृप फिरत शिकार॥

जान्यो भेद न द्विज तहँ आयो । धर्म्मराजते आनि सुनायो ॥
पठयउ मोहिं पाण्डुसुत रानी । मोदक तुमहिंदियो निजपानी॥
क्षुधित जानिके मोहि पठायो । करहु अशन असकहिसमुझायो॥
परम गहन बाँधेउ नृप घोरा । बैठे विटपछाहँ घन घोरा ॥
क्षुधित तृषाते बिकल शरीरा । जानि निवास जलाश्रयतीरा ॥
भोजन तुरत करत नृप लागा । विषमहंछहरि देखि द्विज भागा ॥
त्राहि त्राहि करि हृदय डराना । छलकीन्हेसि शठ मंनहिंजाना
तृषावन्त नृप विषकौ पीरा । परे मूर्च्छि नहिं चेत शरीरा ॥
विकलविलोकि कृपाप्रभुकीन्हों । उदक पिआइ त्रासहरिलीन्हों॥

निकसि ततच्छण भूमिते, जल भाजन युत हाथ ।
पान करायो हरि तृषा, करी कृपा यदुनाथ ॥

जल पियाइ फेरे तनु पानी । मिटी तृषा तनु ताप बुझानी ॥
छल वरणौ मैं तुमहिं सुनाई । वनकी सुनहु बात यदुराई ॥
वन काढ़ेसि शठ करि अपकारा । निधनहेतु नितकरै विचारा ॥
दूत आय यह बात जनाई । वनमहँ निकट युधिष्ठिर गई ॥
परम दीन द्विज वेष बनाई । बसहिं विपिन पर्णशालाछाई ॥
भोजन कबहुँ मिलै कहुं नाहीं । वसन मलिन जीरणतनुमाहीं ॥
तेजहीन तनुविकल विशेखी । आयोनाथ आजु मैं देखी ॥
दूतवचन सुनि अतिसुखपाये । दिहँसिसचिवसवनिकट बलाये॥

चरबर आयो सुनु सचिव, धर्म्मराजकहँ देखि ।
कह्यो सेन ह्वै के चली, भोजनहीन विशेखि ॥

कबहुँ खातहैं मूल फल, कबहुँक अँचवत नीर।
निर्बल भयो शरीर सब, टूटी पर्णकुटीर॥

सबमिलिचलो सेन सजिजाइय। मानभंग उनको करि आइय।
असकहिचलेउ तुरत कुरुनायक। सेन साजि कर्णादि सहायक॥
पर्णकुटीढिग खल चलिआयो। सुनत चित्ररथ इन्द्र पठायो॥
देखि अनीति सुरेश रिसाना। चलेउ चित्रतव साजिविमाना॥
शरनमारिदलव्याकुलकीन्ह्यो। दुर्योधनहिं बांधिपुनिलीन्ह्यो।
करि निबन्ध लै गयो अकामा। आरन शब्द करत मन त्रासा॥
नृपति धनञ्जय आनि छुड़ायो। शरन मारि गन्धर्व भगायो॥
दीन्ह पठाइ बहुरि रजधानी। बलकी बात नाथ सब जानी॥

सहि न सकत प्रभु एकछण, रोवत द्रुपदकुमारि।
करौ नाथ कुरुनाथकहँ, त्राण शरासन धारि॥

अस कहि भये त्रिलोचन राते। मोचतखुलत मनहुँ मदमाते
जीभनिकारि अधरपुनिचाटत। फरकतजात दशानन काटत
मुख अति अरुण कुटिलभइ भौंहैं। श्वासलेतजिमिव्यालरिसौंहैं
क्रोधविवश अर्ज्जुनकहँ जानी। वर्जत भूप कहत मृदु बानी॥
अपनी दिशिते चूक न करहू। माने जब न बन्धु तब लरहू॥
ताते अब श्रीकृष्ण पठाई। जाय उनहिं देवैं समुझाई॥
जो वह देहँ गाउँ इइ चारी। रहउ चुपाइ नीति नहिं रारी॥
.. वचन द्रौपदी रिसानी। हे नृप फेरि कही यह बानी॥
... देखिन आवति लाजा। निपट अनीति सुनहु ब्रजराजा॥

विकल विलोक्यो द्रौपदी, करि प्रबोध यदुराय।
जो तुम्हरे मन भावना, सो हम करब उपाय॥

यहिविधिकहि यदुनाथ बुझाई। करि प्रबोध पुनि भवनपठाई॥
नृपसन बिदामाँगि भगवाना। सात्यकिसहितचले चढ़ि याना॥
पठवन चले नकुल हरिसाथा। स्यन्दनकी पटिका गहि हाथा॥
विनयकरतनिजविपतिसुनावत। पुनिपुनिचरणकमलशिरनावत
फिरेउतात हरिमुख सुनिबानी। बोले नकुल ढरत दृगपानी॥
गद्गद कण्ठ गरे भरि आवा। ऊर्द्धश्वासलै वचन सुनावा॥
कौरवपति अति कीन्ह अनीती। वर्ष त्रयोदश वनमहँ बीती॥
केश पकरिकै शठ अभिमानी। द्रुपदसुता मन्दिरते आनी॥
मारन कह्यो भीम मन रूठी। हे हरि भई प्रतिज्ञा झूठी॥

क्षत्रिय ह्वै प्रण सापई, फिरि न करै व्रजराज।
विदित सकल संसारमहँ, याते अधिक न लाज॥

सभामध्य सुनिये भगवाना। करि रिस द्रुपदसुता प्रणठाना॥
दुःशासनके रक्त नहाई। बांधव कच तव लख्ख दोहाई॥
सुषा न प्रण करिहैं निजरानी। सो दुखसमुझि सुदर्शनपानी॥
रहत नाथ मन मोर मलीना। धर्मराज पुनि राजनिहीना॥
तेहि दुखते दुख अति भगवाना। सो अब कहाँ सुनिय हैवाना
कहु मातु परबर प्रतिपालक। यथा अनाथ होत बिन बालक॥
पञ्च पञ्च जेहि सब परिवारा। भानजात तुम हरि [illegible]

सो कुन्ती ऐसो दुख पावत। हे हरि नेकु लाज नहिं आवत॥
अर्ज्जुन कहेउ कर्णकहँ मारण। तेहि प्रणके रक्षक जगतारण॥
मन्त्र हमार सुनिय यदुराई। मिटैं कलङ्क सो करिय उपाई॥
हम देखत शठ द्रौपदी, आनी सभा निशङ्क।
खण्डिय अरि रण मण्डिकरि, तव यह मिटै कलङ्क॥
असकहि नकुल चरण शिरनावा। करि प्रबोध हरि कण्ठ लगावा
बिहँसि वचन भाष्यो बनवारी। पूजी मन कामना तुम्हारी॥
मिटिहैं सब सामर्थ्य कलेशा। धरहुधीर तजि सकल अँदेशा॥
धर्म्मशीलको कबहुँ अकाजा। होय न नकुल कहत ब्रजराजा॥
पापिनको सुख स्वप्न समाना। जानहु तात न ठीकठिकाना॥
वह अनीतिरत नीति न जानत। तृणसमान त्रैलोकहि मानत
धर्म्मशील है भूप तुम्हारा। गति अलीक जानत संसारा॥
नीति निपुण ममभक्त प्रवीना। सुमरहि सुरगुरुपदमतिलीना।
ऐसेन को नहि होत अकाजा। यहिविधिकरिप्रबोधब्रजराजा॥
अब विलम्बनहिं दिन दश बीते। करिहौं काज तात मनचीते।
भयेमुदित सुनि श्रीपति बानी। प्रीति प्रतीति न जाय बखानी
भयो विदा मन हर्ष अति, पद गहि गोकुलचन्द।
करि प्रबोध फेरे नकुल, सबलसिंह नंदनन्द॥
इति सप्तदश अध्याय॥ १७॥

फिरे नकुल प्रभु आयसु पाई । सात्यकि सहित चले यदुराई ॥
नगर वारुणावर्त्त बसेरा । कीन्ह जाइ हरि जाइ अबेरा ॥
हरि सुधि पाइ सकल पुरवासी । आये मिलन ज्ञान शुभरासी ॥
विविधप्रकार कीन्ह सतकारा । जोरिजोरिकरहरिहि जोहारा ॥
बहुत भांति कीन्हें पहुनाई । अति आनन्द न हृदय समाई ॥
तेहिनिशितहँा शीलसुखधामा । सात्यकिसहितकीन्हबिश्रामा
अरुणचूड़ अरुणोदय बोले । कमलविलोचनलोचनखोले ॥
तब श्रीहरि सात्यकी जगायो । दारुक बाजि साजि रथलायो ॥
पुरजन सकल बिदा हरि कीन्हों । भोरभये पुनि मारग लीन्हों ॥
नाना भाँति कहत इतिहासा । चलेजातमग सहित हुलासा ॥

पूछेउ सात्यकि जोरिकर, सुनहु रुक्मिणीरौन ।
भारतपद कुरुवंशको, कहौ सो कारण कौन ॥

बोले बिहँसि वचन यदुराई । पूरब कथा सुनहु तुम भाई ॥
यहि कुल भयो भूप दुष्यंतू । शील स[illegible]ह सत्यनिधि संतू ॥
सो [illegible]कुन्तला विदित न काही । भूप विपिनमहँ ताहि बिवाही ॥
भरत नाम तिन सुत उपजायो । भारत सब [illegible]मिवंश कहायो ॥

चन्द्रवंश महँ आरन्दप, प्रकट भयो दुष्यन्त।
तिनके गुण वर्णन करत, कवि पण्डित शुचि सन्त॥
जसु रचना निज विश्व सँवारी। रचि विरञ्चि तेहि टेक करतारी
काम कला अबला मन जानहिं। काल समान शत्रु को मानहिं॥
प्रजाजानि मन पूरण लाहू। सदा उछाह करत सब काहू॥
द्विजगण धर्म केर अवतारा। जानहि हृदय अनन्द अपारा॥
जाके वृद्ध स्वल्प सुजाने। सेवक सेवहि नृपहि डराने॥
जाके राज्य अनीति न होई। प्रजा प्रसन्न जानि सब कोई॥
साम दान पुनि दण्ड विभेदा। करैं भूप जिमि वरणे वेदा॥
अतिथि सुआरतको सुखिदेई। यथायोग याचककहँ देई॥
मुनिसमशुचिविवेक जिमिहंसा। सुर सिहातकरि भूप प्रशंसा॥
कल्पवृक्ष समदानकहँ, कीरति शशि अवदात।
भानु समान प्रताप जग, अधिक अधिक सरसात॥
राजसूय आदिक विधि नाना। कीन्हें भूप दये बहु दाना॥
करे अखिल निज यज्ञ अरम्भन। पूरि रहे पुहुमी महँ खम्भन॥
तासु तेज रवि उदय विलोके। नृपकिरीट सब कुमुद सशोके॥
रहत मौन कछु कहत सो नाहीं। तनु समीप जिमितनुपरछाहीं
वञ्चक चोर उलूक समाना। हेरत मिले न ठीक ठिकाना॥
सुजन कमल फूले बहुभांती। खल मलीन जिमि उड़गणपांती
[illegible]ये कोकनद वनिक विशोका। सुरपूरणविलसहिनिजलोका॥
[illegible]र वस्तु सर [illegible]ल सुखारे। फूलि रहे जहँ तहँ रतनारे॥

नृप कीरति पारद किधौं, शारद मुक्ताहार।
हिमगिरिको कैलासको, किधौं देवसरिधार॥
शारद-चन्द्रकि चन्द्रिका, मानहुँ करत प्रकास
धवलध्वजासो देवपुरि, ऊपर करत विलास॥

कुन्द कलीसो कुमुद कलीसी। हाटक सो बगपांति भलीसी
कीरकेतु सो गङ्ग रेनुसो। वासुकिसो सुरपतिकि धेनुसो॥
कामधेनुसो फटिकशिलासो। वेलासो करपूर-विलासो॥
गणपतिसो हरसो गिरिजासो। कीरतिविशद नदोविरिजासो
शान्ति सत्यसो सन्तवसनसो। उदधिउदधसोद्विरददशनसो॥
की तुषार की तरणि तरङ्गा। किधौंविष्णुतनु विशदकुरङ्गा॥
नृपतिकीर्ति जनु एक तवितताना। भरतखण्ड मण्डलमहंताना॥
ज्ञान ज्ञान द्वौ खण्ड विभागे। नानाद्युत गिरसाकलिलागे॥
अधि कनात हरिभक्त चंदोवा। हिसायुन परदा नहँ जोवा॥
शूद्र शूर नृप बुद्धि उदारा। गुण अनेक को वरणै पारा॥
तापर कथा अब कहौं बुझाई। चितदै सुनहु श्रवणसुखदाई।

कथा भूप दुष्मन्तको, भांषो चित्त विचित्र।
ज्योंविधिभई शकुन्तला, सो अदभुतहुचरित्र॥

विश्वामित्र महामुनि आये। करन विपिन तप ध्यान लगाये
तहँ मेनका रूप गुण रासी। आनि गगनपथ देव विलासी॥
भूषण वसन विभूषित अङ्गन। गावत राग रमन्त तरङ्गन।

बीणा बजावत ताल अभङ्गन। निर्त्तत गति सङ्गीत उमङ्गन॥
फूलनको गजरा जु तरङ्गन। उठत सुगन्ध समीर प्रसङ्गन॥
मुखतांबूल कपूर लवङ्गन। अलिगुञ्जत संग अपसरसङ्गन॥
मुनि समीप उतरी सो आई। करी कलान समाधि जगाई॥
देखि मेनकहि विकल शरीरा। मुनिमनभयो मनोभवपीरा॥
बहुत बारलगि रह्यो निहारी। सुधिनरहीतनुसुरति विसारी॥
बीणा बजाइ मधुरस्वर गावत। खेलत फाग गुलाल उड़ावत॥

मुनितिय ऋषितिय गाधिसुत, निरखत बारहिं बार।
विकल युगल तनु कामवश, भूलो सब आचार।

विश्वामित्र मनोभव जीता। वर्ष एक सम वासर बीता॥
भई निशा सो मुनि ढिग आनी। करि ढिठाइ तनुमहँ लपटानी
जंघ जंघसों कटि कटि जोरी। उरसेउर मुनि मति भइ थोरी॥
अधराधर ऊपर रद दीन्हा। करि चुम्बन आलिङ्गन कीन्हा॥
करि विपरीति सुरति बहुभांती। द्वादश मास गये जनुराती॥
भयेविकल तब मन सुधि आई। खोयो तप बहु कीन भोगाई॥
रति करिके मुनिवर पछिताने। त्यहिवनते कहुँ अनत पराने॥
भई सुता बीते नौ मासा। गई डारि सो सुरपति पासा॥
एक बार नहिं क्षीर पियाये। रोदन करत क्षुधा तनु छाये॥
[illegible] सुनि मुनिवर आये। तपशाला लै जाइ जियाये॥
[illegible] कीन्हो प्रतिपाला। भई लरिका बीते कछु काला॥

सबलसिंह चौहान कह, हृदय परम आनन्द।
दिन दिन द्युतिबाढ़ी अधिक, जिमि द्वितियाको चन्द॥

इति अष्टादश अध्याय॥ १८॥

तनुसे निकसि ज्योतिद्युतिभारी। फैलिरहीचहुँदिशिउजियारी॥
लाजसहितचख अरुणानुकीली करुणामय सबभांति छबीली॥
अंजन दै दृग रञ्जित कीन्हें। खञ्जनकी उपमा हरिलीन्हें॥
मृगनिजदृगपटतर नहि जाने। लाजमानिमन विपिन छिपाने॥
हियदृगकरतकमल करिकोऊ। मम मनमें भासित नहिसोऊ॥
कमलज फल लज्यो तनु ताहू। ऐसि ज्योति मोहत सबकाहू॥
नासा सुभग अनूप सज्योती। जगमगात नथबेसरि मोती॥
नाक समीप मोट अधिकाई। शुककवि मन्तकरत मनलाई॥
आनन सुभग चन्द्र मदहारी। अधर प्रवाललाल रुचकारी॥
भृकुटी बास श्याम अहिछौना। शशिसमीपजनुरच्यो खिलौना॥
रुच मेचक लल श्रुति ताटङ्का। घनघमरह दामिनी दमङ्का॥
[illegible] तिनसम विशांती। जनु विद्रुम मुक्ताहल पांती॥

अतिसूक्ष्म मृदु उदर पुनि, पुनि अमोल अभिराम।
उपमा कहत विचारि जनु, रच्यो दुलीचो काम॥
जंघथम्भ सम कदलिके, उन्नत सुभग नितम्ब।
अतिसुन्दर पिंडुरी लखत, करत मदन आलम्ब॥

अम्बुज सम कर पद अरुणारे। थिर न बुद्धि मोरवान निहारे॥
तनमन काम सरिस उजियारा। मनहुँ दीपते दीपक वारा॥
एक समय यदुवन्त नरेशा। देखि चकित भे अद्भुतभेशा॥
मृगया फिरत विलोकत राजा। विहरत विपिन करततनुसाजा॥
भयो कामवश ताहि विलोकी। चितवतचकितनयनजलरोकी॥
देखि स्वरूप नराधिप फूले। जनु मन्मथहि डोलकढिझूले॥
प्रेम सो डोरि डोलावत खींचे। कवहुँ उरध मन कवहूँ नीचे॥
करत बिचार नरेश सुजाना। प्रियवशभयो हरे विधिज्ञाना॥
रम्य अरन्य जानि नहिं जाई। समुझिसमुझिन्टपमनपछिताई॥
द्विज कुमारिको भूप किशोरी। मन्मथविवश करी मति भोरी॥
विप्रसुता तब बात अयोगा। सुनि परन्तु हँसिहैं सब लोगा॥

भूपसुता जो होइ तब, बनि आई सब बात।
होइअगम्य तब नीकनहिं, समुझिसमुझि पछितात॥

विस्मय हर्ष विवश नरनाहू। धरि धीरज मनकरत उछाहू॥
म अपने मनकी गति जानत। कवहुँ असतपथपदनहिआनत॥
विधि रच्यउ मोर सयोगा। योगत्यागि नहिहोइ अयोगा॥
। विवश नृपकहँ जानी। तब यह भई गगनपथ बानी॥

विश्वामित्र सेनका नारी । भा विहार भइ प्रकट कुमारी ॥
सो शकुन्तला सब गुणखानी । तुव नरेश होई यह रानी ॥
गाधिसुवन क्षत्रियकुल माहीं । जानत सब अयोग कछुनाहीं ॥
मुनि उतङ्ग कीन्हा प्रतिपाला । गगनगिरासुनिमगन भुवाला ॥
निकट गये नृप विवश अनङ्गा । प्रेम सहित करिचपल तुरंगा ॥

पूछेउ नृप कित बन फिरत, का पुनि नाम तुम्हार ।
सुता अलौकिक कौनकी, मन वश करै हमार ॥
बोली विहँसि शकुन्तला, सुनिये भूप प्रसङ्ग ।
तुम क्षत्रिय हम विप्रकी, सुता मनोहर अङ्ग ॥

मुनि उत्तङ्ग विदित सुखरासी । तासु सुता मै विपिनविलासी ॥
अगम सदा क्षत्रियकुल माहीं । दान अयोग उचित नृपनाहीं ॥
नाम गिरा सुनि कह्यउ नरेशा । जनि बोलहु असवचनभदेशा ॥
रिषिसुत अति विदित संसारा । भयो चन्द्र सुत बुद्धि उदारा ॥
शशिसुतबुधबुधसुतजगजाना । इला पुरूरव नाम बखाना ॥
त्यहि कुल भयो मोर अवतारा । सम संयोग हमार तुम्हारा ॥
निसिरतिकाम सुचीसुरनायक । जलदयथादामिनिसुखदायक ॥
तिमि संयोग हमार तुम्हारा । बुद्धि विचार रचेउ करतारा ॥
नद स्वरूप सुन्दर जलरासी । मगनहोन उरपार विकासी ॥

तुमहि बिलोकत कुसुम धनु, लिये कुसुम सरहाथ ।
निरनिरन तनु जर्जर करैउ, है सकोप रतिनाथ ॥

[illegible] ठगोरी डारी । [illegible]

असिएलिका कटाक्ष अमोला। कर्षत प्राण मन्द मिठबोला॥
विष-मोदक कपोल युग तोरे। निरखत छहरि गयो तनु मोरे॥
अधर सुधारस मोहिं पियावउ। करि करुणा अववेगि जिआवउ॥
तुम विन मैंन जियउँ घटिकाहू। समुझतअवनवहुरिपछिताहू॥
मूरि विशल्यकरन कुच तोरे। परसत मिटै व्यथा तव मोरे॥
सञ्जीवनी तोर सम्भोगा। रहै न काम जो नितमहँ भोगा॥
है यह योग अवर कोउ नाहीं। तातें विनय करत तुमपाहीं॥

नयन बयन तनु मिलि रहो, रहो मिलनकहँ देह।
सो मिलाइ अस नेहते, त्यागहु सब सन्देह॥

कहेउ उतङ्कसुता सुनु राजा। धीरज धरे सरै सब काजा॥
पितुआयसु विन यह बड़ि हाँसी। रहो चुपाइ जानि निजदासी॥
कह नृप और विचार न कीजै। अङ्गदान हितकरि मोहिंदीजै॥
नैन बैन मिलि मिलेउ सनेहा। यह अभिलाष मिलै सब देहा॥
सुनि सालज्ज उतङ्क किशोरी। बोली मधुर गिरा करजोरी॥
तन इत मन तुम्हरे मन साथा। करि सङ्कल्प रहत नरनाथा॥
कछु दिनमें करि हैं जयमाला। बोलि पिता सुनिदेव भुवाला॥
डारब सुमन लाल तव ग्रीवा। होइ विवाह रहै श्रुति सीवा॥
तुमकहँ देह देइ हम राखी। तजो शोचनृप सञसुर साखी॥

रचेउ विरञ्चि विचारिकै, मोर तुम्हार विवाह।
तुम तजि करहुँ न आन पति, धरहु धीर नरनाह॥

मोहरि हर गिरिजापति आना। वरहुँ तुमहिं की त्यागउँ प्राना॥
भजौं न आन पुरुष तनु छूटै। पितु निदेश तजि पीकलकूटै॥
बूड़ौं वारि अनल तनु जारी। वरौं तुमहि की रहौं कुमारी॥
सुनिप्रियवचन तुरँगतजिदीन्हा। तहँ गन्धर्वब्याह करिलीन्हा॥
काम विवश न्टपज्ञान भुलाना। आलिङ्गन कीन्हों विधिनाना॥
शकुन्तला निज नाम बतावा। पुनि न्टपगमनभवनकहँ आवा॥
तब शकुन्तला मन्दिर आई। दोहत भयो शोच अधिकाई॥
सो चरित्र मुनिनायक जाना। जो कछु भयो सकलकरि ध्याना॥
पूंछेउ ऋषै सर्व कहि दीन्हा। जिमि गन्धर्व्वब्याह न्टप कीन्हा॥

धीरज दियो शकुन्तलै, उत्तमकुल नरनाह।
यामें सुता कलङ्क नहि, करिलीन्हों तुम ब्याह॥॥

ताके भयो भरत महिपाला। धर्म्मशील बलबुद्धिविशाला॥
षोडश वर्ष भयो नरपालक। खेलहि विपिन व्यालमंगबालक॥
महिषशृङ्ग धरि कबहुंक उखारैं। कबहुं अंगुलि व्यालमुखडारैं॥
सिंह लमधरि कबहुं भ्रमावैं। क्रिद मतङ्गहि दशन न नावैं॥
अदिति कुमार पुरन्दर जैसे। सुत शकुन्तला जायो तैसे॥
अनसूयाके यथा निशाकर। कश्यपके जिमि भये प्रभाकर॥

पढ़ौ कि पुनि चटसारमहँ, खेलन जाडू शिकार।
सबलसिंह चौहान कहि, सुनिमनमोद अपार॥

इति ऊनविंश अध्याय॥ १६॥

राज्य योग सब लक्षण जानौ। निकट बुलाय कहत मुनिज्ञानौ॥
पितु तुम्हार शशिवंश नरेशा। नृप दुष्यन्त सब जानत देशा॥
अति बलिष्ठ दुहिता सुत मोरा। सकल धरामण्डल है तोरा॥
भूपति रहै कृपा अभिलाखे। रहै सुबेश जासु रुख राखे॥
तुमपितु सभा अलौकिक लीला। बसै दिग्गीशन केर वकीला॥
सोमवंश महँ जन्म तुम्हारा। अत्रि गोत्र जानै संसारा॥
इला पुरूरव पितुमह नामा। तेज निधान शूर बलधामा॥
पितुगृह चलहु करहु निजराजू। सहित धराधन सेन समाजू॥
पुनः बहिक्रम भूप बुढ़ाना। और न सुत तुमकहँ नहि जाना॥
चिन्ता विवश भयो नृप अङ्गा। प्रातहि तात चलहु मम सङ्गा॥
तुमहिं विलोकि भूप सुख पाइहि। राज्यदेइ पुनि कानन जाइहि॥
तपचर्याको करत विचारा। सुतहित विपिन न जाइ भुवारा॥
तुमहिं विलोकि त्यागिसबशूला।नृपतपकरहि सहितअनुकूला॥

प्रातहि सहित शकुन्तला, चलहु हमारे साथ।
सुखी करहु दुष्यन्तकहँ, होहु पुत्र नरनाथ॥

कहि पुनि मुनि सेवन लागे। उदित होत उदयकर जागे।

सुत शकुन्तला सहित पयाना । कीन्ह कहा मुनि ज्ञाननिधाना॥
आये चन्द्र वंश रजधानी । दरशन दीन्ह सभामहँ आनी ॥
देखि महीपति कीन्ह प्रणामा। दीन्ह अशीश मुनीश अकामा ॥
अर्घ्य देत आसन बैठारे । ह्वै प्रसन्न तब वचन उचारे ॥
सुनहु भूप यह भरतकुमारा । तनय तुम्हार विदित संसारा ॥
अस कहिपुनि प्रणाम करवावा। प्रीतिसहित निजढिग बैठावा॥
देखत भूप भरत की ओरा । अति सुन्दर तनु वयस किशोरा ॥

वृषभकन्ध दीरघभुजा, दीरघ वक्षविशाल ।
चन्द्रवदन कटिकेहरी, कमलविलोचनलाल ॥

कछु शिशुता कछु तनुतरुणाई । मण्डित वीरता कहत लोनाई ॥
तब शकुन्तला सभा सँभारी । आई तुरत दिशा तम हारी ॥
रूपहि देखि सनहीमन माहीं । कीन्हप्रणाम प्रकटकछुनाहीं ॥
देखत चकित सभा सब कोई । शची किधौं रम्भा रति होई ॥
मनुधीप मेनका छलासी । विश्वमोहनी कुलकी रासी ॥
सभा सरस शोभा तनु जाके । नहिं त्रिलोक पटतरसहँ ताके॥
ता तनु को सुन्दरता ताको ।

भूली सुरति भई मति भोरी। मैं शकुन्तला अनुचरि तोरी॥
दृग नीचे करि कहत सलाजा। वनमहँ मिलौ सभुभमनरा॥
जहां उतङ्ग केर पर्णशाला। परम गहन सुधि करहु भुवाला॥
नदी पुनीत तरणितनया तट। सुन्दर सुखद छाँह शीतलवट॥
नाम बताय भवन तुम आयो। करि प्रबोधमोहिं भवनपठायो॥
भरत-जन्म की कथा सुनाई। तुम्हरे दर्शहेत इत आई॥
यह लालसा न दूसर काजा। छांड़ौ विपिन भूल सुधि राजा॥

देखौ सुनौ न मैं कछू, विहँसि कहौ महिपाल।
सुनहु सभासद मिलि सकल, मृषा कहत यह बाल॥

यह त्रिय रत्न पुरुषके लोभा। सानत मोहिं चहत निज शोभा॥
वारबधूकी गति पहिचानौ। है कुलटा मनमें मैं जानौ॥
सुनि शकुन्तला कह मन माखौ। तव नरेश दीन्हों सुरसाखौ॥
पतिव्रत जो छांड़ो मैं नाथा। तौ तुम करौ खण्ड शतमाथा॥
अस कहि पतिव्रता रिसवाई। कहत सुरनते भुजा उठाई॥
सुनत श्रवण तुपद्देत न साखौ। ह्वैहै तेज हीन विन आँखौ॥
सुनि यह पतिव्रता भय माना। भई गगन सुर गिराप्रमाना॥
सम संयोग कलङ्क विहीना। अति पुनीत नृपनारि प्रवीना॥
भरतनाम यह तनय तुम्हारा। करहु भूप तुम अङ्गीकारा॥

सुनहु नरेश शकुन्तला, सबविधि सम संयोग।
भइ सुरगिरा प्रमाण नभ, सुनि हर्षे सब लोग॥

कल सभासद निकट बुलाई। अति आनन्द न हृदय ..:

त सुनाइ सबनते राजा। गगन गिरा सब सुनहु समाजा॥
शकुन्तला मम पटरानी। निश्चय भरत पुत्र सुखदानी॥
क वेदते नारि कुमारा। कीन्ह प्रथम नहि अङ्गीकारा॥
सहें लोग नरेश लोभाने। तरुणात्रिया अरु सुत विन जाने॥
यो गृह वड़ि कीन्ह ढिठाई। अस विचारि सुरगिरा सुनाई॥
धर्महि भई विपिन नभवानी। करि विवाह तब कीन्ही रानी॥

अस कहि भूप शकुन्तला, दीन्ही भवन पठाइ।
बठारे पुनि मोदते, भरत समीप बुलाइ॥

ह नरेश तब सुनहु उलङ्का। कहिये नाथ मिटै आशङ्का॥
वन सम संयोग बखाना। केहि प्रकारते मैं नहि जाना॥
नि उलङ्क मोदक अधिकाई। कथा प्रथम सुनि वरणि सनाई॥
म शकुन्तलहि मुनिवर भाखी। सुनहु भूप विधिते पटराखी॥
के भांति प्रकट भय दोऊ। कथा विचित्र सुनहु नृप सोऊ॥
धियुत कुश जानत संसारा। प्रकट करे कुश नाम कुमारा॥
तनके गाधिराज वलखानी। अङ्गदेश कीन्ही रजधानी॥
कौशिक तनय कौशिकी नामा। तनया विदित शीलगुणधामा॥
माग विपिन तप कीन्ह महाना। भई पुनीत नदी जगजाना॥

कीन्ह विरञ्चि अविमत नामा । तपमूरति मुनिवर गुणधामा॥
भे जग विदित चन्द्रसुत ताके । निशि तम रहत कष्टतरजाके॥
अमियमयो अरु सुरपति मीना । धरो शीश शिवजानि पुनीता॥
सप्तविंश त्रिय जग उजियारी । अति प्रिय तिनहिं रोहिणीनारी॥
तिनके सुत बुध बुद्धि निधाना । भये सौम्यग्रह सब जगजाना॥
इला पुरुरवा भय बुध बालक । अतिबलिष्ठ श्रुतिपथ प्रतिपालक॥
भयो कामवश चेत न आवा । विपिन फिरत उरवशी भ्रमावा॥
देखि स्वरूप ज्ञान सब गयऊ । विसरी देह कामवश भयऊ॥
हँसि दरशाइ विलोचन तीछे । चली पराइ चला नृप पीछे॥
नग्न शरीर नगिन तरवारी । हा उरवशी पुकारि पुकारी॥

प्रकट होइ कहुं निकट होइ, कबहुं जाइ द्रुम ओट ।
कबहुं दिखावत हासमृदु, कबहुं करत दृगचोट॥

कबहुंक प्रकट होत त्रिय आगे । चले जात नृप पाछे लागे॥
निकट विलोकि गगन उड़ि जाई । दूरि देखि पुनि देइ दिखाई॥
कबहुं वाम दक्षिण दिशि पूरा । राग अलाप बजाइ तँबूरा॥
यहि विधि गगन बीच लै जाई। अमितनिहारि प्रीतिअधिकाई॥
निजवश जानि दया अति बाढ़ी । भूप समीप जाइ भइ ठाढ़ी॥
करि विनती नृप भवन लवाये । करि प्रसङ्ग तुमको उपजाये॥
यथा पुरुष तुम तिनि बहुदारा । सब विधिसम संयोग तुम्हारा॥
कहि यहि विधि मुनिवरउत्तङ्गा । गये मण्डली मेटि असङ्गा॥

वानप्रस्थ विचारि अब, विपिन गये ततकाल।
लै निज हाथ शकुन्तला, भरत भये महिपाल॥

जिनको सुयश पयोनिधि पारा। गये उलंघि पहाड़ अपारा॥
तिन पुरु नाम तनय उपराजा। भयो सकल पुहुमीपतिराजा॥
नहुष नृपति तिनके बल दाई। लीन्ह इन्द्रपद इन्द्र भगाई॥
तिनके सुत पुनि भयो ययाती। तेज प्रताप विदित सब भांती॥
अरजा पुनि दूसरी कनिष्ठा। नृपकी नारि नाम शरमिष्ठा॥
शुक्रसुता ज्येष्ठो देवयन्या। लघुतिय वृषपर्वाकी कन्या॥
युग पत्नी दश सुत उपजाये। तिनके भारत सकल कहाये॥
कथाविचित्र सुनत सुख पावा। पुनि सात्यकि हरिपद शिरनावा
आगे चलि हस्तिनपुर देखो। चित्रितचित्र विचित्र विशेखो॥
अति उतङ्ग सोहत पुर फाटक। रचितकिवारद्वारमणि हाटक॥
वसत लसत पुर धुनि अधिकाई। जनु सुरनगर वास तह आई॥
वसत तहां दुर्योधन पोचा। कहत इन्द्र मन मन सङ्कोचा॥

पुरजन देवी देव से, पाण्डव गये विदेश।
वसत नहुष जनु इन्द्रपद, भोगि निकारि सुरेश॥

नन्दनवन निन्दित वन बागा। रुचिर वापिका कूप तड़ागा॥
मन्दाकिनि सम सोहत गङ्गा। उपमा उठत अनूप तरङ्गा॥
जहाँ तहाँ परो रव घोरा। वेद पढ़त जनु सुर दुहुँ ओरा॥
मन्दरगिरि जनु रुचिर अटारी। चातुर चारु रहहिं नरनारी॥
गृह गृह ध्वजमनि निशानी। मनहुँ मन्दर [illegible] [illegible]॥

सोहत जहँ तहँ रुचिर कँगूरा । त्रिय नगरी शिरसुन्दर जूरा ॥
खुले द्वार सोहत सुखरासी । सुरपुर सरिस करत जनु हासी ॥
कोटि न गुड़ि उड़ि उड़ि रँगराची । नगर नगारनकी ध्वनिमाची ॥
पुरशोभा हर्षत निरखि, गये निकट भगवान ।
सबलसिंह चौहान कह, को करि सकै बखान ॥

इति विंश अध्याय ॥ २० ॥

———

दारुक हांक्यो अश्व रथ, सुमिरि महेश गणेश ।
नगर हस्तिनापुर तबै, कीन्हों तुरत प्रवेश ॥
वनित मनोहर रूप विलोके । यकटक लखै नयन पल रोके ॥
हरि शोभासागर सुखसारा । लिवलोचन भखकरत विहारा ॥
गली बजार छतीसौ कोमा । निरखत मुख चकोर जिमि शोमा ॥
सात्यकि सहित अलौकिक वेखा । चले जात पुरवासिन देखा ॥
तरणिनमोसकिलरणिकिशोरी । की मधु मदन मनोहर जोरी ॥
हरि हर कहि वर्णत है कोऊ । नर नारायण हैं की दोऊ ॥
सात्यकि सहित सोह भगवन्ता । इन्द्र सहित जनु जात जयन्ता ॥
मारगमहँ शोभा अधिकाई । मनहुं राम लक्ष्मण दोउ भाई ॥
पीतवसन सुन्दर ललित, कलित विभूषण गात ।
फलित मनोरथ सबनके, निरखत सुख सरसात ॥
शोभा वर्णत नर नारी । निरखि निरखि तनु दशा बिसारी

छवि अभिराम कामशतकोटी । हरि पटतरिय बात यह छोटी ॥
प्रभु शोभासागर अवगाहा । सुर नर मुनि कोउ पाव न थाहा ॥
इकटक चितै परस्पर कहहीं । इनको सरि येई जग अहहीं ॥
उपमा काहि देइको योगा । कहत परस्पर सब पुरलोगा ॥
मरि सात्यकि करि उभय विभागा । कोऊ कहत ज्ञान वैरागा ॥
तहँ प्रभु मोहन तन देखरायउ । मोहे सब तन सुधि बिसरायउ ॥
प्रभुशोभा निरखत कोउ ठाढे । वर्णत कोउ नयनजल बाढ़े ॥

मन हरिवश सरवस सहित, विसरि गई सुधि देह ।
प्रभु तनुद्युति वर्णन करत, पुरजन सहित सनेह ॥

कमलनयनकुण्डलहै कानन । अति कमनीय कलानिधि आनन ॥
भृकुटी कुटिल नासिका कीरा । उर वनमाल मनोहर हीरा ॥
क्रीट मुकुट शिर ऊपर धारे । दाड़िमदशन अधर अरुणारे ॥
उन्नतभाल सुजन मनभावन । सुन्दरलोल कपोल सुहावन ॥
वृषभकन्ध अरु दीरघ बाहू । वक्षविशाल सुखन सबकाहू ॥
पानपीठि उर भृगुपद रेखा । कटि केहरि ऊदर त्रयरेखा ॥
पीताम्बर तापर कसि बाँधे । श्यामजलद तनु यज्ञप काँधे ॥
पद्मपाणि पद पद्म अनूपा । अति विशाल दोउ यदुकुल भूपा ॥
हरिहि विलोकि नागपुर नारी । कामविवश तनु दशाविसारी ॥
भूषण हीन न चीर सँभारा । निरखँ आइ लाज तजि द्वारा ।

[illegible] दूर्वा अक्षत अमल, एलादिक [illegible] ।
करें [illegible] विविध विधि, [illegible] [illegible]

जात राजमारग प्रभु सोहे। पुरनरनारि देखि छवि मोहे॥
तिन मोहनी रूप प्रभु देखा। कहि न सकें कविशारदशेषा॥
शारद शम्भु गणेश षडानन। वर्णत वृद्ध भये चतुरानन॥
नारदादि केहुं पार न पाये। विविध भांति कहि नेति सुनाये॥
सुर सुरेश कहि पार न पावा। अवरूपसुनहु व्यासजसगावा॥
प्रभु छवि वारिधिकोटि महाना। सीकरसमत्रिभुवनछवि नाना॥
तदपि तासु उपमा सम नाहीं। तुमते कहत सुनी गुरुपाहीं॥
सुनिये गिरा अमियरस बोरी। कौन प्रश्न पुनि नृप करजोरी॥
सुनत श्रवण नहिं कथा अघाई। कहिय कृपाकरि अब ऋषिराई॥
सुनि नृप वचन प्रीतिरस पागे। कथा विचित्र कहनमुनिलागे॥

दोषहरणि सबसुखकरणि, भारत-कथा रसाल।
जनमेजय चित दै सुनहु, मिटै मोह जगजाल॥

भीषम बिदुर सुनी यह बाता। नगर प्रवेश कीन्ह जनत्राता॥
कृप अरु द्रोण सहित अनुरागे। करत प्रणाम लीन्ह चलिआगे॥
भीषम द्रोण देखि हरि आये। पुरजन सहित प्रेमउर छाये॥
उतरे कृपासिन्धु भगवाना। मिले बहुत कीन्हें सनमाना॥
भेंटत कृपहिं प्रीति अधिकाई। कुशल प्रश्न पूंछत यदुराई॥
नाथ कुशल देखत अब तुमको। हृदय लाय भेटब प्रभु हमको॥
पतितउधारण विरद सँभारा। भयो सकल अघ दूरि हमारा॥
समय विदुर चलिआये। परे चरण नहिं उठत उठाये॥
कृपासिन्धु भगवाना। लीन्ह लाय उरकरि सन्माना॥

सुनहु विदुर तुम अतिविज्ञानी । जिनको मुख देखत अघहानी॥
ज्ञान विराग योगगति आनत । धर्म्म स्वरूप भक्ति रसजानत ॥
जीतेउ काम क्रोध मद लोभा । करि न सके माया मन क्षोभा ॥
हरिसेवक प्रह्लाद समाना । विधिसमबुद्धि विवेकनिधाना ॥
रविनन्दन सम नीतिविचारा । योगिनमहँ जिमिसनतकुमारा
भक्त अनन्य यथा हनुमन्ता । अम्बरीषन्टपसम शुचिसन्ता ॥
करि सन्मान कृष्ण बहुभाँती । पुनि पुनि मिलतलगावतछाती ।
बोलेउ विदुर अकिञ्चन मीता । नामतुम्हार विदितजनहीता ॥
विरद तुम्हार निगम कहिगाई । निज दासनकहँ देत बड़ाई ॥

मोते को संसार महँ, महा अधम यदुवीर ।
अधम उधारण नाम तुव, सुनत होन उरधीर ॥
भक्तवत्सल तुव नाम सुनि, तव मन बड़ो हराय ।
सुने पतितपावन विरद, हर्ष न हृदय समाय ॥

पूरब नाथ पाप हम कीन्हा । दासीयोनि जन्म विधिदीन्हा ॥
अघभाजन नहि भजन तुम्हारा । केहि विधि नाथमोरनिस्तारा॥
परम अधीन विदुर मुखवानी । सुनि श्रीकृष्ण भक्तिरसमानी ॥
बीन्ह प्रबोध नाथ विधिनाना । हृदय लाय कीन्हों सन्माना ॥
तुम्हो विदुर धर्म्म-अवतारा । परमभक्त अरु ज्ञानउदारा ॥
[illegible] अभिनन्दनकीन्हा । [illegible] दर्शन दीन्हा ।
[illegible] गोपाला । [illegible] ॥
[illegible]

पीत वसन कलकुण्डल कानन । अतिकमनीयसुधाधरआनन ।
सात्यकिरूप लखे बनवारी । निरखिनिरखिछविहोतसुखारी ॥
भीष्म द्रोण सहित यदुराई । भूपभवन कहँ चलेउ लवाई ॥

सुनौ श्रवण आयो निकट, पँवरिद्वार यदुराय ।
लेन हेत कुरुनाथ तब, दीन्हें अनुज पठाय ॥

विकरण दुःशासन बलधामा । दुर्मुख दुमुत द्विरद पुनि नामा ॥
निपट निकट जब आनिनिहारा । मदसमेत तिनकीन्हजोहारा
दुर्योधनके बान्धव आये । तहँ प्रभु उग्र रूप दरशाये ॥
चक्र एक कर शारँग पाणी । एकपाणिमहँ निशितकृपाणी ॥
जैसे प्रलयकाल महँ शङ्कर । अरुण नयन अरु वेष भयङ्कर ॥
रूप त्रिविक्रम समर महाना । कुरुगण देखि अचम्भव माना ॥
डरपे दुर्योधनके भाई । हरिहि देखि मुख गे कुम्हिलाई ॥
तमगुण उनहिं कृष्णदेखरावा । भूप भेद केहु जानि न पावा ॥
मोहन रूप देखि नर नारी । लोकलाज तजि चली पछारी ॥
सात्यकि रूप विदुर तहँ देखा । कहत नाइ मन हर्ष विशेखा ॥
राजा देखि प्रजा सुख पाये । भये मुदित निज निज गृह आये ॥
यह चरित्र कीन्हों भगवाना । औरको भेद और नहिं जाना ॥

जैसी जाकी भावना, तेहि तैसो भगवान ।
पलमह दरशायो चरित, मर्म न काहू जान ॥

दरबार गये यदुनाथा । भीषम द्रोण विदुर कृपसाथा ॥

द्विरज दुमत्त दुशासन सङ्गा । दुर्मुख विकरण वीर अभङ्गा ॥
दुर्योधनको विभव निहारा । इन्द्र सरिस को वरणै पारा ॥
प्रथम पँवरि कोटिन धनुधारी । रक्षक तरुण पुरुष बलभारी ॥
दूसर दुर्योधनकर चेला । उमड़ेउ मनहुं सिन्धु तजि वेला ॥
ते सब शक्ति भुशुण्डी लीन्हें । रक्षहिं द्वार सजगचित दीन्हें ॥
तिसरे द्वार करहिं बहु हूहा । कुन्तपाणि तहँ मनुज समूहा ॥
गये कृष्ण चलि चौथी कक्षा । रक्षक महामल्ल बहु दक्षा ॥
मुद्गर भिण्डिपाल कोउ साँगी । गहे सचेत खड्ग कोउ नांगी ॥
पञ्चम पँवरि द्वार हरि आये । विविध भांति तहँ [illegible]
गौनि लज भट मत्त सरावी । लीन्हें पाणि [illegible]

द्रोण कर्ण सम तूलके. अयुत वीर वरियार ।
गर्जि गदा गहि गर्व्वते. ठाढे षष्ठम द्वार ॥

सप्तम द्वार खड़े बहु खोजा । केहरि सं किरात कम्बोजा ।
विविधन भांति अलङ्कत साहीं । जिनहि देखि सुर असुर लजाहीं
दर्शन विरद बन्दिजन पढ़ा । वेतपाणि दरवानि समूहा ॥
गतपाणि तहँ जाय जनाये । मिलन हेत यदुनन्दन आये

उत्पति थिति नाशन करण, विश्वभरण भगवान।
नर करि जानत ताहि खल, सबलसिंह चौहान॥

इति एकविंश अध्याय॥ २१॥

कृष्ण समेत चलो कुरु राजा। धृतराष्ट्रक यह सकल समाजा॥
भीषम द्रोण कर्ण सँग लीन्हें। वान्धव सब परिवारित कीन्हें॥
गयउ भूपपहँ विदुर अगारी। कह्यो जाय आवत वनवारी॥
कहत भूप कोउ मोहिं उठावहु। चलहुवेगिलै हरिहि मिलावहु॥
सञ्जय गहिकर नृपहि उठायो। कृष्ण समीप तुरत पहुँचायो॥
भेंटो कृपासिन्धु उरलाई। नृप आनँद अति उर न समाई॥
कुशल प्रश्न पूँछत व्रजराजहिं। गयो भूप लै सहित समाजहिं॥
निज समीप हरिकह वैठारा। वैठे जहँ तहँ सकल भुवारा॥

बाहुलीक भीषम करण, द्रोणी द्रोण समेत।
सोमदत्त सैन्धव शकुनि, वैठे सभा निकेत।

कृप अरु शल्य जान सब कोऊ। भूरिश्रवा अलम्बुष दोऊ॥
पुत्न पौत्न भूपतिके जेते। बैठे दुर्योधन ढिग ते ते॥
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा। मगहराजतेहि सभा विराजा॥
भूप कलिङ्ग और कृतवर्मा। नृपति बृहद्बल सहित सुशर्मा॥
यनराज शशिवेद नरेशा। नृपति सुलूक बनाइ सुवेशा॥
देश देशके नायक। दुर्योधनके सकल सहायक॥

हरि आगमन सुनत सजि साजा। धृतराष्ट्रकगृह जुरो समाजा॥
यथा योग्य बैठे नृप झारो। विदुरसभा विधिवत बैठारो॥
बैठे भूप सहित बनवारो। सञ्जय नृपके बैठ पछारो।
सुस्थित अति आनन्दते, नृप समीप घनश्याम।
हरिदच्छिणदिशि सात्यकी, लखै बिलोकनि वाम॥
यदुनन्दन दिशि बारहिं बारा। निरखत विदुर अनन्द अपारा॥
परत निमेष न यकटक ठाढ़े। मानहुं चित्रमांझ लिखि काढ़े॥
हरि छवि देखत चष अनुकूली। जनित सनेह देह सुधिभूली॥
लगा लखा प्रभुपद मञ्ज कपोला।भ्रमत विदुर चित प्रेमहिंडोला
देखत होत न मम सन्तोखा। यथा अडोल खेलको धोखा॥
विदुर दशा जब कृष्ण निहारी। कर्गहि निकट लीन्ह बैठारो॥
नृप अरु द्रोण विदुर दिशिदोऊ। देखि सप्रेम मगहन सोऊ॥
धन्य विदुर विज्ञान निधाना। नरतनु पाइ भक्त रम जाना॥
काम क्रोध तजि सब संसारी। भजन सदा अघहरण मुरारी॥
विषरस इव त्यागी विषय, चरणकमल लवलाय।
रहत शरण यदुनायकी, नाते नेह विहाय॥
कृपादृष्टि प्रभु विदुर बिलोकी। भये मोद मन कहेउ विशोकी॥
हरिकी [illegible]

उत्पति थिति नाशन करण, विश्वभरण भगवान।
नर करि जानत ताहि खल, सबलसिंह चौहान॥

इति एकविंश अध्याय॥ २१॥

कृष्ण समेत चलो कुरु राजा। धृतराष्ट्रक यह सकल समाजा
भीषम द्रोण कर्ण सँग लीन्हें। बान्धव सब परिवारित कीन्हें
गयउ भूपपहँ विदुर अगारी। कह्यो जाय आवत बनवारी॥
कहत भूप कोउ मोहिं उठावहु। चलहुवेगिलै हरिहि मिलावहु
सञ्जय गहिकर नृपहि उठायो। कृष्ण समीप तुरत पहुंचायो
भेंटो कृपासिन्धु उरलाई। नृप आनँद अति उर न समाई॥
कुशल प्रश्न पूंछत व्रजराजहिं। गयो भूप लै सहित समाजहि॥
निज समीप हरिकह वैठारा। बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा॥

वाहुलीक भीषम करण, द्रोणी द्रोण समेत।
सोमदत्त सैन्धव शकुनि, वैठे सभा निकेत।

कृप अरु शल्य जान सब कोऊ। भूरिश्रवा अलम्बुष दोऊ॥
पुत्र पौत्र भूपतिके जेते। बैठे दुर्योधन ढिग ते ते॥
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा। मगहराजतेहि सभा विराजा॥
भूप कलिङ्ग और कृतवर्मा। नृपति वृहद्बल सहित सुशर्मा॥
जयनराज शशिवेद नरेशा। नृपति सुलूक बनाद्र सुवेशा॥
देश देशके नायक। दुर्योधनके सकल सहायक॥

हरि आगमन सुनत सजि साजा । धृतराष्ट्रकगृह जुरो समाजा ॥
यथा योग्य बैठे नृप झारी । विदुरसभा विधिवत बैठारी ॥
बैठे भूप सहित बनवारी । सञ्जय नृपके बैठ पछारी ।

सुस्थित अति आनन्दते, नृप समीप घनश्याम ।
हरिदक्षिणदिशि सात्यकी, लखै विलोकनि वाम ॥

यदुनन्दन दिशि बारहिं बारा । निरखत विदुर अनन्द अपारा॥
परत निमेष न यकटक ठाढ़े । मानहुं चित्रमांझ लिखि काढ़े ॥
हरि छवि देखत चष अनुकूली । जनित सनेह देह सुधिभूली ॥
लगा जरा प्रभुपद सञ्ज कपोला ।भ्रमत विदुर चित प्रेमहिंडोला
देखत होत न मम सन्तोखा । यथा अडोल खेलको धोखा ॥
विदुर दशा जब कृष्ण निहारी । कराहिं निकट लीन्ह बैठारी ॥
नृप अरु द्रोण विदुर दिशिदोऊ । देखि सप्रेम मगहत मोऊ ॥
धन्य विदुर विज्ञान निधाना । नरतनु पाइ भक्त रम जाना ॥
काम क्रोध तजि सब संसारी । भजन सदा अघहरण मुरारी ॥

विपरस इव त्यागो विषय, चरणकमल लवलाय ।
रहत शरण यदुनायकी, नाते नेह विहाय ॥

कृपादृष्टि प्रभु विदुर बिलोकी । भये मोद मन कहेउ बिशोकी ॥
हरिकौ देखि प्रीति अधिकाई । अति अनन्द नहिं हिये समाई
गालवगण मन मोद अपारा । पुलकावली नयन जलधारा
देखत रूप चख पल गेवै । सुरसिंहासनहिं भार [illegible]
कह मुनीश यह कथा सुहाई । हुव छिन हेतु भूप मैं गाई

अब मैं कहब विचित्र कहानी । सावधान सुनु नृप मज्ञानी ॥
सुनत रहत नहि अघ लवलेशा । शोक मोह भ्रम मिटै नरेशा ॥
धृतराष्ट्रक अति आदर कीन्हा । भोजन हेतु उतर हरि दीन्हा ॥

प्रीति न रञ्चक तुम विषे, नहिं हमरं आपाँति ।
कौन हेतु कीजै अशन, सुनहु भूपता पाँति ॥

कहेउ भूप सुनिये जगतारण । तुम तापाँति कहो केहि कारण ॥
सुनि नृप वचन कहत हँसिकेशो ।सुनहु भूप तब मिटै अन्देशो॥
हस्ती नाम भरत कुल जायो । नगर हस्तिनापुरी वसायो ॥
तरणि सुताते भयउ विवाहू । तापव नाम विदित सबकाहू ॥
तिन यह कौरववंश चलायो । ताते तुम तापती कहायो ॥
सुनि हरिबचन भेद सबजाना । धृतराष्ट्रक मनमहँ सुखमाना ॥
कथा अपर तब श्रीमुख गाई । सुनि सुख लहो सभासमुदाई ॥
अमृत सरस कृष्णमुख वानी । भीषम विदुर सुनत सुख मानी ॥
कह वैशम्पायन सुनु राई । कथा विचित्र श्रवण सुखदाई ॥

बुद्धिचक्षु बोले बिहँसि, कहिये दीनदयाल ।
केहि विधिते तपती बरी, सुनिहस्ती महिपाल ॥

केहि विधिते भा भूप मिलापू । किमिउतपतिकहिये अबआपू ।
सुनि नृप वचन कृष्ण अनुरागे । कथा विचित्र कहन असलागे
रविमण्डल होइ जात वराकी । भये दिनेश कामवश ताकी ॥
...बाण ताहूके लागा । रविदिशि देखिभयो अनुरागा ॥
...व सुरनायक जाना । दीन्हो शाप क्रोध उर आना ॥

धरि मानुषतनु ह्वै व्यभिचारिणि । वर्ष प्रयन्त रहौ अपकारिणि॥
ह्वै मानुषौ रूप सोइ दारा । रविमण्डलमहँ करत विहारा ॥
मोच्यो शाप काल जब बीता । तहौं गर्भ पुनि सुरपति भीता ॥
भई सुता कर्दम ऋषि जानी । सो उठाय निज आश्रम आनी॥
गई सुरेश भवन पुनि बाला । कीन्हीं मुनि कन्या प्रतिपाला ॥
शशिसम बढ़त कढ़तद्युतितनकी । जगरमगरजिमिदामिनिघनकी
थिर न रहत लखिमतिमुनिजनकी । होतलाजवशनारिअतनकी॥

नरणिप्रभातनु शशिवदनि, मृगनयनी कटिखीन ।
पीन पयोधर मधु अधर, षोड़श वर्ष नवीन ॥

तेहि पटतर रम्भादिक नाहीं । सुरी किन्नरी देखि लजाहीं ॥
तप्त स्वर्ण आभा तनु जानी । तपनी नाम धरो मुनि ज्ञानी ॥
हस्ती भूपति फिरत शिकारा । रविनन्दनि गइ विपिन विहारा॥
औचक मिले पन्थमहँ सोऊ । देखि परस्पर बरवस दोऊ ॥
राजकुँवर रविजा अवलोकी । देखत रूप दृगञ्चल रोकी ॥
तरुणवहिक्रम तरुणिकिशोरी । दामिनि वर्ण देह अति गोरी ॥
पहिरे तनु शुचि वसन सुरङ्गा । मणिगणखचित विभूषणअङ्गा॥
इन्दु वदनि मृगशावक नयनी । भृकुटीकुटिलविलोकि प्रवीनी॥
लोल कपोल हँसनि मृदु बङ्का । दमकत श्रवण तड़ित ताटङ्का॥
अधर प्रवाल लाल अरुणारे । अहि उपमा लम्बित कच कारे ॥
दाड़िम दशन नासिका नीकी । देखत कीरतुण्ड मति फीकी ॥
कम्बुकण्ठ अरु बाहु मृणाला । कोमल कलित कमलकर लाला॥

श्रीफलसे कठोर वक्षोजा। गेंद खेल जनु रच्यउ मनोजा॥
सूक्षम कटि अरु रूप अपारा। लचकत पुनि पुनि कचघुंघुवारा॥
शुभनितम्ब पुनि नाभिगँभीरा। देखि भूप मन मनसिज पीरा॥
मनो मनोज कुसुम शर लीन्हा। बाणनमारिलच्छि लखिकीन्हा॥

सघर पेंडुरी पद कमल, सम अँगुली वीश।
कदलिपत्रसमपीठि पुनि विरच्यो जगदीश॥
वीस अङ्गुली कमलकर, लसत वीसनखलाल।
वीसकला जनु भौमधरि, करत प्रकाश विशाल।

राजकुँवर तनु शोभा भारी। देखि कामवश तरणिकुमारी॥
वय किशोर तनु सुन्दरताई। वरणि न जाइ देखि मनभाई॥
क्रीट मुकुट शिर ऊपर धारा। जगमगात मणिगण उजियारा॥
आनन मनहुँशरदशशिमण्डल।झलझलात कानन दोउकुण्डल
भृकुटी कुटिललसत यहिताका। विनगुणमनहुँ मनोज पिनाका
नासाकी उपमा कवि गावत। अति विचित्रशुकतुण्डलजावत॥
दृगकञ्जुश्यामकञ्जुक अरुणारे। सोहत जनु बन्धुक अतिकारे॥
सोहत कच मेचक मुखनेरे। अतिहि हेतु जनु शशि अहि घेरे॥
वृषभ कन्ध युगवाहु विशाला। कंबुकण्ठ द्विरदै मणिमाला॥
वक्ष विशाल नाभि गम्भीरा। कटि केहरि जंघा विस्तीरा॥
अरुणचरण कर अरुण सोहाये। अमल कमल शोभा दर्शाये॥

मनसिज सरिसमहीपसुत, रूपशील गुणगेह।
नख शिख देखि अशेष छवि, तपती भई बिदेह॥

देखि भूपसुत तरणि किशोरी । जनित सनेह देह भै भोरी ॥
शीश फूल कानन ताटङ्का । अति प्रकाशजनु विज्जु दमंका ॥
मुक्तमाल उर मणिगण हारा । जनुकर निकर निशेष पसारा ॥
अङ्गनजटित ललितकरभूषण । करत प्रकाश कमलपर भूषण ॥
दशौ अंगुलिन महँ दशमुद्रा । चलत हलत बाजत कटिक्षुद्रा ॥
आस पास बिछिया टोरवारे । पायँ पैजनी नेवर न्यारे ॥
वसन विभूषण वैस नवेली । पूंछत भूप विलोकि अकेली ॥
की तुम राजसता सुरकन्या । कवन हेतुकेहिफिरत अरन्या ॥
तुववश भयो प्राण अवसेरा । कवनेउयतनफिरतनहिं फेरा ॥
तातें कहो हमारो कीजै । अब गन्धर्व्वब्याह करि लीजै ॥
तुमहिंविलोकि मदनधनुलीन्हों । शरनमारि जर्जर तनु कीन्हों ॥
मूरि विशल्यकरन तुम देही । परसत मिटै व्यथा तनु येही ॥

सुन्दर सरल शरीर तव, जिमि मनसिजको पास ॥
फंसो जाइ ता बीच मन, देखि मनोहरहास ॥

तरणिसुता नृपसुतवशकीन्हा । नृपकिशोरतेहिचितहरिलीन्हा ॥
निजवश रहो न कछु ताहू को । फेरे फिरत न मन वाहू को ॥
दूनौं तनु मनोज वश भयऊ । तहँ गन्धर्व्वब्याह करि लयऊ ॥
यह करतव कर्दम ऋषि जानो । दीन्हो सौंपि नृपहि गहिपानो ॥
हर्षि भूप तेहि निज गृह आनो । ढोल बजाइ कीन्ह पटरानो ॥

हस्ती नृपके तनय कुरु, पतिनीते उपतीय ।
तिनके सुत शन्तनु नृपति, तेहिते तुम तपनीय ॥

शन्तनु सागर को अवतारा । भयो वड़ो तेजसी भुवारा ॥
गङ्गा सागरको भा सङ्गम । तेहिते भीष्म अविचल जङ्गम ॥
पीछे नृप मत्स्योदरि आनी । जव सुरसरि निज धार समानी ॥
ताको सत्यवती अस नामा । चित्राङ्गद सुत वलके धामा ॥
चित्रवीर्य पुनि दूसर बेटा । भयो भूप संग्राम अपेटा ॥

चित्रवीर्यके पाण्डु नृप, चित्राङ्गदके आप ।
हो एकै कछु भेद नहिं, ताते करहु मिलाप ॥

विग्रह आपुसको नहिं नीका । छांड़हु अव सव वात अलीका ॥
कलह तुम्हार न काहुहि भावत । ताते वार वार हम आवत ॥
हरिमुख हेरि कहत दुर्योधन । तुम आये इत कवन प्रयोजन ॥
कह हरि हमैं युधिष्ठिर राजा । पठयनि तुम्हरे ढिग यहिकाजा ॥
कहिनिकि हमकहँ जुवांहरायो । छलवलकरिकै वनहिं पठायो ॥
ते गे वर्ष त्रयोदश बीती । अवहूं तौ तजि देहि अनीती ॥
सो अब कहा हमारो कीजै । आधी भूमि बांटि नृप दीजै ॥
उन वन वसि वहु सहे कलेशू । तेहिते तुम कहँ उचित नरेशू ॥
यह जो नाहिं तुमहिं समि आई । तौ हम कहैं करो तुम राई ॥
पञ्च ग्राम पाण्डवकहँ देहू । कलह निवारण होइ सनेहू ॥
इन्द्रप्रस्थ तिलस्थ वरुणागर । वारणासि हस्तीपुर आगर ॥
इनके दिये मिटत है रारी । नातरु होइहि अनरथ भारी ॥
सुनि दुर्योधन राउ रिसाना । नारायण मैं कौरव जाना ॥
कहे देहुं सव देशू । हम जो कहैं करिय सो भेशू ॥

सुई अग्र महि उठो जो जेती । विना युद्ध हौं देउ न तेती ॥
वालवंश हो जातिके नीचा । परत आय राजनके वीचा ॥
यह कहि कह्यो दुशासन भाई । करगहि याहि देहु दुरिआई ॥
केतौ पकरि कारागृह दीजे । मिटै प्रपञ्च बात यह कीजे ॥
ये हमते सरवरि कब करते । जो पै उनकर पक्ष न धरते ॥
इनहीं के बल वे वरिआरा । यहु अहीर है बड़ा गवाँरा ॥
नृप रुख लखि हरि अन्तर्य्यामी । भे अति उग्र उरुश्रुआरिगामी ॥
उठे तुरत तब शारँगपानी । कहि तुव मृत्यु नकट नियरानी ॥

हरिसँग भारद्वाज सुत, गङ्गासुत गाङ्गेय ।
वाहुलीक विकरण करण, चले सङ्ग उठि तेय ॥
करत बतकही सबनते, चलेजात घनश्याम ।
राखि लोग सब द्वारपर, गयो विदुरके धाम ॥
श्वेत केश शिर शोभिते, ओढे श्वेता दुकूल ।
देखो कुन्ती जाय हरि, सादरके समतूल ॥

पितास्वसा कहँ कीन्ह प्रणामा । आशिष दियो होय मनकामा
हरिहि विलोकि नयन जलछाये । माथ सूंघि हरि कण्ठ लगाये
कुशल रहे वसुदेव कुमारा । मैं अनाथके प्राण अधारा ॥
बोले कमल नयन यह बाता । तुम्हरी कृपा परम कुशलाता ॥
धर्म्मनरेश समेत कुटुम्बा । कह्यहु प्रणाम सुनहु अब अम्बा ॥
सुनि यह वचन भयो परितापा । लागी कुन्ती करन विलापा ॥
उर दुख दुसह बरत ज्वर होली । पुनि कुन्ती औपनिसों बोली ॥

सबकोउ कहत पञ्चसुत शूरा। हमरे जान भये अब क्रूरा॥
लाख तजो सुत काम न आये। विदुर अन्न दै हमहिं जिआये॥
अब तुमते कहियत वनवारी। तुमहूं छांड़ीं सुरति हमारी॥
पालन योग्य तिहूँ पुर दारा। बाल पिता तरुणी भरतारा॥

वृद्ध वैस सुत चाहिये, करहि मातु प्रतिपाल।
अपनो काटो कृष्ण हम, विदुर अन्नते काल॥

धर्मराज छाँड़ो सब धर्महि। त्याग कीन्ह क्षत्रिनके धर्महि॥
नृप विराटको करि सेवकाई। राज्य तजो अरु लाज विहाई॥
उदर पालि सुत दिवसबितावहिं। दुर्योधन भयमानि न आवहि
सुनहु कथा इक कहत बखाना। यद्यपि सब जानत भगवाना॥
विंदुल नाम एक क्षत्रानी। राजा शक्तिकेतुकी रानी॥
सोहति नगर अवन्तीवासी। सब चरित्र हम कहत प्रकासी॥
माहिषमती भूप बलधामा। ताको चन्द्रसेन असनामा॥
निज दल साजि निशान बजाई। घेरो नगर अवन्ती आई॥
सत्यकेतु निसरे भूपाला। भयो युद्ध जूझे तेहि काला॥
लूट्यो नगर लगायो आगी। गर्भवती बिन्दुल उठि भागी॥
चली पराइ दुखिय अधिकाई। दारानाम नगर चलिआई॥
ब्रह्मदत्त तहँ रह्यो भुवाला। सब प्रकार कीन्हों प्रतिपाला॥

यद्यपि जानत सकल तुम, तदपि कहौं गोपाल।
नृपतरुणीकहँ त्यहि नगर, बीति गये कछुकाल॥

ताके सुत अभिरामा। ताको कृष्ण युद्धजित नामा॥

ोढ़ विलोकि मातु सुखपावा । शशिसमबढ़तबारनहिंलावा ॥
देनप्रति नगर बालकन सङ्गा । खेलत रहत विहङ्ग पतङ्गा ॥
ातु पढ़ायो पुनि धनुवेदा । समरथदेखि तज्यो मन खेदा ॥
ुतहि बुलाइ मातु उपदेशा । तुम पितु रह्यो उजैन नरेशा ॥
ाहिष्मती भूप वध कीन्हा । राजतुम्हारछीनि तेहिलीन्हा ॥
ब सुत और न बाद विचारहु । लेहु भूमि निजअरिकहं मारहु ॥
बलगि मरन न तुवपितु घाती । तबलगि पुत्र जुड़ात न छाती
त्तु तुम्हार जियत संसारा । नाहक चत्रि वंश अवतारा ।

कह्यउ भूपसुत मातुते, सुनिये वचन प्रमान ।
मैं दल बल अरु द्रव्यविन, अरि सँग सेनमहान ॥

ासु मातु हरि कहत रिसानी । बालक ते बोली मृदुवानी ॥
ानत सुनत चत्रिकुल धर्मा । ताते मन मानत तुम भर्मा ॥
ड़े अकेल न मनभ्रम आनै । कीट समान कोटिदल मानै ॥
ाते तात तजो सब शोका । जीते सुयश मरे सुरलोका ॥
ातुवचनते उठि रणकीन्हा । करिअरिनिधनराज्यनिजलीन्हा ॥
रिसाहस सोइ भयउ भुवाला । और कथा सुनु दीनदयाला ॥
जसे धर्म्मराज अवतारा । सो हरि सुनहु सकल व्यवहारा ॥
यो हमार भूप नरनाहू । दीन्हों दण्ड धरा सवकाहू ॥

शशिसमकीरति लिखिरही, भानु समान प्रताप ।
देवविटप सम दान कहँ, वलिसुरेश जनु आप ॥

राज्यकरहिं नृपसुख अधिकाई । बुद्धिचचुकी फिरी दोहाई ॥

सचिवविदुरअति भयउसुजाना। धर्म शील विज्ञान निधाना॥
बाह्लीक गङ्गासुत दोऊ। अरिघालक जानै सब कोऊ॥
आज्ञा भङ्ग जवन दिशि होई। आनै बांधि होइ किन कोई॥
एकदिवस निजसहित समाजा। सभामध्य नृप पांडुविराजा॥
भीषम ते तब वचन उचारा। सुनहु मनोरथ सुभग हमारा॥
महिपर्यटन होत मन मोरा होइ पिता जो आयसु तोरा॥

हँसि बोले गांगेय तब, जो इच्छा मनमाह।
सेन लेहु चतुरङ्गिनी, शुभ कीजै नरनाह॥

भीषमकी आज्ञा जब पाई। चल्यो भूप सँग दलसमुदाई॥
माद्रीसङ्ग सहित स्वहिं लीन्हा। पटह बजाइ गमनपुनिकीन्हा॥
पूरब दच्छिण पश्चिम देशा। जीति जीति लिय दण्डनरेशा॥
जो कछुवस्तु जीति नृप पायो। बुद्धिचच्चु कहँ सकल पठायो॥
सेन समेत बजाइ निशाना। उत्तरदिशि नृप कीन्ह पयाना॥
लैलै दण्ड भूप सब आये। द्वैपायनके शीश नवाये॥
यथायोग्य सबते नृप लीन्हा। तिनकहँ अभयदानपुनिदीन्हा॥
लीन्हें सङ्ग चमू चतुरङ्गा। चढ्यो भूमिगिरि शृङ्गउतङ्गा॥
करि दर्शन नारायणकेरा। शैल हिमालय कीन्हें डेरा॥
तहँ सबनृप परवतिया आये। दोऊ पायन शीश नवाये॥

जलसुन्दर अरु फल सुभग, फूले कुसुमसुवास।
गिरिपरदेखि सुपास अति, कीन्ह नरेश निवास॥

मृगयाकहँ राजा। गयो भूपसँग सुभटसमाजा॥

तहँ ऋषि परमगहन इकरहई । कामविवशनिजतियसनकहई ॥
ज्ञानध्यानतनु सकल भुलाना । वासर महँ मांग्यो रतिदाना ॥
सुनिद्विजवचन कहत तियसोई । रति दिन नाथ पशुनकी होई ॥
कह द्विज नारि मृगातनुलीजै । हम मृगह्वै तुमते रतिकीजै ॥
काम बाण तुम्हरे उर लागा । ज्ञान विवेक सकल तुव त्यागा ॥
असकहि तुरत मृगीतनुधारा । ह्वैमृगतबद्विज करत विहारा ॥
पतिको वचन तजै जो नारी । परै नरक पावै दुख भारी ॥

यहि विचार द्विजत्रिय कियो, पियको वचन प्रमान ।
गयो पाण्डु तत्क्षण तहां, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वाविंश अध्याय ॥ २२ ॥

कह कुन्ती गोपालते, सुनिये दीनदयाल ।
मृगविलोकि भूपालतब, तज्यो बाण ततकाल ॥

लागत बाण विकल ह्वै घूमी । मानुषरूप परयो द्विज भूमी ॥
गिरतहि तुरत प्राणतजि दीन्हा । ऋषि तरुणी अतिरोदनकीन्हा ॥
कह्यो वचन करि क्रोध अपारा । लै मम शाप भूप चण्डारा ॥
सो रतिकरत मरयो पति जैसे । तजो नरेश प्राण तुम तैसे ॥
आयो शिबिर मानि गिलानी । करै न सुरति भूप भयमानी ॥
यहि विधिशाप विप्रतियदीन्हा । सो नरेश मोते कहि दीन्हा ॥
भयो भूप उर नाथ वियोगा । विदाकिये घरकहँ सब लोगा ॥

दोउ तिय सङ्ग भये वनवासी। उदासीन जिमि फिरैं उदासी॥
परम गहनगिरि देखत फिरहीं। जप तप योग नेम व्रत करहीं॥

चन्द्रभाग पर्व्वतगयो, लै युवती युगसाथ।
विरची पर्णकुटी तहां, कीन्हवास नरनाथ॥

पावन मान सरोवर तीरा। करहिं महातप सुनु यदुवीरा॥
मास नन्दिनी करि असनाना। ऋषि समाज नितसुनहिंपुराना॥
श्रुतिपथ सतमारग आचरहीं। होत अस्त रवि अशन न करहीं॥
एक दिवस पर्णशालहि आये। मोहिं विलोकिनयनजल छाये॥
मैं पूछा क्यहि हेतु उदासा। तब नरेश इमि वचन प्रकासा॥
सन्ततिहीन भयो मैं रानी। करहुँ न रतिहिशापभयमानी॥
तव श्रीपति मैं धीरज कीन्हओं। सिखयेमन्त्रऋषयकहिदीन्हओं॥
सुर आकर्षण विद्या जानी। सुनत नरेश धीर तब आनी॥
आज्ञा दीन्ह करौ सुर जापू। तब मैं कह्यो भूप यह पापू॥
पतिव्रता परपति मन देई। सुकृत जाइ जग अपयश लेई॥
वेद पुराण विदित कह राजा। होइ दोष नहिं सन्ततिकाजा॥
तनुसुख हेतु नारि जो करही। सुकृत नशाइ नरकसो परही॥

सुर आकर्षण जपहु तुम, मम अनुशासन मानि।
करहु वंशउद्धार अब, तजि मनकी गिलानि॥

पति निदेश मेटो नहिं जाता। धर्माकर्ष जप्यो सुरताता॥
धर्म्म न लागी वारा। दोहद भयो विदित संसारा॥
जन्म युधिष्ठिर लीन्हों। अति उतसाह पाण्डुनृप कीन्हों

छाये नभ पथ गगन विमाना। सुरसुन्दरी करहिं कलगाना॥
शङ्ख बजाइ दुन्दुभी दीन्हों। पुहुपमयी वसुधा सब कीन्हों॥
तब यह भयो गगन महँ वानी। तुम सुतभयो भागवत रानी॥
धर्म्म स्वरूप भूप अति भारी। एकछत्र वसुधा अधिकारी॥
होई बालक बलिसम दानी। नारद सम होई विज्ञानी॥
हरि सेवक प्रहलाद समाना। सुरपति सम होई बलवाना॥

रविसुत सम जगनाथ कह, तेज तरणिको रूप।
जाके सम तिहुँ लोक महँ, होइ न औरो भूप॥

धर्म्मशील अतिकुल उजियारा। होइ अजीत शत्रु संसारा॥
याके राज अकाज न होइहि। ह्वै निश्चिन्त प्रजा सुखभोगिहि॥
कहि मृदुगिरा बोधकरि मोका। गये विबुध सब निजनिजलोक
जूप व्यसन करि कर्म्म अलीना। भये धर्म्मसुत राज्य विहीना
यह हरि अद्भुत बात अनूठी। ह्वै गइ गिरा सुरनकी झूठी
यहि प्रकार बहुकाल वितायो। नृप समोद पर्णशालहि आ
मोते विहँसि कही नरपालक। अब तुम प्रगटकरहु इक बा
विना सहायक राज न होई। ताते चहिय भूप सत दोई
ज्येष्ठ कनिष्ठ उभय जग भाषा। पूरणकरहु मोरि अभि
हि विधि नृप सम्भाषण कीन्हा। सुनिय नाथ उत्तर मैं
मैं नहि आज्ञा करि सकौं, मानतहौं मन भीति
उचित सिखावन चाहतम, यह कुलटनकी रीति

सुनि नरेश बोल्यो तब आपू। देवपरस कीन्हें नहि पापू॥
देवाकर्षण सब तुम जानहु। करि जप तप देवनको आनहु॥
पवनमन्त्र मैं सुमिरण कीन्हा। आइ प्रभञ्जन दर्शन दीन्हा॥
भये रमित आनँद अति जीमा। दोहद उभय प्रगटभय भीमा॥
भयो गगन सुर गिरा प्रमाना। होइहि बालक अति बलवाना॥
महावीर जानिहि संसारा। याते सब अरिकुल संहारा॥
कौरव सहित कुशल ना उनके। हरि भे वचन झूठ देवनके॥
यहि विधि वर्षबीति यक गयऊ। तादिन नाथ चरित यहभयऊ॥
पर्णकुटी ते उठेउ समोदा। लीन्हों भीमसेन कहँ गोदा॥

जाइ विलोक्यउ रुचिर यक, चन्द्रभागको श्टङ्ग।
तापर भई अरूढ़ मैं, बालक लियो उछंग॥

तहँ बालघी सिंह फटकारे। गर्जत सन्मुख चला हमारे॥
म सभीत तनु सुधि बिसराई। परा भीम गिरिगोद विहाई॥
होइ सरोष केहरि की ओरा। चला निशंक करत रव घोरा॥
हाली धरा शिला गे फूटी। जहँ तहँ परे वृक्ष बहु टूटी॥
गर्जत भीम भयउ अति घोरा। गिरेउ सिंह महि रहेउ न जोरा
देखि समीप बार नहिं लाग्यो।अति सभीतपुनिसों उठिभाग्यो
लाख भवन महँ खम्भ उपारा। जरत बचाइ लीन परिवारा॥
एक चक्र बकवदन विदारा। दैत्यहि एक विपिन महँ मारा॥
त कीन्हेउ निज दारा। असबल विदित भीम संसारा॥
भीमसेन कहं भूली। की हरि भई बाँहयुग टूली॥

व सुनियत कीचक सो भाई । मारेउ भीम वार नहिं लाई ॥
जरासन्ध कीन्हों दुइ फारा । अति बलवान न लागी बारा ॥
अति निलज्जभे पाण्डुसुत, भई टेककी हानि ।
अब आवत नहिं युद्धकहँ, दुर्योधन भय मानि ॥
पकरेउ केश दुःशासन आनी । भई विकल पाण्डवकी रानी ॥
सकेउ न देखि भयो मनमाखा । तादिन भीमसेन प्रणभाखा ॥
तुव शोणित अस्नान करावों । तादिन सुनु तिय केश बँधावों ॥
क्षत्री करै न प्रण प्रतिपाला । कहौनिलज त्यहिदीनदयाला ॥
जियत दुःशासन अरु कुरुराजा । बहुअतिअधम न आवत लाजा ॥
अवलगि सुनत रहो सुत शूरा । वसुधा मध्य शब्द बहु पूरा ॥
अब सुनियत अक्रूर अमानी । पूरि रही जग महँ यह वानी ॥
त्याग्यो प्रण मन लाज न आई । भई कान्ह अब जगत हँसाई ॥
यद्यपि जानत नाथ तुम, नीतिकाल व्यवहार ।
तदपि कहत जेहि विधिभयो, पारथको अवतार ॥
मोते कही भूप यह वानी । वचन हमार सुनहु सुखदानी ॥
ज्येष्ठ कनिष्ठ भयो सुत दोई । अब सो करिय मध्यसुत होई ॥
सुनि नृप गिरा शीशधरि लीन्हा । सुनासीर आकर्षण कीन्हा
आवत शक्र न लागी बारा । दोहद भयो विदित संसारा ॥
शुभदिन शुभघटिका जब भयऊ । तादिन जन्मपार्थ जगलयऊ
देखनको विमान नभ छायो
सुरन सहित सुरनायक आयो ।

विश्वावसु घटसुत गन्धर्वा। गावत विविध राग सुर सर्वा॥
मंजुघोष मेनका घृताची। तोरहिं ताल तान गति नाची॥
बाजहिं पटह शङ्ख करनाला। वर्षहिं विबुध कल्पतरुमाला॥

विबुध नटी आईं सकल, करत सुमङ्गल गान।
पूरिरह्यो आनन्द जग, सबलसिंह चौहान॥

इति त्रयोविंश अध्याय॥ २३॥

यहि विधि बीति यामयकगयऊ। मधुरगिरा नभमण्डलभयऊ॥
होइहि बालक अति धनुधारी। परमधर्म्म श्रीहरि हितकारी॥
व्रज महँ होइ कृष्ण अवतारा। सो याको होइहै रखवारा॥
हम सब देवनके तारायण। ते दोऊ हैं नर नारायण॥
नर अर्ज्जुन नारायण यदुपति। ये दोऊ जानो एकै गति॥
कह्यो कर्ण सूली यह नामा। गये अमर सब निजनिज धामा॥
तुव बलहीन जगत महँ पारथ। यह मेरोतन और अकारथ॥
भयो न अमर वचन कछु साँचा। मरेउ न कर्ण आजुलगवांचा
दियो काढ़ि दुर्योधन राई। वनवन फिरत लाज नहिं आई॥
ऐसो सहै होइ जो हीना। है बलिष्ठ अरु अस्त्र प्रवीना।
गर्व कियो हनुमान से, बांध्यो सागर वारि।
तानन कीन्हों वाटनभ, हाथी लियो उतारि॥
नव तकवच वध कीन्हा। धनपतिजीति दण्डलै लीन्हा॥

फूंके वन खाण्डीव गरेरा । नाश्यो गर्व पुरन्दर केरा ॥
द्रुपद नरेश स्वयम्वर माही । भेदि मत्स्य द्रौपदी विवाही ॥
इन्द्रकील रण शम्भु रिझायो । ह्वै प्रसन्न सब अस्त्र सिखायो ॥
सकलधरा निजवल वश कीन्हा । द्रुपद जीति गुरुदक्षिणदीन्हा॥
देव दैत्य मानव बल भारी । तुव प्रसाद जीते बनवारी ॥
गये साजि कौरवदल भारी । भीषम द्रोण कर्ण बलभारी ॥
ते अर्ज्जुन विराट पर जीते । अब क्यहि काज होत भयभीते ॥
केहि कारण अब बार लगाई । मिलि रणभूमि करै कदराई ॥
कह कुन्ती सुनिये यदुराई । पारथ ते कहिये समुझाई ॥
दुर्योधन भय मनहिं न आवत । अपने कुलहि कलङ्क लगावत ॥
सिंहवंश महँ भयो सियारा । देखत तुमहिं नग्न भै दारा ॥
क्षत्रिधर्म्म दीन्हों सब खोई । बांस वंश महँ भयो धमोई ॥
तुम अति निलज लाज सब त्यागा । उपजे हंसवंश जिमिकागा ॥
शत्रु तुम्हार शीशपर गाजत । देखत नयन नेक नहिं लाजत ॥
की तुम मरहु सकल विष खाई । की आयुध धरि लेहु लराई ॥
हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा । तुम अति निलज न आवत लाजा ॥

की यदुनायक जाय तुम, उनहिं कहो समुझाय ।
करै युद्ध नत नाथ मैं, मरौं हलाहल खाय ॥
यहि प्रकार कहि कृष्णते, हृदय बहुत सन्ताप ।
सुधिकरि कुन्ती सुतनकी, लागी करण विलाप ॥

कह्यो कृष्ण माता सुनिलीजे । दिन दश पांच धीर

बन्धुन सहित धर्म्म नरपालक । आवतहैं कौरवकुल बालक ॥
करिहैं युद्ध विजय सब होते । होइहैं काज सकल मन चीते ॥
सुनि हरि वचन धीर मन आनी । लगीकहन निज प्रथमकहानी
ममसुत देखि हृदय अकुलाई । माद्री निकट भूपके आई ॥
सुत न भये दारुण दुख व्यापा । नृपसमीप अतिकीन्ह विलापा
कारण पूछि भूप दुखपावा । निकट बोलिम्बहिं वचन सुनावा॥
विप्रबधू को शाप सयानी । तुम कहँकह्यो बात सब जानी ॥
मोते कछु निसरी नहिं काजा । अस कहि गये सकलदिगराजा
करहु उपाय तोरि यह दासी । उपजै सुत पाव सुखरासी ॥
तब हरि दुखित भये मैं जाना । धीरज दीन कीन सनमाना ॥
आगम करि अश्विनीकुमारा । आये धरणि न लागी बारा ॥
विबुधवयदमिलिव्योमसिधायो । भयो गर्भ माद्री सुख पायो ॥

भे अनन्द भूपाल मन, सुनहु देवके देव ।
अति विचित्र तव माद्रिसुत, भये नकुल सहदेव ॥

इकदिन भयो चरित भगवाना । मुनि समाज नृप सुने पुराना॥
भोजनको मैं साज बनावा । रह्यो शेष दिन भूप न आवा ॥
गहवर भई नाथ मोहीते । करते अशन भूप दिन बीते ॥
माद्री करि शृङ्गार गिरि ठाढ़ी । तनुते निकसि ज्योति अतिबाढ़ी
स्वरूप दिननायक मोहे । भये न अस्त जान पर सोहे ॥
कीन्ह भूप सुख पाई । मद्रसुता प्रणशालहि आई ॥

होतहि अस्त ओट रवि भयऊ। दीख नरेश शयननिशि गयऊ॥
कारण हमहिं महीपति पूछा। मैं कहिदीन्हसकल छल छूछा॥
भावी कौनिउ यतनते, मिटि न सकै यदुवीर।
कामविवश नरनाह ह्वै, सके न मनधरिधीर॥
मोते कहेउ भूप बहु वेरा। माद्री विवश भयो मन मेरा॥
शाप सुरति मैं नाथ दिवाई। सुनी श्रवण कछुमन नहि आई॥
मद्रसुताते करि अनुरागा। परसत देह भूप तनु त्यागा॥
माद्री सहित मोहिं दुखव्यापा। उच्चस्वरकरि कीन्ह विलापा॥
रोदन सुनत महामुनि आये। कोल किरात भील सबधाये॥
रोवहिं कहि नृप कीरति रूरी। आरत शब्द रहा तहँ पूरी॥
जेमुनि नृपके परम सनेही। ज्ञानकथा कहिधीरज देहीं॥
म्वहिं प्रबोधकरि चेत बहोरी। चिताबनायसि काठ बटोरी॥
जरनचली मैं भूपसँग, पाछिलि प्रीति दृढ़ाय।
मद्रसुता तब विकलह्वै, गहेचरण लपटाय॥
हमरे हेत भूप तनु त्यागा। भा कलंक अरु पातक लागा॥
तुम्हरे पञ्च सुनत सम प्रीती। तसिहमरे नहिं निपटअनीती॥
जो तुमरहौ करौ प्रतिपालक। जौलगि पुष्टहोयँ सबबालक॥
म्वहि प्रबोधि लैकरि नृपअंगा। चढ़ी चिताले शीश उछंगा॥
त्यहिक्षणधन्यभूपकी भामिनि। प्रियके संगभई सहगामिनि॥
चढ़ि विमानपतिसँग सुरलोका। गई भई सो परमविशोका॥
जीवत रहिउ छाड़िनिज नेना। हम तजिलाज दुसहदुखहेना॥

सुतन लागि कृतजन्म खुवारी। तिनहरितजी वृद्ध महतारी॥
धर्मराज ते कह्यो सँदेशा। करतयुद्ध नहिं मानिअँदेशा॥
क्षत्री धर्म दूरि है याते। विरद सँभारि लरौ सुतताते॥
नाहिन हीन वंश अवतारा। भे कादर सुत मनहि विचारा॥
कुरुवंशिन कर अनुचर होई। अवलगयुद्ध सकात न सोई॥
तुम शन्तनु नृपके कुलमाहीं। जासु युद्ध सुरअसुर सकाहीं॥
मातु पक्ष नहि हीन तुम्हारा। है यदुवंश विदित संसारा॥
शूरसेन के हौ तुम नाती। तिनकोसुयशविदितसबभाँती॥
पुहुमी के राजा बहुजीते। बचे रहत अजहूँ भय भीते॥

मातुपक्ष पितु पक्ष अब, विदित सकल संसार।
शूरवीर अरु धीरधर, तुम सुत भयो लेड़ार॥
कहा कृष्णसमुझायतुम, यहसिख मानिहमारि।
करहु राज्य तुमआपनो, अबनिज वैरिनमारि॥

जो चुपरहौ साधिनिज मौनहि। मिलिहिनराज्यकरहुवनगमनहि॥
अस्त्र सनाह त्यागिकर देहू। भिक्षा करहु कमण्डलु लेहू॥
कितौ करहु तुम मोरि सिखाई। मारहु शत्रु सरौ मनुसाई॥
जो न लरहु कौरवसन आई। तौ मैं मरहुँ हलाहल खाई॥
भीमहि कहेउ सँदेश हमारा। कस कादरभा जीव तुम्हारा॥
शूरवीर तुम्हरी जगलीका। लरतनसुततुमकरपननीका॥
[illegible]ते मोहि भरोस तुम्हारा। बलपौरुषकितगयउतुम्हारा॥
[illegible]ाट पुर बैठि लुकाने। मिलिहि भूमिनहि पुत्रडेराने॥

करत तपस्या चारियुग, सब नरेश जेहिलागि।
दूरि बैठि सुतनारिद्रव, राज्य दियो तुमत्यागि॥

रहे बैठि चुप लाज अकाजन। सिखौधनुषविद्याकेहिकाजन॥
गदा युद्ध केहि काजन सीखा। सो प्रभावकछु नयन न दीखा॥
कहेउ सँदेश भूप के आगे। करहू युद्ध आनि भ्रम त्यागे॥
जो नहिं लरहु मानिडर हारेहु। नारिवचनकरिवनहिं सिधारेहु॥
हमनहि जियवपुत्र यहि लाजा। हँसत तुमहि दुर्योधन राजा॥
पुरविराट हारेउ कुरुनायक। अवसुतनिफलभयेतुवसायक॥
कीन्हप्रघ्रसप्रण सो विसरावा। भूली वृद्ध मातु रण दावा॥
सवते बहुत तुम्हारी आसा। आवतसो न मानि अरिवासा॥
देव दैत्य गंधर्व बलभारी। तुवशर सहि न सकैं धनुधारी॥
यक्षराज निज युद्ध हरायो। करि मद भंग दण्डलै आयो॥
दुर्योधनहि तुम्हारी सरिके। करहुयुद्धनिज प्रणसुधि करिके॥

सोपौरुष भूलेउ नहीं, करत युद्ध नहि आय।
क्षत्रिधर्म खोयो सकल, दुर्योधन भय पाय॥

जो नहि लरत देखि दुखमोरा। अर्जुन धनुष बाण छुटतोरा॥
जीवन आश पुत्र कदराने। कर्णबाण भय मानि छिपाने॥
अरिलिपहँसहिअवणसुनिदाता। मरै लाजवश कायर ताता॥
क्षत्री धर्म नहीं तनु माहीं। तुमअतिनिलजलाजमननाहीं॥
कह्यो सँदेश नकुलसन जाई। जीरण मातु तात विपदाई॥
तुम हैं सुत न और बरजोरा। जीत्यउन्हप भवरविमणोग

बलपौरुष तव नाहिं न जानत। तुमहूँ दुर्योधन भय मानत॥
धनुपकरे धरती थहराई। लाज तजी अरु भूमि गँवाई॥
धर्मशील अतिशय वलदाई। सो तुम वृद्ध मातु विसराई।
मोकहँ हरि अतिप्रिय सहदेऊ। भूले हमहिं विपति महँ तेऊ।
तुम हरि कह्यो हमार सदेशा। करहु युद्धतजिसकल अँदेशा॥
मिलिहै राज्य सत्यमत येहा। ह्वै है विजय न कछु संदेहा॥

बहुअधर्म तुम धर्मरत, गत विलोक मदमान।
ह्वै है जय संशय नहीं, सबलसिंह चौहान॥

इति चतुर्विंशे अध्याय॥ २४॥

यह तुम कह्यो द्रौपदीते हरि। कछु दिनरहौहियेधीरज धरि॥
पैहौ राज्य साज तुम येहू। प्रभुकी कृपा न कछु संदेहू॥
तम प्रभु धर्मराज समुझाई। करहुयतन ज्यहिहोइ लड़ाई॥
सब जगकहत सुनतकहँ खोटी। है विन युद्धबात अब छोटी॥
अस कहि कुन्ती रोदन कीन्हा। कृपासिन्धु तब धीरज दीन्हा।
दिनदश धरौ धरौ मन अम्बा। मरिहैंकुरुपतिसहितकुटुम्बा॥
अस कहिकृष्णविदापुनिकीन्हा। करतप्रणाम आशिषादीन्हा॥
दै अशीष कुन्ती सुखपाये। बाहर भवन दयानिधिआये॥

पँवरि द्वारमें आयकै, रथ अरूढ़ यदुनाथ।
पुर वाहर लग लोगसब, गये पठावन साथ॥

भीषम द्रोण विदा हरि कीन्हें । करिप्रणामनिजगृहमगलीन्हें ॥
बाह्लीक विकरनपुर लोगा । फिरे सकलहरिदीन्ह नियोगा ॥
करत प्रणाम कर्णकहँ जानी । रथ बैठारि लीन्ह गहिपानी ॥
हँसिके कृष्ण कही यह भासा । सुनहु कर्ण पूरब इतिहासा ॥
शूरसेन नृप अति बल भारे । भये पितामह विदित हमारे ॥
कुन्ती नाम सुता उपजाई । सो तप हेतु नदी तट आई ॥
तहँवां दुर्वासा ऋषि आये । देव अकर्षण मन्त्र सिखाये ॥
एक दिवस सुखता अधिकाई । मन्त्र परीक्षा की मति आई ॥

बालभावके व्याजते, नहिं कामना विचारि ।
जपेउ अकर्षणमन्त्रतब, दीन्हयउ दरश तमारि ॥

सहस किरण तनुतेज अपारा । भईविकलनहिं रह्यो सँभारा ॥
मूंद्यो नैन बैन नहिं आवा । कीन्हप्रभाकर निजमनभावा ॥
मूर्छा विगत नैन जब खोली । तब कुन्ती लज्जित ह्वै बोली ॥
यह सुरकीन्ह नीकि नहिंबाता । भाकलंकयहि अवपितुमाता ॥
रहहि गुप्त जानहि नहिं कोई । यातेतुमहिं कलंक न होई ॥
अङ्ग भङ्ग नहिं होइ तुम्हारा । ले तिय आशिर्वाद हमारा ॥
भये दिवाकर अन्तर्द्धाना । यह चरित्र काहू नहिंजाना ॥
चढ़िविमान रवि गगन सिधाये । दोहद भयउ गर्भ तुमआये ॥
लज्जित मातु पिता भयमानी । भवन कोन महँ रहेलकानी ॥
कौरवन तुम कहँ कुन्ती जायो । डारि मँजूषा सहित बहायो ॥

प्रकट भये तुम गर्भते, तनु द्युति पुञ्ज अपार।
धनुषबाण कुण्डलकवच, सहितलीन्ह अवतार॥
देखि तरणि सम तेज अपारा। दीन्हबहाइ सरितकी धारा॥
बहत नदी तनुतेज विराजा। जलते प्रकटमनहुँ दिनराजा॥
तहँ कुरुनाथ सारथी आवा। बहतप्रवाहदेखि तेहि पावा॥
ताकी तरुणिरही बिनबालक। लै गा भवन कीन्हप्रतिपालक।
तुमही धर्म्मराजके भाई। तजहु शत्रु सँग करहुसहाई॥
वचन हमार समुझि मन अपने। और विचार करहुजनिसपने॥
सुनेउस्रवण श्रीपति मुख बाता। बोले वचन कर्ण मुसक्याता॥
सुनी स्रवण तुमते जब बानी। निश्चयमातु प्रथमहमजानी॥
जानेउ धर्म्मराज हम भाई। भयो बहुतसुख कहा न जाई॥
क्षत्रीधर्म्म नाथ यह नाई। कौरव तजि पांडवपहँ जाई॥
सहित विवेक कहौ हरिजोई। तुवशिषमानि करब हमसोई॥
चहौ नाथ जो सत्य छुड़ाई। सोहम करब न कोटि उपाई॥
यहकहि कर्ण मौनगहि रहेउ तबयदुनाथविहँसिदृमिकहेऊ॥
राज्य पाट तुम लेहु घनेरा। षष्ठम अंश द्रौपदी केरा॥
पाँचबन्धु सेवाकरहिं, तुम्हरी सहित समाज।
चलहुकर्णजहँ धर्म्मसुत, अब हूजिय महराज॥
सुनि हरिवचन कर्ण हँसिदीन्हा। नीकविचार नाथ तुमकीन्हा॥
जानहिं मोहिं युधिष्ठिर भाई। करैं राज्य नहिं धर्म्म विहाई॥
देहै सब जबहीं। हमदेइब कुरुपतिकहँ तबहीं॥

ग्रासें होइहि परम अकाजू । रहेउ न नाथ पांडु कुलराजू ॥
और विचार करौ जनि स्वामी । रहे चुपाइ जानि अनुगामी ॥
कह हरि कहेउ परमहित तोरा । चलहुकर्णसुनि मोरनिहोरा ॥
तुम कुन्ती के जेठे बालक । करहुराज्यअरुकुलप्रतिपालक ॥
तुम हरि कही साँचसब सोई । ऐसे समय उचित नहिंहोई ॥
कुरु पाण्डवन वैर है भारी । मोरे बल रोपी उन रारी ॥
मोहिं कुरुनाथ बन्धुकरि भाषा । अशनवसन कछुबीच न राखा
सहित धरा धन सेन समाजा । कीन्हेउ अङ्गकोशको राजा ॥

पाल्यो उन लघु पुत्र ज्यों, माने करि गुरुदेह ।
शीश समर्पण स्वामि सँग, पूरुवमानि सनेह ॥

औरो कृष्ण सुनौ मतमोरा । सो अब करिय दास मैं तोरा ॥
लज्ज भूप दोउ ओर प्रतापी । तिन महँ पुण्यवानको पापी ॥
समर कराय करिय प्रभुसोई । सुख गवाँ पावै सब कोई ॥
अबतुमजाहु विलम्ब न लावहु । पाण्डवकटकसाजिलैआवहु ॥
श्रीहरि और न करहु विचारा । अब रणहोय हमार तुम्हारा ॥
असकहि कर्ण बिदापुनिमाँगी । प्रभुपद परसिचलेउअनुरागी ॥
तनुउतचल मन हरिके साथा । पहुँचे कर्ण जहां कुरुनाथा ॥
साम दाम भय भेद दिखाई । कही कर्णके मनहिं न आई ॥

दारुक हाँकेउ अश्वपुनि, चले वेगि भगवान ।
जाय युधिष्ठिर कटकमहँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति पञ्चविंश अध्याय ॥ २५ ॥

कथासकलमुनिवरणि सुनायो। जनमेजयन्टप मुनिमुखपायो॥
पाछे बहुरि सहित अनुरागा। लगेकहनद्दमिसकल विभागा॥
कटक समीप कृष्ण जब आये। धर्मराज सुनि आतुर धाये॥
सब बन्धुन मिलिकीन्हप्रणामा। लइगे जहाँ भूप विश्रामा॥
अर्घ्य देत आसन बैठारे। शीतलजल लै चरण पखारे॥
पूछेउ भूप कहा करि आये। वासुदेव हँसि वचन सुनाये॥
कहहरि तेहि एको नहिमानो। देन न कहत भूप अभिमानो॥
मिलिहि न और यतनते राजा। करहु युद्ध कीजै दल साजा॥

सुनतश्रवण नहि बात कछु, देवेको नहिचाह।
विनायुद्धनहिमहिमिलो, कोटि यतननरनाह॥

मन्त्र हमार भूप सुनि लीजै। साजो सेन विलम्ब न कीजै॥
होइ निशंक अब करहु तयारी। ह्वै है विजय कहत गिरिधारी॥
समुझत कृष्णवचन कछुहीमा। लरहु नरेश कही यह भीमा॥
अर्जुन कही भूप सुनि लीजै। सजिनिजकटकदुन्दुभी दीजै॥
करहुयुद्ध यह मन्त्र हमारा। होई सो जो लिखो करतारा॥
बोले वचन नकुल मुसकाता। अब न्टपलरौ न दूसरि बाता॥
जानत हमहिं दीन प्रतिपच्छी। रहौं चुपाय बात नहि अच्छी॥
अब जनि डरिय लरिय नरदेवा। बोले वचन नकुल सहदेवा॥

नहिं मानत हरिके कहे, भूले देखि समाज।
लरहु न करहु विलम्ब अब, कही द्रुपदमहराज॥

। सात्यकी सुन्दरि बानी। विनसंग्राम क्षत्रियन हानी॥

तातै अवशि युद्ध अब कीजै । रिपु रण जीति देश सब लीजै ॥
धृष्टद्युम्न यही मत राख्यो । सहितविराटशिखण्डी भाख्यो ॥
धर्म्मराज हरि मिलि ठहरावा । करब युद्ध यह मन्त्र दृढ़ावा ॥
तेहि अवसर तिन साज बनाये । भीष्मकपुत्र रुक्म तहँ आये ॥
कुण्डिनपुर नरेश बरिआरा । सो नृप वासुदेवको सारा ॥
है लघु बन्धु रुक्मिणी केरा । लीन्हें साथ कटक बहुतेरा ॥
गजरथ पदचर विपुल तुरङ्गा । अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा ॥

तेहि अवसर प्रापत भयो, भूपति सभामँझार ।
बैठारे पारथ निकट, सबहि जोहारि जोहार ॥

देखिउ धर्मराजकी ओरा । बोले वचन गुमान न थोरा ॥
जो आरत ह्वै राखो मोही । भूप अशत्रु करों मैं तोहीं ॥
बुद्धिचक्षुको नाम मिटावों । एकछत्र महिराज करावों ॥
हमते होउ भूप आधीना । करौं भूमि सब शत्रु विहीना ॥
सुनत वचन मन भीम न भायो । ह्वै सरोष यहि भाँति सुनायो ॥
रहत सदा हम कान्ह-भरोसे । कीट समान गनैं नर तोसे ॥
फिरि ऐसी जो बात विचारो । तौ डारौं पुनि जीभ निकारी ॥
मारौं त्वहि न अधम अभिमानी । मानत कृष्णदेवकी कानी ॥
औ रुक्मिणिकी कानि न थोरी । ताते बची मृत्यु सुनु तोरी ॥
जस तै वचन भूपने भाषे । अस जो कहत हमारे आगे ॥
रुक्मिणि-बन्धु जो न तुम होते । मारि तुरत यमलोक पठाते ॥
छाँड़त कृष्ण देवके नाते । सहँ प्रति लाज जात हरि ताते ॥

अस कहि भीमसेन रिस बाई। भुजा पकरिकै दीन्ह उठाई॥
चला तुरत जिय लज्जा पायो। दुर्योधनके भवन सिधायो॥

गये हस्तिनापुर सबै, निज सेना ले साथ।
अति आदरते उठि मिले, बैठारे कुरुनाथ॥

बैठतही इमि वचन बखाने। जो कुरुपति तुम होउ डराने॥
तौ हम होई तुम्हरे सङ्गा। पाण्डव रण जीतौं रणरङ्गा॥
जो तुम होउ अधीन हमारे। करौं काज कुरुनाथ तुम्हारे॥
सुनि कुरुनाथ क्रोध अधिकाई। कहि कटुवचनदीन्हदुरिआई॥
द्रोणी कर्ण सहायक मोरे। जीति सकै जगमहँ अस को रे॥
गुरु द्रोण जो अस्त्र सँभारै। देव अदेव सकल रण हारै॥
वृद्ध पितामह विदित हमारे। जिनसे परशुराम रण हारे॥
ते भृगुनाथ विष्णु-अवतारा। और को जीति सकै संसारा॥
मोरा बल कोउ थाह न पावत। ताहि मूढ़ तैं भर्म देखावत॥
बल तुम्हार हमरो सब जाना। जा दिन कृष्ण बाँधिकै आना॥
शीश मुण्डि कीन्हें अपमाना। बल छुड़ाइ दीन्हें जग जाना॥
हरिपाण्डवके भयउ सहायक। तेऊ नहिं मोरे रण-लायक॥

होइ सक्रोध कुरुनाथ तब, दीन्हेउ ताहि उठाइ।
अतिलज्जित होइ नाइ शिर, गयो भवन सकुचाइ॥

होइ प्रसन्न बोले मुनिराई। अब नृप सुनहु कथा मन लाई॥
[illegible] कृष्ण पाण्डव घर जबते। भा अतिविकलकुरुपतितबते॥
[illegible]न मन अति दुचिताई। शोचविवश निशि नींद न आई॥

प्रातहि होत द्रोण गृह आये। करि प्रणाम इमिवचनसुनाये॥
पाण्डव हमहिं वैर सरसाना। शरण तुम्हार भरोस न आना॥
होइय आप सहायक मोरे। अब मैं चरण शरण गुरु तोरे॥
असकहि नयननीर भरिलीन्हा। सुनिकै द्रोणउतरतेहिदीन्हा॥
भरत-वंशमें जन्म तुम्हारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा॥
राज्यनीतिमहँ बहुत प्रवीना। करत भूप तुम कर्म्म मलीना॥
कपट यूप कछु सत्य न हारे। तुम पाण्डव केहि हेतु निकारे॥
शकुनी मन्त्र मानि छल कीन्हा। आप कृष्ण कह अंश न दीन्हा॥

आप बली हैं पाण्डुसुत, अरु सहाय भगवान।
करहु भूप विधि कोटि तुम, जीति न सकहुमशान॥
उनको कछुअ न दोष नृप, तम अति कीन्ह अनीति।
जहँा धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति॥

वासुदेव हैं हरि अवतारा। उनहिको जीति सकै संसारा॥
ते दयाल् पाण्डवके जानौ। ह्वै है विजय सत्य करि मानौ॥
भीषम आदि सकलरणधीरा। रण-तीरथ महँ तजैं शरीरा॥
जानौ सब कौरव संहारे। हमहू कर्ण जाव रण मारे॥
होइहि सुनि सबकोमदभङ्गा। हम नृप करव तुम्हारो सङ्गा॥
हम मानन मनमें नहि त्रासा। भये वृद्ध नहि जीवन आसा॥
होइ निचिन्त बैठु अब राजा। हम तन तजब तुम्हारे काजा॥
काइ तु है बहुत कठिनाई। जुरै काल तौ करौं लराई॥

युद्ध जुरै पांडव सहित, मैं रोकौं घनश्याम।
कोटि शपथ भृगुरामकी, करौं घोर संग्राम॥
धीरज दीन्ह द्रोण गहि बाहा। अब तुम अभय होहु नरनाहा
द्रोणी कहो बन्धु सुनिलीजै। भयत्यागहु मनधीरज कीजै॥
तीनों लोक अस्त्रगहि आवै। मारौं सकल जान नहिं पावै॥
मनवच कर्म सुतोर सहाई। अब तुम अभयहोहुकुरुराई॥
भीषम भवन गयउ तब राजा। द्रोण कर्ण ले सकलसमाजा।
जाइ भूप जब दरशन कीन्हा। गङ्गासुत आदर करि लीन्हा॥
करि प्रणाम कौरव कुलदीपा। सत्यव्रत के बैठ समीपा॥
कह भीषम केहि कारण आये। सुनि महीप तब वचनसुनाये॥
बन्धु वैर शालत उर मोरे। आयों शरण पितामह तोरे॥
एक सबल तो पांडुसुत, औ सहाय भगवान।
कहेउ भूप भीषम सुनहु, तुम जानत बुधिवान॥
अब उनके दल जुरे अपारा। शूर एकते एक जुझारा॥
नृपकोवचनश्रवणसुनि लीन्हा। हँसि गांगेय उतर तब दीन्हा॥
उन न करेउ अपराध हमारा। तुम छल करि परदेशनिसारा॥
शकुनी कर्ण कुबुद्धि सिखाई। खोयहु तुमहि सुनहु कुरुराई॥
पुनि यदुनाथ बसीठी आये। मांगे पांच ग्राम नहिपाये॥
हम सब तुमहिं रहे समुझाई। सुनत नहीं धौं कुमतिसिखाई॥
भरोस मानि मन राजा। करत अनीतिनआवतकाजा॥
हमार श्रवण सुनि कीजै। नीच जातिको मन्त्र न लीजै॥

यह हैं कर्ण जातिको हीना । तुमहिं सिखावत मन्त्र अलीना ॥
जाति अहीर अधम अभिमानी । सुनि कुरुनाथ रहे चुपमानी ॥
उचित न कछु उत्तर पुनि जानी । उठिगा भवन मानि गलानी ॥

होइ सक्रोध बोले करण, सुनहु बात कुरुनाथ ।
जियत पितामह जब लगे, तौ न छुवों धनु हाथ ॥

यह कहि वचन कर्ण उठि गयऊ । दुर्योधन मन विस्मय भयऊ ॥
मुख मलीन कुरुनायक चीन्हा । देखि पितामह धीरज दीन्हा ॥
पाण्डवसहित आप घनश्यामा । जीति न सकहिं भूप संग्रामा ॥
करि मन कोप धनुष कर धारौं । सकलक्षितीशधरणिके मारौं ॥
को नरेश मोरे रण लायक । करौं निपात साधि धनुसायक ॥
चौविस दिनभृगुपतिरणकीन्हा । तिनते जयतिपत्र मै लीन्हा ॥
काशी नृपति स्वयम्बर ठाना । आये भूप भूमिके नाना ॥
देव दैत्य नर तनु धरि आये । जीति युद्धमें सकल हराये ॥

धीर धरौ चिन्ता तजौ, कीजै मन विश्राम ।
अभय होउ भूपाल अब, जो जीतै संग्राम ॥
राउ तुम्हारी ओर जो, देखै नयन उघारि ।
शत्रुभाव करि ताहिको, डारौं आंखि निकारि ॥

सुनि यह वचन धीरता आनी । कृपके भवन चला अभिमानी ॥
कृपाचार्य्य पद परशन कीन्हा । ह्वै प्रसन्न तव आशिष दीन्हा ॥
पूछेउ मुनि केहि कारण आये । समाचार कहि भूप सुनाये ॥
कुरु पाण्डवको कलह महाना । सो चरित्र तुम्हरो सब जाना ॥

हम उनपर साजौ अवधारी। भये सहायक श्रीबनवारी॥
बूझि परत नहिं मोहिं उवारा। अब मुनि एक भरोस तुम्हारा॥
अस कहि लोचन वारि बिमोचे। सुनतवचनमुनिमनमहँसोचे।
वचन हमार भूप सुनि लीजे। शोक त्यागि करि धीरज कीजे।
तजब देह भारत रण एहा। तजब न तुमहिं तजौ संदेहा॥

यहि प्रकार सन्मान करि, कीन्हें विदा भुवार।
सबलसिंह चौहान कह, गये कर्णके द्वार॥

इति षड़्विंश अध्याय॥ २६॥

कर्ण कुरुपतिकेर मत, वर्णत वरहि विभाग।
कह मुनि जनमेजय सुनहु, कथासहित अनुराग॥

पवँरि दुवार भूप जब आये। समाचार प्रतिहार सुनाये॥
सुनत कर्ण मनअतिअनुरागू। करतप्रणामलीन्ह चलिआगू॥
देइ उपायन भवन लै आये। अति अनूप आसन बैठाये॥
जोरि पाणि पुनि आयसु मांगा। बोलेउराउ सहित अनुरागा॥
अनल सहाय पवन कब याँचे। करैं सहाय सखा ये साँचे॥
तुम ते और मित्रको मोरे। मैं रण रच्यउ बाँहबल तोरे॥
जानन तुम गाङ्गेय रुठाने। तासुबचनसुनि मित्र रिसाने॥
लक जरठ वचन परतीती। तालनकरियकहतअसिनीती॥
न महँ वहु बुधि होई। जरा जनित डारै सब खोई॥
मित्र क्रोध नजि दीजे। उठिके युद्ध गवने कीजे॥

लरहु भ्रातृसन क्रोध करि, लेहु धनुष शर हाथ।
तुवबलते मैं रचेउँ रण, विहँसि कह्यो कुरुनाथ॥
सुनिकै कर्ण चित्त सुख माना। बार बार यह वचन बखाना॥
भूपति सत्य कहौं प्रण कीन्हें। तुमते उऋण न प्राणहुँ दीन्हें॥
अब निशंक होइय भूपाला। तव हित मैं करिहौं शरजाला॥
वरुण कुबेर इन्द्र यम आवै। ते मोते जयपत्र न पावैं॥
द्रुपद विराट भूप बहुतेरे। पाण्डव नहि हमरीसरि केरे॥
उनकहँ कृष्णदेव उपजावा। चहत बराबर युद्ध करावा॥
जबते भवन कूबरी डारी। बुद्धि-विहीन भये बनवारी॥
मम बल जानत भूप कन्हाई। गई भूलि सुधि कुमतिसिखाई॥
नाथ पठाइय दूत कोउ, धर्म्मराजपहँ जाइ।
करैं युद्धको जाइँ वन, उनहिं कहै समुझाई॥
कर्णवचन सुनि नृप सुखपाये। बोलि उलूक वकील पठाये॥
पृथक पृथक कहि सबन सँदेशा। करहु युद्ध की छाँड़हु देशा॥
सुनतसँदेश जो तुम नहिं आये। अब नहिं बचो जीव दबराये॥
की अब वेगि आनि तुम लरहू। की वन जाहु अस्त्र परिहरहू॥
जो तुम मान भये भय पावत। तौ अब हम विराटपुर आवत॥
लै सन्देश उलूक सिधाये। धर्म्मराजको सेनहि आये॥
पवँरि दुवार वेगि लै आये। द्वारपाल तब जाइ जनाये॥
नृप कुरुनाथ वकील पठाये। कहन सन्देश स्वामि पहँ आये॥
तब उलूक इमि वचन सुनावा। धर्म्मराज सुनि निकट बोलावा

कहत सन्देश भूपको याँची। सो अब सुनहु बात सब साँची॥
दूतनकेरि रीति असि होई। कहैं सन्देश सत्य सब सोई॥
अब नृप और विचार न कीजै। की उठिलड़हु कि बनमगलीजै॥
कर्णा भूप सन्देश तुम, सुनहु भूप दै कान।
कौरव पाण्डव भूमि सब, छाड़ दशों दिशिबान॥
पाहि पुकारि शरण जब एहो। तौ तुम जीवदान नृप पैहो॥
जो भूलत हौ कृष्ण भरोसे। तुम न बचहु दुर्योधनरोसे॥
जो कुबुद्धि पदवी रिसिआई। त्यहि त्यागहु जो चहहु भलाई॥
जो उठिलरहु बात नहिंमानहु। कृष्ण समेत मरे सब जानहु॥
सो सुनि भीम हिये रिसव्यापी। कहत सँभारिवचननहिंपापी॥
भे दृगअरुण खड्गकरलीन्हा। बरजेउ कृष्णापाणिगहिलीन्हा॥
अब जयविजय सुनो सबबाता। करइ न भूप दूतकर घाता॥
यदपि कहै कटु वचन वकीला। करै न क्रोध नरेश सुशीला॥
वरजेउ भीमहिं शारँगपानी। गयो उलूक भागि भय मानी॥
बोलि निकट नृप धर्मसुत, कह्यो वचन समुझाइ।
दुर्योधनते यह कहौ, अब हम पहुँचे आइ॥
अब तुम मृषा न जानहु बाता। कृष्ण शपथ ऐहौं सुनु प्राता॥
निज पौरुष तुम करहु सँभारा। कोटियत्न नहिं होइ उबारा॥
अस कहि पठयो फेरि उलूका। चला हृदय उपजी अति हूका॥
अरूढ़ होइ तुरत सिधाये। नगर हस्तिनापुर चलिआये॥
रि दुवार तज्यो असवारी। गा दुर्योधन सभा मँझारी॥

भीषम द्रोण कर्ण सब राजा । सभामध्य कुरुनाथ विराजा ॥
देखो राज मण्डली भारी । बैठेउ सबहिं जोहारि जोहारी ॥
कह नृप कहन सन्देश पठाये । समाचार उनके कछु लाये ॥
हँसि बोले तब वचन उलूका । कह्यो युधिष्ठिर नृप दुइ टूका ॥
हम आवत तुव होहु तयारा । करहु युद्ध नहिं और विचारा ॥
सकलसभामहँ तुमहि सुनावत । होहुसचेत धर्म्मसुत आवत ॥

शपथ कीन्ह भगवानको, यह उन कह्यो सन्देश ।
प्रात होत अब आइहौं, अब न विलम्ब नरेश ॥

सुनहु सन्देश न राखो गोई । करौ भूप अब जो रुचि होई ॥
बोलेउ सुनत कर्ण रिसवाई । कहे वचन पुनि सबहि सुनाई ॥
अब नृप धर्म्मराज मम नेरे । आवत कठिन कालके प्रेरे ॥
रण सन्मुख हरि अर्ज्जुन पावों । मारि सकल यमलोक पठावों ॥
शरपञ्जर करि भीम दबावों । मारि सकल पाण्डवविचलावों ॥
बाँधि युधिष्ठिर वरि मनुसाई । जयतिपत्र देहौं लिखवाई ॥
सहि न सकें पाण्डव मम सायक । अबतुम अभय होहु नरनायक ॥
कौरव चरित कहेउँ मै गाई । अब सुनु अपर कथा कुरुराई ॥

होत प्रात उठि धर्म्मसुत, गये जहां यदुराय ।
करहि वन्दना जोरि कर, चरण-कमल शिर नाय ॥

कह्यो युधिष्ठिर अब बनवारी । साजि कटक अबकरहुतयारी ॥
पठन उलूक सुनहु भगवाना । प्रात होत कहि दीन पयाना ॥
कृष्ण तुम्हारि शपथ हमखाई । अबदिनश्रमहूँ अतिकठिनाई ॥

पठै दिये चरवर वनवारी। कहेउ नृपनसनकरहु तयारी॥
निजनिज सेन नरेशन साजी। उठे निशान दुन्दुभी वाजी॥
पलट वितान लदायो चारू। और लदायो सकल वजारू॥
अगणित ऊँट बृषभ शकटादी। खच्चर महिष चले लै लादी॥
सकल वस्तु कारीगर नाना। लै लै लादि चले निज वाना॥
गज रथबाजिसाजिशिविकाली। भये अरूढ़ मेदिनी हाली॥

सहनाई अरु पवन घन, ढोल ठोंकि झनकार।
पटह भेरि अरु धेनुमुख, बाजे त्रिविध प्रकार॥
बन्दीगण बोले विरद, रहो शङ्खध्वनि-पूरि।
द्विरद-घण्ट बाजत घने, भयो शब्द तहँ पूरि॥

इति सप्तविंश अध्याय॥ २७॥

द्रुपद नरेश साजि सब याना। भयो अरूढ बजाय निशाना॥
धृष्टद्युम्न शिखण्डी आवत। रथ अरूढ ह्वै शङ्ख बजावत॥
युद्ध मान सेना सब साजे। पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे॥
द्विरद अरूढ वीर बरिआरा। चल्यो तमौजा द्रुपद-कुमारा॥
पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे। भे असवार नृपति दल गाजे॥
पुनि रथसाजि सात्यकी आयो। सेन सङ्ग निज शंख बजायो॥
तन समेत विराट भुवारा। लै निज कटक चले सिरदारा॥
शराज सेना सँग लीन्हो। रथ अरूढ़ ह्वै दुन्दुभि दीन्हो॥

शूरसेन अपनो दल साजे । पहिर सनाह सिंहसम गाजे ॥
जरासन्धसुत नृप सहदेऊ । ले निज कटक चलो पुनि तेऊ ॥
चालिस सहस छलधर राजा । भे आरूढ़ बाजे पुनि बाजा ॥
साजे सकल नरेश पुनि, गज रथ तुरंग पदात ।
रथी महारथ गजरथी, कटक अक्षोहिणी सात ॥
मिलिउरिपवँरि द्वार जबआवा । धर्मराज निज द्विरद मँगावा ॥
कुन्तल सजि लायो मय मत्ता । शंखवर्ण सुन्दर चौदन्ता ॥
देखत रूप परम विकरारा । चारिउचरण बहत मदधारा ॥
कनकरचितमणिखचितअँबारी । गजमुक्तामालरि छविकारी ॥
धर्म्मराज हरिपद शिर नाई । भे आरूढ़ प्रभु आयसु पाई ॥
बाजत दुन्दुभि शंख घनेरे । करि अतिनाद नकीवन टेरे ॥
भयो शोर बहु दिग्गज डोले । करिउदवाद वन्दिजन बोले ॥
गोमुख भेरि शब्द अतिभारे । जहँ तहँ विपुल नकीब पुकारे ॥
होत महारव भयो अतंका । बाजि उठे दलमें बहु डङ्का ॥
भीमसेन अपनो रथ साजे । भये आरूढ़ बार बहु गाजे ॥
पुनि पांचौ द्रौपदी कुमारा । शंख बजाय भये असवारा ॥
मणिमय चित्र विचित्र रथ, भये नकुल असवार ।
पांच कोटि एकसठ लिये, साज्यो भीम कुमार ॥
तब सहदेव कौन असवारो । अर्जुन लै साजै वनवारी ॥
लै शंकर सनाह पहिरायो । इन्द्रदत्त शिर मुकुट बंधायो ।
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई । पहिरायो जेहि सम न होई ॥

अच्चय तूण वरुण जो दीन्हा। सोई लै हरि पढ़ि ढिगकीन्हा॥
हुतभुक दीन्हेउ धनुष महाना। गाण्डिवनाम सकलजगजाना॥
सप्त पच्चलागी हैं जामैं। विद्युत्कोटि प्रभा है तामैं॥
सो लै हरि अर्जुनकहँ दीन्हों। धरिशिरहाथअभयपुनिकीन्हों॥
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे। रणमहँ शत्रु जायँ तुम मारे॥
पुनि दीन्हों प्रभु आशिष येहा। निश्चय विजय न कछुसन्देहा॥
अस कहि नन्दिघोषरथ आना। सारथि रूप धरेउ भगवाना॥
श्वेत वर्ण लै चारों घोरे। ते हरि आनि यानमहँ जोरे॥
करि अतिकृपा बारनहिं लायउ। पाणिपकरिहरिपार्थ चढ़ायउ
करि सारथी बेष बनवारी। जोतौ गहे पितांबर धारी॥
शीशमुकुट जनु तरनि अभंगा। चन्दन ते चर्चित सब अंगा॥
पीतवसन तनु श्याम सोहावन। मणियुतपीत विराजतपावन
कौस्तुभ कण्ठ रुचिरवनमाला। अंगद युत द्वौ बाहु विशाला

कमलनयन कुण्डल कलित, ललित मधुरमुसकान।
कच कारे कटि केहरी, कोटिकाम हरमान॥
पाणिकल्पतरु पद कमल, कमल वदन कमनीय।
केशी कंस कलेशहर, कीन्ह कृपाकरि जीय॥
करयो सारथी वेष जब, रथ हांक्यो भगवान।
पार्थ ध्वजापर बैठिकै, तब गर्ज्यो हनुमान॥

प्रसन्न बोले भगवाना। सुनहु युधिष्ठिर वचनप्रमाना॥
न्त हमार भूप सुनि लीजै। व्यूहबनाय गमन पुनिकीजै॥

विरचि पिपीलव्यूह भगवाना। कीन्ह बजाय निशान पयाना॥
अर्ज्जुन रथ हाँकेउ बनवारी। सकल सेनके भयो अगारी॥
युधामन्यु पुनि दक्षिण ओरा। चले सङ्ग लै दल घनघोरा॥
सेन सहित दिशिवाम तमोजा। रथ अरूढ़ मनु अपर मनोजा॥
धृष्टद्युम्न अतिबल धनुधारी। अर्ज्जुन रथके चलेउ पछारी॥
नाना वस्तु लादि लै चारू। ता पीछे सब लोग बजारू॥
ताके दक्षिण भाग शिखण्डो। लिये साथ निज सेन अखण्डो॥
दल चतुरङ्ग सङ्ग पुनि साजे। धृष्टकेतु दिशि वाम बिराजे॥
लिये धनुष कर सायक तीछे। सेन समेत सात्यकी पीछे॥

चलत कटक हाली धरा, लागी रेणु अकास।
चले नकुल सहदेव संग, लिये सङ्ग रनिवास॥

दक्षिण दिशि द्रौपदी-कुमारा। चले सङ्ग लै कटक अपारा॥
घटउत्कच दल लै दिशिवामा। पांचकोटि राक्षस बल धामा॥
अभिमन्यु रथपाछेपुनिआवत। लियेधनुष कर बाण फिरावत॥
अभिमन्यु सँग वीर बरियारा। उत्तर शंख विराट कुमारा॥
लीन्हें साथ सेन समुदाई। कीन्ह पयान निशान बजाई॥
धर्मराज पुनि कीन्ह पयाना। बाजे ढक्क गहगहे निशाना॥
पवन धेनु मुख भेरि समूहा। बाजे शंख चले दल यूहा॥
चालिस सहस छत्रधर राजा। चले सङ्ग लै सैन समाजा॥
द्रुपद नरेश चलेउ दल साजी। भयउ अरूढ़ दुन्दुभीबाजी॥
उठी धूरि सो छाय अकाशा। रवि अलोप परी सब आशा॥

लैकर धनुष चले पुनि गाजत। नृपके दच्छिण भाग विराजत॥
बायें ओर विराट भुवारा। कीन्ह पयान बजाय नगारा॥
काशिराज नृप गजके पाछे। सेन समेत विराजत आछे॥
रथ अरूढ़ कर धनुषधरि, शूरसेन महराज।
नृपगजके आगेचले, लै निज साज समाज॥
पीछे अनी वृकोदर आवत। करत घोर रव गदा फिरावत॥
वाम पाणि लीन्हें करवाली। भीमहिं चलत धरा सब हाली॥
छोभित सिन्धु धराधर डोले। कमलनाल अहि दिग्गज बोले॥
कौतुक देखि चकित सुर डीठी। परेउ भार कच्छपकी पीठी॥
कर रव भीम बार बहु गाजे। रवि तुरङ्ग तजि मारग भाजे॥
सुरपुर भेदि भीमकी हांका। परी जाय ध्रुवलोकप हांका॥
चलीजात मग सेन अपारा। बाजत शंख मृदङ्ग नगारा॥
भाट भरतकुलबिरदबखानत। सुनिसुनिशब्दशत्रुभयमानत॥
दल विलोकि मग होत अतङ्का। रघुवर प्रथम गये जिमिलङ्का॥
गोमुख शंख निशान रव, भेरि भूरि करनाल।
गजघराटा गाजत सुभट, सुरपुर शब्द कराल॥
कम्पत शेष विकल भुजगेशा। उठी धूलि छपि गयो दिनेशा॥
सुर विमान नभ ऊपर छायउ। सुमनवर्षिशुभशकुनजनायउ॥
कह नृप तुम हरि अन्तर्यामी। विजयउपायकहो अवस्वामी॥
विहँसि वचन भगवाना। करहु नरेश शक्तिको ध्याना॥
प्रसाद विजय नृप होई। यह तजि और उपाय न कोई॥

सुनि हरि वचन भूप अनुरागे । करन ध्यान अम्बाको लागे ॥
करि आचमन मूंदि दृग लीन्हें । प्राणायाम वेदविधि कीन्हें ॥
करि अष्टाङ्ग सकल सुरसाधी । करत ध्यान नृप लागि समाधी ॥

मुक्त केश कर खड़गधर, मुण्डमाल दृग लाल ।
को सहाय मेरी करै, बिन काली यहि काल ॥
उरग किङ्किणी कटि लसै, शवारूढ़ भुज चारि ।
हरन हमारे दुसह दुख, हे त्रिपुरारि-पियारि ॥

यहिविधिविनयभूपजबकीन्हा । ह्वै प्रसन्न तब दर्शन दीन्हा ॥
सानुकूल तब भई भवानी । बरंब्रूहि बोली हँसि बानी ॥
हे नरेश तुम हरिहि पियारे । मांगहु जो अभिलाष तुम्हारे ॥
सुनि प्रिय गिरा अमियरससानी । बोलेउ राउ जोरि युगपानी ॥
मिटे कलेश सुनी तव भाषा । दरश देखि पूजी अभिलाषा ॥
जानहु मातु मनोरथ मोरा । मै का कहौं दास मैं तोरा ॥
तब यह कही अनुग्रह मोरे । ह्वै हैं सफल मनोरथ तोरे ॥
धर्म्मराजकहँ दै बरदाना । भई शक्ति पुनि अन्तर्द्धाना ॥
हरि नरेश मन सुख अधिकाई । कीन्ह पयान निशान बजाई ॥
मग सर सरित सूखि गा पानी । पङ्क रेणु ह्वै गगन उड़ानी ॥

चले जात मग धर्म्मसुत, लीन्हें दल निज साथ ।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीव्रजनाथ ॥

करत शिबिर पुनि करतपयाना । तब कुरुदेश आय नियराना ॥
बीच बीच मग करत बसेरा । कबहुँ पयान होय कहुँ डेरा ॥

नगर वारुणावर्त्त समीपा। कीन्हयों शिविर पाण्डुकुलदीपा॥
जागे सकल निशा अवसाना। प्रात होत पुनि कीन्ह पयाना॥
सुमिरि गौरि हर कृष्ण गणेशा। गज अरूढ़ ह्वै चले नरेशा॥
कुरुक्षेत्र के पश्चिम ओरा। कीन्हें धर्मराज तहँ डेरा॥
अमल अमोल वितान तनाये। पटलकनातसहितछविछाये॥
बाजत दल घरियार घनेरे। जहं तहँ परे नृपनके डेरे॥
परो धर्मसुत सैन अखण्डा। परखहिंशिविरदेखिनिजभण्डा॥

धर्मराजकी पाइ सुधि, कुन्ती पहुंची आय।
देखि पुत्र अरु पुत्रतिय, आनन्द उर न समाय॥

धर्मराज पदवन्दन कीन्हा। होइ प्रसन्न तब आशिषदीन्हा॥
वन्दत चरण नकुल सहदेऊ। पाइअशीष मुदितमनभयऊ॥
अर्जुन भीम आइ पद वन्दे। अभिमनु आशिषपाइअनन्दे॥
परसे चरण द्रौपदी रानी। उर लपटाइ लीन्ह गहि पानी॥
प्रीति सहित यदुनन्दन भेटी। भीतर पलटि गई दुख मेटी॥
सुनि सब पुत्र वधू उठि धाई। परीचरण अति आनन्दछाई॥
कुशल पूंछिकै कण्ठ लगाई। दीन्ह असीश निकट बैठाई॥
अभिमनआदि परे पगनाती। हृदय लगाइ जुड़ावत छाती॥

कुन्ती गोद समोद तब, बैठारे सुत नन्द।
सबलसिंह चौहान कह, पूरि रह्यो आनन्द॥

इति अट्टाविंश अध्याय॥ २८॥

कह ऋषि सुनु जनमेजयराई। कथा विचित्र श्रवणसुखदाई॥
यह सुधि दुर्योधन नृप पाई। भयउ अरूढ़ निशान बजाई॥
भीषम कर्ण द्रोण धनुधारी। साजी सेन भयङ्कर भारी॥
कृपाचार्य्य द्रोणी रण रङ्गा। लीन्हे सङ्ग चमू चतुरङ्गा॥
वाहुलीक लै कटक अपारा। भये अरूढ़ बजाइ नगारा॥
सोमदत्त सँग दल समुदाई। बाजत पटह शंख सहनाई॥
भूरिश्रवा सेन सब साजे। गङ्गाधर काम्बोज विराजे॥
रथन अरूढ़ बजाइ निशाना। दुर्योधन सँग कीन्ह पयाना॥
शल्य नरेश अलंबुष साजे। पवन निशान शंख बहु बाजे॥
साज्यो पुनि कलिङ्ग नरनाथा। लै नवलाख द्विरद पुनि साथा॥

रथ तुरङ्ग बहुरङ्ग के, सेना साथ अनन्त।
अस्सी लक्ष गज लै चले, महाराज भगदत्त॥

सिन्धु नरेश जयद्रथ नामा। अति रणधीर वीरबलधामा॥
लैकर धनुष बजाइ नगारा। कौरव सङ्ग भयो असवारा॥
शकुनी औ विकरण रणरङ्गा। द्विरद दुमत्त दुशासन सङ्गा॥
सौ बान्धव दुर्योधन केरे। भ्रातजात अरु तनय घनेरे॥
निजनिजरथन भये असवारा। बाजत गोमुख शंख नगारा॥
सेन समेत त्यागि सब धर्मा। द्विरदअरूढ़ चल्यउ कृतवर्मा॥
नृप उलूक वृषसेन भुवाला। चले सङ्ग लै कटक विशाला॥
नृप मणिबिन्दु चले दलसाजे। तुरँग अरूढ़ दमामे बाजे।
विन्दु निविन्दु अवन्ती राजा। चले साथ लै सेन समाजा।

अस्त्रनिपुण अरु अतिबलदाई। ज्येष्ठ मित्रविन्दा के भाई॥
कह हरि कथा भूप तुव जानी। अति प्रियकृष्णादेवकी रानी॥
तासु बन्धु द्वौ अतिबलदाई। दुर्योधनके भये सहाई॥

साठिसहस नृप छत्र धर, दै गहगहे निशान।
निज निजदल सँगलै चले, गर्द लोपिगये भान॥

एकादश चोहिणि दल साथा। करतअकूनचल्यो कुरुनाथा॥
बाजे बाजन भाँति अनेका। उठी धूरि रविमण्डल छेका॥
भा अँधियार जानिनिशि घोरा। बिछुरे चक्रवाकके जोरा॥
बाजत बिपुल नृपन के डङ्का। हाली धरा परम आतङ्का॥
दलके भार धराधर डोले। बिरदावली भाट बहु बोले॥
सुनि सुनि नाद नकीबन केरा। खग मृग त्यागो भागि बसेर
गर्जत बिपुल सुभट मग जाहीं। अति आतंक होतदलमाहीं
पीत ध्वजा रथ पीत बिराजे। पीत धनुष पीते गुण साजे॥
पीत वर्ण चारोहैं घोरे। वसन बिचित्र पीत रँग बोरे॥
धनुष चिह्न ध्वज ऊपर राजत। पीत वर्ण दल कर्ण बिराज

श्वेत वर्ण तनु वसन पुनि, श्वेत धनुष अरु बान।
श्वेत केश रथ बाजिहैं, श्वेत ध्वजा फहरान॥

ताल चिह्न ध्वज शोभापावत। लैदलश्वेत पितामह आव
श्यामवर्णरथ अधिक सोहावत। श्यामवर्ण घोड़े छबि पावत
ाल कञ्चरित धनु कर लीन्हें। नीलवर्ण तामें गुण दीन्हे
ारङ्ग फहरान पताका। खड्गचिह्न तामें अति बाँका॥

नील निचोल विभूषण साजे । नील वर्ण दल द्रोण विराजे ॥
अरुणवर्ण दल साजि सुशर्म्मा । अरुणवर्ण शोभितधनुकर्म्मा ॥
अरुण चमर शोभित रथकेतू । चलेउसाजिकुरुपतिजयहेतू ॥
सिन्धुराजके तुरै हरेवा । अतिलाघवगतिमनहुँ परेवा ॥
हरित केतु सोहत रथ ऊपर । हरित वसन छायो दल भूपर ॥
कौरव सब कुरुनायक सङ्गा । तिनके रथन ध्वजा पँचरङ्गा ॥
द्विरदचिह्न नृपस्यन्दन सोहत । अतिविचित्तरणकोमनमोहत ॥

निज निज रथन अरूढ़ नृप, सोह ध्वजा बहुरंग ।
हरित पीत कोउ श्यामसित, राजतसुधर सुरंग ॥

यहि प्रकार कौरवपति सेना । चलीजात उपमा कछु हैना ॥
अति अगाध केछु अन्त न जाना । प्रलयसिन्धु कहिव्यासबखाना
कुरुक्षेत्र के पूरव ओरा । कौरव कटक टिका घनघोरा ॥
तनवायो तहँ विपुल विताना । बजत घोर रव नौबतखाना ॥
गड़े केतु दल नाना कारा । बाजत पँवरि पँवरि घरियारा ॥
शिबिरशिविरप्रतिरुचिरलधामा । कीन्हेउ खानपान विश्रामा ॥
दोउ नरेश बहुखनक पठायउ । ऊंच नीच महि सुदवनायउ ॥
करि सब भूमिगये यहि ताका । अटकै जहां न स्यन्दन चाका ॥

ऊंच नीच खनि खनकगण, कीन्ही भूमिसमान ।
सबलसिंहचौहान कहि, योजन सप्त प्रमान ॥

इति एकोनत्रिंश अध्यायः ॥ २९ ॥

जनमेजय पूछत अनुरागे। पुनि मुनिकथा कहन सो लागे॥
करन हेतु कुलको संबोधन। आये व्यास जहां दुर्योधन॥
उठि प्रणाम कीन्हों तब राजा। आशिष दीन्ह रहे नृपलाजा॥
क्षत्री धर्म बढ़ै तनु भारी। जीवत छुटै न बानि तुम्हारी॥
असकहि व्यास बहुत समुझावा। वंशवैर कहि काज बढ़ावा॥
सो अब भूप त्यागिकरि दीजै। कलह नीकनहिं सम्मतकीजै॥
देहु अंश सुनि शीष हमारी। पाण्डव सबल होइ बड़ि रारी॥
विनकारण कीन्हों अपकारा। लै कलङ्क तुमविपिननिकारा॥
समुझि परस्पर करहु मिताई। देहु अंश नृप मिटै लड़ाई॥
व्यासकही कछुचित्त न आनी। सुनतबिहँसिबोला अभिमानी॥

द्रोण कर्ण भीश्म प्रबल, मोहित वे धनु धारि।
देहुँ न भूमि मुनीश मैं, करौं भयङ्कर रारि॥

जो कोटिन पाण्डव दल आवैं। सब गुरु द्रोण मारि विचलावैं
लरैं पितामह जो करि क्रोधा। सकै रोकि रणको जगयोधा॥
चलहिं सरोष कर्ण धनुतानी। को रण बचहि महामुनिज्ञानी॥
सुनि नृप वचन जानि अभिमानी।कह्यौ व्यासमुनिप्रथमकहानी
पुर कम्पिला देश पञ्चाला। पृषदनाम तहँ भयो भुवाला॥
बल प्रताप करि राज्य बढ़ावा। द्रुपदनाम त्यहि सुत उपजावा॥
विद्या कारण भूप पठाये। अग्निवेषके आश्रम आये॥
[illegible] के भवन बड़ो चटशारा। द्विजकुमार अरु राजकुमारा॥
[illegible] देव वचनको भाखा। ताते दूरि किये नहिं राखा॥

भरद्वाज ऋषिकेर कुमारा। पढ़हिं द्रोण तहँ बुद्धि उदारा॥
पृषद पुत्र ते परी मिताई। एकहि सङ्ग पढ़े मन लाई॥
रख्यउ न बीच प्रीति अति बाढ़ी। नृपसुत कीन्ह प्रतिज्ञा गाढ़ी
जब पाउब हम साज समाजू। आधा बांटि देहुँ तोहि राजू॥
यहि प्रकार बीते कछु काला। मरे पृषद भे द्रुपद भुवाला॥
विद्या सकल द्रोण पढ़ि लीन्हा। जाइ महावन पुनि तपकीन्हा
गौतमसुता द्रोण पुनि व्याही। कृपभगिनी जानत जगताही॥
ताके सुत भो अश्वत्थामा। जगतविदित गुण सब अभिरामा॥

द्रोण द्रुपद भूपाल ते, सुत हित मांगी गाइ।
नहिं दीन्हो अपमानकरि, दियो तुरत दुरिआइ॥
जानत जग समरथ हते, मुनिवर उभय प्रकार।
दियो शाप नहिं क्रोधकरि, कियो न अस्त्रप्रहार॥

लज्जा भई द्रोण दुख पाये। नगर हस्तिनापुर चलि आये॥
गेंद काढ़ि बालकन देखावा। सुनि भीषम निज निकट बुलावा॥
चरण परस कीन्हों सनमाना। दीन्हों धेनु धरा मणि नाना॥
सौंपो पुनि कौरवकुल केतू। बालक सब धनु विद्या हेतू।
अर्जुनते मानत अति प्रीती। अस्त्र शिखायो अद्भुत रीती॥
अस्त्र सिखाय निपुण पुनि कीन्हों। भीषम जाय परीक्षा लीन्हों
तुङ्ग विशाल एक वट भूपर। कृतमा भार धरा ता ऊपर॥
पक्षि रूप करि लक्ष बनायो। भेद हेत सब शिष्य बुलायो॥

गुरु अनुशासन मानि तब, जुरे सब इक साथ।
कटि निषङ्ग करवालकसि, चले धनुष धरि हाथ॥
भीषम द्रोण विदुर तहँ ठाढ़े। द्रोण समीप मोद मनवाढे॥
जाय प्रणाम सबन मिलि कीन्हा। चिरञ्जीवकहि आशिषदीन्हा॥
पङ्गति बांधि ठाढ़ गुरु कीन्हा। हनेहु लक्ष यह आज्ञा दीन्हा।
कह्यौ द्रोण दुर्योधन भूपहि। देखत पुत्र पक्षिके रूपहि॥
देखत वृक्ष माँह की नाहीं। सुनियहवचनकह्योगुरु पाहीं॥
सब देखत बोले कुरुराजा। कहि ऋषि तुमते सरहि न काजा॥
पुनि मुनि धर्मराज तै पूंछा। उनकहिदीन सकलछलछूंछा॥
सब देखतहों सुनि यह वानी। सरिहि न काम महामुनिज्ञानी॥
सकल शिष्य पूंछे यहि भांती। कह्यो बाननहिंगुरुहि सोहाती॥
पुनि पूंछो मुनि अर्जुन पाहीं। देखत हमहिं कह्येउ उनयाहीं॥
पक्षि वृक्ष हम कछुहि न लेखत। दृष्टिलगाय तुण्डकहँ देखत॥

पार्थ वचन सुनि द्रोण गुरु, बोले गिरा प्रमान।
तुमते निसरो काज सुत, करहु विशिख सन्धान॥

सुनि अर्जुन छाड़े तब बाना। कटौ तुण्ड सबही सुखमाना॥
अति अनन्द भीषम उरछायो। साधुसाधु कहि कण्ठ लगायो॥
तुम सब मिलिगुरुदक्षिणादीन्हेउ। अर्जुनद्रव्य द्रोणनहिंलीन्हेउ॥
५ मित्र कीन्हेउ अपमाना। लावहु बांधि देहु यह दाना॥
।स अपने शिर धारा। नृपहि जीति चरनतर डारा॥

देखि द्रोण तब दीन कुड़ाई । गयो नरेश भवन खिसि आई ॥
ओहत भयो तेज तनु नाहीं । नृपप्रणकीन्हों यह मनमाहीं ॥
मोते बैर द्रोण उपजावा । शिष्य हाथ अपमान करावा ॥
करि उत्पत्ति पुत्र बलवाना । करवावों ताको अपमाना ॥
बोलि लीन बहु विप्र समाजा । कीन अरम्भ यज्ञकर राजा ॥
वेद ऋचा चढ़ि विप्र अनन्ता । कीन यज्ञ पुनि वर्ष प्रयन्ता ॥
ह्वै प्रसन्न सुरनायक आये । सिद्धकाज कहि भवन सिधाये ॥

प्रथम प्रकट भई द्रौपदी, उपमा कहत बनै न ।
धृष्टद्युम्न पुनि कुण्डते, कढ़ो पुत्र जनु मैन ॥
शीश मुकुट कुण्डल कवच, लिये धनुष शरहाथ ।
द्रोणनिधन हित निर्मयो, कमलयोनि कुरुनाथ ॥

भीषम निधन हेतु संसारा । भयो शिखण्डीको अवतारा ॥
काशिराज तै सुता सयानी । भीषम जीति स्वयम्बर आनी ॥
नाम अम्बिका सब गुणरासी । अम्बानाम रूप कमलासी ॥
युगल विचित्रवीर्यकहँ व्याही । अम्बालिका न व्याह्योताही ॥
नयन सनीर गरे भरिआवा । बोली वचन शोच उपजावा ॥
गङ्गासुत तुमहीं हरि आनी । मोको अब लीजै गहि पानी ॥
सुनि भीषम बोले यह बानी । राजसुता तुम बात न जानी ॥
मातु पिता मन कीन करारा । देखौं मैं न नयन भरि दारा ॥
परशुराम जहँ एरण अनादी । भा मनसीक गई निरिन्याडी ॥

कही कथा पुनि रोदन कीन्हा। ह्वै दयालु तिन धीरज दीन्हा॥

आज्ञा भङ्ग न करि सकै, भीषम शिष्य हमार।
तोको सौंपौं पाणि गहि, यह मुनि कीन करार॥

प्रात होत मन परम अनन्दन। लै नृपसुता चले भृगुनन्दन॥
पुरी हस्तिना को चलि आये। भीषम देखि चरण शिर नाये॥
आदर ते पुनि भवन लवाये। अति पुनीत आसन बैठाये॥
आवतही इमि वचन सुनायो। सुनहु पुत्र जा कारण आयो॥
की याको लीजै गहि पानी। की रण रचिय कही यह बानी॥
मो सम कौन भयो जग अत्री। इक इस बार हने सब क्षत्री॥
कोउ कोउ बचे नारिके बोले। सुनि सक्रोध गङ्गासुत बोले॥
क्षत्री वंश वैर भरि लेहौं। समर हराय जान तब देहौं॥
अस्त्र शस्त्र लै रथ चढ़ि आई। कुरुक्षेत्र दोउ रचेउ लड़ाई॥

द्वन्द्वयुद्ध तहँ अति भयो, शर छूटे पुनि बाम।
गुरु शिष्य सम मिलि करयो, तेइस दिन संग्राम॥

तब भीषम करि क्रोध अपारा। कठिन बाण धनु तानि प्रहारा॥
वाम पार्श्व लागेउ जब सायक। रथते विकल गिरेउ भृगुनायक॥
उठे सँभारि कीन सन्धाना। भीषमके मारे बहु बाना॥
दक्षिण पार्श्व शक्ति पुनिमारी। परेउ गङ्गसुत भूमि दुखारी॥
शक्ति घात लागी अति पीरा। सुधि न रही कछु विकलशरीरा॥
तेहि समय सकल वसु आये। पाणि पकरि गांगेय उठाये।

हो अष्टम वसु को अवतारा। तुम पीड़ित नहिं करहु सँभारा॥
अस कहि गयो सप्तवसु जबहीं। रथ अरूढ़ गङ्गासुत तबहीं॥

ब्रह्म अस्त्र सन्धानि करि, कीन्हों तुरत प्रहार।
छिटकी ज्योति अकाशमहँ, चले करत हुङ्कार॥

भृगुनन्दन ब्रह्मास्त्र प्रहारा। चलेउ अकाश भयो उजियारा॥
भये शिथिल आयो द्वौ धरणी। युद्धकियो करि अद्भुत करणी॥
जामदग्नि निजशक्ति प्रहारी। भयो अघात शब्द अतिभारी॥
छिटकी ज्योति चली नभ कैसे। ग्रीषम के प्रचण्ड रवि जैसे॥
लागी हृदय परत तहिं सूझी। महि गिरिपरो सारथी जूझी॥
जोती छुटि स्ववश ह्वै बाजी। चले पलटि स्यन्दनलै भाजी॥
रथ अरूढ़ ह्वै रूप करि गङ्गा। गही बांह लै फिरे तुरंगा॥
होइहि विजय पुत्र सुनि लीजै। ह्वै निश्चिन्त युद्ध अब कीजै॥
यह कहिकै स्यंदन पलटाई। भृगुनन्दनके सम्मुख लाई॥
चतुर्विंश दिन युद्ध महाना। अब नृप कहौं सुनौ दै काना॥
देव अस्त्र दोउ करैं प्रहारा। करहिं निवारण विविध प्रकारा॥
नारायण शर भीषम लीन्हा। पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा॥

तब सकोप भृगुराम होइ, लीन्हों पशुपति बान।
अति लाघव दृग अरुणकरि, कीन्हों धनुष संधान॥

छिटकी ज्योति भयो उजियारा। नभ पथ चले करत फुंकारा॥
अस्त्र अस्त्रते भयो निवारण। तब लागेउ नीचनशर मारण॥

नील बाण भीषम फटकारा। भृगुपतिके मस्तकमहँ मारा॥
रहेउ न धीर भई अतिपीरा। गिरे भूमि नहिं चेत शरीरा॥
भीषम देखि बहुत पछिताने। धाये उतरि छत्र फिर ताने॥
कहत न बनै नयन जलबाढ़े। मुखपर छत्र छाहँ किय ठाढ़े॥
उठहु न नाथ गङ्गसुत बोले। सुनि भृगुराम युगल दृगखोले॥
देखि भयो भृगुकुल अवतंसा। भीषम कहँ बहुवार प्रशंसा॥
तुम सम कोउ गुरुभक्त न आना। अब सुत मांगि लेहु वरदान
माँगत हौं माँगे यह दीजै। रथ चढ़ि लड़हु कृपापुनि कीजै॥

परशुराम अरु गङ्गसुत, चढ़े रथन पर जाइ।
धनुषबाण पुनि करगहे, निज निज शङ्ख बजाइ॥

त्यहि अवसर मरीचि ऋषि आये। गहि कर परशुराम समुझाये
अब तुम तात तजो यह काजै। शिष्य पुत्र ते नीक पराजै॥
भीषमते बोले ऋषि राजा। गुरुते रण जीते बड़ि लाजा॥
ताते युद्ध त्याग करि दीजै। है मत नीक भवनमग लीजै॥
सुनि शुभ गिरा गङ्गसुत बोले। कहे नाथ तुम बचन अमोले॥
क्षत्री समर विमुख होजाई। लोक अयश परलोक नशाई॥
ताते मैं प्रभु प्रथम न जैहौं। अपने कुलहि कलङ्क न लैहौं॥
परशुराम हैं हरि अवतारा। जीते भूमि भूप बहु बारा॥
[illegible]न भुज गहि पाणि कुठारा। काटे सुयश विदित संसारा॥
स [illegible] भूप विन कीन्हो। धरा सकल विप्रनकहँ दीन्हो॥

तातें प्रथमहिं नाथ तुम, उनहिं देउ पलटाय ।
तबलगि मैं नहिं रण तजों, कीन्हें कोटि उपाय ॥

असकहि मौन गङ्गसुत भयऊ । पुनिमुनिपरशुरामपहँ गयऊ ॥
गहि जोतीकर वाजि फिरायो । बहुबुझाय स्यन्दन पलटायो ॥
चले निरखि भृगुनन्दन जाना । हर्षि गङ्गसुत कीन्ह पयाना ॥
विनय वचन बहुभांति सुनाये । करिप्रणाम अपने थल आये ॥
ह्वै निराश तब राजकिशोरी । चिता बनायो काठ बटोरी ॥
सुरसरिनिकट माँगिवर लीन्हा । भीषम निधनहेतु प्रणकीन्हा ॥
जरी नारि करि बुद्धि प्रचण्डी । द्रुपदपुत्र सोइ भयोशिखण्डी ॥
करी निधनहित सुनहु भुवारा । है जग पारथ को अवतारा ॥
तुम्हरो मीचु भीमके हाथा । है निश्चय जानहु कुरुनाथा ॥

मृषा होय नहिं तुव वचन, जानि परी अब सोय ।
भावी कीन्यउ यतनतें, मेटि सकै नहिं काय ॥
तुम जानत भवितव्यता, कह नृप वारहिं वार ।
कारब युद्ध होइहि सोई, जोविधि लिखा लिलार ॥

सुनत व्यास उठि कीन्ह पयाना । भावी चितप्रबल हम जाना ॥
सुमिरत मन हरि ध्यानलगाये । नगर हस्तिनापुर चलिआये ॥
धृतराष्ट्रक आदर करि लीन्हा । दण्डप्रणाम वार बहु कीन्हा ॥
गहि पद भूप व्यास तें बूझा । होइहि सम्पनिको अब जूझा ॥
कह मुनि होइहि [illegible] लराई । बोल्यो गाइ बहुरि [illegible] ।

मैं जानो जेहि सब संग्रामा । करि उपायसोइ सैन्य अकामा ॥
दिव्य दृष्टि सञ्जय कहँ दीन्हा । ये कहिहैं तुमते रण चीन्हा ॥
जो होई संग्राम तमामा । असकहि गये विपिन ऋषिव्यासा

वैशम्पायन कर चरित, समझायो सब भूप ।
सबलसिंह चौहानकह, निज बलके अनुरूप ॥

इति त्रिंश अध्याय ॥ ३० ॥

कह मुनि जनमेजय सुनहु, निज कुलके गुणगाथ ।
बोलि सकल मन्त्री निकट, [illegible] कुरुनाथ ॥
कहहु सचिव का करिय विचारा । वैरी धर्मराज बरिआरा ॥
लागत हमैं सकलमत फीका । शकुनी कह्यो मन्त्र अवनीका ॥
ईहै मन्त्र कर्ण पुनि दीन्हा । चहिये शत्रु सङ्ग रणकीन्हा ॥
भूरिश्रवा द्रोणि मन भायउ । सबन बैठि दृढ़ मन्त्र ठहायउ ॥
इहां कृष्ण लै सकल समाजा । अर्जुन भीम धर्मसुत राजा ॥
द्रुपद विराट आदि भट भारी । पूंछत सबहिं मन्त्र वनवारी ॥
बुद्धिमान हौ तुम सब भूपा । कहौमन्त्र निज निज अनुरूपा ॥
तब इमि कहेउ विराट भुआरा । सुनहु मन्त्र वसुदेव कुमारा ॥
और विचार कौन यहि नाहीं । बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं ॥

कहो द्रुपद नरनाह तब, सुनिये श्रीव्रजराज ।
और विचार न कीजिये, करहु युद्धकर साज ॥

कही सात्यकीसुनिये मोमति । मिलिहिनभूमियुद्धविनुयदुपति॥
तातें कीजै अवशि लराई । शत्रु जीति महिलेब छुड़ाई ॥
नीक मन्त्र सात्यकी विचारा । कह्यो नकुल यह बारहिं बारा ॥
कुन्ती कह्यो मन्त्र सुनि लीजै । करिअरिनिधनराज्यनिजकीजै ॥
हैं यदुनाथ सहायक तोरे । ह्वै है विजय पुत्र मत मोरे ॥
सहदेवहु दीन्ह्यों मत एहा । कीजै रण त्यागो सन्देहा ॥
धर्मराज कीन्हे रण करणी । जीतौ शत्रु मिलै निजधरणी ॥
दुर्योधन कीन्ह्यों अभिमाना । समुझायों हरि बात न माना ॥
बिना युद्ध कैसे महि देही । अब नृप त्याग करो सन्देही ॥

भीमसेन यहि विधि कहेउ, विहँसि कृष्णते बैन ।
बिना युद्ध नहि महि मिलै, पीतम पङ्कज नैन ॥

अब देख्यो पुरुषारथ मोरा । करिहों बहुत कहतहों थोरा ॥
सम्मुख दुर्योधन सन लड़ऊं । रुण्डमुण्डमय मेदिनि करऊं ॥
सुनहु भूप कौरव बिन मारे । नहि आवहि सन्तोष हमारे ॥
दुर्योधन जीतौं रण माहीं । कृष्णकृपा कछु निजबल नाहीं ॥
तातें और विचार न करहू । अब भय त्यागि भूप तुम लरहू ॥
कह्यउ शिखण्डी सुनहु नरेशा । करहुयुद्ध सब छांड़ि अँदेशा ॥
भीष्म युद्ध भयउ शिर हमरे । करिहों निधनविजयहितुम्हरे ॥
धृष्टद्युम्न बोले त्यहि काला । करहुयुद्ध जनि डरहु भुवाला ॥
मैं मारौं सन द्रोण लड़ाई । मारौं करौं महा प्रभुताई ॥

काशिराज दीन्ह मत येहा। लड़हु नरेश तजहु सन्देहा॥
भये सहायक श्री बनवारी। निश्चय विजय न हारि तुम्हारी॥

धर्म्मराज बोले बिहँसि, सुनिये दीनदयाल।
जाके शिर तुव करकमल, ताहि न जीते काल॥

दुर्योधन प्रभु कीन्ह कुकर्म्मा। छाँड़े लोकलाज अरु धर्म्मा॥
तृण समान तिहुँ लोकहि जानी। कीन्हेसि नग्न द्रौपदी रानी॥
बढ़हि पाप मारे रण भाई। मत मोरे नहिं नीकि लड़ाई॥
मन्त्र हमार नाथ सुनि लीजे। कीजे सन्धि युद्ध जनि कीजे॥
कीजै निधन यदपि अपराधी। जो नहिं बांटि देय महि आधी॥
फाकत अधर द्रौपदी बोली। हे हरि धर्म्मराज मति डोली॥
क्षत्रिधर्म्म सब दीन्ह गँवाई। हे नृप निलज लाज नहिं आई॥
कहिबे को हमरे पति पांचा। पति न रही सुनिये प्रभु सांचा॥
विधवा भली बिना पति नारी। पतिन जियत गइ लाज हमारी॥
येइ पति पतित रहे शिरनाई। पकरेउ केश दुःशासन धाई॥
बार बार तुव नाम पुकारी। बसन पैठि प्रभु लाज उबारी॥
अस कहि तुरत द्रौपदी रानी। बहेउ नीर दृग अति अकुलानी॥

बोले पारथ रोष करि, तुव प्रसाद यदुनाथ।
करौं अकौरव भूमि नहिं, तौन छुवौं धनुहाथ॥

. . शपथ धनुष जब धरिहौं। कीर समान कर्णकहं मरिहौं॥
नके वचन भीमता आनी। रही चुपाय द्रौपदी रानी॥

तब हरि धर्म्मराज सन बोले। मधुर हास श्रुति कुण्डल डोले॥
मैं सहाय प्रभु धीर न आनत। अजहूं दुर्योधन भय मानत॥
तजहु नृपति सब संशय शोका। हौरण अजय को जीतै तोका॥
है नरेश कादर मन तोरा। होत न धीर वचन सुनु मोरा॥
कुरुदल देखत चित्त डराने। तौ कत प्रथम युद्ध तुम ठाने॥
करहु चित्त दृढ़ रहहु पोढ़ाने। मिलहि न भूमि भूप कदराने॥
मांगे भीख धरा जो पावहि। तौ दीनहुँ भूपाल कहावहि॥
अब ह्वै निडर अस्त्र कर लीजे। करि अरिनाश राज्य नृप कीजै

छत्री समर सकाइ तौ, जगत हँसाई होइ।
ह्वै निशङ्क अरिते लड़ै, शूर कहावै सोइ॥

छत्री समर पराभव पावै। लोक अयश परलोक नशावै॥
सन्मुख लड़हु छाँड़ि सब लोभा। तनु परिहरे होत कुलशोभा॥
तुम नृप छत्री धर्म्म न जानत। ताते युद्ध करत भय मानत॥
भोगी वीर धरा को नामा। करिहि भोग जे नृप बलधामा॥
जे नृप शूर तजहि कदराई। मिलहिन महि तेहि आनन्दपाई॥
ताते नृपति त्यागि सन्देहू। ह्वै निशङ्क कर आयुध लेहू॥
सन्मुख दुर्योधन सँग लड़हू। छत्रीधर्म्म प्रकट अब करहू॥
पुनि [illegible] कह्यो द्रौपदी रानी। हे नृप सुनहु कृष्ण की बानी॥
भय छाँड़हु [illegible] रहहु लड़ाई। सुनि मम वचन तजहु कदराई
भरत वंश भये भूप [illegible] अनेका। शूर समर्थ एकते एका।

होइ जो मेरु समान अरि, कृष्ण अवलोकित दीठि।
महावीर अरु धीर धर, कालहु देत न पीठि॥

की अब बुद्धिभ्रष्ट तुव भयऊ। की वह विजय पलट होइ गयऊ॥
जो न करहु तुम युद्ध नरेशा। आयुध छोड़ि धरहु तियभेशा॥
धर्मराज पुनि लज्जा पायो। अरुननयन करि वचन सुनायो॥
बोलत नारि न बचन सँभारे। लड़हुँ शत्रुसन टरहुँ न टारे॥
मेरे श्री व्रजराज सहायक। सकै न जीति युद्ध कुरुनायक॥
धीरज धरहु आजु निशिबीते। करिहौं युद्ध नारि सब हीते॥
अपनो करा नीच फल पैहै। है पापी कौरव मरि जैहै॥
कृष्ण देवकी सीख न मानी। उनकी मृत्यु आइ नियरानी॥

दुर्योधनके उर बढ़ेउ, द्रुपदसुता अभिमान।
गर्वप्रहारी हरि विदित, मरे सकल अरि जान॥

प्रभु की कृपा परिश्रम थोरे। ह्वैहैं निधन सकल रिपु मोरे॥
कहत असत्य वचन नहिं तोसे। सदा रहत मैं कृष्ण भरोसे॥
हरिकी कृपा सफल सब काजा। अस कहि भयो मौनमुख राजा
हँसत वचन बोल्यउ बनवारी। सुनहु बात भूपाल हमारी॥
अब नरेश छाँड़हु सन्देहा। कीजे युद्ध सत्य मत एहा॥
वचन हमार मृषा जनि मानहु। होइहै विजय सत्य नृप
रिहौं मैं होई यश तोरा। शरणागत पालक प्रण कहि मरिहौं॥
नरेश अब शरण हमारे। करहुँ सफल द्रौपदी रानी॥

मनसा वाचा कर्म्मणा, करहुँ तुम्हारो काज ।
अभय होहु नरनाह अब, तुमहिं देहुँ सबराज ॥
उचित सकल सामर्थकहँ, शरणागत प्रतिपाल ।
तदपि मोरि वाणी विदित, धर्म्मराज तिहुँकाल ॥
करौं अकौरव भूमि सब, छत्र धरौं तव शीश ।
बचै न खल शङ्कर शपथ, शपथशिवा अज ईश ॥
भयो मुदितमन धर्म्मसुत, सुनि हरि गिरा प्रमान ।
भणितपर्व्व उद्योग इमि, सबलसिंह चौहान ॥

इति एकत्रिंश अध्याय ॥ ३१ ॥

इति उद्योग पर्व्व समाप्त ।

———
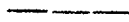
महाभारत।

भीष्म पर्व्व।

गुरु गोविन्दके चरण मनैये। ज्यहि प्रसाद उत्तमगति पैये॥
कै प्रणाम रघुपतिके पाँयन। चारिवेद जाके गुण गायन॥
अवधनाथ सीतापति सुन्दर। दीनबन्धु रघुवंश पुरन्दर॥
शिव सनकादिक अन्त न पावैं। नरमुखते केहिविधि यशगावैं॥
शुक शारद नारदसे पाठक। हनूमान गावैं गुण नाटक॥
वाल्मीकि रामायण करता। राम चरित्र पापको हरता॥
अष्टादश पुराण श्री भारथ। भाष्यो व्यास ज्ञान पुरुषारथ॥

पाराशरते जन्म है, व्यासदेव ऋषिराज।
या मुख भारत प्रकट भो, कविकुलको शिरताज॥

गरु गणेश शारदके पाँयन। करौं प्रणाम होहु सुखदायन॥
महिमा निगम कहत नहि आवै। शेष सहसमुखते गुणगावै॥
संवत सत्रह सै अट्ठारहि। पूनोतिथि मंगलके वारहि॥

माघ मास में कथा विचारी। औरँगशाह दिलीपति भारी॥
सब पुराण पारायण भारथ। यामहँ कुरुपाण्डव पुरुषारथ॥
व्यासदेव भुविभार निवारण। भारत रचो जगतके तारण॥

योग युद्ध रस मन्त्रणा, भारतमोहं है सर्व।
सबलसिंहचौहान कह, भाषा भीष्मपर्व॥

वैशम्पायन बोले बानी। अपरकथा सुनु नृप सज्ञानी॥
नृपति युधिष्ठिर कृष्ण पठाये। पाँच ग्राम माँगन प्रभु आये॥
दुर्योधन सुनिकै हठ गहेऊ। सूजी अग्र देन नहिं कहेऊ॥
कहि हरि चले छीनि सब लेहैं। अर्ज्जुन भीम शाक तब देहैं॥
गयो आपु जहँ धर्म नरेशौ। दूलकी कथा कही सब केशौ॥
माँगे पाँच ग्राम नहिं पाये। गर्व वचन कुरुनाथ सुनाये॥
हितकी बात छाड़ि सब दीजै। पहिरि सनाह युद्ध अब कीजै॥
सुनत युधिष्ठिर शंका मान्यो। विग्रह भयो अवशि मैं जान्यो॥
अहो कृष्ण संतन सुखदायक। हम नहि युद्धकरनके लायक॥

भीष्म द्रोणरु कर्ण कृप, लक्ष छत्रधर साथ।
तासों संगर खेत चढि, किमि जीतहि यदुनाथ॥

पल्यो कृष्ण पाण्डवसुत आगे। अपनो राज देत को माँगे॥
साहस कै रणको मन लैये। मारिहि रिपुहि देश तब पैये॥
द्रुपद विराट आदि क्षत्रियगन। हम मारथि पारथके नन्दन॥
अर्जुन भीम देहु रणको मन। जीतहु युद्ध कहो जगवन्दन।
[illegible]

भीमसेन यहि भाँति बखानेउ । कृष्ण कही मेरे मन मानेउ ॥
कीजै युद्ध भयानक भारथ । अब देखौ मेरो पुरुषारथ ॥
दुर्योधन सौ बन्धु सँहारौं । भीषम कर्ण खेत चढ़ि मारौं ॥
आपु सहाय जगतके तारण । शोच नरेश करौ केहि कारण ॥

सभा मध्य रच्छाकरयो, द्रुपदसुताकी लाज ।
कौरवदल तृणसम गनौ, जो सहाय ब्रजराज ॥

नृपति युधिष्ठिर आनन्दितमन । साजहु सैन कहेउ माधवमन ॥
नृपकी आज्ञा श्रीहरि पायो । साजत सैन विलम्ब न लायो ॥
द्रुपद बिराट शंख रथ साजे । पहिरि सनाह सिंहसम गाजे ॥
धृष्टद्युम्न रथपर चढ़ि आयो । जाकेशिर हरि मुकुट बँधायो ॥
कञ्चन रथ सहदेव सुहाये । तेज तुरङ्ग नकुल चढ़ि आये ॥
लोह चक्र जो हरि निर्मायौ । भीमसेन चढ़ि शोभा पायो ॥
पहिरि सनाह खड़ग कटि बाँधे । गदा लिये कर शारँगकाँधे ॥
कालरूप सम भीम भयङ्कर । प्रलयकालमहँ जैसे शङ्कर ॥
चढे सात्यकी उत्तम स्यन्दन । अभिमनु चढ़े सुभद्रानन्दन ॥
शूरसेन चढ़ि नृपति छत्रधर । जरासन्धसुत चल्यो धनुर्द्धर ॥
धृष्टकेतु कीन्हीं असवारी । काशीराज महाबल भारी ॥
पञ्चकुमार द्रौपदी जाये । हर्षित चले सुवेष बनाये ॥
चले शिखण्डी रणके शूरा । साजे सैन महाबल पूरा ॥

हीरामणि चामर लगे, श्वेत वरण गजराज ।
दण्डछत्रधरि शीशपर, कियो युधिष्ठिर साज ॥

कञ्चन मणिमय बनो अमारी। तेहिपरन्टपतिकीन्ह असवारी॥
पारथकहँ यदुनाथ बनायो। निज कर ले सनाह पहिरायो॥
मणिमयकुण्डलमुकुटविराजत। बाँधे अस्त्र मनोहर छाजत॥
करगहि धनुष बाण बहु साजै। अक्षय तोण देखि रिपुभाजैं॥
नन्दिघोषरथकीन्हेउमण्डित। शोभानिरखिहोतरिपुखण्डित॥
औ अनेक कुञ्जर हैं माते। दन्त विशाल क्रोधते ताते॥
तिनके नयन परी अँधियारी। ठाढ़े जो हालत बल भारी॥
लीला चारि तुरङ्ग लगायो। जाको वेग पवन नहि पायो॥
हनूमान ध्वज ऊपर आयो। ज्यहि बलसे सबलंक छुड़ायो॥
कृष्णचरणकीन्हेउ तब वन्दन। पारथ जाइ चढ़े निजस्यन्दन॥
श्रीहरि निरखिबहुत सुखपायो। आपु सारथी वेष बनायो॥

आपु कृष्ण जोती गहेउ, अर्ज्जुन पुलकित गात।
हाँकत हय हिय हर्ष ते, पीताम्बर फहरात॥

पाँचौ बन्धु करी असवारी। कुन्ती तब आरती उतारी॥
भाँतिअनेकशकुनशुभकीन्हेउ। सुतनसौंपि हरिके करदीन्हेउ॥
मम अनाथके पांचौ बालक। प्रभुरणमें कीन्हेउ प्रतिपालक॥
कह्यो कृष्ण तुम भवनसिधारहु। जयह्वैहैजियशोच निवारहु॥
[illegible] गमन नाएहरिकीन्हो। आनन्दित शंखध्वनि कीन्हो॥
गजपर सरस दमामें बोलत। शब्दसुनत शेषशिर डोलत॥
[illegible] ढोल औ भेरी बाजत। [illegible]॥
करिके सब चले तब राजन। [illegible] बाजे बहुबाजन॥

सप्त चौहिणी सन सँवारी। चालिससहस छत्रके धारी॥
तीनि कोटि कुञ्जर मतवारे। पञ्च कोटि रथ सरस सँवारे॥
बीस कोटि असवार महावल। तीसकोटि सब लेखो पैदल॥

कुरुचेत आये सकल, जहाँ युद्ध को ठाट।
विप्र बेद ध्वनि पढ़त हैं, बोलत मागध भाट॥

कब यह कथा चली शुभ आगे। कुरुपति साजकरन दललागे
भीषम द्रोण कर्ण कृप आये। भूरिश्रवा वृषसेन सुहाये॥
सोमदत्त कृतवर्मा अली। बाहुलीक अशुथामा चली॥
है भगदत्त नृपतिको साथी। योजन पांच तासुको हाथी।
चले अलम्बुष दानवराजन। शकुनी शल्य कियो रणकोमन
औ शशिबिन्दु नरेश महाबल। चले कलिंगलिये कुंजरद
हैं नवलाख महाबल हाथी। सौ बान्धव कलिंगके साथी॥
आये मगन महाबल भारी। तेज तुरङ्ग करी असवारी॥
तब सारथि नृप रथ लैआये। कञ्चनके चाके निर्माये॥
गजमुक्ता की झालरि सोहै। मानुष कह शंकर मन मोहै॥
लाल प्रवाल जड़ित बहु मणी। जगमगात हीरनकी कणी।
आनि तुरङ्ग तेज रथ जोरे। पवन बेग उड़ चारिउ घोरे॥
चढ़े साजि दुर्योधन नीके। सम्पति देखि इन्द्र मन फीके॥

दुःशासन रथ साजियो, सौ भाइन लै साथ।
साठिसहसनृप छत्रधर, चढ़े साजि कुरुनाथ॥

गो अनेक कुञ्जर हैं माते । दन्त विशाल क्रोध ते ताते ॥
तिनके नयन परों अँधियारी । ठाढे जो हालत बल भारी ॥
कञ्चनरथ अति दिव्य अनूपा । जाहि देखि मोहत सुर भूपा ॥
दिव्य अनूपम झालर सोहै । गजमुक्ता देखन मन मोहै ॥
उन्नत ध्वजा अनूपम सुन्दर । देखत शोचनलाग पुरन्दर ॥
रथको ठाट भूमि सबमण्डित । हयपदाति धाये रणपण्डित ॥
कुरुसागरकै व्यास बखानेउ । अतिअघातकोउअंतनजानेउ ॥
भानुमती आरति लै आयो । कियोशकुनशुभमङ्गलगायो ॥
भयो बम्ब वैरख फहराने । प्रलयकाल जनु घनघहराने ॥
धूरिधुन्धि महँ रवि नहिं सूझैं । ध्वजवनसघन पवन आरुझैं ॥
डोली अनी शेष शिर धाकेउ । भूमि चली पर्वत सब काँपेउ ॥

दशन वराहन दृढ रहे, दबी कमठकी पीठि ।
दिग्गजकरहिंचिकारसब, दिगपतिचक्रितदीठि ॥

कुरुक्षेत्र कौरवपति आये । तब भीषम कछु वचन सुनाये ॥
द्रोण आप शारँग कर गहिये । सावधान होइ रणमें रहिये ॥
भीषम द्रोण युधिष्ठिर देखेउ । सबआगे अचरजकरि लेखेउ ॥
नृप मनमहँ तब मन्त्रविचारी । तुरत तजी गजकी असवारी ॥
आप पयादे चले नरेश । अर्जुनकह देखिय ह्रषिकेश ॥
शत्रुसैन मों कौन्हेउ गमनहि । आनन्दित जैसे चल भवनहि ॥
जो कुरुनाथ जाय हैं गाढ़ै । कीजै कहा भीम यह भाखै ॥

जौन बुद्धि कै पांसा खेले । वहै बुद्धि कै चले अकेले ॥
बिन आज्ञा कैसे सग जैये । बिना गये पाछे पछितैयें ॥
कही कृष्ण अब चुपकरि रहिये । नृपकोकठिनकथानहिंकहिये
धर्मराज धर्म हित जानत । शत्रु मित्र समताकरि मानत ॥
यामों यहै मन्त्र को कारण । कहीआपु यह त्रासनिवारण ॥
सब सेनामिलि थिरह्वै रहिये । देखहु खड़े कछु नहिं कहिये

कुरुदल सब चकित भये, कहैं परस्पर बैन ।
मिलो बिचारो दीन ह्वै देखिभयानकसैन ॥

आपु युधिष्ठिर भीषम दरषो । छांड़ो रथ गंगासुत हरषो ॥
आतुर चरण वन्द तब कीन्हों । हंसिभीषमअंकमभरिलीन्हों
सदा होहि कल्याण तुम्हारो । जीतहु युद्ध शत्रु संहारो ॥
धर्मराज यहि भाँति बखानत । हम तो तुमहिं पाण्डुकै मानत ॥
पूर्व जबहिं हम थे सब बालक । तबतुमहीं कीन्हों प्रतिपालक ॥
कपटपांस करि वनहिं पठाये । तेरह वर्ष महा दुख पाये ॥
राज लियो दुर्य्योधन भाई । पंच ग्राम मागे नहिं पाई ॥
आपु युद्ध करिवे चित दीन्हों । तौ सब ठाट वृथा हम कीन्हों
तुमते परशुराम रण हारे । तेहि समान हम कहा विचारे ॥
एक भरोसो मन में आयो । जयहोइहै तुव आशिष पायो ।
हँसि गांगेय कहन असलागे । बड़े साधु तुम परम सभागे ॥
जहँा धर्म्म तहँ कृष्ण विराजै । जहँा कृष्ण तहँई जय छाजै

धर्म भरोसे धर्म्म बल, धर्म भोगियो राज ।
सबलसिहचौहानकहि, धर्महितेशुभकाज ॥
इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

गाइ द्रोण पद परशन कीन्हों । आनन्दित ह्वै आशिषदीन्हों ॥
नृपति होइ कल्याण तुम्हारो । अपनो शत्रु खेत मों मारो ॥
नृपति युधिष्ठिर आपु बखाने । तुमगुरुद्रोण जगत सब जाने ॥
जो आपन शारँग कर धरिये । तीन लोक क्षणमें वशकरिये ॥
जो तुम युद्ध विषे मन लाउब । तब कैसे कै हम जय पाउब ॥
हँसिकह द्रोण युधिष्ठिर आगे । मधुर वचनकहिबे कछुलागे ॥
अहो नृपति सन्तन हितकारी । तोरे सदा सहाय मुरारी ॥
कोटिन द्रोण अस्त्र गहि आवैं । चक्रपाणिसों जय नहि पावैं ॥
ताके सदा सहायक केशो । ताके जयको कौन अँदेशो ॥
जय ह्वै है ध्रुव सर्वदा, सुनहु पांडुके नन्द ।
जाके पारथसे रथी, औ सारथि जगवन्द ॥
कृपाचार्य्य पद वन्दन कीन्हों । जयतिपत्रको आशिप दीन्हों ॥
भीष्म द्रोण कही यह बानी । जीते युद्ध युधिष्ठिर जानी ॥
कीन्ह प्रणाम चले पुनि आगे । धर्म एकार एकारन लागे ॥
यहि दल में जेहि जीवन भावै । तुरत हमारा शरणागत आवै ॥
सुनि युयुत्सु, चलिआयो आगे । नृपसों बचन कहन असलागे ॥
अहो धर्मसुत शरण तुम्हारी । चलो जाइ हम्मों बलकारी ॥

जौन बुद्धि कै पांसा खेले। वहै बुद्धि कै चले अकेले॥
बिन आज्ञा कैसे सग जैये। बिना गये पाछे पछितैये॥
कहो कृष्ण अब चुपकरि रहिये। नृपकोकठिनकथानहिंकहिये
धर्मराज धर्म हित जानत। शत्रु मित्र समताकरि मानत॥
यामों यहै मन्त्र को कारण। कहोआपु यह त्रासनिवारण॥
सब सेनामिलि थिरह्वै रहिये। देखहु खड़े कछु नहिं कहिये

कुरुदल सब चक्रित भये, कहैं परस्पर बैन।
मिलो बिचारो दीन ह्वै देखिभयानकसैन॥

आपु युधिष्ठिर भीषम दरषो। छांड़ो रथ गंगासुत हरषो॥
आतुर चरण वन्द तब कीन्हों। हसिभीषमअंकमभरिलीन्हों॥
सदा होहि कल्याण तुम्हारो। जीतहु युद्ध शत्रु संहारो॥
धर्मराज यहि भाँति बखानत। हम तो तुमहिं पाण्डुकै मानत
पूर्व जबहिं हम थे सब बालक। तबतुमहीं कीन्हों प्रतिपालक
कपटपांस करि बनहिं पठाये। तेरह वर्ष महा दुख पाये॥
राज लियो दुर्य्योधन भाई। पंच ग्राम मागे नहिं पाई॥
आपु युद्ध करिबे चित दीन्हों। तौ सब ठाट वृथा हम कीन्हों
तुमते परशुराम रण हारे। तेहि समान हम कहा विचारे॥
एक भरोसो मन में आयो। जयहोइहै तुव आशिष पायो।
हँसि गांगेय कहन असलागे। बड़े साधु तुम परम सभागे॥
जहाँ धर्म्म तहँ कृष्ण विराजै। जहाँ कृष्ण तहँई जय छाजै॥

धर्म भरोसे धर्म्म बल, धर्म भोगियो राज ।
सबलसिंहचौहानकहि, धर्महितेशुभकाज ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

ाइ द्रोण पद परशन कीन्हों । आनन्दित ह्वै आशिषदीन्हों ॥
पति होइ कल्याण तुम्हारो । अपनो शत्रु खेत मों मारो ॥
पति युधिष्ठिर आपु बखाने । तुमगुरुद्रोण जगत सब जाने ॥
ो आपन शारँग कर धरिये । तीन लोक क्षणमें वशकरिये ॥
ो तुम युद्ध विषे मन लाउब । तब कैसे कै हम जय पाउब ॥
सिकह द्रोण युधिष्ठिर आगे । मधुर वचनकहिबे कछुलागे ॥
हो नृपति सन्तन हितकारी । तोरे सदा सहाय मुरारी ॥
ोटिन द्रोण अस्त्र गहि आवैं । चक्रपाणिसों जय नहि पावैं ॥
ाके सदा सहायक केशो । ताके जयको कौन अँदेशो ॥

जय ह्वै है तुव सर्वदा, सुनहु पांडुके नन्द ।
जाके पारथसे रथी, औ सारथि जगवन्द ॥

पाचार्य्य पद वन्दन कीन्हों । जयतिपलको आशिष दीन्हों ॥
ीषम द्रोण कही यह बानी । जीते युद्ध युधिष्ठिर जानी ॥
ीन्ह प्रणाम चले पुनि आगे । धर्म पुकार पुकारन लागे ॥
हि दल में जेहि जीवन भावे । तुरत कृष्ण शरणागत आवे ॥
ुनि युयुत्सु, चलिआयो आगे । नृपसों बचन कहन असलागे ॥
हो धर्म्मसुत शरण तुम्हारी । चलो जाइ दरशौं बनवारी ।

न्टप युयुत्सु रथ चढ़िकै लीन्हों। तुरत आपनो दलशुभ कीन्हो
गयो युयुत्सु पाण्डसुत संगहि। सुनि कुरुनाथ भयोमनभंगहि
रथते उतरि तुरत चलिआयो। भीषमते यहि भाँति सुनायो।
हौ सेनापति सबके रच्चक। गयो युयुत्सु तुम्हें परतच्चक॥

धर्म्मपुत्र दूत आइकै, कीन्हों कहा विचार।
लच्च सैन सग लै गयो, तुम दलके सरदार॥

भीषम कहो सुनहु हो राजन। आये हमहि वन्दिवे काजन॥
कादर है युयुत्सु शरणागत। हम मारैं नहि देखत भागत॥
अब यह शोच चित्तनहिं कीजै। सावधान रणको मन दीजै॥
भृगुपति सप्तदिवस रणकीन्हों। तिनते जयतिपत्र हम लीन्हों
सुरअरुअसुरन्टपतिरणमारयो। जीति स्वयम्वर बन्धु विवाह्यो॥
पाण्डवसुतके कृष्णसहायक। तेऊ नहि मेरे रण लायक॥
प्रण राखौं हरिको प्रण टारौं। नितक्रम दशसहस्त्ररथि मारौं
सुनि दुर्योधन आनन्दित मन। हर्षि वचन भाष्यो भीषमसन
अष्टादश च्चौहिणि दल दोऊ। एकै रथ चढ़ि जीतै कोऊ॥
कह भीषम जो तेज सँभारौं। एक दिवस दोऊ दल मारौं॥
द्रोण कोपि जो शर संधानै। तीनि दिवसमें करै निदानै॥
कर्ण पांच दिन जो रण रचै। दोऊ दल में कोउ न बचै॥

द्रोणी तीनै दण्डमें, दोउदल करै निदान।
पल्ल लागत अर्ज्जुन वधै, कुवै न दूजो बान॥

दुर्योधन सुनि मौनहि गहेऊ। विस्मय भयो मान नहि रहेऊ ॥
जो तुम अर्ज्जुन जानत ऐसे। रणमें जय तुम करिहौ कैसे ॥
भीषम कह कौरवदलनाथहि। दशदिनकेर भार ममनाथहि ॥
अपनो कटक करौं सब रच्छक। पाण्डव दल मारौं परतच्छक ॥
सुनि दुर्योधन आनँद पायो। अपने दलहि युधिष्ठिर आयो ॥
लै युयुत्सु हरि पायन डारे। अहो कृष्ण यह शरण तुम्हारे ॥
जैसे हमहैं पांचौ भाई। तेहि समान जानो यदुराई ॥
कहो कृष्ण शुभहोहि तुम्हारो। सावधान ह्वै युद्ध विचारो ॥
धर्म्मराज कीन्हों असवारी। श्वेत गयन्द महावल धारी ॥

सिंहनाद वीरन करयो, भयो भयानक शोर।
दशौ दिशा पूरित भई, ज्यों घमरे घन घोर ॥

पारथकही सुनहु जगवन्दन। द्वौदल मध्य राखिये स्यन्दन ॥
सुनिकै कृष्ण हांकि रथदीन्हों। मध्य भूमिलै ठाढो कीन्हों ॥
पारथ आनि सबहिदिशि देखेउ। सबके अग्र पितामह लेखेउ॥
श्वेत वर्ण रथ सरस सुहायो। श्वेत वर्ण तनु शोभापायो ॥
श्वेत धनुष श्वेतै गुण जोरे। श्वेत वर्ण हैं चारिउ घोरे ॥
गुरु द्रोण रथ श्याम सुहायो। श्याम वर्ण घोड़े छविपायो ॥
कृपाचार्यको अर्ज्जुन देख्यो। मनमहँ अतिविस्मयकरिलेख्यो ॥
देख्यो दुर्योधन सौ भाई। धवल छत्र शिर शोभापाई ॥
सिन्धुराज देख्यो वहुनोई। मामा शल्य जान सब कोई ॥

गुरु पितामह बन्धु सुत, देख्यो सब परिवार।
इन्हैं मारि जय का करौं, दीन्हो धनु शर डार॥
कही कृष्ण पारथ सुनि लीजै। क्षत्रियधर्म त्याग नहि कीजै॥
रण देखे क्षत्रिय जो डरहीं। अन्तकाल सो नरकहि परहीं॥
प्रथम क्रोधकरि रणमें आयहु। अब यह ज्ञान कहांते पायहु॥
गहहु अस्त्र कर युद्ध सवाँरहु। छाँड़हु शोच शत्रु संहारहु॥
बालक युवा बृद्धता आवै। अन्त मृत्यु सब प्राणी पावै॥
यामें कोउ नहिं काहुहि मारहि जो सिरजै सोई संहारहि॥
कालवश्यहै सब संसारा। यामें कछुनहिं दोष तुम्हारा॥
क्षत्रियको साहस ते कामहि। कीजै युद्ध होइ यश जामहि॥
दान मरण रण शूरता, क्षत्रिय धर्म प्रमान।
पारथ अस्त्रहि गहौ कहि, सबलसिंह चौहान॥
इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

अर्ज्जुन कहेउ सुनहु जगतारण। गोत्र वधन कीजे केहिकारण॥
बाढै पाप पुण्य सब नाशहि। पावों अन्त अधोगति वासहि॥
गुरु परिवार वधौं केहि काजहि। जैहौं वनहिं छाड़िकै राजहि
अर्ज्जुन को माधव समुझायो। चारि वेद को सार सुनायो॥
मातु पिता सुत बन्धु कहावै। अन्तकाल नहि साथ सिधावै॥
पनो धर्म कर्म पै साथी। सुख सम्पति झूठो सबसाथी॥
। वन जाय तपस्या करिहौ। अन्त भये जगमें अवतरिहौ॥

दान अनेक यज्ञ जो करहीं। स्वर्ग भोगकरि महिअवतरहीं॥
ताते जन्म मरण नहि छूटै। अचल न होहिं कोटि शतकूटै॥
पुण्य पाप दोऊ जब नाशहि। तब पावहि मेरे पुर वासहि॥

पुण्य पाप बांधो जगत, को काटन समरत्थ।
निर्मल ज्ञान विवेकता, कै मन अपने हत्थ॥

मन भो भुक्ति मुक्ति नर पावै। मनके चले कर्म गति आवै॥
सब इन्द्रिन मोहै मननायक। बंधन मुक्ति देन के लायक॥
जाके हृदय दयाको बासहि। ताके धर्म्म सदा परकाशहि॥
जहं लगि जीव जगतमें अहई। सबके हृदय बास मम रहई॥
नदिन मध्य गङ्गा कहं जानहु। तरुन मध्य अश्वत्थ बखानहु॥
ब्रह्मऋषिनमें नारद जानहु। कपिलदेव सिद्धन मो मानहु॥
गजन माहिं ऐरावत देखौ। उच्चैःश्रव हयमध्य विशेखौ॥
सामवेद वेदन महं गनई। साधुनमें शङ्कर सब भनई॥
नरन माहिं राजाके राखित। देवन माहिं इन्द्र मम भाषित॥
सर्पन मध्य वासुकी कहिये। नागनमहं अनन्त मों रहिये॥

ग्रहन माहिं रवि हम अहैं, तेज अग्नि मो जान।
नारिन महं रम्भा अहैं, गुण सात्यकी प्रमान॥

चारिवर्ण महं जो अवतरिहौ। जो कुलधर्म्म सोई सब करिहौ॥
ताते कर्म्म लागि सब करिये। केवल नाम हमारे धरिये॥
कहौं कहां लगि ज्ञान बुझावैं। मृतक सैन सब नैन दिखावैं॥
पारथ कहो सुनहु हो केशो। नयनलखौं तौ मिटै अँदेशो॥

दिव्य दृष्टि अर्ज्जुन तब पायो। मुखमें सब ब्रह्माण्ड दिखायो॥
मेघावर्ण शीश आकाशहि। रविशशि नयन किये परकाशहि
मुख भो अग्नि शारदा रसना। कन्ध रुद्र तारागण दशना॥
इन्द्रबाहु ब्रह्मा हिय सोहेउ। नाभी सिंधु देखि मन मोहेउ॥
पृष्ठ अष्ट वसु शोभा पायो। जंघदशो दिशिपाल सुहायो॥
चरण विष्णु रोमावलि तरुगन। अस्थि पहार वेदश्रुति है मन
धरणी मांस नदी नख लेखेउ। महा विराट रूप यह देखेउ।

मुख विस्तारेउ कृष्ण तव, पारथ देखेउ नैन।
जूझे सब सैना मृतक, रणमें कीन्हें शैन॥

सर्व मृतक पारथ जब देखेउ। अपने जिय अचरजकरि लेखेउ
त्रसित भयो तनु कम्प जनायो। मूंदेउ नैन वचन नहिं आयो
अर्ज्जुन कह त्रासित करि जाना। कठिन रूप छांडेउ भगवाना
अर्ज्जुन अब युग नैन उघारो। सखा रूप मम त्रास निवारो॥
तब पारथ देखेउ बनवारी। जोती गहे पिताम्बर धारी॥
अर्ज्जुन तब कमलापति आगे। अस्तुति करन जोरि कर लागे
तुम प्रभु तीनि लोकके करता। दाता जन्म प्राणके हरता॥
अब संशय प्रभु मिटी हमारी। करिहौं युद्ध सुनहु गिरिधारी
यह कहि धनुष हाथकरि लीन्हेउ। देवदत्त शङ्खध्वनि कीन्हे
सिंहनाद करिआयो। युद्ध भूमिमें शोभा पायो॥

दोऊ दल बाजन बजे, गर्जे सिंह समान।
क्षत्रियगण रण हांक दै, साधे शारँग बान॥

भयो कुलाहल दलमें भारी। आगे भये महा धनुधारी॥
भीषम द्रोण कर्ण नृप आये।शङ्खध्वनि करि नाद सुनाये॥
सुनि कै भीमसेन तब धायो। मानहुं काल देह धरि आयो॥
कहेउ कृष्ण अर्ज्जुन रण करिये। भीषमके सन्मुख ह्वै लरिये॥
तबहिं धनञ्जय धनुकर गहेऊ। आगे ह्वै भीषम सन कहेउ॥
करि प्रणाम सायक दश छांड़ेउ। गङ्गासुत बीचहिशर खंडेउ
भीषम कहेउ सुनहु जग तारण। सारथि भयो भक्तके कारण॥
पांडव धन्य धन्य ये पारथ। जाके रथ पर श्रीपति सारथ॥
यह कहिकै रणको मन लायो। महारथी सब युद्ध मचायो॥
भीमसेन दुःशासन चली। दोऊ जुरे महाबल अली॥
धृष्टद्युम्न द्रोण के आगे। क्रोधितबाण चलावन लागे॥
नकुल और जयदर्थ सुहावैं। क्रोधवन्त दोउ युद्ध मचावैं॥

शकुनी अरु सहदेव रण, भिरे प्रचारि प्रचारि।
नृपति युधिष्ठिर शल्यसों, कियो भयङ्कर मारि॥

भूरिश्रवा सात्यकी सङ्गहि। कृतवर्मा विराट रण रङ्गहि॥
भगदत्तहि क्रोधित जब जान्यो। द्रुपद नरेश आपु रण ठान्यो॥
सोमदत्त उत्तर रण मंड्यो। बाणन ते रिपुसैन विहंड्यो॥
कृपाचार्य्य सन्मुख ह्वै धाये। तिनसों काशिराज रणपाये॥
घटउत्कच कीन्हो सन्धानहि। जुरे अलम्बुष ते रणधामहि॥
नृप शशिबिन्दु शङ्ख संग्रामहिं। क्रोधित लगे चलावनबाणहिं॥
तब द्रोणी निजकरधनुशर गहि। जुरे शिखण्डी ते रण रङ्गहि॥

कुरुदल में वृषसेन सुहाये। तिनते चेति करण रणलाये॥
जुरे वीर सब लै शारँग शर। होन लगी अति मारु परस्पर॥
दोऊ दल कीन्हेउ सन्धानहिं। क्रोधित लगे चलावन बानहिं॥
शततेसहस सहस ते लाखन। वरषें बाण सकै को भाखन॥

दोउ दल वीरन रणरचे, जलद बुन्द सम बान।
महा भयानक युद्ध कह, सबलसिंह चौहान॥

इति तृतीय अध्याय॥ ३॥

अर्ज्जुन सों भीषम पुरुषारथ। कीन्हो प्रलय भयानक भारथ॥
क्रुद्धित चले चलावत बानहिं। विंशति शर मार्‍यो हनुमानहिं॥
महावीर रण दोउ समानहिं। कृष्ण शरीर हन्यो दशबानहिं॥
सहस बाण भीष्म कर लीन्ह्यो। ताते मारु पारथहि दीन्ह्यो॥
अष्ट विशिख क्रुद्धित ह्वै जोरे। घायलकिय रथचारिउ घोरे॥
और लक्ष शर क्रोधित मारा। बहे प्रवाह रुधिरकै धारा॥
सप्त बाणते ध्वजा निशानहिं। बाणन ते सैना घमसानहिं॥
कृष्णअङ्गदश विशिखसुमार्‍यो। तब अर्ज्जुन शरधनुष सुधार्‍यो॥
षष्टि बाण भीषम उर मारा। मानहु वज्रपात फटकारा॥
सप्तबाण हनि ध्वजानिशानहिं। सारथि उरमार्‍यो दशबानहिं
ल अश्व रहे रथ जोरे। घायल भे रथ चारिउ घोरे॥
न बाण चमू पर मार्‍यो। हय गज रथ पदाति संहार्‍यो॥

क्रोधवन्त अर्ज्जुन भयो, कीन्हो लघु सन्धान ।
जलथल भारतभूमि सब, शर छायो असमान ॥
एके शर पारथ सन्धानहिं । गुणमें धरत होहि दशबानहिं ॥
चलत होहि शत लगे सहस्रन । यहिप्रकार कियो सैननिकन्दन॥
जब पारथ बहु कटक सँहारयो । भीषम अपनो तेज सँभारयो ॥
लघ सन्धान लगे शर वर्षन । जूझै सैन सहस्र सहस्रन ॥
दोउ सुभट अतिसमर जुहारा । वरषहिं बाण मनो जलधारा ॥
भीषम अग्निबाण सन्धान्यो । लखि पांडवदल शङ्का मान्यो ॥
प्रकटो अग्नि बाणते ऐसो । प्रलयकाल वड़वानल जैसो ॥
प्रकटीं शिखा सहस्र सहस्रन । पांडवदल लागे जारन तन ॥
जब पांडव सेना अकुलान्यो । वरुण बाण अर्ज्जुन सन्धान्यो ॥
वरुण विशिखते वरष्यो पानी । निमिष एकमहँ अग्नि बुतानी ॥
रणमें मेघ घुमरि कै आयो । महा वृष्टि वर्षा झरिलायो ॥
वसन सनाह भीजि तनु लागे । परभीजे शर चलत न आगे ॥

पवन अस्त्र भीषम गह्यो, सूख्यो नीर तुरन्त ।
हय पदाति रथ उड़त हैं, मतवारे मैमन्त ॥
ऐसी तेज समीर चलाई । मानुहु घरी प्रलयकी आई ॥
नागविशिखि तब फल्गुप्रहारा । सर्पन कीन्ह्यो पवन अहारा ॥
फनकाढ़े अजगर सबधावहिं । लीलहिंसेन विलम्ब न लावहिं ॥
विषके तेजकटक व्याकुल अति । भीषम शर सन्धान्यो खगपति
गरुड़ देखि सब सर्प पराने । भये अलोप जात नहिं जाने ॥

तीक्षण पञ्चबाण कर लीन्हयों। तेशरचोट शीशपर दीन्हयों॥
अर्जुनइमिअतिविशिखचलायो। शरसों भीषमको रथछायो॥
गङ्गतनय हँसि विशिख पँवारे। पारथ शर बीचहि कर डारे॥
कृष्णदेव रथ हांकि चलायो। भीषमके सम्मुख पहुंचायो॥

अर्जुन रथ आयो निकट, भीषम देखेउ नैन।
क्रोधवन्त शर साधिकै, कह्यो कृष्णसों बैन॥

दीनबन्धु सन्तन सुख दायक। पारथ नहिं मेरे रण लायक॥
पाण्डु वंशके रक्षा कारण। सारथि आप जगतके तारण॥
आपु सुदृढ़ जोती कर गहिये। मारत हौं तीक्षण शर सहिये॥
ऐसो शर भीषम सन्धान्यो। देवलोक सब शङ्का मान्यो॥
कम्पत है पांडवदल ऐसो। कदलीपात मरुत लगि जैसो॥
दिगपालन देखत भय मानो। वसुधा शायक निरखि सकानो॥
जो शर परशुराम ते पायो। क्रुद्धित ह्वै सोइ बाण चलायो॥
छूटत बाण शब्द भयो भारी। दशदिशिअतिकीन्हीउजियारी॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै। सावधान रणको मन दीजै॥
जब पारथ सुरपुर पगु धारयो। देवकाज सब दैत्य सँहारयो॥
तब सुरपति शिर मुकुट बँधायो। तहां किरीटी नवशर पायो॥

हँसि दीन्हो सुरनाथ तब, पारथ लीजै बान।
महाकष्ट रणमहँ परै, तब कीन्हयों सन्धान॥

इशरपाणिविजयनरलीन्हयो। पढ़िकै मन्त्र फोंकशरदीन्हयो॥
क्रुद्धहोइ विशिखचलायो। आवतबाणसोकाटि खसायो॥

काटग्रोशर श्रीपति सुखमान्यो । तब अर्ज्जुनयहिभांतिबखान्यो ॥
अहो पितामह धनु दृढ धरिये । सावधान मोते रण करिये ॥
दोऊ सरस रच्यो पुरुषारथ । कीन्ह्यो महाभयानक भारथ ॥
पांडवदल भीषम बहु मारत्रो । भीमसेन तब आपु संभारत्रो ॥
रथते उतरि गदा गहि धायो । कौरव दलमें युद्ध मचायो ॥
गदा घाव गजको शिर फोरत्रो । सहितभुशुण्डिदशनतबतोरत्रो ॥
कोपि गदा रथ ऊपर मारै । सहित रथी सारथी सँहारै ॥
हय पदाति आगे जो पावै । भीमसेन तेहि मारि गिरावै ॥
रथहि पकरि रथ ऊपर मारै । गहि गयन्द गज ऊपर डारै ॥
आरत लगे जात लोटत गज । लागे धुका उताइल गतसज ॥

कोरवदल त्रासित भयो, धरै न कोऊ धीर ।
सहसा कै रणमें जुरे, एक बार शत वीर ॥

दैकरि हांक कियो दृढ़ ठानहिं । सबैरथिन मिलि मारे बानहिं ॥
काल समान तेज रण छूटे । वज्र शरीर लागि सब टूटे ॥
भीमसेन क्रुद्धित होइ धाये । मारि सबै यमलोक पठाये ॥
काहुहि गहि मुष्टिक सों मारे । जे अभिरे ते सकल पछारे ॥
कौरवदलहि प्राणभय कीन्ह्यो । क्रोधितद्रोणहांक तबदीन्ह्यो ॥
रहु रहु अरे वृकोदर ठाढो । सैना वधि तेरो मन बाढ़ो ॥
यह कहि धनु नराच दृढधारत्रो । भीमअंगदशविशिखप्रहारत्रो ॥
गुरुद्रोण अगणितशरमारत्रो । तब निजरथहिभीमपगुधारत्रो ॥
भीषमते अर्ज्जुन संग्रामहि । दोऊ जुरे खेत जयकामहि ॥

पारथ जबलगि भीम निहाख्यो । दशसहस्त्ररथभीष्महि माख्यो ॥
तब भीषम जयशंख बजायो । संध्यालखिनिजरथहि घुमायो ॥
फिरिकैसुभटकियो जब गवनहिं । पाण्डव गये आपने भवनहिं ॥
दुर्योधन हर्षित होइ कह्यो । रणमों भीषमको प्रण रह्यो ॥
दश सहस्र माख्यो रथ नीके । पाण्डव गये युद्धमें फीके ॥
सैन सकल कीन्हेउ विश्रामहिं । धर्मराज आये निज धामहिं ॥

अस्त्र खोलि धरणी धख्यो, टोप सनाह उतारि ।
श्रम नाश्यो असनान करि, जेवें सहित मुरारि ॥

द्रुपदसुता यह कथा चलाई । आजुयुद्ध केहिको प्रभुताई ॥
कही कृष्ण भीषम रण मण्ड्यो । दशसहस्त्ररथ क्षणमें खण्ड्यो ॥
प्रात शंख कीजै सेनापति । कुरुदल अर्ज्जुन संहारहि अति ॥
कही द्रौपदी सुनिये केशौ । मेरे मन यह बड़ो अँदेशौ ॥
जोपै शंख भीष्मते लरिहैं । अर्ज्जुन भीमसेन का करिहैं ॥
कही कृष्ण यामें है कारण । शत्रु सेन कीजै संहारण ॥
प्रात होत दोऊ दल साजहिं । शब्द अघात दमामे बाजहिं ॥
श्रीहरि कह विराट सुनुभूपति । शंखहि कीजै आजु चमूपति ॥
सुनि विराटकह आनन्दितमन । जो आज्ञा कीजै जगवन्दन ॥
मैं कुलमें सुपुत्र सुत जायो । भारत सेनापती कहायो ॥
धर्मराज श्रीपतिके आगे । बाँधन मुकुट शंख शिर लागे ॥

कह्यो शंख कर जोरिकै, सुनि लीजै सुखधाम ।
तुम समान सारथि भये, भीषमते संग्राम ॥

पारथ रथी आपु प्रभु सारथ। भीषम कियो सरस पुरुषारथ॥
मेरे रथ नहि सारथि ऐसो। समता युद्ध होइ रण कैसो॥
जो श्रीपति सम सारथि पावों। मारि सबै कौरव बिचलावों॥
कही कृष्ण सात्यकि सुनिलीजै। आजआप सारथि प्रण कीजै
बैठि शंखरथ जोती धरिये। भीषमके सन्मुख रण करिये॥
प्रभु आज्ञा सात्यकि तबपायो। आपु सारथी बेष बनायो॥
चारि तुरंग आनि रथ जोरे। घंघट सहित चलतसुखमोरे॥
बाँध्यो मुकुट शंख मन हर्षहि। राजयुधिष्ठिरके पुनिपद गहि॥
तब विराटके पद सोइ लाग्यो। कृष्णचरण परस्यो अनुराग्यो॥
कियो सात्यकीको पगवन्दन। चढ़ोजाइ रथ परमानन्दन॥
नन्दिघोष अर्ज्जुन असवारी। जोती गहे पिताम्बरधारी॥
भीम सहित सेना सब साज्यो। सिंहनाद करि रणमें गाज्यो॥

सबके आगे शंखरथ, साधे कर धनु बान।
भारतके संग्राम कह, सबलसिंह चौहान॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

कुरुदल साज करन सब लागे। राजा कहेउ पितामह आगे॥
आजु अस्त्र यहिविधिते धरिये। कृष्ण सहित अर्ज्जुन बध करिये
भीषम कही युद्धको चलिये। शोच कहा ह्वै है सब भलिये॥
महा गँभीर कियो दलसाजन। बाजन लगे युद्धके बाजन॥

कुरुक्षेत आयो कौरव दल। देखत हाँक दियो दोऊ दल॥
भीषमअतिअचरजकरिलेख्यो। वांध्यो मुकुट शंखशिरदेख्यो॥
तव सात्यकि रथ हांकि चलायो। भीषमके सन्मुख पहुँचायो॥
शंख प्रथम दश बाण चलायो। ते शर भीषम काटि गिरायो॥
हँसि भीषम दश शायक जोरे। ते शर शंख वीचही तोरे॥
कोपि कुँवर शतबाण प्रहारयो। भीषमके उरमध्य सुमारयो॥
शर लागत भीषम रिस बाढ्यो। भीषमके उरमध्य सुमारयो॥
काल समान बाण सब छूटैं। भेदि सनाह अंगमें फूटै॥

क्रोधवन्त भीषम भये, कीन्हों लघु संधान।
सर सरिता सात्यकि भये, कुँवर अंग बहुबान॥

नृप विराटसुत तेज सँभारो। षष्टिबाण भीषम उर मारयो॥
भीषम शंख लरे रण अंगन। दोऊदल बहु कियो निकन्दन॥
गजसों गज चौदन्त लराई। रथी रथी सों मारु मचाई॥
जुरे आइ असवार महाबल। लगे पदातिपदातिन करिबल॥
महारथी रथ हाँकि चलायो। कौरव कटकमध्य तब आयो॥
तब अर्ज्जुन कोदण्ड सुधारयो। क्रुद्धित ह्वै बहुविशिखप्रहारयो॥
जो जो सैन्य दृष्टि में आयो। क्षणमें अर्ज्जुन मारि गिरायो॥
रुण्ड मुण्ड वसुधामें तोप्यो। सूझि न परयो मांसमहि रोप्यो॥

घोरयुद्ध कपिध्वज कियो, सेना वध्यो अनन्त।
गज रथ हय पदचर गिरे, कहूं शीश कहुँ दन्त॥

वध्यो सेन यहिरूपहि। देखिक्रोध उपज्यो तब भूपहि॥

दुर्योधन क्रोधित ह्वै धायो । छत्र छांह रविदृष्टि छपायो ॥
नन्दिघोष रथ राजन घेरयो । मारु मारु दुर्योधन टेरयो ॥
दुःशासन सब राजन लीन्हें । बाण वृष्टि पारथपर कीन्हें ॥
चहूं ओर वर्षत शर कैसे । भादौं बूंद सघन घन जैसे ॥
नन्दिघोष रथ शरते छायो । अर्ज्जुन कृष्ण दृष्टि नहि आयो ॥
पारथ इन्द्र अस्त्र गुण जोरे । अन्तरिच्छही सब शर तोरे ॥
अरु सहस्र राजा बध कीन्हों । शङ्खध्वनि अर्ज्जुन तब दीन्हों ॥
मणिमय मुकुट जरायन जरे । शीश सहित वसुधामें परे ॥
जहां जहां अर्ज्जुन रण ताक्यो । तहां तहां माधव रथ हांक्यो ॥
और अनेक निशित शर मारयो । एक बाणयहिभांति प्रहारयो ॥
सारथिशीश काटि महिडार्यो । कृष्णअङ्ग दशबाण प्रहार्यो ॥
रथते दुःशासन महि आयो । देखि विरथ दुर्योधन धायो ॥
तब कुरुनाथधनुषकरलीन्हयो । महामारु कपिध्वजपर दीन्हयो ॥
सुनिकै शोर वृकोदर धायो । द्रोण जाय बीचहि अटकायो ॥
भीषम कही द्रोण रण रङ्गहि । जुरे धनञ्जय कुरुपति सङ्गहि ॥
आप शङ्खसन समर जु कीजै । हम पारथपर सायक दीजै ॥
जाह्नविसुत यहकहि लघु धायो । शर वर्षा पारथ पर लायो ॥
दुर्योधनको पाछे घाल्यो । आगे रथ गङ्गासुत चाल्यो ॥
सिंहनाद करि हांक जनायो । रहु अर्ज्जुन भीषम अब आयो ॥

अबलौं जो सेना वध्यो, हौं न रह्यो यहि ठौर ।
तौ पारथ बल जानिहौ जो दल वधिहौ और ॥

कोटिन अर्जुन करहुं सँहारण। कृष्णसहाय बचौ त्यहि कारण॥
अर्जुनसुनिक्रुद्धित परिजरयऊ। दृढ होइ धनुषबाणकर धरयउ॥
पारथ क्रोधवन्त ह्वै टेरयो। जब तुम सब विराटपुर घेरयो॥
तादिन मैं सबको बल जान्यो। गोधन सबै फेरिगृह आन्यो॥
बड़े अहहु बड़ वचन न कहहू। दृढ ह्वै धनुषबाण कर गहहू॥
यह कहिकै लागे शरवर्षन। शतते सहस सहस्र सहस्रन॥
अपर चरित्र सुनहु मन लाई। शङ्ख द्रोण जहँ करत लड़ाई॥
एकहि एक क्रोधते मारत। आवत बाण बाणते टारत॥
अमित युद्ध दुर्योधन देख्यो। अपने जिय अचरजकरि लेख्यो॥
शङ्खकुंवरअतिविशिखपँवारयो। रथके चारि अश्व संहारयो॥
कियो सारथीको शिर खण्डित। पुत्र विराट महारण मण्डित॥

द्रोण अपर रथपर चढ्यो, कछु लज्जा कछु क्रोध।
महारथी देखत सकल, बालकपर अनुरोध॥

जब लग द्रोण आपु संभारयो। तनयविराट सैन्य बहुमारयो॥
कौरवदल बहुशङ्ख निपातो। गुरु तब भयो क्रोधते तातो॥
रहुरे शङ्ख ठाढ़ रण रङ्गहि। एकै शर कृत जीवन भङ्गहि॥
दूजो बाण करौं सन्धानहि। तौ मोहि परशुरामकी आनहि॥
यह कहि ब्रह्मअस्त्र करलीन्हयों। पढिकैमन्त्रफोंक शर दीन्हयो॥
तेज अकाशहि व्याप्यो। सुर नर नाग देखिकै कांप्यो॥
किरणि बाणने कैसे। ग्रीषमऋतु प्रचण्ड रवि जैसे॥
न सात्यकि जिय बाढो। द्रोण तोणते शर जब काढ़ो॥

कहहु कुंवर तव रथहि फिरावों। अर्ज्जुनके पीछे पहुंचावों॥
अहह कह्यो इस्थिर ह्वै रहिये। च्वत्रिधर्म्मकिमिजियनहि गहिये।
बांध्यो मुकुट जु कृष्ण कर, भारतके रण खेत।
द्विजसों पृष्ठ दिखायकै, तनु राखौं क्यहि हेत॥
कार्मुक द्रोण श्रवनलगि तान्यो। छूटत बाण शब्द घहरान्यो॥
बाण प्रताप अग्निबहु बाढ़्यो। वड़वानलजनु दधितेकाढ़्यो॥
सप्ततालभयो अग्नि उँचाई। चौदह ताल रह्यो चकलाई॥
देखेउ ब्रह्मअस्त्र ढिग आवत। सात्यकिबहुरिकुँवरसमुझावत॥
फेरों रथ सुनु वचन बावरो। काह मरत विन काज रावरो॥
रथ समेत यहि विधि जरिजैहो। खोजत कतहुँअस्थिनहिंपैहो॥
जो मेरो रथ फेरहु भाई। कृष्ण चरण युग कोटि दुहाई॥
गुरुहति द्विजहति पाप सु पावहु। जो सात्यकिरथफेरिचलावहु
जन्म भये ते मृत्यु न छूटै। सो सपूत जगमें यश लूटै॥
रणते भागि भवन जब जैबो। च्वत्रिनमहं किमि वदनदेखैबो॥
कुँवर लग्यो जलबाण चलावन। ब्रह्म अग्नि को सकै बचावन॥
रणमें द्रोण अधर्म विचार्‍यो। त्राहि त्राहि सबदेव पुकार्‍यो॥
सुरगण सब यहि विधिकहैं, द्रोण अधर्म विचार।
बालकते रण ठानिकै, ब्रह्मसु अस्त्र प्रहार॥
अस्त्रतेज सब अंगहि व्याप्यो। सहिततुरंग सात्यकी काँप्यो॥
तव सात्यकि रथ फेरि चलायो। कुँवर कूदि धरणीपर आयो॥
सन्मुख रह्यो नेकु नहि मुरो। ब्रह्म अस्त्रमहं ठाढे जुरो॥

दोऊ दल देखत हैं नयनहिं। साधुशंखभाष्यो सबबयनहिं॥
भस्म भयो मन नेकु न मोरो। भाजो सात्यकि लै सब घोरो॥
देखत द्वौ दल शंख जरायो। फिरिकै द्रोणतोण शर आयो॥
द्रोण आपु जय शंख बजायो। सुनिकै धृष्टद्युम्न मन लायो॥
रे गुरु द्रोण ज्ञानकर हीनों। करि अधर्म खोयो पन तीनों॥
ह्वै के विप्र अस्त्र जो बाँध्यो। बालकपर ब्रह्मास्त्रै साध्यो॥
अब मोते संग्राम विचारहु। अहो विप्र पहिले शर मारहु॥
सुनि गुरु द्रोण क्रोधते जाग्यो। तीक्षणबाण चलावन लाग्यो॥
कुँवर सबै वे बाण सँभारयो। द्रोण ललाट तीनि शरमारयो॥

ब्रह्महि अस्त्र उदोत मय, पारथ देख्यो नैन।
तौ लगि भीषम वधिगये, दशसहस्त्ररथ सैन॥

भीषम शंख दयो जय हेतू। सुनिकै शब्द फिरयो कुरुकेतू॥
सब मिलि गये आपने धामहिं। दोऊदल कीन्हयो विश्रामहिं॥
अब यहकथा चलौ जो आगे। भोजन पान करन सबलागे॥
बोलि बाढ़िधर बाढ़ि धरायो। कोउशायकमहँ सानकरायो॥
कोउ निषंगमहँ शायक देखत। चारा चारु तबल कोउ देखत॥
कोउ स्यन्दनमहँ साजलगावत। कोऊ शक्ति सनाह बनावत॥
धर्मराज माधव सँग लीन्हें। गमन विराटभवन शुभकीन्हे॥
[illegible] ति मन शोच निवारहु। क्षत्रिधर्म निजहृदय विचारहु॥
[illegible] राट सुनहु नृपनायक। जूझे पुत्र मोहिं सुखदायक॥
[illegible] के काजहि आयो। शोच कहा बहुतै सुख पायो॥

धर्म्मराज बन्धुन सहित, साथ लिये घनश्याम ।
भोजनको बैठे सकल, द्रुपदसुताके धाम ॥
षटरस भोजन आनि बनाये । जेंवत भीम महा सुख पाये ॥
द्रुपदसुता कछु वचन उचारयो । आजु युद्धकेहिभांति संवारयो ॥
कहेउ कृष्ण अर्ज्जुन बल भारी । मारे सहस छत्रके धारी ॥
द्रोण अधर्म्म युद्ध मन लायो । ब्रह्मअस्त्रते शङ्ख जरायो ॥
धर्म्मराज कह सुनहु मुरारी । मम उर यह संशय अति भारी ॥
दशसहस्ररथ नितक्रम जूझै । भीषमते-जय मोहिं न सूझै ॥
कहेउ द्रौपदी नृप नहि डरिये । बनकीकथा आपु सुधिकरिये ॥
दुर्व्वासा कुरुनाथ पठायो । अर्द्धराति पर्णशाला आयो ॥
सप्त सहस्र शिष्य सँग लागे । भोजन आय द्वार ह्वै मांगे ॥
क्षुधावन्त हम भोजन दीजै । नाहित ब्रह्मशाप अब लीजै ॥
भोजन दीजै कवन विधि, एक अन्न नहिं भौन ।
ब्रह्मशापके त्रासते, सबै रहे गहि मौन ॥
तब म कह्यो ऋषिय सुनिलीजे । आपजाय प्रभु स्नानहिं कीजे ॥
मैं भोजन कर साज बनावौं । आवहु तुरत सबन बैठावौं ॥
छलकरि मैं ऋषिको छिनटारो । बहुत त्रासजियमध्य विचारो ॥
प्रभु यहि समय दया अब करिये । नाहित ब्रह्मशापमो जरिये ॥
सबमिलिकृष्णचरण युग ध्याये । सुमिरतही तुरन्त प्रभु आये ॥
करि प्रणाम बहुतै सुख पायो । क्षुधा क्षुधा यदुनाथ सुनायो ॥
तब मैं कह्यो अन्न नहि लेशौ । भोजन कहा दीजिये केशौ ॥

रन्धनको भाजन प्रभु देख्यो । तामैं शाककणा इक लेख्यो ॥
तब घनश्याम शाक वह खायो । मुनिगणकेर उदर भरिआयो ॥
कोउ उदर निज पाणि भ्रमावहिं । कोऊ पलन्ह सेज बनावहिं ॥
काहुको दूध घीव तब आवहिं । मन्त्रअगस्त्य कोऊ मनलावहिं ॥
भीमसेन तब जाय बुलायहु । द्विजगण चलहुगहरुकिमिलावहु ॥
दुर्वासा यहि विधि कह्यो, नाहि न भक्त विनाश ।
सबलसिंह चौहान कह, चरण कमलको आश ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ १८ ॥

आये कृष्ण साधु सुखदायक । पांडु वंशके सदा सहायक ॥
दुर्वासा कह सुनहु वृकोदर । व्याप्यो कृष्ण सबनके ओदर ॥
जैसो हम याचञा लायो । अपनो कियो आपुते पायो ॥
यहि कहिक सब द्विजगण भागे । आये भीम कृष्णके आगे ॥
हँसि प्रभु द्वारावति पगुधारयो । वे चरित्र नृप चित्त विसारयो ॥
यहसुधि सबविसरीकेहि कारण । कहांशोच जहँत्रासनिवारण
द्रुपदसुतायहिभांतिबखान्यो । सुनियदुपतिअतिशयसुखमान्यो
कौरव कटक समर महँ आयो । धनुकरशर निषङ्ग कटिलायो ॥
प्रभात सजे कुरु केतू । बजे निशान युद्धके हेतू ॥
करि शब्द सुनायो । पाण्डव सकलअजिररण आयो ।
ो सन्मुख तब भयऊ । कौरन धनुष फोंक शर दयऊ ।

रथ गज पदचर न्टपति सब, करन लगे रणघोर।
महारथी सेनापती, भिरे जोरसों जोर॥
आंदू खोलि दये अधियारी। धाये गज पर्वतसे भारी॥
भादौं घटा उनै जनु आयो। गजन युद्ध चौदन्त मचायो॥
बाण बूंद झरि रथिकर बलकै। शायक खड्ग दामिनी दमकै॥
करिकै नाद भीष्म तब धायो। भयो शब्द जनु घन घहरायो॥
शक्ती शेलह ऊपर सब टूटहिं। वज्रपात अर्ज्जुन शर छूटहिं॥
विषम खड्ग बाज्यो शर खण्डित। भीषमरथ हांक्यो परचण्डित॥
नन्दिघोषके सन्मुख आयो।बाण वृष्टि अर्ज्जुनपर लायो॥
पारथ ते शर काटि निवारयो। पञ्चविशिख भीषम उर मारयो॥
लागतविशिख क्रोध उर बाढ्यो। तीच्णशर निषङ्गते काढ्यो॥
हन्योताकि कपिध्वजके हियमों। गङ्गासुत क्रुद्धित ह्वै जियमों॥
भीषम अर्ज्जुन रण रच्यो, भयो युद्ध अति घोर।
धृष्टद्युम्न अरु द्रोणते, परयो आनि अति जोर॥
क्रुद्धित ह्वै बहुविशिख चलायो। धारी व्योम महा शर छायो।
गुरु द्रोण बहु शायक छांड़यो। धृष्टद्युम्न क्रुद्धित ह्वै खांड़यो॥
भरद्वाजसुत बाण चलायो। कुंवर उत्तरा खड्गलै धायो॥
झपटै बाज चर्म्मपर जैसे। पहुंचो आय द्रोण ढिग तैसे॥
निकट जानिकै गुरु सँभारयो। लघुसन्धान बाण तब मारयो॥
बरषहिं बाण घात नहिं पायो। कुंवर पेलि अपने दल आयो॥
लै कोदण्ड लग्यो शर मारन। छांड़यो बाण सहस्र अपारन॥

कृपाचार्य्य किय शरसन्धानहिं। भिरेनकुल तिनते जयकामहिं।
मन्त्री शकुनी रण सहदेवहि। पण्डित दोउ युद्धके भेवहि॥
हांक्यो जबहिं अलंबू स्यन्दन। तिनते भिरयो हिडम्बीनन्दन॥
शल्य नरेश सात्यकी लरई। कृतवर्मा विराट रण करई॥
युद्ध देखि भगदत्त रिसानो। चढ़ि गयन्द पर कियो पयानो॥

ऐरावतको सुत अहै, ताहि दियो सुरराज।
तापरचढ़ि भगदत्त नृप, कियो युद्धको साज॥

मन्दरसों देखत नर डरई। योजन ऊपर पांवसों धरई॥
दन्त विशाल कहत नहिं आवै। मनहुँ शृङ्ग कैलास सुहावै॥
कालरूप सम कुंजर धायो। पांडव दलके ऊपर आयो।
कटक अमित पायनसों मारयो। शुण्डलपेटि रथौ फटकारयो
अपनो दल डोलत अनुमान्यो। भीम अग्र ह्वै हांक सुठान्यो॥
क्रुद्धित शर कोदण्ड सुधारयो। कुंजरशीशविशिखशतमारयो॥
शायक अमित हने गजमत्तहि। षष्टिबाण मारयो भगदत्तहि॥
तब भगदत्त क्रोधउर कीन्हयों। पञ्चविंश शर फोंकन दीन्हयों
भीमसेन उर मध्य प्रहारा। वहै प्रवाह रुधिरको धारा॥

तब गयन्द अति क्रोध करि, गह्यो भीमरथ आय।
फेंकि दियो रथ भूमिमें, परो कोशपर जाय॥

कहूं तुरंग कहूं रथ टूटयो। कहूं सारथी कर शिर फूटयो॥
सेन तब लज्जा पायो। रहु भगदत्त वृकोदर आयो॥
मारि यहि भांति जनायो। लैकर गदा क्रोधकरि धायो॥

एकहि गदा शीशपर दयऊ । चारि पैग पाछे गज गयऊ ॥
गदा घाव गजराज सँभारयो । भारि शीश आगे पग धारयो ॥
तव भगदत्त क्रोध जिय कीन्ह्यो । हांकिशेलउरमध्यसोदीन्ह्यो ॥
शेल घाव ते मोह जनायो । धका मारि गजराज गिरायो ॥
गिरयो भीम धरणीमहँ कैसे । भूधर परत भूमितल जैसे ॥
द्रुपदनरेश देखि करि धायो । उतरा काशिराज सँग आयो ॥
जुरयो शिखंडी अति रण धीरा । चारिउ वीर महाबल बीरा ॥
सहस सहस शर सवन चलायो । शीश गयन्द बाणते छायो ॥
गजपर शर वर्षत सब कैसे । गिरिपर वृष्टि नीर घन जैसे ॥

नृप भगदत्त जु क्रोध ह्वै, लीन्हेउ शर कोदण्ड ।
चारिउ भट मोहित किये, भारत रण बरबण्ड ॥

चारिउ वीर विमोहित कीन्ह्यो । पेलि गयन्दकटकपरदीन्ह्यो ॥
सन्मुख आइ शूरशर जोरहिं । झपटि गयन्द सबनशिरतोरहि ॥
ठोकर अपर पैरते मारहि । काहुहि छेदि दण्ड ते डारहि ॥
विडरी अनी व्यूह सब फूटे । विपुल सङ्ग निज सँगते छूटे ॥
भयो शोर दल वैरख डोल्यो । क्रुद्धित धर्म्मराज तव बोल्यो ॥
अहो मूढ भागत केहि कामहिं । सन्मुख युद्धकरहु रणधामहिं ॥
प्राण गये उत्तम गति पैहहु । चढिविमानसुरलोकसिधैहहु ॥
क्षत्रिय वंश जन्म जो पावै । सो सुपुत रण प्राण गंवावै ॥
धर्म्मराज यहि विधि ते कह्यऊ । फिरकै अस्त्र सवन पर गह्यऊ ॥

गर अरु शक्ति शैल ते मारहिं। तोमर फरसा कोउ प्रहारहिं॥
चत्री क्रोधवन्त ह्वै धाये। तूणिन माहँ खांड अजमाये॥

साहस करि चत्रिय सकल, करहिं सुअस्त्र प्रहार॥
महा भयङ्कर देव गज, होत घाव नहिं पार।

तब भगदत्त निकरशर डारयो। चत्रिय विपुलसमरमहि मारयो।
रथ अनेक गज गहि फटकारै। ऊपर शर भगदत्त जु मारै॥
व्याकुल सैन त्रसित ह्वै भागे। दबेते सकल परे जे आगे॥
शत नरेश तेहि ठाहर जूझे। चले न भाज पङ्क आरुझे॥
गज रथ अरु असवार सहस्रन। धर्मराज हित मृत्य भये रन।
कायर सकल जीव लै भाजे। तब भगदत्त समर महि गाजे॥
सिहनाद करि हांक सुनायो। हैकोउसुभट जो सन्मुख आयो।
पांडुवंश सब मारि गिरावों। एक छत्र कुरुराज करावों॥
तब अपनो पुरुषारथ लेखौं। अर्ज्जुन कृष्ण नयन जब देखौं॥
धर्मराजके सन्मुख आयो। अर्ज्जुन को माधव समुझायो॥

अर्ज्जुन अब देखत कहा, धर्मराजपर भीर।
चलहु जाइ उत रण करिय, रथ हांको यदुवीर।

सकल सैन्य धीरज मन धरेऊ। जबहीं दृष्टि कपिध्वज परेऊ।
करिटङ्कोर धनुध कर लीन्ह्यो। अर्ज्जुन आइ हांक रण दीन्ह्यो।
.के जोर सैन्य सब मारे। परेउ आय अब घात हमारे॥
छांड़हु जीबनकी आशहि। गज समेत जैहौ यमपासहि॥
भगदत्त क्रोध करि कह्यो। अर्ज्जुन मैं खोजत त्वहि रह्यो॥

भली भई वि ध कीन्ही भेटहि । जैहो आजु कालके पेटहि ॥
पुनि अर्ज्जुनधनुशायक लायो । क्रोधित ह्वै अतिवाण चलायो ॥
तब भगदत्त बाण सब काटे । क्रुद्धित ह्वै सब शायक पाटे ॥
अष्टि बाण मारेउ अर्ज्जुनतन । असीनराच हन्यो श्यामहिघन ॥
सहसबाण मारयो हनुमानहिं । पञ्च बाणते ध्वजा निशानहिं ॥
अष्ट विशिख अश्वनउर लागे । थकित भयो रथचलत न आगे ॥
तब शर विंशति विजयी मारयो । नृपकोचाप खण्डिकै डारयो ॥
पुनि पारथ कीन्हों सन्धानहिं । शक्तिबीचमारयो दशबानहिं ॥
निष्फल भयो शक्तिजब जान्यो । लैकरचापविशिख सन्धान्यो ॥
क्रुद्धित नृप मारयो तीक्षण शर । घायल भये आपु धरणीधर ॥
गजहि पेलि अर्ज्जुनपर आयो । ऊपरते बहु शर झरि लायो ॥
गज समेटि कै फेंक्यो स्यन्दन । अर्ज्जुन कहीं कहीं जगवन्दन ॥
तीक्षणबाण घाव उर दीन्हयो । अर्ज्जुनकृष्णविमोहित कीन्हयो ॥
गिरत आपु भाष्यो गिरिधारी । हनूमान रथ रक्षाकारी ।

हम पारथ अरु रथसहित, तुम रक्षक हनुमान ।
यह कहिकै मोहित भये, भक्त हेतु भगवान ।

अर्ज्जुन कृष्ण मोह जब पायो । तब भगदत्त क्रोध करि धायो ॥
गजके पांयनते रथ तोरौं । ठोकरते अर्ज्जुन शिर फोरौं ॥
हनूमान हँसि वचन सुनायो । नृप यह मन्त्र अकारथ लायो ॥
मोकहँ रथ सौंप्यो रघुनायक । ऐरावत नहि तोरन लायक ॥
यम अरु इन्द्र वरुणजो आवहि । तेऊ नहि रथ देखन पावहिं ॥

वेष्टि लँगूर सबै रथ दीन्ह्यो। धाया मत्त हस्ति रिस कीन्ह्यो।
क्रुद्धित ह्वै नृप धनुष सँभारयो। लक्षबाण हनुमानहिं मार्यो।
प्रवल तेज शोणित शर छूट्यो। वज्र शरीर लागि सब टूट्यो।
दोउ दन्त गहि पेलेउ बलकै। कछुक ढीलदीन्ह्यो कपि छलकै।
द्वौ सन्धबीच दन्त जब धर्ह्यो। तब हनुमान लँगूरहि कर्ह्यो॥
पेंच लँगूर दसन दोउ टूटे। तब गज महा कष्टते छूटे॥
उखरे दशन चकित सब कोऊ। शोणित बहै रदनकर दोऊ।

हरि जागे अर्ज्जुन उठे, हाथ धनुष लै बान।
पेंच लँगूर समेटिकै, रथ छांड़्यो हनुमान॥

सुनु भगदत्त कर्ह्यो यह पारथ। तुमकीन्ह्यो अतिशय पुरुषारथ।
अब मेरो प्रण नृप सुनिलीजै। एक बाण कुञ्जर वध कीजै॥
दूजो शर सन्धान जु करऊं। नहिं कोदण्ड बहुरि कर धरऊं॥
जो यह बाण गजहि सम्भार्यो। क्षत्रिय धर्म्म आजुते हार्यो॥
तब भगदत्त कर्ह्यो यह कारन। मैं यह प्रण कीन्ह्यो अपने मन।
जो यह शर गजराज गिरावै। मेरो अयश सकल जग गावै॥
कृष्ण कही अर्ज्जुन सुनि लीजै। अब अपनो प्रण रक्षा कीजै॥
पारथ ब्रह्मबाण सन्धान्यो। श्रवणप्रयन्त शराशन तान्यो॥
कुम्भस्थल तकि मारत भयऊ। भेदिशीशशरनिकसिगयऊ॥
छटपटउ प्राण गिरन गज चह्यो। तब भगदत्त जह्नुसों गह्यो॥
र्ह्यो साधि कुकन नहि पायो। बाण वृष्टि अर्ज्जुन पर लायो।
गहिदेखिविजियशोचविचार्यो। पारथ धनुप हाथते हार्यो॥

कहेउ कृष्ण पारथ सुनहु, प्राण तज्यो गजराज।
राख्यो है भगदत्त नहिं, अस्त्र तज्यो केहि काज॥

सुनतबिजयनरधनुशरलीन्ह्यो। साधितहँ सन्धान सु कीन्ह्यो॥
अर्द्धचन्द्र शर अर्ज्जुन छण्ड्यो। नृपको शीश कन्धते खण्ड्यो॥
मृतक गयन्दसहित नृप परेऊ। झलकतमुकुटजरायमजरेऊ॥
अर्ज्जुनरण कीन्ह्यो यह करणी। योजनतीनिपर्य्योगजधरणी॥
हर्षित भये देखि जगतारण। धरि यह देह भक्तके कारण॥
पांडव सेन देखि सुख पायो। फिरिकै सकलसमरमहि आयो॥
हर्षित वचन युधिष्ठिर भाख्यो। अर्ज्जुन रण अपनो प्रण राख्यो॥
रुण्ड मुण्ड वसुधा अब छायो। रणमें रुधिरनदी वहि आयो॥
भूत पिशाच योगिनी गावहि। विकट रूप भैरवगण धावहि॥
श्रीहरि कही चलौ अब पारथ। भीषमसों कीजे पुरुषारथ॥
कृष्णदेव रथ हांकि चलायो। तब भीषम जयशङ्ख बजायो॥

दश सहस्र रथ मारिकै, चले आपने धाम।
सबलसिंह चौहान कहि, भारतके संग्राम॥

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

पांचौ बन्धु कृष्णसँग लीन्ह्यो। सैन समेत गमन गृह कीन्ह्यो॥
तब कुरुराजभवननिज आयो। सकल सैन विश्राम करायो॥
आप गमन अन्तःपुर कीन्ह्यो। भानुमती आदरकरि लीन्ह्यो॥

चमर छत्र सब लिये सहेली। मणिमय भूषण रूपगहेली॥
नृपहिं सिँहासन लै बैठारयो। रानी तव आरती उतारयो॥
उत्तम नीर सुगन्धसवांरयो। सखिन आय तब चरण पखारो॥
तेल सुगन्ध राज तनु लायो। कनक कलश अस्नान करायो॥
भूषण वसन अङ्ग पहिरायो। अमृत भोजन सरिस ज्यँवायो॥
कञ्चन मणिमय भवन सवांरो। हीरा रत्न करत उजियारो॥
ताबिच गजमणि झालरि जोरे। देखत धनद कहहि हम थोरे॥
बहुत भांतिकै सेज सवांरी। पय फेना सम आनँदकारी॥
शयन करन भूपति पगु धारयो। नृत्यनि मंगल गान उचारो॥
आगिलि कथाकहनमन लायो। यदुपतिसहितसकलगृहआयो॥

अशन करन बैठे सकल, द्रुपदसुताके जाय।
धर्मराज पूछत भये, वचन सुनहु यदुराय॥

हनूमान रथ आपु सँभारयो। तब पारथ भगदत्तहि मार्यो॥
दश सहस्र रथ भीषम मारै। नित क्रमसों नहि एको बारै॥
भीषमरहत कुशल नहि देख्यो। बन्धुविरोध कठिनकरि लेख्यो॥
द्रुपदसुना कह सुनहु नरेशो। केहिकारण जियकरहु अँदेशो॥
जो हरि चरण कमल मनलावै। सो जगमें कलेश नहि पावै॥
सदा भक्तको रक्षा कारण। दीनबन्धु कीन्ह्यों तनुधारण॥
जब प्रहलाद खम्भमें कह्यो। नरहरि रूप तहां प्रभु गह्यो॥
असुर पछारि यमलोक पठायो। भक्त शीशपर छत्र धरायो॥

ते प्रभु सदा रहत तुम सङ्गहि । कारण कौन करहु मन भङ्गहि ॥
करि भोजनशयनहि मनलायो । प्रात होत रण साज बनायो ॥
दल चतुरंग सुसङ्ग लै, सब न्टप तेज निधान ।
भीमसेन आगे भयो, किये हृदय अभिमान ॥
कौरव साजि समर महि आये । हूह मारि दोऊ दल धाये ॥
शर अनेक वर्षन रण लागे । धावहिं वीर क्रोधते आगे ॥
शायक घाव करत अति चांड़े । उछरहिं गिरहिंतकिंयत खांड़े ॥
असवारहि असवार प्रहारहिं । पकरहिंसुभटशीशअसिझारहिं ॥
रथी रथीसों कीन्ह्यों जोरहिं । दन्तीसों दन्ती रण घोरहिं ॥
सन्मुख जुरेसमरअतिपण्डित । दोउदलमारुमारुध्वनिमण्डित ॥
सन्मुख आइ जुरे रणधीरा । घाल्यो घाव महाबल भीरा ॥
क्षत्रियअतिपौरुषनिजकरिकर । कीन्ह्यो भारत प्रलय भयङ्कर ॥
वासुदेव स्यन्दनहि चलायो । गङ्गतनयके सन्मुख आयो ॥
दोऊ सुभट मिले अति युद्धहि । शरछांड़नलाग्योअति क्रुद्धहि ॥
कर कोदण्ड वृकोदर लीन्ह्यो । बाणवृष्टि अरिऊपर कीन्ह्यो ॥
यहि प्रकार बहुविशिख पवांरे । सहसन वीर समरमहि पारे ॥
कुरुपति कह्यो सुशर्मा धावहु । पांडव सेनहि मारि गिरावहु ॥
दश सहस्र रथ सङ्ग लै, कीन्ह्यो तुरत पयान ।
सिंहनाद किय समरमहि, साधेउ शारँगवान ॥
क्रोधवन्त ह्वै लगे प्रहारण । पांडव दल कृत बहु संहारण ।
गिरा घोर तब भीम सुनायो । स्यन्दन त्यागि गदा .

तबहि सुशर्मा शर धनु लीन्ह्यो। भीमशरिं क्षतगतगरसं कोन्ह्यो॥
दशसहस्र स्यन्दन रथ आयो। दशकरशरलिन सबन चलायो॥
लक्ष विशिख बेधे जब तनमें। तबहि वृकोदर क्रुद्धेउ मनमें॥
गदाघाव यहि विधिते मारयो। दुइसै रथ चूरण करि डारयो॥
रहित रथी सारथी न देखत। मांस मृत्तिका सदृशो लेखत॥
अरु बहु स्यन्दन पदते तोरयो। करतलहिंतबहुमौलिसोफोरयो॥
गहि बहु भीम चलायो स्यन्दन। यहिप्रकारकिय सेननिकन्दन॥
भीमसेन बहु कटक सँभारयो। नृपति सुशर्मा आपु सभारयो॥

क्रोधित भये नरेश अति, कीन्ह्यो शरसन्धान।
हृदयु वृकोदरके हन्यो, एकवार दशबान॥

घायल भयो सह्यो सबबाणहि। क्रुद्धगदागहि कियोपयानहि॥
करिकै नाद सुगदा प्रहारयो। कूदि सुशर्मा आपु सँभारयो॥
आन्यो तुरत लख्यो रणरङ्गहि। सारथि सहित कियो रथभङ्गहि॥
कह्यो भीमभागतकेहिकामहि। सन्मुख जुरो करो संग्रामहि॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो। सिंहनाद करि हांक सुनायो॥
भीमसेन अस्थिर ह्वै रहिये। मारतहौं तीक्ष्ण शर सहिये॥
तब सारथि लै रथ पहुंचायो। भीमसेन चढ़ि शोभा पायो॥
भूरिश्रवा बाण दश डारयो। ते शर भीम सुकाटि निवारयो॥
दोउ वीर सन्धान्यो धनुकर। क्रुद्धित लगे चलावन बहुशर॥
धृष्टद्युम्न द्रोण गुरु सङ्गहि। दोउ भट मच्यो महारणरङ्गहि॥
नरेश सात्यकी योधहि। कृतवर्मा विराट रणक्रोधहि॥

द्रोणी अरु अभिमन्यु रण, कठिन बजायो मार।
बाण बूंद वर्षत सघन, जिमि श्रावण जल धार॥
नृपजयद्रथदलनकुलकुलमारहि। कठिनअस्त्रदोउसुभटसँभारहि॥
घटउत्कच क्रुद्धित ह्वै धायो। सप्तताल बहुवृक्ष चलायो॥
लै पषाण शिर ऊपर डारे। यहि विधि बहुत कटक संहारे॥
सकल पदाति पकरिकै खायो। गजहि समेटि पेट पहुंचायो॥
कुरुपति कह्यो अलम्बू धावहु। दैत्य दैत्य तुम युद्ध मचावहु॥
सप्त कोटि राक्षस लै सङ्गहि। धायो धनुकर धरि रणरङ्गहि॥
दनुजराज शतविशिखचलायो। शरसों भीमपुत्र रथ छायो॥
मुद्गर लयो तज्यो तब स्यन्दन। धायो उतरि हिडंबीनन्दन॥
लयो गदाकर दानव राजहि। सन्मुखजुरभ्रो युद्धके काजहि॥
मुद्गर गदासु दोउ प्रहारहि। एकहि एक क्रुधित ह्वै मारहिं॥
नृपति अलंबू भीमसुत, भयो सुघोर विरुद्ध।
विकट भयङ्कर रूप धरि, कियो युद्ध अति क्रुद्ध॥
गदाघाव जब तनुमों लागत। शब्द अघात महारण छाजत॥
अस्त्र डारि दोऊ लपटाने। अटके मल्ल युद्ध अरुझाने॥
दन्त दन्त नख नखन प्रहारहिं। गहे केश मुष्टिक सों मारहिं॥
मेघघटा सम अङ्ग सोहाये। क्रुद्धितदशन बिज्जु चमकाये॥
अरुण नयन सोहत हैं कैसे। प्रातहि उदय दिवाकर जैसे॥
रथके खम्भ शीश पर मारहि। पकरि शुण्ड कुम्भस्थल फारहिं॥
महायुद्ध अति अद्भुत करणी। कियो महाभय भारत धरणी॥

भीमतनय तब तेज सभारयो। दनुजराज गहि केश पछारयो।
तब दनुजेश धरणिपर गिरयो। महा अचलमानहुं महिपरयो।
तासु हृदय पुनि चरणप्रहारा। मुखते चली रुधिरकी धारा।

सबलसिंह चौहान कहि, असुरन्ह कीन्हों खेत।
भैरव भूत पिशाच गण, नाचत योगिन प्रेत॥

इति सप्तम अध्याय॥ ७॥

तब भीषम शारँग कर लीन्हों। बाण वृष्टि अर्ज्जुनपर कीन्हों।
कृष्ण शरीर विशिख दश बेध्यो। हनूमान विंशति तनुशोध्यो।
पारथके शर शोणित छूटयो। काटिसनाह भीष्मउर फूटयो॥
पांच बाण मनमोहन मारयो। सहस पैग पाछे रथ टारयो॥
भीषम कह्यो सुनहु जगनायक। अर्ज्जुनयहिपुरुषारथ लायक॥
अब अपनो रथ रचा कीज। कमलनयन जीती कर लीजै॥
यह कहिके तीच्चण शर मारयो। रथको पैग तीनशत टारयो।
नन्दिघोष रथ श्रीजगवन्दन। पारथ सहित पवनके नन्दन॥
लग्यो बाण रथ पीछे आयो। साधुबचन यदुनाथ सुनायो॥
जीवन सफल गङ्गसुत तेरो। बाणघात रथ डोल्यो मेरो॥

श्रीहरि तुरँग सँभारिकै, लै आयो तेहि ठौर।
तौ लगि भीषम वधि गये, दश सहस्र रथ और॥

पैत है जय शङ्ख बजायो। तब सारथि रथ फेरि चलायो।

सकलसुभट निज धाम सिधाये । किये जाय विश्राम सुहाये ॥
धर्म्मराज सँग लिय सब भाई । सहितगोविन्दभवननिज जाई ॥
अमृत भोजन सरस बनाये । जेंवत भीम बहुत सचु पाये ॥
नृपति युधिष्ठिर यदुपति आगे । कोमलबचन कहन कछुलागे ।
भीषम सरस रच्यो पुरुषारथ । केहिविधि युद्ध जीतिये भारथ ॥
धर्म्मराज तब भये दुखारे । तब कुन्ती कछु वचन उचारे ।
सब संसार कहत परतच्छक । पांडु वंशके माधव रच्छक ॥
जब तुम सकलरहे यकभवनहिं । खेलनको बालकसबगवनहिं ॥
भीम और दुर्योधन सङ्गहि । सदा विषाद करत मनभङ्गहि ॥
बुद्धिचच्चु तब हमहिं बुलायो । मधुर वचन कहिकै समझायो ॥

दुर्योधन अरु भीमसों, बनत नहीं इक ठौर ।
ताते बसिये अनत ह्व, रचि देहौं गृह और ॥

नृप दुर्योधन कह्यो बुलायो । शकुनीसहित मन्त्र ठहरायो ॥
यवइ बोलाय दयो धनदानहिं । लाखभवन करिये निर्मानहिं ॥
नगर वारुणा महल उठायो । लाखसाज मंदिर सब लायो ॥
लाख कोट सब ईंट सँवारयो । दैकरि लच्छ सघन वठारयो ॥
बुद्धिचच्चु कह विदुर सिधावहु । अपनेनयन देखि तुम आवहु ॥
नृपआज्ञा माथेकरि लीन्ह्यों । चढ़िबरवाजिगमनशुभकीन्ह्यों ॥
आइ उतरि देख्यो सब धामहिं । लाग्यो सकललाहको कामहिं ॥
यवइनते सब पूछन लागे । यह वृत्तांत कहहु मम आगे ॥
यह सुनि यवई कहत सुभयऊ । दुर्योधन मोहिं आयसु दयऊ ॥

लाखभवन कीजो निर्मानहिं। गुप्तरूप पांडव नहिं जानहिं।
विदुर बात मनमें अनुमानत। पापी दुर्योधन जग जानत।

देख्यों सुन्यों न जगतमें, लाखभवन निर्मान।
दुर्योधन रचना रचौ, पाण्डव मुये निदान॥

चुप करि रहौं पांडुसुत अरेऊ। हत्या करन वीर नृप चहेऊ
रत्न मुद्रिका करते लीन्ह्यों। थवई बोलि हस्तकरि दीन्ह्यों
अब इकसुरँग करहु निर्मानहिं। जैसे दुर्योधन नहिं जानहि
सुनिकै बढ़ई द्वार बनायो। ता ऊपर यक खम्भ लगायो॥
विदुरगयो धृतराष्ट्रके आगे। उत्तमभवन कहन अस लागे॥
द्विज बुलाय शुभदिवस धरायो। गृहप्रवेश हम सब मनलायो॥
भीषम द्रोण साथ करि दीन्हें। यज्ञहोम बहुविधिते कीन्हें॥
संध्या जानि किये सबगवनहिं। सुतनसमेत रहे हम भवनहिं॥
व्याधा एक पाँड़ तेहि नामहिं। सदा भ्रमै मृगयाके कामहिं॥
मृगन मारि काननते ल्यावै। बेचिमांस सो सुतन जियावै॥
एक दिवस आहेर सिधायो। देखन एक जन्तु नहि पायो॥
सोचबढ़ो जियभयो निराशहि। बालकसबविधि परेउपासहि

मृगी एक देखी तबहिं, गर्भ सुदिनन प्रमाण।
हर्षित होइ व्याधा चल्यो, साध्यो शारँग बाण॥

[illegible] जाल दै आयो। उत्तरदिशिसोंअनल लगायो॥
दिशा प्रान हरु कीन्ह्यों। दक्षिणदिशा फांकघरदीन्ह्यो
दिशिमृगी देखिकै आयो। कोनिउदिशि निर्वाह नपायो

पश्चिमगये जाल में परिये। उत्तर गये अग्निमें जरिये॥
पूरब गमने श्वान पछारै। दक्षिण गये वधिक सोहि मारै॥
प्रसवकाल खड़ निकटहि आयो। उदरसम्ब्यस्तअद्भ्ययाजनायो॥
करुणा करै मृगी यह भाखै। दीनबन्धु जिन को सोहि राखै॥
तृणवन चरौं करौं जलपाना। अपनो मांस वैर सब जाना॥
अहो कृष्ण सन्तन सुखकारी। दयासिन्धु मैं शरण तुम्हारी॥
अब तुम दया करहु जगनायक। यहिअवसरप्रभुहोहु सहायक॥

घूमत है मन भँवरमें, दुखकी नदी अथाह।
चहूं ओर सङ्कट परयो, हरिके हाथ निबाह॥

जब यहिभांति मृगी अकुलानी। दीनबन्धु यह रचना ठानी॥
वनमें मेघ घुमरि करि आयो। वरषि नीर तब अनल बुतायो॥
पवन तेज सब जाल उड़ायो। श्वानहिझपटिव्याघ्रलइखायो॥
तड़प्यो वज्रव्याध शिर परयो। चहूं ओर प्रभु रक्षा करयो॥
दीनदयालु राखि तेहिं लीन्हयों। सुखतेमृगीप्रसवतबकीन्हयों॥
वधिक जबै आयो नहिभवनहि। सुतसमेत नारीकि यगवनहि॥
द्विज भोजन तब सुनिकै धायो। सोते तब याचक्षा लायो॥
पञ्च पुत्र तब देख्यो नयनहि। शवरीते तब पूछेहु वयनहि॥
कहा नाम तुम सोहि सुनावहु। ब्यहिउदम तुमदिवस गवावहु॥
कुन्तीनाम शोहिं द्विज राख्यो। स्वामीनाम पाण्डु तिन भाख्यो॥
सुतको नाम युधिष्ठिर चहई। दूजो भीमसेन यह कहई॥
तीजो अर्जुन [illegible]

तब म हर्षित भई बहु, बैस सखी सुनु बात।
पति सुत एकै नामहै, हम तुम भयो सँघात॥

उत्तम भोजन सरिस जेंवायो। सुतन समेत सेज बैठायो॥
शकुनीसुत उलकातेहि नामहि। दुर्य्योधन पठयो यहिकामहिं॥
मध्य द्वारमें अनल लगायो। दृढ़ करि वज्रकपाट दिवायो॥
पसरी अग्नि लच्च भिहलाने। बाढ्यो धूम सकल अकुलाने॥
चुइकै लाख देहमों परई। उधिरै त्वचा वह्नि सब जरई॥
कृष्ण कृष्ण हम सबन पुकारी। दीनबन्धु हम शरण तुम्हारी॥
कही भीम क्रु द्धित सहदेवहि। तैं नीके जानत है भेवहि॥
भीम कीजिये कहा हमारो। बलते यह गहि खम्भ उखारो॥
बिदुर सुरँग कीन्ह्यों निर्मानहि। धर्म्मशरीर नीति सब जानहि॥
भीमसेन गहि खम्भ उखारो। देख्यो उत्तम पन्थ सवांरो॥

वहि मारग सब मिलि धसे, आतुर कीन्ह्यों गौन।
गदा भूलि आये तहां, भीम गयो फिरि भौन॥

लै कर गदा चलन जब ताक्यो। धरिकै देह अग्नि तब हांक्यो॥
सप्तजिह्व देखत भय पायो। भीमसेन तब विनय सुनायो॥
आपु समान तीनिसौ दैहौं। भाषत सत्य समय जब पैहौं॥
द्वारावति महँ रहे बनवारी। सुखशय्यासँगरुक्मिणि प्यारी॥
ति समीर अङ्गमें लागी। भीषमसुता नींदसों जागी॥
नाथ यह कारण कहिये। शय्या अग्नि आंचते दहिये॥
स प्रभु कह्यो मौनह्व रहिये। गुप्त बात काहुहि नहिंकहिये

ाख भवन कुरुनाथ सँवारयों। पांडुतनय हम जरत उबारयों॥
नल आंच अपनेनलु लीन्ह्यो। उनसबकोनिबाहकरदीन्ह्यो॥
ष्ण सहायक चितमें धरहू। हे सुत शोच काज क्यहि करहू॥

जरत उबारयो वह्नि ते, सदा भक्तकी लाज।
सबलसिंह चौहान कह, शोच करहु क्यहि काज॥

इति अष्टम अध्याय॥ ८॥

करिभोजनशयनहिमनदीन्ह्यों। प्रातहोत रणउद्यम कीन्ह्यों॥
पहिरि सनाह खड्ग कटि बांधे। हर्षित बदन चल्यो शर साधे॥
दोऊदल रणभूमिहि आये। हांक मारि पायक गण धाये॥
रहुरहु कहि कृपाण नव खोलहिं। मारतहांकपदादि सुडोलहिं॥
बजे निशान भयो आघाता। कोउ नहिसुन केहूकरि बाता॥
पेलि गयन्द महाउत आये। पर्वत मनहुं भूमिपर धाये॥
असवारहि असवार सँभारहिं। सम्मुख जुरैखड्ग शिर झारहिं॥
रथी रथी सों युद्ध लगायो। क्रुद्धित ह्वै बहु बाण चलायो॥
क्षत्रियसकल करहिं संग्रामहिं। जूझहिं स्वामिधर्मके कामहिं॥
कुरुक्षेत्रमें प्राण गवांवहिं। चढ़िविमानसुरलोकसिधावहिं॥
नन्दिघोष श्रीपतिरथ चाल्यो। डोलीधरणिशेष शिर हाल्यो॥

भीषम सों अर्ज्जुन जुरे, कीन्ह्यो धनु टङ्कोर।
दोऊ दल चक्रित भये, जनु घुमरो घनघोर॥

भीषमसों अर्ज्जुन यह भाख्यो। चारिदिवस अपनो प्रणराख्यो।
दशसहस्र नितक्राम रथ मारयो। दैकर शङ्ख भवन पगु धारयो॥
यहि विधि करौं धनुषकर धारण। सकहु न आज सेनसंहारण॥
भीषम कह्यो सुनहु हे पारथ। कीजे जो सोहैं पुरुषारथ॥
साखी आप अहैं यदुनन्दन। दशसहस्ररथ करौं निकन्दन॥
यह कहि धनुष हाथ दृढ़ठान्यो। पञ्चविशिखशायकसन्धान्यो॥
निशितविशिख गङ्गासुतमारयो। अर्ज्जुनदे शरकाटि निवारयो॥
शायकविश विजयनर जोरयो। शन्तनुसुतबीचहिशरतोरयो॥
दुहूंवज्रअति विशिख प्रहारहिं। जिमिजलधरवर्षतजलधारहि॥
बहुत युद्ध रण समता जान्यो। पारथ अग्निबाण सन्धान्यो॥

प्रकट अग्नि बानर चली, झपटत लपट कराल।
गज रथ हय पदचर जरत, कौरव कटकबिहाल॥

भीषम वरुणबाण कर लीन्हयो। ताते अग्नि निवारण कीन्हयो॥
पांडवदल बूड़त सब जान्यो। अर्ज्जुन पवन बाण सन्धान्यो॥
पवन तेज सब नीर सुखायो। ध्वजा टूटि धरणीपर आयो॥
भीषम तज्यो सर्पके बानहि। नागन मरुत कियो तब पानहि॥
धाय डसे सब विषधर कारे। यहि विधि बहुत सैन्य संहारे॥
अर्ज्जुन बरही बाण चलाये। मोरन पकरि सर्प सब खाये॥
[illegible]पम अन्धकार शर छाजे। देखत सकल पच्छिगण भाजे॥
[illegible] भो कछू न सूझै। अपनो पर कोऊ नहिं बूझै॥
[illegible] हितदेखनहिपावहिं। हांक मारिकर आपु जनावहि

।जरथ हयपदातिसबधावहिं। अभिरहिंगिरहिंपन्थनहिं पावहिं॥
ांडव सैन्य देखि नहि पायो। तब पारथ रविबाण चलायो॥
ानुतेज कीन्ह्यो तमनाशहि। पांडव दल पायो परकाशहि॥

मार्तण्ड मण्डल उग्यो, देखत अतिहि प्रचण्ड।
तब अर्ज्जुन यहि विधिदियो, भीष्मबाहु कोदण्ड॥

ङ्गासुत क्रुद्धित भयो मनमें। शर मार्‌यो पारथउर रनमें॥
अष्टबाण तब-यहि विधिजोरे। घायलकिय रथचारिउ घोरे॥
ाम विशिख मार्‌यो हनुमन्तहि। सत्तरिशर वेध्यो भगवन्तहि॥
विंशति शर रथ ऊपर मार्‌यो। चाके चारि धरणिमों डार्‌यो॥
ल ताजन्ह प्रभु अश्वहि मार्‌यो। महाकष्टते रथहि निकार्‌यो॥
अर्ज्जुनदेखिक्रोधजिय बाढ्यो। तीक्ष्ण शर निषङ्गते काढ्यो॥
भीषमके उर मध्य प्रहारा। वहै प्रवाह रुधिरकी धारा॥
चारि बाण छूटे अति पायल। ताते भये अश्व रथ घायल॥
तीनिबाण सारथिपर लायो। एकबाण ते ध्वजा गिरायो॥
पारथ यह पुरुषारथ कीन्हों। भीषमकोपि हांकि रथ दीन्ह्यों॥

अर्ज्जुन रण इस्थिर रहो, रचा कीजै सैन॥
आपु सुदृढ जीती गहो, प्रीतम पङ्कजनैन॥

यहकहि तीक्ष्णबाण चलायो। शर सों नन्दिघोष रथ छायो॥
पांडुतनयअसविशिखपवांर्‌यो। आवतशायककाटि निकार्‌यो॥
भीषमके शर मारि गिरायो। तब अर्ज्जुन शतबाण चलायो॥
मार्गन शर शर मों शर खण्डित। दोऊ जुरे सरस रणपण्डित॥

भीषम पर्वत शर सन्धान्यो। देखि देव सब शङ्का मान्यो॥
चलैं पहार सकै को भाषन। शतते सहस सहसते लाखन॥
लच्च पहार गगनमें धायो। भादों मेघ उमहि जनु आयो॥
शब्द अघात होत हैं कैसे। सागर मथत कुलाहल जैसे॥
पांडव दल त्रासित ह्वै भागे। हा हा शब्द पुकारन लागे॥
नन्दिघोष राख्यो जगवन्दन। भीमरु रहे सुभद्रानन्दन॥
तीनमहारथि रणमहँ गाजें। सहित नरेश सकल भट भाजैं॥
अन्धकार यहि विधिते छायो। अर्ज्जुनकृष्णदृष्टिनहिं आयो॥

सुरगण हा हा शब्द कृत, भयो घोर संग्राम।
पारथ शर शारँग गहहु, कहे आपु सुखधाम॥

साधि बाण राख्यो हरि घोड़े। अर्ज्जुन वज्रबाण गुण जोड़े॥
गिरिते भयो वज्र तब दूनों। फोरि पहार कियो तब चूर्नों॥
ऐसे वज्रबाण तब छूट्यो। लच्च पहार छार सम फूट्यो॥
विबुध लोग देखत सुख पायो। सेना सकल समरमहि आयो॥
पुष्पमाल सुरकन्या डारहिं। नन्दिघोष रथ सरस सवांरहि॥
जयजयशब्द गगनमहँ बोलत। चढे विमान अनन्दित डोलत॥
भीषम निरखि क्रोधउर छायो। पारथसों कछु वचनसुनायो॥
अब अपनो दल रच्चा करिये। सावधान कोदण्डहि धरिये॥
सन्धान विपुलशरत्याग्यो। सहससहस शर छूटनलाग्यो॥
तनय तेज संभारयो। अर्ज्जुन काटि भूमिमहँ पारयो॥
म चहहिं सैन्य-संहारण पारथ प्रणरच्चाके कारण॥

नयन पलक लागननहिंपावहिं । श्रमजलटूटिनयनपरआवहिं ॥
शर सन्धान घात नहिं पायो । बाणन बृष्टि महाझरि लायो ॥
दशसहस्र कृतखण्डितस्यन्दन । कियो शङ्खध्वनि शन्तनुनन्दन ॥
पारथ कह्यो सुनहु यदुराई । भीषम किमि यह शङ्ख बजाई ॥
वध्यो सैन्य माधव यह भाख्यो । गङ्गासुत अपनो प्रण राख्यो ॥
गज रथ हय पदाति सब जूझे । रुण्ड मुण्ड कछु जात न बूझे ॥
अर्ज्जुन लखि अचरज करिमान्यो । महावीर भीषमकहँ जान्यो ॥
संध्या जानि रथहि पलटायो । कौरवदल सब भवनहि आयो ॥

नन्दिघोष रथ फेरिकै, पारथ कीन्ह्यों गौन ।
सबलसिंह चौहान कह, सहित राधिकारौन ॥

इति नवम अध्याय ॥ ९ ॥

सकल सैन्य विश्राम सो करयो । खान पान कर्म्महि अनुसरयो ॥
दुर्योधन भीषम पहँ आये । बैठि बचन यहि भांति सुनाये ॥
पांच दिवस कीन्हें संग्रामहि । पांडव कुशलगये निजधामहि ॥
तव बलनाथ जगत सब जानत । देव दनुज गन्धर्व बखानत ॥
क्षणमां पांडव सकहु सँहारण । आप दया कीजै क्यहि कारण ॥
सुन भीषम कटुवचनेसही अति । पूर्वकथा अब सुनहुमहीपति ॥
नन्द भवन जब रहे मुरारी । धेनु चरावत अतिहितकारी ॥
सुरपति यज्ञगोपसब कीन्ह्यो । सोहरि मेटि शैलकहँ दीन्ह्यो ।

यह सुनि देवराज दुख पाये । प्रलयकालके मेघ बुलाये ॥
उठी घटा वारिद घहराने । देखत ब्रजवासी अकुलाने ॥
कृष्ण कृष्ण कहिसबनपुकारी । अहो नाथ हम शरण तुम्हारी ॥
तब हरि गोवर्द्धनहिं निहारयो । भुजबल पकरि पहारउपारयो ॥
बायें करपर राख्यो मन्दर । यहि विधि नाश्यो गर्व पुरन्दर ॥

सप्त दिवस झरि लाइकै, वर्षा घोर अपार ॥
ग्राम गोप रक्षा कियो, करसों धरयो पहार ॥

ते प्रभु हैं पारथ रथ-सारथ । कहो कहा कीजै पुरुषारथ ॥
वधौं कालहि पाण्डव परतक्षक । जो नहिहोइ कृष्णरणरक्षक ॥
होत प्रभात दोउदल सज्जित । शब्दअघात दमामसुवज्जित ॥
भांति भांति केरव फहराने । राजहंस जिमि गगन उड़ाने ॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये । क्षत्रिय सकल क्रोध करि धाये ॥
महारथी सब बड़े धनुर्धर । सन्मुख जुरे गहे कर धनुशर ॥
ऐसे विशिख वृष्टि शर कियऊ । शरके छांह भानु छिपिगयऊ ॥
कोउ भट शेल शूल परिहारहिं । कोऊ खड्ग शोशपर मारहिं ॥
गदा अपर मुद्गर कर लीन्हयों । ताते मारु भयङ्कर कीन्हयों ॥
कोउ भूप गहि खञ्जर चोखे । बाहत जहां रहत नहि सोखे ॥
तब सहदेव खड्ग निजकर धरि । धर्मराजहित हतत सैन्यअरि ॥
..नेत वीर सुतअन्यहि । भृकुटीसहितकाटगजकन्धहि ॥

यहिविधिते सहदेव रण, कीन्हेउ शोध मशान ।
धायो शकुनी नाद करि, साधे कर धनुबाण ॥

लघुसन्धान विशिख लयमारयो । ते सहदेव फेरि परतारयो ॥
तब पारथ कीन्ह्यो असवारी । लागे करन युद्ध अति भारी ॥
सप्त नराच निशित करलीन्हेउ । तेशर बिद्धिमौलि परकीन्हेउ ॥
जयद्रथन्टपरु नकुलते भारथ । द्वौ भट करत महापुरुषारथ ॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो । तिनसों धृष्टद्युम्न रण लायो ॥
द्विभट सरस लागे शर मारन । जूझे सैन्य सहस्र अपारन ॥
द्रोण आप रथ हांकि चलायो । श्यामध्वजा रण शोभापायो ॥
वर्षहिं बाण सके को भाषन । पाण्डवदल जूझै तब लाखन ॥
यहिविधिकृत बहु सैन्यनिकन्दन । आगे भये सुभद्रानन्दन ॥
गुरुके चरण प्रणाम जनायो । एक बार शत बाण चलायो ॥
सहस विशिख औरो कर लीन्हें । ताते निकर सैन्यवध कीन्हें ॥

अभिमनुरण यहिविधि कियो, सैनावध्यो अनन्त ।
मारेउ तीक्ष्ण बाण ते, मतवारे मयमन्त ॥

द्रोणसुगुरु निज तेज सँभारयो । अभिमन्युउर विंशति शरमारयो ॥
अर्जुन सुत कृत शरसन्धानहिं । द्रोणललाटहन्यो दशबानहिं ॥
यहिविधिकरतसमरअति करणी । अङ्ग भेदि शर फूटत धरणी ॥
महारथी सब आपने घातहि । क्रोधित करन लगे शरपातहि ॥
भीष्मपर अर्जुन शर जोड़े । हांक देत हरि हांकत घोड़े ॥
सुन्दर श्याम शरीर सुहावा । पीत वसन तनु शोभा पावा ॥
नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ । भीष्म कह्यो सुनहु हो पारथ ॥
वासर पञ्च कियो संग्रामहिं । मवमिलिहुशलगयेतुम धामहिं ॥

होइहै आजु महाबल भारथ। पारथ समुझि करो पुरुषारथ॥
कृष्ण देव रणको चित दीजै। पाण्डु वंशको रचा कीजै॥
यह कहि भीषम क्रुद्ध ह्वै, छांड्यो तीच्चणबान।
अर्जुन हरि घायल भये, सहित वाजि हनुमान॥
चारिविशिखयहिभांतिपवांरयो। नन्दिघोष हयघोष सुकारयो॥
क्रुद्ध विजयनरधनुकरलीन्हयों। बाणवृष्टि भीषमपर कीन्हयों॥
असौ बाण उर मध्य सुवेध्यो। अष्टविशिखअश्वनतनुशोध्यो॥
दश शर सारथिके उर दयऊ। शायक पञ्चकेतु ध्वजहयऊ॥
कोटि विशिख सेनापर छोड़ेउ। हयगजगिरेअमितरथ तोरेउ॥
गङ्गासुत शर वर्षत कोप्यो। पांडवचमू शरन सों तोप्यो॥
जूझे सुभट गिरे रण ओकहि। चढ़ेविमान चले सुरलोकहि॥
जयमाला सुरकन्या डारहिं। उत्तम रूप सुवेष सवांरहिं॥
यहि विधि गिरे वीर सब जेते। स्वर्ग भोग सुख पाये तेते॥
भीषम कीन्हयों सैन निकन्दन। क्रुद्धित भयो पांडुको नन्दन॥
अर्जुनकर कोदण्ड गह, रणमें यहि व्यवहार॥
कुरुसेना मरिमरिपरयो, शर छायो संसार॥
महायुद्ध करि सकै न वरणी। लच्चण सुभट खसेहति धरणी॥
उठहिंकबंध शीशबिनु धावहिं। खड्गपाणिगहिमारण आवहिं॥
-विधिकीन्हयोसमरभयङ्कर। मुण्डलाल बहु लीन्हयों शङ्कर।
कह्यो धनञ्जय सुनहू। अब मेरो पुरुषारथ गुनहू॥
हि नारायणशरलीन्हयो। पढ़िकैमन्त्र फोंकशर दीन्हयो॥

विद्यु तद्दवशरकियोप्रकाशहि । कोटितरणिजिमिउयोअकाशहि ॥
देवलोक सब देखि डेरान्यो । पांडव दल देखत भयमान्यो ॥
बाणउदोतभयोअतिकेहिविधि । प्रलयकालवड़वानलजेहिविधि ॥
कुपित गङ्गसुत विशिखचलायो । डाटिहांकयहिभांतिसुनायो ॥
पांडव वंश न एकौ बारौं । सेना सहित सबै भट मारौं ॥
छूटत बाण शब्द भो भारी । पारथसों भाष्यो वनवारी ॥

सब मिलिक अस्त्रहि तजो, तब पावहु जिय दान ।
तीनि लोक नाशिय सकै, यह नारायण बान ॥

अर्ज्जुन तुमहि हमारी आनहि । त्याग कीजिये अब धनुबानहिं ॥
यहि विधिते माधव जब टेरयो । अर्ज्जुन धनुषडारि मुखफेरयो ॥
श्रीहरि आपु कहन अस लागे । पांडवदल सब सुनहु अभागे ॥
डारहु अस्त्र गहरु जनि लावहु । वदनफेरि मुख पृष्ठि देखावहु ॥
आपुकृष्णयहिभांति पुकारयो । सहित नरेश अस्त्र सब डारयो ॥
विनअस्त्रनक्षत्रिय नहिं मारहि । विमुखभयेशरनहिं संहारहिं ॥
रणमें सबहि देखि शर आयो । अस्त्रहाथ काहुहि नहिं पायो ॥
भीमअस्त्र त्यागन नहिं कीन्हें । सन्मुख रह्यो गदा कर लीन्हें ॥
श्रीपति कह्यो भीमके आगे । यह हठ तजो हमारे मांगे ॥
कह्यो भीम सुनिये जगतारण । कादरवचनकहियक्यहिकारण ॥
भारत में इतनो यश लेहों । प्राण देउँ पै पीठ न देहों ॥
अस्त्र गहे भीमहि तकि पायो । प्रवल बाण संहारण आयो ॥
बाणतेज महि मण्डल छायो । नन्दिघोष हरि तजिकै धायो ॥

एहि न दीन्हेउ पांडुसुत, जान्यो निपट निदान॥
भीमहि राख्यो पेटतर, सर लीन्हीं भगवान॥
अपनोतेज आपु प्रभु लीन्ह्यों। यहिविधिबाणनिवारणकीन्ह्यो
ज्यहिविधि धेनु वत्सपर धावै। प्रीति पाइकै जठर लगावै॥
त्यहिविधितेभीमहिप्रभुराख्यो। जयजयशब्दविबुधगणभाख्यो॥
पांडवदल देखत सुख मान्यो। तब भीषम यहि भांति बखान्यो
साधु साधु श्रीपति गिरिधारी। पांडु वंशके रक्षाकारी॥
कुन्ती सुदिन बालकन जायो। हरिसे हितू जगतमें पायो॥
भीषम वचन सुनत सुख पाये। तब हरि नन्दिघोषपर आये॥
धनुष बाण अर्ज्जुन कर लीन्हें। ते शर चोट भीशपर दीन्हें॥
करगहि पारथशरहि निकारे। दशसहस्र रथ भीषम मारे॥
शङ्ख शब्द करिकै चले, सबै आपने धाम।
सबलसिंह चौहान कह, उभय सैन विश्राम॥

इति दशम अध्याय॥ १०॥
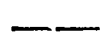
धर्म्मराज कछु कहन सुलागे। मधुर वचन मोहनके आगे॥
भीषम कीन्ह्यो सैनसंहारण। केहि विधियुद्धकरियजगतारण
।थण शर भीषम मारयो। मरत भीम प्रभु आपु उबारयो
न जाय तपस्या करिये। भीषमके सन्मुख नहिं लरिये॥
कह्यो नृपति सुनिलीजै। निनहिंशोचक्यहिकारणकीजै

सब दिन प्रभु मेरो प्रण राख्यो । कथा पुरातन पारथ भाख्यो ॥
पारिजात सतिभामहिं दीन्ह्यो । रुक्मिणिसुनतगहरुमनकीन्ह्यो ॥
वाते सरिस पुष्प जब पावौं । तब निजनाथहिं वदन देखावौं ॥
कह्यो कृष्ण अर्जुन सुनिलीजै । आपु गमन कदलीबन कीजै ॥
पुष्प सुगन्धराज लै आवहु । धावहु तुरत गहरु जनिलावहु ॥

कसि निषङ्ग कोदण्ड गहि, कीन्ह्यो तुरत पयान ।
कदलीवन पहुँचे तबै, उदित होत ही भान ॥

पुष्प सुगन्ध देखि जब पायो । तब पारथ तोड़न मन लायो ॥
वानर चारि रहे तहँ रच्छक । धाय रख्यो हनुमत परतच्छक ॥
मनुज एक लीन्हें धनु बानहिं । तोरत पुष्प मनै नहिं मानहिं ॥
यह सुनि हनूमान चलिआयो । क्रुद्धित तासों वचन सुनायो ॥
अरे किरात चोर अपकारी । यमपुरकी इच्छा तैं धारी ॥
नितक्रम हम पूजा मनलावहि । श्रीरघुवरके शीशचढ़ावहिं ॥
अर्जुनसुनत क्रोध जियकीन्ह्यों । यहिविधितेगतिउत्तरदीन्ह्यों ॥
तरु शाखा शाखापर डोलत । मर्कटमूढ़समुझिनहिं बोलत ॥
जे रघुनाथ इष्ट करि मानत । तिनको मैं नीकें करि जानत ॥
किये रहे शारँग कर धारण । कपि पषाण ढोये केहि कारण ॥

शरते सागर बांधिकै, जाइ सकै नहिं पार ।
करत बड़ाई रामकी, कहिये कौन विचार ॥

हनूमान यहि भांति बखानत । अधम किरातरामनहिं जानत ॥
जिन मारेउ रावण दशकन्धर । कुम्भकर्णजिनवध्योपमुर्धर ॥

वालि मारि सुग्रीव नेवाजा । लङ्का-कियो विभीषण राजा ॥
बांधेउ उदधि न बांधन ऐसे । दलको भार सही शर कैसे ॥
अर्ज्जुन कह निज तेज सँभारौं । सब संसारहि पार उतारौं ॥
बांध बांधिके मोहिं देखावहु । तौपै प्राणदान तुम पावहु ॥
पवनतनय इमि वचन सुनाये । दोऊ वीर सिन्धु तट आये ॥
जैसे मधुमाखी गण छाये । यहि विधि पारथबाण चलाये ॥
कोटिन अर्व खर्व शर छांट्यो । शत योजन बाणनतेपाट्यो ॥
हनूमान मन विस्मय मान्यो । नहिंकिरात अपने उर आन्यो ॥
है कोई यह वीर महाबल । कपटरूप कीन्ह्यों मोते छल ॥

मोर भारते शर चलैं, तौ त्वहि वधौं निदान ।
भार रहै दृढ़ सिन्धुमें, करि निज सखा प्रमान ॥

अर्ज्जुन कहा बांध जो टूटै । तौ मेरो परतिज्ञा छूटै ॥
चणक रहो यहि भांति जनायो । हनूमान उत्तर दिशि धायो ॥
रोम रोम में शैल सुबांधे । कछुक अग्र कछुलीन्ह्योंकांधे ॥
यहिविधि रूपभयङ्कर कीन्ह्यों । धरणिअकाशपरतनहिंचीन्ह्यो
रवि छपिगयो भई अँधियारी । योजन सहस देह विस्तारी ॥
अर्ज्जुन अन्धकार जब देख्यो । अपनेजिय आचरजकरिलेख्यो ॥
मिट्यो तनु देखन पायो । रवि मण्डलमें शीशलगायो ॥
भयङ्कर देखि डेरान्यो । सूखे प्राण विकल अकुलान्यो ॥
बुद्धि मोहिं विधि दीन्ह्यों । हनूमानते सरवरि कीन्ह्यो

परमभक्त जगमें बलभारी। जाके प्रभु रघपति धनुधारी॥
जिमि पिपीलिकहि पर ह्वै आवै। परै दीप महँ प्राण गँवावै॥
पारथ अब आतुर भयो, देखि भयानक कीश।
सुमिरण कीन्हेउ ज्ञानकरि, तुम राखहु जगदीश॥
दीनबन्धु सन्तन सुखदायक। यहि अवसरप्रभु होहुसहायक॥
श्रीहरि तब अपने मन जान्यो। परमभक्त दोऊ अरुझान्यो॥
हनू भार वसुधा नहिं सहई। शरको बांध कहौ किमि रहई॥
जो हनुमान जीति करि पावहिं। पारथको यमलोक पठावहिं॥
कृपासिन्धु यह रच्यो उपाई। जाते रहै दोउ सरसाई॥
कमठरूप जलभीतर कीन्ह्यों। शरके हेठ पृष्ठि प्रभु दीन्ह्यों॥
अरे सबल सुनु वचन हमारो। धरत चरण अब बांध सँभारो॥
अर्ज्जुन तब सहसा करि भाख्यो। जाहु निशङ्क बांध मैं राख्यो॥
सुनि हनुमतअतिक्रुद्धितभयऊ। आय पांव शर ऊपर दयऊ॥
दबी पृष्ठि हरि कपिके भारहि। मुखते चली रुधिरकी धारहि॥
अरुणवरण सागर निरखि, कीन्हों हनू विचार।
ऐसोको संसार मों, सहै मोर जो भार॥
ज्ञानदृष्टि धरि ध्यान लगायो। शरके तरे देखि प्रभु पायो॥
कूदि हनू तट कियो पयानो। चाहि चाहि यह भेद न जान्यो॥
मैं पशु मूढ़ अकर्म्महि कीह्यों। हरिकेशीशचरणनिजदीन्ह्यो॥
कामरूप छांड़्यो बनवारी। आपु भये तब शारँगधारी॥
हनुमतसों प्रभु कहन सुलागे। दोउ भक्त तुम परम सभागे॥

प्रीति विचारहु छांड़हु रोषहि । क्षमा करहु पारथके दोषहि ॥
यहिविधि हरिमिलापकरिदीन्ह्यों । आपुगमनद्वारावति कीन्ह्यों ॥
हम लै आयो सुमन घनेरो । सब दिन प्रभुराख्यो प्रणमेरो ॥
अर्ज्जुन कह्यो युधिष्ठिर राजहिं । आपु शोच कीजैं केहिकाजहिं ॥
दृढ़ ह्वै कै रणको मन लैये । मारि शत्रु यमलोक पठैये ॥

मन वच क्रम जो हरि भजे, तजै औरकी आश ।
सबलसिंह चौहान कह, नाहिन भक्त विनाश ॥

इति एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

प्रात होत कीन्ह्यो असवारी । साजे सैन्य महाबलभारी ॥
दोउकटक बहु बाजनबाजत । गहे अस्त्र चत्रिय गल गाजत ॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये । मारु मारु करि सन्मुख आये ॥
चतुरङ्गिनि सेना रण जूटयो । क्रुद्धितअमितविशिखसबळूटयो ॥
शेलत्रिशूलन शक्तिन मारहिं । मुद्गरगदा शीश पर डारहिं ॥
कोतह भये कटारिन मारहिं । गिरत अन्तमहि गिरे करारहिं ॥
शर धारा गजदन्तहि लागै । चिनगी उठि बहु पावकजागै ॥
पायक हाथ खड्ग लै फेरत । मारत मारु मारु ध्वनि टेरत ॥
दोउ कटक लगे संग्रामहिं । कुरुपतिधर्मराजके कामहिं ॥
शल घाव मारि शिर फोरहिं । जूझिपरे मुख नेकु न मोरहिं ॥

सेनासब यहिविधि लरै, करैं भयङ्कर मारि ।
महारथी रथ हांकदै, भिरैं प्रचारि प्रचारि ॥

महावीर अतिबल शरओघहिं । हृदयखण्डि धरणी शर धरहिं ॥
भीमसेन बहु निशिख पँवारयो । छादितशरभारत महिकारयो ॥
लखि कलिङ्ग शोणित ह्वै धायो । मत्त गज लक्ष्ण आयो ॥
तो बान्धव कलिङ्गके साथी । औ नवलाख महाबल हाथी ॥
भीमहिं घेरि सकल शर मारहिं । शक्ति शेल तोमरन प्रहारहिं॥
लागत घात अति कोप बढ़ायो । रथते उतरि गदागहि धायो ॥
गदाघावगज मस्तक फोरयो । पांयन ते अनेकरथ तोरयो ॥
न्टपकलिङ्ग कीन्हो दृढ़ठानहिं । भीम अङ्ग मारेउ दशबानहिं ॥
अपरविशिखत्रयअतिबलकीन्हों । तेशरविद्धभीमशरपर दीन्हों ॥
भीमसेन परतिज्ञा भाषत । रे कलिङ्ग अब को तोहिं राखत ॥
गदापवन ते सबहिं उड़ायो । सनलहित सबनभ पहुँचायो ॥
हैं नव लक्ष सङ्ग तव हाथी । सकल करौं तारागण साथी ॥

भीमसेन है नाम मम, जग परतक्ष प्रमान ।
यह मिथ्या नहिं जानिबो, कोटि आन भगवान ॥

अपनो तेज कृष्ण तब दयऊ । भीम अङ्ग प्रविशत सो भयऊ ॥
अरु रण माहिं पवनगण छाये । गदा पैठि निज भाव जनाये ॥
धाये भीम गदा कर फेरत । उड़ै गयन्द महीतड़ गेरत ॥
पवन तेज आकाश समाने । ज्यों बबूरके पत्त उड़ाने ॥
कुञ्जर सबै गगन मो लागे । कौतुक छोड़ि देव सब भागे ॥
योजन एक सैन जो लायो । गदा पवन ते सबै उड़ायो ॥
कौरवदल देखत दृग मान्यो । काल समान भीमको जान्यो ॥

पकरि शुण्ड गज मत्त चलाये। ते कुञ्जर लङ्का पहुँचाये॥
अभिरे कनककोटि शिरफूटो। सहित शुण्ड दशनसबटूटो॥
बहुतक परे सिन्धुके धारहिं। पकरि मत्स्य सबकरहिंअहारहिं।
रवि मण्डल सो जो पहुँचायो। अजहूं फिरतगिरननहिंपायो॥

भीम भयङ्कर गज घने, फेंके यहि व्यवहार।
भारतके संग्रामतें, कियो सिन्धुके पार॥

देखत द्रोण क्रोध तब कीन्हो। रहुरहु भीम हांक तब दीन्हो॥
सहस बाण उर मध्यसो मारो। शरते तनु जर्जर करि डारो॥
शायक छूटे जात न जाने। कवच भेदि शर अङ्ग समाने॥
लघु सन्धान द्रोण शर मारो। अपने रथहि भीम पगुधारो॥
लैकरि धनु दश साधेउ शायक। द्रोणशरीर हनेउ बलशायक।
नकुलहि और जयद्रथ भारत। दोऊ रच्यो सरस पुरुषारथ॥
शकुनी अरु सहदेव लराई। महायुद्ध कीन्हो प्रभुताई॥
द्रोणपुत्र अभिमन्यु संग्रामहि। सरसविशिखछाड़तरणधामहि।
ऐसे शर क्रुद्धित ह्वै जोरहिं। मनुज कहा पर्वतकहँ फोरहिं॥

षष्टिबाण अभिमनु हते, कीन्ह्यो स्यन्दन भङ्ग।
ध्वजा सहित वै सारथी, मारे चारि तुरङ्ग॥

कीन्ह्यो अपर रथहि असवारी। सहस बाण जोरे धनुधारी॥
तनयविशिखअसजोरो। द्रोणीशर निजशर ते तोरो॥
द्रुपद संग्रामहि। जुरे वीर अपने जय कामहि॥

वासुदेव रथ कियो पयानो । भीषम के सन्मुख लै ठानो ॥
दोऊ वीर महा धनुधारी । लागे करन भयानक मारी ॥
दिव्यबाण अर्ज्जुन तब मारो । सहस पैग पाछे रथ टारो ॥
भीषम कह्यो धनञ्जय सुनिये । अब मेरो पुरुषारथ गुनिये ॥

अवण मूल आकर्षि धनु, हन्यो विशिख समरत्थ ।
तीनि पैग पाछे कियो, नन्दिघोष सो रत्थ ॥

तीनि पैग पाछे रथ आयो । साधु वचन यदुनाथ सुनायो ॥
अर्ज्जुन कह सुनिये गिरिधारी । मम उर यह संशय है भारी ॥
मैंयहिविधिनिजविशिखचलायो । सहस पैग रथको बिचलायो ॥
तीनि पैग मेरो रथ आयो । साधुवचन केहि काजसुनायो ॥
हँसि भाष्यो तब शारँगपानी । पारथ तुम यह चरित न जानी ॥
जोमहं सब विबुध गगन अहहीं । ते सब नन्दिघोष महँ रहहीं ॥
मेरु समान भार हनुमानहिं । जगन्नाथकरि मोहिं बखानहिं ॥
ऐसो रथ शर टारो पारथ । भीषम धन्य धन्य पुरुषारथ ॥
अर्ज्जुन सुनत सत्यकरिजान्यो । महा क्रुद्धह्वै कार्मुक तान्यो ॥
धाये बाण तेज अति पायल । ताते भे गङ्गासुत घायल ॥
अष्ट बाण ते हत्यो तुरङ्गहि । पुनि त्रयविशिखसारथीअङ्गहि ॥

कोटि बाण अर्ज्जुन तज्यो, कीन्हों लघुसन्धान ।
चारिलक्ष चतुरङ्गदल, जूझेउ लागत बान ॥

अर्ज्जुनयहिविधिअतिबलकरो । भीषम कोपि धनुष कर धरो ॥
असी बाण अर्ज्जुन उरमारो । गज रथ हय पद्मादि संहारो ॥

यहिविधिकरहियुद्धकोकरणो। कुर्वाहि वीर पग़हि रणधरणो॥
भीषम किंयो सरस प्रभुताई। नरके भीम मेदिनी छाई॥
एकविशिखयहिविधितजोरो। ताते पारथको गुण तारो॥
तबकपिध्वजनिजधनुगुणकीन्हो। पारथहर्षिधनुष करलीन्हा॥
गङ्गासुत तब समय विचारो। दशसहस्र स्यन्दन संहारो॥

शङ्खध्वनि करिकै चले, सकल आपने धाम।
सबलसिंह चौहान कह, भारतके संग्राम॥

इति द्वादश अध्याय॥ १२ ॥

अपने भवन सबै मिलि आये। दुर्योधन तब भीष्म बुलाये॥
सुनहु पितामह वचन कहौं बर। तुमते कोउ नहि बड़ोधनुर्
सप्तदिवस रणकृत जयहितयह। पांडवक्षेमसहित गे निजगृ
यह कलङ्क नहिं मिटै तुम्हारो। जो न प्रात पांडव दल मा
सुनत क्रोध भीषम तनु बाढ्यो। तीक्ष्ण शर निपङ्गते काढ़
महाकाल शर नाम कहावै। इन्द्र वज्र नहि पटतर पावै॥
याहि शरते पांडव दल मारौं। तब अपने भवनहिं पगुधारौं
दुर्योधन सुनिकै सुख मान्यो। जीत्यो युद्ध चित्तमें जान्यो।
एक खड़ो करि दीन्हो। तामह वास पितामह कीन्हो
ान बंधुन संग गयऊ। युतकम्प्रणाति निजगृहगयऊ

सभामध्य बैठे सकल, द्रुपद विराट नरेश।
मधुर वचन सहदेवते, कहेउ आपु हृषिकेश॥

प्रात युद्ध होइ है केहि रूपहि। मन्त्री कहहु भेद सब भूपहि॥
हँसि सहदेव कहो सुनु स्वामी। तुम जानत सब अन्तर्यामी॥
महाकाल शर भीषम राख्यो। पाण्डव बधन प्रतिज्ञा भाख्यो॥
द्वारहि बध्यो गयो नहि धामहिं। समुझिकीजियेश्रीहरिकासहि॥
सुनतयुधिष्ठिर विस्मय मान्यो। बन्धुन सहित मुये यह जान्यो॥
कह्योकृष्ण नृप शोच न करिये। ऐसो मन्त्र चित्त निज धरिये॥
अर्ज्जुनको मेरे सँग दीजै। छलकरि महाकालशर लीजै॥
तब नृप कह यह बड़ो अँदेशो। किमि तुम वह शर पैहौ केशो॥
कमलनयन नृपको समुझायो। जबतुमसबबनवास सिधायो॥
काम्यकबन पर्णशाला छायो। दूत आनि कुरुनाथ जनायो॥

पाण्डवबनमो हैं निकट, वचन सुनो कुरुनाथ।
सकलकटक सँग लै चलो, भीष्मद्रोण निजसाथ॥

गोधन धन देखन मनलायो। यहै आगमन सबहि सुनायो॥
सुरगण सब जान्यो यह कारण। कुरुपतिजात पाण्डवनमारण॥
सुरपति कह्यो चित्ररथ धावहु। दुर्योधनहिं बांधि लै आवहु॥
आज्ञाते चलि चलोविमानहि। कटि निषङ्ग लीन्हो धनुवानहिं॥
गंधर्व राय आइ तब हांक्यो। चलितु सबहि गगनसुखताक्यो॥
यहिविधि बाण वृन्द करिलाये

अति तीक्ष्णगंधर्व शरलाग्यो। धनुगुणकट्योकर्णतवभाग्यो॥
नागफांस शर यहिविधि सांध्यो। बलते गहि दुर्योधन बांध्यो।

अपने रथ करि लै चल्यो, गगनपन्थ महँ गौन।
त्राहि त्राहि टेर्यो विकल, सुन्यो युधिष्ठिर बैन॥

यह तोहै दुर्योधन भ्राता। अपकारी गंधर्वलियजाता॥
अर्ज्जुन कर कोदण्डहि धरिये। बन्धनमुक्त बन्धुको करिये॥
भीम कही नृप चुपकरि रहिये। भूलिबातक्यहिकारणकहिये।
गंधर्व कियो हमारो कालहिं। चलहु राज कीजै सुखधामहिं॥
धर्मराज कह सुनिये पारथ। आज्ञामानि करहु पुरुषारथ॥
यहसुनि अर्जुन धनुकर लीन्हो। शायकवृष्टिअकाशहिकीन्हो॥
शरते रथ रोंक्यो दिविधामहिं। गंधर्व उर मार्यो दशबानहिं॥
मनहिं विचार चित्तरथ कीन्हो। दुर्योधनहिं डारि तबदीन्हो।
पारथ तब द्रुमि शायक साध्यो। भूमि अकाश बाणते बांध्यो॥
दुर्योधन शरपर चलि आयो। धर्मराजको दर्शन पायो॥

लज्जित ह्वै यहि विधि कह्यो, अर्ज्जुन राख्यो प्राण।
जो इच्छा सो मांगिये, कहत सवचन प्रमाण॥

पारथ कही सत्यदृढ़ कीजै। समय परे मांगे वर दीजै॥
एवमस्तुकुरुपति कहि दीन्हो। लज्जित गमन भवनको कीन्हो॥
त कह आजुइ वर लीजै। अर्ज्जुनको मेरे सँग दीजै॥
र्ज्जुन कीन्होतब गवनहि। आये दुर्योधन के भवनहि॥

ह्यो कृष्ण हम बाहर रहिये । सुनहु किरीटी यहमतकहिये ॥
मुकुट मांगि नृपनों लै आवहु। तब भीषम पहँ आपु सिधावहु ॥
तब अर्ज्जुन आयो नृप द्वारे। कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे ॥
दुर्योधन सुनि तुरत बुलायो। अंतःपुरमहँ कपिध्वज आयो ॥
आदर करि आसन बैठारे। कहहु बन्धु क्यहि काम सिधारे ॥
अर्ज्जुन कह कुरुपति के आगे। पावहुँ आज पूर्व वर मांगे ॥
मुकुट दान मणि भूपति दीजै। अपनो सत्य पालनो कीजै ॥
दीन्ह्यो मुकुट गहरु नहिं लायो। मन गोविंद सुनत सुख पायो

मुकुट बांधि पारथ चले, भीषमके अस्थान।
देखत उठि आदर कियो, दुर्योधनको जान ॥

भीषमकह्योजानि कुरुराजहि। आपुगमनकीन्ह्योक्यहिकाजहि ॥
मांगे महाकाल शर दीजै। निजकर हम पांडववध कीजै ॥
हँसि भीषम दीन्ह्यो तब बाणहिं। प्रातयुद्ध कीन्ह्यो सन्धानहिं
हर्षवन्त ह्वै अर्ज्जुन लयऊ। तेहि अवसरप्रकटतप्रभुभयउ ॥
कृष्णहिं देखि भयो छल जान्यो। गङ्गासुत यहिभांतिबखान्यो॥
हे प्रभु तुम पांडवके स्वारथ। मेरो प्रण किमि कियो अकारथ ॥
भारत में यश नेकु न पायो। नितप्रतितुमपारथहिंबचायो ॥
शिव सनकादिक अन्त न जान्यो। तुम पांडवके हाथ बिकान्यो
भक्त हेतु केशव मन भायो। विनाभक्ति प्रभुको नहि पायो ॥
कह्यो कृष्ण भीषमके आगे। यश पैहौ रण सरस सभागे ॥

अपनो प्रण मैं टारिकै, तव प्रण करौं निदान।
भक्ति विवश लखि प्रकट कह, सबलसिंह चौहान॥

इति त्रयोदश अध्याय॥ १३॥

भीषम सुनि जियमें सुख पायो। पारथ धर्म्मराजपहँ आयो॥
जिमिचातकमुखस्वातीवरष्यो। वाणदेखि पांडवदल हरष्यो॥
दुर्योधन सुनिकै दुख मानो। प्रात होत रण कियो पयानो॥
हर्षित ह्वै पांडव दल साजहिं। भेरि दुन्दुभी मारु बजावहिं॥
दल चतुरङ्ग साजिकै आयो। युद्ध भूमिमें शोभा पायो॥
प्रथम पेलि दीन्ह्यो गजमत्तहिं। गज रिपु दन्तिभयो चौदन्तहि
पदचर धाये गांसी दमकै। फेरत फरी खड़ग कर चमकै॥
चढ़े तुरङ्ग शेल कर लीन्ह्यो। महामारु असवारन कीन्ह्यो॥
मारत शूल सनोवा टूटहिं। बहते घाव खड़ग शिर फूटहिं॥
मुरैं न लरैं खेत मो ठाढ़े। महाशूर सब जियके गाढ़े॥
रथी रथी करिबे रण लागे। चलत न एक एक के आगे॥

महारथी रण हांकदै, करहिं युद्ध यहि रूप।
जोर जोर अरुझै सबै, भिरै भूप सों भूप॥

सहस लाख कोटिनशर छूट्यो। बाणन बाण बीचहो टूट्यो॥
।९ विधि युद्ध करैं रण सरसैं। बहुविधिबाण बुन्दसम बरसैं
ाढ़हिं धनुष क्रोध कै रणमें। बाहैं शेल हांक दै रणमें।

रथते उतरि गदा लै धावहिं । आगे परहिसो मारि गिरावहिं॥
तोमर फरसा कोउ प्रहारहि । शक्ति शेल मुद्गर कोउ मारहिं ॥
जूझिगिरे भारत रण धामहिं । आनन्दितचढ़िचलेविमानहिं ॥
अर्ज्जुन रथ हांक्यो कंसारी । जोती गहे पिताम्बरधारी ॥
श्यामशरीर कमलदललोचन । सदा भक्तकर शोच विमोचन ॥
नन्दिघोष रथ आगे आयो । तब भीषम यहि भांति जनायो ॥
मुकुटबांधि कीन्हो सोसों छल । आजु जानिबो पारथको बल ॥
जो हरि के कर अस्त्र गहावों । तो शन्तनुसुत जगत कहावों ॥

धर्म्मराज कुरुपति सुनौ, भीषम भाष्यो बन ।
आजु गहावों अस्त्र हरि, देखत दूनौ सैन ॥

गङ्गा गर्भ जन्म जो लीन्ह्यो । तौ यह प्रण भारतमें कीन्ह्यो ॥
प्रभुको प्रण टारों परतच्छ । आजु करौं अपनो प्रणरच्छ ॥
यहिविधि वाणबुन्द झरि लावों । शोणित नदी अथाह बहावों॥
कृष्ण हाथ नहिं अस्त्र गहावों । तौ मैं वास अधोगति पावों ॥
कठिनबाण शारँगगुण जोरौं । शरसागर पांडवदल बोरौं ॥
भीषम यही प्रतिज्ञा ठान्यो । द्वौ दलअतिअचरज करिमान्यो ॥
यह सुनि देवलोक सब आये । कौतुकको विमान सब छाये ॥
प्रथम कियो है प्रण जगतारण । हमनहिंकरैं धनुष करधारण ॥
प्रभु पारथको सारथि अहई । भीषम अस्त्र गहान न कहई ॥
यह चरित्र देखत सब मुनिगण । रणमो आजु रहै काको प्रण ॥

भीषम तब यहि विधि कह्यो, करिहौं युद्ध अनन्त।
पारथ रण दृस्थिर रहो, सारथि श्रीभगवन्त॥

यह कहि लगे चलावन शायक। दोऊ भट रणमहँ सबलायक
अर्ज्जुन बाण हाथ ते छूटहिं। मानहुँ वज्र गगनते टूटहिं॥
लघु सन्धान कियो तब पारथ। निज शायक छायो सब भारथ
दशदिशि सब बाणनमय सूझै। निज पर नाहिंन कोऊ बूझै
यहि विधि शर आकाशमें छायो। रविमण्डलदेखननहिंपायो
देखि युद्ध भीषम रिस बाढ्यो। तीक्षण शर निषङ्गते काढ्यो
ऐसे सबल बाण गुण जोरे। क्षणमहँ अर्ज्जुनके शर तोरे॥
लाखन अर्ब खर्ब शर कोप्यो। पांडव दल बाणनते तोप्यो॥
वीर सकल शर छांह समाने। दृष्टि न परत जात नहिं जाने।
क्रुद्धितयहिविधि कृतसन्धानहिं। जलथलसूझिपरतसबबान॥

महाघोर संग्राममें, अर्ज्जुन धनु सन्धान।
सब शर काटे निमिषमो, तम खद्योत जिमि भान॥

अर्ज्जुन पाणि निशित शर छूटत। भेदि सनाह वपुषमहँ फूट
सारथि उर शतशायक मारे। विंशतिविशिखकेतुध्वज पारे
अष्टनतनु यहिविधि शर लागे। थकित भयेपगचलत न ।
लक्ष नराच कटक पर डार्‍यो। ते शर चोट मौलि अनुसार्‍यो॥
व भीषम निज तेज सँभार्‍यो। सहसबाण अर्ज्जुन उर मार्‍यो
...विशिखलाग्योहनुमानहिं। षष्टिनराच हन्यो भगवानहिं

गङ्गतनय शर अपर सु जोरे । घायल नन्दिघोष के घोरे ॥
शर अनेक सेना पर प्रेरो । पांडव कटक हत्यो बहुतेरो ॥
सहस एक राजा गिरयो, सेन सुवध्यो अनन्त ।
अरुण वर्ण सब देखिये, खेलत मनहुँ वसन्त ॥
भीषम अमित तेज महि साच्यो । रुण्ड मुण्ड महि भारतमाच्यो
महाशूर रण जूझत घायल । मनहुँ नाद मोहे करशायल ॥
यहिविधिकृतअतिरणभयकारी । अर्ज्जुनसों तब कह्यो मुरारी ॥
अब अपनो दल रक्षन कीजै । दृढ़ ह्वै शर कोदण्डहि लीजै ॥
सुनि पारथ लीन्ह्यो करधनुशर । प्रातसमय जनुउदयदिवाकर ॥
अति क्रुद्धित ह्वै कृतसन्धानहिं । हृदयताकिमारयोबहुबानहिं ॥
भेदि सनाह अङ्गमें लाग्यो । क्रोधअनलउर अन्तर जाग्यो ॥
भीषमविशिखनिशितअतिछूटयो । अर्ज्जुनवपुष भेदिके फूटयो ॥
घायल भयो सह्यो सब बानहिं । ब्रह्म अस्त्र तब कृत सन्धानहिं ॥
बाण उदोत तेज महि छायो । देवलोक लखि अति भयपायो ॥
पारथ अतिशय बल कियो, कृष्ण अस्त्र सन्धान ।
चलत तेज अति उदित कृत, मनहुँ दूसरो भान ॥
कौरवदल अति देखि सकान्यो । भीषम ब्रह्म अस्त्र संधान्यो ॥
अस्त्र अस्त्र सों भयो निवारण । तब लाग्यो तीक्षण शरमारण ॥
अयुत बाण हनुमन्तहि मारयो । गरुड़ध्वजतनु सहसप्रहारयो ॥
अर्ज्जुन अङ्ग बाण बहु मारो । शरते तनु झांझर करि डारो ॥
सहितबाजिस्यन्दनकरिघायल । थकितभयेपदचलनतपायल ॥

भीषम बाण दृष्टि अति लाग्यो। नन्दिघोष रथ गर ते छायो
तीक्षणबाण श्याम उर मारो। पीतवसन रँग अरुण सँभारो
क्रुद्धित जलजनयन रतनारे। चक्रपाणि कर चक्र सँवारे॥
रथ ते उतरि चले नारायन। धाये आप उघारे पायन॥
सजल श्यामघन अङ्ग सुहायो। मरकतमणि पटतर नहिं प
मकराकृत कुण्डल मनमोहै। डोलत झलक कपोलन सोहै

गहे चक्रधर चक्र कर, चकित चाहत खेत।
चञ्चल धावनि चरणकी, भीषमके प्रण हेत॥

करमें चक्र सुदर्शन राजत। कोटिभानुद्युतिसरिसविराजत॥
श्रमजलरुधिर चलत यकसङ्गहि। शोभित अंग अनूपम रङ्गनि
विश्वम्भर क्रुद्धित ह्वै धायो। भूमि हली फण शेष उठायो॥
यहिविधिप्रभुआतुरकियगवनहिं। फहरतपीतवस्त्र लगि पवनहि
गिरो छूटि अम्बर रण धरणी। कवि पै छबि कछु जातनवरणी
कौरव दल देखत सब डरप्यो। मानहुँ बाज विहँगपर फरक्यो
तब अर्ज्जुन छांड़ो निजस्यन्दन। धाइ जाइ पकरो जगवन्दन॥
अहोनाथ दृस्थिर ह्वै रहिये। आपु अस्त्र क्यहि कारण गहिये
मोते अघ कह भय जगतारण। कर गहि चक्रचलो तुम ॥
यहई अयश जगतमें पायो। प्रभुकर भीषम अस्त्र गहायो॥
प्रभु अपनो प्रण टारिकै, कियो मोर जपमान।
भीषम प्रण स्वारथ कियो, भक्त वश्य भगवान॥

रणकमलगहि पारथ फेरयो । देखि पृष्ठ गङ्गासुत टेरयो ॥
ाधु साधु श्रीपति वनवारी । सदा भक्त प्रण रक्षकारी ॥
ानुष डारिकर कियो प्रणामहिं । प्रस्तुतिकरनलगेघनश्यामहिं ॥
ब भीषम यहि विधिते भाख्यो । दीनबन्धु मेरो प्रण राख्यो ॥
वेप्र सुदामा दारिद भञ्जन । भक्तवश्य गोपिन मनरञ्जन ॥
ाणिका व्याध गीध गज तारण । गोरक्षक गोवर्द्धन धारण ॥
र्व्वको अचल कियो परतक्षक । द्रुपदसुता की लज्जारक्षक ॥
महाकष्ट प्रह्लाद उबारो । निकसि खम्भ दनुजेशहि मारो ॥
ावणकुल समेत वध कीन्हो । लङ्काराज्य विभीषण दीन्हो ॥
शाप शिला गौतमकी नारी । परसत चरण अहल्या तारी ॥

ब्रह्मा शङ्कर देव मुनि, करत चरण निज ध्यान ।
सबलसिंह चौहान कह, भीषम कियो बखान ॥

इति चतुर्दशाध्याय ॥ १४ ॥

जय वृन्दावन विपिन विहारी । श्रीपति श्रीधर श्रीवनवारी ॥
चढे आइ हरि पारथ स्यंदन । जोती गहे आपु जगवन्दन ॥
अर्ज्जुन कोपि धनुष कर लीन्हो । इन्द्रअस्त्र सन्धानहिं कीन्हो ॥
कौरवदल सन्मुख जो पायो । क्षणमेंअर्ज्जुन मारि गिरायो ॥
महायुद्ध कीन्हो नर रूपहि । मारो समर पञ्चशत भूपहि ॥
सोहत मुकुटन अति मणिपूरी । लोटत धरणि शीशते भूरी ॥

लागत उर अर्जुन के बानहिं। कुरुदलरणमरिखसोनिदानहिं॥
गङ्गासुत धनु क्रुद्धित लयऊ। गुड़ाकेशपर शर झरि कियऊ॥
यहिविधिलगे हनन शरतीक्षण। पाण्डवदलसहसनगिरमहि॥
दससहस्त्ररथ भीष्म निखण्डो। भवनचलतशंखध्वनि मंडो॥

कुरु पाण्डव फिरिकै चले, आये निज निज धाम।
धर्मराज बन्धुनसहित, सङ्गलिये घनश्याम॥

भोजन को सबही मनलायो। द्रुपदसुता यहि भांतिसुनायो॥
धर्मराज दुर्योधन भूपहि। आजुयुद्धकीन्होक्यहिरूपहि॥
तबपारथ यहिभांति बखानहिं। हरि मेरो कीन्हो अपमानहिं
रण में भीषम को प्रण रख्यो। दीनबन्धु रण अस्त्रहि गह्यो॥
द्रुपदसुता यहि भांति बख्यान्यो। पारथ तुम यह भेद न जान्यो
सदा भक्त की रक्षा कारण। ब्रह्मरूप कीन्हो प्रभुधारण॥
शिव सनकादिक अन्त न पायो। शबरीके जूंठे फल खायो॥
महिमा जगम अगोचर मोहन। डोलत सदा भक्तके गोहन॥
बलिराजा हनुमान सयाने। चरणकमलमनमधुपलोभाने॥
कह्यो द्रौपदी सुनिये पारथ। भीषम जन्म भक्तमय स्वारथ॥

धन्य धन्य ते साधु तनु, भजत सांवरे अङ्ग।
सुखदुखसम्पति विपतिमें, होत नहीं चितभङ्ग॥

माधव अतिशय सुखपायो। करिभोजनशयनहिंमनल
प्रभात सजैं दो अनी। बजत दमाम भई ध्वनि घनी

ौर सकल रणधरणिहि आये । बँधे अस्त्र कर धनु शर लाये ॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये । महाशूर सन्मुख ह्वै आये ॥
तैकर धनु शर कृत सन्धानहिं । क्रुद्धितलगे पँवारन बानहिं ॥
कुञ्जर पेलि महावत दीन्हो । आगेपरे ताहि यम लीन्हो ॥
महावीर सब विरद सुबांधे । अरुझे ठांव ठांव रण कांधे ॥
दलचतुरङ्ग करत रण घोरहि । मण्डे समर जोरसों जोरहि ॥
तेज तुरङ्ग नकुल त्यहि राज्यौ । अतिभयदायक संगरसाज्यौ ॥
हारथी बहु शर हत करहीं । सहससहसभटरणयहिपरहीं ॥
भीषम पर अर्ज्जुन रण साजो । हांक देत हरि हांकत बाजो ॥
जीती गहे पतितके पावन । वर्षत शर मानहुँ जलसावन ॥

पारथ कर कोदण्डगहि, छायो विशिख अपार ।
मत्तदन्ति रथ हय गिरे, पदचर विविध प्रकार । ॥

तब भीषम निजकरधनुलायो । अतिशयसरिसनराचचलायो ॥
तीच्चण बाण प्रहारण करई । पाण्डव दल बहु भट संहरई ॥
भीषम उर निज तेज सुधारयो । सहस नरेश युद्ध महि मारयो
वीर सबै लागे शर मारन । तब आये कोता हथियारन ॥
शूल गदा मद्गरन प्रहारहिं । सन्मुखआयखड्गशिरझारहि ॥
अभिरहिं सुभट कटारिन मारहि । पकरिकेशरणचपरिपछारहि॥
द्रोण कर्ण कुरुपतिके साथहि । यहिविधि लरैं अस्त्रगहिहाथहि
इतते तबहि वृकोदर धायो । गदा घाव बहुमारि गिरायो ॥

बहुतक मौंजि पांवते टारो। बहुतकगहिअवनीपरडारो॥
अरु बहुत्यन्दन चूरण कीन्हेउ। हयगजफेंकि व्योमपथदीन्हे॥
घोर युद्ध यहिविधि कियो, भीम भयङ्कररूप।
सहित सेन रणमें वधे, प्रबल तीनिशत भूप॥
नन्दिघोष हांकत जगवन्दन। अर्जुन कीन्हेउ सैननिकन्दन॥
तीक्ष्ण बाण क्रुद्ध कै मारो। तीनि सहस्र न्टपति संहारो॥
मरिभटपरो धरणि सब छायो। रणमें रुधिरनदी वहिआयो॥
शोणितनदी जाति नहिं वरणी। मनअथाह हमका वैतरणी॥
भीमसेन गजराज सँहारे। परे समर सब भये करारे॥
धवल छत्र चमकत हैं कैसे। बाढ़त नदी फेन जल जैसे॥
शक्ती झलक मीनसम चमकैं। कटिनढालकच्छपसमदमकैं॥
केश स्यवार सरिस अरुझाने। मृतक तुरङ्ग ग्राह सम जाने॥
कटे भुशुण्डि सरिस छवि पाई। मनहुँ भूमि जलमें उतराई॥
रुधिर नदी यहि रूप भयङ्कर। नाचत महा मगन ह्वै शङ्कर॥
भैरव भूप पिशाचगण, योगिनि मङ्गलचार।
अन्त्र लपेटहिं कण्ठमें, सरिस विराजत हार॥
कोऊ गजमुक्ता लै आवहिं। एक एक के श्रुति पहिरावहिं॥
न्टत्यत भूत पिशाच सयाने। रुधिर मांस सब खाइ अघाने॥
जम्बुक गण आनन्दित धावहिं। मांस खाइ मनमें सचु पा॰
गन उड़हिं पच्छीगण जेते। रणमें भये तृप्त मन तेते॥
ायल मग्न सु भये रुधिरसरि। उठेसँभरिपुनिशोक सिन्धुप

ररन भीश कुण्डि लै आवहिं । पीवहिंरुधिरयागिनीगावहिं ॥
ठिकबन्ध धावहिं पुनिमाथहि । मारनआवखड़गगहि हाथहि॥
ीषम सों अर्ज्जुन बलभारी । कीन्हेउअतिभारतभयकारी ॥
रुणवदन देखत दिन भूल्यउ । जिमिवसन्तकिंशुकतरुफूल्यउ ॥
त पिशाच सुब्याह बिचारहिं । धरहिंटोप शिरमौरसँवारहिं ॥

सबलसिंह चौहान कह, अर्ज्जुन कृत रण खेत ।
गावत चौंसठि योगिनी, नाचत हैं सब प्रेत ॥

इति पञ्चदश अध्याय ॥१५॥

ोधन मण्डल मण्डप छायो । जम्बुक सकल बराती आयो ॥
हिविधि करत कोलाहलभारी । भैरव सहित देहिं करतारी ॥
नव पारथ सन्धान्यउ धनु शर । गङ्गासुत मारेउ उर शतशर ॥
अरुअतिनिशितअमितशरडाट्यो । रथको ध्वजा पताका काट्यो॥
तब भीषम दृढ़कर धृतधनुशर । होनलग्यो अतियुद्ध परस्पर ॥
दशशायक अर्ज्जुनतनु साध्यो । सप्तविशिखयदुपति अवराध्यो ॥
अष्ट नराच अपर गुण नाध्यो । नन्दिघोष हय रथ कृत साध्यो ॥
लाग्यउ षष्टिविशिखहनुमन्तहि । दशसहस्र रथ तवहतवन्तहि ॥
टै जय शङ्ख चल्यो गङ्गासुत । पाण्डुदलसबचले भवनउत ।
र्य्योधन सब सेना लीन्हे । अपने भवन गवन तव कीन्हे ॥

धर्मराज फिरिकै चल्यो, आगे कमलाकन्त ।
सबलसिंह चौहान कह, महिमा अगम अनन्त ॥

करि विश्राम अस्त्र सब खोले । नृपतियुधिष्ठिर माधव बोले ॥
चले सकल भोजनके कामहिं । बैठे द्रुपदसुता के धामहि ॥
धर्मराज अति वचन सुनाये । कंसनिकन्दन प्रभुहि जनाये ॥
नव दिन भयो महाबल भारथ । भीषम खेत सरिस पुरुषारथ ।
दशसहस्र रथ नितक्रम मारहिं । अरु अनेक सेना संहारहिं ॥
कह्यो कृष्ण अब कीजे गमना । चलि जैये भीषमके भवना ॥
हम तुम अरु पारथ सँग लीजे । गङ्गासुतके दरशन कीजे ॥
पूछहिं आइ मृत्यु को कारण । यहिविधिकहतभयेजगतारण ॥
अर्ज्जुन सहित चले तब केशो । निशाकाल उठि चले नरेशो ॥
आये तुरत गङ्गसुत द्वारहि । धायकह्योयहिविधिप्रतिहारहि ॥

गङ्गासुत चित दै सुनो, कह्यो जोरि युगहाथ ।
धर्मराज द्वारे खड़े, हरि अर्ज्जुन हैं साथ ॥

सुनि भीषम आतुर ह्वै धाये । कृष्णदरश आनन्दित पाये ॥
धर्मराज अभिवन्दन कीन्हा । हँसिभीषमअङ्कमभरिलीन्हा ॥
होय पाण्डुसुत कुशल तुम्हारो । जीतहु युद्ध शत्रु संहारो ॥
पुलक सहित हरिके पदपरश्यो । वदन चन्द्र आनन्दित दरश
आदर करि आसन बैठारो । शीतल जलसों चरण पखारो
भीषम कह्यो युधिष्ठिर राजहि । आपुगमनकीन्होकेहिकाजा
राज यहि भांति जनायो । बनबन फिरत महादुखपायो
वसीठ यदुनाथ पठायो । पांच ग्राम मांगे नहि पायो ॥

तब हरि रच्यो युद्ध यह भारथ। नवदिन किये आपुपुरुषारथ॥
दशसहस्ररथ नितक्रम मार्यो। सेन अनेक समर संहार्यो॥
आपु युद्ध यहि विधि करौ, तौ हम छांडो आस।
पञ्चबन्धु सँग द्रौपदी, फिरि जैबो वनवास॥
सुनि भीषम यहि भांतिबखान्यो। धर्मराज यह बात न ज्यान्यो
ताके सदा सहायक हरि हैं। सो रणमो निश्चय जय करि हैं॥
जहां धर्म तहँ कृष्ण सु आवैं। जहां कृष्ण तहँई जय पावैं॥
यह सुनि कह पाण्डवदलकेतू। आपु युद्ध कीजे केहि हेतू॥
जो हमको जय दीन्हो चहिये। अपनी मृत्यु आपुते कहिये॥
तब गङ्गासुत हँसिकै कहई। जबलगि अस्त्रगहे हम रहई॥
इन्द्र आदि जो रणमहं आवहिं। मोहिते जयतिपलनहिंपावहिं
तुमते कहौं सुनो यह कारण। सन्मुख अर्ज्जुन सकै न मारण।
होतप्रात यहिविधिते लरिये। आगे आनि शिखण्डी करिये॥
द्रुपदकुमार अग्र जब ऐहहिं। धनुषडारि हम वदनदुरैहहिं॥
कन्याते भयो पुरुषतनु, जानत हैं सब लोग।
ताते वदन न देखिहौं, प्रथम तज्यो तिय भोग॥
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये। जब हम अस्त्र डारिकै रहिये॥
और वीरके शर नहिं फूटहिं। परसत अङ्ग समर शर टूटहिं॥
अर्ज्जुन किये शिखण्डी ओटहिं। मेरे उर करिहैं शर चोटहिं॥
यहि विधिते भीषम समुझायो। सुनिकै धर्म्मराज सुख पायो॥
कीन प्रणाम चलन जब चह्यो। तब भीषम माधवसन कह्यो॥

दीनबन्धु पारथके स्वारथ। मेरो बल तुम करत अकारथ॥
हेप्रभु तीनिलोक के स्वामी। सब जीवनके अन्तर्यामी॥
अर्ज्जुन धन्य जगत यश छायो। हरिसे सखा सहजही पायो॥
यह कहिके तब कीन्ह्यो गवना। धर्मराज आये निज भवना॥
भीषम कह्यो मृत्यु को कारण। सुनिहर्षितभयोअधमउधारण॥

धर्मराज पारथ सहित, हर्षित पङ्कजनैन।
अमृतभोजनसरिसकरि, सबमिलिकीन्हो शैन॥

प्रात होत कीन्हे असवारी। साजे सैन महाबल भारी॥
दोऊदल अतिक्रुद्धित साजहिं। शब्द अघात दमामे बाजहिं॥
ठाक ठोक अपनी गति बोलहिं। मारतहांक पदाति सुडोलहिं॥
कोटिन गज साजे मतवारे। बाजत घण्टा चमर सँवारे॥
चले सुभट सब अस्त्रन धारे। क्रुद्धित भये सैन्यते न्यारे॥
रणमहं करहिं शत्रु को अन्तहि। मारहिं धायवेगि गजदन्तहि॥
सारथि रथ जोते हय चोखे। इन्द्र विमान परत हैं धोखे॥
ध्वजा तुरङ्ग सहस फहराने। चलत तेज चाके घहराने॥
तेज तुरङ्ग वीर सब चढ्यो। मानहुँ विधि अपनेकर गढ्यो॥
पांवर लगे सरिस छबिराजत। तबल अपर गज गाह विराजत॥
पद्चर करत कोलाहल धाये। खड्गहस्त लै शोभा पाये।
समर भूमि केहरि सम गाजे। युद्धभूमि में सरिस विराजे॥

कुरु पाण्डव चतुरङ्गदल, जुरे आनि कुरुखेत।
क्षत्रियगण सब हांकदै, शारंग गह्यो सचेत॥

सैन गभीर कहत नहिं आवै । कहै जो कवि सो अपयशपावै ॥
क्रुद्धित वीर लगे शर वर्षन । शतते सहस सहसते कर्षन ॥
कुञ्जर पेलि महावत दीन्ह्यो । महा मारु मयमन्तहि कीन्ह्यो ॥
यम ऐसे क्रोधित गजधावहि । आगेपरहि सो मारिगिरावहि ॥
महारथी सब मारहि अली । ध्वजा पताका काटहिं चली ॥
वर्षत बाण कहतको वैनहिं । लक्षण वीर समरकृत सैनहिं ॥
दोऊदल कीन्ह्यो रण घोरहि । परे भीम दुःशासन जोरहि ॥
विंशतिशर दुःशासन लीन्ह्यो । भीम अङ्ग शरभेदन कीन्ह्यो ॥
क्रुद्धित भयो पवनके नन्दन । धायो उतरि छांड़िकै स्यन्दन ॥
लैकर गदा कोपि करि धायो । हांकमारि दुःशासन आयो ॥

दोऊ भट यहिविधि भिर्यो, भारत भूमि प्रमान ।
कौतुक देखत देवगण, हर्षित चढ़े विमान ॥

मारत गदा कोपकरि तनमें । लागत घावशब्द जिमि घनमें ॥
शोभित रुधिर अङ्गमें कैसे । ऋतुवसन्त किंशुकतरु जैसे ॥
भीमसेन तब तेज सँभार्यो । हांकि गदा उरमध्य सो मार्यो ॥
दुःशासन तनु मोह जनायो । अपने रथहि वृकोदर आयो ॥
देखि द्रोण गुरु शर सन्धान्यो । भीम अङ्ग शायक ठहरान्यो ॥
तीक्ष्ण बाण षष्टि गुण जोरे । घायल किये सारथी घोरे ॥
पञ्च बाण ते तोरयो स्यन्दन । आगे भयो सुभद्रा नन्दन ॥
अभिमन्यु हाथ तेज शर छूट्यो । भेदि सनाह अङ्ग में फूट्यो ॥

एक वार सारथि शिर खंड्यो । चारिविशिखहयहतिरण मञ्‍
कौन्ह्यो विरथ द्रोणसे छत्नी । अर्ज्जुन पुत्र महाबल अत्नी ॥
द्रोण अपर स्यंदन चढ़्यो, लौन्ह्यों चाप सम्भार ।
सबलसिंह चौहान कह, भई भयानक मार ॥

इति षोड़श अध्याय ॥ १६ ॥

भीषमदेव कहन यह लागे । सारथि रथहि चलावहु आगे ॥
अर्ज्जुन वीर कृष्णसे सारथ । तिनते रण कीजै पुरुषारथ ॥
यह कहिकै हांक्यो रथ जबहीं । अशकुन भये बहुतविधितब
बोलत काक भयङ्कर वानी । विना मेघ वर्षत है पानी ॥
गीध निकरकर ऊपर छायो । जम्बुक अपनो भाव देखायो
उगिलहिंखड्गछांड़िकै खापहिं । रथके खम्भ पवनविन कांप
यह अशकुन जब देख्यो नैनहिं । कुरुदल कहनलगे सब बैन
नवदिन युद्ध भयानक पेख्यो । यहि विधिते कबहुं नहिं दे
सारथि कहै गङ्गसुत आगे । अशकुन होन बहुत बिधि लागे
भीषम विहंसि कही यह बानी । अहो मूढ़ यह बात न जा
पारथके सारथि अहैं, निरखहु श्रीभगवन्त ।
अशकुन कछु नहिं करिसकैं, सन्मुख कमलाकन्त ॥
भीषम रथहि चलायो । डोली धरणि शेष शिरन
करि हांक सुनायो । मानहुँ जलद घटा वहराय

क्रोधित ह्वै शारङ्ग कर गह्यो । नमित वचन नरहरिते कह्यो ॥
सावधान हरि जोती गहिये । पारथ की रचामहँ रहिये ॥
यह कहि बाण सहस्र प्रहारयो । अर्ज्जुनके उरमध्य सो मारयो ॥
दशशर श्याम अङ्गहत कीन्हयों । विंशतिशर हनुमन्तहिदीन्हयों
अपरचारिशरधनुगुण दृढ़किय । धाये नन्दिघोष तुरँगन दिय ॥
तब अर्ज्जुन लीन्हयो कर धनुशर । युद्ध परस्पर होत भयङ्कर ॥
दोऊ भट असमो रणधरणी । क्रुद्धितशरछांड़तअतिकरणी ॥

यहि विधिते अर्ज्जुन जुटे, गङ्गतनयसों क्रुद्ध ।
जल थल भारत भूमि नभ, शर पूरित कृतयुद्ध ॥

बाणतजतअतिशययहिकरणी । जिमिजलधरजलवृष्टि सुवरणी
सहस बाण पारथ गुण मोखे । तुरँगन हरिहांकत अतिचोखे ॥
तीक्षण बाण पांडुसुत डारयो । भीषम अन्तरिच्च हति पारयो ॥
अपर षष्टिशर कार्मुकधारयो । तेसब अश्वनके तनुमारयो ॥
लगे असी शर कपिके अङ्गन । सत्तरिशर मारयो यदुनन्दन ॥
श्यामअङ्ग शोणित छबि छाजत । पीतवर्ण रँग अरुण विराजत॥
जोती गह्यो धन्य अति चापल । वर्षतशरश्रावणजिमिघनजल ॥
यहि विधि ते शर वर्षा कियो । शरके छांह भानु छपिगयो ॥
नन्दिघोष रथ माधव सारथ । बाणवृष्टि ते छायो भारथ ॥
भीषम यहि प्रकारबल कीन्हयो । तब अर्ज्जुन धनुकर दृढ़लीन्हयो
श्रीहरि कहयो सुनहु हो पारथ । सहि न जाइ भीषमको भारथ ॥

हाँके पग नहिं चलत हय, शर छाये सब अङ्ग।
भीषम के संग्रामते, रणमें अचल तुरङ्ग॥

अर्ज्जुनजियविस्मय करि मान्यो। महाक्रुद्ध ह्वै निजधनुतान्यो॥
देवअस्त्र पारथ तनु डाव्यो। गङ्गासुत बीचहिते काट्यो॥
अपरविशिखतीच्णकरधाय्यो। ते शर पारथके शिरमाय्यो॥
अर्ज्जुनसहित भये घायलहरि। तुरँग थकेनचलत लघुगतिकरि॥
वर्षत बाण वर्णि को कहई। पांडवदल लच्चण गति लहई॥
श्रीपति कह्यो सुनहुहो पारथ। रचहु उपाय तजो पुरुषारथ॥
यह कहिकै हरि शङ्ख बजायो। सुनिकै नाम शिखण्डी आयो॥
अर्ज्जुनसों हरि कहन सु लागे। रणमें करहु शिखण्डी आगे॥
पाछे ह्वै शारँग कर धरिये। यहिविधिते भीषमवधकरिये॥
अर्ज्जुन कह्यो सुनहु यदुकेतू। कपट युद्ध कीजिय केहि हेतू॥
जबहिं शिखण्डी आगे आयो। भीषम धनुष डारि शिरनायो॥

विना अस्त्र लज्जितवदन, हेरत नीचे नैन।
इस्थिर ह्वै रथ पर रह्यो, कह्यो कृष्णसों वैन॥

दीनबन्धु पांडव हित कारण। कपटयुद्ध करि चाहहु मारण॥
अर्ज्जुन किये शिखण्डी ओटहि। भीषमउर कीन्ह्यो शरचोटहि॥
पारथबाण कुलिश सम छूटहिं। कवचभेदि भीषमतनुफूटहिं॥
गङ्गासुत यहि विधिते कह्यो। यह शर नहीं शिखण्डी गह्यो॥
मारत अर्ज्जुन मम हिये। यह विचार कीन्ह्यो चितदिये॥
भे कांपत तनु कैसे। शिशिर कालमें गोधन जैसे॥

नब पारथ कृत पुनि सन्धानहिं । हृदयताकि करि मारयोबानहिं
चरणकमलमनकीन्ह्योंध्यानहिं । रसना रटत कृष्णको नामहिं ॥
रोम रोम यहि विधि शर मारा । बहै प्रवाह रुधिरको धारा ॥
तीक्ष्णअपरविशिखकरधरयो । तेशर कठिन मौलिपर परयो ॥

भीषमको बल थकित भो, मारत अर्ज्जुन तीर ।
तिल भरि देह न देखिये, झांझर भयो शरीर ॥

रथते गिरे गङ्गसुत धरणी । जगमहँ रही सदा यह करणी ॥
देखत सब कौरवगण धाये । हाहा शब्दाघात सुनाये ॥
द्रोण कर्ण दुःशासन अली । धनुष डारि रोवहिं सब चली ॥
करुणा करत कहत यह बैनहिं । अहो पितामह राखहु सैनहिं॥
कुरुपतितबछाड़योनिजस्यन्दन । आये जहँ गङ्गाके नन्दन ॥
सेनापति ह्वै मुकुट बँधायो । आपु कृष्णकर अस्त्र गहायो ॥
जीति स्वयम्वर कन्या लीन्ह्यों । दोऊ बन्धु व्याहकरि दीन्ह्यों ॥
परशुरामते युद्ध विचारयो । उठिकै बाण धनुषकरधारयो ॥
रोदनकरि यहिभांति बखानत । विधिचरित्त कोऊनहिंजानत ॥
मोरे जिय यह बड़ो अंदेशो । पांडवसहित जीतिहौं केशो ॥
तुम पायो क्षत्रीके धर्म्महि । यह सब दोष हमारे कर्म्महिं ॥

भीषम घेरे खेतमहं, रोवत सबै नरेश ।
सबलसिंह चौहान कह, चल्यो आपु हृषिकेश ॥

इति सप्तदश अध्याय ॥ १७ ॥

धर्म्मराज माधव सँग लीन्हो । रथते उतरि गमन तब कीन्हो ॥
अर्ज्जुन और भीम सब राजा । चले पितामह देखन काजा ॥
यहि अवसर गङ्गासुत बोले । सुन्दर अधर मनोहर डोले ॥
शर शय्या सब अङ्ग विराजै । लटकत शीश भूमिपर राजै ॥
कुरुपति कहो हमारो कीजै । उत्तम भांति शिरहनो दीजै ॥
कोमल तूल पटम्बर भरग्रऊ । आनि तुरत शिरहाने धरग्रऊ ॥
तब भीषम भाष्यो यह बानी । दुर्योधन तुम बात न जानी ॥
अर्ज्जुन समय विचारहु मनमें । उचित शिरहनो दीजै रनमें ॥
सुनि अर्ज्जुन शारँग कर लीन्हग्रों । तीनि बाण संहारण कीन्हग्रों ॥
सन्मुख ह्वै ललाटमहँ मारग्रो । भेदि शीश शर निकरि सो पारग्रो ॥

फोंक बेधि शर पार ह्वै, गड़ग्रो भूमिमें बान ।
यहिविधि शरशय्या दियो, भारतके परधान ॥

धर्म्मराज बहु रोदन कीन्हो । भीषमसों कछु कहबे लीन्हो ॥
केवल दुर्योधन के पापहि । परशुराम दीन्हो रण शापहि ॥
ताते भयो मृत्युको कारण । सन्मुख दरश करहु जगतारण ॥
हँसि भीषम यहि भांति बखानी । साधु नरेश परम सज्ञानी ॥
दक्षिणायन रवि घातक कहिये । ताते शरशय्यासों रहिये ॥
उतरायण रवि होइहैं जबहीं । करिहौं देह त्याग निज तबही ॥
लगि क्षत्रिनको बल पेखहिं । भारत युद्ध नयननिज देखहिं ॥
न अरु धर्म्म नरेशहिं । भीषम कछु भाष्यो उपदेशहिं ॥

अजहूँ कीजिये कहा हमारो । कुरुपाण्डवमिलिप्रीतिविचारो ॥
बांटि राज्य लीजै दोउ भाई । वसुधा भोग करहु सुख पाई ॥

विग्रह कुलको अन्तहै, अजहूँ कीजिये प्रीति ।
जहां धर्म्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति ॥

जाके सखा आपु जगतारण । तासों युद्ध करहु केहि कारण ॥
सुनिकै दुर्योधन यह कह्यो । यह प्रण मैं अपने मन गह्यो ॥
सुई अग्र महि देब न औरहि । करौं युद्ध भारत रणठौरहि ॥
यह सुनिकै भीषम यह कही । हरिको शरण जाइये सही ॥
जो रणको कुरुपति मन लावहु । कर्णवीर शिरमुकुट बँधावहु ॥
द्रोण कर्ण सेना अधिकारी । अर्ज्जुन के समान धनुधारी ॥
पारथ नहिं जीतहि अपने बल । जो नहिंकृष्णकरहि रणमें छल॥
जहँ भीषम शरशय्या लीन्हों । तम्बू एक खड़ो करि दीन्हों ॥
गङ्गासुत कीन्हो जब मौनहिं । धर्म्मराज आये तब भौनहिं ॥

पांडव दल आनन्द मन, जीति चले मैदान ॥
अर्ज्जुनके रथ सारथी, सुन्दर श्रीभगवान ॥

धेनु सहस्र दिये जो दानहिं । जो फल सब तीरथअस्नानहिं ॥
जो फल होइ साधुके दरशे । जो फल शम्भुनाथके परशे ॥
जो फल व्रत एकादशि कीन्हे । जो फल होइ भूमिके दीन्हे ॥
जो फल रणमें प्राण गँवाये । जो फल होइ ब्रह्मके ध्याये ॥

जो फल कोटिन विप्र जेंवाये। सो फल भारत सुनै सुनायें॥
व्यासदेव भारतके कर्त्ता। बाढ़ै पुण्य पापके हर्त्ता॥

रामकृष्ण गोविन्द हरि, कीजै सदा बखान।
भाषा भीषमपर्व कह, सबलसिंह चौहान॥

इति अष्टादश अध्याय॥ १८॥

इति भीष्म पर्व्व समाप्त।

महाभारत।

द्रोण पर्व।

श्रीगुरुचरण दण्डवत करिये। जेहि प्रसाद भवसागर तरिये॥
वन्दौं राम चरण रघुनन्दन। महावीर दशकन्धनिकन्दन॥
दीरघबाहु कमल दललोचन। गणिकाव्याधअहल्यामोचन॥
व्यासदेव कलियुग अघहरना। चारि वेद श्रीभारत करता॥
श्रोता जनमेजय गुणसागर। महावीर कुरुवंश उजागर॥
वैशम्पायन ऋषिवर ज्ञानी। वक्ता महा सुधारस बानी॥
सत्रह शत सत्ताइस जाने। गनि सम्बत यहि भांति बखाने॥
पुनि बुधबार घरी शुभ जाने। जादिन लङ्का राम पयाने॥
शुक्ल पक्ष आश्विनको मासा। दशमीतिथिकरि ग्रन्थप्रकासा॥
उत्तम नगर सुरचना छाजा। भूपति मित्रसेन तहँ राजा॥
रघुपति चरण मनाइकै व्यासदेव धरिध्यान।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो सबलसिंह चौहान॥

जब भीषम शरशय्या लीन्हेउ। दुर्योधन मन बहु दुख कीन्हेउ॥
अब काको सेनापति कीजै। जाके बल भारत करि लीजै॥
कही कर्ण राजा सुनि लीजै। जो मोकहँ सेनापति कीजै॥
अर्ज्जुन भीम खेतमहँ मारौं। सेना सहित न एक उबारौं॥
सो सुनि द्रोणपुत्र मन डोला। नृपसों क्रोधवन्त ह्वै बोला॥
सूर्य्यपुत्र सेनापति करिहौ। ताके बल पांडवसों लरिहौ॥
मोरे शिर जो मुकुट बँधैये। अबहीं जयतिपत्र नृप पैये॥
सो सुनि कर्ण क्रोधयुत भयउ। कम्पितअधरकहनकछुलयउ॥

अर्धरथी भीषम गनो, कुलहीनो जग जान।
सेनापति ताकहँ किये, च्त्रिनको अपमान॥

क्रोधित कर्ण खड़्ग लै धाये। पकरि बांह राजा समुझाये॥
अहो मित्र अब समय विचारो। तजिकै कलह शत्रु संहारो॥
सब मिलि यहै मन्त्र ठहरैये। कहौ जाइ तेहि मुकुट बँधैये॥
कह्यो कर्ण राजा सुनि लीजे। सेनापति गुरु द्रोणहिं कीजै॥
महारथी अरु अस्त्रहि जानत। कुरुपाण्डव दोऊ दल मानत
सुनि शकुनीके मनमों भायउ। साधु कर्ण हित बात सुनायउ
जयद्रथ कृपरु शल्यते भाखो। दलकर भार द्रोणशिर राखो॥
जब जानौ सबके मन माने। दुर्योधन सुनि आपु बखाने॥
होहु सेनाकर रच्छक। भारत युद्ध करो परतच्छक॥
[illegible] ेउ। बहुविधिविप्रवेदध्वनिकीन्हेउ

कही द्रोण राजा सुनो, कोटि आनि प्रशुराम ।
पांच दिवस भारत रचौं, करौं घोर संग्राम ॥
जो कोटिन पाण्डवदल आवैं । मारौं सबहिं जान नहिं पावैं ॥
जो अर्ज्जुनहिं जुदा करि पावौं । बांधि युधिष्ठिर नृप लै आवौं॥
जब गुरुद्रोण कहै अस लीन्हेउ । दुर्योधन प्रतिउत्तर दीन्हेउ ॥
जो आपुहि रणको मन लाये । कोटिन अर्ज्जुन मार गिराये ॥
तुमसों सबहिं सीखिये शायक । पारथ कहा भये यहि लायक॥
हँसिकै द्रोण कही यह बानी । राजा तुम यह बात न जानी ॥
महारथी जगमों है पारथ । नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ ॥
धनुगाण्डीव अग्नि जेहि दीन्हे । अक्षयतूण वरुणसों लीन्हे ॥
सात बर्ष सुरपुरहि सिधाये । देवअस्त्र सब सिखिकै आये ॥
पुर विराट रण कियो भयङ्कर । वनोवासमहँ जीतो शङ्कर ॥
शरसों सागर बांधिकै, जीति लियो हनुमान ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, नहिं पारथहि समान ॥
ताते यह उपाय चित धरिये । पारथ बिलग कटकते करिये ॥
कही सुशर्मा गुरु सुनि लीजै । यहिकामहि आज्ञा मोहि दीजै ॥
परन करत पारथ संग्रामा । लै जैहों तिनको निजधामा ॥
चौदह सहस रथी धनुधारी । बंश प्रकाशनके अधिकारी ॥
जो अर्ज्जुन कहँ पीठि देखावै । हम सब त्रास अधोगति पावैं ॥
यह सुनि दुर्योधन सुख मान्यो । अपनो परमहितू कै जान्यो ॥
रच्यो सुशर्मा आयो तहँवां । पाण्डव दलमहँ पारथ जहँवां ॥

हरि अर्ज्जुन बैठे इक सङ्गा । कहत कथा भीषम रणरङ्गा ॥
यहि अन्तर इन दर्शन दीन्हओं । पारथ उठि सम्भाषन कीन्हओं ॥
आदर कै आसन बैठायो । भूप सुशर्मा वचन सुनायो ॥
परन करत पारथ तुम्हें, युद्ध करनके हेत ।
करहु और जो चित्तमहँ, शपथकृष्णकी देत ॥
पारथ कोपवन्त तब कह्यो । हौंकत मोहिं कहसि धनु गह्यो ॥
मानो परन कालहि रणकरिहौ । ह्वै पतङ्ग दीपकमहँ परिहौ ॥
यह सुनि भूप सुशर्मा आये । कुरुपतिसों सब बात जनाये ॥
प्रात होत दोऊ दल साजे । शब्द अघात दमामे बाजे ॥
गज काळे पर्वत से भारी । पांव जँजीर नयन अँधियारी ॥
रथ पर रथी सरिस छबि बनी । जगमगात हीरनकी कनी ॥
अरु अनेक असवार महाबल । उदधिसमान पियादनके दल ॥
दुर्योधन अस कहिबे लागे । सेनापति द्रोणहिके आगे ॥
सबमिलि एक मतौ ह्वै लरिये । बलसों बांधि युधिष्ठिर धरिये ॥
पांडवदल आये मैदाना । तब पारथ यहि भांति बखाना ॥
आयसु हमरो सुनिय सब, अब हम करहिं पयान ।
सावधान चलिय सबै, लरहु द्रोण मैदान ॥
धर्मराज सुनिये कहि पारथ । रणमों द्रोण सरिस पुरुषारथ ॥
तीन लोक जो अस्त्रहि धरई । गुरु द्रोण सबको वशकरई ॥
[illegible]ा भृगुपति जेहि दीन्हओं । आपुसमानमहारथिकीन्हओं ॥
[illegible]ोण गुरु सेना रचक । महायुद्ध होई परतच्छक ॥

भीमादिक क्षत्रिन सन कहिये। सावधान नृपके सँग रहिये ॥
शूरसेन हैं बड़े धनुर्द्धर। जौलौं रहैं गहे शारँग शर ॥
तौलगि नृप रणको मन दीजै। नातर गवन भवनको कीजै ॥
अब हम जाहिं युद्धके कारण। शेषप्रकागण करहिं सँहारण ॥

अस कहि कै पारथ चले, सारथि श्रीभगवान।
दशयोजन दक्षिण दिशा, समरकेर मैदान ॥

नन्दिघोष रथ देखन आये। सेना सहित सुशर्मा धाये ॥
चौदह सहस रथी सँग लीन्हे। बाण वृष्टि पारथपर कीन्हे ॥
तब अर्ज्जुन मारे तीक्षण शर। होन लगी अतिमारुपरस्पर ॥
शेष प्रकागणके शर छूटहिं। मानहु वज्र गगनते टूटहिं ॥
अर्ज्जुन सों लोहा उत बाजो। इतहि द्रोण गुरु सेना साजो ॥
पहिरि सनाह खड़ग कटि बांधे। युगल तुणीर विराजतकांधे ॥
शीश टोप हाथन दस्ताने। जनु वानरगणसों अनुमाने ॥
बख्तर झलकै जोसन राजैं। जिरह मेषली सरिस विराजैं ॥
चौसा चारु आनिकै दीन्हे। गदालयो साजहि दृढ़ कीन्ह ॥
भूरिश्रवा कर्ण सम क्षत्री। कृतवर्मा ऽश्वत्थामा अत्री ॥

कोऊ कञ्चन रथ चढ़े, कोऊ चपल तुरङ्ग।
दुर्योधनरथ साजिकै, शतभाइन लै सङ्ग ॥

श्याम तुरङ्ग द्रोण रथ जोरे। पवन वेग वे चारिउ घोरे ॥
जानत हैं सारथि के मनकी। बढ़तचलततकिछायसुनतकी ॥
पाखर करी समय छवि छाजे। हंस भीष्म उल्लास विराजे ॥

चारिउ चरणनालकोचमकनि । ज्योंघनमेंदामिनिसोदमकनि ॥
आगे कुञ्जर शोभा पाये । प्राविट मेघ भूमि पर आये ॥
चमर ढरत चौराशी बाजत । श्वेतदशनअतिसरिस विराजत ॥
फेरत फरी खड़्ग कर चमकत । पगके भार मेदिनी धमकत ॥
तापाछे असवारन को दल । शेल सांग कर लिये महाबल ॥

कोटिन रथी महाबल भारी । क्षत्रिय शूर बड़े धनुधारी ॥
महारथी सब साथ लै, कीन्हों द्रोण पयान ।
दुर्योधन राजा चले, गरद लोपि गे भान ॥

पाण्डव दल आये मैदानहिं । आगे भीम गहे धनु बानहिं ॥
कुञ्जरसों कुञ्जर लै जोरहिं । दशनघाव मुख नेकु न मोरहिं ॥
ठोकर अरु वृषोरसों मारहिं । गहिकरशुण्डरथहिफटकारहिं ॥
पैदर सों पैदर अरुझाने । महावीर सब बांधे बाने ॥
असवारहि असवार प्रचारहिं । सन्मुख जुरतखड़्गसिरझारहिं ॥
लैकर धनुष रथी रण मण्डे । बाणनते अरिसैन्य विहण्डे ॥
आगे द्रोण पेलि रथ आये । कृपा कर्ण क्रोधित ह्वै धाये ॥
भूरिश्रवा अलंबुष चलो । जान्यो कृतवर्मासे अलो ॥
भीमसेन अरु द्रोणहि भारथ । महायुद्ध कीन्हों पुरुषारथ ॥
भूरिश्रवा सत्यकिहि दोऊ । लड़त हारि मानत नहिं कोऊ ॥
कर्णसाथ अभिमनु भिरे, कीन्हेउ शर सन्धान ।
द्रुपद गाउ जयदर्थ सों, महाभूरि मैदान ॥

कृपसों नकुल करहिं संग्रामा । दोऊ वीर युद्ध जयकामा ॥
भूप विराट सुशर्मा चत्री । उत्तर कुंवर अलंबुष अत्री ॥
धृष्टद्युम्न कृतवर्मा सङ्गा । शकुनी सहदेवहि रणरङ्गा ॥
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर । जुरे शिखण्डि गहे शारँगशर ॥
घटउत्कच कीन्हो रण ठाना । शल्य नरेश सङ्ग मैदाना ॥
काशिराज भञ्जनको भारथ । कीन्हों खेत महा पुरुषारथ ॥
पाँच कुमार द्रोपदिहि जाये । ते शशिबिन्दु युद्ध अरुझाये ॥
जोर जोर अरुझे सब जबहीं । धायो कोपि द्रोण गुरु तबहीं ॥
अति प्रचण्ड धनुशर करलीन्हे । तीच्चण बाण फोंकशर दीन्हे ॥

पेलि फौज आये तहां, जहां धर्म्म सो राज ।
सबलसिंह चौहान कह, द्रोणकियो यह काज ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

सेना सहित द्रोण जब आये । धर्म्मराजकहँ देखन पाये ॥
परी भीर राजापर जाने । शूरसेन तब शारँग ताने ॥
धर्म्मराजकहँ पाछे घाल्यो । क्रोधवन्त आगे रथ चाल्यो ॥
बहुविधि बाणबुन्द झरि लाये । तीन सहस रथ मारि गिराये ॥
बहुरि अनेक चलाये सांगी । कुञ्जर गिरे सहित चौरांगी ॥
हय पैदल जो आगे पाये । शूरसेन सब मारि गिराये ॥
झटकी अनी देखि जब पाये । तब गुरु द्रोण क्रोधकै धाये ।

आठबाण तीक्षण कर लीन्हे। ते शर चोट शीशपर कीन्ह॥
शूरसेन शर सबहि सँभारे। बाण पचीस द्रोण उर मारे॥
महाबीर दोउ बड़े धनुर्द्धर। होन लागि तब मारु परस्पर॥

शूरसेन नृप द्रोणसों, भयो घोर मैदान।
जल थल भारतभूमि सब, शर छायो असमान।

क्रोधित द्रोण सहस शर मारे। रथके चारि अश्व संहारे॥
सारथि युद्धखेतमहँ आये। रथते उतरि शैल लै धाये॥
तबहिं शैल नृप करते छूट्यो। लाग्यो बाण बीचते टूट्यो॥
शूरसेन तब खड्ग प्रहारे। क्रुद्धित द्रोण तीक्ष्ण शर मारे॥
टूटि शीश धरणीपर पर्य्यो। झलकतमुकुटजरायनजर्य्यो॥
शूरसेन जूझे मैदाना। धर्म्मराय लीन्हों धनु बाना॥
दश शर भूप क्रोध करि छांटे। ते गुरु द्रोण बीचहो काटे॥
लगे द्रोण गुरु मनहिं विचारन। धर्म्मराय बधिये केहि कारन॥
रुधिर परे वसुधा सब जरई। अर्ज्जुन सुनै प्रलय पुनि करई॥
ताते गहि बन्धन अब कीजै। दुर्योधन आगे करि दीजै॥

अस गुनि धाये द्रोण गुरु, नागपाश लै हाथ।
धर्म्मराय रथ तजि भजे, रहा न कोऊ साथ॥

देखि द्रोण राजाकहँ लीन्हे। डारहिं पाश चित्तमहँ कीन्हे॥
जब यह कथा तहां चलि आई। पारथ सों जहँ होत लड़ाई॥
[illegible]तिन कीन्हो शर सन्धाना। तब श्रीहरि यह बात बखाना॥
[illegible]न मेरो जिय गहबर्य्यो। धर्मराजपर सङ्कट पर्य्यो॥

मारहु बाण गहरु केहिकाजा । बांधत द्रोण युद्धिष्ठिर राजा ॥
अर्ज्जुन नयन अरुण ह्वै आये । मन व्यापक शरतुरतचलाये ॥
धावहुबाण बिलम्ब न लावहु । सङ्कटते धर्मजहि छुटावहु ॥
द्रोण गुरु कर पाश उठाये । तेहि अन्तर पारथ शर आये ॥
बाण उदोत होत हैं कैसे । प्रलयकाल बड़वानल जैसे ॥
दोऊ कर भेदन शर करयो । नागपाश धरणी गिरिपरयो ॥

दश शर लाग्यो द्रोणउर, भेदन कीन्हो अङ्ग ।
रथ सारथि चूरण किये, जूझे चारि तुरंङ्ग ॥

अर्ज्जुन बाण द्रोण जब लेखो । गरुड़ पच्च शर माथे पेखो ॥
कनक फोंक लागे वहु दामा । अङ्कित है पारथ को नामा ॥
देखत बाण जानि गुरुमनमों । पारथ फिरिआयो यहि रनमों ॥
तबहि द्रोण फिरि कीन्हो गवना । धर्मराज पहुँचे निजभवना ॥
कौरव दल जो खेतहि पाये । चल्योचल्योकरि अर्ज्जुन आये ॥
फिरे द्रोण लीन्हे सब सैना । कुरुपतिनिरखिकह्योतबबैना ।
धर्मरायकहँ बांधन धाये । कहो गुरु फिरिके तुम आये ॥
सुनि तब द्रोण कहे मनलाये । यसे हते अर्ज्जुन शर आये ॥
अर्ज्जुन शर ते चेत न धरयो । करते पाश भूमिगिरिपरयो ॥
सन्ध्या जानि किये तब गवना । कुरुपाण्डवआये फिरिभवना ॥

उभय सेन कुरु पाण्डव, सबआये निजधाम ।
अर्ज्जुन सावकाश नहि, राति दिवस संग्राम ॥

कुरुपति तबहिं द्रोणपह आये। बैठिबात यहि भांति जनायें।
सबके गुरु तुम वीर महाबल। पाण्डव नाश कहा करिये छल॥
जोआपुहि रणको मन दीजै। च्णहि पञ्च पाण्डव वध कीजै॥
कीजै कहा कहहु यह बातन। राजा सुनिये कथा पुरातन॥
जो कीन्ही है अर्ज्जुन करणी। ऐसो वीर न दूसर धरणी॥
द्रुपद नरेश स्वयम्बर ठानो। लच्च नरेश वर्ण के जानो॥
हम सब गये हुते तव साथा। हलधर हते सहित यदुनाथा॥
यहि विधि राजायन्त्र बनाये। नभमहँ कञ्चन मीन लगायें॥
नयन बने हीरन की कनी। कोउ च्चतिनकी रही न मनी॥
द्रुपद नरेश आपु उठि भाष्यो। वीरहु कहां गये बल भाष्यो॥

जो कोऊ भेदन करै, मीन नयनमहँ बान।
यह कन्या सोई वरै कहत बचन परमान॥

सब च्चत्री सुनि मौनहिं गह्यो। पारथ वीर सभामहँ रह्यो॥
ह द्विजरूप कोउ नहिं चीन्हो। शरअरुधनुष करणसों लीन्हो॥
धरिकै पांव खड्ग गहि बाना। खैंचि धनुष तब कियसन्धाना॥
तुमसबमिलि मिथ्याकै भाष्यो। दीनबन्धु पारथ प्रण राख्यो॥
कर्ण धनुषबल कोउ न पूजो। सुरपति धनुष दियो तब दूजो॥
बहुरि धनुष लै शर सन्धाना। मार्यो मीन नयन तकि बाना॥
गिरेहु कराह अनत नहिं गयो। तब सबके प्रतीति जियभयो॥
वसन विचित्र सँवारे। द्रुपदसुता जयमालहि डारे॥
निरखि लोभ चित आये। तुम शकुनी कहँ दूत पठाये॥

धन अनेक द्विज लीजिये, विप्रवंश करु ब्याह ।
द्रुपदसुता कन्यारतन, कुरुपति कीन्हो चाह ॥
क्रोधवन्त ह्वै पारथ भाखे । शकुनी बधउँ कवन तोहि राखे ॥
भानुमती रानी स्वहिं दीजै । सम्पति सब कुबेर की लीजै ॥
सो सुनि भूप क्रोध तुम कीन्हो । कर्ण आदि कहँ आज्ञा दीन्हो ॥
पुनि सुनिकै चलो सब धाये । पारथ एक सबै बिचलाये ॥
जरासन्ध होते बल माहीं । कोऊ कुछ न सको है छाहीं ॥
हम सब मिलिकै अस्त्रहि गह्यो । पै काहू सन खेत न रह्यो ॥
चलो सब गये बीरज खोई । बाणावरि नहीं पूछ्यो कोई ॥
दुर्योधन तब कहिवे लीन्हों । गुरुसन बिनय जोरि कर कीन्हों ॥
आपुहि यहां काज चितदीजै । पाण्डव सबहिं मारि यश लीजै ॥
कह्यो द्रोण राजासों वचना । कालिहि प्रात कीजै यह रचना ॥
चक्रव्यूह निर्माण करि, करहु युद्ध यहि रूप ।
बिन पारथ यहि जगत मों, भेद न जानहि भूप ॥
निशा मध्य महँ गढ़ निर्मावा । जाको अन्त कोउ नहिं पावा ॥
प्रात खेल देखत मन भाये । चक्राङ्कित वहु व्यूह बनाये ॥
सात द्वार तामह निर्मावा । दलबलसहित भूप सुख पावा ॥
प्रथम द्रोण जयद्रथकहँ राखो । सैन अनेक जात नहीं भाखो ॥
दूजो द्वार द्रोण सम अलो । साथ अनेक महाबल जलो ॥
तीजो बोर कर्ण दृढ़ कीन्हो । रथी समूह साथमहँ लीन्हो ॥
चौथे कृपा लिये बहु सङ्गा । पँचयें द्रोणपुत्र रण रङ्गा ॥

छठयें घोर वीर बहु अहई। भूरिश्रवा आपु तहँ रहई॥
सतयें घोर कुरुपति साजो। शतत्रान्धव न्टप सङ्ग विराजो॥
तीनि सहस राजा न्टप साथा। सावधान चलौ गहि हाथा॥

सात द्वारको दृढ़ कियो, चक्रव्यूह करि साज।
कुरुपति पठये दूत तब, जहां धर्म को राज॥

दूत आइ ठाढ़ो भो द्वारा। जाइ जनावहु कहिप्रतिहारा॥
द्वारपाल जब जाय जनाये। धर्मराज तेहिं निकट बुलाये॥
आय दूत नावा तब माथा। लाग्यो कहन जोरिकै हाथा॥
चक्रव्यूह रचि द्रोण बनाये। ता कारण न्टप मोहि पठाये॥
उठिकै व्यूह भेद न्टप कीजे। नातरु जयतिपत्र लिखि दीजै॥
जो नहि लरौ रहौ गहि भवना। हारौ युद्ध करौ बन गवना॥
यह कहि दूत तुरत चलिआये। धर्मराज सब वीर बुलाये॥
सबसों न्टप यहि भांति बखानो। चक्रव्यूह रण तुम कोउ जानो॥
जो कोई जानत तौ कहिये। व्यूह भेद अब कीन्हो चहिये॥
जो नहिं भेद व्यूह को जानो। युद्ध हारि गृह करो पयानो॥

यह सुनिकै सब मिलि कही, धर्मरायसों बैन।
चक्रव्यूह रण नहिं सुनो, काहु न देख्यो नैन॥

जब वीरन यहि भांति जनाये। सुनिकै धर्मराज दुख पाये॥
हरि रचना यह कीन्हो भारथ। सब उद्यम अब भयो अकारथ॥
चारिबन्धु सेना सब सङ्गा। पारथ विना भयो रणभङ्गा॥
भाष्यो भूप देखि सहदेवा। जानत कोउ व्यूह को भेवा॥

सो सुनिके सहदेव बखानी । तीनि विना चौथो नहिं जानी ॥
जानत द्रोण कि अर्जुन भाई । को प्रद्युम्न यह जान लराई ॥
भूप युधिष्ठिर कहिबे लीन्हे । शिशुपकागणमोहिदुख दीन्हे ॥
भूप सुशर्मा द्रोण पठाये । छलके अर्जुन को अटकाये ॥
जबराजा हिय शोक जनाये । सभामध्य अभिमनु तब आये ॥
दोउ कर जोरि कहा तब राजहि । आपुशोचकीजै केहिकाजहिं ॥

चक्रव्यूह रचि द्रोणगुरु, कियो चहत संग्राम ।
आजु दिवस पारथ नहीं, भयो विधाता वाम ॥

अभिमनु कही सुनो तुमराजा । अब विलम्ब कीज केहिकाजा ॥
व्यूह भेद मै जानत अहऊं । सो वृत्तान्त आपुते कहऊं ॥
छहौं द्वार भेदन कर ज्ञाना । सतवां द्वार भेद नहिं जाना ॥
यम अरु इन्द्र वरुण जो रचक । छहौं द्वार तोरौं परतच्चक ॥
सतवां द्वार भेद नहिं जाना । सुनि राजा यहि भांति बखाना ॥
भीमादिक कोउ भेद न पाये । व्यूह युद्ध केहि तुमहिंसिखाये ॥
अभिमनु कही भूप के पासा । कीन्हे जबहि गर्भ हम वासा ॥
प्रसव काल माता दुख पाई । तबहि पिता यह व्यूह सुनाई ॥
पारथ कही सुभद्रा आगे । गर्भ मांझ सुनिबे हम लागे ॥
छठों द्वारको भेद बखाना । सो हम सब अपने जिय जाना ॥

सप्त द्वारके कहत हो, हम लीन्हें अवतार ।
गीत नाद आनन्दते, मग्न भये परिवार ॥

तातें अपर भेद नहिं पाये । सत्यवचन नृप तुम्हैं सुनाये ॥
सुनत युधिष्ठिर विस्मय भयो । पीठि ठोंक अभिमनुसों कह्यो
तुम्हैं कवन विधि आज्ञा दीजे । व्यूह युद्ध वीरन ते कीजे ॥
पन्द्रह वर्ष वीर सुकुमारा । तुम हम सबके प्राण अधारा ॥
सुनिअभिमनुयहिभांतिबखाना । नृपहमकहँ बालककरिजाना
अर्ज्जुन पुत्र सुभद्रानन्दन । आजु करौं रिपुसैन निकन्दन ॥
द्रोण कर्ण सब वीर घनेरे । आजु देखिहहु भुजबल मेरे ॥
मारि सबै सरदार गिरावों । तौ अर्ज्जुनको पुत्र कहावों ॥
बांधौं भुजबल बली पुरन्दर । सेना उदधि होइ किमि मन्दर
यहिविधि बाण बुन्द झरि लैहौं । शोणित नदी अथाह बहैहौ
शोच करत नृप आपु अकारथ । अब देखौ मेरो पुरुषारथ ॥
भीमसेन ऐसो कहो, राजा सुनहु विचार ।
छहौं द्वार भेदन कहेउ, सतवां मो शिरभार ॥
चलौ सबहि अस्त्र गहि हाथा । पेलि जाहिं अभिमनुके साथा ।
सतवां द्वार पलक महँ तोरौं । गदा घावसों पर्वत फोरौं ॥
भीमसेन यहि भांति बखाने । सो सुनि धर्म्मराय मनमाने ॥
साजेउ सेन दमामा बाजे । बांधे अस्त्र वीरगण गाजे ॥
भांति भांति बैरख फहराने । सूर विमानन ध्वजा उड़ाने ॥
आगे कुंजर शोभा पाये । सावन मेघ उनै जनु आये ॥
.रौं पाद बहत मदधारा । जिमि झरना जल बहै अपारा ॥
..न दशन कवि किये विचारा । कज्जलगिरिजनुगङ्गकिधारा

ऋश लगे चलत गज ठनकत । ठोकर पांव लगत हयहनकत॥
ानन मों दीन्हौं अंधियारी । देखत रूप शत्रु भयकारी ॥

तुङ्गस्थल अतिक्रोधमें, राजन ऊर्ध्व भुशुण्ड ।
भूमि भ्रमै पर्वत मनहु, भये भुण्डके भुण्ड ॥

हि पीछे पैदल दल राजै । विविध अस्त्र करमाहँ विराजै ॥
ले अश्व असवार फँदावत । नृत्य करत मानहुं नट आवत ॥
ले सारथी सब रथ हांकत । युद्ध हेत चली रण डांकत ॥
न सहित योजित रथ आये । चक्रव्यूह जहँ द्रोण बनाये ॥
खत सबहि अचम्भो मानो । कहां द्वार कछु जात न जानो ॥
ूह अन्त कछु जानि न पैये । कैसे कै रणमों मन लैये ॥
टकी अनी देखि जब जाने । तब अभिमनुयहिभांति बखाने ॥
म ह्वै बे सबही के आगे । तुम सब आवहु पाछे लागे ॥
ह कहिकै हांकन रथ रथ्यो । तब कर जोरि सारथी कह्यो ॥
म बालक कैसे रण करिहौ । द्रोणौ द्रोण कर्णसों लरिहौ ॥

सुनत वचन अभिमनु कह्यो, सुनु सारथि मतिहीन ।
कपिगणसँग रघुनाथके, कुश एकै वश कीन ॥

ालक करि मोकहँ मति जानहु । हांकहु रथहिकहामममानहु ॥
ह सुनिकै सारथि रथ हांक्यो । डोलीधरणि शेषफणिर कांप्यो ॥
ीमादिक रणभूमिहि आयो । सिन्धुराज बहु वाण चलायो ॥
तते सब लतिन शर मारे । जय के हेतु वीर संहारे ॥
ल्मिसन कोपि लगे शर मारन । शतते सहस सहस्र हजारन ॥

तब जयदर्थ कीन्हि प्रभुताई। जल थल सबहिं रहे शर छाई। यह
अभिमनु महामारु जब जाने। तीक्षण बाण कोपि सन्धाने॥ श
विद्युत्सम शशिगण परकाशे। चमकत दृष्टि नयनको नाशे॥

पलक परत सब वीरको, रथ हांको रथवान।
सबलसिंह चौहान कह, चक्रव्यूह मैदान॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

अभिमनु व्यूह मध्य जब आये। तब जयदर्थ सबहिं अटकाये
रथते उतरि भीम तब धाये। पै जयदर्थ मारि बिचलाये॥
द्रुपद विराट क्रोध कै धाये। धर्म्म पुत्त सात्यकि सब आये॥
नकुल वीर सहदेव रिसाने। धृष्टद्युम्न रणको अरुभाने॥
इत सब वीर क्रोध रणमंड्यो। सिन्धुराज शर सबहिंविहंड
गदा हाथ गहि भीम भयङ्कर। प्रलयकाल महँ मानहुँ शङ्क
दैकरि हांक क्रोध करि धाये। मनहुँ घटा घनमहँ घहरा
तब जयदर्थ कीन्ह सन्धाना। भीम अङ्ग मारे शत बाना
बाण लग्यो तब मोह जनायो। तब सारथि रथ फेरि च
दशशर धर्म्मराज उर मारयो। नकुलहृदय बहुबाण प्रहार

नृपति जयद्रथ क्रोध करि, मारे तीक्षण बान।
सबै वीर मोहित भये, भारतके मैदान॥

धर्म्मराज मूर्च्छा तजि जागे। तब सहदेवहि बूझन लागे

कछु भेद जानि नहिं पाये । नृप जयद्रथ सबहि अटकाये ॥
दि कथा सहदेव सुनाये । जेहि विधि शङ्करसो वरपाये ॥
दुर्योधन ताहि पठाये । जब हम सब वनवास सिधाये ॥
द्रौपदिहि तबहि हांको रथ । विधिवश मिलो पन्थमहँपारथ ।
धवन्त पारथ शर सांध्यो । नागपाश जयद्रथहि बांध्यो ॥
श सुणिड अपमानहिं कीन्हों । भारत जीवदान तब दीन्हों ॥
जा पाइ भवन नहि गयऊ । शङ्करकी पूजा मन लयऊ ॥
प्रसन्न यह कह गङ्गाधर । जो इच्छा मनमहँ मांगहु वर ॥
च पांडवन जीतें रनमें । यह इच्छा है मोरे मनमें ॥

यह सुनिकै शङ्कर कहेउ, दीन्हेउ वर जयदर्थ ।
चारिबन्धु तुम जीतिहौ, पारथ अजय समर्थ ॥

हि विधि शङ्कर ते वर पायो । ताकारण सबको विचलायो ॥
जे द्वार अभिमनु जब गयऊ । तहां द्रोणको दर्शन भयऊ ॥
व क्षत्रिनसों द्रोण सुनायो । अभिमनु व्यूह भेदिकै आयो ॥
वौ सबहि लगे शर मारन । यह अकेल उत वीर हजारन ॥
भिमनु ऐसो बाण चलायो । शरते भरद्वाज सुत छायो ॥
ार साठि शर छांडे पायल । ताते भये विप्र रण घायल ॥
ापि द्रोण योतिक शर जोरे । अर्जुनसुत बीचहि धरि तोरे ॥
ह गुरुद्रोण क्रोध मन भयो । तीक्षण बान चलावन लयो ॥

दहु पुरुषारथ गुरु कियो, रोकि रह्यो रणरथ्य ।
सबहि पेलि भीतर गयो, अभिमनु बड़ो समथ्य ॥

तीजो द्वार कर्ण है रक्षक । अभिमनु आइ जुरे परतक्ष ॥
सुन अभिमनु पारथनहि आयो । व्यूहभेदकहँ तुमहिं पठा
अभिमनुसुनिप्रति उत्तरदीन्ह्यो । बालककरितुमहमकहँचीन्ह
दृढ़कै गहहु व्यूह द्वारो थल । बूझि देखिहौ बालकको बल ॥
व्यूह द्वार जब रथ पहुँचायो । कोपि कर्ण तब बाण चलाये
सहस बाण अर्ज्जुनसुत छांट्यो । सब शर अन्तरिक्षमहँ काट
ताते कीन्हो सैन निकन्दन । क्रोधित भये कर्ण रविनन्दन
तीक्षण बाण कर्ण गुण जोरे । सो अभिमनु सबबीचहि तो
दिव्यबाण अभिमन्यु चलायो । भूमअकाशदशहुँदिशिछा
देखिअनीक सबहिं भ्रम भयउ । तौ लगि व्यूह भेदिकै गय

पेलि द्वार भीतर गयो, जात न लागो बार ।
पहुँचे चौथे द्वार जहँ, कृपाचार्य्य सरदार ॥

आये अभिमनु सबहि पुकारे । कृपाचार्य्य तब धनुष सभारे
महायुद्ध कीन्ह्यो पुरुषारथ । तेहिक्षण भयो भयानक भारथ
पुनि अनेक सैनावध कीन्ह्यो । रुण्डमुण्डककुजातनचीन्ह्यो
कृपाचार्य्य क्रोधित शर जोरे । ते अभिमनु बीचहि सब तोरे
अपर पांच शर मार्‌यो लै जब । चेत न रह्यो भयो घायल त
पेलि द्वार अभिमनु जब आयो । द्रोण पुत्र तब देखन पायो
कर धनुशर गहिकै कत आवत । मारुमारु कहि हांक सुनाव
..श्वत्थामा लीन्हेउ शरकर । जलधरसम लागेउ वर्षनशर ॥
..धित होइ सुभद्रानन्दन । क्षणमहँकीन्हो सैननिकन्दन ॥

अर्ज्जुन सुत अरु द्रोण सुत, परो आनि जब जोर।
रणकरकस दोऊ सरस, भयो युद्ध अतिघोर॥

अभिमन्यु कीन्ह सन्धाना। हृदय ताकि मारयो दशबाना॥
बाण या विधि ते छूटयो। काटो धनुष सहितगुणटूटयो॥
रो साठि सहस शर मारे। तिन बाणन सबसेन सँहारे॥
लगि द्रोणी धनुष चढाये। पेलि द्वार अभिमनु तब आये॥
यवां द्वार पेलि जब गयऊ। छठयें द्वार उपस्थित भयऊ॥
भिमनु जब आगे हांको रथ। भूरिश्रवा आइ रोकेउ पथ॥
विधि बाण बुन्द झरिलायो। रथसमेत अभिमन्यु छिपायो॥
द्रअस्त्रअभिमनु तब छांटयो। सबशरनिमिषएकमहँकाटयो॥
ण काटि शर किये प्रकाशा। जिमिप्रचण्डरविउवो अकाशा॥

सहसबाणयहिविधि हनो, रह्यो न तनुमें चेत।
पेलि द्वार भीतर गयो, जीति नरेशन खेत॥

नयें द्वार आइ अरुझान्यो। जासु प्रवेश भेद नहिं जान्यो॥
ोधन सेना सँग भारी। तीस सहस नृप छत्रके धारी॥
तब वीर आनिकै घेरे। मारु मारु दुर्योधन टेरे॥
पर शर वर्षत हैं कैसे। मन्दर शीश वृष्टिजल जैसे॥
रथी सब मेघसमाना। वर्षत बाण बुन्द अनुमाना॥
टंकार मेघ की गर्जनि। खड्ग छटा दामिनिकी नर्जनि।
न. शर वीरन कर छूटन। मानहुं वज्र गगनतें टूटन।

महामारु च्चत्रिन जब कियऊ। तब अभिमन्यु क्रोधतनु भयऊ।
जो शर अर्ज्जुन आपु सिखाये। तीनिबाण सोइ कुँवर चलाये॥

सब शर काटे निमिषमहँ, सेन बधेउ रिसहेत।
जिमि दाहो पावक सघन, कानन सखा समेत॥

सन्मख सेन दृष्टि जो आई। च्चणमहँ अभिमनु मारिगिराई॥
फौज मध्य अभिमनु है कैसे। मृगदल मांह केशरी जैसे॥
हय गज रथ पैदर संहारे। भूप अनेक खेत महँ मारे॥
सुनिकै शोर द्रोण कृप धाये। कर्ण समेत वीर सब आये॥
सबमिलि घेरि लगे शरमारन। एक वीर इत उतै हजारन॥
सारथि कही कुंवरसों वचना। युद्ध अधर्म द्रोणको रचना॥
एक एक ते उचित लड़ाई। यह अनीति हम देखी भाई॥
इत अभिमनु है एक जुझारा। उत आये लाखन सरदारा॥
चहुँदिशिबाणबुन्दझारिलावहि। कहोकवनिदिशिरथहिचलावहि
सुनिअभिमनुभाष्योयहबानी। सारथि तुम यह बात न जानी॥

चक्रव्यूह भीतर परे, शत्रुहि कीजै नाश।
आनि परी शिर आपने, छांड़ बिरानी आश॥

सुनु सारथि अबशोच न करिये। सन्मुख सब योधनसों लरिये॥
चाक कृत्य तुम रथहि घुमैये। चहुँ ओर हम बाण चलैये॥
सारथि रथ हांको तब बांको। जैसे चलत कुम्हारको चाको॥
द्रोण कर्ण जेतक हैं आगे। शतशत बाण सबनके लागे॥
सारथि तनु दश दश शरमारे। द्वै द्वै शर आसन परिहारे॥

पांच पांच शर हस्ति बिदारे । एक एक शर पैदल मारे ॥
अर्ज्जुन सुत याविधि शर खाचो । घायलसबहि एकनहिं बाचो॥
क्रोधवन्त ह्वै कुरुपति धाये । सब वीरन सों वचन सुनाये ॥
बालक एक करत संग्रामा । तुम सबको पाल्यौं केहि कामा ॥

सब मिलि मारौ घेरि रथ, गहरु करहु केहिकाज ।
शिशु होइ सेनाबधतु है, आवत तुम्है न लाज ॥

सुनि कै द्रोण कहन असलागे । दुर्योधन भूपति के आगे ॥
यह अर्ज्जुनसुत बड़ो धनुर्द्धर । जब लगि धनुष रहै याके कर ॥
महारथी जो कोटिन आवैं । यहिते जयतिपत्र नहिं पावैं ॥
अर्ज्जुन सम अभिमनु धनुधारी । प्रलय समय जैसे त्रिपुरारी ॥
कहो द्रोण दुर्योधन राजहि । पच्छो युद्ध जीति किमि बाजहि ॥
गज अनेक जो मारन आवैं । एक सिंह की सरि नहीं पावैं ॥
जो याको धनु काटत कोई । तौ रणमें अभिमनु वध होई ॥
यह सुनिकै चलो सब धाये । करणादिक आगे चलि आये ॥
सेन मध्य अभिमनु है कैसे । क्षीर सिन्धु महँ मन्दर जैसे ॥

अर्ज्जुन सुत अति क्रोधकै, छांड़े तीक्षण बान ।
या विधि सेनावध किये, जिमि लङ्का हनुमान ॥

सब मिलि एक मतौ ह्वै धाये । रथहि घेरि चहुँदिशि ते आये ॥
बहुतक कोपि बाण सों मारे । शेल शूल मुद्गर परिहारे ॥
जो शर कृपाराय सों पाये । तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये ॥
ताते अस्त्र भये क्षय कैसे । तिमिर जाइ देखत रवि जैसे ॥

जूझि गिरे कुञ्जर मतवारे । रथ सारथि अगनन संहारे ॥
अभिमनु कीन्हो है यह करणी । रुण्डमुण्ड तोपो सब धरणी
देखत कर्ण क्रोध जियकीन्हे । दैकर हांक धनुष कर लीन्हे ॥
अग्नि बाण कीन्हे परिहारा । अभिमनुजारिकरेउधरिछारा ॥
वरत अग्नि चलि भा तब जारन । प्रकटीशिखा हजार हजारन
तब अभिमनु जलबाण चलाये । चणभीतर सब अग्नि बुझाये

अग्नि बुताया नीरसों, बाढ़ी जलकी धार ॥
कौरवदल बूड़न लगे, चहुँदिशि परी पुकार ॥

रविसुत मारुत बाण चलायो । पवन तेज सब नीर सुखायो
अभिमन् तज्यो सर्पकर बाना । नागन कियो पवन सब पाना
डसि धाये तब विषधर कारे । या विधि बहुत सेन संहारे ॥
वरहि बाण तब कर्ण चलाये । मोरन पकरि सर्प सब खाये ।
अभिमन् क्रोधवन्त ह्वै रनमें । मारे बाण कर्ण के तनमें ॥
अपर साठिशर छांड़े पायल । ताते भये द्रोण गुरु घायल ॥
कृपके हृदय बाण दश मारे । असी बाण द्रोणहि परिहारे ॥
अपर पांच शर भालुक छूटे । भूरिश्रवा हृदयमहँ टूटे ॥
ताने धनुष पार्थसुत अच्चो । मोहित भे दुःशासन चलो ॥
मारे बाण काल के आंके । काटे रथ के ध्वजा पताके ॥
सात लच चतुरङ्गदल, जूझि गिरे मैदान ॥
जिमि वर्षत जलधर जलहि, इमि वर्षत ते बान ॥

अभिमनु कीन्हों सैन निकन्दन । क्रोधित भये आपु रविनन्दन ॥
पांच बाण तीक्षण कर लीन्हे । ते शर चोट शीशपर दीन्हे ॥
घाव लाग अभिमनु रिस बाढ़े । तीक्षण शर निषङ्गते काढ़े ॥
दैगुण फोंक बाण परिहारे । चारिउ तुरग सारथी मारे ॥
विरथ भये कर्णहि जब जाने । तब गुरु द्रोण शराशन ताने ॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धाये । अश्वत्थामा कृप सब आये ॥
दुःशासन सब बन्धुन लीन्हे । महामारु अभिमनसों कीन्हे ॥
रथी महारथि पैदल हाथी । अभिमन एक न दूजो साथी ॥
कर्ण वीर रथ पर चढ़ि आये । सबमिलिबाणवृष्टि झरिलाये ॥

उतसेना सरदार सब, इत अर्ज्जुनसुत एक ।
सबै वीर घायल किये, अभिमनु राखो टेक ॥

कुरुपति तबहिंक्रोधअतिकीन्हे । मारु मारु कै आज्ञा दीन्हे ॥
सुनिकै कर्ण बाण करलीन्हे । पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे ॥
जो शर परशुराम ते पाये । क्रोधित ह्वै सो बाण चलाये ॥
देकै हांक बाण तब छांटे । करते धनुष कुंवर को काटे ॥
टूटो धनुष कुंवर तब डारे । करगहिशक्ति तबहिं परिहारे ॥
तब अभिमन् अस कहा बुझाई । देखि तुम्हारि अधर्म्म लराई ॥
तुम हम ऊपर बाणहि छांटे । बीचहि कर्ण धनुष मम काटे ॥
यह कहि कुंवर शक्ति परिहारे । कर्णहि हृदय ताकिकै मारे ॥
मूर्च्छित किये कर्ण ते चली । अर्ज्जुन पुत्र महाबल अली ॥
बिनु धनपाणि कुंवरको पाये । घेरि वीर सब निकटहि आये ॥

अभिमनु घेरे आय सब, मारत अस्त्र अनेक।
जिमि मृगगणके यूथमहँ, डरत न केहरि एक॥
लैकै शूल कियो परिहारा। वीर अनेक खेत महँ मारा॥
जूझो अनी भभरिके भागे। हँसिकै द्रोण कहन अस लागे॥
धन्य धन्य अभिमनु गुणसागर। सब चत्रिन महँ बड़ो उजागर॥
धन्य सुभद्रा जगमें जाई। ऐसे वीर जठर जनमाई॥
धन्य धन्य जगमें पितुपारथ। अभिमनु धन्य धन्य पुरुषारथ॥
एक वीर लाखन दल मारे। अरु अनेक राजा संहारे॥
धनु काटे शङ्का नहिं मनमों। रुधिरप्रवाह चलत सब तनमों॥
यहि अन्तर बोले कुरुराजा। धनुष नाहिं भाजत केहिकाजा॥
एक वीर को सबै डरत हैं। घेरि क्यों न रथ धाइ धरत हैं॥
बालक देखु करी यह करणी। सेना जूझि परी सब धरणी॥
दुर्योधन या विधि कह्यो, कर्ण द्रोणसों बैन।
बालक सब सेना वधी, तुम सब देखत नैन॥
यह कहिके दुर्योधन आये। सबै वीर आगे ह्वै धाये॥
चत्री घेरो अभिमनु रनमों। मानहु रवि आच्छादित घनमों॥
लैके खड़ग फरी गहि हाथा। काटो बहु चत्रिनको माथा॥
अभिमनु धाइ खड़ग परिहारा। सम्मुख जेहि पावै तेहिमारा॥
भूरिश्रवा वाण दश छांटे। कुंवर हाथ-को खड़गहि काटे॥
तीनि वाण मारथि उर मारे। आठ वाण ते अश्व सँहारे॥
... थि जूझि गिरे मैदाना। अभिमनु वीर चित्तअनुमाना॥

यहि अन्तर सेना सब धाये। मारु मारुके मारन आये॥
रथको खैंचि कुंवर कर लीन्हे। ताते मारु भयानक कीन्हे॥
अभिमनु कोपि खड्गपरिहारे। यक यक घाव वीर सब मारे॥
अर्ज्जुनसुत इमि मारु किय, महावीर परचण्ड।
रूपभयानक देखियतु, जिमि लीन्हे यमदण्ड॥
क्रोधित होइ चहूं दिशि धाये। मारि सबै सेना बिचलाये॥
यहिविधि किये भयानक भारथ। साहस धन्य धन्य पुरुषारथ॥
ऐसी मारु खड्ग सों कीन्हे। दशसहस्र राजा वधिलीन्हे॥
मारि सबै राजा बिचलाये। अरु अनेक राजा मिल धाये॥
चहुँदिशि महारथी सब घेरे। क्षत्री सबै वीर बहुतेरे॥
नाना अस्त्र सबहि परिहारे। निकट न जाहि दूरिते मारे॥
दुर्योधन कहँ देखन पाये। गहेखड्ग अभिमनु तब धाये॥
जुरे वीर क्षत्री बहुतेरे। खड्गघाव ते बधेउ घनेरे॥
जब नरेशके निकटहि आये। द्रोण गुरू दशबाण चलाये॥
गुरुद्रोण अति क्रोधके, मारे बाण अचूक।
कुंवर हाथको खड्ग तब, काटि किये दुइ टूक॥
खड्ग कटे अभिमनु भे कैसे। मणिबिनुफणिकबिकलहै जैसे॥
क्रोधित भये सुभद्रानन्दनु। चरणघात कै तोरेउ सो धनु॥
रथते कूदि कुंवर कर लीन्हे। चकाउठाय रणहि शुभकीन्हे॥
चका कुँवर कर शोभित कैसे। हरिकर चक्र सुदर्शन जैसे॥
रुधिर प्रवाह चलत सब अङ्गा। महाशूर मन नेकु न भङ्गा॥

हिके चक्र चहूं दिशि धावै। जेहि पावै तेहि मारिगिरावै॥
ोधन पर चक्र चलाये। गदा रोपि कुरुनाथ बचाये॥
ौ घेरि लगे शर मारन। छुटे आदू छोता हथियारन॥
ासन सुत गदा प्रहारे। अभिमनुके शिर ऊपर मारे॥
ो कुँवर परे तब धरणी। जगमहँ रही सदा यह करणी॥

धन्य धन्य सब कोउ कहै, कुँवर रहौ मैदान।
पै गुरु द्रोण मलीनमुख, कहे वचन परमान॥

द्रोण यहि भांति बखाने। हर्षि नरेश सबै सुख माने॥
भिमनु मरण सुनैगो पारथ। करिहै महा भयानक भारथ॥
वरुण यम होइँ सहायक। कोइनहिंअर्ज्जुनजीतव लायक
मादिक यह युद्ध विचारे। पै जयद्रथ सबहिं शर मारे॥
धित भये पाण्डुके नन्दन। फेंको सिन्धुराजको स्यन्दन॥
दूरि उठि निकटहि आये। भीम उपर शतबाण चलाये॥
राज तब कीन्ह दरेरो। पै जयदर्थ मारि मुख फेरो॥
अनीक सब कुरुपति धाये। जहँ जयदर्थ लरत तहँ आये॥
व दल जय शङ्ख बजाये। अभिमनु गिरे भूप सुनि पाये॥
राइ सुनि मौनहि गहेऊ। संध्या भयो युद्ध तब रहेऊ॥

कुरुपांडव फिरिकै चल्यो, भयो युद्धको शेष।
भीमादिक क्षत्रिय सबै, रोवत धर्म्म नरेश॥

। ! अभिमनुअभिमनुभाखेउ। इखेबिना प्राणकिम राखेउ॥
सपन नागों नहिं पावों। अर्ज्जुनको किमि वदन दिखावों॥

रोवत भीम नकुल अरु मन्त्री। सेनी सबै महाबल चत्री॥
रोवत सबै भवनकहँ आये। ऊर्ध्व बाहु केशहि छिटकाये॥
अभिमनु कहिके सबै पुकारत। दोऊ हाथ शीशपैं मारत॥
अन्तःपुर पहुँचौ यह बानी। श्रवणन सुना सुभद्रा रानी॥
कुन्ती सुनत महा दुख पाई। रोदन करत शूल उर छाई॥
सुनत सुभद्रा जननी कैसे। बिना जीव कठपुतरी जैसे॥
बहत प्रवाह नयनको पानी। हिमऋतु मनो कमलकुँभिलानी॥
हाहा! पुत्र परम सुखकारी। सुन्दर मुखपै मैं बलिहारी॥

पुत्रशोच श्रवणन सुनत, धरणी परी अचेत।
नयन नीर कज्जलसहित, मनो तिलांजलि देत॥

जो तुम्हरे पितु होते सङ्गा। तुमसों को जीतत रण रङ्गा॥
कुन्ती सहित द्रौपदी रानी। बहत प्रवाह नयनभरि पानी॥
करुणा करहिं ठोंकिके माथा। रत्न गये पैये नहिं हाथा॥
यह सुधि सुनि वैराट कुमारी। बारह वर्ष वयस सुकुमारी॥
पति जूझे रण सुनिके मरत्रो। मानहुँ शोकससुद्रहि परत्रो॥
कहां गयो प्रीतम सुखदायक। चक्रव्यूहके भेदन लायक॥
जूझे खेत जगत यश लीन्हे। जयमाला सुरकन्यन दीन्हे॥
तुम सुरपुर विलसहु सुकुमारा। मोहि अनाथको नाथबिसारा॥
हे स्वामी मोहिं दरशन दीजे। नातरु सङ्ग आपने लीजे॥
पांच मास मम भये बियाही। विधियहसमय बिछोहा नाही॥

तब व्यास मुनि थापेऊ, दाता नृप वैराट ।
अर्जुन सुतवर कृष्णहित, विधि दुख लिखा ललाट ॥
यह सुनि रोइ उठीं दुखवानी । कुन्ती सहित द्रौपदी रानी ॥
ठोंकि ललाट कर्म्म विधि सोये । सुनिदुख पशु पच्छी सबरोये ॥
करुणा करि सब रानिन जाई । उत अर्जुनने रची लड़ाई ॥
पारथ ब्रह्मअस्त्र परिहारे । रणमां शिशुपकागण मारे ॥
जय करि कहि कीजे हरि गवना । हांको रथ जैये निजभवना ॥
आजु चित्त कछु चञ्चल मेरे । ताते उपजत शोच घनेरे ॥
ते सब शर गुरु बीचहि काटे । पांचवाण तिन फिरिकै छांटे ॥
द्रोण सात्यकी भा रण रङ्गा । दुनों वीर महाबल अङ्गा ॥
दोऊ सरस रचेउ पुरुषारथ । कीन्हेउ महाभयानक भारथ ॥
द्रोणगुरु या विधि शर जोरे । व्यूह द्वार ठहरात न वोरे ॥
हँसि भाषेउ गुरु द्रोण तब, सुनु सात्यकि अज्ञान ।
वाहर होइ अर्जुन गयो, तुम चाहत इत जान ॥
यम अरु इन्द्र वरुण जो आवें । व्यूह द्वार होइ जान न पावें ॥
सुनि सात्यकी किये पद वन्दन । बेखटके हांकेउ तब स्यन्दन ॥
जौन पन्थ पारथ शुभ कीन्हेउ । चक्रलोकमारगधरि लीन्हेउ ॥
जाइ व्यूह कीन्हा परवेशा । रण महँ जीते बहुत नरेशा ॥
चहुं ओर त्रतिग शर मारत । नाना अस्त्र शस्त्र परिहारत ॥
जेहि पथ अर्जुन कीन्ह पयाना । चले सात्यकी मारत बाना ॥
त सात्यकी आयउ तहँवां । भूरिश्रवा भूप है जहँवां ॥

दोऊ वीर भिरे मदाना। क्रोधित लगे चलावन बाना॥
आयो रथ अति निकटहि जाने। भूरिश्रवा आनि लपटाने॥
रथते उतरि परेउ दोउ धरणी। मल्लयुद्ध कीन्हेउ बहुकरणी॥

भूरिश्रवा महाबल, वर दीन्हो तेहि ईश।
गहे केश तेहि खड्ग लै, काटन चाहत शीश॥

कोपि नरेश खड्ग कर लीन्हे। शीशचलाय घातनहि कीन्हे॥
ताते घात नहीं बनि आई। इहां कृष्ण अर्ज्जुनहि चेताई॥
भूरिश्रवा खड्ग गहि हाथा। काटत आहि सात्यकी माथा॥
मन व्यापक शर अर्ज्जुन छांटे। खड्गसमेत बाहु तेहि काटे॥
उठि युयुधान खड्ग तव लीन्हे। भूरिश्रवा शिर छेदन कीन्हे॥
वधि नरेश अपने रथ आवा। हांकि तुरङ्ग अग्रको धावा॥
विक्रम युद्ध करत एकुपारथ। पहुँच्यो जाइ लरत जहँ पारथ॥
श्रीहरि निरखि बहुत सुखपाये। भले भये सात्यकितुम आये॥
अर्ज्जुन युद्ध करत परतच्छक। नन्दिघोष पाछे तुम रच्छक॥
अस कहि रथ हांकेउ वनवारी। दल मारत अर्ज्जुन धनुधारी॥

एकै शर अर्ज्जुन हने, गुण जोरत दश बाण।
छुटतही शत होत हैं, वधत सहस परिमाण॥

यहि विधिते सेना संहारें। सन्मुख वीर जुरे ते मारे॥
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर। सो हैं जुरे गहे शारँग शर॥
रहु रहु कहि कीन्हो सन्धाना। अर्ज्जुन उर मारे दश बाना॥
कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे। बीस बाण हनुमानहिं मारे

सोमदत्त कीन्हों पुरुषारथ। क्रोधित ह्वै जोरे शर पारथ॥
पढ़ि रविमन्त्र बाण सब छांटे। सोमदत्तको शीशहि काटे॥
मुकुट समेत परो शिर धरणी। अर्ज्जुनरण कीन्हो यह करणी॥
बाहुलीक गन्धार महारथ। सेन समेत करत पुरुषारथ॥
नृप कौमोद धनुष कर लीन्हे। महामारु पारथ पर कीन्हे॥
चहुँदिशि ते लागे शर मारन। बहुतक जुरे कुन्त हथियारन॥

शर वर्षत हैं वीर सब, शक्ति खड़गकी धार।
शूल गदा मुद्गर घने, चहूँ ओरकी मार॥

सेना सबै जानि रथ घेरे। मारु मारु कहि चहुँदिशिटेरे॥
पै पारथ मन नेकु न भङ्गा। शर सन्धान करत रण रङ्गा॥
अर्ज्जुन वधत सेन यहि रूपहि। प्रलय होत जैसे जल भूपहि॥
लाखन दल कीन्हे शर खण्डित। रुण्डमुण्ड धरणीसब मण्डित॥
जुरे आइ सब वीर महाबल। पलभरिपारथनहिपावतकल॥
यहिविधि करत घोर संग्रामा। जूझिगिरे कुरुपनिके कामा॥
पारथ अरीन करत निकन्दन। नन्दिघोष हांकत जगवन्दन॥
जो दल अर्ज्जुन मारि गिराये। लोथिनपरहरि रथहि चलाये॥
याविधि सघनफौजअतिभारी। प्रभु सारथि पारथ धनुधारी॥
महारथी सब बाण चलावहिं। नन्दिघोष रथ छांह छिपावहिं॥

कठिन अस्त्र आवत जबहि, जाहि न रिपु बच जाइ।
ऊपर श्रीहरि लेत शर, अर्ज्जुन अङ्ग बचाइ॥

नृप काम्बोज कठिन शर मारे। कृष्ण अङ्ग शत बाण प्रहारे॥

श्याम शरीर रुधिर छविपाये । पीतवसन तनु अरुण सुहाये ॥
क्रोधवन्त अर्ज्जुन शर छांटे । नृपकाम्बोजके शीशहि काटे ॥
हांकत अश्व जगत के तारन । हर्षि वीर लागे शर मारन ॥
बहुतक जानि रथहि लपटाने । महाशूर सब बांधे बाने ॥
नन्दिघोष रथ राजन घेरे । सावधान अर्ज्जुन हरि टेरे ॥
बाहु विशाल कृष्ण परिहारत । अभिरत ता जनतासों मारत ॥
पुनिअनेक शर अर्ज्जुन छांटत । रुण्ड मुण्ड वसुधा सब पाटत ॥
याविधि होत युद्धकी करणी । महामारु कछु जाइ न वरणी ॥
रथ पाछे सात्यकि है रक्षक । वीर अनेक वधे परतक्षक ॥

या विधि अर्ज्जुन रण करत, होत घोर संग्राम ।
हांकदेत हय हांकहीं, सारथि श्रीघनश्याम ॥

याविधि अर्ज्जुनकरत मशाना । भारत अवनि करत मैदाना ॥
जाती गयो पतितके पावन । थके तुरङ्ग सकैं नहि धावन ॥
अश्व कियो चाहत जलपाना । पारथसों हरि आपु बखाना ॥
दोइ प्रहर दुइ ऊर्ध्व हि भयऊ । तृषित तुरङ्ग तेज घटिगयऊ ॥
अर्ज्जुन कहा न करो अँदेशो । जल उपाय करिहैं हमकेशो ॥
असकहि पारथ करि सन्धाना । भूमि निरखिकै मारयोबाना ॥
भेदि पताल गयउ शर तहँवा । भोगावति गङ्गा हैं जहँवा ॥
या विधिते शायक परिहारा । निकरी फूटि गङ्गकै धारा ॥
ताते भयो सरोवर ऐसो । निर्म्मल नीर सुधा को जैसो ॥
पारथ कह्यो कृष्ण सुनि लीजै । रथते तुरँग खोलि जल दीजै

अस्त्रघाव क्षत्रिय करत, अभिरत वीर अनन्त।
केहि विधिते जल दीजिये, भाषै श्रीभगवन्त॥
अर्ज्जुन कोपि किये सन्धाना। मारयो सेन कियो मैदाना॥
तब पारथ शर पञ्जर छाये। अर्द्ध नीर शर ओट छिपाये॥
ताते वीर निकट नहिं आयो। नन्दिघोष नहिं देखन पायो॥
तब अर्ज्जुन भाषेउ भगवानहिं। खोलहु अश्वकरहिजलपानहि॥
श्री हरि सुनिकै जोती छोरे। किये पानजल चारिउ घोरे॥
स्वकर नाथ अश्वनको धोये। फरकन लगे सबै श्रम खोये॥
फेंट खोलि तब चूरण लीन्हे। मिश्रितकरिमिश्रिततेहिदीन्हे॥
अर्ज्जुन गये कृष्णके पासा। कहीकहत सुनि वचनउदासा॥
शशिको पुत्र कहै बुध नामा। काको सुत आयो केहि कामा॥
सुत नातो छांड़ो केहि कारण। मोते भाषौ त्रासनिवारण॥
आदि कथा हरि भाषन लागे। सुनिये पारथ परम सभागे॥
जब हम जठर देवकी जाये। देव दैत्य सब जगमहँ आये॥
क्षत्री होइ जगमें सबै, मम लीलाके काज।
कुरुपति कलिको अंग ह, धर्म्म युधिष्ठिरराज॥
सुरगण सब पांडव हितकारी। कुरुपति असुरनकोअधिकारी॥
ब्रह्मा कही चन्द्र सुनि लीजै। बुधसुत देहु जन्म जगकीजै॥
विधिसों विनय सुधाकर कह्यो। द्वहई पुत्र मोर घर रह्यो॥
जौंलगिसुतहिजन्मजगकरिहौ। काहिदेखि धीरज मन धरिहौ॥
विधिकहीनिशापति आगे। पन्द्रह वर्ष देहु मोहि मांगे॥

जन्म सुभद्रा जन्महि लैहै । भारत मों बहुत यश पैहै ॥
पन्द्रह वर्ष लागि हम मांगे । एको दिन नहिं रहिहै आगे ॥
जो यहि बीच आवनहि पैहै । दोउ दल मारि तोर सुत ऐहै ॥
तुमते कहो सुनो हो पारथ । शोच न कीजै आपु अकारथ ॥

अर्ज्जुनको परबोधकै, लै आये प्रभु ऐन ।
शोकमिटा तनुक्रोध भा, कह्यो कृष्णासों बैन ॥

कालहि युद्ध जयदर्थहि मारौं । नातरु देह अग्निमों जारौं ॥
यह प्रण मैं कीन्हों अपने मन । वधौं शत्रुकी देहुँ अपन तन ॥
प्रण सुनि श्रीहरि कहिवे लीन्हे । जयद्रथ कहँ शङ्कर वरदीन्हे ॥
ताते अजय भयो है पारथ । केहिविधितुमकरिहौपुरुषारथ ॥
हमतुम मिलि कीजै अब गवना । चलु जाई शङ्करके भवना ॥
नर नारायण सङ्ग सिधाये । क्षणमहँ गिरि कैलासहि आये ॥
चहुँदिशि वनस्पती सब फूले । मत्तमधुप गुञ्जत रस भूले ॥
वटतर बैठे हैं गङ्गाधर । उमा सहित हरिनाम जपत हर ॥
अङ्ग विभूति वसन मृगछाला । चन्द्रललाट गरे शिरमाला ॥
शीशजटा महँ गङ्ग विराजत । लोचन तीनि मनोहर छाजत ॥

शङ्कर देख्यो कृष्णकहँ, उपजो चित्त अनन्द ।
विहँसि वदन पूछन लगे, शरदश्याम मुखचन्द ॥

करि आदर आसन बैठारे । कहौ आपु क्यहि काज सिधारे ॥
हँसि हरिकही सुनहु गङ्गाधर । तुम दीन्हों जयद्रर्थहि
अभिमनु जूझि गिरे भारतरण । ता कारण पारथ

कालहिवधौं नहिं सिन्धुनरेशहि । तौमैं अग्निहि करौं प्रवेशहि ॥
पारथहो अब यह वर दीजै । कालहिवधहि जयदर्थहि कीजै ॥
शङ्कर कही दीन्ह वर पारथ । विधि जयदर्थ करहु पुरुषारथ ॥
जाके सखा आपु श्रीकेशौ । जयकरिहौ रणकौन अँदेशौ ॥
लैकर धनुष बतायउ बाना । यहि विधितें कीजै सन्धाना ॥
लै अर्ज्जुन माधव गृह आये । समाचार सब कुरुपति पाये ॥
अर्ज्जुन प्रण कीन्हेउ यहिकारन । कालहिचहतजयदर्थहिमारन॥

जो न वधौं जयदर्थही, करहुँ अग्निपरवेश ।
यह प्रण दृढ़ पारथ किये, सुधि सब सुनी नरेश ॥

सुनि जयदर्थ महा भयमानी । इतर्ड रहब मरण निज जानी ॥
कुरुपतिपहँ कीन्हों तब गवना । कही जात हम अपने भवना॥
पारथ प्रण मिथ्या नहिं परिहै । कोसन्मुखह्वोइ तिनसनलरिहै॥
तेहिकारण भवनहि वसि कीजै । शङ्कर शरण जाइकै लीजै ॥
सो सुनिकै कुरुनाथ बखाना । अवनहिकीजियममअपमाना ॥
हम सब तव रक्षा रण करिहैं । कर्णादिक लै आगे लरिहैं ॥
सब मिलिकै करिये पुरुषारथ । कैसे तुमहिं वधैंगे पारथ ॥
भागि गये पुनि अमर न ह्वै हौ । क्षत्रिनमध्य लाज बहु पैहौ ॥
दिन भरिकै रक्षा सब करिहैं । सांझ समय तब अर्ज्जुन मरिहैं ॥
पारथ मरें युद्ध हम जीतें । तुम काहेक जिय मानत भीतें ॥

सेनापति हैं द्रोण गुरु, रक्षा करिहैं तोहि ।
सांझ भये अर्ज्जुन मरहि, विधि जय दीन्हो मोहि ॥

तातें अब हम तुमसों कहियें । करि साहस इस्थिर ह्वै रहियें ॥
सिन्धुराज तब बोले बयना । कहूं न ऐसो देखहुँ नयना ॥
पारथ कोपि धनुष जब धरिहैं । को समरथ जो सन्मुख लरिहैं ॥
जब विराटपुर गोधन हरेउ । अर्ज्जुन एक सबै वश करेऊ ॥
मोहितें कहेउ यहै त्रिपुरारी । पारथसम नहिं कोउधनुधारी ॥
उठिकै कर्ण कह्यो परतच्छक । कालहि दिवस हम होबे रच्छक ॥
तब जयदर्थ कहा समुझाई । सबको बल हम जानत भाई ॥
जो गुरु द्रोण बांह गहि राखैं । रच्छा करहि पैज करि भाखैं ॥
तौ मैं रहौं सुनो नृप बयना । नतरु जाइहौं अपने अयना ॥
कुरुपति कह्योसबहिमिलि जैये । जाय द्रोणसों बात जनैये ॥

यह कहिकै सब मिलि चले, गये द्रोण के भौन ।
आदर के आसन दिये, किमि नृप कीन्हेउ गौन ॥

सो सुनिकै दुर्योधन कहेऊ । अर्ज्जुन प्रण कीन्हेउ अस अहेऊ ॥
कालहि दिवस जयदर्थहि मारौं । नहि तौ देह अग्निमहँजारौं॥
जो गुरुद्रोण होहु तुम रच्छक । दृढ़कै बांह गहौ परतच्छक ॥
कालहि दिवस जयदर्थ बचैये । पारथ मरत युद्ध जय पैये ॥
यह सुनि द्रोण कहे तब लीन्हे । अब मन अपने मैं प्रणकीन्हे॥
ऐसो व्यूह करौं निर्म्मांना । जाको भेद कोउ नहिं जाना ॥
सब आगे होइ हैं हम रच्छक । देखो को आवत परतच्छक ॥
जो कोटिन अर्ज्जुन चलि आवैं । तौ मोतें नहि द्वार छुड़ावैं ॥
कालहि करौं यहि विधि पुरुषारथ । कृष्णसमेत जीतिये पारथ॥

कालिहिवधौं नहिं सिन्धुनरेशहि । तौमैं अग्निहि करौं प्रवेशहि।
पारथहो अब यह वर दीजै । कालिहिवधहि जयद्रथहि कीजै ॥
शङ्कर कहो दीन्ह वर पारथ । विधि जयद्रथ करहु पुरुपारथ ॥
जाके सखा आपु श्रीकेशौ । जयकरिहौ रणकौन अँदेशौ ॥
लैकर धनुष बतायउ बाना । यहि विधितै कीजै सन्धाना ॥
लै अर्ज्जुन माधव गृह आये । समाचार सब कुरुपति पाये ॥
अर्ज्जुन प्रण कीन्हेउ यहिकारन । कालिहिचहतजयद्रथहिमारन।

जो न वधौं जयद्रथहो, करहुँ अग्निपरवेश ।
यह प्रण दृढ़ पारथ किये, सुधि सब सुनौ नरेश ॥

सुनि जयद्रथ महा भयमानौ । इतई रहब मरण निज जानौ ॥
कुरुपतिपहँ कीन्हों तब गवना । कहो जात हम अपने भवना।
पारथ प्रण मिथ्या नहिं परिहै । कोसन्मुखहोइ तिनसनलरिहै।
तेहिकारण भवनहि वसि कीजै । शङ्कर शरण जाइकै लीजै ॥
सो सुनिकै कुरुनाथ बखाना । अबनहिकीजियममअपमाना ॥
हम सब तव रक्षा रण करिहैं । कर्णादिक लै आगे लरिहैं ॥
सब मिलिकै करिये पुरुपारथ । कैसे तुमहि वधैंगे पारथ ॥
भागि गये पुनि अमर न ह्वै हौ । क्षत्रिनमध्य लाज बहु पैहौ ॥
दिन भरिकै रक्षा सब करिहैं । सांझ समय तब अर्ज्जुन मरिहैं ॥
पारथ मरैं युद्ध हम जीतैं । तुम काहेक जिय मानत भीतें ॥

सेनापति हैं द्रोण गुरु, रक्षा करिहैं तोहि ।
सांझ भये अर्ज्जुन मरहि, विधि जय दीन्हो मोहि ॥

तातें अब हम तुमसों कहिये । करि साहस इस्थिर ह्वै रहिये ॥
सिन्धुराज तब बोले बयना । कहूं न ऐसो देखहुँ नयना ॥
पारथ कोपि धनुष जब धरिहै । को समरथ जो सन्मुख लरिहै ॥
जब विराटपुर गोधन हरेउ । अर्ज्जुन एक सबै वश करेऊ ॥
मोहिते कहेउ यहै त्रिपुरारी । पारथसम नहिं कोउधनुधारी ॥
उठिकै कर्ण कही परतक्षक । काल्हि दिवस हम होवै रक्षक ॥
तब जयदर्थ कहा समुझाई । सबको बल हम जानत भाई ॥
जो गुरु द्रोण बांह गहि राखैं । रक्षा करहि पैज करि भाखैं ॥
तौ मैं रहौं सुनो नृप बयना । नतरु जाइहौं अपने अयना ॥
कुरुपति कहीसबहिमिलि जैये । जाय द्रोणसों बात जनैये ॥

यह कहिकै सब मिलि चले, गये द्रोण के भौन ।
आदर कै आसन दिये, किमि नृप कीन्हेउ गौन ॥

सो सुनिकै दुर्योधन कहेऊ । अर्ज्जुन प्रण कीन्हेउ अस अहेऊ ॥
काल्हि दिवस जयदर्थहि मारौं । नहि तौ देह अग्निमहँजारौं॥
जो गुरुद्रोण होहु तुम रक्षक । दृढ़कै बांह गहौ परतक्षक ॥
काल्हि दिवस जयदर्थ बचैये । पारथ मरत युद्ध जय पैये ॥
यह सुनि द्रोण कहे तब लीन्हे । अब मन अपने मैं प्रणकीन्हे॥
ऐसो व्यूह करौं निर्म्मांना । जाको भेद कोउ नहिं जाना ॥
सब आगे होइ हैं हम रक्षक । देखो को आवत परतक्षक ॥
जो कोटिन अर्ज्जुन चलि आवैं । तौ मोते नहि द्वार छुड़ावैं ॥
कालहि करौं यहि विधि पुरुषारथ । कृष्णसमेत जीतिये पारथ॥

या प्रण मैं तुमते करहुँ, सुनहु वचन परमान।
पारथ अन्त न पावहीं, करौं व्यूह निर्मान ॥
कह्यो द्रोण अब साजहु सैना। रचत व्यूह अब देखो नैना ॥
कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे। सुनिकै सबहि भूपगण गाजे ॥
सारथि रथ जोते हय चोखे। इन्द्र विमान परत हैं धोखे ॥
चढ़े अश्व असवार महाबल। उदधिसमानपियादनकोदल ॥
सब जुरिकै आये मैदाना। कीन्हे द्रोण व्यूह निर्माना ॥
विकटव्यूह अतिनिकट बनाये। जाको अन्त कहूं नहि पाये ॥
कमलव्यूहते मध्यहि फेरेउ। शतदलको व्यूहहिते घेरेउ ॥
कमल व्यूहमहँ व्यूह बहुतेरे ते सब रहेउ अस्त्र गहि घेरे ॥
आपु द्रोण राखो है चक्रहि। सोमदत्त बल समता शक्रहि ॥
वाहुलीक गन्धार नृप, दोउ बाजू रहि ताहि।
कर्ण मध्यकस्थलरहो, सबहि सराहत जाहि ॥
अग्रभाग गुरु द्रोण विराजत। पहिरिसनाह सिंहसम गाजत ॥
कमल मध्यमहँ जयद्रथ राखो। महाविकट बलजातन भाखो ॥
षट योजन रचि व्यूह बनाई। योजन तीनि बनो चौड़ाई ॥
आठ चोहिणी दल सब राखे। है समूह दल जात न भाखे ॥
कहों चोहिणी दल परिमाना। यहिते बुध करिहैं अनुमाना ॥
रथपर एक रथी छवि छावै। तेहि पाछे पचास गजधावै ॥
पाछे शतशत असवारा। बनमहँ करत शत्रु संहारा ॥
एक असवारन पाछे। शत शत पैदल आवतआछे ॥

इतनो होय रथी त्यहिकहिये । शूरवीर कोई रण लहिये ॥
ऐसो रथी पांचशत आये । ताको सेना एक कहाये ॥

ऐसो दल सेना जुरि, एतना कहिये ताहि ।
दश एतना जुरिके चलै, यही वाहिनी आहि ॥

ऐसे दल वाहिनि जुरि आई । एक चोहिणी फौज कहाई ॥
आठ चोहिणी दल परिमाना । कौन्होंव्यूह निकट निर्माना ॥
गहिकै धनुष द्रोण गुरुकह्यो । सब चत्रिय दृढकै थल गह्यो ॥
सब मिलि सावधान ह्वै रहिये । अर्ज्जुनसों कौन्होंरण चहिये ॥
अरुण उदय पांडव दल साजे । शब्द अघात दमामे बाजे ॥
स्वकर रथहि जोते बनवारी । चढ़े आइ पारथ धनुधारी ॥
पहिरि सनाह धनुष कर लौन्हे । दोउ तुणीर कसिकैंदृढ़कौन्हे ॥
शिरपर मुकुट मनोहर नीको । भालउदित हरिमन्दिर टीको ॥
यज्ञपवीत विराजत कांधे । पीताम्बर कटि कसिक बांधे ॥
सुन्दर श्याम शरीर विराजत । कुण्डल कान मनोहर छाजत ॥

ब्रह्मा शङ्कर देव मुनि, नहि पायो ज्यहि अन्त ।
भक्त हेत जोती गहे, महिमा अगम अनन्त ॥

धर्म्मराइ मैदानहिं आये । तब श्रीपति यह वचन सुनाये ॥
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये । लै सेना इतही अब रहिये ॥
जो सब मिलि रणको उरझोये । व्यूह भेद को अन्त न पैये ॥
अर्ज्जुन रथी सङ्ग हम सारथ । देखो न्टप नयनन पुरुषारथ ॥
धर्म्मराइ कछु कहिवे लीन्हे । अर्ज्जुन सौंपि कृष्णको दीन्हे ॥

सेन मध्य रथ धावत कैसे । वोहित चलत सिंधुमहँ जैसे ॥
अर्ज्जुन कीन्हे उ शर सन्धाना । मारन लगे क्रोध करि वाना ॥
अगणित कीन्हे उ सेननिकन्दन । नन्दिघोष हांकत जगवन्दन ।
वीर अनेक आनि कै घेरहि । मारहि मारु मारु कहि टेरहि ॥
अर्ज्जुन वीर कृष्णसे सारथ । लागे करन सरम पुरुषारथ ॥
रथ पर लोग शूल शर वर्षैं । युद्ध देखि पारथ मन हर्षै ॥
वीर अनेक अस्त्र परिहारे । खड़ग घाव रथ ऊपर मारे ॥
अर्ज्जुन कोपि चलायो वाना । योजन एक कियो मैदाना ॥
नन्दिघोष हांकत बनवारी । जोती गहे पिताम्वरधारी ॥
योजन एक किये रथ आगे । धर्म्मराय तब कहिवे लागे ॥

धनुटँकोर ध्वनि सुनि परत, कहा होत धौं आहि ।
हरि अर्ज्जुन सुधि लेनको, अब पठवों मै काहि ॥

कह्यो नरेश सात्यकी जैये । सुधि लैकै मोपर फिरि ऐये ॥
नृपआज्ञा माथे धरि लीन्ह उ । रणकोगमन सात्यकीकीन्हेउ ॥
तब सात्यकि देखेउ परतच्छक । द्वारहि व्यूह द्रोण गुरुरच्छक ॥
जबसात्यकिअतिनिकटहिआये । हँसिक द्रोण कहन मनलाये ॥
अरे मूढ़ मेरे ढिग आवा । निश्चय भयो कालको खावा ॥
यह सुनि क्रोध भये वहु नाना । एक बार मारे शत बाना ॥
[illegible]म आंखि वायां भुज फरकै । जियअकुलातचहतहियदरकै ॥
[illegible] गहिभांति वखानो । मोरहु जिय अबहे अकुलानो ॥

कौ गुरुद्रोण शूलचल करयो। धर्म्मराइपर संकट परयो॥
सब जानत हैं अन्तर्यामी। अभिमनुमरणकहोनहिस्वामी॥

हांको रथ माधव तबहि, धाये चपल तुरङ्ग।
अशकुन देख्यो पन्थ महँ भा पारथ मन भङ्ग॥

आतुर ह्वै चलिआये तहँवां। रोदन करत भूमिपति जहँवां॥
चलत प्रवाह अश्रुहैं नयना। अर्ज्जुन कही कृष्णसों बयना॥
अभिमनुमरण सुनो श्रीमाधव। नहिंजानतविधिकीन्होंकाधव॥
रथते उतरि गयो पुनि तहँवां। रोदन करत रुवै हैं जहँवा॥
अभिमनुनाहिं सभामह देख्यो। जूझ्यो पुत्र सत्य करि लेख्यो॥
तब अर्ज्जुन भाष्यो यह बयना। अभिमनु कहां न देखहु नयना॥
धर्म्मराज सब बात सुनाई। अकथकथाविधिकीप्रभुताई॥
चक्रव्यूह गुरु द्रोण बनाये। दुर्योधन कहि दूत पठाये॥
भेदहु व्यूह आनि कै लरिये। नातो हारि गवन वन करिये॥
सो सुनिकै हम बहुदुख कीन्हेउ। सबचलिनको आज्ञादीन्हेउ॥

व्यूहभेदि जानहि नही, कहहि सबहि परिमान।
सब चलो हियहारिकै, अभिमनु लीन्हों पान॥

बहुत भांति मैं कहि समुझायो। अभिमनुकेसहुमनहिनआयो॥
कहौं द्वार तोरौं सति भावा। सत वांको रण मोहि न आवा॥
यह सुनि भीमसेन तब कहेऊ। सतवां द्वार भार मम रहेउ॥
सो सुनिकै साजो हम सयना। चक्रव्यूह देखत तब नयना॥
देखत सबहि अचम्भव भयऊ। अभिमनुव्यूहभेदिकै गयऊ॥

भीमादिक चलौ सब धायें। पै जयद्रथ सर्बहि अटकाये॥
छठौ द्वार सुत पेलि कै गयऊ। सतयें द्वार महारण भयऊ॥
सो सब काहु न देखो नयना। जूझेउ पुत्त सुनेउ यह वयना॥
यह सुनि अर्ज्जुन मूर्च्छित भयऊ। रोकै कृष्ण अङ्कमहँलयऊ॥
अर्ज्जुन कृष्ण विकल होइरोये। पुत्तशोक चाहतजियखोये॥

अर्ज्जुन भाष्यो भीमसों, प्राणकि कीन्हे गौन।
सुतहिंजुझायो खेतमहँ, तुमसब आयो भौन॥

चौदहवर्ष वैस अतिबारा। द्रोण कर्ण के युद्ध विचारा॥
याही समय होत हम साथा। वधे घेरि सुत मनहुँ अनाथा॥
सुन्दर रूप मनोहर आनन। खण्डखण्डवीरनकिये बाणन॥
करुणा कै पारथ यह भाखै। पुत्त बिना हम प्राण न राखै॥
सुनुहो वीर महा धनुधारी। तुमपर प्राण करौं बलिहारी॥
हम जीवत तुम जीवत रनमों। यहै शोच आवत है मनमों॥
धर्म्मराय के कार्मिहि आयो। हर्मिहिछांडितुम कहांसिधायो॥
चलिय सबै वीर सरदारा। सबहि कुशल जूझे तुम बारा॥
भीमसेन वहुतै गलगाजे। सुतै जुझाय खेत तजि भाजे॥
सुनिकै भीम कहन अस लागे। लज्जावन्त क्रोधसों पागे॥

सब मिलिकै भारत रच्यो, राज्यभोगके हेत।
अब रोवत विलखत कहा, जब सुत जूझेउ खेत॥

म होतेउँ सुनके साथा। सनसहितबधतिउँ कुरुनाथा॥

कह्यो कृष्ण अर्ज्जुन सुनि लीजै । चलहु गवन अन्तःपुर कीजै ॥
अर्ज्जुन कह्यो सुनोहो माधौ । अब उतजायकीजिये काधौ ॥
आपु जाहिं हरि हम नहिं जैहैं । रानिन में का वदन दिखैहैं ॥
सो सुनि अन्तःपुर हरि आये । बहिन सुभद्रा देखन पाये ॥
धाइ सुभद्रा चरणन लागी । हे माधव हम परम अभागी ॥
श्रीहरि तुम कीन्हें प्रतिपालक । भारत जूझिगयो मम बालक
अर्ज्जुन से पितु मातुल केशौ । रणजूझे सुत बड़ो अँदेशौ ॥
करुणा करै सुभद्रा लागी । विह्वल विकल शोकते पागी ॥

वधू उतरि आई तहां, गहे कृष्ण के पाइ ।
आज्ञा दीजे जाहि हम, पतिसँग यादव राइ ॥

तेरे गर्भ बाल भाषो गनि । कुरुपांडवको वंश शिरोमनि ॥
होइहै पुत्र प्रबल बल भारी । एक छत्र वसुधा अधिकारी ॥
या विधिते श्रीपति समुझाये । अन्तःपुर ते बाहर आये ॥
भोजन पान कहूं नहिं कीन्हें । सेना सबहि समरसन दीन्हें ॥
अर्ज्जुन निकरि चले वनवासा । पुत्र शोकते जीव निरासा ॥
श्रीपति अग्र न देखो पारथ । पाछे चले सखा के सारथ ॥
वनमों पारथ भटि मुरारी । गहिकरवचन कहेउ वनवारी ॥
पारथ शोच छांड़ि अब दीजे । निर्म्मल ज्ञान चित्तमें कीजे ॥
काको सुत बांधव पितु जगमों । पथिकमितआहीजिमिजग
मगरादिक ऐसे नृप भयऊ । ते सब यहि धरणीमहँ गयऊ ॥

कोइ न काहूको अहै, कीजै हृदय विचार।
सबलसिंह चौहानकह, मिथ्या है संसार॥

इति तृतीय अध्याय॥ ३॥

सुनिकै अर्ज्जुन तब यह भाखो। दीनबन्धु जिय जात न राखो॥
पारथ सङ्ग हमारे ऐये। अभिमनुतुमकहँ आनि दिखैये॥
यह सुनि पारथको मन हरष्यो। करिप्रणाम हरिके पगपरष्यो॥
विनतासुतकहँ सुमिरण कीन्हे। आयेगरुड़ कहन मनदीन्हे।
मेरे सङ्ग चलहु तुम पारथ। सुरपुर जाइँ तुम्हारे स्वारथ॥
उड़ेउ गरुड़ तब कीन्हेउ गवना। क्षणमहँगयोदैवनिशिभवना।
देखो जाइ महारण रङ्गा। अभिमनु लरत दैत्यके सङ्गा॥
कृष्ण कही अभिमनुपहँ जैये। पकरि बांह सुत इतलै ऐये॥
सुत कहँ देखि महासुख पाये। मिलिबेको आतुर ह्वै धाये॥
मोहिछांड़ि कित कीन्हें गवना। हेसुत वेगि चलो निजभवना।
सो सुनिकै अभिमनु कही, काह बकत बिन काज।
पुत्र पुत्र भाषत कहा, जीव न आवत लाज॥
काको सुत काको रथ हाथी। जैसे मिलत स्वप्नमहँ साथी॥
पितुते सुत सुतते पितुकरणी। जैसे चलत रहटको ढरणी॥
हम शशिपुत्र बुद्ध है नामा। रोदन काह करत बेकामा॥
यह सुन अर्ज्जुन बहुत लजाये। रहे मौन कछु वचन न आये॥

नमहँ ज्ञान कियो तब पारथ। सत्य कहत जग सबै अकारथ॥
ौर दवा प्रभु आपु खवाये। होइ बलवन्त भये सच पाये॥ ६६ ६
ऊि कर हरि धोवन कीन्हे। गङ्गोदक झारी भरि लीन्हे॥
रिउ तुरङ्ग आनिरथ जोरे। चञ्चल चपल दिननके थोरे॥

कुरुदल सबै अनन्दसों, करन लगे जलपान।
धन्यधन्य पारथजगत, अरिदल करत बखान॥

पल तुरङ्ग हांकि रथ दीन्हे। पुनि पारथ बाणावलि कीन्हे॥
र पञ्जर ते भारत आगे। चहूं ओर शर वर्षन लागे॥
हाशूर जो आगे आवत।च्णमहँ अर्ज्जुनमारिगिरावत॥
र्ज्जुन बाण गिरत दल ऐसो। प्रबल पवन कदलीवन जैसो॥
हि विधिलरत शङ्कनहिंमनमों। रुधिर प्रवाहचलतसबतनमों॥
रन अङ्ग देखि दृग भूले। जिमिवसन्त किंशुकतरुफूले॥
रुण वर्ण शोणित लपटाने। खेलत मनहुँ अबीरनसाने॥
लि फौज रथ याविधिधावत। जिमिमैनाकधरणिपरआवत॥
विधिते रथ हांकत केशव। धर्मराज इत करत अँदेशव॥
बरि हेतु सात्यकी पठाये। सुधि लैके अजहूं नहिं आये॥

भीमसेन तुम जाहु अब, हरि अर्ज्जुनके ठौर।
उत चाहत सुधि लेनको, वीर न देखौं और॥

हस के बांधव शुभ कीजै। अर्ज्जुनखबरिआनिमोहिंदीजै॥
र अढ़ाई दिन भा आई। अबलौं जिनके खबरि न पाई॥
ए आज्ञा माथेपर लीन्हे। रणको भीमसेन शुभ की ॥

व्यूहद्वार जब रथ रहुँचाये। द्रोणगुरू देखन तव पाये॥
क्रोधवन्त शारँग कर लीन्हे। ते शर गुरुवीचहि चयकीन्हे॥
अपर पांच शर मारे पायल। ताते किये अश्व रथ घायल॥
हँसि गुरुद्रोण कह्यो यहवानो। सब दिन भीम परमअज्ञानो॥
नन्दिघोष रथ हरिसम सारथ। सके न द्वार जान यहि पारथ॥
यहि मारग ह्वै जान न ऐहो। पारथ गये तितहि ह्वै जैहो॥

भीमसेन अति क्रोधकरि, कहे द्रोण सों बैन॥
द्वार पेलि अबजातहौं, तुमदेखत वधि सैन॥

अर्ज्जुनके धोखे जनि रहिये। सावधान होइ शारँग गहिये॥
धावा उतरि छांड़िकै स्यन्दन। मनमें सुमिरे श्रीजगवन्दन॥
लघु सन्धान द्रोण गुरु मारत। बांयें अङ्ग भीम सब ढारत॥
प्रबल तेज शोणित शर छूटत। वज्र शरीर लागि सब टूटत॥
जाइ गदा रथ हेठ लगाये। लै भुजबल गुरुसहित उठाये॥
द्रोण समेत फेंकि रथ दयऊ। गिरेउ न वीच कोश दुइ गयऊ॥
गिर्‍यो भूमि टूट्यो तब स्यन्दन। अश्व सारथी भयो निकन्दन॥
उठिकै द्रोण पयादे धाये। तब लगि भीम व्यूहमहँ आये॥
चहुँदिशि गदा कोपि परिहारे। सन्मुख ज्यहि पाये तेहि मारे॥
गज मारे अनेक मय कीन्हे। वहुतक फेंकिगगनमहँदीन्हे॥

वहुतक मारे चरणते, वहुमुष्टिका प्रहार।
भीमसेन सेनासबै, याविधि कीन सँहार॥

ने रथ गज सों गज मारे। पकरि अश्वपर अश्व प्रहारे॥

सन्मुख आय वीर शर जोरत । गदाघाव तिनको शिरफोरत ॥
यहिविधि कीन्हे सेन निकन्दन । हय गज मत्त तोर बहुस्यन्दन ॥
लैकर गदा क्रोध करि धाये । वीरन मारत बार न लाये ॥
हांक मारि कै गदा-प्रहारे । एकवार सहसन दल मारे ॥
यहि विधि लरत चले परतच्चक । पहुँचे जाय कर्ण तहँ रच्चक ॥
देख्यो कर्ण वृकोदर आये । रहुरहु कहिगुणधनुषचढ़ाये ॥
आवत कहा औरके धोखे । असकहि बाण चलायोचोखे ॥
भीम अङ्ग मारे शर जबहीं । हांक मारि कै धायो तबहीं ॥

रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरङ्ग ।
गज अनेक मारन लगे, रचो भीम रणरङ्ग ॥

अर्जुन कह्यो भीम प्रभु आवत । युद्ध करत हैं हांक सुनावत ॥
श्रीहरि कहो दूरि अति पारथ । योजन डेढ़ बीच पुरुषारथ ॥
कर्ण अपर रथही चढ़ि आये । क्रोधित ह्वै बहुबाण चलाये ॥
लाग्यो घाव भीमके तनमें । अधिक क्रोधउपज्योतबमनमें ॥
लैकर गदा कोपि परिहारे । चारिउ तुरँग सारथी मारे ॥
चक्रसहित टूटो तब स्यन्दन । आतुरभागि चले रविनन्दन ॥
औरहि रथ कीन्हो असवारी । सन्मुख जुरे वीर धनुधारी ॥
तब या विधि कीन्हो सन्धाना । भीम अङ्ग मारे दश बाना ॥
अपर साठि शर भल्लुक लीन्हे । ते शर चोट शीशपर कीन्हे ॥
तीन सहस्र शर ऊपर लागे । थके भीम पग चलत न आगे ॥

कर्ण धनुर्द्धर अति प्रबल, या विधि मारे बान।
भीम अङ्ग झांझर सबै, मोहि गिरे मैदान ॥
श्रमजलरुधिर अङ्गमहँ बह्यो। गज लोथिनके बीचहि रह्यो ॥
मूर्च्छित भये पाण्डुके नन्दन। कर्ण वीर हांक्यो तब स्यन्दन ॥
रहे दूरि अति निकटहि आये। धनुषअङ्ग तनु खोदि जगाये ॥
उठो भीम कीजै रण करणी। मोहित कहा परयो है धरणी ॥
खाहु बहुत सोवहु निज धामा। रणमहँ काह तुम्हारो कामा ॥
जीवदान मैं ताते दीन्हयो। कुन्ती मातु मांगिकै लीन्हयो ॥
यह कहि कर्ण चले पुनि आगे। भीमसेन मूर्च्छा तब जागे ॥
शीतल पवन परस तनु कीन्हे। श्रम भा दूरि गदाकर लीन्हे ॥
अपनो बल तब भीम सम्भारो। सेना पेलि अग्र पगु धारो ॥
या विधि चल्यो करत पुरुषारथ। कृष्णसमेत लरत जहँ पारथ ॥
भीमसेन कह हांक दै, मैं पहुँच्यो अब आय।
पारथ तुम निरखत कहा, वधो सेन मन लाय ॥
भीम सात्यकी पाछे आवत। आगे नन्दिघोष रथ धावत ॥
भीमसेन राजन संहारे। पुनि सात्यकी अमित दल मारे ॥
हांके तुरँग पतितके पावन। रुधिरनदी अतिबढ़ीभयावन ॥
मत्तगयन्द भिरे हैं कैसे। दोउ ओर कगारक जैसे ॥
बार सेवार सरस अरुझाने। फेन समान जो पग उतराने ॥
[illegible] मीन सम चमकहिं। ढालमनहुँ कच्छपसमदमकहि ॥
[illegible]शअर बखतर राजै। मनहुँ ग्राह जलमाहिं बिराजैं ॥

याविधि कीन्हेउ खेत भयङ्कर । नाचत मुण्ड लिये हैं शङ्कर ॥
भूत वेताल पिशाच सयाने । रुधिर मांस सब खाइ अघाने ॥
योगिनि खप्पर भरति हैं, काक कङ्ककी भीर ।
गीध शृगाल अनन्द सों, बोलतसरितातीर ॥
यहिविधिते कीन्ह्यो रणभारथ । पारथ करत जहांपरुषारथ ॥
महावीर कोटिन शर मारत । बाणनते अर्ज्जुन संहारत ॥
यहि विधि होत महारणशरसे । अस्त्र समूह बुन्द सम वरसे ॥
सबै शूर सरदार महाबल । पलभरिनहिंपारथपावतकल ॥
अर्ज्जुन हाथ बाण जो छूटत । सेना वेधि धरणिमहँ फूटत ॥
धर्मराय कुरुपतिके सैनहि । हितअनहितरवि देखतनैनहि ॥
चक्रवाक पाण्डवदल जानत । समउलूककुरुदलनिशिमानत ॥
वध जयदर्थ पाण्डुदलभावत । कौरवदल सब चहतबचावत ॥
व्यासदेव उपमा कही, दोऊ दलहि विचारि ।
अर्ज्जुनप्रण जयदर्थ वध, बाल अप्रौढ़ा नारि ॥
आतुर ह्वै अर्ज्जुन शर छांटत । वीर अनेकनके शिर काटत ॥
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ । हांक देत हांकत रथ सारथ ॥
बाह्लीक कृतवर्मा अत्री । सन्मुख जानि जुरे सब क्षत्री ॥
मारु मारु कै सब रणटेरे । चहुँ दिशि नन्दिघोष रथ घेरे ॥
अश्वत्थाम कृपा तब आये । सब मिलि बाणबुन्दझरिलाये ॥
सेन अनेक अस्त्र परिहारत । सांग शूल मुद्गरसों मारत ॥
यहि विधि होत महारण भारी । हरि सारथि पारथ धनुधारी ॥

श्री हरि तब अपने मन जाने। प्रहर दिवस बाकी अनुमाने॥
जो सब दिवस बीत कै जैहै। सन्ध्या पारथ प्राण गँवैहै॥
जो अर्ज्जुन निजप्राण गवांवा। मेरो अयश सबै जग गावा॥

पाण्डव मेरे परम धन, पारथ प्राण समान।
अर्ज्जुन केहि विधि राखिये, करत शोच भगवान॥

श्रीहरि कह्यो सुदर्शन धावहु। वेंड़े होइकै सूर्य्य छिपावहु॥
हरि आज्ञा माथे धरि लीन्हा। तब रवि ओट सुदर्शन कीन्हा॥
गगनदिवस तकि तेजनिहारी। भई सांझ कुरुसेनपुकारी॥
प्रमुदित ह्वै कौमुदी प्रकाशा। पाण्डवदल सब भयो निराशा॥
सन्ध्या देखि थकित भे पारथ। डारेउ धनुष तजेउपुरुषारथ॥
पारथ धनुष डारि जबदीन्हे। मिटो युद्ध सबके मन कीन्हे॥
दुर्योधन आनँद ह्वै आये। सेन समूह सबै पलटाये।
तब पारथ यहि भांति बखाना। कुरुपति करहु चित्तअनुमाना॥
सुनिकै दुर्योधन मन हर्षेउ। जिमिचातकजलस्वाती वर्षेउ॥
कुरुपतिकी आज्ञा जब पायो। शतबन्धुन मिलि चिता बनायो॥

चिता चढ़न अर्ज्जुन चल्यउ, कहेउ कृष्ण समुझाय।
धनुष बाण लैकर चढऊ, क्षत्रिय धर्म्म न जाय॥

हरि आज्ञा पारथ मन बढ़ेऊ। लैकर धनुष चितापर चढ़ेऊ॥
कुरुपति तब निरखनकोलागे। कह्यो शकुनि जयद्रथहि आगे।
तुव कारण मारेउँ सब सना। पारथ मरण देखिये नैना॥
ने ओर न है सुख कोई। देखत नयन शत्रु क्षय होई॥

उठि जयदर्थ निहारे जबहीं । श्रीहरि गगन तकायो तबहीं ॥
कर्षि सुदर्शन तब ढिग आये । रविप्रकाशभा दिवसलखाये ॥
चकृत सबहिं अचम्भा माने । तब श्रीहरि पारथहि बखाने ॥
अर्जुन गहरु करत काहिकाजा । देखत तुमहिं सिन्धुके राजा ॥
तब अर्जुन कीन्हेउ सन्धाना । कण्ठ ताकिकै मारेउ बाना ॥
जूझे शीश परन महि चह्यऊ । तब अर्जुनसों माधव कह्यऊ ॥

अन्तरिक्ष शिरलै चलहु, सुनहु वचनपरिमान ।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबल सिंह चौहान ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

सुनि अर्जुन कीन्हेउ सन्धाना । लै शर शीश चल्यउ असमाना
हरिअर्जुन रथपर चढ़ि धाये । शरलागत शिर गिर न नपाये ॥
पहुँचायो शिर पारथ बाणन । जहांसुरथ तप साधत कानन ॥
धरयो ध्यान अञ्जलिकरसाधत । पुत्रहेतु शङ्कर अवराधत ॥
कह्यो कृष्ण अर्जुन सों ऐसो । वाके हाथ परत शिर जैसो ॥
यहि विधिते अर्जुन शर मारे । नृपके हाथ शीश लै डारे ॥
छूट ध्यान चिन्तामन कीन्हेउ । मृतकहिशीशडारिमहिदीन्हेउ॥
गिरो शीश धरणी महँ जबहीं । माथो सूर्य काटिगो तबहीं ॥
छूटे प्राण गिरयो तब धरणी । कहिनजातिविधिकी यह करणी
अर्जुन देखि भये भ्रम भारी । यह चरित्र कहिये बनवारी ॥

शीश गिरो वाके करहि, भूमि सो दीन्हेउ डारि।
प्राण तज्यो कहि कारणे, हमसों कहिय मुरारि॥
कथा पुरातन श्रीहरि कहेऊ। सुरथ नाम राजा यह रहेऊ॥
सिंधूराज महा बल भारी। क्षत्रिय प्रबल वीर धनुधारी॥
राजभोग इन बहुविधि कीन्हा। पुनि तपहेतु जायमनदीन्हा॥
शङ्कर की पूजा अवराधे। सेवा करि गौरी व्रत साधे॥
भयो प्रसन्न कहेउ गङ्गाधर। जो इच्छा मांगहु सोई वर॥
दीजै पुत्र सुरथ यह कहेऊ। मरै न अमर सदाजगरहेऊ॥
सुनिके शङ्कर कहा बुझाई। अमर छांड़ि मांगौ वरभाई॥
जब मैं कहहुँ मरै तब स्वामी। यह वर दीजै अन्तर्य्यामी॥
जो वाको शिर करहुँ निपाता। तुरत मरै तब ताकत ताता॥
एवमस्तु कहि शिव वर दीन्हे। तब जयद्रथ जन्मजग लीन्हे॥
दिनदिन सुत बाढ़न लग्यो, भयो महारथ वीर।
शिवपूजा सन्तत करत, श्रीसुरसरिके तीर॥
दुर्योधन की बहिनि दुशाला। कै विवाह दीन्हेउ जयमाला॥
जब भारत रणको पग दीन्हेउ। सुरथ जाइ तप वनमेंकीन्हेउ॥
सुतके कुशल तपस्या करई। इनहि कहै जयद्रथ सो मरई॥
ता कारण इनको शिर ल्याये। ताहि मारिकै तुम्हें बचाये॥
यहिविधिसबमाधवकहि दीन्हो। हांको रथभवनहि शुभकीन्हो॥
धर्मराय सेना सब लीन्हे। पारथ पन्थ चितैचित दीन्हे॥
अन्तर रथ देखन पाये। सबहि कह्यो हरि अर्जुन आये॥

पारथ तब नृपके पग परसे। आनन्दित सबके मन हरषे॥
धर्मराय माधवसों भेंटे। त्रिविधताप तनुको सबमेंटे॥
हरिभाष्यउ प्रणराख्यउ पारथ। वधि जयद्रथ कियो पुरुषारथ॥
धर्मराय भाषन लग्यो, श्रीहरिसों यह बैन।
पारथप्रण रक्षा सदा, तुमहीं पङ्कज नैन॥
जहँ जहँ गाढ़ पर्‍यो परतक्षक। सबदिन तहां भये तुमरक्षक॥
लाख भवन कुरुनाथ बनाये। जरततहां प्रभु तुमहिबचाये॥
रहौ पास सबदिन वनवारी। द्रुपदसुताको लाज निवारी॥
वनमें दुर्वासा छल कीन्हेउ। हेजगदीश राखितुमलीन्हेउ॥
युद्धके हेतु विभीषण आये। मारतप्रभु तुम हमहि बचाये॥
जब कौरव विष भोजन दीन्हे। तहँहुँ आप रक्षा तब कीन्हे॥
वनमों तृषित भये वनवारी। कर उठाय दीन्हेउ तुम भारी।
दीनबन्धु मोरे हित काजा। चरण धोइ बैठारेउ राजा॥
नारायण शर भीषम मार्‍यो। मरत भीम प्रभु तुमहिंउबार्‍यो॥
हनुमतसों हठपारथ कीन्हेउ। दीनदयाल राखितुमलीन्हेउ॥
पारथ प्रण रक्षक सदा, श्रीवर दीनदयाल।
जाके तुमसे सारथी, ताहि न जीतै काल॥
जो जो चरण तुम्हारे ध्यावै। सङ्कटमों प्रभु सबहिंबचावै॥
ग्रहग्रहीत प्रभुसुमिरणकीन्हे। धाये त्वरितराखित्यहिलीन्हे॥
प्रण प्रहलाद राखि विनकारण। नरहरि रूप धरो जगतारण॥
ध्रुवकहँ अटल करेउ सबऊपर। विद्यामान विभीषण भूपर॥

भक्त वश्य भीषम प्रण कारण । रणमहँ अस्त्रगह्यो जगतारण ॥
धर्मराय यहि भांति बखाने । श्रीपति सुनत बहुत सुखमाने ॥
दुर्योधन गुरु द्रोणहिं कह्यऊ । आज युद्ध पारथ प्रण रह्यऊ ॥
तुम सब भये न कोऊ रक्षक । वधि जयदर्थ गयो परतक्षक ॥
सो सुनि द्रोण कहनअसलागे । सत्य वचन राजाके आगे ॥
बलते अर्जुन सक्यउ न मारण । रच्यो उपाय जगतके तारण ॥
रवि इस्थित निशिह्वै गई, छल कीन्ह्यो भगवान ।
भक्त परण राख्यो कही, सबलसिंह चौहान ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

अबराजा जिय शोच न करिये । आजयुद्धनिशिकालहिलरिये ॥
साजौ सेन विलम्ब न लाये । रथप्रति सबहिमशालबराये ॥
रथ प्रति चारि अश्व प्रतिदोई । यहिविधि साजकियेसबकोई ॥
खड़े भये चढ़ि बाजन बाजे । इतदिशिभीमपाण्डुदलसाजे ॥
बरत मशाल ज्योति उजियारी । शोभा मानहुँ परब दिवारी ॥
सुवरण शीश मुकुट छबिछाजै । मोर मनहुँ वर शीश बिराजै ॥
सुन्दरि हाथ आरती लीन्हे । सुरकन्यन व्याहन मन दीन्हे ॥
सिंहनाद दोऊ दल कीन्हे । वीरन धनुष फोक मनदीन्हे ॥
गजसों गज रथ सों रथ जोरे । पैदल सों पैदल रण घोरे ॥
ह विधि लरत जोरसों जोरे । महाशूर मन नेकु न मोरे ॥

अर्ज्जुन लीन्ह्यो धनुषकर, कीन्हे शर सन्धान ।
श्रीमुनिसों करउदित छवि, रथ हांको भगवान ॥
पाण्डवदल अनेक रण मारे । तब गुरु द्रोण बाण परिहारे ॥
अर्ज्जुन कीन्हेउ लघु सन्धाना । कुरुदल जूझिगिरेमैदाना ॥
निशाकालमहँ अतिपुरुषारथ । दुउदलकीन्हेउअतिशय भारथ ॥
शकुनीते सहदेव लराई । महायुद्ध कीन्हेउ प्रभुताई ॥
जुरे भीम दुश्शासन साथा । दोऊ सबल गदा लै हाथा ॥
नकुल भिरे कृतवर्मा चली । कृपाचार्यअरुसात्यकि अली ॥
जरासन्ध सुत द्रोणी सङ्गा । दोऊ मचे महा रणरङ्गा ॥
शल्य नरेश युधिष्ठिर राजा । दोऊ लरत आप जय काजा ॥
धृष्टद्युम्न अरु कर्ण महारथ । बाणनसों छायो सब भारथ ॥
अन्धकार भा निशि अन्धियारी । चमकतअस्त्र होतउजियारी ॥
सुनियत धनु टङ्कोर अति, निरखत अस्त्र उदोत ।
हांक देत चली सबिहि, निशा युद्ध इमि होत ॥
द्रुपद नरेश द्रोणगुरु साथा । खड्गलेइ गुरु काट्यउ माथा ॥
गिरेउ द्रुपद धरणीमहँ जबही । पाछेको गुरु जान्यउ तबहीं ॥
धोखे मित्र वध्यो हम रनमें । उपज्यो शोच द्रोणके मनमें ॥
महारथी करि एक न लागे । चलहिं न एक एकके आगे ॥
सूझि न परत सबन अँधियारी । आगे परत जात सो मारी ॥
मुकुट अनेक धरणिमहँ परेऊ । झलकत ज्योतिजरायनजरेऊ ॥
गुरु द्रोण सबहीते कह्यो । निशिको युद्ध अचेतो रह्यो ॥

दोऊ दल विश्रामहिं लीन्ह्यो । गुरुद्रोण मनमें दुख कीन्ह्यो ॥
यहिविधिकहासो कुरुपतिराजा । गुरु शोच कीजै क्यहि काजा ॥
अन्धकार निशि गये न चीन्हे । अपने हाथ मित्र वध कीन्हे ।

दुर्योधन भाषन लगे, कहो गुरुहि समुझाय ।
द्रुपदमित्र क्यहि विधि भये, सुनिसन्देहनशाय ॥

द्रोण गुरु आये यहि बातन । हे नरेश सुनु कथा पुरातन ॥
तप कारण वनमें हम आये । यमुना मज्जन करन सिधाये ॥
द्रुपद देखि कीन्हो परणामा । आशिष दीन्ह होहु मनकामा ॥
तब हम कहा कौन तुम अहहू । कौनवर्ण क्यहिआश्रम रहहू ॥
राजा द्रुपद अहै मम नामा । विधिवश तजिआयेनिजधामा
लिये किरातन राज्य हमारे । हारे युद्ध वनै पगु धारे ॥
रानी अरु मन्त्री लै साथा ॥ आये वनहिं अस्त्र नहिं हाथा ॥
हम भाषो राजा सुनिलीजै । मेरे साथ गमन अब कीजै ॥
वधि किरात तुमकहँ बैठावों । द्रोण नाम तब जगत कहावों ।
कही द्रुपद सोइ बड़ो धनुर्द्धर । जूझो सैन्य सकल जाके बल ।

क्षत्रिय ह्वै जुरि नहिं सके, तुम द्विज कोमल अङ्ग ॥
धनुविद्या जानत नहीं, किमि करिहौ रणरङ्ग ॥

तब हम याविधिवचन सुनाये । ज्यहिप्रकार धनु विद्या पाये
परशुराम तब यज्ञ विचारे । मुनि सब सुनत तुरत पगुधारे ॥
पूजे यज्ञ दक्षिणा दीन्हा । लैसब विप्रभवन गमकीन्हा ॥

बच्यो न कछु सबै उन दयऊ । तब हम जाय उपस्थित भयऊ ॥
परशुराम यह वचन सुनाये । अवसर गये विप्र तुम आये ॥
बच्योकमण्डलु और कुशासन । धनुषबाणकर एक न आसन ॥
तब हम कह्यो सुनो हे स्वामी । तुम जानत सब अन्तर्यामी ॥
बहुत भांति दारिद्य सताये । तब हम तुम्हैं ताकिकै आये ॥
यकइस बार निक्षत्रिन कीन्हे । धरनी धन विप्रनकहँ दीन्हे ॥
कह्यो नारि तुम वेगि सिधावो । परशुराम तें धन लै आवो ॥

आशा करि आये हते, पै विधि कीन्ह निरास ।
कर्म्महीन जो जगतमों, भवन कुबेर उपास ॥

भृगुपति चित्त दया ह्वै आई । निकट बोलि म्वहिं बैन सुनाई ॥
धनु विद्या चाहहु तो लीजै । दुखी विप्रत्वहिं विमुखनकीजै ॥
यहकहि धनुविद्या म्वहि दीन्हे । पुनि सब अस्त्र समर्पणकीन्हे
परशुराम दीन्हे धनु शायक । तीनिलोकके जीतन लायक ॥
जब सब भेद द्रुपद सुनिलीन्हो । आनँदसहित मित्रताकीन्हो॥
जो आएहि किरात वध कीजै । आधो राज्य बांटिकै लीजै ॥
लेद्रुपदहि प्रणशालहि आये । फल अरुमूल अहार कराये ॥
प्रात होत लीन्हे धनुवाना । द्रुपदद्रोण मिलि कीन्हपयाना ॥
सुनि किरात सब आतुरधाये । तीनिकोटि सेना जुरि आये ॥
भाष्यो द्रुपद मित्र सुनि लीजै । आये शत्रु युद्ध अब कीजै ॥

ब्रह्म अस्त्र सन्धानि कै, हम कीन्हो परिहार ।
तीनि कोटि चतुरङ्गदल, जारि कीन्ह सनछार ॥

द्रुपदहि सिंहासन बैठाये। तिलकदेइ शिर छत्र धराये॥
भाषो द्रुपद मित्र सुनि लीजै। आधा राज्य भोग अब कीजै॥
रहै राज्य सुस्थिर तव पासा। हम तप हेतु जात बन बासा॥
असकहिहम प्रणशालहिआये। मुनिसमाजसँग तपमनलाये॥
विधिवश पुत्र जन्म जगलीन्हे। अश्वत्थाम नाम त्यहि कीन्हे॥
मुनिकुँवरनसँग खेलत डोलत। बातैं मधुर अमीसम बोलत॥
सबमिलि कह्यो दूध हम पाये। सुनि सो पुत्र मातुपहँ आये॥
बालक कह्यो दूध अब दीजै। माता कह्यो कहा अब कीजै॥
तंदुल हुते भवन महँ थोरे। शिलते बांटि नीरते घोरे॥
नारि द्रोण द्रोणीका दीन्हे। हर्षवन्त ह्वै पानहि कीन्हे॥

हर्षवन्त खेलत चलो, मेरो करि अपमान।
निरखि नारि रोवन लगी, जियमो भई गलान॥

त्यहिअन्तर हम भवनहिं आये। रोवत देखि महादुख पाये॥
तियलागी करसों शिर मारन। हम पूंछौ रोवत क्यहि कारन॥
दूध स्वाद मम पुत्र न जानत। उज्वलनीर दूधकरि मानत॥
हम भाषा जनि होहु निरासा। चलहु तुरत द्रौपदके पासा॥
देखि नगर आनन्दित भयऊ। तब चलिभूपतिद्वारहि गयऊ॥
प्रतिहारन कहँ जाइ जनायो। कह्यो कि जाय मित्र नृपआयो॥
...के तुरत गये प्रतिहारा। राजा मित्र खड़े तव द्वारा॥
...र्शादुखित वम ननुफाटे। सुनत द्रुपद प्रतिहारन डाटे॥

द्विज संग्रह है बड़ो अपावन । दूरि करौ पावै नहिं आवन ॥
यह सुनि द्वारपाल सब धाये । खेदि दिये हम जान न पाये ॥
शाप दिये हम क्रोध करि, जानि परमविपरीति ।
धनमदते अपमान करि, अतिउदासचितथीति ॥
पुरी हस्तिना तब हम आये । तुम बालक खेलत मनलाये ॥
कूपहि परो गेंद जब जाने । तुमसब शोच चित्त अनुमाने ॥
सिद्धबाण संधानहि कीन्हे । गेंद उठाय हाथ तव दीन्हे ॥
तुमसब देखि अचम्भव भयऊ । लयो गेंद भीषमपहँ गयऊ ॥
सुनत चित्त भीषम अनुमाने ! आये द्रोण सत्य हम जाने ॥
आदरकरि निजगृह लै आयो । चरण धोय आसन बैठायो ॥
धेनु अनेक बहुत विधि दीन्हे । पांचक गांव समर्पन कीन्हे ॥
मेरे सङ्ग रहौ सुख पैहौ । बालक सबले अस्त्र सिखैहौ ॥
सिखये अस्त्रनिपुण सब कीन्हे । सब मिलिकै गुरुदच्छिणदीन्हे
पारथ ते कछुवो नहिं लीन्हे । यहै बात याचञा कीन्हे ॥

द्रुपदमित्र मेरोरहै, तिन कीन्हों अपमान ।
बांधि चरणतरडारिये, मांगतहौंयहदान ॥

अर्ज्जुन जाइ किये तहँ भारथ । महायुद्ध कीन्हे पुरुषारथ ॥
यहि विधिते पारथ भर साध्यो । नागफांसमहँ द्रुपदहिबान्ध्यो ॥
मम चरणन तर लाकै डारे । गुरुदच्छिणा सों आपु उबारे ॥
तब हमछांड़ि द्रुपदकहँ दीन्हा । मित्र जानिकै भाषणकीन्हा ॥

यहि विधि मित्र द्रुपद सुनुराजा। मारेउँ आजु तुम्हारे काजा॥
सब मिलिकै आये निजधामा। दोऊ दल कीन्हेउ विश्रामा॥
होत प्रात कुरु पाण्डव साजे। कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे॥
वेगि अनी आये मैदाना। क्षत्रिय लगे चलावन बाना॥
दल चतुरङ्ग चले सब आगे। नन्दिघोष हांकन हरि लागे॥
अर्जुन कीन्हे सेन निपाता। कुरुपति कह्यो द्रोणसों बाता॥

हम अर्जुन सन्मुख लहैं, यह इच्छा मनमाह।
सो सुनि भाषे द्रोणगुरु, को चलिहै नरनाह॥

पढ़ि नाराय ॥ कवचहि दीन्हे। रामकवच त्यहि ऊपरकीन्हे॥
भाष्यो द्रोण भूप अब लरिये। सन्मुख अर्जुनते रण करिये॥
दृढ़ ह्वै धनुषबाण कर धरिये। शत्रुनिपाति राज्यपुनिकरिये॥
सुनि अर्जुन कीन्हेउ सन्धाना। हृदय ताकिकै मारेउ बाना॥
निष्फल भये बाण सब टूटे। कवच प्रताप अङ्ग नहिं फूटे॥
अर्जुन देखि क्रोध जिय कीन्हे। तीक्ष्ण बाण दिव्य कर लीन्हे॥
मारेउ दुर्योधनके अङ्गा। भेद न भये बचे सब अङ्गा॥
तब पारथ यहि भांति बखाने। अहो नाथ यह भेद न जाने॥
सुनि श्रीपतियहिभांति बुझाये। कवच भेद नृप द्रोण बताये॥

द्रोणकवचपढ़िकै दये, बाण न फूटतअङ्ग।
ताकारणपारथ सुनहु, होतसकल शरभङ्ग॥

तनिकै शर परिहारे। चरिउ तुरंग सारथी मारे॥

विरथ भयो दुर्योधन जाना । तब गुरु द्रोण बाण सन्धाना ॥
पञ्च बाण पारथ उर मारे । कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे ॥
अश्वन तनु मारे दशबाना । सहस बाण मारे हनुमाना ॥
पारथ कोपि गहे शारँग कर । होनलागिअति मारुपरस्पर ॥
तब अर्ज्जुन ऐसे शर जोड़े । मारेउ रथके चारिउ घोड़े ॥
द्रोण अपर रथ किये सवारी । अर्ज्जुनद्रोण युद्ध भा भारी ॥
महारथी सब हतैं धनुर्द्धर । कठिनयुद्ध कीन्हेतेहिअवसर ॥
धर्मराय कीन्हे पुरुषारथ । सन्मुखरची शल्यसों भारथ ॥
क्षत्रिय सकल करत संग्रामा । कुरुपति धर्मराजके कामा ॥

बाणवृष्टि अतिहोहितब, शूलशक्ति परिहार ।
मुद्गर तोमर फरीकर, गदा खड़गकी मार ॥

सबहिअस्त्र क्षत्रिय परिहारहि । सन्मुखज्यहिपावहित्यहिमारहिं॥
यहि विधि युद्ध करे मनलाये । लै कर गदा भीम तब धाये ॥
गज अनेक मारे तरवारा । रथी अश्व पैदल संहारा ॥
देखि कर्ण कीन्हेउ सन्धाना । भीम अङ्ग मारे दश बाना ॥
रथ चढ़ि भीम धनुध करलीन्हे । बाणवृष्टित्यहिदलपर कीन्हे ॥
धृष्टद्युम्न दुश्शासन ज्वली । दोऊ जुरे महा बल अली ॥
कृपाचार्य कीन्हे सन्धाना । भिरे नकुल त्यहिरन मैदाना ॥
काशीराज द्रोण रण मरडे । बाणनते रिपु सेन विहण्डे ॥
काशिराज कीन्हेउ पुरुषारथ । बाणन ते छाये सब भारथ ॥
द्रोणो जङ्घ तीनि शरमारे । चारि बाण अश्वन परिहारे ॥

क्रोधवन्त द्रोणी भये, कीन्हेउ शर सन्धान।
द्रोण पर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान॥

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

सन्ध्या जानि किये विश्रामा। दोऊदल आये निज धामा॥
भूप युधिष्ठिर कहिबे लागे। मनमलीन मोहन के आगे॥
चौदह दिवस भयो रण भारथ। भीषम द्रोण सरिस पुरुषारथ॥
आपु युद्ध रचना जब कीन्हे। तब भीषम शरशय्या लीन्हे॥
गुरु कीन्ह सब सैन सँहारण। अब उपाय कहिये जगतारण॥
श्रीहरि आपु कहन असलागे। राजा धर्मराज के आगे॥
काल्हि प्रात याविधि रणकीजै। आज्ञा नृपति भीमको दीजै॥
द्रोणी फेंकि दूरि करि डारहिं। आपुद्रोणमरिहैं बिन मारहिं॥
कह्यो भीम सुनिये जगवन्दन। द्रोणपुत्त फेंको गहि स्यन्दन॥
यहिविधिकहि भूपहि समुझाई। शयन किये निद्रा तब आई॥
होत प्रात कीन्ही असवारी। कुरु पाण्डव साज्यो दल भारी॥
वम्ब दमामा होत हैं, अरु वैरख फहरात।
क्रोधवन्त रिससों भरे, वीर चले सबजात॥
महामत्त कुञ्जर वहु आवत। बुन्द मनहुँ घनशब्द सुनावत॥
...के गरद लागि असमानू। सूझि न परत विलोप्यउभानू॥
रत अरुण वैरख फहराने। उपमा इन्द्रधनुष समजाने॥

दोऊ दल अति शोभा पावत। हिंसत तुरँग जु पैदल धावत॥
धनु टङ्कोर घोर ध्वनि राजै। उभय फौजमहँ मारु विराजै॥
क्षत्रिय सकल करन रण लागे। अर्ज्जुन द्रोण कर्ण के आगे॥
श्वेत वर्ण पारथ रथ राजे। श्याम वर्ण रथ द्रोण विराजे॥
हांक देत हांकत जगतारण। सारथि भये भक्तके कारण॥
अर्ज्जुन द्रोण सरिस पुरुषारथ। दल चतुरङ्ग भयानक भारथ॥

दोउदलवीरन रण रचेउ, कहि न सकहिं कविवैन।
शरसमूह छाये गगन, रविनहिं सूझत नैन॥

कुञ्जर भिरत करत रण घोरा। होइ चौदन्त जोर सों जोरा॥
रथी रथी सों सरस लराई। छूटत बाण बुन्द की नाई॥
अश्वअश्वलै सन्मुख जोरहिं। शूलघाव सों वखतर फोरहिं॥
पैदल ते पैदल रण घोरा। अरुझे सबहिं जोरसे जोरा॥
शूल सांगि मुद्गर परिहारे। तोमर गदा खड्ग सों मारे॥
जूझि गिरहिं भारत मैदाना। सुरपुरगवनहिं चढ़े विमाना॥
यहि विधिकरहियुद्धकी करणी। रुण्डमुण्ड पाटे सब धरणी॥
भूत वितान योगिनी गावहिं। जम्बुक अपनोभावदिखावहिं॥
उड़हि काक अन्तहि लै कैसे। टटे डोरि चङ्ग गति जैसे
यहि विधि होतभयानक भारथ। क्षत्रिय सबै करत पुरुषारथ॥

गुरु द्रोण अति क्रोधकै, मारेउ तीक्ष्णबाण।
पाण्डव दल जूझे घने, छाये शर असमान॥

अर्ज्जुन बाण वृष्टि झरिलाये। कौरव दल बहु मारिगिराये॥
उरझे खेत जोरसों जोरा। लागे करन महारण घोरा॥
शूल सांगि मुद्गर परिहारे। सम्मुख जाइ खड़्ग शिर झारे॥
कोतल भये कटारन जोरहिं। जूझिजायँमुख नेकु न मोरहिं॥
जहां जहां अर्ज्जुन मन धावत। तहां तहां हरि रथ पहुँचावत॥
सारथि भये भक्तके कारण। करि तोजन हांकतजगतारण॥
पारथ करते जे शर छूटत। अङ्गभेदि धरणीमहँ फूटत॥
गुरु द्रोण उत बाण चलावत। पूर्व तश्यामरथ शोभा पावत॥
अर्ज्जुन कोपि कियो सन्धाना। द्रोण अङ्ग मारे शत बाना॥
गुरु द्रोण शर कोपि प्रहारे। सौ शर पारथ के उर मारे॥

तीस बाण अश्वन हने, लच्चबाण हनुमान।
पीताम्बर तनु अरुणकरि, महावीर बलवान॥

अर्ज्जुन देखि क्रोध जिय सरषे। गुरुपर लागि बाणबहुबरषे॥
पारथ द्रोण करत पुरुषारथ। बलसमदोउ करत महभारथ॥
दोऊ दल महँ लोहा बाजत। सिंहनाद चलौ गण गाजत॥
अर्ज्जुन द्रोण सरस शर क्षांटत। बाणन ते बसुधा सबपाटत॥
शरशर भिरत होत चिणगारा। योगिनि हांकदेत करिहारा॥
रथते उतरि भीम तब धाये। गदा घाव सब वीर गिराये॥
कृतवर्मा राजा सँग साथी। अश्वत्थाम नाम त्यहिहाथी॥
भीम उपर कुञ्जरजब धावा। बीचहिं अर्ज्जुनमारिगिरावा॥

द्रोण पुत्र कीन्हो सन्धाना। क्रोधित भीम जुरे मैदाना॥
गुरुसुतलग्यो कठिनशरमारन। पाण्डवदल रणगिरेउहजारन॥

भीमसेन अति क्रोधकै, गहि उठायकै रत्थ।
द्रोणसुतहि फेंक्यउ तबहिं, महावीर समरत्थ॥

तीनि शतहि योजन परिवेशा। विधिवशगयेउडेउ सो देशा॥
भुवनेश्वर शङ्कर अस्थाना। अमरहतेउनहिंत्याग्यउप्राना॥
चूरण भये सहित रथ सारथ। लाग्योधकत्याग्योपुरुषारथ॥
शङ्कर त्वरित नीर लै धाये। वदनसींचिकै विप्र बचाये॥
अर्जुन द्रोण सरिसरणमाच्यउ। जूझोधने अल्प दलबाच्यउ॥
सब सेना यहि भांति बखाना। जूझे द्रोण पुत्र मैदाना॥
निजसेना सों द्रोण बखानत। कितसुतगयोकहोतुमजानत॥
सब मिलि कहेंगुरु सों बैना। लरत भीमसों देख्यों नैना॥
की भाजो की जूझो रनमों। यहकछुजानिपरेउनहिंमनमों॥

कही द्रोण तब भीम सों, जुरो हुतो तुम सङ्ग।
कहा भयो सुत कित गयो, कहौ सांच रणरङ्ग॥

भाषो भीम गदा परिहारे। रथसमेत चूरण करि डारे॥
सुनिकै द्रोण चित्त अकुलाने। मिथ्या बात भीमकी जाने॥
कह्यो द्रोणसों पारथ बैना। वध्यो भीम देख्यो मैं नैना॥
अर्जुन वचन सुनत मन ऊबो। करुणासिन्धु बीच जो डूबो॥
कही कृष्ण तुम त्यागहु प्राना। पूर्व आपदा विधि निर्माना॥
अर्जुन के मन भयो अन्देशव। केहिविधि आपद पाई केशवो॥

श्री हरि कही सुनहु हो पारथ। अकथकथाविधिकी पुरुषारथ॥
तप साधत जब वनमहँ हते। मुनि सबके आश्रम यक मते॥
मुनि कुमार क्रीड़ा करत, सब मिलि एकै सङ्ग।
उद्दालक सुत कह्यउ तब, देखहु मेरो रङ्ग॥
बाघ समान शब्द जो कीन्हा। ऋषिनारिनकहँबहुभयदीन्हा॥
बोलत द्रोण कूदि ढिग आवा। शब्द वेधि इन बाणचलावा॥
सुख लाग्यो शर विधिकीकरणी। छूटे प्राण परेउ तब धरणी॥
सब बालक मिलि शोर मचायो। सुनिकैसकल विप्रगणधायो॥
द्रोणआइ देख्यो शिशु मर्‍यो। अपनो चित्तशोच बहुकर्‍यो॥
क्रोधवन्त उद्दालक भयऊ। द्रोणहिनिरखिशापतबदयऊ॥
पुत्रशोक हा त्यागत प्राना। तुम ऐसे मरिहो रण ठाना॥
यहिविधिशाप द्रोण कहँ दीन्हा। तब द्विज प्राणत्यागसो कीन्हा॥
वही समय अब आयो पारथ। मुये द्रोण जीते हम भारथ॥
भाष्यो द्रोण कृष्ण सों वचना। करत सदा तुम मिथ्या रचना॥
भूप युधिष्ठिर बूझिके, तब त्यागहि हम प्रान।
मिथ्या कहत न धर्मसुत, सदावचन परिमान॥
अबहि द्रोण यह वचन सुनाये। तब हरि धर्मराइ ढिग आये॥
तबहि द्रोण राजाके आगे। कर उठाइ कै पूंछन लागे॥
सत्यवचनतुनसबदिनभाष्यउ। हमदृढ़ता तुम ऊपरराख्यउ॥
सुत तुम देखो नैना। हे नृप सत्य कहो यह बैना॥
हरि कहो भूप कहि दीजै। अपनेकाज कहा नहि कीजै॥

कहौ भूप सुनिये जगतारण । मिथ्यावचनकहहुँकाहिकारण ॥
सात द्वीप सम्पति जो दीजै । तऊ कृष्ण मिथ्या न कहीजै ॥
तब श्रीहरि अस कहा बखानो । क्यहि कारण तुम भारतठानो ॥
जबहिं भूप पांसा मन लाये । तब यह धर्म विचार न आये ॥
राजा द्रुपदसुता पटरानी । गहिकर केश सभामहँआनी ॥

दुश्शासन अञ्चल गहे, हरण चीरके काल ।
तब यह धर्म कहां रहै, भाष्यो दीनदयाल ॥

तुम जब लाज छांड़िकै दीन्हेउ । द्रुपदसुताममसुमिरणकीन्हेउ ॥
ये बातै विसरीं क्यहि कारण । यहिविधिकहीजगतकेतारण ॥
लाख भवन कुरुनाथ बनाये । अर्द्धरात्रिमहँ अनल लगाये ॥
विदुरखम्भ को मारग लयऊ । तब तव धर्म कहां नृपगयऊ ॥
जब भीमहिं विषभोजनदीन्हेउ । सुरसरिबोरिगमनघरकीन्हेउ ॥
पुर पताल को नागहि गयऊ । तब यह धर्म कहां तव रह्यऊ ॥
कृष्ण वचन नृपके मन आये । तब द्रोणहिं याविधिसमुझाये ॥
अश्वत्थामा हत रण भयऊ । कहि नर की कुञ्जर कहि दयऊ ॥
आधे वचन द्रोण सुनि पाये । आधे महँ हरि शङ्ख बजाये ॥
सुनिकै द्रोण सत्य करि जानो । अपनो मरण हृदयमहँ आनो ॥

यहि अन्तरमहँ सप्तऋषि, गगनपन्थमहँ आय ।
भरद्वाज मुनि साथलै, द्रोण हिंकहा बुझाय ।

तुम ऋषि वंश महा अभिमानी । चलौ धर्म करत अज्ञानी ॥

अस्त्रघाव जो प्राण गँवावहु। तौ तुम स्वर्गवास नहिपावहु॥
मुनि सब देखि दण्डवत कीन्हे। तबकरजोरि कहनकछुलीन्हे
तुम आज्ञा माथे पर लीजै। ब्रह्मरन्ध्र भेदन अब कीजै॥
धरो धनुष झारी कर लीन्हो। कैआचमन देह शुचिकीन्हो॥
अङ्गन्यासकरि नासहि गयऊ। धरिकर ध्यान मौनह्वै रहयऊ।
यहि अन्तर विराट नृप आये। सिंहनाद कै हांक सुनाये॥
द्रोण संभारि अस्त्रकर गहहू। मारतहौं तीक्षण शर सहहू॥
सुनिकै द्रोण क्रोध जिय कीन्हा। ध्यानछांड़िशारँगकरलीन्हा

दिव्यबाण सन्धानिकै, किये द्रोण परिहार।
मुकुटसहितशिरटूटिकै, परयोधरणिविकरार॥

भाषो ऋषिन द्रोणके आगे। छांड़िध्यान तुम लरिवेलागे॥
दोउकरजोरि द्रोण तब कह्यऊ। वीरहांकसुनि ज्ञान न रह्यऊ॥
ताते मैं विराट वध कीन्हे। यह कहि बहुरि नीरकरलीन्हे॥
करि अस्नान ध्यान दृढ़ साधो। परमज्योति मनमों अवराधो॥
खैंचो पवन ऊर्ध्वगति ध्याये। ब्रह्मरन्ध्र भेदन कहँ आये॥
निसरो पवन ऊर्ध्व गति भयऊ। हरि अर्ज्जुन देखन को गयऊ।
भरद्वाज ऋषि सप्तक जेते। ब्रह्मलोक सँग पहुँचे तेते॥
भारत मन चलो तब लाये। धृष्टद्युम्न क्रोधितहोइ धाये॥
रथते उतरि खड़्ग लै हाथा। मारो जाय द्रोणको माथा॥
[illegible]मसेन परो तनु धरणी। द्रुपदपुत्रकीन्हेउ यहकरणी॥

पाण्डवदल जय जय करत, जीतिखड़ मैदान।
कौरव दलहिं मलीन मन, ज्योंसध्याकोभान॥

तब रथ हांकि कर्णचलिआये। आगे है सेना अटकाये॥
संध्या जानि कीन्ह तब गवना। कुरु पाण्डवआयेफिरिभवना॥
आगे कथा कहन मन लायउ। अश्वत्थाम कछु चेतन पायउ॥
दोउ करजोरि शम्भु के आगे। यहिविधिविनयकरन तबलागे॥
फेंको रणते भीम भयङ्कर। प्राणदान दीन्हेउमोहिंशङ्कर॥
यहिविधि वर दीजै मोहिं स्वामी। होहुँ जगतमैं मनसागामी॥
आजु रात्रि पहुँचो कुरुखेता। कुरु पाण्डव जहँ सेन समेता॥
शङ्कर कही विलम्ब न लैहो। एक पहरमहँ जाइ तुलैहो॥
पहर एक महँ आयो तहँवा। दलसमेत कुरुपतिरहजहँवां॥

दुर्योधन भाषन लगे, द्रोणी सुनिये बात।
आजु युद्ध जूझेगुरू, धृष्टद्युम्न असि घात॥

सो सुनि द्रोणी कीन्हेउ क्रोधा। पाण्डव सहित वधौं सबयोधा॥
धृष्टद्युम्न मारौं मैदाना। तब पितुहिं देहौं जलदाना॥
यह सब कथा यहांतक रह्यो। धर्मराय उत हरिसों कह्यो॥
तुम आज्ञा मैं मिथ्या कह्यो। इहै शोच मेरे मन रह्यो॥
मिथ्या दोष रहो है माधवौ। नहिंजानोंकरिहैं विधि का धवौ॥
श्रीहरि कही सुनहु नृपज्ञानी। धर्म कि गतिसूक्ष्मयहजानी॥
मिथ्या कहिकै स्वर्ग सिधाये। सांच कही ते नरकहि पाये॥

समय विचारि बात जो कहिये। अन्तकालमहँ तो सुख लहिये॥
धर्मराय परशंसा कीन्हा। हरिसों कथा सुपूंछि लीन्हा॥
तब श्रीहरि यह कहेउ बुझाई। नृप हरिचन्द राज्य जब पाई॥

सत्य धर्मपथ नेमव्रत, सबहि चलतसंसार।
साह भवन मूसन गयो, गहो चोर कोउ बार॥

लैकै नृप आगे त्यहि कीन्हा। वधहु तुरत यह आज्ञादीन्हा॥
तब कोतवार मारिबे लाग्यो। बन्धन तोरि चोर तब भाग्यो॥
ऋषिआश्रमके निकटहि आवा। देख्यो लता सघनद्रुमछावा॥
चोर दूत नृप देख न नैना। यहि विधि छिपेउ दुहांमनु है ना
आइ गये सब पाछे लागे। कह्यो जोरिकर ऋषिके आगे॥
चोर एक भागो इत आवा। सत्य कहौमुनि जो लखिपावा॥
तब ऋषिकह्यो सत्य यह वैना। लता ओट मै देख्यों नैना॥
लै कोतवार बान्धि तेहि टर्‍यो। तब नृप चोरकेर वधकर्‍यो॥
यह अपराध ऋषय शिर पर्‍यो। अन्तकाल नरकहिथलकर्‍यो॥
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी। समय जानिकै बोलिय बानी॥
सत्यवचन सो भाषिकै, परोनरक अतिघोर।
हत्या लाग्यउ विप्रकहँ, नृपवधकीन्हे चोर॥
मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई। श्रीमाधव यह कथा सुनाई॥
... : त्रेता अवतारा। चलिन मारि उतारेउ भारा॥
ना वैर कारण व्रत लीन्हे। इक्कइस बार निछत्रक कीन्हे॥

भूप सुबाहु वधो बल भारी । पुर हस्तिना केर अधिकारी ॥
भूपमारि सेना सब जीते । भागे युग कुमार भय भीते ॥
भृगुपति तिनके पाछे धाये । विप्र भवनमहँ बालक आये ॥
महात्रास तब वदन सुखाने । हिमऋतुमनहुँ कमल कुम्हिलाने ॥
द्विजके चरण गिरे द्वउ बालक । शरणागत कीजै प्रतिपालक ॥
परशुराम त्यहि अन्तर आये । महाक्रोध करि हांक सुनाये ॥
बालकवेगि निकरिनहिं आवत । नहितौयहिघरआगि लगावत ॥

समय होय तब विप्रवर, परे चरण महँ आय ।
स्वामी यह कारण कहा, आपुहि आयोधाय ॥

क्षत्री के बालक दुइ आये । तेरे भवन देखि हम पाये ॥
देहु निकारि तुरत बध करऊं । तब अपने भवनहिंअनुसरऊं ॥
दुइ बालक मेरे घर अहंई । हैं द्विज जाति पढ़नइतरहंई ॥
परशुरामकह बालक लावहु । तुरतआनिकै मोहिंदिखावहु ॥
विप्र कहो चलिये अब भवना । अभिअन्तर कहँ कीजै गवना ॥
जब द्विज अभिअन्तर लै आयो । द्वउबालक तबआनिदिखायो ॥
परशुराम देखत अनुमाना । क्षत्रियकरिनिश्चयजियजाना ॥
मिथ्या कहौ विप्र क्यहि कारण । हैं क्षत्री दीजै मोहिं मारण ॥
कोटि शपथ कै विप्र बखाना । द्विजबालकहमनिश्चयजाना ॥
रन्धन करि बालकके हाथा । भोजन करहु विप्र इनसाथा ॥

सोसुनि विप्र अनन्दह्वै, कररिन्धन शिशुहाथ ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं, खायो एकहि साथ ॥

परशुराम तब क्रोध निवारेउ। उठिकै अपने भवनसिधारेउ॥
मिथ्या कहिकै जाति गँवाये। अन्त विप्र वैकुण्ट सिधाये॥
संशय धर्म्म भूपके कारण। यहिविधि आप कहीजगतारण॥
श्रीमाधव यह आप बखाने। भूप-युधिष्ठिर सुनिसुखमाने॥
कहौ कृष्ण राजा सुनि लीजै। प्रात होत रण उद्यम कीजै॥
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ। पन्द्रह दिवस बीतिगा भारथ॥
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं। कुरुपति कर्णमुकुटशिरधरिहैं
तयदिन कर्ण सेनके रक्षक। महामार करिहैं परतक्षक॥
सुरपति शक्ति लई यहि कारण। कर्ण वीर अर्ज्जुनके मारण॥
जो अर्ज्जुन कहँ देखन पैहै। वज्रशक्ति सों कौन बचैहै॥

धर्मराय यहिविधिकही, सुनिये श्रीभगवान।
पांडव सङ्कट परहिं जब, तुम रक्षकपरधान॥

दीनबन्धु जाके रथ सारथ। मारि सकै को रणमहँ पारथ॥
कुरुपति जरत सेनबल कारण। मेरे बल तुमहीं जगतारण॥
यह सुनि कृष्णबहुतसुखमान्यो। नृपकहँ परम हितूकै जान्यो।
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये। करि आदर आसन बैठाये॥
तुम बल यह भारत हम ठाना। मृत्यु शेष आयो नियराना॥
मुकुट बाँधि सेनापति हूजै। अर्ज्जुन रण समता नहिं दूजे॥
कर्ण राजा सुनि लीजै। आप दुःख केहि कारण कीजै
ख्यो मेरो पुरुपारथ। पांडव सैन्य वधौं रण भारथ॥

तीनि दिवस मोरे शिर भारहिं । निश्चय अर्ज्जुन बन्धु सँहारहि
सुनिकै दुर्योधन सुख पाये । सेनापति करि मुकुट बँधाये ॥

पांडवके रक्षक सदा, भक्तवश्य भगवान ।
द्रोणपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

इति द्रोणपर्व समाप्त ।

— - —

महाभारत।

कर्ण पर्व ।

प्रथमहिं करि गुरुचरण प्रणामा । जाते होहिं सिद्धि सबकामा ॥
वन्दौं रामचन्द्र गुणसागर । सीतापति रघुवंश उजागर ॥
महिमाअगम और नहिजाना । परमभक्त जानत हनुमाना ॥
शुक्ल पक्ष आश्विनको मासा । तिथिपञ्चमियहकथा प्रकासा ॥
संवत सत्रह शत चौबीशा । नौरंगशाह दिलीपति ईशा ॥

रघुपति चरण मनाइकै, व्यासदेव धरिध्यान ।
कर्णपव भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

गुरु द्रोण जूझे मैदाना । दुर्योधन तब आपु बखाना ॥
द्रोणी कर्ण शल्य सम शत्रौ । अरु अनेक बैठे हैं च्तत्रौ ॥
अब काके शिर मुकुट बन्धैये । जाते जयतिपत्र रण पैये ॥
द्रोणी कह्यो भूप सुनिलीज । आपु शोच केहिकारण कीजै ॥
को मेरे शिर दीजै भारा । नातरु कर्ण करहु सरदारा ॥
वैसुन कर्ण महाबल भारी । अर्जुन के समान धनुधारी ॥

तब राजा यहि भांति बखाना । गुरुसुत वचन कह्यो परमाना ॥
शकुनी शल्य दुशासन भाखो । दलको भार कर्णपर राखो ॥
कही द्रोण कुरुनाथ सुवारा । जो सौंपत मोरे शिर भारा ॥
करिकै जुद्ध पाण्डवन मारहुँ । सेना सहित न एक उबारहुँ ॥
अर्ज्जुन सहित एक गुण भारथ । मनगामी श्रीपति हैं सारथ ॥
कृष्ण समान सारथी पावों । कोटिन अर्ज्जुन मारि गिरावों ॥

शकुनी कह्यो विचारिकै, दुर्योधन सों बैन ।
शल्य सारथी कृष्णसम, और न देखों नैन ॥

मामा शल्य रचहु पुरुषारथ । कर्णरथहि होवहु तुम सारथ ॥
कही श य नृप लोग न थोरे । कर्णरथहि हम हांकहि घोरे ॥
कुरुपति कही शल्यसुनुराजा । कहा न कीजतु अपने काजा ॥
सारथि होहु हमारे स्वारथ । कृष्ण समेत जीतिये पारथ ॥
करगहि नृप बहुभांति बुझाये । शल्यहि लिये कर्ण पहँआये ॥
कृष्ण समान सारथी लीजै । रणमहँ सब पाण्डववध कीजै ॥
सुनिकै कर्ण अनन्दहि छाये । धाइ शल्यकहँ कण्ठ लगाये ॥
शल्य नरेश सारथी मेरो । अब अर्ज्जुन सम बधौं घनेरो ॥
कृष्ण शल्य सम सारथि दोऊ । इकते एक सरिस नहिंकोऊ ॥
विप्रन सकल वेदध्वनि कीन्हे । मुकुट नरेश कर्णशिर दीन्हे ॥
तब दिन मेरो मित्र भरोसो । अर्ज्जुन सहित जीतिहैं केशो ॥

सेनापति कर्णहि किये, मुकुट बांधिकै शीश ।
धर्मराय सों दूत कहत, सत्यसिन्धु जगदीश ॥

अब अनर्थ उपजा अतिभारी। रविसुत कुरुसेना अधिकारी॥
लिये बोलि सहदेवहि आये। सब मिलिमन्त्रविचारन लाये॥
कही कृष्ण कुन्तीपहँ जैये। पांचो बाण मांगि लै ऐये॥
जे शर परशुराम तेहि दीन्हे। अर्जुन वधन प्रतिज्ञा कीन्हे॥
नितप्रति वह पूजत है बाना। पारथ पर करिहै सन्धाना॥
तब हमहू नहि सकैं बचावन। यहि विधि कही पतितकेपावन॥
हम नीके जानत हैं भेवा। को पूंछहु मन्त्री सहदेवा॥
को कुन्ती जानत है तनमों। पाप धर्म दोऊ हैं मनमों॥
सुनतहि कर्ण विलम्ब न लइ है। माता जानि त्वरितसो दइहै
सुनि कुन्ती उठि कीन्हेउ गवना। आई त्वरित कर्णके भवना।
उठिकै कर्ण किये परणामा। मातु गमन कीन्हे केहिकामा॥
सुनि कुन्ती यह बात जनाई। अर्जुन कर्ण सहोदर भाई॥

जेठे धर्मज पुत्र तिन, लह्यो राज्यके भार।
जन्मे मेरे उदर महँ, आये यहि संसार॥

सुनिकै कर्ण कही यह बाता। चत्री धर्म कठिन है माता॥
दुर्योधन कीन्हे प्रतिपालक। अब तुम कही हमारे बालक॥
अशन वसन बहु भांति बड़ाई। दुर्योधन दीन्हो प्रभुताई॥
उन यह युद्ध रच्यो मेरे बल। ऐसे समय कहा कीजे छल॥
सातद्वीप इन्द्रासन पावों। तौयहिसमय न चित्तडोलावों॥
तब कुन्ती मांग्यो सो बाना। कर्णदीन्ह मन भयनहिंआना॥
जे दिनकर दीन्हयों ते बाना। माताको दीन्हो करि दाना॥

कर्ण भये सेनापति आई । इन्द्रलोक महँ परी जनाई ॥
सुनिकै इन्द्र चितहि दुखमानो । अब अर्ज्जुनको भयो निदानो ॥
सुत सनेहहित तुरत सिधाये । चढ़ि विमान कुरुखेतहि आये ॥
रथते उतरि द्वार पगुधारे । कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे ॥
द्रोणी तब तहँ आय जनायो । देवनाथ द्वारेपर आयो ॥
आतुरचल्यो बहुत सुखमाना । अपनोजन्म सफलकरिजाना ॥
परदच्छिणा प्रणाम जनाये । चरण रेणु लै माथ लगाये ॥
आजु सफल दिन भयो हमारा । देवनाथ द्वारे पगु धारा ॥
तुम तौ तीनि लोक के स्वामी । कहियजानिआपनअनुगामी ॥
सहसनयन तब कहा विचारी । सुनहु कर्ण यह बात हमारी ॥
दानी बड़े श्रवण सुनि पायो । हमहूं कछु मांगनको आयो ॥
कहौ सत्य जो मांगे दीजै । तब तुमते याचज्ञा कीजै ॥

कही कर्ण आनन्दसों, कियो सत्य यह जान ।
नाहि न कीन्हा जन्मभरि, दीजै तन धन प्रान ॥

मेरो कर्म्म सबन सों भारो । जा सुरपति भयो आयभिखारी ॥
मांगौ तुर्त गहरु जनि लावहु । जो इच्छाकरिहौ स्वइपावहु ॥
दाता हौ सब लोक बखाना । कुण्डल कवच दीजिये दाना ॥
जन्म समय जो दिनकर दीन्हा । ते हम अब याचज्ञा कीन्हा ॥
सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ्यो । तालछोरिकै कवचहि काढ्यो ॥
हँसिकै कर्ण इन्द्र कर दीन्ह्यो । साधु साधु सब देवनकीन्ह्यो ॥
देवराज तब बाहर आये । चढ़ि विमान च ...वे   ल   ॥

रथ अटको धरणी अति जोरं। हांकि थके मातलिसों घोरं॥
चकित ह्वै तब कह्यो पुरन्दर। अचल विमानभयोज्योंमन्दर॥
तब मातलिं यहिभांति वखाना। पापभार नहिंचलत विमाना॥
सुर राजा याचणा लायो। भरो पाप रथ चलै न पायो॥
धन्य कर्ण जग मैं यश पायो। जिन सुरपतिको हाथ वँधायो॥

कह मातलि तब इन्द्रसों, वचन सुनौ परिमान।
कर्णहि हाथ उठाइये, जाहि अकाश विमान॥

सुनिकै इन्द्र कर्ण पहँ आये। धन्यधन्य कहि वचन सुनाये॥
मांगहु वर जो इच्छा होई। तव समान दाता नहि कोई॥
सुनिकै कर्ण कहै मनलाये। अक्षर चारि न गुरू पढ़ाये॥
नाहिन पढ़े ज्ञान मो अपने। कहूं कह्यो जागत नहि सपने॥
कही इन्द्र यह हठहि तुम्हारो। निष्फल दर्शन होइ हमारो॥
माँगहु वर तुमको कछु दीजै। तब हम गमन अमरपुरकीजै॥
कही कर्ण माँगहुँ नहि मुखते। लियो चहहु तो देहौं सुखते॥
निकरहिं प्राण देह वरु छांड़ै। कवहुँ न कर्ण हाथको वाड़ै॥
कह्यो इन्द्र जब दानहि दीजै। विप्रमुखहिं कछुआशिषलीजै॥
परशुराम धनु विद्या दीन्हे। तब तुमचरण परशिकै लीन्हे॥
कह्यो इन्द्र यहनीति विचारो। सुनो कर्ण यक वचन हमारो॥
जतो होइ दान जो लेई। ताकहँ दोष कोउ नहि देई॥

कर्ण हस्त गहि लीजिये, विदित वेद यह वैन।
भाष्यो व्यास विचारिकै, जहां देन तहँ लैन॥

कही कर्ण जो अति हठ कीजै। वज्र शक्ति स्वहिं माँगे दीजै॥
सुनि कै इन्द्र शक्ति तब दीन्हे। बहुरि वचन यहकहिबेलीन्हे॥
वज्र शक्ति जानत संसारा। यहतौ है निज अस्त्र हमारा॥
कर्ण वीर जेहि यहे चलैहै। ताहि मारि मेरे कर ऐहै॥
चढ़े आइ रथ कीन्हश्रो गवना। आये धर्मराय के भवना॥
राजा देखि दण्डवत कीन्हा। हृदय लगाय शक्र तबलीन्हा॥
सुरपति कृष्णहिं भेद सुनाये। कुण्डलकवच माँगिहमलाये॥
कुण्डल श्रवण मृत्यु नहि होई। कवच भेद भेदहि नहिं कोई॥
ता कारण दोऊ हम लीन्हे। तेहि ते वज्रशक्ति उन दीन्हे॥
अर्जुन कर्ण वैर है भारी। तुम रक्षा करिहो बनवारी॥
कहि सुरसाइँ गमन तब कीन्हे। धर्मराय शयनहिं मन दीन्हे
प्रात होत दोऊ दल साजे। शब्द अघात बाजने बाजे॥

गज काछे हय पाखरहि, जोते सारथि रत्थ।
पहिरि सजो दल अस्त्र लै, चढ़े वीर समरत्थ॥

शल्य नरेश आपु रथ साजे। पहिरि सनाह कर्ण दल गाजे॥
द्रोणी वीर दुशाशन चढ़ग्रो। अरु अनेक वीरनमनबढ़ग्रो॥
शकुनी कृतवर्मासे चली। दुर्मष दुरद महाबल अली॥
दुर्योधन रथ सोहै कैसे। इन्द्र विमान देखिये जैसे॥
यहि विधि चढे साजि सब सैना। कही कर्ण राजासों वैना॥
अक्षयतोण धनञ्जय बांधे। घटन नाहिं कोटिनशरसांधे॥

मेरे रथ जो शर पहुँचैहो । रणमहँ विजयपत्र तब पैहो ॥
राजा कहो धरो जनि धोखा । दोऊ हाथ चलत शर चोखा ॥
दशहजार हाथिन पर लादे । चिन्नितसबहि एक नहिं सादे ॥
दशहजार भरि ऊंट लदाये । दशहजार गाड़िन भरवाये ॥
बीसहजार कहारन दीन्हे । चलेसाथसब बंहिगिन लीन्हे ॥
कनक फोंक अतितीक्षणधारा । गीधपक्षते सबहिं सवारा ॥

कुरुपति चलेउ साजिदल, सेना सिन्धु समान ।
कर्ण तेज द्युमि देखिये; मनहुँ दूसरो भान ॥

श्वेत पीत बैरख फहराने । अरुणश्यामरँगसबुज सोहाने ॥
यहिविधि ते कीन्हे उदलसाजा । बाजन लाग युद्धके बाजा ॥
धर्मराय कीन्हेउ असवारी । श्वेत गयन्द महाबल भारी ॥
भीमसेन अति शोभा आये । नकुल वीर सहदेव सोहाये ॥
धृष्टद्युम्न लीन्हे सब साथा । चढे तुरङ्ग अस्त्रगहि हाथा ॥
अर्जुन रथ कीन्हेउ असवारी । जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
पीत वसन तनु शोभितनीका । भालउदित हरिचन्दनटीका ॥
बाजन बजत शब्द आघाता । श्रीहरि कहो भीमसों बाता ॥
धृष्टद्युम्न को साथहि लीजै । सन्मुख युद्ध कर्णचित दीजै ॥
भीमसेन यह साहस करिये । कर्ण वीरके सन्मुख लरिये ॥
[illegible] कहो सुनहु जगतारण । यहिविधिआपकहेउ केहिकारण ॥
[illegible] रथ आगे ह्वै लरिये । सन्मुख युद्ध कर्णसों करिये ॥

अर्ज्जुन सुनिये मन्त्र यह, भाषेउ श्रीभगवान ।
कर्णपर्व भाषा रच्चेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

जौलौं शक्ति कर्णके हाथा । करौ युद्ध जनि वाके साथा ॥
इतना कहा हमारो कीजै । चलो जाय द्रोणी रण लीजै ॥
दोऊ दलमहँ बाजन बाजैं । हांक देत क्षत्रिय गण गाजैं ॥
गज सों गज रथसों रथ जोरे । सुख लागत हिंसतहैं घोरे ॥
पैदल सों पैदल अरुझाने । महावीर सब बांधे बाने ॥
बर्ष बाण सकै को भाषन । शतते सहस सहसतेलाखन ॥
शल्य सारथी रथहि चलायउ । आगे कर्ण पेलिकै आयउ ॥
गहे धनुष कर बाणहि फेरत । अर्ज्जुन कहां हांक दै टेरत ॥
सुनिकै भीमसेन तब धायउ । इस्थिररहौनिकटनहिं आयउ ॥
यह कहि बीसबाण कर लीन्हे । ते शरचोट शीशपर कीन्हे ॥
करि सन्धान कर्ण तब भाषेउ । जुरेउ आपु अर्ज्जुन कित राखेउ ॥
बाण पचीस भीम उर मारे । सात बाण अश्वन परिहारे ॥
इतहि कर्ण उत भीमसों, युद्ध भयो अतिघोर ।
महारथी सब हांक दै, जुरे जोरसों जोर ॥
शकुनी सहदेवहि संग्रामा । जुरे वीर अपने जय कामा ॥
नकुलहि कृतवर्मा सों भारथ । दोऊ सबल रच्यउ पुरुषारथ ॥

कुरुपति धर्मराइ तब सरसे। छूटे बाण बुन्द सम बरसे॥
घटउत्कचहि द्विरद संग्रामा। कुरुपति धर्मराइके कामा॥
शूल साँगि मुद्गर परिहारे। कोऊ गदा कोपि शिरमारे॥
खड़ग कटारी बाहहिं चोखे। लागत जहां रहत नहिं धोखे॥
कोऊ पाश साजि शिर मेले। अरस परस करि आगे पेले॥
भीम कर्ण ते सरस लराई। महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोड़े। मारे रथ के चारिउ घोड़े॥
विरथ भये भीमहि जब जाने। धृष्टद्युम्न तब साँरग ताने॥
यहि विधि सरस बाण सन्धाने। कुरुदल के शरछांह छिपाने॥
विरथहु भीम घात बनि आये। लैकर गदा क्रोध करि धाये॥

कर मुष्टिकाप्रहारते, मारेउ सेन अनन्त।
गदा घाव लोटत परे, मतवारे मयमन्त॥

देखि द्विरद आगे चलि आयउ। भीमउपर शतबाणचलायउ॥
द्विरदसङ्ग आये शत भाई। ते सब बाण वृष्टि झरिलाई॥
भीमहिं घेरि लगे शर मारन। इत अकेल उत वीर हजारन॥
द्विरद आइ मुद्गर परिहारे। भीमसेन बायें कर मारे॥
मुद्गर शीश परो तब धरणी। देखी सबन भीमकी करणी॥
द्विरदहिगिरत सबैमिलिधायउ। शूल शैल सबबाण चलायउ॥
बहुतक आनि गदा परिहारे। बहुतक आनि खडगशिरझारे॥
क्रोधित भीम भयो अति ताते। शतबन्धहु महँ बीस निपाते॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे। धृष्टद्युम्न कर मारेउ घोरे॥

शल्य सारथी रथ पहुंचावा । रहुरे भीम कर्ण अब आवा ॥
यह कहिकै मारे तीक्ष्ण शर । घायल ह्वैकै फिरै वृकोदर ॥
पांण्डव दल जूझे घने, लगत कर्णके बान ।
धर्मराइ यह देखिकै, कीन्हे शर सन्धान ॥
कर गहि धनुष कीन्ह सन्धाना । कर्ण अङ्ग मारे दश बाना ॥
अपर बीस शर पायल छूटे । ते सब शरहु हृदयमहँ फूटे ॥
हँसिकै कर्ण बाण दश लीन्हे । भूप अङ्ग शर भेदन कीन्हे ॥
अर्ज्जुन कहां दुरायहु भाई । तुम मोसों रण रचो लराई ॥
तुमते कहा करहिं पुरुषारथ । मेरे बल समान है पारथ ॥
शल्य सारथी कर्ण चेताये । बाँधौ नृपति घात भलि पाये ॥
जो लगि धर्मराइ लै आये । जयतिपत्र भारतमहँ पाये ॥
नागफांसको उद्यम कीन्हे । धर्मराइ खगपति शर लीन्हे ॥
तब भूपति कहँ पाछे घालेउ । धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ ॥
क्रोधित कीन्हेउ युद्ध भयङ्कर । मुण्डमाल दीन्हेउ गर शङ्कर ॥
द्रोणी सों अर्ज्जुन पुरुषारथ । कीन्हो महा भयङ्कर भारथ ॥
सहस बाण द्रोणी तब छांटे । आवत बीचहि पारथ काटे ॥
अर्ज्जुन द्रोणी रणमचो, छूटत बाण अनन्त ।
हय रथ पैदल गिरतहैं, मतवारे मयमन्त ॥
दूनों दल महँ परी लराई । सन्ध्याकाल आइ नियराई ॥
घटोत्कचहि तब कृष्णबखाना । आपुयुद्ध कहँ करहु पयाना ॥
माया युद्ध करिय यहि रूपा । मारो मिलि कौरवपति भूपा ॥

करत प्रणाम असुर सब धाये। कुरुसेनाके ऊपर आये॥
गगन पन्थ कीन्हो अंधियारी। वर्षहिबाण मनहु घनझारी॥
वृक्ष अनेक गगनते छूटत। लागत शिलासेन शिर फूटत॥
यहिविधिमारु भयानक कीन्हे। अन्धकार कछु जात न चीन्हे
सूझत नहीं हाथ गहि हाथा। कोउ न रहेउ काहु के साथा॥
अपने मन सांचो करि जानेउ। प्रलयकालअबआयतुलानेउ॥
दुर्योधन तब आपु पुकारे। कहां कर्ण हैं मित्र हमारे॥
मारहु असुर विलम्ब न लावहु। सङ्कटते अब मोहिं छुड़ावहु॥

कर्ण कहो राजा सुनहु, वधहुँ असुर जो आज।
वज्रशक्ति मेरे अहै, राखेउँ अर्जुन काज॥

आजु राति इस्थिर ह्वै रहिये। सबमिलिकै धीरजमनगहिये॥
राजा कहो कर्णसों ऐसो। अहो मित्र बोलत हौ कैसो॥
जो सब मिलि आजुनहिमहँमरिये। अर्जुनमारि कालहिकाकरिये
सांग शूल मुद्गर परिहारत। वृक्ष पषाण शीश पर डारत॥
अवजनि गहरु करो तुम भाई। मारि असुरकह देहु गिराई॥
कर्णपुकारि कहो यह बानी। राजा तुम तो बात न जानी॥
अहैं कृष्ण पारथके रक्षक। तिनउपायकीन्हेउ परतक्षक॥
मृतुग्र विना कोऊ नहिं मरहो। भये मृतुग्र को रक्षा करहो॥
धीरज धरहु करहु मन गाढा। मैं अब धनुष लिये करठाढा॥
शक्ति ते असुर न मारहुँ। कालहि युद्ध अर्जुन संहारहुँ॥

अर्जुन मारि जीतिहौं भारथ । कुरुपति करहु तुम्हारो स्वारथ ॥
राजा कही मतिहि बौरानी । आजुहि मरै कालहिको जानी ॥
कर्ण कही विधिकी रचित, टारि सकै सो कौन ।
मारतहौं अब असुरकहँ, रहैं सबै होइ मौन ॥
यहकहि वज्रशक्ति करलीन्हे । सहसनयनको सुमिरनकीन्हे ॥
ताकि असुरको कर्णचलायउ । छिटकीज्योतिअकाशहिआयउ ॥
लागी शक्ति असुर उर कैसे । लगत वज्र गिरिवर गिरिजैसे ॥
परयो भूमितल असुर भयङ्कर । मुण्डमाल लीन्हेउ सो शङ्कर ॥
गई शक्ति सुरपति के हाथा । बहुत अनन्द भये जगनाथा ॥
साधु कर्ण सेना सब भाषे । ऐसे समय कवन केहिराखे ॥
उभय सैन्य अपने गृह आयहु । सबमिलि खानपानमनलायहु॥
रोदन करै हिड़म्बी कैसे । बिछुरी गाय बच्छसों जैसे ॥
भीमसेन करुणा बहु कीन्हे । कृष्णदेव कछु कहिबे लीन्हे ॥
करुणा करहु कछू नहिं होई । जगमहँ अमर भये नहिंकोई ॥
कुरुदल महँ प्राण गवांये । आपु मरे अर्जुनहिं बचाये ॥

चली होय प्रणको धर, करै सतत्र परमान ।
कर्ण पर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

लय दश वर्ष छट भा देशहि। द्रुपदसुता नहिं बाँधे केशहि॥
जब यह बात कही वनवारी। छूटो शोक क्रोध भा भारी॥
घायल धर्मराय दुख पावा। अर्जुनसों यह वचन सुनावा॥
धृग अर्जुन धृग धनु शर तोरे। कर्ण बाण झरझर तनुमोरे॥
सो सुनि अर्जुन क्रोधहि पायउ। करगहिकै यदुनाथ बुझायउ॥
सेना सबहि शयन मन दीन्हे। प्रात होत रण उद्यम कीन्हे॥
कीन्हे बम्ब दमामें बाजे। सावधान चली सब गाजे॥
कर्ण तुरत अस्नानहिं कीन्हे। विप्रन बोलि दान बहु दीन्हे॥
पहिरि सनाह किये रण साजें। चहुँ दिशि भेरि दुन्दुभी बाज
माथे मुकुट विराजत कैसे। सूर्य्य प्रकाश अकाशहिं जैसे॥
शल्य सारथी जोते घोरे। चञ्चल चपल दिननके थोरे॥
खोदत महि फहरत हैं ठाढ़े। मानहुँ सिन्धु मथनके काढ़े॥

पाखर लाल लगाइकै, पुनि बांधे गजगाह।
चढ़े कर्ण रथ कोपिकै, मन लरिवेकी चाह॥

दुर्योधन कीन्हे असवारीं। साजी सेन महाबल भारी॥
भई बम्ब बैरख फहराने। चले वीर सब बांधे बाने॥
पाण्डवके दल बाजन बाजे। नन्दिघोष रथ श्रीपति साजे॥
पहिरिसनाह खड्ग कटि बांधे। अक्षय तूण विराजत काँधे॥
कर गहिधनुष चढ़े रथ पारथ। जोती गहे कृष्णसे सारथ॥
[illegible] कीन्हे असवारी। आगे भये भीम धनु धारी॥
चतुरङ्ग रङ्ग करि आवा। युद्धभूमि महँ शोभा पावा॥

मूर्ख महाउत ले अधिकारी। भिरे गयन्द युद्ध भा भारी ॥
दल चतुरङ्ग करत रण घोरा। उरझे सबै जोर सों जोरा ॥
कहो कर्ण अब रथहि चलावहु। अर्ज्जुनके सन्मुख पहुँचावहु ॥
मारौं आजु खेतमहँ पारथ। देख्यो शल्य मोर पुरुषारथ ॥
हँसि कै शल्य कही तब बानी। रविनन्दन यह बात न जानी ॥

हंस काग जैसो भई, तैसो भई निदान।
अबहिं कर्ण बल देखियो, भारत के मैदान ॥

क्रोधित ह्वै तब कर्ण बखाने। हंस काग को भेद न जाने ॥
भाषो शल्य कर्ण सुन वीरा। एक दिवस सरवरके तीरा ॥
राजहंस सब चले उड़ाई। सिन्धु पार महँ बनी चराई ॥
तिनसों काग कही अस बानी। हमकहँ साथ लेहु खगज्ञानी ॥
कही हंस तुम जाइ न पैहौ। मरिहौ बूड़ि पार नहिं लहिहौ ॥
कही काग गति सबहि उड़ैहौं। तुम सब साथ पार मैं जैहौं ॥
यह कहि चले हंस के सङ्गा। कोस चारिलै उपज्यो रङ्गा ॥
थको काग तब ढिगही आयो। बूड़त हौं यह वचन सुनायो ॥
कही हंस सुधि अबहिं भुलानी। अब काहे बूड़त जड़ ज्ञानी ॥
सुनिकै हंस निकट तब आयो। पीठिऊपर तब काग चढ़ायो ॥
फेरि बहुरि लाये यहि पारा। राख्यो काग नीबकी डारा ॥
सिन्धु पार सब गये उड़ाई। यह चरित हम देख्यो भाई ॥

शरसों सागर बान्धिकै, जिन जीते हनुमान।
शरपञ्जर रथ राखिकरि, तिनसों तुमहि समान ॥

जब विराटको गोधन गह्यऊ । ता दिनकर्ण कहां तुम रह्यऊ ॥
क्रोधित कह्यो कर्ण यह बैना । देखहु आजु युद्ध तुम नैना ॥
हांको रथहि विलम्ब न लाओ । अर्जुनके सन्मुख पहुँचाओ ॥
सुनिकै शल्य तेज रथहांको । पवन लगे फहरात पताको ॥
भीमसेन आगे ह्वै लीन्हे । बाण वृष्टि करिके मनदीन्हे ॥
तब कह कर्ण भीम तुम अहहू । अर्जुन कहां सो मोसन कहहू ॥
यहै कहत अर्जुन तब आये । नन्दिघोष रथ प्रभु पहुँचाये ॥
भाष्यो अर्जुन भीम सिधारो । दुःशासन सों युद्ध विचारो ॥
आजु कर्णसों यमहि लराई । पुरुषारथ देखो सब भाई ॥
यह कहिकै कीन्ह्यों सन्धाना । लागे सरस चलावन बाना ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे । आवत बाण बीचहीं तोरे ॥
दोऊ वीर बाण सन्धाना । शरके छाहँ छिपाये भाना ॥

अरस परस दोऊ प्रबल, कीन्ह्यो शर सन्धान ।
अन्धकार भा दिवसमों, सूझि परहि नहिं भान ॥

चले बाण कवि सकहि न भाषन । शतसों सहससहससों लाखन ॥
नन्दिघोष हांकत वनवारी । शल्यसारथी उत अधिकारी ॥
अर्जुन कर्ण करत मन जितको । कृष्णशल्य हांकतरथतितको ॥
अग्निबाण अर्जुन कर लीन्हे । पढ़िकैमन्त्र फोंक गुणदीन्हे ॥
चले बाण कौरव दल जारन । प्रकटीं शिखा हजारहजारन ॥
देखि कर्ण जल बाण चलाये । क्षण भीतर सब अग्निबुताये ॥
जलकी धार सेन विकलाने । पवन बाण अर्जुन सन्धाने ॥

परम वेग ताते जेहि ताका । टुटनलगे सब ध्वजापताका ॥
छांडे कर्ण सर्पके बाना । नागन कीन्ह पवन सबपाना ॥
तब अर्ज्जुन खग बाण चलाये । मोरन पकरि सर्प सब खाये ॥
दोऊ वीर चलावत हैं शर । बलसमान सो बली धनुर्द्धर ॥
धरणी जल अरु स्वर्ग पताला । बाण मारि सूखे सरि ताला ॥

पक्षी उड़ते गगन नहिं, ताको दिशा अँधार ।
देव न देखत युद्ध कछु, शर छायो संसार ॥

कोटिन अर्ब खर्ब शर छांट्यो । दोऊ दल बाणनते पाट्यो ॥
कुरु पांडव दल सब भरमाये । अर्ज्जुन कर्ण न देखन पाये ॥
दोऊ वीर सरस पुरुषारथ । कीन्हे महा भयानक भारथ ॥
चुच्छुक कहो कर्ण के आगे । अब मोकहँ सन्धान सभागे ॥
लीलों कृष्ण सहित रथपारथ । अब देखहु मेरो पुरुषारथ ॥
सो सुनि कर्ण वीर सन्धाना । चुच्छुकसहित त्याग तबबाना ॥
कहो कर्ण अर्ज्जुन संहारहु । आजुजानिबो तेज तुम्हारहु ॥
हांक मारिकै बाण चलाये । चुच्छुक प्रकट देह धरि आये ॥
देखत रूप भयङ्कर भावा । भादौंघटा उमड़िजनु आवा ॥
दरवि बाढि लाग्यो असमाना । फणके छांह छिपाये भाना ॥

रवि अछत निशि ह्वै गई, अर्ज्जुन भाषे बैन ।
अन्धकार कस देखिये, कहिये राजिव नैन ॥

तब श्रीहरि आये यहि बातन । पारथ सुनिये कथा पुरातन ॥
जब खाण्डव व दानहन कीन्हा । सारथि होइ जीती हमलीन्हा ॥

शर पञ्जर छाये तुम कानन। शतयोजन घेरे तुम बानन॥
तादिन रथ ऐसो मैं हांका। घुमरत मनहुंकुम्हारको चाका॥
खग मृग पशुजारतदवकानन। बाहेर होय न बचत है बानन।
घुर्मि नाम नागिनि जब जानी। तेजवन्त आकाश उड़ानी॥
तब तुम वेगवन्त शर छांटे। नागिनि गई पूंछ त्यहिकाटे॥
ताको सुत यह चुम्बुक नामा। बसै पताल शेषके धामा॥
करकोटकको पुत्त कहावा। बैर लेन भारत मों आवा॥
कर्ण तोण निवसत है तबसों। कीन्हो युद्ध अरम्भन जबसों॥
तब अर्जुन यह भेदइ जाने। क्रोधित बाण कीन्ह सन्धाने॥
अर्जुन क्रोध लगे शरमारन। शतते सहस सहस्र हजारन॥

अर्जुन मारत कोपिकै, नाहिन फूटत अङ्ग।
चुम्बुकके फण लागि कैं, होत बाणसबभङ्ग॥

गर्जत क्रोध सर्प जो कैसा। प्रलयकाल बोलत घन जैसा॥
चुम्बुक कही सुनौ हो पारथ। लीलत अहौं करौपुरुषारथ॥
यह कहि वदन कियो विस्तारा। मनहुँ उदरनहि अहहि पनार
जो शर अर्जुन के करछूटत। गड़ै न नेकु लागि सब टूटत॥
पाण्डव दल देखत भय माने। धर्मराइ अचरज करि जाने॥
नन्दिघोष रथ लीलै लीन्हेउ। हाहा शब्द देवतन कीन्हेउ॥
सुरपति देखि महाभय पायो। हनूमान सों ऐस जनायो॥
ावहु रथ सो आइ पताला। यहि विधिवञ्चितकीजियव्याला॥
ब्ल कीन्हेउ हनुमाना। रथगड़ि गयो पताल समाना॥

ुम्भुकके मुख पीत पताका। पवन लगे डोलत है बाँका॥
ोऊ दल कीन्हेउ अनुमाना। नन्दिघोष अहिउदर समाना॥
ुम्भुक फिरेउ कर्ण ढिगआवा। साधु साधु कहि कर्ण सुनावा॥

शल्य कही तब कर्णसों, झूंठ कहो क्यहि काज।
पारथको को ग्रासिहै, जेहि सारथि ब्रजराज॥

ाहि अन्तर हरि रथहि उठायउ। नन्दिघोष धरणीपर आयउ॥
ाण्डव दल देखत सुख मानेउ। तबहिं कर्ण सों शल्यबखानेउ॥
थ समेत देखहु यह पारथ। हनूमान रथ पारथ सारथ॥
कर्ण कही चुम्भुकसों बानी। मिथ्या तुम भाषेउ अज्ञानी॥
चुम्भुक कही भयो छल भाई। मैं तो कछु यह भेद न पाई॥
फिरि मोको कीजै सन्धाना। करौं ग्रसन पारथ भगवाना॥
कही कर्ण यह उचित न होई। बाण बटोरि चलाव न कोई॥
आश देइकै कीन्हे निरासा। पैहौ नाग नरकमहँ वासा॥
यह कहि नाग किये तब गवना। जैहो कर्ण कालके भवना॥
चुम्भुक जब भवनहिं शुभ कीन्हे। अर्जुन कर्ण युद्ध मन दीन्हे॥
कब आवे कब शर सन्धाने। कब छूटहि कोई नहिं जाने॥
यहि विधि करत युद्धकी करणी। अङ्ग भेदि फूटत शर धरणी॥

महावीर दोऊ भिरैं, करहिं अस्त्र परिहार।
रण देखत मुनिदेवगण, कठिन बजायें सार॥

अर्जुन कर्ण भयो रण घोरा। परो भीमदुःशासन जोरा॥
भीमसेन ऐसे शर जोरे। मारे रथके चारिउ घोरे॥

दुःशासन सारँग करलीन्हे । बाणन वृष्टि भीमपर कीन्हे ॥
चारि बाणते अश्व सँहारे । एक बाणते सारथि मारे ॥
शतशर भीमसेन उर लागे । क्रोध अनल तनु अन्तर जागे ॥
करगहि गदा भीम तब धाये । हांक मारि दुःशासन आये ॥
दोऊ वीर खेत महँ कैसे । महा मत्तगज उरझे जैसे ॥
करगहिगदा कोपि परिहारहिं । एकहि एक कोपकरि मारहिं
धमकत घाव लगेउ जबतनमें । बाढ़त कोप दोउके मनमें ॥
अस्त्र डारिकै दोउ लपटानेउ । क्रुद्धिततरलयुद्धअरुझानेउ ॥
करगहि कच मुष्टिक परिहारहि । शीशहि शीश कोपिकै मारहि
उरसों उर पेलत हैं दोऊ । पारिसकत नहिं टरते कोऊ ॥

भीमसेन अतिक्रोधकरि, अभिरत अमित अनन्त ।
आनि पछारेउ धरणिपर, मानहुँ सिंह गयन्द ॥

लरेउ भीम दुःशासन कैसे । व्याध कुरङ्ग पछारहिं जैसे ॥
कहेउ भीम दुःशासन वीरहि । खैंचत कस न द्रौपदी चीरहि
खेलहु पांशा कपट बनावहु । गहै केश द्रौपदि लै आवहु ॥
अवहि सबहिसुधिबिसरी भाई । मेरे चितहि आजु सब आई
भीमसेन कह नकुलहि धावहु । जाइ तुरत द्रौपदिलैआवहु ॥
पलमहँनकुलगयो चलिभवना । द्रुपदसुता अबकीजै गवना ॥
सेलेउ भीमसेन अभिमानी । हँसिकै चली आपु तहँ रानी ॥
आई तुरत बिलम्ब न कीन्हे । पीढ़े भीम दुशासन लीन्हे ॥
कहै पुकारि द्रौपदी रानी । सुनिये बात भीम तुमज्ञानी ॥

ऐसे तौ तुम पांच सहोदर। धन्य धन्य तुम धन्य वृकोदर॥
जब कीचक विराटपुर मारे। तादिन मेरे लाज निवारे॥
तन मन धनहि निछावरि कीजै। तोपर प्राण वारिकै दीजै॥

भीम भयङ्कर रूपधरि, कहेउ सुनौ दोउ सैन।
है कोऊ रक्षा करै, सो मोसे कहिये बैन॥

कुरु पाण्डव जेतेहैं छत्री। कृष्ण सहित यदुवंशी अत्री॥
असुर नाग नर सुरहु पुरन्दर। धरणी सिन्धु मेरु गिरि कन्दर॥
चन्द्र सूर्य तुम दोऊ साखी। तीनि लोक देखत हैं आंखी॥
रक्षा करहु दुशासन मारत। कहौ भीम हम भुजा उपारत॥
सुनि पारथके जिय रिस बाढ़ी। तीक्ष्णशर निषङ्गते काढ़ी॥
मारि भीम अब करौं निपाता। कैसेउ सहि न जातियहबाता॥
श्रीपतिकही उचित नहिं होई। आजु भीमसों जितहि न कोई॥
मैं नरसिंह रूप बल दीन्हा। भीम अङ्ग परवेशित कीन्हा॥
हांक मारिकै भुजा उपारे। रुधिर द्रौपदीके शिर डारे॥
शिरसों परत रुधिरकी धारा। द्रुपदसुता तब बान्धेउ बारा॥
अरुण वर्ण तनु सोहत कैसे। असुर युद्धमहँ देवी जैसे॥
द्रुपदसुता तब भवन सिधारी। अर्ज्जुन कर्ण रचेउ रण भारी॥

शरवर्षत हर्षत दोऊ, हांकत रथ भगवान।
कर्णपर्व भाषारचेउ, सबलसिंह चौहान॥

इति तृतीय अध्याय॥ ३॥

दोउ वीरहैं मेघ समाना। वर्षत बाणबुन्द अनुमाना॥
घन घहरात घहर रथ चाके। बकपांतीसम श्वेत पताके॥
ऐसेबाण गगन मों धावहिं। शर रोंकत शरपन्थ न पावहिं॥
कुरु पाण्डव दल नाहिन सूझै। अपन पराइ कोइ नहिं वूझै॥
गज अरु शकटहजारनधावहिं। कर्णरथहिवाननपहुँचावहिं॥

अर्जुन कर्णहिरणमच्यो, जलदबुन्द समवान।
सरस निरस कहिजातनहिं, रणोमण्डिमैदान॥

कर्ण पांचशर भालुक लीन्हे। लघु सन्धान किरीटनकीन्हे॥
दोऊ सारथि रथहि चलावत। वोहितमनहु सिन्धुमहँधावत॥
जूझो सैन लगे तीक्षण शर। होनलागि अतिमारु परस्पर॥
अर्जुन कर्ण करत रण करणी। रुण्ड मुण्ड मण्डग्रोसवधरणी॥
अर्जुन बाण कोपि परिहारयो। सहस पैग पाछे रथ टारयो॥
देखि कर्ण तब शर सन्धाना। मारयो नन्दिघोष तकिबाना॥
पैग अढ़ाइ पाछे टारयो। साधु कर्ण यदुनाथपुकारयो॥
सफल जन्म जग जीवन तेरो। बाण घात डोलत रथ मेरा॥
अर्जुन कह्यो सुनहु जगतारण। साधुवचनभाष्योक्यहिकारण॥
सहसपैग हम रथहि चलायो। पैग अढ़ाइ मम रथ आयो॥
तब श्रीपति बोले यह बानी। अर्जुन तुम यह भेद न जानी॥
नन्दिघोष रथ मेरु समाना। ध्वजपर परम भार हनुमाना॥

महा विश्वम्भर रूपधरि, हांकतहैं यह रत्थ।
टारो रविसुत बाणते, महावीर समरत्थ॥

ह सुनि बाण लगे परिहारन । जूझो सेना वीर हजारन ॥
र्ण कोपि भालुक शर लीन्हे । ते शर चोट शीशपर कीन्हे ॥
ण अङ्ग शतबाण प्रहारे । सहस बाण हनुमानहिं मारे ॥
याम शरीर रुधिर छबि छाये । पीत वसन तनु शोभा पाये ॥
अर्जुन को तनु झांझर कीन्हे । क्रोधित भये एक शर लीन्हे ॥
विनन्दन के उरसो मारयो । भेदि अङ्ग निसरो शिरपारयो ॥
बाण सहस्र शल्य उर दीन्हे । घायलकरितनुझांझर कीन्हे ॥
अरुण वर्ण देखत तनु भूले । मधुमहँ मनहुँ किंशुकी फूले ॥
यहिविधि कीन्ह्यो बाण दरेरो । दशहूँ दिशा दोउ रथ घेरो ॥
दोऊ रथ यहिविधि छबि पाये । पर्वत मनहुँ भूमिपर आये ॥
कही कर्ण अर्जुन सुनि लीजै । सावधान मोते रण कीजै ॥
अब यहिविधिते बाण चलावों । काटों शीश विलम्ब न लावों ॥

मारतहौं अब गहरु नहिं, कह्यो कर्ण यह वैन ।
सारथि ह्वै रक्षा करहु, प्रियतम पङ्कज नैन ॥

यह कहि नीलबाण कर लीन्हे । जो शर ऋषि दुर्वासा दीन्हे ॥
कृष्णदेव रणको मन दीजै । अब पारथकी रक्षा कीजै ॥
क्रोधित बाण किये सन्धाना । देखि शल्य यहि भांति बखाना ॥
जाके रक्षक श्रीजगत्ताता । ताको कर्ण कौन चह घाता ॥
हृदय ताकि मारेउ तव बाना । पलटि न करहुँ फेरि सन्धाना ॥
यह कहि धनुषकर्ण लगि ताना । कर्ण हाथ छूटयो तव बाना ॥
अन्तरिक्ष शर आवत कैसे । छूटै वज्र इन्द्र कर जैसे ॥

अर्ज्जुन लगे कठिन शर मारण। पै न सके यह बाण निवारण॥
आयो बाण कण्ठ तकिजबहीं। नन्दिघोष दाबेउ प्रभु तबहीं॥
छूटिके अश्व रथहि ढिग आयो। कटो मुकुट श्रीकृष्ण बचायो॥
मुकुट काटि शर वेधेउ धरणी। जगमें रही सदा यहकरणी॥
धन्य कृष्ण पाण्डव सब भाखा। दीनदयालु पार्थहि राखा॥

जाके सारथि चक्रधर, मारि सकै तेहि कौन।
अर्ज्जुन के रक्षक सदा, श्रीपति राधारौन॥

हांक देत हांकत हरि घोरे। अर्ज्जुन कोपि कठिन शरजोरे॥
दोऊ वीर बाण परिहारे। एकहि एक क्रोधते मारे॥
शर अनेक वर्षत हैं कैसे। श्रावण मेघ महा झरि जैसे॥
पक्षी गगन उड़न नहि पावत। शर लागत धरणीपर आवत॥
अरुणावर्ण आवे सँग आवहिं। शर समूहते पन्थ न पावहिं॥
ऐसे लाग चलावन बाना। शरपञ्जर छाये असमाना॥
जूझो सेना पन्थ न पावहि। लोथिनपर रथ हांकिचलावहि॥
गर्जत नन्दिघोषके चाके। पवन वेग फहरात पताके॥
शल्य सारथी रथहि चलावा। नन्दिघोष सम्मुख पहुँचावा॥
अर्ज्जुन कर्ण जुरे हैं कैसे। रघुपति सों रावण रण जैसे॥
इकते एक महाबल भारी। वर्ण शूर दोऊ धनुधारी॥
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ। रणसमबली कर्ण अरु पारथ॥

अर्ज्जुनकर्णहि रणमच्यो, छूटत तीक्षणबाण।
कौतुकत्याग्यो सुरगणन, भाजे छांड़िविमान॥

शल्यहि कह्यो कर्ण तब ऐसो । चाक भूमिपरसै नहिं जैसो ॥
जेहि दिन मैं विराट पुर घेरो । बैठौं गाइ अहीरन केरो ॥
तब सहदेव बुद्धि उपराजो । खुरदै बाँधि आपु उठि भाजो ॥
लाठी छाँड़ि बहुत विधि मारो । अचलगाइतनुटरत न टारो ॥
मैथुनि नाम गाय इक रहेऊ । क्रोधित ह्वै अस मोसन कहेऊ ॥
जैसे अचल भयो तनु मोरा । रथ अटकै भारत में तोरा ॥
चाके चारि ग्रसै जब धरणी । तब न बनै कछु तोसों करणी ॥
यह सुधि मेरे मनमें आई । सावधान हांको रथ भाई ॥
शल्य सारथी कीन्हेउ करणी । चाक छुवै नहिं पावत धरणी ॥
अर्ज्जुन कर्ण करत संग्रामा । पलभरनहिं पावत विश्रामा ॥
देव अस्त्रदुउ दिशि परिहारहिं । एकहि एक क्रोधकरि मारहिं ॥
गज रथ पैदल जूझे लाखन । महा मारु कोउ सकै न भाखन ॥

नदी भयङ्कर रुधिर की, गजन करारे जान ।
मरतमांस जलफेनसम, लहरी चमकै बान ॥

ढाल मनहुँ कच्छप उतराने । बार सेवार सरिस अरुझाने ॥
बखनर सहित परे धर जेते । ग्राह समान देखियत तेते ॥
गज शुण्डखण्ड टूटे कस जाने । मनहुँ सूसि जलमें उतराने ॥
चयत फरी लसत हैं कैसे । रुचिर पत्र पुरइनिके जैसे ॥
शूर शीश देखत दिग भूले । जैसे कमल सहस दल फूले ॥
मांस बहुतसम सरस सोहावा । नावचलत जिमि रथउतरावा ॥
रगि जंजीर जल शोभापावहिं । धीवरमनहुँ जाल छिटकावहिं ॥

भूत प्रेत करते स्नाना। योगिनि मनहुँ करैं सोपाना॥
जम्बुक गीध काकगण आवहिं। मांसखाहिं मनमोल चुकाव
नन्दी चढ़ि डोलत हैं शङ्कर। मुण्डमाल गर रूप भयङ्कर॥
गज शुण्डहिले योगिनिआवहिं। दै मुख बिचकर तालबजाव
नाचि कबन्ध देहि करतारी। कौतुक रचि रणभूमिहि भारी

आंत लपेटे गजचरण, किये पखाउज साज।
भैरवगण या बिधिफिरत, खेतभयङ्करलाज॥

यहि विधि युद्ध भयङ्कर भारी। दोऊ भिरे खेत परचारी॥
क्रोधित अरुण नैन भये कैसे। भोरहिं उदित दिवाकर जैसे
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे। घायल नन्दिघोषके घोरे॥
तीक्षण बाण कृष्ण उरदीन्हे। हनूमान तनु जर्जर कीन्हे।
तव अर्ज्जुन कीन्हे सन्धाना। कर्ण हृदयतकिमारेउ वाना॥
घायल किये शल्यसे सारथि। इकते एक सरस पुरुषारथि॥
वाणहिं त्यागत यहि व्यवहारा। जिमि वर्षा बरषै जलधारा
रविमण्डलमहँ शब्दसुनावहि। कर्णमारि अर्ज्जुन यश पावहि
सुरपति कही जीति हैं पारथ। मारौ कर्ण करहु पुरुषारथ
यहि विधि कहहिं देवगणवानी। सुनिकै शल्य अचंभव मानै
कोऊ कहूं लरो नहिं ऐसो। अर्ज्जुन कर्ण भयो रण जैसो॥
रुधिर प्रवाह चलै सब अङ्गा। महाशूर मन नेकु न भङ्गा॥

घोरयुद्ध यहि विधि करत, दोऊ वीर समान।
शल्य मारथी कर्णरथ, पारथरथ भगवान॥

भीमसेन कीन्हीं बहु करणी । परे वीर लोटत सब धरणी ॥
गजते गज हयते हय मारे । रथहि पकरि रथऊपर डारे ॥
सम्मुख जुरे गिरिरण जेते । गगन पन्थकहँ फेंकत तेते ॥
जे अभिरे ते सबहिं पछारे । बहुतक मींजि चरण ते डारे ॥
लागे वीर गदा सों मारण । दुर्योधनके बन्धु सँहारण ॥
ते सब बहुरि कठिन शर मारे । मुद्गर गदा शल्य परिहारे ॥
भूलि परे पर भीम न डरपे । मनहुँ बाज पच्छिनपर झरपै ॥
क्रोधित भये पाण्डुके नन्दन । यहिविधिकीन्हे सैन निकन्दन ॥
तब अर्ज्जुन छांड़े शर पायल । शल्यसहित रविनन्दनघायल ॥
कर्ण बाण ऐसे परिहारे । अर्ज्जुन हृदय ताकि कै मारे ॥
कही कृष्ण सुनिये अब पारथ । प्रणकहंसुमिरिकरहुपुरुषारथ ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे । हांकत पद ठहरात न घोरे ॥

अर्ज्जुन कर्णहि रण मचेउ, उपमा और न तासु ।
मारत शरके अग्र ते, उड़त गगन महं मासु ॥

सखा साथ धरणी के ऊपर । ग्रसो चाक गाड़ो रथ भूपर ॥
होनहार सो होय निदाना । विधि चरित्र कोऊ नहिं जाना ॥
भाषो शल्य कर्णसों ऐसा । अटको चाक चलत रथ कैसा ॥
सुनिकै कर्ण कियो दृढ़ ठाना । मारो नन्दिघोष तकि वाना ॥
सहस बाण अष्टवन उर मारे । थकित भये पगु टरत न टारे ॥
असी बाण मारेहु हनुमानहिं । शर अनेक घाले भगवानहिं ॥

तीनि बाण पारथ उर मारे। नन्दिघोष रथ टरत न टारे॥
कृष्णदेव हाँको रथ बांको। जैसे फिरत कुम्हारको चाको॥
चहूँ ओर शर वर्षत कैसे। भाद्र वृष्टि मन्दरपर जैसे॥
जेहिदिशि अर्ज्जुनको रथ धावै। तेहिदिशिकर्णबाण झरिलावै॥
छूटत बाण कर्ण के करसों। नन्दिघोष रथ घेरेउ शरसों॥
हांक देत हांकत रथघोरे। अर्ज्जुन कठिन बाण गुणजोरे॥

मारयो पारथ क्रोधकरि, च ोबाण परचण्ड।
कर्ण धनुर्द्धर श्रीप्रबल, काटि किये शतखण्ड॥

अपुवन शल्य बहुतविधि हांको। छूटत नाहिं भूमिते चाको॥
कूदि कर्ण रथको ढिग आये। गहि चाका तेहि चहत उठाये॥
कर्ण वीर कीन्ह्यो बल भारी। अर्ज्जुनसों भाष्यो बनवारी॥
मारहु बाण गहरु जनिलावहु। कर्णशीश अब मारि गिरावहु॥
पारथ कही उचित नहिंहोई। बिना अस्त्र नहि मारहि कोई॥
यह अधर्म करिये केहि कारण। यहसुनिकही जगतकेतारण॥
चक्रव्यूह महँ अभिमनु मारे। तादिन कर्ण न धर्म विचारे॥
आजु धर्म तुम शोचौ पारथ। तौ भारत रण किये अकारथ॥
कुन्ती दिये बाण सो लीजै। अर्ज्जुन कर्ण वधन तेहि कीजै॥
मारहुतुरत गहरुजनि लावहु। बहुरि न ऐसो अवसर पावहु॥
रथ उठाइ करिहै धनु धारण। तब अर्ज्जुनतुमसकहुनमारन॥
नि अर्ज्जुन कीन्हे सन्धाना। श्रवण प्रयन्त शरासन ताना॥

दीन्हे हांक प्रचारिकै, चलो वज्रसम बान।
कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

ग्यो बाण कर्ण के कैसे। इन्द्र वज्र पर्वत पर जैसे॥
टो शीश परा तब धरणी। जगमें रही सदा यह करणी॥
ण आपु जयशङ्ख बजायो। पाण्डव सैन्य देखि सुखपायो॥
र्षि इन्द्र तब आज्ञा दीन्हा। पुष्प वृष्टि सब देवन कीन्हा॥
यजयशब्दगगन महँ बोल्यो। चढ़ि विमानआनन्दितडोल्यो॥
छोड कर्ण जगत यश पायो। निसरो रथ महिऊपर आयो॥
टो चक्र धरणि ते जबहीं। फेरयोशल्य हांकि रथतबहीं॥
टो रथ दुर्योधन देखा। जूझेउ कर्ण सत्य करि लेखा॥
चलिसेन कौरवपति जान्यो। आगे ह्वैकें शारँगङ्ग तान्यो॥
रसों मारु भयङ्कर दीन्हे। सेना सबै निवारण कीन्हे॥
न्धया जानि किये तब गवना। द्वउ सेना आई तब भवना॥
स अहमिति अर्ज्जुनमनकीन्हे। कर्णमारि जगमें यश लीन्हे॥

महावीर रविसुत निरखि, कही कथा यहबात।
अर्ज्जुन सुनिये श्रवण दै, पटजन किये निपात॥

शराम जब शापहि दीन्हे। कुण्डल कवच पुरन्दर लीन्हे॥
न हम धरणी कुन्ती माना। छह उन ने मिलिकीन्ह निपाना॥

अर्जुन कहो सुनहु जगतारण। भृगुपतिशापदियोक्यहिकारण॥
तब श्रीहरि आये यहि बातन। पारथ सुनिये कथा पुरातन॥
रत्नपर्व व्याकरण पढ़ायो। भृगुपतिपहँ पढ़िवेको आयो॥
कटिमें मूँज मेखला बान्धे। कीन्हे तिलक जनेऊ कान्धे॥
निकट जाय परशुराम जनाये। कौन जाति कहँवाते आये॥
मैंहौं विप्र श्रवण सुनि लीजै। आये पढ़न अनुग्रह कीजै॥
विद्या मोपहँ आय घनेरो। पढ़िये जो मन आवे तेरो॥
तब भाष्यो धनुविद्या दीजै। बालक जानि कृपामोहिं कीजै॥
धनुविद्या सिखदय मुनि ज्ञानी। कर्ण चतुर्दशिआय तुलानी॥

धनुष बाणले हाथ महँ, करन चले अस्नान।
खरी तुरत लै आवहू, पाछे शिष्यसुजान॥

आगे चलत वृक्ष इक देखा। फूले फूल कदम्ब अशेखा॥
परशुराम हँसि शारँग साधा। मारयो फूल कटो तब आधो
एक शरहि यहि भांति चलायो। कटे सब नहिं एक बचायो
परशुराम जलतीरहि गयऊ। पाछे कर्ण वृक्षतर आयऊ॥
आधो फूल लाग है ऊपर। आधो कटो परो है भूपर॥
मनहिंकही मैं बाण चलावों। आधो है त्यहि मारि गिरावों
भूपर खरी धरै जो कोई। बाढ़ै दोष पवित्र न होई॥
उछलाये तब कनक कटोरा। लै धनु बाण हाथ गुणजोरा॥
यहिविधि ते कीन्हों सन्धाना। कटयो फूल सब एकहिबाना
बायें हाथ धनुष शर लीन्हें। दहिने हाथ कटोरा कीन्हें॥

आये परशुराम के पासहि । खरी लगाय पढ़ै सो आसहि ॥
करि स्नान ध्यान तब कीन्हें । चले तुरत भवनहिंमनदीन्हें ।
आये वृक्ष कदम्बतर, देखिरहे होइ मौन ।
आधो सब हम काटिगे, आधो काटो कौन ॥
सुनिकै कर्ण कही यह वानी । आधो काटो मैं अभिमानी ॥
परशुराम मन माहिं विचारी । भयो सुपूत सिद्धि धनुधारी ॥
यहिविधितें कछुदिवस गवांयो । एकदिवस निद्रामन लायो ॥
आलसभयो शयनतब कीन्हा । कर्णजङ्घ ऊपर शिर दीन्हा ॥
वज्रकीट कीरा जो रहेऊ । जड़सोंनिकसिजंघसोगहेऊ ॥
भेदेउ जंघ निकरि तब पारा । तासों चली रुधिर की धारा ॥
तातो रुधिर अङ्गसों लागा । उठ्यो चौंकि भृगुनायकजागा ॥
रुधिर देखिकै मन अनुमान्यो । लाग्यो वज्रकीट यह जान्यो ॥
सुधि अजहूँ नाहीं त्यहि केरी । कहु रे शिष्य जाति का तेरी ॥
ऐसो विप्र कहां ते आयो । विनु डोले जिन जंघ छेदायो ॥
क्षत्रिय जाति अहो मैं जाना । छल काहे कीन्हों अज्ञाना ॥
विद्या दै विनाश का कीजै । वर अरु शाप एक संग लीजै ॥
पांचबाण मैं देतहौं, जौलौं रहि हैं हत्थ ।
अजय होहि संसार मो, जीतैतौसमरत्थ ॥
जब यह बाण शत्रु करजैहै । तबहीं मृत्यु कर्ण तू पैहै ॥
वर अरु शाप दोउ जब जाने । सो सुनि कर्ण अनुग्रह माने ॥
अर्ज्जुनके जिय संशय रहेऊ । नाकारण धा माधव कहेऊ ॥

धर्मराय तब बात जनाई। मेरे जिय यह संशय आई॥
विप्र जानिकै विद्या दीन्हेउ। चलौ जानि शाप किमि कीन्ह्यउ॥
याविधि कहौ जगतके तारण। धर्मराय सुनिये यह कारण॥
भीषम गये रहे तहँ आगे। परशुरामते सिखै सो लागे॥
विद्या अस्त्र बहुत बिधि दीन्हे। आपु समान धनुर्द्धर कीन्हे॥
विद्या पाइ भवन कहँ आये। तब माता यह बचन सुनाये॥
मेरो कहा कियो तुम चाहौ। जीति स्वयम्वर बन्धु बिवाहौ॥
दोऊ बन्धु साथ लै लीन्हे। वाराणसी गवन शुभ कीन्हे॥
जानि स्वयम्वर सब नृप आये। रङ्गभूमि सब राजन छाये॥

अम्बे अम्बा अम्बली, तीनो कन्या साथ।
निकरीं भूषण साजिकै, जयमाला लै हाथ॥

जब कन्या इत पांव न दीन्ह्यो। भीषम देखि क्रोध जिय कीन्ह्यो॥
तीनिउ गहिकर रथहि चढ़ायो। तब भीषम चलिबे मन लायो॥
भिरे नरेश किये रण क्रोधा। गङ्गासुत जीते सब योधा॥
कन्या लै भवनहि पहुँचाये। मातासों तब वचन सुनाये॥
चित्राङ्गदहि अम्बिकहि दीन्हे। अम्बहि चित्रबीज तब लीन्हे॥
अम्बालिका कोऊ नहिं चाहे। दुउ कन्या दुउ बन्धु विवाहे॥
जो भीषम अपनो भल चाहौ। तौ मोको अब आपु बिवाहौ॥
जो अपने मन इच्छा कीन्हे। जाहु शल्यपर आज्ञा दीन्हे॥
[illegible] चलो शल्यपहँ आई। भीषम मोकहँ दीन पठाई॥
[illegible]कहौ यह उचित न होई। अब तोकहँ ब्याहै नहिं कोई॥

अम्बालिका वचन सुनिपाई । तब फिरि पशुरामपहँ आई ॥
गङ्गासुत मोकहँ हरि लाये । करैं न ब्याह बीच टरकाये ॥
परशुराम सुनि क्रोधकै, कहा चलो ममसाथ ।
भीषमको मैं सौंपिहौं, पकरि हाथसों हाथ ॥
भृगुपति आय दिये तब दरशन । भीषम दौरिकिये पगपरशन ॥
इतना कहो हमारो कीजै । जयमाला कन्यासों लीजै ॥
कीन्हो कौल पिता सों अपने । सङ्गम नारि करहुँ नहिं सपने ॥
की मानौ तुम कहा हमारो । की अब मोते युद्ध विचारो ॥
गङ्गासुत सुनि क्रोधहि पाये । बांधि अस्त्र मैदानहि आये ॥
शिष्यगुरुरच्यउमहारण भारथ । चौविसदिवस रच्यो पुरुषारथ ॥
देवन आइ बीच कर दीन्हा । तब कन्याकछु कहिवे लीन्हा ॥
गङ्गतीर शुचि चिता बनाई । देखत सबहि जरत हौं भाई ॥
पदी होइ लेहौं अवतारा । तब भीषमको करहुँ सँहारा ॥
अस कहिकै निज देहै जारौं । जन्म शिखण्डी भीषम मारौं ॥
तबसों परशुराम प्रण कीन्ह्यो । चत्री को विद्या नहिं दीन्ह्यों ॥
सुनिकै धर्मराय सुख माना । सत्यवचन भाष्यउ भगवाना ॥
जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहँ हरि विजय प्रमान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यउ, सबलसिंह चौहान ॥
इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥
इति कर्णपर्व समाप्त ।

शल्य पर्व ।

जय जय गुरुचरणनचितदीजै । रघुपति पद अभिवन्दनकीज

शारद चरण करहु परणामा । वन्दौं वालमीक गुणग्रामा ॥

सम्बत सत्रह सै जग जाना । त्यहि ऊपर चौवीस बखाना ।

कार्त्तिक मास पक्ष उजियारा । दशमी तिथिको कथा उचा

नौरंग शाह दिली सुलताना । प्रबल प्रताप जगत सब जान...

व्यासदेव पद बन्दिकै, जा मुख वेद पुरान ।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

जूझे कर्ण जगत यश पाये । दुर्योधन यह वचन सुनाये ॥

हाहा मित्र परम सुखदायक । महायुद्ध करिबेके लायक ॥

तुम पाये निज क्षत्री धर्मा । यह सब दोष हमारे कर्मा ॥

सो अर्जुन सके न मारण । छलकरि वधे जगतके तारण ॥

काको सेनापति कीजै । जाके बल भारत यश लीजै ॥

कृतवर्मा तब कह्यो बिचारी। राजा सुनिये विनय हमारी॥
जब पाण्डव निज देशहि आये। करि बसीठ यदुनाथ पठाये॥
पांच ग्राम मांगे नहि दीन्हेउ। हठकरिके भारत तुम कीन्हेउ॥
अब करुणा कीजै क्यहिकाजा। साहस सदा चाहिये राजा॥
सदा धर्म अपने मन राखउ। सत्य छांड़ि मिथ्या नहिं भाषउ॥
ब्राह्मण गौकी रक्षा करही। परधन परनारी नहि हरही॥
सुतसम प्रजा करो प्रतिपालक। ज्यों जननी पालै निजबालक॥

सदा दान सन्मान करि, तजौ न शीलस्वभाव।
शरणागत रक्षा करत, देश प्राण बरु जाव॥

मातु पिताकी सेवा करऊ। आज्ञा तासु शीसपर धरऊ॥
कृतवर्मायहिविधि कहिदीन्हेउ। तब शकुनी कछुकहिबेलीन्हेउ॥
सोचकरतन्टप काह अकारथ। अर्जुन मारिरचहु महभारथ॥
कृपाचार्य द्रोणी सम अती। हमहूं हैं कृतवर्मा क्षत्री॥
शल्य नरेश अहै बल भारी। क्षत्री महावीर धनुधारी॥
मुकुट बाँधि कीजै सरदारा। दीजै भूप शल्य शिर भारा॥
सुनिकै कुरुपति आनँद पाये। मुकुट शल्यके शीश बँधाये॥
विप्रन आइ बेदध्वनि भाख्यउ। आगे कलश नीर भरि राख्यउ॥
इन भांति शकुनी शुभकीन्हे। दुर्योधन कछु कहिबे लीन्हे॥
शल्य नरेश आपु यश लीजै। रण पांचौ पाण्डव वध कीजै॥
भीषम प्रथम गिरे मैदाना। द्रोण गुरूको भयो निदाना॥

सैन सहोदर सब गिरे, गिरे कर्णसे मित्त।
शल्य पाण्डवन जीतिहै, ऐसी नृपके चित्त॥
कही शल्य देखहु पुरुषारथ। मारि पाण्डवन जीतहुं भारथ॥
महायुद्ध करिहौं परतच्छ। पै अर्ज्जुन रथ श्रीपति रच्छ॥
कुरुपति हर्ष भये सुनि बैना। रविके उदय साजि सब सेना॥
कृपाचार्य अशुथामा साज्यउ। भेरि दुन्दुभी मारू बाज्यउ॥
कृतवर्मा कीन्हेउ असवारी। सेन अनेक वीर धनुधारी॥
अस्त्र बांधि शकुनी तबआयउ। चढ़ो जाइ रथ शोभा पायउ॥
कुरुपति रथ साजो है कैसे। इन्द्र विमान देखिये जैसे॥
चञ्चल चपल आनि रथ जोरे। पवन वेगसों चारिउ घोरे॥
ध्वजा पताका बांधेउ बाना। बहुत भांति बैरख फहराना॥
गज काछे पर्वत सम भारी। पांव जँजीर नन अन्धियारी॥
चारिहु पाट बहुत मद धारा। ज्यों झरना झर बहे पनारा॥
अति उतङ्ग देखत छबिपावत। मनहुँ मेघ धरणीपर आवत॥
कुरुपति चलिभो साजिदल, सेनासिन्धुसमान।
हय रथ पैदल चलेउ बहु, गर्द लोपि गे भान॥
धर्मराय कीन्ही असवारी। पारथ रथ जीते बनवारी॥
अर्ज्जुन अङ्ग सनाह विराजैं। अच्छय तोण गाण्डिवसो भ्राजैं॥
चढ़े कोपि रथ भीम भयङ्कर। प्रलय कालमहँ जैसे शङ्कर॥
चढ़ि तुरङ्गपर नकुल सुहाये। धर्मरायकहँ शीश नवाये॥
स्वन रथ सहदेव विराजे। कर असि फरी सरिसशरछाजे॥

धृष्टद्युम्न चलौ सब राजे । चढ़े तुरङ्ग वीर सब गाजे ॥
गज आरूढ़ अगणितबलधारी । जिनके नयन परी अँधियारी ॥
पहिरि सनाह महावत चढ़े । मानहु विधि अपने कर गढ़े ॥
क्रोधवन्त जानत रण घोरा । छाया लखि देखहिंभुजओरा ॥
कोपमान पैद्दल रण चांड़े । फरी लेहू चमकावत खांड़े ॥
सांगि शूल लीन्हे कोऊ कर । कोउ मुद्गर लै कोउ धनुर्द्धर ॥

धर्मराय यहि विधि चले, दल बल कीन्हो साज ।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीब्रजराज ॥

सेनसाजि कुरुखेतहि आये । दुउ दल वीरन सोभा पाये ॥
बम्ब निशान बाजने बाजे । होत शब्द मानहु घन गाजे ॥
कोहकत गज हींसत हैं घोरे । आगे होयँ शूर रण जोरे ॥
अग्रहि पेलि देहिं मयमन्ता । क्रोधित जुरे फिरैं चौदन्ता ॥
रथी रथी शर वर्षन लागे । कोप अनल उर अन्तर जागे ॥
खमसी अनी जुरे असवारा । मुद्गर गदा शूल परिहारा ॥
हांक मारिकै पैदल धाये । महायुद्ध करिबे मन लाये ॥
यहि विधि लरत करत घनघोरा । मण्डेउ खेत जोर सों जोरा ॥
आगे शल्य हांकि रथ आये । बाण वृष्टि रथ ऊपर लाये ॥
शर अनेक वर्षत हैं कैसे । जलद मनहुँ श्रावणमहँ जैसे ॥
नन्दिघोष श्रीपति पहुँचायो । अर्ज्जुन बाण वुन्द झरिलायो ॥
द्रोणी भीम करत संग्रामा । दोऊ जुरे खेत जय कामा ॥

कृतवर्मा अरु नकुलसों, भिरे स्वेत परचारु।
शकुनी रण सहदेवसों, भई भयङ्कर मारु॥
कृपाचार्य कीन्ह्यों पुरुषारथ। धृष्टद्युम्नसों मण्डो भारथ॥
कुरुपति धर्मराय रण सरसे। छूटत बाण बुन्द सम बरसे॥
दुउदल महा बाजने बाजे। करहिं युद्ध च्ञत्री गण गाजे॥
यहि विधि सरिस चलावतबाना। जूझे वीर गिरे मैदाना॥
शल्य हाथ तीच्ण शर छूटे। सेन वेधि धरणीमहँ फूटे॥
अर्ज्जुनके बाणनके मारे। कुरुदल लोटे परे किनारे॥
परे शूर महि लोटत कैसे। लागत पवन पाक फल जैसे॥
च्ञत्री सदा अस्त्र परिहारहिं। एकहि एक क्रोधकरि मारहि॥
शल्य कोपि ऐसे शर जोरे। घायल नन्दिघोषके घोरे॥
सहस बाण मारे हनुमानहिं। असी बाण ते श्रीभगवानहि॥
अर्ज्जुन अङ्ग बाण बहु मारे। शरते तनु जर्जर के डारे॥
तब पारथ कीन्हेउ सन्धाना। शल्य अङ्ग मारे बहुबाना॥
आठ बाणते रथ हन्यो, तुरँग अङ्ग शरबीश।
एक बाण यहि विधिचल्यो, कट्योसारथीशीश॥
शल्यहि भयो क्रोध अतिभारी। करयो अपर रथपर असवारी॥
यहिविधि बाण बुन्द झरिलाये। पाण्डवदल बहु मारि गिराये॥
अर्ज्जुन त्यागि बाण यहि रूपा। प्रलय काल जैसे यम भूपा॥
कुरुदल पारथ किये निपाता। जानत सबै युद्धकी बाता॥
ऐ बाण क्रोध करि जोरे। मानुष कहा शेष शिर फोरे॥

शल्य कोपि लागे शर मारन । जूझे सेन हजार हजारन ॥
भीमसेन द्रोणीते भारत । दोऊ जुरे सरिस पुरुषारथ ॥
मारे बाण क्रोध ते पागे । चल्यउ न एक एक के आगे ॥
सत्तरि बाण भीम उर लागे । क्रोधवान उर अन्तर जागे ॥
किये भीम तउ लघु सन्धाना । गुरुसुत अङ्ग हने शतबाना ॥
दोऊ वीर करत घमसाना । जरजर भये लगे तनुबाना ॥
क्रोधवन्त यहि विधि शरछाटयो । भारत भूमि बाण ते पाटयो ॥

यहि विधि कीन्हेउ युद्धबहु, दोऊ वीर समान ।
सात लक्ष चतुरङ्गदल, जूझि गिरे मैदान ॥

अर्द्धचन्द्र शर द्रोणी छांटयो । धनुगुण भीमसेन को काटयो ॥
करते धनुष डारि महि दीन्हयो । रथते उतरि गदाकर लीन्हयो ॥
दै करि हांक वृकोदर धाये । मानहुँ काल देह धरि आये ॥
द्रोणी कोपि बहुत शर मारे । बांये अङ्ग भीम सब टारे ॥
क्रोधित भये गदा परिहारे । बचो कूदि गुरुपुत्र सँभारे ॥
हय सारथि रथ चूरण कीन्हे । सेना बधन भीम मन दीन्हे ॥
धर्मराय दुर्योधन दावन । बरषैं बाण मनो घन सावन ॥
दोऊ भूप छत्र के धारी । महाशूर क्षत्री अधिकारी ॥
भालुक पांच युधिष्ठिर लीन्हे । ले शर चोट शीश पर कीन्हे ॥
दुर्योधन कीन्हेउ सन्धाना । धर्मराय उर मारेउ बाना ॥
क्षत्री सबै करत रण सरसे । चहुँ दिशि बाणवृन्दसे बरसे ॥
रतवर्मा सन नकुल लराई । यहायुद्ध कीन्हे प्रभुताई ॥

अर्ज्जुन शल्यहि रणमचो, रथ चाके घहरान।
हांकत हरि रथ हांकदै, पीताम्बर फहरात॥
श्याम शरीर जगत मन मोहै। कुण्डल झलक कपोलन सोहै।
श्रम जल बुन्द वदनपर कैसे। मरकत मणि मुक्ताहल जैसे॥
सारथि रूप धरो वनवारी। भक्त हेतु पाण्डव हितकारी॥
कहो कृष्ण अर्ज्जुन सों बैना। चितधरि करौ शल्यसनसैना॥
सुनि अर्ज्जुन लागे शर मारन। जूझी फौज हजार हजारन॥
शल्य नरेश पाण्डु दलमारत। जैसे अग्नि सघनवन जारत॥
वीरन हाथ तेज शर छूटत। भेदि सनाह अङ्ग महँ फूटत॥
महामत्त लाखन गज धावत। आगेपरत सो मारि गिरावत॥
ठोकर पुनि वखोरि सों मारत। बहुतक छेदि दन्तसों डारत।
बहुत लपेटि शुण्डसों लीन्हे। डारि चरणतर चूरण कीन्हे।
तोरि शीश फेंकत हैं कैसे। पाके ताल गिरहिं महि जैसे॥
अति उतङ्ग देखत भयकारी। यहिविधि वहुतकसेनसँहारी॥
पाण्डवदल जूझे घने, भई भयङ्कर मारि।
गदा हाथ ल हांक दै, धाये भीम प्रचारि॥
गदा घाव कुञ्जर संहारेउ। ताते वदन फोरिकै डारेउ॥
दशन पकरिकै जे गज हटकेउ। गहिकरिशुण्डधरणिमहँपटके
फेंको पदल जात न जाने। ज्यों वक्तूलाको पङ्क उड़ाने॥
९१ कीन्ह्यो सेन निकन्दन। दौरे देखि द्रोणगुरु नन्द
धन ह्वै कीनहे सन्धाना। भीम अङ्ग मारे शत वाना॥

नीचण तीनि बाण कर लीन्हे। ते शर घात्र भीमपरं दीन्हे ॥
भीमसेन तब धनुष सँभारे। द्रोणी अङ्ग बाण दश मारे ॥
यहिविधि दोउ युद्ध अरुझाने। अरुणवर्ण शोणितउपटाने ॥
शकुनी कही भूपसों बाता। कुरुपति सुनो युद्धको घाता ॥
दोऊ दल अटके अरुझाने। महायुद्ध कछुजात न जाने ॥

अब आज्ञा मोहिं दीजिये, लैधावों कछुसैन।
वेड़े होइ अरि पर परैं, आपु देखिये नैन ॥

कुरुपति सुनिकै आज्ञा दीन्हे। अपनी अनी साथकै लीन्हे ॥
दश सहस्र कुञ्जर मतवारे। तीनिसहसरथसरस सँवारे ॥
साठिसहस असवार महावल। डेढ़ लाख लीन्हे सब पैदल ॥
क्रोधवन्त होइ शकुनी धाये। विदरि होइ पाछेकहँ आये ॥
पैठे पेलि फौज मह कैसे। गङ्गा मिलीं सिन्धु महँ जैसे ॥
शेल खड़ग मुद्गरफटकारहिं। शरते वीर शेल बहुमारहिं ॥
मारे बहु पाण्डव दल वीरा। भरकीअनी धरहि नहिंधीरा ॥
शकुनी रची युद्ध की करणी। जूझी सेन परी सब धरणी ॥
भयो शोर दल वैरख डोले। दगा दगा पाण्डव दल बोले ॥
छूटे दाणमकै को भाषण। पाण्डव दल जूझे तब लाषन ॥
महाशूर रण पलटि सभारे। मारु मारु कै सबनपुकारे ॥
चलैं न एक एकु के आगे। डरझे सबै क्रोधते पागे ॥

यहि विधि शकुनी सैनकी, जूझी फौज अनन्त।
पारथ अब निरखत कहा, भाष्यउ कमलाकन्त ॥

नन्दिघोष फेरो वनवारी। भयो अघात शब्द अधिकारी॥
तब अर्ज्जुन शर छांड़त कैसे। प्रलयकाल घन वर्षत जैसे॥
हय गज रथ कीन्हेउ बहुखण्डित। रुंड मुंड धरणी महँ मंडित
यहि विधि कीन्हेउ सैन निकन्दन। हाक देत हांकत जगवंद
तब शकुनी कीन्हे सन्धाना। अर्ज्जुन उर मारे शत बाना॥
कृष्ण अंग बहु बाण प्रहारे। बीस बाण अपुवन उर मारे॥
तब पारथ तीक्षण शर छाँटे। मारे अपुव धनुष गुण काटे॥
सैना वधि अर्ज्जुन रण गाजे। चढि तुरंगपर शकुनी भाजे॥
कह्यो जाय दुर्योधन भूपहिं। पारथ युद्ध किये जेहि रूपहिं॥
यहि विधिते अर्ज्जुन धनु खांचे। जूझे सकल एक नहिं बाचे
विरथ भये आये तब तुमपै। मन्त्र एक नृप सुनिये हमपै॥

धनु धारी अर्ज्जुन सरिस, जीति सकै नहिं कोइ।
कीता ह्वै सब मिलि जुरहिं, होनी होइ सु होइ॥

कुरुपतिके मनमें तब आई। कहा शल्यसों बूझो जाई॥
उरझे शल्य युद्धके बाता। शकुनी आय कही तब बाता॥
शरते अर्ज्जुन सकहि न मारन। अब लरिये कीता हथियारन॥
यहि विधि कीन्हे चली धर्महि। हारि जीति राजाके कर्महि॥
सेवक धर्म करहिं प्रतिपालहि। होई अन्त लिखा जो भालहिं॥
शकुनी शल्य लगे यहिबाता। उत पारथ दलकरत निपाता॥
ल्य नरेश क्रोध कै धाये। धर्मरायके सन्मुख आये॥
ो शल्य युधिष्ठिर भूपहिं। धर्म युद्ध करिये केहि रूपहिं॥

छांड़ेउ धनुष बाणकी करणी। रथहि छांड़ि धाये सब धरणी ॥
सतह दिवस भयो रण भारथ। भीषम द्रोण कर्ण पुरुषारथ ॥
आज युद्ध मेरे शिर भारा। उतरि लरहु कीता हथियारा ॥
भूप शल्य भाष्यो यह बानी। धर्मराज बोलेउ सज्ञानी ॥
भूप युधिष्ठिर क्रोध करि, कहेउ वचन परिमान।
शल्य पर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥
इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

लरहु शल्य जस आवहि मनमें। निजकर आजु मारिहौं रनमें ॥
शल्य नरेश धनुष तब राखेउ। रथते उतरि वचन यह भाष्यउ ॥
रथहि छांड़ि उतरे सब धरणी। धर्म्मयुद्ध कीन्ह्यो यह करणी ॥
धर्म्मराय त्यागी असवारी। उतरे भूमि क्रोधकरि भारी ॥
दोऊ दल छांड़े निज स्यन्दन। नन्दिघोष बैठे जगवन्दन ॥
अर्जुन उतरि खड़ग लै हाथा। धृष्टद्युम्न कहँ लीन्हेसाथा ॥
नृप आगे सहदेव विराजे। बांधे अस्त्र फरी कर साजे ॥
भीमसेन गहि गदा फिरावत। नकुल शेलकर शोभा पावत ॥
उतरे सबहि युद्धके शूरा। चत्रिय धर्म्म महाबल पूरा ॥
कुरुपति उतरि रथहिते आये। गहे अस्त्र कर शोभा पाये ॥
महावीर सब बांधे बाना। अटके ठौर ठौर मैदाना ॥
दोऊ दल यहि विधि जुरे, कठिन बजाये मार।
मुद्गर गदा सु शेल कर, कुटत खड़गकी धार ॥

लागत खड़्ग घाव शिर फूटै । वहतै शैल सजोहल टूटै ॥
मुद्गर परत करत चकचूरन । जूझि गिरे धर कैतिक शूरन ॥
फेरि खड़्ग सहदेव सँभारत । कौरव दल बहुतै रणमारत ॥
ऐसे हनत खड़्ग कर साधे । टूटिपरहिं हय गय गिरिकांधे ॥
क्रोधित शकुनि खड़्ग परहारै । शिरकाटत सहदेव सँभारै ॥
हँसि सहदेव कही यह बानी । सुनु मन्त्री शकुनी अभिमानी ॥
तेरेहि मन्त्री भये सब नाशा । करहुँआजुतोहियमपुरवाशा ॥
दोऊ वीर भिरेउ रण चांड़े । उछरत तर्जि बचावत खांड़े ॥
तब सहदेव घात करि पाये । मारि खड़्ग शिर काटि गिराये ॥
कुण्डल सहित परेउ शिरधरणी । महामारु कछु जात न वरणी ॥
भीमसेन कर गदा सँभारै । एकै घाव वीर सब मारै ॥
कुरुपति आय कियो पुरुषारथ । मारेउ सैन कियो रण भारथ ॥

गदाहाथ मणिमय लिये, करत कोपि परिहार ।
हय गज रथ चूरण किये, सेना बीसहजार ॥

हाथन शूर कटारिन मारहिं । पकरिकेशगहिभूमि पछारहिं ॥
यहि विधि महा युद्ध रण होई । पाछे पांव धरहि नहिंकोई ॥
जुरे शिखण्डी द्रोणी सङ्गा । महायुद्ध कीन्हे रण रङ्गा ॥
क्रोधिन खड़्ग घाव परिहारहिं । दोऊ वीर ढालपर टारहिं ॥
गुरुसुत क्रोधित औ झरझारो । कटो शीश ह्वै परेउ नियारो ॥
र्जुन गह्यउ खड़्ग तवहाथा । काटे बहु चत्रिनके माथा ॥
हं शीश कहँपरे अधर धर । खड़्ग सहित कहुँपरे कटे कर ॥

कोऊ युद्ध करत रण करणी । कोऊ कटे अधर धर धरणी ॥
लगे शेल महि परे कराहत । कोऊ खड़्ग कोपि शिर बाहत ॥
कहुं देखियत गजको शुण्डा । कहूं मुण्ड कहुँ लखिये रुण्डा ॥
कहुं कबन्ध धरणि पर धावत । शीशपरे महिजयजयगावत ॥
कुञ्जर शीशरुधिर की धारा । जनु गेरू रङ्ग स्रवत पहारा ॥

कुन्त फरी तोमर गहे, लरत शूर परचारि ।
मारतबीरन क्रोध कै, निसरत पञ्जर फारि ॥

सैन सबहि लोटत लपटाने । खेलत फागु अबीरन साने ॥
मारत शेल सजोइल फूटत । रुधिरधार पिचिकासमछूटत ॥
यहि विधि खेलत चांचरि रनमें । महाशूर शङ्का नहि मनमें ॥
धृष्टद्युम्न कीन्ह्यो रण करणी । कौरवदल लोटत सब धरणी ॥
कृतवर्मा तब आपु सँभारे । पाण्डवदल बहुतै संहारे ॥
कोऊ बाहत खञ्जर धोपा । कोउ मारत मुद्गरकरिकोपा ॥
भीमसेन गज बहुत सँहारे । जे अभिरे तेहि सबहि पछारे ॥
मारु मारु कै सब मिलि भाषत । महावीर सब लोहुन चाखत ॥
अभिरत भिरत लरत मैदाना । क्रोधित सबै शङ्क नहि माना ॥
यहि विधिसों जोरत रणरङ्गा । करत भोग सुरकन्यन सङ्गा ॥

दोउवीर दल इमि लरत, जूझि गिरत मैदान ।
कौतुक देखत देवगण, हर्षित चढ़े विमान ॥

रणखेत महं शूर न कैसे । देखत भोर तारगण जैसे ॥
धर्मराय तब कहा विचारी । सुनो शल्य हित बात हमारी ॥

अब हमसों तुमसों है जोरा। चढ़िरथ कीजै धनु टङ्कोरा॥
बाजा भौम खेत महँ खांड़ो। धर्म्मयुद्ध मोते रण चांड़ो॥
तब रथपर कीन्ह्यो असवारो। धनुषबाणकर गह्यो सँभारो॥
कहो शल्य दृस्थिर अब रहिये। मारतहौं तीक्षण शर सहिये॥
यह कहि शल्य बाण दश छांटे। धर्म्मपुत्र त्यहि बीचहिकाटे॥
सात बाण भालुक नृप लीन्हे। ते शर चोट शल्यपर कीन्हे॥
दोऊ वीर बाण परिहारहिं। एकहिं एक क्रोधकै मारहिं॥
कोपि शल्य यम अस्त्रहि लीन्हे। पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे॥
हांक मारिकै बाण प्रहारहिं। इत नृप इन्द्रबाणसों मारहि॥
तीसर बाण युधिष्ठिर छांटे। नृपको धनुषबाण गुण काटे॥

डारि धनुष कर शूललै, घालो घाव प्रचण्ड।
सात बाणते धर्म्मसुत, काटिकियो शत खण्ड॥

दोऊ वीर क्रोधते पागे। अशकुनहोनबहुतविधिलागे॥
दिशा धुंन्धि भयकारक भारी। रविअदृश्यबहु फिकर सियारी॥
जम्बुकगण बोलत रथ आगे। रुधिर बुन्द नभ बरषनलागे॥
बैठे काक भयङ्कर बोलत। भूमि चलीअहिपतिशिरडोलत॥
झंझर पवन बहै अतिभारी। उलकापात होत भयकारी॥
गोधन आय शल्य रथ छाये। ध्वजाटूटि धरणीपर आये॥
भये अघात शब्द घहराने। अचरज करि सब काहू माने॥
प युधिष्ठिर हांकै दीन्हा। क्रोधित शक्ति हाथकै लीन्हो॥
रन हौं अब शल्य सँभारो। आजु जानिबो तेज हमारो॥

क्रोधित शल्य खड़्गकरलीन्हे। शक्ति घाव राजा तब कीन्हे॥
छूटत शक्ति शब्द भयो भारी। दशो दिशा कीन्ह्यो उजियारी॥
वज्र समान शक्ति जब आई। कुरुपतिदेखि महाभयपाई॥

धर्मप्रबल सुतधर्म को, कीन्हो शक्ति प्रहार।
ढाल फोरि कर छेदिकै, हृदय भेदि गै पार॥

जूझे शल्य परे तब धरणी। धर्मराज कीन्हो यह करणी॥
धर्मतनय जब शल्यहि मारो। सब देवन जयजयतिपुकारो॥
भीमसेन बल आपु सँभारो। ज्यहि पायो त्यहि सबै संहारो॥
द्रोणि कृपा कृतवर्मा भाजे। जीति युद्ध पाण्डव दल गाजे॥
अन्ध धुन्ध भा खेत भयङ्कर। नाचत महा मगन मन शङ्कर॥
भूप युधिष्ठिर भाष्यो बैना। अन्धकार नहि सूझत नैना॥
कृष्ण समेत कियो तब गवना। चले धर्मसुत अपने भवना॥
दुर्योधन तब शोचत मनमें। कोऊ साथ रह्यो नहि रनमें॥
कीजै काह कवनि दिशि जैये। बाढ़ो रुधिर पन्थनहि पैये॥
सात तालभा रुधिर उँचाई। हयगजभाषत वरणि न जाई॥
तुरङ्ग तरङ्ग कहत नहि आवै। रत्नाकरकी पटतर पावै॥
बहे जात लोहित मँझधारा। कौन भांति जैये अब पारा॥

पृथ्वीपति दुर्योधन, लच्च छत्रधर साथ।
लक्ष्मी जाके कन्धपर, त्यहि विधि कीन्ह अनाथ॥

तब नृप मनमें कीन्ह विचारा। पैरि रुधिर जैये अब पारा॥

अस्त्र सनाह खोलि सब डारे। लेकर गदा भूप पग धारे॥
यहि विधि भारत किये महारन। एक लोथ पर परे हजारन॥
वार पार ढिग आव न जाही। रुधिर नदी अति भई अथाही॥
पैरत भूप शङ्क नहिं मनमें। जात लोथ अभिरत हैं तनमें॥
कबहुँ केश चरणन अरुझावें। पैरत जात पार नहिं पावें॥
जहां द्रोण गाड़ो जय खम्भा। अभिरे भूप गहो तब थम्भा॥
गहिकै खम्भ किये विश्रामा। जीव शोच पहुँचौं किमि धामा॥
पकरहिं लोथ बहुत मँझधारा। बूड़िजातसबसहत न भारा॥
विधिवश एक लोथ तब गह्यऊ। बड़ो नहीं भार तिनसह्यउ॥
चला लोथगहि रोहित हेलत। अभिरत मृतक गदासों ठेलत॥
बहुत कष्टसों उतरे पारा। तब अपने मन कियो विचारा॥

कौन वीरको लोथ यह, किय मनमाहँ निदान।
शल्यपर्व या विधि कही, सबलसिहचौहान॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

इति शल्य पर्व समाप्त।

महाभारत।

गदापर्व।

गदापर्व अब करत बखाना। दुर्योधन मनमें अनुमाना॥
अन्धकार भो गयो न चीन्हा। मुकुट ज्योति मुख देखै लीन्हा॥
लषण कुमार चीन्हि जब पाये। करुणा करत भूप मन लाये॥
जूझे पुत्र हमारे काजा। कहिहौं कहा भवन अतिलाजा॥
ऐसे सुत सुपूत संसारा। सुयहु समय मोहि पार उतारा॥
रोय कह्यो दुर्योधन राजा। विधि विरुद्ध कीन्हो यह काजा॥
यहिविधि लोथि डारि जो जैहैं। जंबुक काक गीधगण खैहैं॥
अग्नि देन अवसर नहि पाये। कहो मृत्तिका दै करि जाये॥
गदा घाव धरणीपर मारो। भयो गढ़ा तब लोथहि डारो॥
ऊपर दियो मृत्तिका ऐसो। जंबुक काक न पावहिं जैसो॥
महाशोच करि कीन्हों गवना। पहुँचे जाइ सुकुरुपति भवना॥
अन्तःपुर कीन्हे परवेशा। रानी चकित देखि यह वेशा॥

एक वसन बूड़े रुधिर, अरुणवर्ण सब अंग ।
गदाहाथ शिर मुकुट है, और न कोऊ संग ॥
रानी रोय ठोंकि कै माथा । जिन विधि कीन्ह्यो हमहिं अनाथा ॥
आदर करि आसन बैठाई । धोइ रुधिर वस्तर पहिराई ॥
दुर्योधन भाष्यो सब वचना । ज्यहि विधि भई युद्धको रचना ॥
सुनि रानी बोली यह वानी । मेरी बात नाथ नहिं मानी ॥
भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी । जूझेउ खेत तबहिं बल भारी ॥
गिरे शल्यसुत बन्धु गिराये । खेत छांड़ि काहे तुम आये ॥
जैये तहां जहां पितु आवे । जौलों खोज भीम नहिं पावे ॥
कछुकआनि मिष्टान्न जेंवाये । दीन्हपान कछु विनय सुनाये ॥
अब यहि समय भूप सुनि लीजे । साहस छोंड़ि शोच नहिं कीजे ॥
चारिहु युग ऐसी चलि आई । कर्म लिखा सो मेटि न जाई ॥
दुर्योधन सुनि कीन्ह्यो गवना । आये तुरत पिताके भवना ॥
चरण परसि ठाढ़े भे आगे । कौरवपति सों कहिबे लागे ॥
दुर्योधन सबविधि कहो, जूझिगिरे सबखेत ।
अब उपाय का कीजिये, बूझतहौं सो हेत ॥
सुनत शोच धृतराष्ट्र कीन्हो । करिकरुणाकछुकहिबोलीन्हो ॥
विधि परपञ्चजानि नहिं जाई । व्यास सरोवर रहो छिपाई ॥
गान्धारी भाष्यो तब बैना । देखों पुत्र खोलि तोहिं नैना ॥
पति देखो मैं आँधो । तबते नैन पटी हम बांधो ॥
राखि सुत आगे आवो । पाछे व्यास-सरोवर जावो ॥

एक बसन सों जंघ छिपाये। दुर्योधन तब आगे आये॥
पटी खोलि गान्धारी हेरी। हे सुत बात न राख्यो मेरी॥
वज्र शरीर भयो सुत तोरा। उबरा जंघ दोष नहिं मोरा॥
अस कहि पटी नैन महँ दीन्हे। करुणासहित विदा सुत कीन्हे॥
चलि निशंक दुर्योधन कैसा। परमहंस छाँड़त गृह जैसा॥
मातु पिता छाँड़े निय भवना। लैकर गदा पंथकहँ गवना॥
तके सरोवर न्टप तहँ आये। फूले कमल सुवास सुहाये॥

चक्रवाक सारस युगल, निर्मल जल गम्भीर।
मधुकर गण डोलत सदा, बहु मरालकी भीर॥

पिछले पांव धँसो जल राजा। पांडव खोज मेटिबे काजा॥
यहिविधिलषितनीरतकि आये। झलकत मुकुटदेखि तेहिपाये॥
जल थंभन विद्या कर कैसे। बैठो जाइ भवन महँ जैसे॥
लक्ष्मीकृपा बहुत विधि कीन्हा। कनक पलँग सोवनकहँ दीन्हा॥
दुर्योधन कीन्हें विश्रामा। पांडु गये सब अपने धामा॥
जयकरिविजयभवनकहँकीन्ही। कुन्ती हाथ आरती लीन्ही॥
रणमहँ इन मारे कुरुनाथा। करै आरती तेहि निजहाथा॥
कही भीम सब बन्धु सँवारे। दुर्योधनकहँ मैं नहिं मारे॥
धर्मपुत्र कह भो रण घोरा। मोसन परेउ शल्य सों जोरा॥
अर्जुन कही मातु सों बैना। कुरुपति हम नहि देख्योनैना॥
नकुल कही नहि जान्यो भेवा। तब कुन्ती बूझा सहदेवा॥
मन्त्री मन्त्र विचारो मनमें। कुरुपतिबच्यो कि जूझ्योरनमें॥

हाथ जोरि सहदेव कह, मातु सुनहु यह बैन ।
जीवतहै दुर्योधन, गिरत न देख्यो नैन ॥
कुन्ती कहौ सुनहु हरि पारथ । तुम भारत रण कियो अकारथ ।
कुशल गये दुर्योधन धामा । तौ सेना मारे केहि कामा ॥
पांचौ बन्धु कृष्ण सँग धाये । दुर्योधनहि वधे यश पाये ॥
तब कुन्ती यह बात जनाई । कहौ कृष्ण मेरे मन आई ॥
पांडव तबहि चले हरि माथा । खोजत खोज फिरें कुरुनाथा
अन्धकार भा जात न चीन्हा । बारि मशाल हाथ कै लीन्हा
जूझै वीर खेत मों परे । झलकैं मुकुट जरायन जरे ॥
कहूं मुण्ड कहुँ देखे रुण्डा । कहूं गयंद परे कहुँ शुण्डा ॥
कहूं तुरङ्गम परे अरध खर । कहूं चरण कहुं परे विकरकर ॥
रुधिरपान करि योगिनि नाचहि । जंबुक काकलोथिबहुखांचहि
कुरुपति खोज करत नहिपावत । देखो पंथ व्याध इक आवत ॥
भीमसेन पूंछे तब बैना । दुर्योधन को देख्यो नैना ॥
कहौ व्याध करजो रिकै, भीमसेनसों बात ।
वीर एक देख्यो हतो, व्यास सरोवर जात ॥
गदा हाथ शिर मुकुट सुहाये । वीर एक हम देखन पाये ॥
सुनौं भीम मनमहँ अनुमाने । निश्चय कै दुर्योधन जाने ॥
ांचौ बन्धु कृष्ण सँग आवत । आगे व्याध पन्थ दिखरावत ॥
ससरोवर निकटहि आये । चरण चिह्न तहँ देखन पाये ॥
न' िव दुर्योधन जहँवां । फलत कर्ण धरणिगहँ तहवां ॥

विधि विरोध काहू नहि होई। लक्षण भयो कुलक्षण सोई।
यहिविधि खोज करतचलिआये। व्यास सरोवर देखन पाये॥
अगम गंभीर सरोवर कैसो। उठै तरङ्ग तरङ्गिनि जैसो॥
कृष्णदेव तब आप बखानत। जलथम्भन नीको रूप जानत॥
धर्मराजको भा अन्देशो। जलमहँबलककुचलै न केशो॥
अब उपाय करिये प्रभु कैसो। अवहीं निकरै कुरुपति जैसो॥

महावीर दुर्योधन, कहैं आपु भगवान।
अवहीं निकरत नीरसों, भीमहांक सुनि कान॥

भीमसेन आये तब तीरा। दिये हांक दुर्योधन वीरा॥
निकरो रूप बूड़ो केहि काजा। कुरुवंशहि लावत हो लाजा॥
सुनतै हांक क्रोधकै भारी। उठिकर गदा गहो सम्भारी॥
पकरि बांह लक्ष्मी बैठाई। पुनि राजाको बहुत बुझाई॥
जलसों निकरि युद्ध मतिकरिये। मेरो कहा चित्तमहँ धरिये॥
दूजी हांक भीम जब दीन्हो। कटुक वचनकहिवे बहु लीन्हो॥
मन बांधव रथ सबहि जुझायो। आपु भागिकै जीव बचायो॥
भारत भूमि धरायो नामा। जलभोंआनिछिप्योकेहिकामा॥
भीम हांक सुनि कुरुपति कैसो। द्रुम दावा लागो पुनि जैसो॥
गहिकर गदा उठन जब चह्यो। आगे ह्वै कमला कर गह्यो॥
हस्थिर रहो सुनो भम बैना। कालहि देहुँ सम्पति औ सैना॥
दिवस अठारह भई लराई। तीनिलोक फिरिकै हमआई॥

तोसम लच्छगावन्त नहि, करो कन्ध जेहि वास ।
तीन लोकमहँ ढूंढ़िकै, फिरि आइउ तव पास ॥
कालहि दिवस जो तेरे मनमें । जीति सकैं नहिं पाण्डवरनमें
ताकारण सुनु तोसों कहिये । आजु धीरह्वै जलमहि रहिये ॥
सुनिकै नृप कमलाके वयना । पौढ़िपलँगपरकीन्हे उभयना
तौजो हांक भीम जब मारो । निकरुनिकरुकुरुनाथपुकारो ॥
छांड़त हौ कत चलो धर्मा । होइहि सोइ लिखा जो कर्मा ॥
महागर्व तुम सबदिन कीन्ह्यो । निकरतनहींभाजिजललीन्ह्यो
धिक जीवन जल में है तेरो । इतनो बात अङ्गवत मेरो ॥
अपने बलते गनत न आना । अब काहे तुम तजत गुमाना ॥
मारहुँ गदा फाटि जल जैहै । गहिकै केश अबहिं लै ऐहैं ॥
सुनत वचन दुर्योधन जरो । वरत अग्नि मानहुँ घृत परो ॥
क्रोधित उठि कौरवपति जबहीं । गहो बाहँ कमला पुनितबहीं
बंधु वैर को सकहि निहारी । पांयन ठेलो लच्मी डारी ॥

गदापाणि दुर्योधन, ऊपर पहुँच्यो आइ ।
धर्मराज तब दौरिकै, मिले हृदय महँ लाइ ॥

धर्म युधिष्ठिर के मन आई । चलि सिंहासन बैठिय भाई ॥
सब मिलि हम सेवा तब करिहैं । आज्ञा सदा शीशपर धरिहैं
पंच गांव अजहूं मोहि दीजै । अपनो छत्र सिंहासन लीजै
सुनि दुर्योधन हँसि भाखे । धर्मराज तुम धर्महि राखे ॥
समय न छांड़ो टेका । करिहौं आजु एकको एका

सुई अग्र देहों नहि दाना। करहुँ युद्ध भारत मदाना॥
धर्मराज कह सुनिये भाई। तेरे मन ऐसी जो आई॥
दोउ बन्धु अब हमसों लीजै। तीनि तीनि सम ता रणकीजै॥
हँसि दुर्योधन भाष्योबानी। भाई तुम यह बात न जानी॥
अर्ज्जुन भीम लेउँ जो दोऊ। बांधत तुम्हैं न राखत कोऊ॥
धर्मराज तब कहा बुझाई। एक एकते उचित लराई॥
दुर्योधन बोले परिमाना। राजा राजहि युद्ध समाना॥

कह्यो कृष्ण कुरुनाथसों, यहहै उचितविचार।
लरौं भीमसों खेतमहँ, जयदेइहि करतार॥

दुर्योधन क्रोधित ह्वै भाष्यो। कबते भीम छत्रशिरराख्यो॥
कही कृष्ण तुम बात न पाई। चारिहुयुगहियहीचलिआई॥
भुज बलते वसुधा कर भोगा। ज्ञानी ह्वै सु करहि पुनि योगा॥
भीम महाबल जीते भारथ। लई राज अपने पुरुषारथ॥
तब भीमहि राजा करि लेखो। धर्मराज नावहि शिर देखो॥
पांचहु बन्धु कृष्ण सुख ताके। सब दिन रहत भरोसे जाके॥
धर्मराज जब शीश नवैहैं। पलमों भीमसेन जरि जैहैं॥
तब श्रीहरि रचना यह कीन्ह्यो। लै हरिवंश भीमकहँ दीन्ह्यो॥
कृष्णदेव यह रचनाठाना। ताको दुर्योधन नहिं जाना॥
श्रीपति कह्यो विलम्ब न लावहु। धर्मराय अब शीश नवावहु॥
भीम बगल हरिवंशहि राखो। सो नकि धर्म युधिष्ठिर भाखो॥
भूप भीमकहं शीश नवायो। जयध्वनिकरिहरिशंखबजा

दुर्योधन कह भीमसों, क्रोधवन्त ह्वै बैन ।
गदायुद्ध हम तुमकरहिं, सब मिलि देखैं नैन ॥
गहिकै गदा दोउ भे ठाढ़े । क्रोध अनलउर अन्तरबाढ़े ॥
मण्डलफिरहिंघातदोउ ताकहिं । कोउ कोऊकहँ यतननपावहिं ।
रोंकत गदा गदासों टारत । एकहि एक क्रोध के मारत ॥
गदा प्रहार शब्द भा कैसे । छूटत वज्र इन्द्र कर जैसे ॥
सरसनिरखि कहि जात न काहू । पण्डित गदा युद्ध बल बाहू ॥
धावत गदा हांक दै हांकत । पद के भार मेदिनी कांपत ॥
कुरुपति भाष्यो भीम सँभारो । आजु जानिबो तेज हमारो ॥
कहौ भीम सब जानत भाई । गालमारिजनिकरहु बड़ाई ॥
मोंते आजु परो है कामा । देखो को जीते संग्रामा ॥
दुर्योधन तब क्रोधकै, घाल्यो घाव प्रचण्ड ॥
गदा रोंकि सम्भारिकै, भीममहा बलवण्ड ॥
कोपि भीम तब गदा प्रहारा । महावीर कुरुनाथ सँभारा ॥
दोऊ वीर जोरते झरपत । महावीर मन नेकु न डरपत ॥
यहि विधि करत युद्धकी करणी । भूमिपाल डोलति है धरणी
महामत्त तनु उरझो दोऊ । प्रलय युद्ध देखत सब कोऊ ॥
गदा गदा सों लागत जबहीं । निकरत अग्निभभूकातबहीं ॥
गदा हाथ रण शोभा पावत । पक्ष सहित पर्वत अनुधावत ॥
जुरे युद्ध महँ कैसे । सतयुग महँ बलि बांध्यो जैसे ॥
विमान देवगण देखत । अपने मन अचरजकरि लेखत ॥

गौर श्याम दोउ सोहैं कैसे। कुंकुम अरु कज्जलगिरि जैसे ॥
कलबलकरतभीमभफिरिआवत । गदा पवनते पंचि उड़ावत ॥
जुरे भीम दुर्योधन कैसे । प्रद्युम्नहि शङ्कर रण जैसे ॥

अयुत नाग बल दुहुँन के, महावीर परचण्ड ।
मारत गदा जु कोपि कै, ज्यों टूटत यमदण्ड ॥

लागत गदा दोउ के तनमें । धमकत घाव शब्दजनु घनमें ॥
चञ्चल चपल फिरत दोउ बांको । घूमत मनहुँ कुम्हारको चाको ॥
दोऊ वीर युद्ध मन लाये । तीरथ फिरि बलभद्रहि आये ॥
देखो तहां महारण घोरा । परो भीम दुर्योधन जोरा ॥
हलधर विहँसि कही यह बाता । कुरुपति सहित गदाके घाता ॥
बल कछु अधिक भीमके तनमें । हार जीत नहि देखत मनमें ॥
अजहूँ प्रीति करहु दोउ भाई । केहि कारण अब रचहु लराई ॥
करिकै गदा ऊर्ध्व परिहारन । कोउ न सकहि काहुको मारन ॥
अजहूँ दूनहुँ प्रीति विचारहु । जो मानहु हितवचनहमारहु ॥
युद्ध घात दोऊ अरुझाने । हलधरवचनहृदयनहि आने ॥
कहि बलभद्र कियो तब गवना । कुरुक्षेत्र परिरचक कवना ॥
कृष्ण भीम कहँ जंघ बताई । निरखि वृकोदर घात लगाई ॥

भीमसेन तब क्रोधकै, मारयो घाव बचाय ।
दोउ जंघ भञ्जनभयो, परयो धरणिपरआय ॥

गिरि कुरुपति धरणीमें ऐसे । काटन मूल परत द्रुम जैसे ॥
पूर्ब बैर मनमहँ सुधि आई । भीमसेन तब लात उठाई ॥

हाहा शब्द युधिष्ठिर कीन्हा। रहहु भीम कहिके अस लीन्हा।
अष्टादश चोहिणी भुवारा। भनत गोविन्द जानुसबसारा॥
कृष्ण सहित भाष्यो सबराजा। चरणप्रहारकरत कहि काजा॥
करते चरण समेटन कीन्ह्यो। बैठ सँभारि कहे तब लीन्ह्यो।
चलौ धर्म न भीम विचार्यो। गदा घाव जंघन पर मार्यो॥
कही भीम दुर्योधन वीरहिं। जादिन हरो द्रौपदी चीरहिं॥
तादिन मैं सबसों प्रण भाख्यों। तोर्यों जंघ प्रतिज्ञा राख्यों॥
श्रीपति कही कुरूपति राजहिं। जबहम गये बसीठी काजहिं॥
तादिन मेरो कहा न कीन्हा। कटुक वचन मोसे कहि दीन्हा॥
सेना संपति सकल गँवायो। ज्यहि चणकरगहिमोहिउठायो॥

दुर्योधन कह कृष्णसों, मैंहौं जन्तु समान।
हमैं लगावत दोष अब, तुम प्रेरक भगवान॥

जो तुम रच्यो भयो सो स्वामी। मोहि दोष नहि अन्तर्यामी॥
श्रीपति सुनत हृदय सुखमाना। धर्मराज तब आपु बखाना॥
कुरुपति कही वचन परमाना। सुनिमाधव तब कीन्हपयाना॥
पांचौ बन्धु कृष्ण सँग लीन्हे। भारतजीति भवन शुभकीन्हे॥
कृष्णदेव सों कुन्ती भाखो। दीनदयालु भक्तप्रण राखो॥
अस कहिकै आरती सवाँरी। प्रथम कृष्णके शीश उतारी॥
[illegible]राज सों माधव भाखो। मेरो मन्त्र सदा तुम राखो॥
[illegible] मति ऐसी बनि आई। चलो साथ तुम पांचौ भाई॥

आजु राति बसिये नहिं भवना । नन्दिघोष चढ़ि कीजै गवना ॥
अस कहि पांचौ बन्धु चढ़ाये । योजन एक भवन तजि आये ॥
अर्ज्जुन हृदय शोच भा भारी । का रचना यह कीन्ह मुरारी ॥
सुमिरण शम्भुनाथकर कीन्हा । शंकर आय दरश तब दीन्हा ॥

श्रीहरि भाष्योशम्भुसन, हमसब कीन्हो गौन ।
आजु राति द्वारे रहौ, द्वारपाल ह्वै भौन ॥

गङ्गाधर भाष्यो परतच्छक । आज द्वार रहिहैं हमारच्छक ॥
जो विधि रची होय पुनि सोई । द्वारे जान न पावे कोई ॥
त पाण्डव माधव पगु धारे । शूलपाणि भे ठाढ़े द्वारे ॥
अश्वत्थाम मनहि अनुमानी । गिरे भूप यह हियमहँ जानी ॥
मध्य प्रहर निशि आयो तहँवां । जंघ भङ्ग दुर्योधन जहँवां ॥
बैठे कर सों गदा फिरावत । जंबुकगीधनिकटनहिं आवत ॥
गुरुसुत दूरिहि ते कहि कारण । अमर सदा सककोउ न मारण ॥
राजन् कहा हमारो कीजै । पाण्डव मारि जगत यशलीजै ॥
सुनि बोले तब द्रोणी ऐसा । राजाबिनु रण कीजै कैसा ॥
गन्ध रुधिर लै टीका कीन्हा । मैं राजा तुमकहँ करि दीन्हा ॥
मारि पांडवन पांचौ भाई । वसुधा भोग करहु तुम जाई ॥

गुरुसुत भाषा क्रोध कै, दुर्योधन सों बैन ।
मारि पांडवन शीश लै, आनि देखावहु नैन ॥

ऐसा कहि पुनि आयो तहंवां । कृपाचार्य कृतवर्मा जहंवां ॥
तासों बचन कहे अस लीन्हो । दुर्योधन राजा मोहि कीन्हो ॥

द्वौ जन मोरि सहायक हूजै । पाण्डव मारि राज्य अब कीजै ॥
बटतर तीनों मनहिं विचारत । एक उलूक काक बहु मारत ॥
द्रोणी कहै देखिये नैना । बूझे गतहिं को बल रैना ॥
चलौ तुरत जाइय यहिकारण । दिवस न सकौं पांडव न मार ॥
यह कहिके तीनों जन आये । द्वारे दरश शंभुके पाये ॥
गढ़ चहुँ फेर शूल है रच्छक । दरवाजे शङ्कर परतच्छक ॥
कृतवर्मा तब कह्यो बिचारी । जात कहां ठाढ़े त्रिपुरारी ॥
द्रोणी कहा रहहु तुम रच्छक । जैहौं निकट होइ परतच्छक ॥
अस कहिके शङ्कर ढिग आये । कै प्रणाम तब गाल बजाये ॥
तब कृपालु हर भाष्यउ बानी । मांगो वर द्रोणी बड़ ज्ञानी ॥

द्रोणपुत्र यहि विधि कही, भीतर दीजै जान ।
गदा पर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति गदा पर्व समाप्त ।

सौप्तिक पर्व्व ।

शम्भुनाथ बोल्यो यह वचना । मनमें समुझिकृष्णाकीरचना ॥
द्वारे मारग जान न पैहौ । गढ़हि फांदिकै भीतर जैहौ ॥
द्रोणी कह शङ्करसों ऐसो । फिरत शूलत्यागहिम्बहिकैसो ॥
काढ़ि भस्म शङ्कर तब दीन्हा । जाहि शूल ते रक्षा कीन्हा ॥
कै प्रणाम तब तुरत सिधाये । फान्दो गढ़ भीतर तब आये ॥
प्रथम गये द्रोणी चलि तहँवां । कीन्हे शयन द्रौपदी जहँवां ॥
बैठे चपरि हृदय पर कैसे । व्याध कुरङ्ग धरत हैं जैसे ॥
लैके खड़्ग कण्ठ मों धरिहहुँ । कटिहौंशीश बिलम्ब न करिहहुँ ॥
कनकपलँग पर कीन्हे शैना । पांच पुत्र तब देख्यो नैना ॥
पांच बन्धुके पांचो जाये । रूप समान भेद नहि पाये ॥
खड़्ग घाव तब द्रोणी कीन्हे । पांचो शीश बामकर लीन्हे ॥
गहि अन्तर दासी सब जागीं । हाहा शब्द पुकारन लागीं ॥

जागि उठ्यो रनिवाससब, टेरत करुणा बैन ।
द्रोण पुत्र कर खड़्ग लै, लाग निपातन सैन ॥

चौंकि उठे पुनि सब अकुलाने । आपुसमें बहुते अरुझाने ॥
अन्धकार नहि सूझे नैना । मारु मारु करि भाषें बैना ॥
भागि निकसि गढ बाहर जैसे । रूमवर्ण रूप यारे

अन्धकार महँ कछु नहिं सूझत । अपन परार कोउ नहि बूझत
गढ़ भीतर द्रोणी संहारे । निकरि चले कृतवर्मा मारे ॥
भारत माहिं बचे हैं जेते । निशा युद्ध महँ जूझे तेते ॥
निकरि द्रोण सुत बाहर आये । कृप कृतवर्मा देखन पाये ॥
मारि पाण्डव कीन्हयो काजा । चलिये शीश देखाइय राजा ॥
बैठे खेत कुरुपति जहँवां । तीनिउवीर गये चलि तहँवां ॥
द्रोणी कही नृपतिसों बाता । पांचहु पाण्डवकीन्ह निपाता ॥
हर्षवन्त होइ राजा भाख्यो । मेरी टेक द्रोणसुत राख्यो ॥
धरे आनि शिर भूपति आगे । मुकुट ज्योतिसों देखन लागे ॥

पांच बन्धुके पांच सुत, भूप निहारे नैन ।
विस्मय करि भूपति कही, द्रोणपुत्रसों बैन ॥

करुणा करि भाष्यो तबराजा । बालकवधकीन्हयो कहि काजा,
मूकभये दुख हृदय भुवारा । वंश चार कीन्हे हत्यारा ॥
अस कहि प्राणतजे नृप जबहीं । भय उपजो द्रोणी जिय तबहीं
अर्ज्जुन भीमसेन नहिं मारो । द्रुपदसुता के पुत्र सँहारो ॥
कृतवर्मा जब चित्त विचारा । द्वारावती तुरत पगुधारा ॥
भे आतुर द्रोणी चले तहँवा । उत्तर नर नारायण जहँवां ॥
उदय प्रभात सूर्य भे जबहीं । लै पाण्डव हरि आये तबहीं ॥
खे सबै सैन्य संहारे । पांचो पुत्र तेउ गे मारे ॥
करहि द्रौपदी सरसे । आंसु नीर नैनन सों बरसे ॥

अर्जुन देखि अचंभव माना । द्रुपदसुता यहि भांति बखाना ॥
करुणाकरि पाञ्चाली भाखी । अब घटप्राण जाहि ना राखी ॥
पांच पुत्र करि बन्धु सँहारे । अनुचर सहित सैन सब मारे ॥
द्रोणिहि बान्धि तुरतही दीजै । ना तरु प्राणत्याग हम कीजै ॥

क्रोधवन्त अर्ज्जुन भयो, हांको रथ भगवान ।
बान्धिलैआवोंद्रोणसुत, यह प्रण किये निदान ॥

इति सौप्तिक पर्व समाप्त ॥

ऐषिक पर्व्व ।

यह सुनि रथहांको वनवारी ।क्रोध शोक पारथ धनुधारी ॥
ज्यहिपथ द्रोणीकियो पयाना । तापथ रथ हांको भगवाना ॥
सुनि रथशब्द द्रोणि इत ताके । जात कहां अर्ज्जुन तब हांके ।
सोवत पांचो बालक मारे । भाज जात सुनु किमि हत्यारे ॥
सुनि द्रोणी अपने मनजाना । आयु आनिअवसमयनिदाना ॥
जाको भेद न अर्ज्जुन जाने । सोई बाण कौन सन्धाने ॥
परबल शङ्की अस्त्रहि लीन्हे । पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे ॥
सुरगण देखि सबै भयमाना । प्रलय भये सबही मनजाना ॥

पाण्डव वंश न एक उबारौं। अर्ज्जुन सहित आजु सब मारौं॥
हांक मारि द्रोणी शर छांटे। भूमि अकाश अग्निते पाटे॥
छूटयो बाण तेजसों कैसे। प्रलय अनलमह धावहिं जैसे॥
अर्ज्जुन निरखि अचम्भव माना। श्रीपतिसों यहिभांति बखाना॥

पारथ कह्यो विचारिकै, सुनु देवनके देव।
कौन नाम है बाणको, बूझि परै नहिंभेव॥

तब श्रीहरि यहि भांति बखाने। यह शर अर्ज्जुन तुम नहिंजाने॥
गुरु द्रोण वञ्चिततोहिं कीन्हे। पुत्र जानि वाको शर दीन्हे॥
त्याग किये यह शृङ्गी बाना। तीनि लोक जाको भयमाना॥
श्रीपति कह्यो सुदर्शन धावहु। पाण्डु वंश तुम जाय बचावहु॥
सात बाण तब अर्ज्जुन मारे। महाप्रबल शर टरत न टारे॥
बाण प्रताप सबन भय पाये। नन्दिघोष तजि यदुपति धाये॥
वदन पसारि लीन्हभगवाना। महाबाण हरि उदर समाना॥
सहितयुधिष्ठिर सबहिं बचाये। गर्भ परीक्षित जरै न पाये॥
नाग पाश तब पारथ लीन्हे। क्रोधित द्रोणिहिंबन्धन कीन्हे॥
तब श्रीपति रथ ऊपर डारे। चले तुरन्त भवन पगुधारे॥
करुणा करति द्रौपदी नारी। आइ गये पारथ धनुधारी॥
अश्वत्थामहिं कीन्हे ठाढ़ा। छूटे केश कुबंधन गाढा॥
तनुप्रस्वेद विगलितवदन, चितवनि नीची नैन।
भीमसेन कर खड्ग लै, क्रोधित बोले बैन॥

अरे मूढ़ काटौं अब शौशा । द्रौपदि सुतन वैर लै ईशा ॥
द्रौपदि देखि दयाचित आई । तब माधवसन भाष्यो गाई ॥
विप्र वधेकर दूषण भारी । बन्धन छोड़ि देहु वनवारी ॥
जूझे पुत्र फेरि नहिं पैहौं । द्विजहत्या परलोक नशैहौं ॥
सो सुनि हरि बहुते सुख माना । धन्य द्रौपदी आपु बखाना ॥
शौश चौरि श्रीहरि मणिलीन्हे । पाछे छोरि द्रोणसुत दीन्हे ॥
भारत रणमहं जूझे जेते । सद्गति कौन्हि धर्मसुत तेते ॥
पांच बन्धु श्रीपति संगलाये । देखन बुद्धिचक्षु पहं आये ॥
बुद्धिचक्षु कछु कहिबे लागे । सबै कृष्ण पांडवके आगे ॥
सब मिलि भीम सराहत तोको । अंक मालिका दीजिय मोको
हरि रचि तुल्य वृकोदर कीन्ह्यो । लोहक भीम आगु लै दीन्ह्यो
अन्धभूप तब भुजा पसारे । मिलन समय चूरण करि डारे ॥
भाष्यो भीम अंधबल भारी । तुम रक्षा कीन्हे बनवारी ॥

गन्धारी सबही मिलै, मधुर वचन को भाखि ।
बहुत भांति परबोधि करि, समाधान करि राखि ॥

राजहि कहि गंधारी रानी । हरिरचना कीन्ही यह जानी ॥
दिवस अठारह भा महभारथ । दुर्य्योधन पुत्र सैन्य पुरुषारथ ॥
सो संहार सकल हरि कीन्हा । तेफल लेहि शाप हमदीन्हा ॥
हलधर सहित सकल परिवारा । एक दिवस सब हो संहारा ॥
क्रोधित होइ शाप जो दीन्हा । हंसे कृष्ण रिस नेकु न कीन्हा ॥
गो हस्तिना कीन्हेउ गोना । व्यास देव भाष्यो यह रौना ॥

पुरमें बन्दनवार बंधाये । अति आनंदमय शोभा पाये ॥
नट नाचत गायन सब गावत । वेद पुराणहिं विप्र सुनाव
कनक कलश गङ्गाजल धरयो । व्यासदेव घट आगे करयो।
द्रुपद सुता अरु धर्म नरेशहिं । गांठिजोरकीन्हो अभिषेकहिं
उत्तम वसन आनि पहिराये । श्रीपति सिंहासन बैठाये ॥

दीन्ह्यो मुकुट सु शीशपर, मनहु उदित भे भान ।
जय जय भाष्यो देवगण, छाये स्वर्ग विमान ॥

यदुपतितिलक आपुकरलीन्ह्यो । व्यासदेव ध्वनिवेदहिकीन
भीमसेन तब चामर ढारो । अर्ज्जुन छत्र शीशपर धारो ॥
भूप युधिष्ठिर हरिसों भाखो । दीनबंधु अपनो प्रण राखो ॥
भारत तुम जीत्यो जगतारण । कृपाकरोमोहिंजगतउधारण ॥
प्रभुतुम तीनिलोकके स्वामी । जीव जन्तु सबके उरगामी ॥
विप्र सुदामा दारिद भञ्जन । केशीकंस अघासुर गंजन ॥
यह सुनिकै श्रीपति सुखमान्यो । धर्मराय सों आपु बखान्यो
तुम हौ धन्य धर्म अवतारा । परमभगत जानत संसारा ॥
यहि अन्तर पुरवासी आये । दिये भेंट अरु शीशनवाये ॥
सब संसार सुखी भा भारी । राजा धर्मराज अधिकारी ॥
न लो॰ सबकरहिं अनन्दा । जिमिचकोरपावहिंनिशिचन्दा

द्रुपदपुत्र मन्त्री भये, पकरे भक्ति निदान ।
सबलसिंह चौहान कह, भक्तिवश्य भगवान ॥

भारत कथा सुनै मनलाई। ताके निकट पाप नहिं जाई॥
जो फल सब तीरथ असनाना। जो फल कोटिन कन्यादाना॥
जो फल होइ भरणके राखे। जो फल सदा सत्यके भाखे॥
जो फल हो परमारथ कीन्हे। जो फल पिण्ड गयाके दीन्हे॥
जो फल रणमां प्राण गंवाये। सो फल है यह कथा सुनाये॥

भारत सुने अनेक फल, मोसे कहो न जाय।
अनायास वैकुण्ठ लहि, दरश देहिं यदुराय॥

सौप्तिक—ऐषिक पर्व समाप्त।

स्त्री पर्व्व ।

जन्मेजयते कहतहैं, वैशम्पायन बखान।
नारिपर्व भाषा रची, सबलसिंह चौहान॥

सुनु राजा अब कहौं बखानी। जाते होय पापको हानी॥
सञ्जय देखो मरे भुवारा। विस्मय मान्यो मनहिं मझारा॥
जाइ तब धृतराष्ट्रक आगे। दल मरण विस्मय अनुरागे॥
जब धृतराष्ट्र सुनी यह बाता। मानो परी वज्रकी घाता॥

रोदन करि तब अन्धभुवारा। हा पृथ्वीपति पुत्र हमारा॥
दुर्योधन सुत रण संहारा। सौवों पुत्र जे हते हमारा॥
एक भीम सब रणमहँ मारी। का कीन्हेउ करतार खरारी॥
हते पुत्र सेवकसमुदाई। कोउ न अपनो देत दिखाई॥
निष्फल है अब जियन हमारा। पुत्र पौत्र विन जग अँधियार॥
हा हा पुत्र पुत्र करि राई। रोवै कुरु भूपति दुख पाई॥

दुःशासन अरु कुरुनृपति, सौ बान्धव लै सङ्ग।
जूझे रणमहँ सबै दल, भयो चित्तमहँ भङ्ग॥

हा हा भीषम पिता हमारा। हाय द्रोण हा कर्ण भुवारा॥
जो जो गुणहैं पुत्र तुम्हारा। सो सुमिरे तनु जरत हमारा॥
है सुतशोक महा संसारा। कत गुण सुमिरौं भूप तुम्हारा॥
राज पाट सब परा तुम्हारा। कनक पलँगके सोवन हारा॥
कहां पुत्र दुर्योधन राऊ। परा सुदेश सकल भूईं गांऊ॥
वृथा काल सुत शोगहि पाये। बाम विधाता भा दुखदा...
कर्मदोष दुख लिखा हमारा। सो अक्षर को मेटनहारा॥
परिचर्या करिबो हम काही। पुत्र शोक हिरदयमा आही॥
वृद्ध अवस्था विधि दुख दीना। जैसे पक्षी पङ्कविहीना॥
सब पुरुषारथ पुत्र हमारा। का रचना कीन्हीं करतारा॥
विना नयन तनु ज्यों अहै, बासर ज्यों विनुभानु।
चन्द्र विना जिमि रैनि है, दीपक विनु गृहजानु॥

त्यों बिन पुत्र वंश है ऐसा । कुल को नाम नाश भा तैसा ॥
परशुराम नारद समुझाये । सुतके सनते बचन न भाये ॥
हमैं छांड़ि सुत कहां सिधाये । गर्व्ववन्त ह्वै प्राण गंवाये ॥
सुनी मृत्यु दुर्योधन केरी । जीवन आश नहीं अब मेरी ॥
भीषम कर्ण और भगदत्ता । द्रोणगुरू को भयो निहन्ता ॥
महाविलाप अन्ध नृप करई । संजय तबै बात अनुसरई ॥
राजा शोच तजौ तुम यातें । अब तुम सुनौ ज्ञानकी बातें ॥
राजा अहो परम सज्ञाना । जानौ सब श्रुत शास्त्र पुराना ॥
जन्म मृत्यु दोनों सख्याता । दोनों रहैं पिण्ड महँ ताता ॥
जन्म मृत्यु मायाते धारण । समुझौ मन रोवत केहि कारण ॥

जन्म मृत्यु माया सबै, रोवत हौ केहि काज ।
सञ्जय तहँ समुझावहीं, अन्ध वृद्ध कुरुराज ॥

सञ्जय नाम हते इक राजा । पुत्र शोकते भयो अकाजा ॥
सुत हित चाहत प्राण गँवाये । तब नारद मुनि जाइ बुझाये ॥
जीवन मरण लोक दुखजाना । कर्म्म फलित भा प्राप्त प्रमाना ॥
सब माया जानो तुम नरपति । केवल सबै कर्म्मकी यह गति ॥
[illegible]तहि केर समुझि मन दोषा । हृदय माहिं करिये सन्तोषा ॥
[illegible]केर वचन नहि माना । साधनवचनसुन्यो नहिकाना ॥
[illegible]शासन मन्त्री सब जाना । ताते मन्त्र गने नहि जाना ॥
[illegible]नो कर्ण मन्त्र परमाना । काहू केर कहा नहि माना ॥

रोदन करि तब अन्धभुवारा। हा पृथ्वीपति पुत्र हमारा॥
दुर्योधन सुत रण संहारा। सौवों पुत्र जे हते हमारा॥
एक भीम सब रणमहँ मारी। का कीन्हेउ करतार खरारी॥
हते पुत्र सेवकसमुदाई। कोउ न अपनो देत दिखाई॥
निष्फल है अब जियन हमारा। पुत्र पौत्र विन जग अँधियारा॥
हा हा पुत्र पुत्र करि राई। रोवै कुरु भूपति दुख पाई॥

दुःशासन अरु कुरुन्हपति, सौ बान्धव लै सङ्ग।
जूझे रणमहँ सबै दल, भयो चित्तमहँ भङ्ग॥

हा हा भीषम पिता हमारा। हाय द्रोण हा कर्ण भुवारा॥
जो जो गुणहै पुत्र तुम्हारा। सो सुमिरे तनु जरत हमारा॥
है सुतशोक महा संसारा। कत गुण सुमिरौं भूप तुम्हारा॥
राज पाट सब परा तुम्हारा। कनक पलँगके सोवन हारा॥
कहां पुत्र दुर्योधन राऊ। परा सुदेश सकल भुइँ गांऊ॥
वृथा काल सुत शोगहि पाये। बाम विधाता भा दुखदाये॥
कर्मदोष दुख लिखा हमारा। सो अच्चर को मेटनहारा॥
परिचर्या करिबो हम काही। पुत्र शोक हिरदयमा आही॥
वृद्ध अवस्था विधि दुख दीना। जैसे पच्छी पङ्खविहीना॥
सब पुरुषारथ पुत्र हमारा। का रचना कीन्हों करतारा॥

विना नयन तनु ज्यों अहै, बासर ज्यों बिनुभानु।
चन्द्र विना जिमि रैनि है, दीपक विनु गृहजानु॥

ज्यों बिन पुत्र वंश है ऐसा । कुल को नाम नाश भा तैसा ॥
परशराम नारद समुझाये । सुनके गनते वचन न आये ।
मैं छांड़ि सुत कहां सिधाये । गर्व्ववन्त है प्राण गंवाये ॥
सुनी मृत्यु दुर्योधन केरी । जीवन आश नहीं अब मेरी ॥
भीषम कर्ण और भगदन्ता । द्रोणगुरु को भयो निहन्ता ॥
महाविलाप अन्ध नृप करई । संजय तबै बात अनुसरई ॥
राजा शोच तजो तुम याते । अब तुम सुनो ज्ञानकी बातें ॥
राजा अहो परम सज्ञाना । जानो सब श्रुत शास्त्र पुराना ॥
जन्म मृत्यु दोनों सख्याता । दोनों रहें पिण्ड महँ ताता ॥
जन्म मृत्यु मायाते धारण । समुझो मन रोवत केहि कारण ॥

जन्म मृत्यु माया सबै, रोवत हो केहि काज ।
सञ्जय तहँ समुझावहीं, अन्ध वृद्ध कुरुराज ॥

सञ्जय नाम हते इक राजा । पुत्र शोकते भयो अकाजा ॥
सुत हित चाहत प्राण गँवाये । तब नारद मुनि जाइ बुझाये ॥
जीवन मरण लोक दुखजाना । कर्म्म फलित भा प्राप्त प्रमाना ॥
सब माया जानो तुम नरपति । केवल सबै कर्म्मकी यह गति ॥
उतहि केर समुझि मन दोषा । हृदय माहिं करिये सन्तोषा ॥
काहूकेर वचन नहि माना । साधनवचनसुन्यो नहिकाना ॥
दुःशासन मन्त्री सब जाना । ताते मन्त्र गने नहिं जाना ॥
सुनो कर्ण मन्त्र परमाना । काहू केर कहा नहिं माना ॥

भीषम केर वचन नहिं राखे। बहुतै नीति धर्म उन भाखे॥
गन्धारी के वचन न माना। तेहि अपराध तजे तिन प्राना॥

सदा पाप मनमें बसे, नाहिन धर्म विचार।
सोइ पापते भूप सुनु, जूझे पुत्र तुम्हार॥

व्यास केरि वाणी नहिं मानी। अतिशय अहङ्कार मतिठानी॥
बहुत प्रकार कृष्ण समुझाये। पै विरोध वाके मन भाये॥
क्षत्री सब कीन्हें चयजानी। कृष्ण केरि वाचा नहिं मानी॥
तुम नृपसुतवशकछुनहिंकहेऊ। पापते पुत्र नाश ह्वै गयेऊ॥
ताते शोक तजहु तुम राई। बहुत प्रकार मन्त्र समुझाई॥
सुनत कछू अधीर भा राजा। महा शोक पुत्रनके काजा॥
छांड़ै भूप ऊर्ध्व कर श्वासा। पुत्र शोकते भयो उदासा॥
रोवै धीर धरै नहिं राई। तबहिं विदुरराजहिं समुझाई॥
सुनिकै वचन धीर भयो राजा। कीन्हेउ शोक पुत्रके काजा॥
उठो नरेश शोच नहिं करिये। मेरे वचन हृदय में धरिये॥
काल विवश है सब संसारा। तीन लोक वश मृत्यु भुवारा॥

जाने योग्य अयोग्य तब, जाने सब संसार।
महावीर क्षत्री जिते, सबै होत संहार॥

वृद्ध युवा अरु बालक आहीं। राजा प्रजा जिते जगमाहीं॥
१९ मृत्यु सत्य प्रचराना। जानहु राजा परमनिधाना॥
नृपबातविदुर मुखजबहीं। भयो मौन धृतराष्ट्रकतबहीं॥
होत हृदय नहिं धीरा। मूर्च्छितभये अन्धनृप वीरा॥

तवहिं व्यास सञ्जय इक साथा। विदुर सहित बोधे नरनाथा ॥
शीतल नीर वदन में दीन्हा। तबहीं हृदय चेत नृप कीन्हा ॥
यहि प्रकार तव चेत जगाये। रोदन करत कहत मन लाये ॥
धृग यह जीवन जगत हमारा। पुत्र सुशोक सहै को पारा ॥
महा विलाप धीर नहि धरहीं। पुत्रशोक पुनिपुनि उर करहीं ॥
वार वार रोवत है राई। हाहा पुत्र परम सुखदाई ॥

धृतराष्ट्रक रोवें तहां, पुत्र शोक कर हेत।
छण इक होत सचेत नृप, छण इक होत अचेत ॥

बहुविधि व्यासकहतसमुझाई। तबहूं धीर धरत नहिं राई ॥
विदुर और सञ्जय समुझावें। काहुके वचन हृदय नहि आव ॥
महा शोक करि रोदन करहीं। पुत्रनाम पुनि पुनि उच्चरहीं ॥
तवहिं व्यास मुनि कह समुझाई। मन्त्र हमार सुनो हो राई ॥
रोदन केहि हित करहु भुवारा। यह सब देखनको उपकारा ॥
मैं इक समय इन्द्रपुर गयेऊं। नारदआदिमुनिनसगलयेऊं ॥
तिहि अवसर वसुधा तहँजाई। विधि सुरपतिसों कह्योबुझाई ॥
कहो देव मेरो उद्धारा। मम ऊपर भवभार अपारा ॥
पूर्व विष्णु जे दैत्य संहारा। ते सब भयो नृत्ति-अवतारा ॥
भारी पाप सहै नहिं पारा। यहै निवेदन सभा-मँझारा ॥
रोदन करि धरणी तव कहई। सकल देवता साखी अहई ॥

तहां विष्णु हँसिके कहेउ, सुनु भुव वचन हमार।
मन चिन्ता त्यागन करो, करिहौं काज तुम्हार ॥

हैं निज वंश देवता जेते। जगतमाहिं जन्मे ले तेते॥
कुरुक्षेत्र भारत सन्धारा। तहां होय सबको संहारा॥
जाहु पुहुमि अपने अस्थाना। देव विचारि कहो भगवाना॥
वसुधा मृत्यु लोक कहँ आई। तबहि विचार करै यदुराई॥
सो दुर्योधन पुत्र तुम्हारा। कलियुग केर अहै अवतारा॥
महाक्रोध चञ्चल है अङ्गा। सो कलियुग आयसु करि भङ्गा॥
सो बान्धव अरु कर्ण भुवारा। भारत हेत भयो अवतारा॥
हम सब कथा कही तुव पासा। भयो युद्ध तेरो सुत नासा॥
ता कारण सब भयो सँहारा। शोक तजहु अब अन्ध भुवारा॥
यह सब कीन्हे अन्ध भुवारा। पृथ्वीकेर उतारेउ भारा॥

यहि प्रकारते व्यास तब, कहेउ बहुत समुझाय।
धर्मरूप तुम अन्धरूप, त्यागहु शोक उपाय॥

धमस्वरूप युधिष्ठिर राजा। ताते होय तुम्हारो काजा॥
पांचौ बान्धव पाण्डुकुमारा। सो जानो शत पुत्र हमारा।
वे पांचो तुव सेवा करि हैं। आज्ञा तोरि सदा शिर धरिहैं॥
मोरे वचन सत्य सुनु राजा। तुम्हरे क्रोधते पाण्डु अकाजा॥
राखहु नृपति आपने पासा। दासभाव मनकर हुलासा॥
पाण्डवकेर करौ कल्याना। सुनि तब राजा करै बखाना॥
स मुनीश्वर अग्र विधाना। सुनो सबै तुम अब दै काना॥
क तनु जरै हमारा। धीर्य धरों सो कौन प्रकारा॥
हेतु बात हम माना। पुत्रशोक त्यागे हम जाना॥

यहिप्रकार शान्तनु नृपभयेऊ। तबहिंव्यासऋषितपहितगयऊ॥
शीतल जल राजाको दीन्हा व्यास वचन सुनिधीरजकीन्हा॥
राजाको समुझाइकै, भे मुनि अन्तर्द्धान।
व्यास वचनते अन्धकहँ, मनमें उपजा ज्ञान॥

इति प्रथम अध्याय॥१॥

सुनु राजा तब संजय कहई। दोउ कर जोरि चरण गहि रहई॥
कछुक निवेदन अहै हमारा। आज्ञा यद्यपि देहु भुवारा॥
गन्धारीकहँ बात सुनावो। अन्तःपुरमें खबरि जनावो॥
राजा सुनत दीर्घ लै श्वासा। मूर्च्छित गात भूमिपरगासा॥
तबहीं विदुर उठायो राजहि। रोदन काह करौ बेकाजहि॥
तब धृतराष्ट्र कहेउ समुझाई। आनु विदुर सब इस्त्री जाई॥
वधुन समेत सङ्ग गन्धारी। सब लावहु यह कहा विचारी॥
चलौ सङ्ग तुमहूं हम जैहैं। सबहीको अबहीं लै ऐहैं॥
यह कहि रथहि चढ़े तबराजा। चले वधुनके आनहि काजा॥
गये तुरत तब महलमँझारा। महाशोकते अन्ध भुवारा॥
महादुखित रोदन करत, कीन्हेउ महल प्रवेश।
सब जूझे कुरुक्षेत्रमहँ, सबहुन सुना सन्देश॥
रोदन करत भयो आछाता। मानो परी वज्र की घाता॥
घर घर रुदन नगरमें ठयेऊ। नर नारी सब रोवत भयेऊ॥

देवन जे देखी नहिं नारी। परीं भूमि लोटें सुकुमारी॥
विकलवन्त रोवें सब नारी। छूटे केश न देह सँभारी।
एक एक पट पहिरे अहई। राजवधू इक्ठौ जे रहई॥
घरते बाहर चलीं पुकारी। विकल सबै कुरुकुल सिधारी॥
गृहते चलीं पुकारत जाई। मनहुँ सिंहिनी पतिन गँवाई॥
एकको गहे एक धरि रोवै। एकको हाथ हाथ पर रोवै॥
कन्या पुत्र गोदते डारहिं। परी भूमिमें सबहि पुकारहिं।
कञ्चन पुतरी मनहुँ संभारी। रोवत लोटत भूमि मँझारी॥
हा पति देव प्राणके प्यारे। हमहि छांड़ि तुम कहां सिधारे॥
प्यारे हमहिं सङ्ग ले लीजै। इस विपत्तिमें दगा न दीजै॥
यह रणभूमि महादुखदाई। कोउ न अपनो देत दिखाई॥

आर्तनाद भयो नगरमहँ, सब तिय भई अनाथ।
सबैं वधू तहँ रोवतीं, धरे हाथपर हाथ॥

सासु श्वशुर सब एकहि साथा। रोवहिं सबै धुनै महि माथा॥
चलीं नगरके बाहर तहंवां। भयो युद्ध कुरुखेतहि जहंवां॥
सहित अन्ध नृप औ गन्धारी। आई सब कुरुखेत मझारी॥
धृतराष्ट्रके सन्मुख आये। तीनहु वीरन वचन सुनाये।
कृप कृतवर्मा द्रोणकुमारा। महा प्रबल तीनों सरदारा।
[illegible]जाते रोवत यह कहई। वचन न आव नयन जल बहई॥
[illegible] कीन्हे उ कुरुराजन। बचे न कोउ सुनिये महराजन
[illegible]नों भारतमें रहेऊ। राजा सुनहु सत्य हम कहेऊ॥

तीनौं तब बोधत गन्धारी । तजौ शोक सुनि बात हमारी ॥
जाना तुम्हे क्रोधमें राई । नतहि लोहकर भीम बनाई ॥
क्रोध तजौ राजा परमाना । पाण्डव निज पुत्रकरि जाना ॥
धर्म्मनके तुम देखु विचारी । तुम्हने पुत्र दीन दुखभारी ॥
व्यास विदुर भीषम समुझाये । बहु प्रकार हम ताहि बुझाये ॥
काहू केर कहा नहि माना । हठकर कीन्हेउ रण मैदाना ॥
तुम सब जानत हौ सज्ञाना । कहा कहौं भाषत भगवाना ॥
तुम्हरे चित दया नहि आई । पाये बहु दुख पांचो भाई ॥
पांच गांउ तुमहूं न दिवाये । अपने पुत्रहि नहिं समुझाये ॥

महादुःख सहि पाण्डवन, तब कीन्हों यह कर्म ।
मारन चाहौ भीमको, कहा कहौ तुम धर्म ॥

कृष्णवचन सुनि अन्धभुवारा । कहै सुमति करि हृदयविचारा ॥
बड़े भाग्यते भीम बचाये । धन्य कृष्ण अन्धहि समुझाये ॥
क्रोध सकल अब गयो हमारा । महा कृपा भै पाण्डुकुमारा ॥
पुत्र सकल रण जुझे हमारा । महाशोक भा नन्दकुमारा ॥
तब जानेउ छूटेउ मन क्रोधहि । परशहि अङ्ग पांडवन योधहि ॥
धर्मराज अरु भीम जुझारा । पारथ सहदेव नकुल कुमारा ॥
सबहि अन्ध चरणन लपटाने । तजिके क्रोध दया बहुमाने ॥
पाण्डव पुत्र महा अज्ञाना । आपन पुत्र सत्य करि जाना ॥
ऐसे पुत्र नशोक मिटाये । प्रेम हर्ष तब पांडव पाये ॥

धृतराष्ट्रको परभिकै, पुत्र सुशोक मिटाइ।
तब पांचौ पांडव बहुरि, गन्धारीपहं जाइ॥
गन्धारीपहं कीन्ह पयाना। आइ व्यासमुनि तहां तुलाना॥
पुत्रशोक गन्धारी अहई। शाप देन पाण्डवको चहई।
पट्टी बांधे हैं दोउ नयनहि। तहां व्यास भाषे यह बैनहिं॥
वचन हमार वेद परमाना। तुव आगे मैं करौं बखाना॥
शांति होहु सब दुखन मिटाई। तुव सेवा कर पांचो भाई॥
जात युद्ध दुर्योधन राऊ। आज्ञा लै नहिं परशेउ पांऊ॥
तब तुम्हरे मुख आइ न बाता। धर्मज सज्जय पाप निपाता॥
इतनी बात पुत्रसन भाषा। पूरण भयो धर्म अभिलाषा॥
वचन तुम्हार जगत महँ टरई। तौ रवि चन्द्र उदयनहिं करई॥
सोई वचन भयो परमाना। विरथै धर्म कुकर्म नशाना॥
क्रोध क्षमा करु वेगि तुव, कहेउ व्यास समुझाइ।
धर्म वृद्ध क्षय पापको, यहै सुनौ मन लाइ॥
व्यास वचन सुनिक गन्धारी। तज्यो क्रोध तब कहेउ विचारी॥
ठाढ़े पांच बन्धु भगवाना। कहेउ व्यास गन्धारि बखाना॥
जो कछु व्यास कहतहैं बानी। वेद प्रमाण सत्य हम जानी॥
पांचौ पुत्र परम रिस नाहीं। सुतको शोक भयो मनमाहीं॥
जे [illegible] मम कुन्ती जननी तासू। तैसे हमैं देखि परगासू॥
[illegible] शकुनी कर्णहु चारो। पापी सबै भूप संहारी॥
[illegible] पापहि मन दीन्हो। जानुभङ्ग दुर्योधन कीन्हो॥

नाभी हेठ दान परहारा । ताते मनु भा क्रोध हमारा ॥
पापी भीम जानुमें मारा । सुनत त्रासभयो पांड़कुमारा ॥
मनमहं त्रास हाथ तब जोरै । मातन कहौ दोष कह मोरै ॥

सर्व्व वीर संहारि कै, बाच्यो एक भुवार ।
ताहि न मारें जननि हम, निष्फल युद्ध हमार ॥

उनते जीति न सकेहु भुवारा । पाप कपट करिकै हम मारा ॥
अरु भाई कर दोष विचारी । ताते जानु भङ्ग करि डारी ॥
जा दिन सभा द्रौपदी आनी । जानु देखायो सो अज्ञानी ॥
ता दिन हमहु प्रतिज्ञा लीन्हा । जानु भंग ता कारण कीन्हा ॥
राजा बिन जीते ते माई । केहि प्रकार हम पृथ्वी पाई ॥
अन्तहु पांच गाउँ हम मांगे । दीन्हो नहीं गर्व मन पागे ॥
तबहुँ न मानी बात भुवारा । कहु जननी का दोष हमारा ।
ता कारण नहिं धर्म विचारा । जस करि जाना तस हम मारा
अपने कर्म्म भयो संहारा । नाहिन सुत कछुदोष तुम्हारा ॥
यह दुख मोहिं दीन्ह करतारा । धर्मराज अस सुत रणमारा ।

नकुल साथ दुःशासनहिं, लरे प्रथम मैदान ।
तुम गहि भुजा उखारेहु, यहै बड़ो अपमान ।

पाछे भीम कहेउ समुझाई । बिना दोष कीन्हो नहिं माई ॥
रजस्वला जो द्रौपदि रानी । गहिकर केश सभामें आनी ॥
एक वस्त्र सोउ खैंचकै लीन्हा । तहँ माता हमहूं प्रण कीन्हा ॥
भुजा उखारों जबहि तुम्हारी । पुरै प्रतिज्ञा तबहिं हमारी ॥

कहेउ पुकार सभाके माहीं। बिना हते छांड़ों तोहि नाहीं॥
जबलों रुधिर पियो नहिं तोरा। कबहुँ न मिटै शोक यहमोरा॥
क्षत्रीधर्म्म प्रतिज्ञा कीन्हा। ताते भुज उखारि मैं लीन्हा॥
याते जननी दोष हमारा। क्षमा करो मैं शरण तुम्हारा॥
तुम जननी मत जानहु आना। हौं मैं जानन कुन्ति समाना॥

द्रुपदसुता पट सभामें, खैंच दुष्ट दुर्बोध।
कहु जननी कैसे नहीं, आवै हमको क्रोध॥
भद्र उनहींकी ओरसे, माता सबै उपाध।
अब सब क्षमिये जान जन, मेरो यह अपराध॥

यह सुन कहत भई गन्धारी। तू राक्षस है मांस-अहारी॥
सुत दुःशासनको वध करिकै। रुधिर पियो अति आनन्द भरि
तेरे वधे को दुख नहीं मोही। शोणित पियो कौन विधि द्रोही
यह सुन भीम कह्यो सुन माता। दुःशासन हो मम प्रिय भ्राता
तासु रुधिर नि गसम अनुमानो। तासों कछू घृणा नहिं आनो
अर्जुन धर्म नृपति भय करिकै। कहत भये तुमि धीरज धरिकै
हम तुम्हरे पुत्रन वधकारी। क्षमा करो हम शरण तुम्हारी॥
अब करजोरि खड़े हम पांचो। शाप देहु किमि आशिष सांचो
बार बार हम विनवत माता। मिटत न जो कछु लिखेउ विधाता
मधुर वचन जब नयन सुनाये। ऐसे मानहि शान्त कराये॥

सो . स कीन्हो अम्ब सुनु, मम मन दुख अनुमान।
क्रोध ईर्षा दूर कर, दया हियेमें जान॥

क्रोध शान्त देवी भई, भीम वचन सुन कान।
तब गन्धारी शान्तहै, कहन लगी दुख मान॥
दया छांड़ि निर्दयी बन, शतसुत वधे सटेक।
अन्ध वृद्धकी लकुटिया, ससुझन छोडी एक॥
कहत लोग सब जगतमें, कठिन पुत्रको पीर।
सौ पुत्रनको मरण सुन, कैसे बांधौं धीर॥

इति द्वितीय अध्याय॥ ९॥

तब गन्धारी कहेउ बुझाई। कहँ धर्मंश युधिष्ठिर राई॥
सुनत त्रास काँपे नरनाथा। ठाढ़े भये जोरि कर हाथा॥
बोले वचन त्रास भई भारी। जननी सुनियो बात हमारी॥
हमसे भा सब वंश सँहारा। जननी आयो शरण तुम्हारा॥
शाप योग्य मैं माता नाहीं। सहे शाप तुव को जगमाहीं॥
धृग जीवन है जगत हमारा। आपने हाथ बन्धु-संहारा॥
देवी सुनत भयो मन धीरा। दीन वचन भाषे न्टपवीरा॥
प्रति-उत्तर तब कछु न दीन्हा। मनको दुख प्रकाश नहिं कीन्हा॥
तब माता धीरज धरेउ, न्टपति विनय कह वैन।
तीन बन्धु देवी कहै, हम नहिं देखे नैन॥
अर्ज्जुन सहदेव नकुलकुमारा। सुनत वचन तब भयो खँभारा॥
हरिके पाछे पारथ जाई। भागि दुरे तब दूनौ भाई॥

तीनो हरिके पाछे गयऊ। शापत्रासते आतुर भयऊ॥
एकघरी सबही चुप रहेऊ। क्रोधशान्त गन्धारी कहेऊ॥
पुत्र आउ अब निकट हमारा। काहे कीजै त्रास कुमारा॥
अपनो हुकुम करो अब जाई। धर्मपुत्र तुम पांचो भाई॥
देवी क्रोध तज्यउ परमाना। पाण्डव शाप भयो परित्राना॥
गन्धारी तब बोली बाला। आनो कुन्ती शत्रु नाता॥
पांचो बान्धव कुन्ती लाये। सबही मिलि कुरुखेत सिधाये॥

गन्धारी कुन्ती सहित, पांच बन्धु भगवान।
युद्धभूमि तब सबे जन, देखनलाग निदान॥

तहँ शत वधू रूप उजियारी। मानहुँ चन्द्रकला बुधिधारी॥
अपने अपने कन्त उठाये। रोदन करें सबै बिलखाये॥
मनहुँ मृगी शिशुयूथ बिहाई। रोदन करें सबै बिलखाई॥
युद्ध भूमि देखी भयकारा। देखे वीर अनेक जुझारा॥
कुण्डल नाना रतन अपारा। महारूपते परे भुवारा॥
रथन छत्र अरु दण्ड अपारा। पूरि रहेउ रणभूमि मँझारा॥
वसन अस्त्र बहुतक तहँ देखे। नाना मुकुट रतन मय लेखे॥
शोणित नदी बहत हैं ऐसी। सरिता यम वैतरणी जैसी॥
गज रथ अश्व मनुष्य अपारा। बहे जात शोणितकी धारा॥
तीन तार शोणित गम्भीरा। परे नृपति त्यों बलवीरा॥

रोवत हैं सब तियागण, नाना रूप अपार।
आपन आपन कन्तको, रोदन करत पुकार॥

काहू केर शीश है नाहीं। काहू केर परे कटि बाहीं॥
काहू केर दोउ भुज नाहीं। काहुहि शूल घाव तनु आहीं॥
कोई कटे खड़गते आधा। काहुहि परे भूमिपर कांधा॥
काहू केर जांघ दोउ काटे। काहू केर हृदयमें छाटे॥
ऐसे परो वीर बहु तहँई। आरन रणहि भूमि है जहँई॥
काक गृध्र जंबुक जहँ नाना। अरु दुर्गन्धि वास है घाना॥
बहुत रूप पक्षी गण आये। मांस खाइ आनन्द बढ़ाये॥
प्रेत भूत वेताल अपारा। नाचै योगिनि ताल संभारा॥
नचैं कबन्ध देत करतारी। योगिनि डाकिनि करैं धमारी॥

क्रोधवन्त धनु बाणलै, कोई युद्ध प्रकास।
उठ कबन्ध रण खेत महँ, प्रेतकरहि सब हास॥

कोइ पति कहि कोइ कहैं कुमारा। कोइ बन्धु करि करै पुकारा।
भयो महारण आरत शोरा। रोदन भयो महाघन घोरा॥
रोवहि शतहु बधू बिलखानी। महा विकल दुर्योधन-रानी॥
सो कहँ लग मैं करहुँ उबारा। भयो रुदन जहं शब्दअपारा॥
हाहा कन्त प्राणपति राजा। जाको यश सब जगतविराजा॥
बासुकि लक्ष्मी अन्ध नृपाला। करैं सेव लाखन भूपाला॥
छत्रहि छत्र रहत जग छाई। सेव करन आवत बहुराई॥
रत्न सिंहासन पाट तुम्हारा। नाम तुम्हार जान संसारा॥
रत्न मुकुट आलंकृत नाना। रूप देखिकै काम लजाना॥
अधिक सुन्दरी तुमरी रानी। कर्मविवश यह गति भै आनी॥

अपने अपने सुन्दरी, शत बान्धवकी नारि।
बहु विलाप कहि जात नहिं, रोवहिं शीश उघारि॥

लखि गन्धारी भई अधीरा। देख्यो यह कारण यदुवीरा॥
सकल वधू रोवतीं हमारी। तुमहीं सब अनाथ करि डारी॥
जो सुन्दरि मैं तुमहि गनाहीं। भई अनाथ रोवत सब आहीं॥
राजा एक करै सुत सेवा। ताकी यह गति कीन्ह्यो भेवा॥
जा तनु अतर सुगन्ध सोहाई। तीन शरीर गृध्र खग खाई॥
याला समय पुलसन भाखा। वचन हमार राउ नहि राखा॥
ताहि दोष नहिं नन्दकुमारा। सबै पराक्रम आहि तुम्हारा॥
जूझे सौ सुत रहेउ न कोई। अन्ध नृपतिकी का गति होई॥
अस कहि रोवहि ऊंच पुकारी। ताहि देखि बोले वनवारी॥
तुम्हरे सुत मम वचन न माना। और कहा सो व्यासम जाना॥

भीषम द्रोण बुझायेऊ, और विदुर मुनिव्यास।
कहा न मान्यो काहुकर, कीन्ह्यो रणपरगास॥

धृतराष्ट्रक तब बहुत बखाना। इन कीन्ह्यो सबकरअपमाना॥
पाण्डव वीर महाबल भारी। हठिकैकुरुपतिरणहिविचारी॥
अपने कर्मन भये विनाशा। नारायण यह वचन प्रकाशा॥
सुनिकै बात कहत गन्धारी। अपने कर्मन गो अपकारी॥
दोष न काहू को मन धरेऊ। सौ बांधव तेहि संगहि मरेऊ॥

चत्रिधर्म उन करेउ रण, सबै वीर मैदान।
कुरुचेत्र तनु त्यागिकै, सब चढ़ि गये विमान॥

तब तीनउ जन कह्यो बुझाई । सुनिये साधु परम सुखदाई ॥
शोक तजो मत करौ विलापा । गये स्वर्ग सब कहँ सन्तापा ॥
भीम पाप कीन्हेउ बहुसंगा । ताते हम कीन्हेउ रणरंगा ॥
मारे दल पाण्डव संहारा । वधे द्रौपदी पञ्च कुमारा ॥
पाण्डवको सो पराभव दीन्हा । राजाद्रुपद पुत्रवध कीन्हा ॥
अब आज्ञा दीजे नरनाहा । जंये हमहूं निज थल माहा ॥
विदा मांगि तीनों तब गयेऊ । द्रोणी व्यासाश्रम पगु धरेऊ ॥
कृप कृतवर्म द्वारका गयेऊ । कुरुक्षेत्रमहँ सबजन रहेऊ ॥
गये सबै रणभूमिमँझारा । जहँ बहु वीर परे विकरारा ॥
रोदन करैं तहां सब कोई । वाम विधाता काहु न होई ॥
भयो शोर तहँ आरत भारी । एक बार मृत वधू पुकारी ॥

महाशोर कुरुक्षेत्रमहँ, रोदन भयो अपार ।
नगरलोगकी नारि सब, रोवत करत पुकार ॥

राजा धर्म सुनो यह पाये । कुरुक्षेत्र धृतराष्ट्रक आये ॥
पांचौ पाण्डव नन्दकुमारा । कुरुक्षेत्र तुरतहि पगु धारा ॥
प्रथमै धर्मराज गये आगे । अन्ध नृपतिके चरणन लागे ॥
कहौं युधिष्टिर पुत्र तुम्हारा । मोरे दोष न करौ विचारा ॥
आप पिता हम पुत्र तुम्हारा । क्षमौ दोष जो भयो हमारा ॥
राजपाट सब अहै तुम्हारा । हम सेवक समेत परिवारा ॥
बहु प्रकार तब अस्तुति कीन्हा । तब धृतराष्ट्र शान्ति मनलीन्हा
अन्धनृपति तब कहेउ विचारी । भीम सबै मम पुत्र सँहारी ॥

मिलन हेतु हमरी है आशा। कपट बुद्धि मनमें परगाशा॥
भस्म करन चाहे मन माहीं। तब कह कृष्ण भीम यहं नाहीं॥
कालहि आइके भेंटि है, भीम तुमहि नरनाह।
चारौ बन्धव मिलेतहँ, विनय बहुत करि ताह॥
तब यह श्रीपति युक्ति उपायेउ। लोहे भीम तहां निर्मायेउ॥
भीमसेनकहँ राखि दुराई। लोहे भीम अन्धपहँ लाई॥
ठाढ़ो भीम कहत यदुराई। मिलौ हेतु करि कण्ठ लगाई॥
नृपके कपट आहि मन भाई। मारौं भीमहि दुख मिटिजाई
कही बात हिरदयमें चाही। सुतके शोक विकल तनुमाही॥
हर्षित क्रोध मिले तब राई। मनहुँ परी दुखिया निधि पाई॥
अयुत नागको बल तनुमाही। क्रोधित भीमसेनको गाही॥
मिलत लोह चूरण करि डारा। पुहुमी माहिं पराकै छारा॥
सञ्जय हाहा करी पुकारा। भीमसेन को करै सँहारा॥
सब ही हाहा शब्द पुकारा। भयो मोह तब अन्धभुवारा॥
तब माया करि रोवन लागे। भीम शोक हिरदयमहँ पागे॥
हाय भीमसुत राजा, बहुविधि करत पुकार।
शोकशान्ति जबहीं भयो, श्रीपति वचन उचार॥
राजहि बात कहत यदुनाथा। रोदन कहा करौ नरनाथा॥
अहै भीम सुनियो हो राई। धृतराष्ट्रको कृष्ण बुझाई॥
हत सुनहु बनवारी। है सब रचना कृष्ण तुम्हारी॥
तुमहो भगवाना। तुमहीं देहु ज्ञान अज्ञाना॥

वैसी बुद्धि तासुको दयऊ। जाते शत बान्धव मरि गयऊ॥
पाण्डव कह जीते पुरुषारथ। भक्तहेतु कीन्हेउ तुमस्वारथ॥
पाण्डव कुलके भयो उवारा। कौरव वंश कीन्ह संहारा॥
दिना अठारह अस रण रचेऊ। शत बान्धव महँ एक न बचेऊ
मोर वंश तुम कीन्ह सँहारा। कृष्ण लीजिये शाप हमारा॥
विंशति षट संवत यदुराई। तवकुल आपुसमहँ कटि जाई॥

छपन कोटि यदुवंश हैं, पुत्र प्रपौत्र तुम्हार।
लेहु कृष्ण तुम शाप मम, एकहि दिन संहार॥

हँसिकै कृष्ण कही यह बाता। को अस है जगमें सञ्जाता॥
यदुवंसिन सों जीतन चहई। कौन जगत में ऐसो अहई॥
आपहि वंश होय अपकारा। यद्यपि पायो शाप तुम्हारा॥
पापी कुरुपति गयो सँहारा। काह दोष धौं भयो हमारा॥
हम जब गये हते दरबारा। पांच गांव मांगे भूपारा॥
ग्राम देहि नहि मारन चहई। तब कुरुपतिसन भीषम कहई।
मोहि शाप केहि कारण दीन्हेउ। यहे जगतपति कहिबे लीन्हेउ
सुनिकै लज्जित भइ गन्धारी। कृष्ण-वचनसों शोक निवारी॥
पुत्र शोक छांड़ेउ गन्धारी। तज्यो क्रोध तनु सुरतिसँभारी॥
ऐसे सुनत शान्त सब भयऊ। तबहीं कृष्ण हर्ष मन लयऊ॥

क्षमा क्रोध जबहीं भयो, अन्ध कुरुपति राय।
पाछे तहंवा द्रौपदी, पुत्रशोक बहु पाय॥

पांच पुत्र गये वधे हमारा। बिलपै परी भूमिमंझारा॥
गन्धारी गहि हाथ उठाई। लीन्ह वधू कहँ कण्ठ लगाई॥
बहु प्रकार समुझावहि वानी। भइ तब मौन द्रौपदी रानी॥
सबै वधू लै कन्तन रोवत। देवलोक सब सुरगण जोवत॥
तरुण बयस सब ही हैं बाला। प्रथमवयस अतिरूपविशाला॥
छूटे केश न देह सँभाला। व्याकुलसकलमहाविकराला॥
यह सब देखि तेयागेउ शोका। पुत्र तुम्हार गये सुरलोका॥
रोइ सुभद्रा सुतहि पुकारी। पुत्रहि बिना धीर किमि धारी॥
चक्रव्यूहयुद्ध मैं बीत्यो। कर्ण द्रोण वीरनते जीत्यो॥
ऐसो पुत्र जासुको मरई। तासु जननि किमि धीरज धरई॥

कैसे जीवै मातु वह, और तासुकी नारि।
उतरा रोवति लाज तजि, हा प्रीतम सुखकारि॥

देख्यो विस्मय श्रीभगवन्ता। रोवत पारथ शोच अनन्ता॥
उतरहि देखि सबै तहँ रोवत। कुन्ती रानि वधूमुख जोवत॥
सासु सुभद्रा कहि समुझावत। उतराकहँ कर गहि बैठावत॥
यहि प्रकार रोवत सब नारी। कुन्ती मातु करै मनुहारी॥
ऐसेही सब भई अधीरा। शोकित व्याकुल रहै शरीरा॥
कुन्ती रानी औ गन्धारी। कीन्ह वधुनको बहु मनुहारी॥

आरत नाद मिटाइ तब, बहु बहु धीर धराइ।
सब मिलि त्यागहु शोक अब, कहा युधिष्ठिर राइ॥

इति तृतीय अध्याय॥ ३॥

रत नाद शान्त जब भयेऊ । धृतराष्ट्र राजासों कहेऊ ॥
नहु बात धर्मज सुत राजा । अब नहि शोच करनको काजा ॥
रिको मायाते संसारा । आवत जात न लागै बारा ॥
रे वीर भारत मैदाना । दानव हते देव जे नाना ॥
अष्टादश चोहिणि दल भारी । भारत भूमि परे सब झारी ॥
द्रोण कर्ण भगदत्त भुवारा । और नृपति जे हते अपारा ॥
और नृपति जिनके नहि कोई । समगति करौ सबनकी सोई ॥
जा कैसो करे उपाई । दाहकर्म वीरनके आई ॥
सुनिकै बात युधिष्ठिर राजा । लागे करन दाहकर काजा ॥
धर्मज भीम धनञ्जय वीरा । नकुल और सहदेव सधीरा ॥

पांचो बान्धव मिलि तहां, करैं दाह उपदेश ।
बड़े बड़े सरदार सब, छत्री वीर नरेश ॥

चन्दन अगर सहित घृत लीन्हे । दाह कर्म सबहीको कीन्हे
पहिले दुर्योधन भ्रत भाई । लषण कुंवरको दाह कराई ॥
भूमि गुप्त करि कुरुपतिधारा । बाहर काढ़ि कुंवरको जारा ॥
द्रोण वीर भगदत्त भुवारा । और कलिङ्ग शूर बरियारा ॥
कर्णशोग अँगारमनि रानी । होवै मांझ सतीभद्र जानी ॥
और त्रिया जोहि सत मनमाना । भई संग पति सती प्रमान ॥
भूरिश्रवा जयद्रथ राजा । अभिमन्यु दाह करे तब काजा ॥
उतरा सती होनको जाई । कहैं कृष्ण तासों समुझाई ॥

तुम्हरे गर्भ पुत्र यक होई। कुरु पाण्डवके सरवर सोइ।
हैं दुइ मास गर्भ कहि भाषा। बहु समुझाइ कृष्ण तेहि रा
बहुप्रकार उत्तराकहँ, कहेउ कृष्ण समुझाइ।
दुहूँ वंश महँ एक पति, होइ गर्भ तुव आइ॥
तब विराट अरु द्रौपद राजा। सोमदत्त के दाहन काजा॥
अंशुमानको दह्यो शरीरा। चेकीतान दह्यो रणधीरा॥
काशीराज शिखण्डी वीरा। धृष्टद्युम्नको दह्यो शरीरा॥
कैकयि और त्रिगर्त नरेशा। दाह कर्म सब कीन्ह नरेशा।
जे द्रुपदीके पांच कुमारा। गति कीन्ही तब धर्म भुवारा॥
है घटउत्कच भीम कुमारा। और अलंबुष दानव बारा॥
दाहन कर्म सबहिको कीन्हा। चलो वीर जहांलगि चीन्ह
पाछे को जितने असवारा। अरु पायक जे भये सँहारा॥
भारतमहँ जूझे हैं जेते। दाहकर्म धर्मज किये तेते॥
धृतराष्ट्रक अरु संग नरनाथा। गये गङ्गतट ब्राह्मण साथा॥
तर्पण अरु अस्नान करि, चली देव प्रमान।
यहि प्रकार राजा कर, दाहन कर्म सिरान॥
करिअस्नान नगरमें आये। तब कुन्तीपुत्रन समुझाये॥
सुत सुपुत्र भ.यहि संसारा। सोइ कर्ण सुत हते हमारा॥
सुता कलङ्क भयो अवतारा। सूर्यध्यान कीन्हेउ जेहि बारा॥
ज्येष्ठ बन्धु सोइ कर्ण तुम्हारा। प्रेत कर्म तेहि करो भुवारा॥
चरित्र राजै सुनि पाये। हाय कर्ण तुम कहां सिधाये॥

ता आजु बात सुनि पाये। अनजाने रण तुमहिं गिराये॥
गे माता नाहिं जनाये। शाप्यो तब जब मारि गिराये॥
कहँ शोक सिन्धुमें डारेउ। पहिले माता नाहि सँभारेउ॥
हिं शाप माताकहँ दीन्हा। तब युग मातु कर्णवध कीन्हा॥
कथा नारिन तनु माहीं। रहै कदापि कात उर नाहीं॥

महाशोक राजा हृदय, करहिं हेतु विलाप।
ज्येष्ठ बन्धु बध कीन्हेउ, भयो महा बड़ पाप॥

र्ण वीरके कर्म हि कीन्हे। वेद प्रमाण सुगति मनु दीन्हे॥
वृषकेतुको कर्ण कुमारा। कर्म पिताके करै सँभारा॥
रौ ज्ञाति सबै परिवारा। कीन्हे कर्म वेद व्यवहारा॥
र्पण ज्ञान गंगमहँ कीन्हा। पिण्डदान तब दश दश दीन्हा॥
ह कीरति जलमें निर्वाहा। पुनि बाहर आये नरनाहा॥
नयाकर्म सबके हित कीन्हेउ। बहुत दान विप्रनकहँ दीन्हेउ॥
दुर और धृतराष्ट्र भुवारा। पांचौ पाण्डव नन्दकुमारा॥
हमें गये सबै इक साथा। पाण्डव सङ्ग आप यदुनाथा॥
गेह महँ सब जन आई। कुन्ती अरु गन्धारी माई॥
हित द्रौपदी गृह महँ जाई। चिन्तावन्त धर्मसुत राई॥

ज्ञाति बन्धुको शोक है, धर्मराज मनमाह।
दुखपावत हैं हृदयमहँ, पाण्डवपति नरनाह॥

हि अन्तर तहँ सप्तमुनि आये। पाराशर तब हर्षि सिधाये॥
ारद मुनि आये पुनि तहँवां। सनक सनन्दन हू गये जहँवां॥

व्यासकपिल अरु ऋषिगण नाना । मुनिवशिष्ठतहँ कियो पय
ऋषि जमदग्नि सङ्ग सब आये । धर्मराज तब दर्शन पाये ॥
पांचो बन्धुन बैठे जहँवां । कुरु नृप और विदुर हैं तहँवा ॥
बन्धु शोकते धर्म शरीरा । नयन श्रवन जल बहु दृग पीरा ॥
राज पाट हित बान्धव मारा । महाशोकमहँ धर्मकुवारा ॥
रोदन कर तहँ धर्मनरेशा । बन्धुशोक तनु भयो प्रवेशा ॥
तबहीं व्यास सिखावन लागे । राजनीति धर्मजके आगे ॥

बहु प्रकार समुझायके, धीर धरायो व्यास ।
कृष्ण सहित गुरु बन्धु सब, बुद्धिचक्षु हैं पास ॥

सुर अरु असुर दनुज नरदारा । बन्धु बन्धुते वैर सँभारा ॥
सर्प गरुड़ बान्धव परमाना । सदा युद्ध ते करैं निदाना ॥
सदासों यहै बात चलिआई । तुम कह शोच करत हो राई
जन्म मृत्यु होतो परमाना । हरिमाया काहू नहि जाना ॥
तीनोंरूप त्रिगुण अवतारा । सिरजैं पालैं करैं सँहारा ॥
जनमत संग मृत्यु तौ आवा । माया रूप गर्भ नर पावा ॥
मरि हैं सबै न बचि हैं कोई । जितने देव दैत्य नर सोई ॥
मरहिं देव अरु इन्द्र भुवारा । मरहि अष्टकुल नाग पसारा ॥
मरिहैं धरती और अकाशा । मरि हैं मेघ नीर परकाशा ॥
मरि हैं चन्द्र सूर्य अरु तारा । मरि हैं ब्रह्मऋषिहि संसारा ॥

शोक परिहरौ धर्मसुत, देखहु ज्ञान विचार ।
जो जन्मा सोई मरा, मृत्यु लोक संसार ॥

क भये महा अवतारा । कहां गये वे सबै भुवारा ॥
भये कहत नाहिं आवैं । अन्तकाल सब दैव हि पावै ।
ना रङ्क मरैं सब कारी । मरहिं महावीर धनुधारी ॥
हि लोक नाम यहि चाहई । जो कोइ जन्म आइकै गहई ॥
रिहैं सवै अमर नहिं कोई । केवल सुयश रहै जग सोई ॥
ता पिता बधू सुत भाई । जीवत ..रि माया अधिकाई ॥
न्तकाल एको नहिं अहई । अपनो धर्म आप सँग रहई ॥
र्म कर्म जो जाको जैसा । ताको फल पावै सो तैसा ॥
ास कहैं राजहि समुझाई । शोक करो केहि कारण राई ॥
क ब्रह्मकी सब यह माया । देव असुर मानुष्य भ्रमाया ॥

राजा शोक न करौ तुम, कहेउ व्यास समुझाइ ।
एक धर्म साथी अहै, और संग नहि जाइ ॥

से एक चन्द्र नभमाहीं । कोटि कला सम प्रगटै ताहीं ॥
र्व मध्य देखौं सोइ चन्दा । एकौ अङ्ग अहैं सब बन्दा ॥
ाना घट माया विस्तारा । सुत पितु बन्धु मातु परिवारा ॥
क घट नाश जबहि ह्वै जाई । ताको जल सब भूमि समाई ॥
जिके रूप पुरुष अस जाई । चन्द्रज्योति जिमि चन्द्र समाई ॥

घट विनाशते पुरुष तब, लीन होइ तहँ जाइ ।
प्राकृत माया त्रिगुण जो, सो भरमावत आइ ।
हि प्रकार मुनि व्यास बुझायो । धर्मराजको धीरज आयो ॥

भारत कथा पुनीत प्रतापा । नाशै सकल देहकर पापा ॥
आवै मति दुर्मति मिटि जाई । सत्यवन्त ते जानत राई ॥
कहैं कथा मुनि वैशम्पायन । जनमेजय सुनिये सुखदायन ॥
इस्त्री-पर्व यहै विस्तारा । शान्तिपर्व अव सुनिय भुवारा ॥
स्त्री सुनत जे शूरमा, मूरख ज्ञान प्रकास ।
श्रवणपान जे करत नर, छूटत यमको त्रास ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

इति स्त्री पर्व समाप्त ।

शान्ति पर्व्व ।

सुमरि कृष्ण गोबिन्द हरि, व्यास देव भगवान ।
शान्तिपर्व्व वर्णन करत, सबलसिंह चौहान ॥

राजा सुनौ शान्ति विस्तारा । करत राज श्रीधर्मभुआरा
ज्ञानि शोकते धर्म भुआरा । भावत नहीं राज संसारा ॥
न दिन महाशोच तब माना । चौथेपनका कीन पयाना ।
.भतवन्धु द्रोण गुरु मारा । रोवहि धर्म दीर्घ जलधारा ॥

बन्धु सोक वध कीन्हा । भीषम तौ शरशय्या लीन्हा ॥
ोच तौ राजा क्यहौ । दिन दिन तनु दुःखित दुखपरहौ ॥
अवसर मुनिसब आये । नारद और वशिष्ठ सिधाये ॥
ण्डेय कपिल अरु भृगुमुनि । जमदग्नी औरौ मुनीश गुनि ॥
दअभ्व लोमश सज्ञानी । सब मन्त्रीगण विदुर प्रमानी ॥

श्रीबलभद्र नरायण, पांचौ बन्धु भुआर ।
बैठे सबै सभाविषे, सुनौ परीच्छित वार ॥

बै करत राजासे वाता । श्रीबलहरि मुनि ऋषि सख्याता ॥
रजा भाग धर्म सुतराजा । पुरी हस्तिना शोभित साजा ॥
हे भाग सब कुरु संहारे । परम सुःखकर राज भुआरे ॥
स सञ्जय न्टप शोक गमाये । नारद सबको कहि समुझाये ॥
दव्यास ऋषी बहु ज्ञानी । धर्मराजसे कह्यो बखानी ॥
ानतत्त्व सुनहू न्टप वाता । चलो वेगि भीषमपै ताता ॥
ास वचन सुनिकै नरनाथा । चले न्टपति हरिबल हैं साथा ॥
ौरौ सबै-मुनी सँग लाये । कुरुक्षेत्रमें पहुँचे आये ॥
हँ शरशय्या भीषम पाये । बैठे सबै तहां मन लाये ॥
रशय्या भीषमकहँ देखा । महाशोक बाढ्यो न्टप पेखा ॥

रोदन धर्मराज कर, देखि पितामह नैन ।
हृदय शोक परकाशिकै, कहे लाग न्टपबैन ॥

लक काल पिताके हीना । तब प्रतिपालन तुमहीं कीना ॥
ासम पापी मुग्ध न जाना । भीषम सैं मारे अज्ञाना ॥

सत्य वचन हमको गुरु जाना। मैं कर पाप असत्य बखाना॥
जेठ बन्धु कर्णहि रण मारा। अस्त्रहीन पारथ संहारा॥
मोसम पापी जगत न कोई। भये नहीं नहि होवे कोई॥
पांच पुत्र द्रुपदीके गयऊ। औ अभिमन्यु रणमें वध भयऊ॥
कौन सुःख है राज हमारा। अल्पकाल पातकको टारा॥
जाऊं वनहि तजौं मैं राजा। वनोवास कुमतीके काजा॥
शोक अनलते दहै शरीरा। महाशोकसे कह नृप बीरा॥

शोक-विकल है राजा, जगत बन्धु दुख ताप।
कर्म लिखा नहि जानहि, सहत कहा सन्ताप॥

कहहीं बात ब्यास समुझाई। समाधान तै सुन अब राई॥
बाल युवा वृद्धहु किन होई। अन्तकाल मरते सब कोई॥
दुख सुख है यक सम संसारा। काल सर्व संहारन हारा॥
रोगी मरै वैद्य मरिजाई। इस्त्री पुरुष मरें सब राई॥
राजा प्रजा गुणी सब मरें। देवरु दैत्य जन्म सब धरें॥
मरिहैं गँधरव यक्ष अपारा। चांद सूर्य्य मरिहैं अवतारा॥
सिधि संन्यासी मरि हैं भारी। मरि हैं राजा-रंक भिखारी॥
जहँवां जन्म मृत्यु है तहँवां। दुख सुख सब एकै सँग तहँवां॥
यहै बात जब भीषम सुना। सुनतहि हृदयमाहि तब गुना॥

शरशय्यामहँ भीष्म कह, सुनो धर्म नरनाह।
जहँ संयोग वियोग तहँ, यही भेद जो आह॥

मानो विंव देख संसारा । नाश होन नहिं लागे वारा ।
होतव्यता जो कर कर्तारा । कहा तुम्हार रहव संयोग ॥
जन्मे वीर रूप जग जाना । होतो मीच पतङ्ग समाना ॥
राती दिन षटऋतु परमाना । रचना रचत विविध विधाना ॥
पुनि पुनि आय करै पैसारा । आवत जात न लागहि वारा ॥
कहैं व्यास सुनहू नृप सोई । आशा छोंड़ि सकत नहि जोई ॥
औषध विद्या मन्त्र अपारा । अस्त्र सेन औ वलि विस्तारा ॥
धना कुटुम्ब वहुत विस्तारा । अन्तकाल को राखै पारा ॥
काहूकेर पुत्र पितु नाहीं । भार्या भगिनी मातु न आहीं ॥
जैसे पथिक चलै मगमाहीं । तैसे जगत मांय सब आहीं ॥
इकहि संग रहै परिवारा । अन्तकालको देखन हारा ॥

कौन पन्थ कै गवन है, पाव न कोई चाह ।
मोर मोर जो भाषता, सो माया हरि आह ॥

पुनि पुनि जन्म होत संसारा । घरी रहट जानो संसारा ॥
कर्म रु कुल जैसे जो करई । सो प्रकार जग भुगते फिरई ॥
मायाजाल कपट मन वंदा । सब घट पूरण काल गोविन्दा ॥
यहिसे तरै नाम इक धाई । यज्ञ ध्यान मनसा फल पाई ॥
विनाभक्ति विष्णुहुको देखा । कोटियज्ञ औ धर्म अलेखा ॥
पूर्वज पाप सो फल दरशावै । धर्मपन्थसे सो सुख पावै ॥
गङ्गासुत तब कहत वखानी । श्रुति इतिहास पुराण वखानी ॥
प्रश्नो कहेव जनकके पाहां । जनक यज्ञशालाके माहां ॥

स्वर्गमृत्यु पाताल सब, सृजौ प्रजापति ताहि।
देव दैत्य नर नाग है, जन्मत बाढ़त ताहि॥

मृत्यु नहीं जानै सब कोई। पृथ्वी भारन व्याकुल होई॥
राय कहा परजापति ताहां। पिग भये भारत रणमाहां॥
दिन दिन सब बाढो परिजाना। परजापतिसे प्रथम बखाना॥
क्रोधरुद्रके नैन निहारा। कन्या एक भई अवतारा॥
ब्रह्मापाहँ कहे सब बाता। आज्ञा कहौ कवन सख्याता॥
सबै जक्त अब करौं सँहारा। तबै प्रजापति कहा विचारा।
मृत्युः नाम परजापति भाषा। अंशु वृद्धके को गुणराषा॥
चौंसठ रोग तुम्हारे संगा। तव परिवार करौं गुण भंगा॥
सूर्य्य वदन यमको परमाना। परम अधर्म विचारहु नाना॥

चित्रगुप्त सँग यम रहैं, मृत्युलोक सञ्चार।
सुन्दर गृह स्थोर यम, करत जगत संहार॥

दण्डअस्त्र तब ताको दीन्हा। यही प्रकार प्रजापति कीन्हा॥
शिव विद्याधर हैं परमाना। गँधर्व किन्नर सुत तब जाना॥
मृत्यु पाय चल उत्तर द्वारा। उपमा कौन कहै को पारा॥
उत्तम द्वार मार्ग उजियारा। सो सूरज नहिं तहां पसारा॥
योगी सिद्ध संन्यासी जेते। पश्चिम द्वार जात हैं तेते॥
द्वार उत्तम अस्थाना। तहां जायँ सो सुनौ बखाना॥
शृंगी अन्नको दाना। पूर्व माहिं सो पावहिं जाना॥

सत्यवन्त दाया परमाना । अतिथि सेव परहित सम जाना ॥
देवस्थल पुस्कर जो निकरै । पूरव द्वारसे सब सञ्चरै ॥
तीनद्वारके भेद बखाना । जौन कर्म करि जेहि दिशि जाना ॥

उत्तम कथा प्रकाश किय, सुनो धर्म कर राव ॥
जोन कर्म करता जवन, तहां तौन सो पाव ॥

अब सुन दक्षिण मार्ग भुवारा । तहँपर हैं चौरासी धारा ॥
रात्रि दिवस है तहँ अँधियारा । सात लाख औ तीनहजारा ॥
हैं यमदूत तहां निहधीरा । देखत सबै कुरूप शरीरा ॥
लोहदण्ड सबके करमाहीं । वहै द्वार यम रूप कुआहीं ॥
पापी जीव तहां दुखपावै । राजा हमसे कहत न आवै ॥
वहै नदी वैतरणी ताहां । रक्तमांस औ जल औगाहां ॥
नाना कृमी विकट शारीरा । जलसरिता सोहै गम्भीरा
तहँ जो जात सुनो सो काना । भीषम भाषैं शास्त्र प्रमाना ॥
परदारा परद्रव्य चोरावै । मिथ्या सदा पाप तेहि भावै ॥
स्त्री विप्र गो हत्या करहीं । मात पिता गुरु चित्त न धरहीं ॥

नगरपापकर भञ्जता, दुख देवै संसार ॥
गुरुजन की हिंसाकरै, तहां करत पैसार ॥

इनको तौ यमदूत ले जाई । जहां रहत निशिदिन यमराई ॥
चित्रगुप्त तहँ करत विचारा । जाको यश गावैं संसारा ॥
पावन शमन नदी गंभीरा । ताते दाहत विवश शरीरा ॥

लोहदण्ड मारें यम ताही। ऐसे कष्ट देत बहु आही॥
ऐस प्रजापति सिर्जे ताहीं। कर्म फलहि सब भुगतें जाहीं॥
सब विष्णुः मायाजो अहे। नानारूप भीष्म तो कहै॥
जन्मत संग मृतुत्र अवतारा। यहिसे शोच न करो भुवारा॥
कर्मके वश नर पाव कलेशा। छुटे न कोटिकल्प परवेशा॥
श्रीकृष्णपद चिन्तन करै। कर्मबंधसे सो उद्धरै॥

याहि विचारो भूपते, तजो शोज सन्ताप।
श्रीपति सबके कर्ता, नाना पुण्य रु पाप॥
ताते सब कर्ता हरी, करन करावत सोय।
इन्हीं चरण लव लावही, इनसे और न कोय॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

पुनि भीषम भाष्यो सुन राजा। तजो शोक सत करहू काजा
सो जस राजा कथा सचारा। भरतनाम राजा संसारा॥
हरि बिन और एक नहि जाना। महाराज भक्ती भगवाना
राज्य कियो बहुदिन विस्तारा। बन्धु राज्य दे वन पगु धारा
कियो प्रवेश महावन राजा। निरत भक्तिपथ हरिके काजा॥
[illegible] दिवस मज्जनके काजा। सरवर मांह गये तब राजा॥
[illegible] हरिणी यक आई। नीर पियेको जलमें जाई॥
[illegible] मृगीसो आहै। मायाविष्णु सुनो जो चाहै॥

ाकर नीर चलो शिरनाई । प्रसव समय तो आय तुलाई ॥
दरपीर जो भई अपारा । प्रसव भई सो सुनौ भुवारा ॥
ालक एक नदीके तीरा । राव चरित्र देख रणधीरा ॥

विधिकै रचना ऐसिहै, मृगी तजा तहँ प्रान ।
देख भरत राजा तहां, सरमें करत सनान ॥

ेख नृपति शिशु परा अनाथा । तबहिं ताहि पाले नरनाथा ॥
ृण अरु नीर देत आहारा । बहुत प्रीतिकै पाल भुवारा ॥
समय विचारि मृगा वन आये । सुत समान तौ पालहि राये ॥
कितने दिवस बीत तब गयऊ । यक दिन मृगा भागवनलयऊ ॥
ाये सँग जो मृगके तहां । परम सुखरहे सँगमें जहां ॥
ाजा हृदय महादुख आना । ढूंढत नहिं पायो पछताना ॥
ौनो ले गयो मोर कुरङ्गा । ताके हेतु सदा मन भंगा ॥
कितने दिवस शोक महँ गयऊ । अन्तकाल राजाको भयऊ ॥
तब यमदूत गये लै ताहीं । हिरण शोक हेतु मनमाहीं ॥

कै विचार तब धर्म नृप, दीन मृगा अवतार ।
मृग स्वरूपमें जोरहे, कौडलपुरी मँझार ॥

हस लाख मुनि मेरे जाना । कारण कहा ऐस भगवाना ॥
ुम चेतौ माया अवतारा । मृगारूप यह हेतु तुम्हारा ॥
ूरब बात भयो तब ज्ञाना । जलतृण तजे किया नहिंपाना ॥
ैसा शोक मृगा तज प्राना । पाया तब दर्शन भगवाना ॥

आगे जन्म भये अवतारा । तब सो राजहि भयो उधारा।
सगरे शोक कालके फांसा । ताते-भूप करै हरि आसा।
हरता करता तारत हरि है । तीनो लोक बखानत हरि है
चारौ वेद प्रजा-पति धारा । ध्यान धरै हरि पावन पारा
शेष सहसमुख गुण जो गावैं । नारद कपिल सनातन ध्य
मुनी करैं तप जा पद आशा । करै अनन्त ब्रह्माण्ड प्रकाश

सो हरि विना सुजगत महँ, दूसर नाहीं आन।
धर्म सत्य यह कहा हम, तौ अंयित परमान ॥

सहस नाम ते धम न आना । सहस नाम गांगेय बखाना
चारि वेदमें सार जो अहै । सहस नामसे पाप न रहै ॥
राम रमहि रामे रम रामा । राम सहस्र नाम सुखधामा ॥
राम स्वरूप व्याघ्र भय नाहीं । छूटे व्याध धम पद जाहीं
करि संक्षेप बखाने नाना । सहस नामके महिमा आना
नाम अनन्त अन्तको जाना । एक नामसे पद निर्वाना ॥
पञ्चनामसे द्वादश नामा । अष्टाविंश नाम है ज्ञाना ॥
सत्यनाम सहसनमें जाना । पुनि अनन्तको नाम बखाना
परम तत्त्व अह नाम जो एका । सुमिरहिं संत जो हृदय वि
परम धर्मको सार है सोई । नाम सहस्र पढ़े जो होई ॥

राम कृष्ण रघुपति हरी, राघव राधा कन्त।
विभु गोपाल शारंगधर, गिरिधारी भगवन्त ॥

रावणारि कंसारि हरि, भक्त वन्धु भगवान।
ध्यानकरौ मन जानि धरि, मनशा वाचा जान॥
सर्बसार जे जगपती, इतना नाम वखान।
नाम भजे पातक हरंत, भूप सुनौ दै कान॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

राजा सुनौ कथा तो अहै। पुनि गङ्गासुत राजहि कहै॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सोहाई। चौथो शूद्र वर्ण सुन राई॥
गङ्गासुत तव कहैं बखानी। इनके धर्म नीति सज्ञानी॥
प्रथमहि ब्रह्मकर्म सो जाना। विद्या वेद सहस्र प्रमाना॥
त्रयसंध्या धारण नित ध्याना। वेद प्रमाणहि जौन बखाना॥
योग न जाप न औ अध्यापन। उद्यापन औ धर्म परायन॥
इत्यादि ब्रह्मवर्णके धर्मा। गङ्गासुत भाष्यो यह मर्मा॥
ब्रह्मकर्म सब ब्रह्म सुजाना। ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा परमाना॥
सुन्दर जन्म जातु संसारा। संस्कारसे द्विज संचारा॥
वेद अभ्याससे विप्र सुजाना। ब्रह्म जन्मसे ब्राह्मण जाना॥
संध्या तर्पण विविध विध, वेदपाठ परमान।
परम कर्म्म यह विप्रका, भीषम कहा बखान॥
क्षत्री गौ ब्राह्मणको पारै। मन्त्री प्रीति शत्रु संहारै॥
भिक्षा जु अन्न कर दाना। गाढ़े मरण न जाय जो प्राना॥

रणमें शूरधर्म्म मन माना। है क्षत्री जो धर्म्म बखाना॥
वैश्य वणिज कृषिको संचारी। द्विज वैष्णव पूजा अनुसारी
सदा धर्म्म जो यहै बखाना। चौगुण वर्ण धर्म्म जगजाना॥
सुन्दर धर्म सुनै सब कोई। तीन वर्णको सेवत सोई॥
आलस तजौ भक्त भगवाना। चौगुण वर्णरु धर्म्म बखाना॥
आपन आपन राखहिं धर्मा। चार वर्णके याही कर्मा॥
सृष्टि होय है केहिन सेवा। त्यागै सत्य सुनहु नृप भेवा॥
कै विचार परहै गृहमाहीं। तब तासू गृह भोजन खाहीं॥
राजधर्म जो सुन विस्तारा। मिथ्यावाद दण्ड नहि सारा॥
धन्य प्रजा जो लोभ न करही। दानरु धर्म्म यज्ञ मन धरही
जीत बाहुबल यह संसारा। पालहु प्रजा पुत्र परकारा॥
वचन प्रतिज्ञा यहै प्रमाणा। भूप यही नित पाल सुजाना॥
मन्त्री दिश न धरै बिश्वासा। प्रीति प्रतीति वचन परकासा
गऊ ब्रह्म जो विष्णु स्वरूपा। पूजा करब एक मति भूपा॥
तीन दिना कै सुनब पुराना। राजधर्म्म सब सुनहु प्रमाना॥

देव दोष मिथ्या नहीं, रहहो रैन सचेत।
राजनीतिका धर्म्म अस, रिपुसे जीतब खेत॥

रानी धर्म्म पती कर सेवा। यह वृत्तान्त सुनहु जो भेवा॥
सेवक धर्म्म पती सेवकाई। बिनबोले सबकर अधिकाई॥
। धर्म्मज सब सुख पाव। गृहद्वारा विवाह करवावै॥
भ्न गुरुका देई। सेवक धर्म्म कहे पुनि तेई॥

गृहको धर्म अभ्यागत पूजा । अन्नदानसे दान न दूजा ॥
भाव धर्म एकांतके पाऊ । लीन ज्ञान परसंग उपाऊ ॥
जो संन्यास तपस्या करै । भीषम राजा यह संचरै ॥
सर्वहि धर्मसार यतनाऊ । अन्नदान औ सत्य स्वभाऊ ॥

परहिंसा परकर्म तज, दयावन्त हित होय ।
क्षुधार्थी अनदान दे, यहिसे धम न कोय ॥

गुरुभक्तिपर नाहीं भक्ती । भक्ति विना जात तनु जगती ॥
विष्णुपरे सुर और जु नाहीं । गुरु विष्णुसम कहिये नाही ॥
गंगा परे नदी नहि कोई । एकादशि सम व्रत नहिं होई ॥
वेदनाम जो साम प्रमाना । इन्द्रियनाम न रूप अमाना ॥
यह सब नाना शास्त्रक धर्मा । ताको कहिये उत्तम कर्मा ॥
क्षत्री होय शोच का करहू । ज्ञान हमार हृदयमें धरहू ॥
रणमें क्षत्रि उपस्थित होई । वन्धु पिता पुत्रहु नहिं कोई ॥
ताते शोच तजौ परमाना । राजा सुनिये करौं बखाना ॥
साहस रण क्षत्रीको कामा । भजो चरण तुम श्रीघनश्यामा ॥
हरिके चरण सदा मन लावो । भव सागर तर निश्चय जावो ॥

पिता वन्धु सुत क्षत्रिको, रणमें कौन विचार ।
आपन धर्म जु आप सँग, भीषमकर उपचार ॥
धर्मएक सँग होत निज, और संग नहि कोय ॥
यहिते वह मन राखिये, धम न छोड़ो सोय ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

वैशम्पायन कहैं विचारा । भीषम भाषे धर्म भुत्रारा ॥
व्रतन शिरोमणि एकादशी । तुलसी पुष्प तीर्थ वनरशी ॥
ताको राजा सुन विस्तारा । दुर्लभ जन्म जो कह संसारा ॥
एकादशिकी महिमा या है । भीषम धर्मराजसीं काहै ॥
दैत्य मुरासुर अतिबल भारी । ताते हरि माया सञ्चारी ॥
युद्ध माहिं जीती नहिं पारा । मुराअसुर दानव संहारा ॥
हरिको नाम मुरारी तबसे । हरि वासर जु जन्म है तबसे ॥

अनगिन माया विष्णुकी, माया योग सँचार ।
एकादशिव्रत महिमा, सो तौ सुनौ भुआर ॥

अवधपुरी इक मङ्गल राजा । विष्णु स्वरूप करै सो साजा ॥
संभावती तासुकी रानी । धर्म्म पुत्र गत शूर सुज्ञानी ॥
एकादशि व्रत सो सञ्चारा । ताको राजा सुनौ विचारा ॥
नृपके पुष्पवाटिका आही । तोरै पुष्प उर्वशी जाही ॥
मालाकार पतीका दहै । धर्म्म प्रमाण सभाती गहै ॥
राजा पहँ तौ बात जनाये । तब राजा देखनको आये ॥
तब उर्वशि सब अर्थ सुनाये । हमें सुरपती यहां पठाये ॥
पुष्पहेतु आये तौ कामा । पतिव्रतरत धर्म्महिके कामा ॥
एकादशिको पुण्य जो चहिये । तबहि विमान अमरपुर जइये ॥
राजा पूछ सब व्यवहारा । कहो भेद नाहीं संसारा ॥

दशमी एकहि बेर नृप, नियम करै आहार ।
एकादशि उपवास व्रत, शुचितनु रूप सवार ॥

एकादशि व्रत रहे उपासा । प्रात द्वादशी होत प्रकाशा ॥
करि अस्नान अन्नदै दाना । एकोतरसै नाम वखाना ॥
यहिके मांह छूट जो होई । एकादशि विसरावा सोई ॥
विना पीत उछरंग न करहीं । ताको पुण्य सबको धरहीं ॥
ताको पुण्य सो पावहि तबहीं । जाय विमान स्वर्गको जबहीं ॥
तौ राजाको जगमो नाहीं । यहि प्रकारको जानत आहीं ॥
खोजत एक पुरुष अस कहई । रजक एक नगरीमें अहई ॥
तासु नारि सो रही कोहाई । एकादशिको अन्न न खाई ॥
क्रोध विवश सो रही उपासा । व्रतपूरण द्वादशी प्रकाशा ॥
तिन चरणनसे छुये विमाना । तबहिं विमान ज्ञु स्वर्ग उड़ाना ॥

यह गति देखत भूपमणि, एकादशि परमान ॥
पुत्र समान प्रजापती, पालत नृप सज्ञान ॥

दुखी दरिद कोइ पुर नाहीं । धर्म्म वृद्ध सो राजा माहीं ॥
एकादशि बिन और न जाना । और देव नहिं पूजत आना ॥
दशमी घर घर डोंडि बजाई । कहै दूत सबकहँ हँकराई ॥
दशमी संयम कै उपहारा । हरिवासर त्यागो संचारा ॥
एकादशी जागरण करहीं । प्रातस्नान द्वादशी धरहीं ॥
करै अनेक अन्न जो दाना । पुरमें गृहप्रति करै बखाना ॥
ऐसी बात नगर सञ्चारा । गज वाजी नहिं पाव अहारा ॥
वृद्ध युवा पशु नर अरु नारी । बालक दूध न दे महतारी ॥

चारो वर्ण प्रजा जे रहहीं । पशु अरु जीव जन्तु जो अहहीं ॥
पापक नगर नहीं लवलेशा । ऐसा व्रत सब नगर प्रवेशा ॥
पशु श्वानादि गजादितक, और जीव चण्डार ॥
मृत्यु समय प्राणी सबै, नहिं यमलोक सँचार ॥
एकवार कौतुक तो भयऊ । यक चण्डाल मृत्यु जो भयऊ ॥
पापी महा रहा अपराधी । यमके दूत चले ले बांधी ॥
विष्णु दूत तात्त्वण तहँ धाये । यमदूतनको दूर कराये ॥
बहु प्रकारसे गये जु ताही । जीवहि विष्णु दूत ले जाही ॥
यमके दूत भाग सब राई । यमराजा सन खबरि जनाई ॥
विष्णु दूत मारे प्रभुकाजा । लै चण्डाल गये सुन राजा ॥
बन्ध छोरिकै हमका मारे । जीवहि लै वैकुण्ठ सिधारे ॥
रथ चढ़ाय लैगे पुनि सोई । यमसे दूत कहैं अस रोई ॥
भागे हम लै आपन प्राना । धर्म्मराज तुम सुनौ बखाना ॥
धर्म्मराज दूतन दुख देखी । अपने मनमें विस्मय लेखी ॥
दूतहि सँग लै भूपमणि, ब्रह्मलोक पग ढार ॥
ब्रह्मपाश तौ जाय तब, कहा वचन सम्भार ॥
मोर काज यह पदसे नाहीं । जेहि मन मानै दीजै ताहीं ॥
कारण तासु सुनौ परमाना । अवधनगर चण्डाल महाना ॥
ताको लेन दूत सब गयऊ । हरिके दूत महादुख दयऊ ॥
[illegible] ब्रह्मा लागे अनुसारन । सुनौ धर्म्म कहि हौं सब कारन ॥
[illegible] विदित संसारा । महापातकी पावत पारा ॥

एकादशी क्षुधा जो सहई । तेहि के अनल पाप सब दहई ॥
तोर दूत तहँ जाय न पारा । एकादशी विष्णु अधिकारा ॥
सुना बात ब्रह्माकै जाना । धर्मरायको आप बखाना ॥
मोरा इह पद नाहीं काजा । कहे बात ऐसे यमराजा ॥

तब ब्रह्मा कह बात यह, सुनौ धर्म्मके राव ।
करत पच्छ तब कारणे, रचिये एक उपाव ॥

नारद कहा नारि औ नारा । ताते मोहित भये भुआरा ॥
नयननमो ब्रह्माको जाना । सर्व देवको अंश प्रमाना ॥
सिर्जा नाना रूप अपारा । लै ब्रह्मा तामें जिव डारा ॥
सबपर एक किये परधाना । मोहनी रती रूप परमाना ॥
मोरी बात अवधपुर जाई । रूप मगतको धर्म्म नशाई ॥
ले करपान सुकन्या जाई । नगर निकट ठहरी बन आई ॥
राजा तहां अहेरहि गयऊ । तहां भेट कन्यासे भयऊ ॥
काम विवश मोहित नृप कहई । कह कत मात पिता को अहई ॥
तब कन्या कह बात विचारी । यहि बनमें है वास हमारी ॥

सुरकन्या देवानुगृह, भयो मोर अवतार ।
व्याह नहीं भा भूपमणि, रहत बनै मंझार ॥

राजा काम मोहकै कहई । अस स्वरूप जे बनमें रहई ॥
व्याह न करत सो कौने काजा । कन्या कहत सुनौ हो राजा ॥
मनवांछित वर जो मैं पाई । सोई कन्त सत्य समुझाई ॥
राजा कहे चहौ का सोई । पचैं देव जो मनमें होई ॥

अवधनगर जो देश अनूपा। मैं राजा रूप मांगत भूपा॥
अपने बल जीता संसारा। दैत्य अनेक दुष्ट संहारा॥
सूरज वंश कहत मैं तोहीं। आवैं मनतौ वरिये मोहीं॥
कन्या कहा तेज मन जेते। महाबली मैं चाहौं तेते॥
सत्यप्रण जो राजा कहिये। तउ हम राजा तुमको वरिये॥
सत्यहमार संग नरपती। तौ हम मानी ताकह पती॥

जब जो चाहैं हम नृपति, तब सो दीजे मोहिं।
यही शपथ करु राजा, तब हम वरियें तोहिं॥

राजा सत्य कियो परमाना। कन्या तबहीं कौन पयाना॥
कैतिक दिवस रहे तब राऊ। मोहित भये मोहनी भाऊ॥
दशमी राजा संयम कियऊ। एकादशि व्रत तब ते भयऊ॥
संयम हेतु भये नृप ठाढ़े। तबहि मोहनी बोलत गाढ़े॥
खावहु पान भूपमणि राऊ। तब राजा ताकहँ समझाऊ॥
एकादशिका संयम अहै। मोरे हेतु नगर सब रहै॥
तब मोहनी कहत रिसियाई। यह तौ कन्त मोहिं नहिं भाई॥
राजा भय पुरवासिन सुना। सुनत बात सबही मन गुना॥
दानरु यज्ञ होमके कर्मा। जानौ यज्ञ राजको धर्मा॥
[illegible]ो वैरागहु जेते। व्रत उपवास कर्म्म हैं तेते॥

पान खाइये भूपमणि, तजहू व्रतकर बान।
[illegible] यह खाइये, दीजे हमको दान॥

राजा तब मोहनीसे सुना। सुनत बात सबही मन गुना॥
ऐसी बात बहुरि जनि कही। जो हमार जिव राखा चही॥
तुमहू व्रत करिये मनलाई। लेहु अभयपद हरिपुर जाई॥
सुनत मोहनी क्रोधित भयऊ। जाना भूप सत्य अब गयऊ॥
पूर्व कहे जो चाह तुम्हारा। देव जानि अब कहौ भुआरा॥
एकादशी तजौ तुम राजा। जो चाहत हौ सत्य सुराजा॥
नहिं तो देव पुत्रकर माथा। नहिं तौ व्रत तजहू नरनाथा॥
राजा सुनिकै चकृत भयउ। विनती वचन कहे तब लयऊ॥
मानत नहीं मोहनी बाता। राजहि शोक भयो तब गाता॥
निज रानीसे जाय जनाई। धर्मांगत पुत्रहु सुनि पाई॥

पुत्र कहा सो वचन तब, सुनौ सत्य तुम तात।
अन्तकाल,पै देखहू, यही सत्य संधात॥

धर्मांगत जु वचन तब भाखो। मम मस्तक दैके व्रत राखो॥
बहुत प्रकार पुत्र समझावा। रानी राजाके मन भावा॥
एकादशि व्रत करि अस्नाना। पिता पुत्र दीन्ह्यो बहु दाना॥
पुत्र पद्म आसन करि बैसे। धरे ध्यान योगी जन जैसे॥
तहां मोहनी कहै बखानी। संझावती केशधरि तानी॥
देव सबै तहँ देखन आये। तब राजा कर खड़्ग उठाये॥
आसन डोलेव शङ्कर जाना। द्विज स्वरूप करिगे भगवाना॥
दिव्य एक रथ आयो ताहाँ। दर्शन प्रकट दियो नरनाहा॥

नगरहु सहित परम पद पाये। अन्तरिच्छ राजा मन भाये।
तब मोहनिको श्रीभगवाना। शाप्यो नरकग्राम परमाना॥

मम भक्तनपर सङ्कट, कौन तहां चण्डार।
ताते अगति तुम्हारी, नहीं तोर उद्धार॥

तब मोहनी बहुत दुख पाई। तब राजा पहँ विनती लाई॥
क्षमहू मोर दोष नरनाहा। मम उद्धार करौ जगमाहा॥
तब नृप हरिसे विनती लाई। देव दयापति श्रीयदुराई॥
शापअनुग्रह करु नरनाथा। रहिहै तौ यह मोरे साथा॥
तब प्रसन्न भाषे भगवाना। जाहू यंत होव परित्राना॥
द्वादशि में जो पारण करहीं। और शयन जो नींद सँचरहीं।
ताके व्रतहि धर्म्म बहु होई। तुमका व्रत ह्वै है पुनि सोई॥
तबहिं मुक्ति हो तेरी नारी। जग वैकुण्ठपुरी अधिकारी॥
यह वरदान जो मोहनि पाई। पुरी सहित नृपनगर सिधाई।
भीषम भाषे पद्मपुराना। धर्म्मराज सुनतहि सुखमाना॥

एकादशी महातम, भाषे सब गांगेव।
वैशम्पायन कहत भे, जन्मेजय सुन भेव॥
हरिवासर उत्तम जु व्रत, सर्ब पाप क्षय होय।
नाम सदा जो गावहीं, तेहि समान ना कोय॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

न्मेजय सुनिये धर काना । धर्मराजसे भीष्म वखाना ॥
नस्पतीमें तुलसि वखानी । ताकी महिमा कहँ को जानी ॥
ुलसी रोपहि पूजहि ताही । प्रातदर्शसे पाप नशाही ॥
ुलसी रानि विष्णु है राऊ । करत ध्यान हरिलोक सो पाऊ ॥
ुक पात राधे यदुराई । जन्म जन्मके पाप नशाई ॥
करै प्रदच्छिण वारम्वारा । कवहूं यमपुर नहीं पैसारा ॥
ीश नवाय पत शिर धरही । तनुमेंके सब पातक हरही ॥
संध्या दीप नित्य जो दीन्हा । अन्धमार्ग उज्यारा कीन्हा ॥
ुलसी दल पूजै भगवाना । शालिग्राम शिला परमाना ॥
सदा वास वैकुण्ठहि पावै । तुलसी महिमा कहत न आवै ॥

सुमिरन तुलसी मन्त्रको, लह वैकुण्ठ स्थान ।
धर्म्मराजके आग्रह, भीषम कहे बखान ॥

शालिग्राम रूप हरि जोई । तुलसी दल सन्तुष्टहि होई ॥
ूर्व दैत्य यक जलचर नामा । तासु तिया वृन्दा गुणधामा ॥
ेवन सङ्ग महारण होई । दैत्यहि जीति सकै नहिं कोई ॥
ृन्दा पतिव्रता अवतारा । आप शरीर दैत्यकर धारा ॥
ब हरि माया करि विस्तारा । तासु धर्म्म नहिं दैत्य सँहारा ॥
ृन्दापहँ यह मांग्यो हरी । कै छल जाय नारि सो करी ॥
ति दानहि जब वृन्दा दयऊ । तब रणमध्य दैत्य वध भयऊ ॥
ब वृन्दा जाना सब भेऊ । पाहन शाप हरीको दयऊ ॥

दैत्यहि गति कारण तव नारी। तव हरि पाहीं कहेव
हरिने कही कोटि अवतारा। पाहन खण्डव देह हमारा॥
पत्न तोर मम पूजा, तैं तरि है संसार।
शालिग्राम होब हम, तुम तुलसी अवतार॥
सो तुलसीकी महिमा छिनछिन। शङ्कर शेष बखानत

तुलसी माला जप जो करहीं। ताहि फूल सञ्चित जो धरहीं
शालग्राम शिलाको जोई। तुलसी दलसे पूजन कोई॥
उत्तम पूजा कोइ करावै। अन्त वास वैकुण्ठहि पावै॥
तुलसी मज्जन हरिके पासा। भीषम कहे बात परकाशा॥
तुलसी गृह मज्जन जो करहीं। उत्तम मारग सो पगु धरहीं॥
तुलसी मांह अर्घ्य जो देई। अन्तकाल सुख पावै सोई॥
तुलसी वास वदन परकाशै। तीने वास पापसो नाशै॥
तुलसी गेह द्विजन जो देई। उज्ज्वल मार्ग प्राप्ति सो होई॥
तुलसी मृत्यु समय जल पाव। पापी ह्वै वैकुण्ठ सिधावै॥
तुलसी महिमा भाष्यऊ, धर्म्मराज सुन कान।
तुलसी भक्ती करत जो, ताहि प्रीति भगवान॥
आगे सुनो धर्म्मके राऊ। तीरथ माहँ बनारस भाऊ॥
जाति पत्न द पूज महेशा। यमके नगर न करु परवेशा॥
श्रीफलकेर पत्न महँ सोई। शिवा शम्भु सन्तुष्टित होई॥
शवके लोक वास सो पावै। काशी मध्य जु प्राण गँवावै
। काशीमें करवट लेई। मन वाञ्छित फल पावै सोई।

काशीमें करिहै वासा । यमके दूत न आवहिं पासा ॥
काशीमें नर कहुँ मरई । तौ कैलास गमन सो करई ॥
काशीमें धरही ध्याना । हो शिवलिङ्ग रूप परमाना ॥
काशीमें गोधन दाना । ताको फल अनन्त नहिं जाना ॥
काशी तीरथ नृप कहई । हर त्रिशूल पै काशी अहई ॥

जो काशी महँ वास कर, सहित महातम राव ।
शिवस्वरूप तेहि अन्त है, यमके नगर न जाव ॥

: पतित वह गङ्गापावनि । देव मुनिनके शोक नशावनि ॥
ाटिन लिङ्ग करै परकासा । सदारहत वासहि कैलासा ॥
हिमा ताहि कहत ना आवै । तीर्थ बनारस ब्रह्म बतावै ॥
नके द्वारन परी पुकारा । काशीवास वर्ण अधिकारा ॥
पूजा काशीकी महिमा । बहुत प्रकार बखानी ब्रह्मा ॥
य धन्य जो लक्ष्मि जनावै । सन्तत वृद्धि शत्रुक्षय जावै ॥
ामें जेतिक होत प्रकाशा । तनुमें व्याधि होत है नाशा ॥
श,स्वरूप लिङ्ग परकाशा । अन्तकाल तेहि शिवपुर वासा ॥
को वास जो काशी अहई । भै कैलास मृत्यु पुर रहई ॥

काशीकेर महात्म्य यह, तुमसे कहा बुझाय ।
चेतौ धर्म्मज धर्म्म नृप, सेय चरण यदुराय ॥

ारौ धर्म्म सुनौ नरनाहा । कार्त्तिकमास न्हान जो जाहा ॥
ा वैशाखस्नान प्रमाणा । ताकी संख्या सुनिये काना ॥
ाठमास कार्त्तिक अस्नाना । दश वैशाख स्नान प्रमाणा ॥

मास मास यहि विधि जो करही । गो सेवा औ दान सँ
पञ्चरतन पट पिण्डादाना । करै होम जो शास्त्र विधाना॥
प्रतिव्रत मास यही परकारा । ताके फल जो सुनहु भुआरा॥
नृप होवे सुधर्म्म परमाना । पावै सुख जन्महि भरि नाना॥
नृपधर्म्महि तजि पाप उपावै । नरकवास ता कारण पावै॥

कार्त्तिक अरु वैशाख जो, ताको सुनौ बखान ।
भीषम भाषे नृपतिसे, पद्मपुराण प्रमाण ॥

औरौ धर्म्म सुनौ दै काना । कन्या अरु कन्याको दाना ॥
ताके फल कत कहौं बुझाई । विष्णु लोक सन्तत सुखदाई॥
कन्याको ले धान्य जो कोई । महापातकी जगमें होई ॥
ताको गती कल्पभरि नाहीं । धर्म्मकथा सुनहू मम पाहीं ॥
गऊ दूध घृत मधुको दाना । जाय स्वर्गसो दिव्य विमाना।
दानधर्म्मको यह व्यवहारा । धर्म्मव्रत जब सुनौ भुआरा ॥
शक्ती रचौ अष्ट उपवासा । ताके फलहि पाव कैलासा ॥
धर्म्मव्रत जो यह परमाना । ताके फलको करौ विधाना ॥

नाना धर्म्म जु शास्त्रमत, भीषम कहा बखान ।
धर्म्मराज सुनतै तबै, ताते पाप नशान ॥
सब पुराण परसङ्ग तौ, भाषे तहँ गाङ्गेय ।
जो यह मत प्राणी चलै, तौ फिर जन्म न लेय ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

———

रौ भीषम कहा बखानी। गंगाको माहात्म्य सुजानी॥
ई नाम मुनि एकहि रहंई। ताकी कथा भीष्म जो कहंई॥
। गृह तज द्विजपहँ मन भयऊ। पृथ्वीकी परदच्छिणा दयऊ॥
ाना तीरथ भर्मत अहई। केवल प्रीति विष्णु के रहई॥
र्ष रूप विष्णू के भक्ती। चाहे संत होन नहिं अगती॥
जेतिक तीरथ पुहुमिमें, वन सर नदी पहार॥
भर्मत भर्मत जगतमें, कीरत सब संसार॥
चंदरभाग नदीपर गयऊ। चंद्रकेतु राजा तहँ रहेऊ॥
मंडप एक अहै अनुपामा। पंच वर्ष तहँ कर विश्रामा।
विकट रूप देखा द्विज जाई। महाशोक सो ब्राह्मण पाई॥
पांचो कहैं क्रोधसे बाता। कहो नाम सोई सख्याता॥
द्विजने कहा कंदु मम नामा। कौन जाति है कितको धामा॥
सुनत वचन तब पांचो कहई। पांचो जना प्रेत हम अहई॥
सूचीमुख शृंगीकर अहई। जो थहिके वर येशित कहई॥
यह चारौजन प्रेत हरि, पंचक लेखक नाम॥
जौने पापहि प्रेत भै, ताको सुनो बखान॥
वरजो शीत प्रेत परधाना। प्रथमहि कहिये आप बखाना॥
सत्य बातको झूंठ कहाये। ताते महाकष्ट द्विज पाये॥
तौनहि पाप प्रेत अवतारा। परयोषित है नाम हमारा॥
सुचीमुखी तो व्रतहि बखाना। मेरी बात सुनौ यह काना॥

ब्राह्मण इक मेरे गृह आवा। कर अपमान गव उपजावा॥
वहां जाव जहँ यज्ञ सु होई। ऐसा झूंठ कहा हम सोई॥
आशा दैके विप्र बोलावा। प्रेतजन्म ताहीसे पावा॥
सूचीमुख ताते भो नामा। अब शृंगीकर करैं बखाना॥
अतिथि जु मांगा मोपहँ दाना। क्षुधावंत हम कौन बखाना।
रहत अन्न मैं नाहीं दीना। प्रेत जन्म ताहीसे लीना॥

ठाढो भिक्षुक रहो तहँ, उत्तर तुरत न दीन॥
क्षुधावंत भो विप्रवर, प्रेत तबहि कहि लीन॥

लेखक कहता बात विचारी। ब्राह्मण सुन अपराध हमारी॥
लेखक कह माथा भमाऊ। क्षुधावंत तो इक द्विजआऊ॥
ठाढ़ विप्र आशा तब कीन्हा। ताको मैं कुछ उतर न दीन्हा॥
पहर एक ठाढ़ा है रहेऊ। भा निराश मुख फिरिकै गयऊ॥
तौने पाप प्रेत अवतारा। ताते लेखक नाम हमारा॥
वहिकै बात सुनौ परवेशा। द्विजसे प्रेतक कहत नरेशा॥
गुरु नारायण माना नाहीं। विद्या पाञ्च गर्व मनमाहीं॥
गुरु विप्र माना नहिं राई। प्रेत कि योनि ताहिसे पाई॥
सुनि पांचो जन केर उपाई। विस्मय होय कहा द्विजराई॥
काम भखनहौ जक्त तुम्हारा। ताते देह धरेव संसारा॥

लज्जावंतहि पंचजन, कहे वचन विस्तार।
मलरु मूत्र उच्छिष्ट सब, यह सब करैं अहार॥

अंधकालमें रहन हमारा। करो गोसाँई मम उद्धारा॥
इथावन्त द्विज कहैं पुराना। गंगा केर महातम ज्ञाना॥
श्रवण परत पातक क्षय होई। सुनत वचन तरि गे सब कोई॥
गंगा पतितपावनी अहई। मृत्युलोकको महिमा कहई॥
एक समय सब देव उपाई। बैठे सभा अनूप बनाई॥
विष्णु कहा शंकरसे बाता। पंचवदन रागहिं सख्याता॥
शंकर कहेव देवसे बानी। धरो धीर मैं कहत बखानी॥
पंचबदन जो राग गँभीरा। सबै देव धरि सके न धीरा॥
लिये कमंडलु सो जल परहीं। गङ्ग निमित्त तौ शंकर करहीं॥

विष्णु शरीरहि सोय जल, राख्यो ब्रह्मा जानि॥
सुनौ न्टपति भीषम कहै, गंगा चरित बखानि॥

जब बलि छले त्रिपद हरिभयऊ। एकजपद आकाशहि गयऊ॥
ध्यान तजो ब्रह्मा मन कीन्हा। वहि जलसे चरणोदक लीन्हा॥
कन्या रूप भई अवतारा। जल स्वरूप प्रकटी त्रयधारा॥
सो गंगा मृत लोकहि आई। सोइ महातम सुन मनलाई॥
पतिनपावनी गंगा अहई। महापातकी पातक दहई॥
सूरज वंश सगर न्टप भयऊ। साठि सहस्र पुत्र निर्मयऊ॥
महावीर सैना बलबाना। अश्वमेध यज्ञहि न्टप ठाना॥
बहुत मुनी आये सब राऊ। अश्वमेध यज्ञहि निर्माऊ॥
सो सब व्रत करिकै उपकारा। श्यामकर्ण पूजा संचारा॥
साठि सहस्र पुत्र दल संगा। परदक्षिणा करि छुटा तुरंगा॥

नाना देश जु सब जिते, कहत होय विस्तार॥
सुरपति मंत्र किये तब, यज्ञ खंड अनुसार॥
जाना इन्द्र मोर पद लेई। तासे मन शङ्का भे तेई॥
इन्द्र आय तब माथा धरी। श्यामकर्ण को लै गये हरी॥
पुरी पताल कपिल मुनि पाहीं। बांधे अश्व जान कोउ नाहीं
लगी समाधि मुनी नहिं जानी। गये इन्द्र निज स्वर्गस्थानै
तब सब बहुतो खोज तुरंगा। कहँ गो अश्व भया मनभंगा
तब पद चिह्न तुरंगम जाई। देखा अश्व मुनीके ठाई॥
तब सब खोदे पहुमी माहा। साठि सहस्र कुदारिन जाहा
देखा सबहि चोर करि जाना। मारा लात धरेव जो ध्याना
अश्व चुराय दूरि बड़ आये। महा कठिनतासे हम पाये
अब मुनि बनो धूर्त्त अज्ञानी। हमरी महिमा कुछ नहिं जानै
छूटा मुनिको ध्यान जू, क्रोधित नयन निहार॥
साठि सहस्र समेत तो, भये पलकमो छार॥
सगरभूप तब सुनि यह बाता। साठि सहस्र जो पुत्र निपाता
पुत्र शोक राजा तब कियऊ। महा खँभार यज्ञ नहिं भयऊ
जेठ पुत्र असमञ्जस आया। राजा ताको वेगि पठाया॥
कपिल मुनीसे कहौ प्रणामा। हे मुनि कवन कौनहो कामा
व असमञ्जस गये पताला। जहँ कपिल मुनि ध्यान संभाल
प्रणाम कीन तेहि चरणमें। कपिल मुनी हर्ष तब मनमें
भाषा जो मुनी विचारा। विना दोष मम लातहि मारा

हि जरे सब राज कुमारा। हम नहिं जानें अश्व तुम्हारा॥
घोड़ा तुम जाहु कुमारा। करो जाय तुम यज्ञ सँचारा॥
रि परणाम अश्व तब लाये। अवध नगरमें तुरत सिधाये॥

करो यज्ञ पूरण तबै, जोहै तासु विधान॥
सगर नृपति अति हर्ष मन, दीन द्विजनको दान॥

हि परकार यज्ञ तब भयऊ। कितने दिवस बीतिकै गयऊ॥
सगर नृपति परलोकहि गयऊ। असमञ्जस राज्यहि मन दयऊ॥
बन्धुवर्ग कस हो उद्धारा। यह चिन्ता राजा अनुसारा॥
तब वशिष्ठसे पूँछा जाई। तिन गङ्गाको नाम बताई॥
ब्रह्म कमण्डलमें सो अहई। करिकै ध्यान सुनो तब कहई॥
करिकै तप जो आने पारहु। कुल समूह तुरतै उद्धारहु॥
सुनिकै राय हेमंचल गयऊ। तहाँ जाय तबही मन दयऊ॥
देववाणिको भा सञ्चारा। तुमसे नाहीं होब भुआरा॥
तोर पुत्रके सुत अवतारा। पुत्र तोर तौ करै उधारा॥
तब सुनि राजा गृह फिर गयऊ। असमञ्जस ताको सुत भयऊ॥

असमञ्जसको अंतभा, अंशुमान भे राव॥
केतिक दिन ये राज्यकरि, संतति नाहीं पाव॥

सुनी बात यह जबहिं भुवारा। मोरे सुतसे वंश उधारा॥
मोरे पुत्र भयातौ नाहीं। ताते राज्य छोड़िकै जाहीं॥
राजा गये छोड़िकै राजै। हेमाचलमें तपके काजै॥

कै तप भूप तजे तब प्राना। सोते धर्म्म रानि सब जाना।
पाट शिरोमणि हैं द्वै रानी। तब वशिष्टसे कहा बखानी
वंशनाश ह्वै गो मुनिराऊ। सुनि वशिष्ठ तब कहा उपा
सूर्य्य वंशहित चिन्ता करई। तब वशिष्ठ ज्ञानहि हित धा
वाम वाम करु रति शृङ्गारा। होई पुत्र करब उपकारा॥
रानी गृह आई तब ताहां। रति शृङ्गार कीन बिन नाहा

रह सगर्भ आशा भई, सुनै जाय भव त्रास।
दशम मासके अन्तमें, पुत्र जन्म परकास॥

अस्थिनहीन मासकै देहा। लै वशिष्ठ गर्भ करु येहा॥
मुनिकहं जहां सुमारग आहीं। अष्टवक्र मुनि न्हानक जाहीं
सो मारगमें राखु कुमारा। होव अस्थि तौ सुनौ भुआरा
बालक लैकै तहां रखाई। दोनो रानी तब गृह जाई॥
अष्टावक्र मुनी तहँ आये। पथमें बालक देखन पाये॥
जाना मुनी करै अपमाना। विस्मय हर्ष वचन अनुमाना
अस्थि रहत वाके जो देहा। अधिक वक्र हो कहा सनेहा
जो बिन अस्थी देह सवारा। होइ हो दिव्य अस्थि सुकु
कहत तासु तनु अस्थीभयऊ। द आशिष मुनि तब गृह ग
रानी देखि अङ्कमें लाई। देखा बोल वशिष्ठहि ठाई॥
हर्षित ह्वै मुनि नाथ तब, धरयो भगीरथ नाम।
बालदशाके अन्त तब, सुनहू सकल बखान॥

ोक केरा उपकारा । वह सब कैसे होय उधारा ॥
भूप जो चाहै जाना । सुनि वशिष्ठ तब जाय तुलाना ॥
अर्घ्य देकर परणामा । पिछ उधारण पूजहि कामा ॥
वशिष्ठ भाष्यो यह वानी । गङ्गाबिनु नहिं गति अरु जानी ॥
। कह गङ्गा कत अहई । नारदसन वशिष्ठ तब कहई ॥
े राव जु नारद आये । गङ्गामर्म पूंछि मन लाये ॥
द कहा सुनौहो राऊ । मैं यक दिन गो इन्द्रके ठाऊ ॥
व गङ्गा महिमा ताहीं । इन्द्र कहा मैं जानत नाहीं ॥
इ देश मैं आयों ताहां । यमराजासों पूछे आहां ॥
हुँ कहा मैं जानत नाहीं । यहतौ मर्म ब्रह्मका चाहीं ॥

पूछा विधिसे जायकर, कह्यो शम्भु पहँ जाव ।
शिवपहँ तब हम जायके, पूछा भेद बताव ॥

वकह तब गङ्गाका नामा । नाशत पाप करै मनकामा ॥
ह विष्णु पहँ तुम मुनिराऊ । गङ्गाभेद तहां सब पाऊ ॥
वैकुण्ठ विष्णु पहँ गयऊ । महाभेद मैं पूछत भयऊ ॥
ष्णु कहा सुन चितधरि नारद । गये विष्णु पहला गुणशारद ॥
ने विष्णु यह पद मन भाना । बड़ आश्चर्य्य चित्तमहँ आना ॥
ङ्गाको महिमा जु बखाना । विष्णुरूप भै विष्णु सुजाना ॥
ारदगये जहां तौ राऊ । पूछा महिमा गङ्गा नाऊ ॥
खा रूप शंखकर चारी । चक्र गदा अरु पद्म सवारी ॥

पूछा बात कहा तिन जानौ। चारौ जने सुनौ मुनि ज्ञानं
ध्वास योनिमें भा अवतारा। विना अहार महादुख भारा
गङ्गाजल यक मुनीलै, जात रहे भगमाहि।
और एक मुनि मांगऊ, भेट भई तव ताहि॥
तेहि मारगपर परे हजारहि। विप्र विप्र दोउ हर्षित कारहि।
कुशसे जल मुनि मुनिपर डारा। परा बून्द यक भाग्य हमारा
बून्द एक जल तनुमहँ डारा। तासे रुप यह भयो हमारा
तब वैकुण्ठमाहँ हम आये। नारद राजहि बात सुनाये॥
सो गङ्गा आने जो पावहु। पितृ सबै यमपाश छुड़ावहु॥
राजा सुनत बात बिस्तारा। मन्त्री सौंपा राज्य भण्डारा॥
माता पांह विदा तब भयऊ। मन्त्र एक भागीरथ दयऊ॥
प्रथम मेरुपर गै तप कीन्हा। यम अरु नियममाहिं मन दीन्ह
धर्मराज हर्षित मन भयऊ। मन्त्र एक भागीरथ दयऊ॥
सिद्ध करौ यह मन्त्र नरेशा। पैहौ गङ्गाकर उपदेशा॥
यही मन्त्रके सिद्ध हित, तबगै चलि कैलाश।
कथारूप गङ्गा अहै, महाशोक परकाश॥
बारह वर्ष तपस्या कीन्हा। पूरण आश शम्भु वर दीन्हा॥
गङ्गा अर्थ भगीरथ कहई। कहा रहै मोहि पाहन अहई॥
बारहवर्ष रहे निरहारा। गङ्गा नहि पाये कर्तारा॥
...ह विष्णु का तप सञ्चारा। बारह वर्ष रहे निरहारा॥
...। अस्तुति कै परकाशा। कह प्रसन्न हरि राजा पासा॥

ार भुजा भे गरुड़ सवारा। भागीरथ तब करै विचारा॥
। तुम भक्त हमारे राजा। करौं तोर मन वांछित काजा॥
लहू सङ्ग हमारे तहां। पुरवैं आशा गङ्गा जहां॥
रि आगे पाछे जु भु भारा। आये तब ब्रह्माके द्वारा॥
धंग्र पाद्य गङ्गा तब दीन्हा। वही नीर चरणोदक लीन्हा॥

शीश माह चरणोदक, ब्रह्मा डारेव ताहि।

शिव आराधन कीन्हेऊ, ब्रह्म कमण्डलु माहि॥

न्या हरिसे कहा विचारा। तुम्हरे चरण मोर अवतारा॥
वष्णु कहा गङ्गा तब नामा। पाप विनाशन जग विश्रामा॥
ाहु मृतकपुर करौ न वारा। तब गङ्गा वाणी सञ्चारा॥
गके पाप हमहिं निस्तरैं। मेरे पाप कहो को हरैं॥
ोरे पाप हरैं हरि कहहीं। साधु स्नान करैं तो दहहीं॥
रको पाप जन्तु तो खाई। वही जन्तु नर भच्छे आई॥
ाके पाप तासुके पाहा। सत्य स्नान तोरि गति आहा॥
ुनि जलरूप गङ्ग भइ तबहीं। आज्ञा हरिको पाई जबहीं॥
ागीरथ जो अस्तुति सारा। माता पितृनकर उद्धारा॥
ह्मा हरिको कर परणामा। लै गङ्गाजल राजा गामा॥

आगे नृप भागीरथ, पाछे सुरसरि धार।

पहुँचे तौ कैलाशमें, शङ्कर देखि विचार॥

ाना गङ्गा चलीं भुआरा। जटा तीन तो तहां पसारा॥
ाटा माहँ गङ्गा शिव लयऊ। महा शोर भागीरथ कियऊ॥

हरि तुम बड़ दानी जू कहाये। मैं सेवक नर दुख बहु पा
तब गङ्गा तुम तौ मोहिं दीना। अब वटपारीके तुम तीन
शिव समाधि हरि हर्षित भयऊ। मांगुमांगु वर बोलन
राजा कहा कष्ट बहु लाये। महाकष्टसे गङ्गा पाये॥
कुटी समाधि शंभु सुख भयऊ। मांगु मांगु वर शंकर क
जो तुम राखा दीजे दाना। मोरे पित्र होयँ परित्राना॥
अस्तुति बहुत भगीरथ कीना। तब गङ्गाको शंकर दीना
कै प्रणाम आये तब राऊ। शङ्ख बजावैं हर्ष उपाऊ॥

हेमगिर्द दुग म शिखर, अटकी गङ्गा ताह।
पर्वत लांघि न पारही, रोवैं तब नरनाह॥

गङ्गा कहा पुत्रसे बाता। इन्द्र पास अब जाव सख्याता॥
ऐरावत हस्ती लै आवो। देहि मार्ग करि पारहि जावो
राजा गये इन्द्रके पाहा। अस्तुति बहुत करै नरनाहा॥
बारहवर्ष तपस्या कीन्हा। तबहि इन्द्र यह आज्ञा दीन्हा।
मांगु मांगु वर सुन न्टप बाता। ऐरावत दीजै सुर त्राता॥
इन्द्र कहा तुम जगपहँ जावो। जासे मनवांछित फल
भागीरथ तब गज पहँ आये। सब बृत्तान्त गजहि समुझाये
पर्वतमें करि दीजै द्वारा। हमलै गङ्गा जायँ सो पारा॥
गज भाषा हमसे नहिं होई। होय काज वच राखै कोई॥

जो गङ्गा रति देइ मोहिं, देव तबै करिपार।
नातौ हमसे होय नहिं, अन्ते खोजु भुवार॥

तिके राव गये फिरि ताहां । गङ्गा जाना अन्तर माहां ॥
न भूप करौ केहि हेता । आनहु गज तुम जाय सचेता ॥
हु हस्तिसे वचन हमारा । सहै हमार जु तीन प्रहारा ॥
हम देवै रतिको दाना । जाहु पुत्र मम करौ वखाना ॥
राजा फिरि गज पहँ आये । यह वृत्तान्त कह्यो समुझाये ॥
निकै गज तब परम अनन्दा । भागीरथ कह सुन शुभ दन्दा ॥
न तरङ्ग हमारं सहई । रति संग्राम हमारो लहई ॥
षे गज सो सहब तरङ्गा । तब तरङ्ग पर हारेव गङ्गा ॥
क लहर तब गजगै साहा । दुःखित महा जीव औगाहा ॥

गये बूड़ि गज ततच्छणहि, पहिले लेत तरंग ।
दूसरि लहर जो जल उठी, सहि नहिं सक्यो गयन्द ॥

व गज सुस्त भयो जल माहीं । गङ्गाकी अस्तुति तब काहीं ॥
पापी माता सुनु बाता । राखु प्रहार शरण सख्याता ॥
व महिमा जानें सब देवा । करत चरण तुम्हरे नितसेवा ॥
ङ्गा कह्यो अरे अज्ञानी । गर्भहिसे तव यह गति जानी ॥
व सवै मम राह उपाई । सुनतै गज तब उठा होराई ॥
त्तराय पर्वत गज ताहां । भये रन्ध्र तब पर्वत माहां ॥
लिकै पार भये गजधारा । गजने इन्द्रलोक पगु धारा ॥
ागे चले भगीरथ राऊ । पाछे गङ्गा चार सिधाऊ ॥
क मुनीश करें तप जहां । पहुँचे जाय अचंभित तहां ॥

जाना मुनिहैं गङ्ग यह, आय मृतुत्र अस्थान।
परम हर्ष मन महामुनि, कर गङ्गा कहँ पान॥
भागीरथ विस्मय तब भयऊ। तब मुनीशको सेवा कियऊ।
मुनिके पांह विष्णु को धाये। बारह वर्ष तु तहां गँवाये॥
कोटिन विप्र गऊ दै दाना। नहि गङ्गासम तीर्थ बखाना॥
विष्णु आय हर्षित तब भयऊ। मुनिकर ध्यान तुरतछुटि ग
विष्णुकहा तब मुनिसों बाता। भागीरथ जगमहँ सख्याता॥
गङ्गा देहु बहुत सुख पाये। पितृलोक उद्धारन आये॥
तब मुनि ज्ञान विचारे तहां। गङ्गा देउँ कौन विधि महां
मुत अशुद्ध मुख जूठा होई। कहै उच्छिष्ट जगत सब कोई
जांघ चीरिकै गङ्ग निकारा। जाह्नविनाम ताहि से धारा
अन्तर्द्धान विष्णु भे जाहीं। भागीरथ हर्षित मनमाहीं॥
आये देश माहिं तब राऊ। माता पहँ धै गङ्गा लाऊ॥
गङ्गा पाहीं कहा यह, गङ्गा कहि गोहराव।
तबहीं माता तब तहां, औरो ध्रुव बैठाव॥
मातापाहँ भगीरथ गयऊ। मध्य नगर हर्षित तब भयऊ॥
कहेउ बात माता पद गहा। गङ्गाका बृत्तान्त सब कहा॥
तहां देव गङ्गा परबाहा। जाते जाय विष्णुपुर माहा॥
यहि प्रकार पूंछत हो राऊ। अभ्यन्तर अब सुनो उपाऊ॥
।म नाम गऊ यक रहै। एक अहीर पुकारत रहै॥
ना गङ्गा नाम पुकारा। गङ्गा चली सहस ह्व धारा॥

गीरथ कहते तब बाता। यहका कौन कहो सो हि माता॥
। गङ्गा राजासे कहेऊ। तुम्हारा संशय अबनहिं रहेऊ॥
ब पितरनको करौं उधारा। पाछे हम तारब संसारा॥
गीरथ प्रसन्न मनमाना। भीष्म धर्मनृप पांह बखाना॥

कंदु नाम जो ब्राह्मण, कहे प्रेतगण जाँह॥
चंद्रभाग नहिं प्रापती, परमहर्ष मनमाँह॥

हापातकी जगमें अहई। गङ्गा परसत पाप न रहई॥
न्य भाग्य जो लेत तरङ्गा। पाप नाश अरु निर्म्मल अङ्गा॥
कोटिन विप्र गऊ दे दाना। नहिं गङ्गाके नीर समाना॥
सब तीर्थनमें गङ्ग प्रधाना। श्रुति स्मृति भागवत बखाना॥
यहि प्रकार द्विज कथा सुनाये। पंचविमान स्वर्गसे आये॥
प्रेतरूप तज ताही बारा। विद्याधर स्वरूप संचारा॥
स्वर्गलोक भा तेहिकर ग्रामा। गङ्ग महात्मय सुनत सुखधामा॥
जाके चरण गङ्ग अवतारा। ते हरि सब दिन संग तुम्हारा॥
तजो शोक सब धर्म्म भूपती। हरि सहाय संतत तुम गती॥
सत्य सत्य जानो परमाना। यही देवपति श्रीभगवाना॥

यहि प्रकारसे भीष्मजी, सुनते पाप नशाय।
गङ्गाकेर प्रभाव कह, धर्मराज समुझाय॥
सर्व्व नदीमें गङ्गा, देवनमहँ भगवान।
छन्दमांह गीता सही, धर्म न दया समान।

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

धर्मराज सुनहू परमाना। भीषम भाषे अथ पुराना॥
महादेव सेवा मन लावै। सो कैलाशहि वासहु पावै॥
शिवको वरत चतुर्द्दशि अहै। धन्य रु धन्य रूप हर कहै॥
चरत नाम व्याधा संसारा। सो कैलाशमाहिं पशु धारा॥
कौन रूप सुनते विस्तारा। भीष्म कहा सुन नृपति भुआरा॥
पशुन मारिकै वनसे लावै। मांस बेंचिकै दिन भुगतावै॥
एक दिवस तौ उपवन जाई। सांभभई यक जन्तु न पाई॥
महाशोच बाढ़ा मनमाहीं। कौने रूप आज गृह जाहीं॥
इस्त्री सुत पुत्री उपवासा। सबतो अहैं हमारी आसा॥
यह चिन्ता व्याधाके भयऊ। महाशोच करता तब लयऊ॥

कौन भांति गृह जाउँ मैं, सबतौ परे उपास।
यह चिन्ता व्याधा मनहिं, तनुके मांह प्रकास॥

महादेवको व्रत दिन सोई। महाशोक व्याधाके होई॥
तब मनमें यह करै विचारा। धृगधृग जगमें जन्म हमारा॥
ताते यह काननके माहीं। रहौं आज हम गेह न जाहीं॥
यहँ पर बाघ सिंह बहु अहई। जन्मअन्त अब व्याधा कहई॥
श्रीफल तरु चढ़िकै सो रहई। व्याधा हृदय शोच बहु गहई॥
कर्म्म अंकपै सदा सहाई। कर्मते हेतु दुःख सुख पाई॥
जो विधनाहै लिखा लिलारा। दूसरै कौन मिटावन हारा॥
हंसे सुख होत जो राई। पावै सुख अनेक सुखदाई॥
चत्तस मेटत सोई। लाख उपाय करौ जो कोई॥

व्याधा रहिगो राति तहँ, श्रीफल तरुके डार ॥
महाभयंकर निशि तहां, भयो महा अँधियार ॥

धावन्त अतिही दुखपाई । रोदन करव हृदय दुखदाई ॥
अर्द्ध रातिसे शङ्कर आये । वृषभ चढ़े गौरी सँग लाये ॥
भूतप्रेत जो दैत्य अपारा । शृङ्गी डमरु झांझ मंजारा ॥
ताही वनमें भा उजियारा । सोई तरुवर परश भुआरा ॥
तहँ बैठे हर उमा जो जाई । व्याधाहै कोइ मर्म न पाई ॥
करते नृत्य महेश्वर तहां । रोवै व्याधा सो तरु महां ॥
आंसुपार बहतेहैं ताई । कर्मभयो ताके फलदाई ॥
इक श्रीफलपत्र प्रमाणा । आंसू भीजे रोवत नाना ॥
पवन तेज पत्ता सब झरे । महादेवके शिरपर परे ॥

महादेव हर्षित बदन, कहे बात तौ तौन ॥
ले वरदान आय अब, पुष्पांजलि जो दीन ॥

उतरि वृक्षसे व्याधा पड़ा । हाथ जोरिक सन्मुख खड़ा ॥
शिव प्रसन्न होकर वरदीन्हा । राजा श्री धन्वंता कीन्हा ॥
अन्तकाल सो गो कैलाशा । भोलानाथ भक्त परकाशा ।
व्याधा तब जानै नहिं पाये । दैवी गति पत्ता हरि पाये ॥
जगतमांह करकै सुख नाना । अन्तकाल कैलाश पयाना ॥
भक्तवत्सल तौ शिव भगवाना । ब्रह्म इन्द्र पद पाय प्रधाना ॥
रणमें जा शत्रु संहारा । सोय भवानी वर संसारा ।
राजाधर्म भक्ति मन धरौ । शोक दुःख राजा परिहरौ ॥

शोक करौ तो गहिहै नाहीं। वचन मोर राखै मनमाहीं॥
केवल करौ हरीको ध्याना। पावहु राजा पद निर्वाना॥
तजौ शोकहो राजा, चितवौ राधारौन॥
यहि प्रकार भीषम कहा, तो कीन्हो है मौन॥
राजा सुना यही सब बानी। तजा शोक तबही परमानी॥
देव मुनी सब जो अस्थाना। सहित पाण्डवन श्रीभगवाना॥
प्रति वासर तौ राजा जाई। सुना जु ज्ञान पितामह नाई॥
जेते कहे जो शन्तनुनन्दन। सुनतै पाप होतहैं खण्डन॥
सो चरित्र संक्षेपहि कहेउ। पुनि विस्तार बहुत तोरहेउ॥
भीषम वर्ण्यो धर्म्म सो, सुनो सत्य मम पाह॥
महापाप सबनाशही, सुनते श्रवणन माह॥
नाना शास्त्र पुराण मत, भीषम कह्यो बखान॥
राजा हृदय राख यह, सत्य बचन परमान॥

इति सप्तम अध्याय॥ ७॥

जरत रहत मेरो हियो, निशिदिन यह सन्देह।
वरी सम मारो तिन्हैं, जिन सो परम सनेह॥
कहो भलो कहा होय हमारो। डरपौं दोष दुःख अति भारो॥
बोल द्रोण हम मारे। पिता पुत्र भ्राता संहारे॥
मैं प्राण घातकर मरिहौं। इस पृथ्वी को राज्य न करिहौं

सत्य सत्य पितु कहौं विचारी । अाय कौन गति होय हमारी ॥
रहत तुम्हारे निशिदिन संगा । बानन सों वेधो सो अंगा ॥
किञ्चित लाज न आवत मोही । हाय भयों मैं कुरुकुलद्रोही ॥
फिर निर्लज बनि तुम पै आयो । तुम करि कृपा बहुरि अपनायो
मुख सन्मुख नहिं होत तुम्हारे । बोल न सकत लाजके मारे ॥
सब तनुवेध तुम्हारो डारो । कछु न बडप्पन गिनो तुम्हारो ॥
अब मैं पिता तुम्हारी शरना । हरो मोर संशय दुखहरना ॥

महा कुकर्मी कुटिल मैं, अन्यायी निर्बुद्ध ।
सब कुटुम्ब गारत कियो, आपसमें कर युद्ध ॥

भीषम कहत सकल भ्रम त्यागो । ममता मोह नींदसों जागो ॥
सूक्ष्मगति कर्मको अपारा । होत जात नहिं लागहि बारा ॥
रचौ जु वस्तु कर्म्मको जोई । मन पहिलेही तैसो होई ॥
मन वच क्रम जो कर्म्महि धावै । तो कछु क्रम तैसा मन आवै ॥
भावी होनहार जो होई । कोटि यतनसे मिटत न सोई ॥
दिन दिन चित्त विषे तनु छीजै । ताते ज्ञान अमिय पय पीजै ॥
सुन इतिहास नृपति चित धारी । पन्नग वधिक गौतमी नारी ॥
तप गौतमी करै बहुतेरो । बालक पुत्र एक ताकेरो ॥
सो बालक खेलै बनमाहीं । फिरत रहत वृक्षनकी छाहीं ॥
खेलत ताहि सर्पने खायो । सर्पहि वधिक बांधि लै आयो ॥

वधिक गौतमीसों कही, अब सब बिगरो काज ।
तेरो सुत इन सर्पने, डसो विपिनमें आज ॥

बालघात इहिं करो अभागे। मारौं याहि तुम्हारे आगे।
सुनतहि वचन गौतमी बोली। अरे वधिकतव मति कहँ डोली॥
सर्पहि छांड़ो कहे हमारे। पुत्र न जिये सर्प के मारे॥
बिना मौचु तनु नहिं परिहरही। अपनी मौचु सबै कोउ मरही॥
एक जीव अग्निमें जरहीं। एकै रोग व्याधि पचि मरहीं॥
एक चुधाकर प्राण गमावैं। एकै शस्त्र जरा मृतु पावैं॥
एक सिंह गज के वश परहीं। एक सर्प विष खाये मरहीं॥
जाको जौन मतो है भाई। ताने ताही विधि मृतु पाई॥
पापीकहँ न पाप मन धरही। अपने पाप आप जरि मरही॥
पापी मारे पाप न होई। ऐसी बात कहत सब कोई॥
बालघात इन कियो अकाजू। याहि न जीवत छांड़ो आजू॥

अवगुणको गुण मानहीं, गुण को परमोपकार।
ऐसे नर संसारमें, कहीं कहीं दो चार॥

अवगुणको अवगुण मन धरहीं। गुणको गुण सब कोऊ करहीं॥
अपने स्वारथ लागे रहई। भली भली सब कोऊ गहई॥
दोष परायो जो नहिं गहई। ताको यश जगमें थिर रहई॥
निपट बुरो रु भलो जो होई। महा साधुके सम है सोई॥
तिन से पृथ्वी सोहै ऐसे। घर सुपुत्रसे दीखै जैसे॥
और जीवको जो दुख देही। सो सब दुख आपनको लेही॥
कोउ दुखते डरपै भाई। तौ दुख औरहि देन न जाई॥
प बहुत भांति कोउ कहई। तदपि कुमति साधु नहिं

ऐसेहु पाप साधु नहिं करई । वह अपने स्वभाव मन धरई ॥
पापी जो समझावै कोई । कोयला घिसे न उज्ज्वल होई ॥

प्रथम जन्मकी वासना, सोई प्रगटत आय ।
कोटि यत्न कर मेटहू, तौहू नाहिं मिटाय ॥

सर्प जान जीवनकी आसा । नर भाषा बोलै अव दासा ॥
अहो वधिक कछु वश नहिं मेरो । हौं पुनि पराधीन मृतुकेरो ॥
कहत मृत्यु कछु चलै न मेरो । घर घर काल देत है फेरो ॥
थावर जङ्गम जो कछु आही । काल विवश सब जानो ताही ॥
तीनो लोक उदरमें जाके । आदि अन्त कछु नाहिन ताके ॥
धर्म धाम सुख सब फलटरहीं । समय वृक्ष फल पक गिर परहीं
राखे रहै न कछुक उबारा । काल विवश यह सब संसारा ॥
तीनों काल पाश हैं ताता । आदि मध्य को जानत बाता ॥
मेघ अकाश वायु शशि जैसे । ये सब जीव वसत हैं तैसे ॥
इतनी कहत कालतह आयो । तिन मृत्युसों वचन सुनायो ॥
बोलो काल मृत्यु से हँसकर । राखो कर्म्म सकल जग वशकर ॥

मरत जियत सब कर्म्मसे, मेरो कछु नहिं दोष ।
लोग वृथा मोपर करत, मूरखपन से रोष ॥

जन्म मरण गति मोर न मानो । कर्म्म प्रधान सबहि परजानो ॥
हमहं कर्म्म पाशमें आवत । कर्म्महि ते दुख सुख सब पावत ॥
आवत जीव गर्भमें जबहीं । पावत कर्म्म लिखा सो तबहीं ॥
बलविद्या आयुर्धन धर्मा । पाप रु पुण्य करै सब कर्म्मा ॥

प्रथम कर्म्म कीन्हे है जैसे । भुगतै बनै सबनको तैसे ॥
ऐसो को समरथ जग बलौ । रोकै चलत कर्म्म को गलौ ॥
सहस धेनु जहँ कहूं मिलानी । वच्छ मात को ले पहिचानी
देश विदेश कहूँ किन जांई । कर्म्महि कर्म्म लेय तहँ आई ॥
कबहुँ कर्म्म नहिं छोड़े अङ्गा । सोवै सोवत जागे सङ्गा ॥
न्यारो नाहि कर्म्म तनु माहीं । जैसे सङ्ग न छांड़त छाहीं ॥

हानि लाभ दुख सुख सुयश, मरण जियन गुणज्ञान
सबहि होत हैं कर्म्मते, सब में कर्म्म प्रधान ॥

ज्यों वनमें रक्षक नहिं कोई । राखै कर्म्म रहै पुनि सोई ॥
उलट कर्म्म सकल दुख सहई । घरमें वस्तु न राखी रहई ॥
कर्म्म विना न देह निर्वहई । ज्यों विन तेल न दीपक रहई
पन्नग मृत्यु कालको मर्मा । यह सब है बालकके कर्मा ॥
दुख दरिद्र सब आपहि पावै । जैसे काष्ठ अग्नि उपजावै ॥
इस बालकको कर्म्मन मारो । हे मृतु कछु नहिं दोष तुम्हारो
तब गौतमी वधिक सों बोली । अहिके बन्ध देहु तुम खोली
काल भुजङ्ग मृत्यु नहिं कोई । अपने कर्म्मनको फल होई ॥
मोहिं काल ऐसे समुझायो । सब पै कर्म्म प्रधान बतायो ॥
तत्क्षण वधिक क्रोध सब गयऊ । उर अन्तर आनन्दित भयऊ

मुख्य मानकर कर्म्म को, सर्प गयो बन माहिं ।
बोले भीषम धर्म्मसों, बली कर्म्मसम नाहिं ॥

सकल कर्म्म करतार वश, कोउ न पावत अन्त ॥
मनते सब सन्देह तज, भजहु सदा भगवन्त ॥

इति अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

तप अरु दान दोउ विख्याता । तिनमें कौन अधिक फल दाता ॥
तपते श्रेष्ठ दान है भाई । महिमा कहत शेष सकुचाई ॥
जो जो भये जगतमें दानी । तिनकी महिमा अचल बखानी ॥
धन विन दान बनत है नाहीं । ताते धनहि मुख्य जग माहीं ॥
चितवत चलत द्रव्य मन आगे । अतिप्रियप्राणकुटम्बहित्यागे ॥
बन पर्वत समुद्रमें बहई । धनके काज कठिन दुख सहई ॥
धन हित नर उद्यम बहु करई । ता धन लागि प्राण परिहरई ॥
निशिदिन धन आशा मन धरई । मन दे धनकी रक्षा करई ॥
अकृत सुकृतकर धन उपजावै । सो धन दियो कौनको भावै ॥
ऐसो धन जो देत सदाहीं । सो दाता त्रिभुवनके माहीं ॥
सबते श्रद्धा अधिक बखानी । श्रद्धासे जो दे सो दानी ॥

श्रद्धाते जो करत हैं, अन्नदान सन्मान ।
ते नर सुरपुर जात हैं, चढ चढ विमल विमान ॥

जो नर महा अधिक धन पावै । निशिदिन श्रद्धा सहित लुटावै ॥
दान समान कोउ कृत नाहीं । जाको सुयश होत जगमाहीं ॥
श्रद्धा सहित यत्नहू करही । ताको कियो कोटि गुण फरही ॥

अधिक दान श्रद्धा विन ऐसो। ऊसर बीज वये फल जैसो।
कथा पुरातन कहौं सुनाई। मुद्गल नाम ब्रह्मऋषिराई॥
सदा वृत्ति तिय पुत्र समेता। परम सुधर्म रहै कुरुखेता॥
जोरत दिन पन्द्रह जब जाहीं। तादिन अतिथि पूजकै खाहीं
कुटुम सहित जाको वनवासा। अतिथि देख मन होत हुलास
सब देवन मिल ताहि पठायो। अतिथि रूप दुर्वासा आयो
उद्यम रूप दिगम्बर रहही। वचन औरके औरहि कहही॥
पन्नगि तहँ ठाढ़ो हुइ रहेउ। मुद्गल वचन बहुरि तब कहेउ।

मुद्गल मुनिको देखकर, बढ़ो परम अनुराग।
आज मनोरथ सफल भा, धन्य धन्य मम भाग॥

नमस्कार कर पूजा करी। धन धन सुफल आजकी घरी॥
देखत सफल नयन भये मेरे। अमृत रूप वचन सुन तेरे।
ऐसे पूज अन्न जब दीन्हो। तब दुर्वासा भोजन कीन्हो॥
जेवत जूंठो जौन उबरियो। अङ्ग लगाय सोउ शिर धरियो।
ऐसे जब आवैं तब पावैं। मुद्गलके मन दूनो भावैं॥
नहीं भई निन्दा कछु जाके। नहिं मन क्रोध कृपणता ताके।
भलो जान साधु यों कहेउ। दुर्वासा प्रसन्न तब भयेउ॥
तुमसों दाता मिलो न कोई। तुम्हरो यश त्रिभुवन में होई॥
धीरज सहित विवेक विचारा। छांड़ि कृपणता भयो उदारा
अरु ज्ञान निधाना। तुम समान देखेउँ नहिं आना
ल सुन मुनीशकी बानी। बोला वचन प्रेम रस सानी॥

तुमसे साधु कृपा जो करहीं । तौ हम जीव क्यों न निस्तरहीं ॥
धन्य सोई तुम शरण जु आयो । साधु समागमको फल पायो ॥
जब इहि भाँति साधु गुण गायो । आज्ञा दई विमान मँगायो
लाये जब पारषद विमाना । दुर्वासा अनन्त सुख माना ॥
रत्नजटित प्रकाश मय सोई । बाजा बजत शब्द ध्वनि होई ॥
तिहि चढ़ चलो ब्रह्म ऋषिराई । देवलोक सब करै बड़ाई ॥
देवदूतसों पूछत मुदगल । केतो दूर स्वर्ग ते भूतल ॥
मारग चलत भले जो कोई । सबही प्रीतम मित्र जु होई ॥
ताते तुमसों पूंछत भेवा । स्वर्ग कवन गुण कहिये देवा ॥
देवदूत बोले मुसुकाई । धन्य धन्य तुम हो ऋषिराई ॥

तुम गुणज्ञ सर्वज्ञ हो, जानत कहा न तात ।
हमें बड़ाई देन को, पूंछत हौ यह बात ॥

स्वर्गादिक सुव नन्दन वनके । पुरवैं वृक्ष मनोरथ मनके ॥
दिव्य विमान अप्सरा जहां । सकल काम भोगादिक तहां ॥
काम मोक्ष धर्महि मन लावत । स्वर्ग जाय ते सब सुख पावत ॥
ऐसे जीव स्वर्ग नहिं जाई । जे परधन चुराय कर खाई ॥
चोर कृतघ्नी निन्दक पापी । अदृष्ट भ्रष्ट क्रोधी सन्तापी ॥
कपटी क्रूर कलहमय मंसा । दुख दे जोहिं परायो अंसा ॥
मिलत स्वर्ग इतननको नाहीं । इत उत भ्रमत रहत जगमाहीं ॥
और बहुत गुण कहब बखानी । सुनो ध्यान धर सकल कहानी ॥

सुनो स्वर्ग के गुण हैं जेते। तुमसों विप्र कहौं मैं तेते॥
जय जय शब्द सदा तहँ होई। बिना भजन तहँ रहत न क
विमल कथा सुन्दर सरस, हरहु सकल श्रम शोक।
पशु पच्छी नर जन्तुमें, एकहि जीव विलोक॥
मिलै कहूँ बहु धन भण्डारा। करिये दान धर्म उपकारा॥
धर्म ज्ञान बल सना सुदाना। ज्ञान सिद्ध फल मिलै निद
मुद्गल कथा सुने फल होई। पाप कलाप रहै नहिं कोई॥
राजा हरि चरणन चित दयऊ। संशय सकल शमन ह्वै ग
कहत युधिष्ठिर शीश नवाई। सब बाधा प्रभु मोर मिटाई
सब सन्देह और भ्रम नाशा। हिये ज्ञानको भानु प्रकाशा
धन्य धन्य भीषम सुखदानी। तुम समान कोउ लखो न
तुमने सकल वंशको तारा। आपहु तरे हम निस्तारा॥
ऐसीहि और कहो जो कोई। फिर कबहूँ कोउ भ्रम न हो
सतसङ्गति को यहै बड़ाई। परमानन्द होत सुखदाई॥
मुख नहिं सन्मुख होतहै, लखि लखि देह तुम्हार।
च्छमहु मोर अपराध अब, अपनी ओर निहार॥

इति नवम अध्याय॥ ९॥

धन्य कुरुपति सुखदाई। सब संशय प्रभु मोर मिटाई॥
और पूंछत हौं मर्म्मा। शरणागत रच्छाको धर्म्मा॥

कल देवतन बात चलाई। उत्तम धर्म कौन है भाई॥
र्म समेत तुला कर धारो। सब मिलकर यह बात विचारो॥
बने तत्त्वकथा यह वरणी। दुखित जीव की रक्षा करणी॥
कल यज्ञ जप दान समेता। काशीग्रहण दान कुरुखेता॥
ाहिन और धर्म कोउ ऐसो। दुखी जीवको पालन जैसो॥
था पुरातन कहौं सुनाई। अग्नि इन्द्र राजा शिविराई॥
ाजा सुकृत यज्ञ उठ्येऊ। तिहि ठां एक अचम्भा भयऊ॥
न्द्र सचान रूप तहँ कियो। अग्नि कपोता ह्वै भाजियो॥
रो भाज राजाकी शरना। लगो धर्मकी रक्षा करना॥
ब सचान आगे ह्वै आई। राजासों बोलेउ अकुलाई॥

तुम सर्वज्ञ सुजान नृप, ज्ञानी परम उदार।
करहु न धर्मविरुद्ध तुम, लेहु न मोर अहार॥

ाजा बोले सुनहु खगेशा। शरण न देहुँ देहुँ धन देशा॥
बलों तो यह टेक निवाही। आयो शरण दियो नहिं ताही॥
रप विहंग भयो शरणाई। सो मैं लीन्हो कण्ठ लगाई॥
रण राखि जो त्यागै कोई। हत्या ब्रह्म दोष तेहि होई॥
ोभ दोष भव जो पै करही। ताके पाप आप जर मरही॥
रण मिटाये हैं अति दोषा। शरणागत त्यागे नहिं मोषा॥
सो दुख औरै तप आपै। दुख सबके शरीरमें व्यापै॥
ो भयते आपहि दुःख होई। तसैहि दुख मानत सब कोई॥

भय सङ्कटसे राखे प्राना। बुद्धिमान् सो परम सयाना॥
शोक त्रास सङ्कट ते डरही। सोई साधु दया मन धरही॥
रक्षा करनी दुखी की, यही धर्म है सार।
याते अधिक न और कछु, नेम धर्म आचार॥
शरणागतकी रक्षा कीजै। शक्त्यनुमान सवहि सुख दीजै॥
जैसे आप अपनपौ मानै। ऐसे औरनको तनु जानै॥
दुख सुख होत सबनके तनमें। यह विचारकर अपने मनमें॥
याहि शरणाते देहुँ न तोहीं। यह भय भीत रहेउ गहि मोहीं॥
मेरे यहै धर्म है भाई। प्राण जायँ पर प्रण नहिं जाई॥
कहत सचान सुनहु नृपराई। प्रण तुम्हार है अति सुखदाई॥
यह तो वचन आपको सतहै। पर बिन भोजन कोउ जियतहै
सो अहार जीवैं सब प्रानी। भोजनते बुधि बल अरु वानी॥
भोजनते अनेक सुख लहई। विना अहार धरो सब रहई॥
एक जीवकी रक्षा करनी। जान बहुत जीवों की करनी॥
एक जीव के कारने, कई जीव की घात।
सत्य कहो नृपराज यह, कौन धर्मकी बात॥
मोहिं अहार देहु जो नाहीं। कुटुम सहित हम सब मरजाहीं
[illegible] मरे बहुत दुख होई। दारा पुत्र रहै नहिं कोई॥
हत्या नृप तुम को लागै। फिर कोउ यत्न बनै नहिं आगै
। शोच समझ लो मनमें। धर्म नहीं कुछ इन बातनमें॥
न धर्मनते धर्म न रहही। ताको धर्म न कोऊ कहही॥

धर्म सूक्ष्मगति अतिहि कहावै । धर्म करत अधर्म हो जावै ॥
धिक कल्पना धर्म घनेरो । यहां न चलै चतुरपन तेरो ॥
ार बार विनवौं न्टप तोहीं । कुटुम समेत हनै मत मोहीं ॥
तनो सुयश होय तव राई । एक जीवकी जान बचाई ॥
ाब मेरो कुटुम्ब तनु त्यागै । यह हत्या तोहिं कैसो लागै ॥

हे सचान मत प्राण तज, पाल अपन परिवार ।
जो चहिये सो लेय तू, पर कपोत मत मार ॥

तू ज्ञानी जानत सब ब्यौरा । अभयदान सम दान न औरा ॥
अभयदान उत्तम जग माहीं । ऐसो और धर्म कोउ नाहीं ॥
दुखी जीव परहित जो करहीं । तापर कोउ दुःख नहिं परहीं ॥
और दान फल थोरो रहई । अभयदान अक्षय फल लहई ॥
दान यज्ञ फल तीरथ सेवा । और अनेक धर्म सुन भेवा ॥
अभयदान को उत्तम फलहै । अभयदान जगमाहिं अचल है ॥
राजशरीर जाहु किन सारो । पर न देहुँ यह पक्षी प्यारो ॥
जन्म अनेक पुण्य मैं कीन्हो । परमेश्वर अर्पण कर दीन्हो ॥
तासु पुण्यको यह फल पायो । दुखी जीव मेरे घर आयो ॥
तनक मांसमें कहा विचारा । लेहु अहार अनेक प्रकारा ॥

मान कहा अ॰ ान तज, हे सचान गुणवान ।
मन इच्छा आहार ले, तज कपोतके प्रान ॥

अहो नरेश महा बड़भागी । सत्यसिन्धु दाया अनुरागी ॥
मुझको भक्ष्य विधाता दीन्हा । सो निर्दय बन तुमने लीन्हा ॥

अब कह खाय बचावों प्राना। ताते अपन मरन जियठाना॥
अधिक कहा कहनी बहु बाता। मोर भक्ष्य दीजै मोहिं ताता॥
कह नरेश तुम सुनहु सचाना। यह कपोत मोहिं प्राण समान॥
शेष महेश गणेश बखानो। अभयदान सबमाहिं प्रधानो॥
जो जन जीव दया मन धरहीं। सो प्राणीं काहे नहिं तरहीं॥
शरणागतपर दया न आनी। ते प्राणी मूरख अज्ञानी॥
जहँ लौं अपनी पार बसावै। शरणागतको अवशि बचावै॥
चाहै जाय धाम धन राजू। पर कपोत नहिं देहौं आजू॥

जो नहिं देहु कपोत तुम, करहु वचन निर्वाह।
तो तुम अपनो मांस मोहिं, देहु काटि नरनाह॥

जो उपकार औरको कीजै। अपनो मांस काटि मोहिं दीजै॥
सुनत सचान वचन यह तेरो। अधिक प्रसन्न भयो मन मेरो॥
अपनो मांस काटि तोहिं देहूं। झूंठो तनु सांचो कर लेहूं॥
झूठे तनुमें मिली बड़ाई। याते और कहा अधिकाई॥
परउपकार जो आवै देहा। तो है वृथा सकल सन्देहा॥
यह तनु थिर न रहै संसारा। विटकृमि देह होय जरि छारा॥
जो तनु परउपकार न आवै। वृथा जननि जनके दुख पावै॥
जो भय ते अप-तनु दुख होई। तैसेहि दुख पावत सब कोई॥
सङ्कटते राखै प्राना। सोइ भक्त जन परम सुजाना॥
सबके शरीरमें व्यापै। जैसो औरहि तैसो आपै॥

भोजनको छीनानके, अति विलम्ब अब होत।
मनै करो कै देहु मोहिं, मेरो भक्ष कपोत ॥

[न]िकसत प्राण भूख के मारे। अब मन बहुत विचार विचारे ॥
[ज]ब यह प्राण निकस गय तनते। फिर कह होय सुधा भोजनते ॥
[ज]ो अपनो जगमें यश चाहो। तो आपन प्रण आप निबाहो ॥
[अ]पनो आमिष तुला चढाई। दे कपोतसम मोकहँ राई ॥
[अ]धिक मांस चाहिये मोहिं नाहीं। धीरज मोहिं थोरेही माहीं ॥
[र]ाजा तुरत कटार उठायो। मांस काटकर तुला चढायो ॥
[दू]जी ओर कपोत चढाकर। राजा चाह्यो करन बराबर ॥
[भ]यो कपोत महा अति भारो। नृपति शरीर चढ़ायो सारो ॥
[म]ांस बराबर भयो न जबहीं। आपहि चढ़ो तुला नृप तबहीं ॥
[ज]य जय शब्द भयो चहुँ ओरा। धन्य धन्य राजा सत तोरा ॥
[न]िरखि देव दुन्दुभी बजावैं। धनधन कहि नृपको यश गावैं ॥

देख धीर शिविराजको, प्रगट भयो सुरभूप।
धीर धुरन्धर धन्यतुम, पूरण धर्मस्वरूप ॥

[अ]ग्नि कपोता मैं सुरराई। देख्यों सत्य तुम्हारो राई ॥
ऐसो करो करै नहिं कोई। जो मुख कहो करो तुम सोई।
तुमहीं धर्मरूप जग खम्भा। तुमरे हि सत्य धरणि नभ थम्भा ॥
तदपि कर्म वश जीव रु जन्तू। तुम उपकारी धीरजवन्तू ॥
ब्रह्मा प्रगट किये परकाजा। मेघ वृक्ष अरु तुमसे राजा ॥
देह अपनपौ राखो प्राना। मिलै परमगति पद निर्वाना ॥

देत अपनपौ लगौ न वारा । जीवन सांचो पर उपकारा ॥
अर्थ पराये जीवन सारा । जैसे वृक्ष रहत संसारा ॥
जगमें तुम समको बड भागी । ठाढ़े शरण इन्द्र अरु आगी ॥
अस यश सुनो तुम्हारो राऊ । सो सब देख्यों प्रगट प्रभाऊ ॥

ऐसे नर संसारमें, प्रगट बहुत कम होत ।
अपनो तनु त्यागन चह्यो, त्यागो नाहिं कपोत ॥

कहै नरेश सुनहु सुरराया । यह सब तव चरणनकी माया ॥
नरहू करत कहीं अस काजा । यह सब तव प्रताप सुरराजा ॥
हमहिं न लज्जित कीजै भूपा । धारण कियो कपटको रूपा ॥
जगमें अधिक धर्म तुम कीन्हो । तीनो लोक जीत यश लीन्हो ॥
अग्नि इन्द्र निज लोकहि गयऊ । शिबिकी यज्ञ सफल अति भयऊ ॥
यज्ञ सिरानो सीझे काजा । तब मनमें आनँद भो राजा ॥
शिबिको चरित जु सुनै सुनावै । नाशै पाप सकल सुख पावै ॥
कैसो धर्म कियो शिबिराई । जिनकी महिमा त्रिभुवन छाई ॥
जबलौं रहै जगत में प्रानी । दे नित दान कहावे दानी ॥
मोरध्वज हरिचन्द नरेशा । दियो दान नहिं कियो कलेशा ॥
जिनकी अबलों अचल कहानी । धन्य धन्य ते आतमज्ञानी ॥
जिनके आठ प्रहर हरिध्याना । माया मोह द्रोह विलगाना ॥
तुमहू तजो मोह मद ममता । सब प्राणिनते रखो समता ॥
को अपनो अरु कौन विरानो । सब में एक ब्रह्म तुम जानो ॥

अजर अमर अद्वैत प्रभु, रहेउ जगतमें व्याप ॥
जीव अमर नहिं मरत है, वृथा शोक सन्ताप ॥
ोषम पिता मोहिं अति भर्मा । महाशरण रच्छाको धर्मा ॥
पने आश्रम आवै कोई । ता सुख दिये कवन फल होई ॥
र्म शरणरच्छा को जैसो । त्रिभुवनमें कोउ और न ऐसो ॥
ुन इतिहास पुरातन घाता । कथा कपोत वधिक को ताता ॥
नित प्रति वधिक रोपके जाला । हनै अनेक जीव तत्काला ॥
एक दिवस उठ चलो अहेरे । वनमें बधिक कर्मके प्रेरे ॥
फिरत फिरत वन सकल अथायो । कोऊ जीव हाथ नहिं आयो ॥
वधिकहि भटकत भई अवारा । निष्फल उद्यम छुधा अपारा ॥
चारो ओर अँधेरी छाई । कोऊ जीव न देत दिखाई ॥
वर्षन लगेउ जोरसे पानी । तब तो वधिक अधिक भय मानी ॥
घन गर्जै लर्जै हिया, छिन छिन जिय अकुलाय ।
जलही जल कहुँ थल नहीं, आगे चलो न जाय ॥
चपला चमकर घन गर्जै । कठिन शब्द सुनि सुनि जिय लर्जै ॥
पशु पक्षी सब लगे पराने । गिरि खोहन में आय लुकाने ॥
पन्थ न सूझे चलो न जाई । शीत भीत कम्पै अकुलाई ॥
थर थर थर सब करत शरीरा । जकड़े अङ्ग होत अति पीरा ॥
गिरत परत आयो सो तहां । रहि भयभीत कपोतन जहां ॥
दूरहि ते तेहि वधिक निहारो । झटपट पकर जालमें डारो ॥
भई अधीर धीर तनु नाहीं । विकल परी चिन्ता मनमाहीं ॥

बारम्बार कपोतन कहई। कन्त अकेलो कैसे रहई॥
मोहिं मरनको संशय नाहीं। पति न परै कहुँ विपता माहीं
मेरे मरे न होय अकाजा। तुम्हें न दुःख होय पतिराजा॥

दैवयोगसे वधिकने, कीन्हेउ उतहि पयान।
आश्रम जहां कपोत को, वही ठौर नियरान॥

सघन वृक्ष छाया अधिकाई। मानो मन्दिर रचेउ बनाई।
सुनेउ चहचहा कछु न बुझाई। तबहीं वधिक रहेउ मुरझाई
माघ मास शरदी अति परही। कँपकँपाय तनु थरथर करही
भीजेते विह्वल तनु भयऊ। क्षुधा अपार शीत दुख दयऊ॥
मुखसे वचन कहे नहिं जाई। तनु गो ऐंठ काठकी नाई॥
कपोतनीने भी यह जाना। मेरहि पति मेरहि अस्थाना॥
जब कपोत आयो तेहि ठांई। तिया न दीख फिरो चहुँघां
लाग मनहि मन करन विचारा। आज मोहिं सन्देह अपारा
मनहीं मन कपोत अकुलाई। कारण कवन नारि नहिं आ
आवत मोते नित्य अगारी। कछु न कछु है सङ्कट भारी॥

अहो प्रिया मोहिं छोड़कर, कहां गई तू आज॥
तुझ विन मम जीवन कहा, लुटो मोर सब राज॥

आज मोर सुख विधना लियऊ। सब सुख छीन दीन मोहिकियऊ
जब विधि रची सृष्टि यह सारी। तियारूप मिथ्या विस्तारी॥
१५ तियसों परै विछोहा। ता दिन मिथ्या घर सो सोहा॥
शोभा घरनीसों नेहा। को दुख सहै आज यह गेहा॥

त उत दृष्टि कपोता करी। देखी तिया जालमें परी ॥
कहा करू बल चलै न मेरो। कहा उपाय करू तियकेरो ॥
वश जान मुष्ठि गहि रहेऊ। पतिसों वचन कपोतिन कहेऊ ॥
जो मेरो तनु परहित लागे। दूजे मरू तुम्हारे आगे ॥
स्वामी धन्य भाग्य है येही। परकारज आवै यह देही ॥
तियको बडो भाग अधिकाई। पति अपने मुख करै बड़ाई ॥
नारि धर्म्म है पतिकी सेवा। और न पूजे देवीदेवा ॥

पति पूजन जो रातदिन, कर प्रेमसे नारि।
तिनको यश गावत सदा, देवी स्वर्ग मंझारि ॥

जब जान्यो पति अति अकुलाना। बोली तिय पिय कर्म्मप्रधाना ॥
काम न आवत सुत वित दारा। छांडि मोह कर धर्म विचारा ॥
अब कह शोच करत हो नाथा। बिछुरन मिलन कर्मके हाथा ॥
धीरज धर्म सँभारो प्यारे। आयौ अतिथि तुम्हारे द्वारे ॥
विपति परे पर धम जु करही। ताको यश जगमें विस्तरही ॥
धन्य सुधर्म अतिथि घर आवे। धन्य सुभोजन ताहि करावे ॥
नारी धन्य सो पुरुषहि भावे। पुरुष सु धन्य धर्म मन लावै ॥
आरत दुखी शीत भय भीता। आयो ऐसो गेह अतीता ॥
जो कछु बनि आवे उपकारा। दीजे नाथ अतिथि आहारा ॥
अपने घर आवे जो कोई। करै तासु सत्कार जु होई ॥

जो घरपर आवै अतिथि, करै तासु सन्मान।
महायज्ञ जग में सोई, गावत वेद पुरान ॥

सुनि तिय वचन कपोता ज्ञानी। धरि धीरज बोलेउ मृदुबानी॥
हौं पच्छी उत्पति आकारा। मोते कहा होय उपकारा॥
हौं चुग उदर आपनो भरिहौं। अतिथि धर्म कौनी विधि करिहौं॥
उद्यम कारण चलेउ बिसूरी। देखी अग्नि बरत कहुँ दूरी॥
चोंच लकरिया जरती लीनी। आनि वधिक आगे धर दीनी॥
जानि चोंच सों लकरी पाती। बारी अग्नि विहङ्गम जाती॥
अग्नि पजार वधिक पै आयो। अतिथि वधिकको अधिक तपायो॥
छूटेउ शीत क्षुधा अकुलानो। बहुरि कपोत देख पछितानो॥
धिग धिग हम पच्छी कुलजाती। अपनो पेट भरैं दिनराती॥
एक सहस जनको दे खाहीं। हम सों पेट पलत है नाहीं॥
वारम्बार बिसूरत आपू। कैसे सहौं दुःख सन्तापू॥
पच्छी पूर्व जन्मको ज्ञानी। शोच समझ मनमें यह आनी॥
अपनी देह प्राण परिहरहुं। आदर अधिक वधिक को करहुं॥
यह कह अग्नि माहिं सो परेऊ। वधिक देख मन अचरज करेऊ॥
अर्थ धर्म हित छोड़े प्राना। देखि वधिक मन उपजो ज्ञाना॥
मैं मानुष काहे को भयऊ। सब दिन पाप करतही गयऊ॥
मैं नर तनु धर करे कुकर्मा। देखो इस पच्छीके धर्मा॥
मैं सबको दीनो सन्तापा। किया अत्यन्त जीवको पापा॥
मैं तो सर्व पापको भौना। मोहिं नरकते राखै कौना॥

कबहुँ न कोउ तीरथ कियो, कबहुँ न न्हायो गङ्ग।
निशि दिन मारतही रहेउ, पच्छी और कुरङ्ग॥

जेहि तनु तप तीरथ नहिं कीनो। जेहि तनु परउपकार न भीनो
सो तनु मैं वृथा गमायो। मारमार जीवनको खायो॥
जेहि तनु करत यज्ञ व्रत दाना। जेहि तनुमैं उपजत शुभज्ञाना॥
सो तनु पाप रूप मैं कीनो। बहु प्रकार जीवन दुख दीनो॥
यह नहिं है पत्तीको धर्मा। सोई धन्य जो करै सुकर्मा॥
जब यह पशु पच्छिनको रीती। तऊ न तेरी गई अनीती॥
फाड जाल लकडी परिहरी। तुरतहि वधिक दया मन धरी॥
निकल कपोतन कियो विचारा। पुरुष विना सूनो संसारा॥
जैसे वृथा धर्म्म बिन येहा। जैसे वृथा प्राण बिन देहा॥
जैसे वृथा खेत बिन वारी। तैसे वृथा पुरुष बिन नारी॥

जैसे सरवर नीर बिन, ज्यो रजनीबिन चन्द॥
ऐसे नारी पुरुष बिन, सहत सदा दुखद्वन्द॥

जैसे गृही द्रव्य विन छीना। जैसे व्याकुल जल विन मीना॥
जैसे फल विन उद्यम हीना। ऐसे तिया पुरुष बिन दीना॥
जैसे शशि विन निशि अँधियारी। ऐसे विना पुरुषकी नारी॥
माता पिता भ्रात संयोगा। दारा पुत्र कुटम्बके लोगा॥
सजन सनेही अन धन धामा। पति विन और न आवत कामा॥
पतिविन पतनी पतित न मगमैं। पतिविन अपति नारिकी जगमैं
पतिविनसबसुखविपतिसमाना। पतिविन [illegible]

विन पति अबलाकी कुगति, चाहे हों सौ सुःख॥
परत विपतिपर विपति नित, जित देखे तित दु.

पति सब विपति बटावन हारे। सो न रहे मम प्राण पियारे।
पतिबिन कहा करौं हौं जीके। करौं न बार जरौं संग पीके।
परम धर्म नारीको एहा। संग पुरुषके त्यागै देहा।
ताते सती होहुँ मैं आजू। बहुरि मिले मम पति सुख साजू।
सती धर्म सम धर्म न दूजा। जपतप नियम धर्म पति पूजा।
तिन्हैं कर्म कुछ दुर्लभ नाहीं। जो नारी पति संग जरि जाहीं।
यह कह अग्निमध्य सो परी। सांची सती सत्यसों जरी॥
सती धर्म जब सुरपुर गयऊ। जय जय देवलोकमें भयऊ।
देव विमान स्वर्ग ते आयो। सुर किन्नर गँधरव यश गायो।
सब मिल सती सराहन लागे। पतिके हेत प्राण इन त्यागे।

धन्य धन्य यह पक्षिणी,धन धन याको धीर॥
प्यारे पतिके प्रेममें, कीन्हो भस्म शरीर॥

चढ़ि विमान सुन्दर तनु धारी। पुरुष सहित वैकुण्ठ सिधारी
ज्यौं ज्यों दरश करैं सब देवा। अधिक सराहैं करकर सेवा॥
देववधू दर्शनको आवैं। करैं आरती मङ्गल गावैं॥
अहिको ज्यों वायगी नचावैं। मन्त्र शक्ति ताको गहि लावैं।
अस तिय पतिहि नरकते काढैं। देवविमान स्वर्ग सुख बाढैं।
कैसो पाप पुरुष किन करहीं। कहैं पुराण तिया-लै तरहीं।
ऋणी दरिद्री होई। दुखी सुखी जानै सब कोई॥
कुटिल कुरूप कुसेवा। भामिनिको भरता गति देवा।

ामिनि भरता वचन न टारै । आप तरै अरु पतिको तारै ॥
निशि दिन करै पतीकी पूजा । पति सम और देव नहिं दूजा ॥
देखेउ धर्म सुधर्मको, कैसो सुभग प्रभाव ॥
सत्संगतसे वधिकको, पलटो तुरत स्वभाव ॥
ाधुसंगको यह फल भाई । परम सुबुद्धि वधिकको आई ।
निर्विकार निर्मल मन भयऊ । तपके हित उत्तर दिशि गयऊ ॥
शीत उष्ण दुख सुख सब सहेऊ । इस्थित चित्त गुप्त ह्वै रहेऊ ॥
गहि वैराग्य ज्ञान उच्चाटा । चलत न जानेउ औघट घाटा ॥
गयउ पाप हरि सन्मुख भयऊ । सुरपुरवास वधिकने लयऊ ॥
सत्सङ्गतको लखेउ प्रभाऊ । भयो वधिकको शील सुभाऊ ॥
जो यह कथा सुनै अरु कहंई । तिनके पाप दोष नहिं रहंई ॥
कथा कपोत वधिकको गाई । सम्पूरण भय दश अध्याई ॥
भली कथा मोहिं पिता सुनाई ॥ गयो शोक त्रय ताप नशाई ॥
धन्य धन्य प्रभु कृपा निधाना । मम अवगुण तुम एक न माना ॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

कृपा करहु जन जान निज, हरहु सकल सन्देह ॥
मोरि दुष्टता नहिं गिनी, कीन्हेउ परम सनेह ॥
महा कठिन गढ़ यह संसारी । जिसमें कोटि विपति भ्रमभारी ॥
कैसे हो इनते निस्तारा । पिता कहो हित जान हमारा ॥

कैसे यश गावैं सब कोई। केहि विधि प्रीति सर्व्वसों होई।
सत्य वचन कह भीषम राऊ। हरिसों प्रीति धर्म्म परिभाऊ।
परदारा परधन परिहरही। श्रद्धासों हरि सुमिरण करही॥
सबके विषय आत्मा जाना। सब जगको एकहि पति माना।
सन्तोषी इन्द्रिय जित सूरो। परम उदार ज्ञान मति पूरो।
कृष्ण कृष्ण तृष्णा तजि करही। सो संसार दुर्गते तरही।
यह संसार तरन विधि गाई। वहै अधिक यश सो सुन भाई।
सम दृष्टी सबको अधिकारी। बोलै मीठे वचन विचारी॥

सुधा गरलको सम गनै, कछु नहिं करै विचार।
रामरूप सबमें लखै, जंहांतलक संसार॥

महाशुद्ध मन गांठि न रहई। हृदय और मुख और न कहई।
पर उपकार धर्ममय होई। ताको यश गावै सब कोई॥
जैसे होय सर्वसों प्रीती। सुनहु युधिष्ठिर ताकी रीती।
घर मायाते होय उदासी। तजि मद मोह होय बनवासी।
विष्णु भक्तसे मिलै सदाई। तासों प्रीति करैं अधिकाई॥
करै धर्म छोडै नहिं नीती। ऐसे होय सर्वसों प्रीती॥
जैसे हरै विपति भ्रम भारी। सो सब सुनहु सत्यव्रतधारी।
त्याग द्रोह सत्सङ्गत करही। सो सब महा विपति भ्रम हरही।
अब हम बहुरि कहत समुझाई। जाते छुटै विपति दुखदाई।
जो अनन्य ह्वै हरि मन लावै। रात दिवस गोविंद गुण गावै।
तजि रामनाम व्रत धरही। सो संसार दुर्गते तरही॥

रामनाम उर धारकर, करै भक्ति दिन रात ।
इससे जगसे तरनकी, और अधिक नहिं बात ॥

ाता पिता तीर्थ गुरु देवा । तुलसी गऊ साधुकी सेवा ॥
त अस्नान दया मन राखै । श्रीरघुपति रघुपति मुख भाषै ॥
हरि गुण यश भागवत पुराना । भारत कथा सुनै दै काना ॥
हरि-भक्तों की सेवा करही । सो नर निसन्देह भव तरही ॥
प्रातकाल करके अस्नाना । गीता पढ़ धरै हरि ध्याना ॥
सन्ध्या तर्पण त्रिकाल करै सो । भवसागरसे सहज तरै सो ॥
करै कृष्ण चरणन सों प्रीती । यह भवसिन्धु तरन की रीती ॥
नारि धर्म अब कहौं बखानी । चितदे सुनहु युधिष्ठिर ज्ञानी ॥
भामिनि धर्म आप पहिचानै । पुरुषहि नारायण सम जानै ॥
दिन प्रति पुरुष वचन मन धरही । सो संसार दुर्गते तरही ॥
वृथा और आराधै देवा । तियको परमधर्म पतिसेवा ॥

पतिही इक संसार में, पुरुष परम विज्ञान ।
औरनको नारी गिनै, सोई नारी जान ॥
भव सागरके तरनको, वर्णों सकल वृत्तान्त ।
रामनाम तारन तरन, करन सदाचित शान्त ॥

इति एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

तुमको देव करहुँ परणामा। कृपानिधान सकल गुण धामा॥
अब यह कहिये कृपानिधाना। तपहै बड़ो कि समता ज्ञाना॥
सकल ऋषिन को यहै विचारा। तपसे समता अधिक अपारा॥
सब साधन मिल यहै विचारी। जप तपते समता अतिभारी॥
अब सुन तप समता की बाता। कथा पुरातन वर्णौं ताता॥
तपफल अरु समता फल यथा। जाजुलि तुलाधार की कथा॥
आसन तट समुद्र के तीरा। कीन्हेउ जाजुलि तप गम्भीरा॥
बढ़ी जटा ओढ़े मृग छाला। कीन्हेउ तप बहु वर्ष विशाला॥
अतिअभिमानभयो तेहि मनमें। मोसम और न कोइ द्विजग[illegible]
अधरममें न कबहुँ अनुरागो। वेद मार्गमें नित प्रति पागो॥

नारायणकी भक्तिमें, रहै सदा लवलीन।
करत तपस्या रात दिन, द्विजवर परम प्रवीन॥

ज्येष्ठ मास पञ्चागिनि तापै। वर्षा माहिं न जलभय व्यापै॥
जाड़े में रहे जलमें ठाढ़ो। धीर धुरन्धर व्रतको गाढ़ो॥
करत करत तपअति अधिकाना। तब द्विजमन उपजो अभिमा[illegible]
एक समय सो विप्र गुसांई। वनमें खड़ो काठकी नांई॥
ताकी घनी जटा लख अच्छी। धरो घोंसला कुलङ्ग पच्छी॥
जब यह भेद विप्रने जानो। इस्थिर रहेउ न नेक हिलानो॥
बीत शरदऋतु आई। तब तिन अण्ड दये नृपराई॥
द्विजवरने अण्ड निहारे। हलो न कहुँ अण्डनके भारे॥

फूटे जब अण्डे पक्षीके। दो बच्चे प्रगटे अति नीके॥
समय पाय ते परम सुहावन। भये सपक्ष दोउ मनभावन॥

रहन लगे आनन्द सों, भये महा बलवान।
देत कुलङ्ग कुलिंगिनी, सदा खान औ पान॥

प्रात होत वन को उड़ जावैं। सन्ध्या समय फेर घर आवैं॥
एक समय जो गे वनमाहीं। तीन मासलौं आये नाहीं॥
अबनहिं आवेंगे वह पच्छी। तिनको मिली ठौर कहुँ अच्छी॥
यह विचार करके निज मनमें। बहुरि करन लागो तप वनमें॥
मो सम और न सब जग हेरो। सबते अधिक भयो तप मेरो॥
आप समान और जगमाहीं। दूजो तपसी जानत नाहीं॥
औरनको तप भयो अधूरो। मेरो तप भो सबसे पूरो॥
यह सुन तुरत भई नभवानी। मति कर मान अरे अभिमानी॥
तुलाधार की सम जगमाहीं। धर्मी अबहिं भयो तू नाहीं॥
तुलाधार गर्वी नहिं ऐसे। बकत फिरत तू जाजलि जैसे॥

नभवाणीके सुनतही, उपजो क्रोध अपार।
देखूंगो मैं जायकर, तुलाधारको द्वार॥

चलत चलत पहुँचो सो काशी। जहां विराजैं शिव अविनाशी॥
भैरव कोतवाल जहँ गाजैं। अन्नपूर्णा सदा विराजैं॥
मुक्तिमही सब मुनिन बखानी। पहुँचेउ तहँ जाजलि अभिमानी॥
जब द्विजने सब नगर मँझायो। तुलाधार घृत बेंचत पायो॥
तुलाधार जाजलि पहिचाना। कियो बहुत आदर सन्माना॥

जो आये तुम मेरे पाहीं। मो सम आज कौन जगमाहीं॥
जो मैं कहूं आपसो सुनिये। सो सब अपने मनमें गुनिये॥
प्रथम सिन्धुमें तप तुम कीन्हो। पर सुधर्मको रूप न चीन्हो।
जब पूरण तप भयो तुम्हारो। शीश अटन को अधिक पसारो।
पच्छिन नीको नीड बनायो। सुखदायक अति परम सुहायो।

पच्छिनने अण्डा धरे, तुम जानो सो भेद।
देह करी सब काष्ठ सम, होय न पच्छिन खेद॥

जब वह पच्छी उड़ गये बनमें। छायो गर्व तुम्हारे मनमें॥
जब तू भयो महा अभिमानी। तुरतहि तोहि भई नभवानी।
सो सुन कठिन क्रोध तोहिं आयो। ढूंढ ढांढ तैं मुझको पायो।
हे द्विजवर पूंछत हौं तोसों। अब मैं करौं कहो जो मोसों।
यह सुन जाजलि अति अकुलानो। कैसे भेद वणिकने जानो।
एक ब्रह्म सबही संसारा। जानौ बहुत ज्ञान व्योहारा॥
बेंचत वस्तु जगतकी सारी। ऊंची हाट ठाट अति भारी।
मोहिं अचम्भा यह आवत है। धर्म्म कहां जब रस बेंचत है॥
कहो मित्र सब भेद बुझाई। कैसे धर्म्म रहत है भाई॥
मेटहु सब सन्देह हमारा। धर्म्म कहा जब यह व्योहारा॥

जाजलिके यह वचन सुन, तुलाधार गुणखानि।
रस बेंचनमें धर्म को, कहा होत है हानि।

धर्म तत्त्व सूक्षम है जगमें। सदा चलत हौं मैं तेहि मगमें।
रस उत्तम लैकै। बेंचत सदा निष्कपट ह्वै कै।

र्थ सोई सब जगमें जानो। जो कुछ महज्जननने मानो॥
ाहू में न कामना राखौं। मिथ्या कबहुं न मुखसे भाषौं॥
ो जन मोहि वचन कटु भाषत। तासु द्रोह मनमें नहि राखत
कञ्चन माटीको सम मानो। सब में एक भाव निज जानो॥
हिये सदा अहिंसा करणी। जाकी कथा मुनिवरन वरणी
अभय देत सब प्राणिन जोहै। आपहि अभय लहत जन सोहै॥
यह विचार सब प्राणिन माहीं। देत रहतहौं अभय सदाहीं॥
बंचत धेनु वत्स अरु धरणी। कबहुँ न सुधरत उनकी करणी॥
यह मैं सुनी मुनिनके मुखते।। कबहुँ न करत रहतहौं सुखते॥

कीजै सकल विचारकै, ज्ञानदृष्टिसों जोय।
विना विचारे जो करै, कार्य सिद्ध नहिं होय॥

जो नर समता जानत अहहीं। समता समझ सर्व सुख लहहीं॥
पूरव संस्कार मति सारा। ताते उपजो ब्रह्म विचारा॥
ना मैं पढो न अति तप कीन्हो। ना उपासनामें मन दीन्हों॥
जो कछु देखो ज्ञान प्रकाशू। सो मेरो पूरव अभ्यासू॥
काहू को न दोष हौं करहूं। राखौं धर्म सत्य उच्चरहूं॥
विष्णु विष्णु निशिवासरं भाषूं। समताभाव सबनसों राखूं॥
विप्र धेनु गुरुको सन्मानो। सबही में नारायण जानो॥
वाराणसी वसौं जहँ गङ्गा। करौं सदा सन्तन सत्संगा॥
तुला पकर कर घाट न देहुं। अंश परायो कबहुँ न लेहुं॥
करत गऊ गुरु जनकी सेवा। याते जानतहुं सब भेवा॥

गोपदरज ऊपर परत, कलिमल सकल नशात।
गुरुजनके सत्संगसों, हियो शुद्ध हो जात॥

दुखी दरिद्री मूरख मानो। नहिं जो कोई दहै अज्ञानो॥
सो नर अन्ध नरकमें परही। बहुरि दरिद्री ह्वै अवतरही॥
मद बिन सब रस बिक्री करहूँ। हानि लाभ कछु मन नहिं ध
भये गये को नहिं सन्देहा। समता ज्ञान हमारो एहा॥
दुख उद्वेग न काहू देहुं। अवगुण तजि सबको गुणलेहुं॥
नहिं अस्तुति नहिं निन्दा करहूँ। सबको एक भाव मन धरहूँ॥
अन्ध कुबुद्धि बधिर जो होई। इन्द्रिन विषय भृष्ट है सोई॥
शुद्ध भाव सब सों सम रहौं। काको शत्रु मित्र मैं कहौं॥
भलो बुरो शुभ अशुभ न मानो। निज आत्मा सबही में जानो॥
सरवर नदी समुद्र समानो। तीरथ मठ पर्वत सम जानो॥
आश्रम वरण बराबर मेरे। सबही में नारायण हेरे॥

जल थल अगजग सकलमें, रहेउ विश्वपति भाश।
सूर्य चन्द्रमामें सदा, उसही को परकाश॥

सबमें व्याप रहेउ नारायण। निशिदिन करत रहत पारायण॥
इस प्रकार तप करौं सुधर्मा। ममता त्याग अचारौं कर्मा॥
लोभ मोह मैं सब परिहरहू। कबहूँ क्रोध न मनमें धरहूँ॥
मैं सब दशा कही कुशलाता। जाजलि समुझ लेहु ९
जिन पच्छिनको तवशिर वासा। चले गये बनतजि सब
से तजकर जटा तुम्हारी। फिरत रात दिन विपिन

द्विज बर उनको वेग बुलाओ । कुछ उनसे समुझो समुझाओ ॥
सुन द्विज तुलाधारकी बानी । शीघ्र बुलाये दोउ द्विज ज्ञानी ॥
जाजलि तुलाधार है जहां । ते पच्छी उड़ि आये तहां ॥
पच्छी शीश नाय पग लागे । हे द्विज अवहि मोहमें पागे ॥

सुजन कुजनके मागजे, तिनको द्विज तू देख ।
देखेगो तब परेगो, भलो बुरो आलेख ॥

समता समकोउ समनहिं द्विजवर । समता परमधर्म्म धरनीपर ॥
दुखकर तपकीजे अधिकाई । सो तप गर्व करत मिट जाई ॥
छाड़ो मोह दम्भ मद हानी । ध्यानीसों सम ना पहिचानी ॥
भस्म रमाय जटा शिरधरहू । ह्वै मुण्डित त्रिदण्ड लै करहू ॥
फिरो सदा दण्डकवन माहीं । बिना भक्ति किञ्चित् फल नाहीं ॥
वृथा कलेश मरो पचि कोई । समता विना मुक्ति नहि होई ॥
मुखसे ज्ञान ध्यानको गानो । समता ज्ञान हृदय नहि आनो ॥
मन वच कर्म्म ध्यान नहि धरहो । मिथ्याचार सबै सो करहो ॥
इन्द्रिय हाथ आपने नाहीं । तौ कत वृथा बसो वनमाहीं ॥
इन्द्रिय जीत घरहि किन रहई । सो नर परम धामपद लहई ॥
बिना ज्ञान जप तप आचारा । तन मनका दुख देनेहारा ॥

ज्ञान बिना नहिं भक्तिहै, भक्ति बिना नहि ध्यान ।
ध्यानबिना समता कहा, अहो विप्र विज्ञान ॥

काहे देह वृथा श्रम सहई । जो समता चितमें नहि रहई ॥
अज्ञानी कर कोटि उपाई । ज्ञान बिना संशय नहि ज

पच्छी वचन सुनत सुख भयऊ। तब ऋषि परम ज्ञानपद [illegible]
सत्सङ्गति को यह फल भाई। जाजलिके समता मति आई॥
अहङ्कार ममता मिटगई। परम स्वरूप ज्ञान मति भई॥
समता भई ज्ञान पहिचानो। सर्व रूप परमेश्वर जानो॥
तुलाधारसे मांग बिदाई। जाजलि गयो बनहिं नृपराई॥
पक्षिन शाप तुरत मिट गयऊ। नरतनुधर अति आनँद भय[illegible]
समताने सब को निस्तारो। सो समता तुमहूँ उर धारो॥
समताको देखेउ फल राजा। सिद्ध भये सबहिनके काजा॥
तुलाधार द्विजराज कहानी। वर्णन करी सकल नृप ज्ञानी
जो यह कथा पढ़ै अरु कहई। ताको ज्ञान धर्म्म नित रहई॥

ऐसे सुखद अनेक हैं, भारतमें इतिहास।
हरत सकल कलिमल कलह, देत स्वर्गको वास॥

इति द्वादश अध्याय॥ १२॥

अर्थ धर्म्म दोऊफलदायक। इनमें कौन महा अघघायक॥
मोहिं समुझाय कहो सबबाता। दुहुँमें अधिक भलो को ता
धनइच्छा मनमें सब लहई। धनते धर्म्म भलो ऋषि कहई॥
कहूं पुरातन इक इतिहासा। विप्र एक धन काज उदास
धनके हित आराधे देवा। कर देखी सबही की सेवा॥
[illegible] भयऊ। बहुत भांति उद्यम मन ठयऊ

सब तजि उद्यम कीजै सोई। जाते काम धाम धन होई॥
कुण्डधारकी सेवा ठानी। धन पावनको यह मत आनी॥
द्विजवर तपको उद्यम कियो। देवाकुण्ड शरण मन दियो॥
धन धन धन धन रटना लागी। धन दे मोहिं करो बड़ भागी॥
कुण्डधार द्विजवरको देखी। मनमें भयो प्रसन्न विशेखी॥
काहे देत विप्र दुख तनुको। अबहिं जात तेरे हित धनको॥

कुण्डधार यह कह गयउ, परम धाम तत्काल।
ब्रह्मा विष्णु महेश जहँ, राजत रूप विशाल॥

लागो करन चरणकी सेवा। होहु प्रसन्न दास पर देवा॥
देवदया अब मोपर कीजै। जो कछु हौं चाहौं सो दीजै॥
कुण्डधार तुम चाहो जोई। हम प्रसन्न ह्वै देहैं सोई॥
विप्र एक मम शरणै आयो। ताको धन दीजै मन भायो॥
कही त्रिदेव सुनो द्विजराई। बिना धर्म्म धन है दुखदाई॥
चाहै धन मनुष्य जो कोई। धर्म बिना धन कबहुँ न होई॥
जिनके धर्म्म बसै मनमाहीं। सदा लक्ष्मी रहत तहाँहीं॥
धर्महि धन विद्या धनरूपा। धर्महि ते सुखराज अनूपा॥
धर्महिते मन सुख सन्तोषा। धर्महिते नर पावै मोखा॥
धर्म कुलीन कुलीन कहावै। धर्म हिते सुरपुर नरपावै॥

धर्म हिते कीरति बढ़त, धर्महिते यश होय।
धर्महिते आनँद बढ़त, धम देत दुख खोय॥

लोभ मोह ममता को हरऊ। हरि हरि भजै धर्म चित धरऊ॥
धर्म अनेक धर्म तज करहीं। धूरि समेट वृथा पचि मरहीं॥
धर्म वासना जो मनलावैं। दारिद्रीहू स्वर्ग सिधावैं॥
जो धनपाय धर्म नहिं करहीं। देखत घोर नरकमें परहीं॥
कुण्डधार सुन शिव अजवानी। अधिक धर्मकी महिमाजानी॥
चहिये और यत्न नहिं करनो। सबसे अधिक धर्म फलवरनो॥
दे इक वस्त्र विदा तेहि कीन्हो। कुण्डधार शिर पर धर लीनो॥
शीशनाय बोलो द्विजराई। धर्मकथा मोहिं भली सुनाई॥
मैं अज्ञान न जानो भेवा। अब भई कृपा तुम्हारी देवा॥
आशा सहित लोभ मन धरेऊ। तृष्णा जान बहुत दिन जरेऊ॥

यह तृष्णा पापिनि गरे, रोम रोम रहि व्याप।
धर्म्म कथा सुन कर प्रभू, मिटे मोर त्रयताप॥

कुण्ड वस्त्र जो हरिसों लायो। सो द्विजको दै धर्म्म पढ़ायो॥
सबसुख छाण्डि करों वनवासा। करों धर्म्म तजिकै सब आसा॥
धर्म छाण्डि जो उद्यम करहीं। ते जगमाहि वृथा पचिमरहीं॥
धर्म समुद्र निकट विसरायो। मृगतृष्णा जल अन्त न पायो॥
सकल पुराण वेद यह कहई। पूरब कियो सो अब फल लहई॥
हो प्रत्यक्ष कर्म जो करहो। वृथापरिश्रम करकर मरहो॥
ताते चित्त कलेश न करिये। पूरब कियो सफल मन धरिये॥
वृथा भागके आगे। कछु नहिं फलै कर्मकै त्यागे॥

सुनके विप्र गुहको बानी। धन्य धन्य प्रभु आतमज्ञानी ॥
धर्म मार्ग तुम मोहिं दिखायो। सकल कलह कलि कलुष नशायो
धर्मरूप धर्मात्मा, कीन्हेउ धर्म प्रकाश ।
धर्महिके बल है खड़ो, पृथ्वी अरु आकाश ॥
जा धनते मेरो मनमानो। सो धन नरक रूप में जानो ॥
दृष्टिचक्षु मेरे अति भयऊ। तुम्हरी कृपा सकल दल गयऊ ॥
साधु कृपाते उपजे ज्ञाना। सबते अधिक धर्मको जाना ॥
लोभ मोह मेटो भ्रमजाला। धन्य धन्य प्रभु दीनदयाला ॥
गुरुको नमस्कार तिन कीनो। केवल ज्ञान धर्म मन दीनो ॥
मैं तो अर्थ लोभ मन दयऊ। तुम्हरी कृपा कृतारथ भयऊ ॥
ज्यों निशि नाशै प्रगटै भानू। तुमते प्रगट भयो अस ज्ञानू ॥
तुम्हरी कृपा भयो वैरागा। ब्रह्मभाव समता मन लागा ॥
गुण अवगुण दुविधा मन गई। दुख सुख मिटो शान्त मति भई
अब मैं धर्महि नाहिं बिसारौं। धर्म धर्म दिन रात पुकारौं ॥

इति त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

जो तृष्णा कर अति अकुलाई। ताकोजरन कौन विधि जाई ॥
कौन कर्मनाशै सब दोषा। किहि बिधि उपजे मन सन्तोषा ॥
भावी होनहार जो होई। ताको मेंट सकै नहिं कोई ॥
यहै जान धर्महि मन धरहू। तृष्णा जरन करत मति जरहू ॥

जाते तृष्णा तप्त बुझाई। मक्की कथा कहौं समुझाई॥
मक्की यत्न बहुत विधि करही। ताहि अर्थ उद्यम नहिं सरही॥
उद्यम करै बहुत चितलाई। बढ़ौ न कक्कु धनकी प्रभुताई॥
रहेउ न जब कक्कु ताके पासा। लागो करन पराई आसा॥
इत उतसे उधार धन आनौ। तब तिन लिये वृषभ द्वै जानौ॥
वृषभहि फेरन लागो जबहीं। आगे कर्म आयगो तबहीं॥

उतते आयो ऊंट इक, इतते दोउ वृष जात।
फँस गय ताके कण्ठमें, दिन बिगरे की बात॥

खच ले चलो दोऊ वृषनको। भाज गयो ले वृष सो बनको॥
वृषको जब नहिं लगो ठिकानो। तबतो मक्की अति घबरानो॥
जो जो मैंने काय बनायो। निष्फल भयो अर्थ नहिं पायो॥
सब उद्यम मैं करकर हारो। चलत न विधनासे कुछ चारो॥
विधिकी गति कक्कु लखौ न जाई। कहा भई औ कहा बना
लिखो दुःख सुख सो क्यों टरही। यह मन मूर्ख वृथा श्रम कर
औरहि चितवत औरहि भयऊ। मोती चाहत मणि गिर गय
जब विधना उलटे दिन करही। कै धन जाय कि धनपति मर
जो कोउ अधिक उपाय बनावै। भाग्य बिना सो कबहुँ न पा
बुधि बल मन्त्र नहीं धन होई। कोटि उपाय करो किन को
जा धनको सोचत दिन जाहीं। लाभ अलाभ होत क्षणमाहीं

पूर्वजन्मके हैं कोऊ, कर्जदार वृष ऊंट।
अबलौं कहुँ पाये नहीं, गये कौनसी खूंट॥

...ब सब खोय समझ मोहि आई। है यह द्रव्य महादुखदाई॥
...र्म सहित जो उद्यम करही। दुखी न होय छमा मन धरही॥
...ाम क्रोध मद जब मिटजाई। ब्रह्मज्ञान प्रगटे उर आई॥
...अज्ञान द्रस्थिर जब होई। आनँद रूप लखै नर सोई॥
...से मङ्की समझो जबहीं। पूरण ब्रह्म रूप भयो तबहीं॥
...सबको त्याग भयो वैरागी। धन्य धन्य मङ्की बड़भागी॥
...पाय उदार ज्ञान मतिधारी। छ्रग छ्रग छ्रग छ्रग छ्रग संसारी॥
...ाजा तृष्णा ऐसे जाई। मङ्कीने ज्यों तुरत मिटाई॥
...ो यह कथा सुनै चितलाई। ताकी सब संशय मिटजाई॥
...वे पद निर्वाण अनूपा। चित दे सुनहु युधिष्ठिर भूपा॥
कीजै ज्ञानकुठारसों, इच्छा कहं निर्मूल।
ब्रह्मज्ञान उपज हृदय, मिटै मोह भ्रम शूल॥

इति चतुर्द्दश अध्याय॥ १४॥

...धर्माध्यक्ष धम तम ज्ञाना। गुरुआज्ञा सेवन बड़ जाना॥
...बौद्ध नहुष सों जो कछु कहेऊ। सो सब कथा सुननचित चयऊ
...समझमौन ज्ञान उपदेशा। कहेउ बौद्ध सो सुनहु नरेशा॥
...यह इतिहास पुरातन कथा। बौद्ध जु कही नहुषसों यथा॥
...ो सब तुम सों पाण्डव कहहूं। सब सन्देह तुम्हारे दहहूं॥
...ति व ज्ञान पाइये जैसे। ... निश्चलम ति होवै तैसे॥

जसे हौं पाऊं यह सारा । सो स्वामी तुम कहो विचारा ॥
करत न हम उपदेश भुवाला । अरु नहिं शिक्षा देत विशाला
जो उपदेश मोक्षके नीके । जानतहो तुम यत्न सभीके ॥
जिनसे मैं गुरु दीक्षा पाई । तिनके नाम सुनो नृपराई ॥

चील, पिंगला, तीरगर ; सर्प, कुमारि, विहंग ।
यह मेरे छै गुरु भये, लगो इनहिको रंग ॥

चील आदि षट गुरू हमारे । अवगुण तज सबके गुण धारे ।
चील मांस ले उड़ी अकाशा । पक्षिन घेर लियो चहुँ पासा
घेरत मांस छांड़ि तिन दीनो । निसन्देह हो मारग लीनो ।
इस प्रकार संगत गृह त्यागे । फिरनाहीं कोइ आपद लागे
यह सब गति मेरे मन भाई । तब अपनो गुरु चील बना
वेश्या एक पिंगला बाला । शुद्ध बुद्धि अतिरूप विशाला ॥
व्यसनी की नित इच्छा करही । धनको ध्यान न चितते
धनी आश जबलों मन लागी । तबलों रति न भाग्य को
तजी आश जाते दुख होई । तब पिंगला चैन सों सोई ॥
आश छोड़ जब अति सुख पायो । तब वेश्या को गुरू ब

विरच रहेउ इक तीरगर, तीरहि ध्यान लगाय ।
देखो कछु नहिं निकट ह्वै, गइ सैन्य समुदाय ॥

चहिये ऐसो चित्त लगानो । सैन्य नरेश जात नहि जानो ॥
ऐसे मन ईश्वरसों धरहीं । और सकल चिन्ता परिहरहीं ॥
कटक जात नहिं दीखो । यह गुण मैंने तासों सीखो

संग्रहरण बहुत दुखदाई । पर घर रहै सर्प्प ज्यों राई ॥
इहि प्रकार छांड़ो गृहरूपा । मिलै परम आनन्द अनूपा ॥
घर करने में कोटि बुराई । यह शिचा सर्पनसों पाई ॥
इक कुमारिके घर संन्यासी । आये कहुँते तीरथवासी ॥
तिनहित लगी बनावन पूरी । खट खट खटकन लागीं चूरी ॥
इक इक कर कर चूड़ी फोड़ी । एक एक करमें रखछोड़ी ॥
हो वेखटक बनायो भोजन । लगे प्रेमसे जीमन सो जन ॥

रहै सकल घरवार तज, ऐसे आपुहि एक ।
निशि वासर हरि हरि रटै, प्रगटै परम विवेक ॥

भिचावृत आश्रित जे आहीं । सुखसे रहत सदा बनमाहीं ॥
इकलो बसनो अति सुखदाई । यह सिख मोहि कुमारि सिखाई ॥
छांड़ि द्रोह सब जीवनकेरो । लहत विहङ्गम मोद घनेरो ॥
वनको वास सदा मन भायो । यह मति मोहिं विहङ्ग सिखायो ॥
ताते यह तजिये सब सङ्गा । धारण करो ज्ञानको अङ्गा ॥
जब इन सबकी शिचा मानी । आतम रूप भयो विज्ञानी ॥
यह कह बौद्ध भवन निज गयऊ । नहुषानन्द बहुत मन भयऊ ॥
सर्वातमा लखै जन जोई । समता ज्ञान ब्रह्म मति होई ॥
हे राजन् यह षट गुरु ज्ञाना । नहुष नृपतिसों बौद्ध बखाना ॥
यह प्रसङ्ग जो सुनै सुनावै । निश्चय वास स्वर्गको पावै ॥

इति पञ्चदश अध्याय ॥ १५ ॥

दयादृष्टि करके प्रभू, वर्णौं प्रज्ञा ज्ञान॥
लोभ मोह छूटे सकल, लागै हरिपद ध्यान॥
प्रज्ञा ज्ञान जासु विधि होई। ऐसी रीति बतावहु कोई॥
जब संसार सकल सुख जाहीं। तब वैराग होय मनमाहीं॥
पूरब भाग्य उदय हो जबहीं। प्रज्ञा ज्ञान होय मन तबहीं॥
प्रज्ञा ज्ञान जबहिं मन लागै। तब संसार सुखनते भागै॥
है प्रह्लादहि नाम प्रमाना। मंकीको भी जैसे ज्ञाना॥
कहौं पुरातन कथा बखानी। वैश्य एक मन मद अभिमानी
रथ चढ़ि चलेउ गर्व मन भरेऊ। ताके धक्के द्विज गिर परेऊ
वैश्य भजाय रथहि लै गयऊ। पश्चात्ताप विप्र मन भयऊ॥
हैं सब दोष कर्मके मेरे। ह्वैहै कहा वैश्यके घेरे॥
दूनो धन हो वैश्यपर, यहै हमारो शाप॥
भुक्तेगो सो समयपर, अपनो करनो आप॥
धनी भये संतन दुखदाई। यह अनीति अब सही न जाई
हौं बहु दुखी कहा जो करहूं। अबहीं प्राण त्यागकर मरहूं
तुम जनि विप्र शोक मन आनो। पूर्व्व जन्मको दुख सुख जा
सम्पति विपति सबै सहि लीजै। औरहि काहू दोष न दीजै
हम पशु जाति करैं मह कर्मा। तुम मानुष जानो सब धर्मा
सत्य बात समझाऊं तोही। तू निज मोह मगन मति होही
ज संतोष ज्ञान मन नाहीं। देखो सबै दरिद्री आहीं
धन इच्छा मन करहीं। ज्ञान पाय धनको परिहरही

जो संसार सुखनते रहई । आनन्द सहित परमपद लहई ॥
ारन अधिक तृष्णा जहँ छाई । तहां न सुख देखो द्विजराई ॥
ो पृथ्वीको पावे राजू । तृप्त न होत सजे सुख साजू ॥
दा मूर्खतामें मन रहई । मेरो मेरो सब कोउ कहई ॥

यह मेरो घरवार है, यह मेरो परिवार ।
यह मेरी है सम्पदा, निशि दिन यही विचार ॥

बेया पुत्र मित्रादिक भाई । इनहिं छोड यमके घर जाई ॥
न सम्पदा सबै परिहरहीं । धनते धनिक सबहि मन डरहीं ॥
थम धनिक राजाते डरहीं । कुल कुटुम्ब डर मनमें करहीं ॥
ोर दस्युते डरपै भाई । पानी अग्नि देख अकुलाई ।
जैसे आमिष पृथ्वीमाहीं । श्वान शृगाल सबै मिल खाहीं ॥
जो आमिष आकाश जाई । पक्षी बहुत लगैं तेहि धाई ॥
मच्छ कच्छ पानीमें खाहीं । त्यों सुख कहूं धनीको नाहीं ॥
ताते धन तृष्णा तज दीजे । निज सन्तोष हृदयमें कीजे ॥
ज्यों तरङ्ग उपजे जल माहीं । ज्यों थिर नहीं वृक्षकी छाहीं ॥
ऐसे धन थिर कबहुँ न रहही । सदा मूर्ख धन हित दुख सहही

मूरख जन नित करत हैं, धनको सदा गुमान ।
काहु सङ्ग नहिं जात धन, जात अकेले प्रान ॥

नहिं सूधो चितवत धनराई । धन उन्माद करै वरियाई ॥
इतनो मद नहिं व्यापै ताही । बुद्धिमान जो ज्ञानी आही ॥

ब्राह्मण जन्म श्रेष्ठ तनु पाई। सो केहि हेतु तजत द्विजराई।
हमते धर्म न कोऊ सरई। तो यह देह न तनु परिहरई॥
होकर गुणी प्रवीन सुजाना। तुम क्यों विप्र तजतहो प्राना॥
मूँसे मेंडक सर्प अपारा। योनि तिर्यकी श्वान मंजारा॥
बहिरे पङ्गु अन्ध अरु रोगी। गूङ्गे जीवन मन्द वियोगी॥
अपने धर्म रहैं थिर जोई। तासम और न पण्डित कोई॥
तुम तो ब्रह्मवंश उजियारे। प्राण तजत पापी हत्यारे॥
तजहु शोक धीरज उर धारो। राम राम मुखते उच्चारो॥
भजन समान और तप नाहीं। मिलत परमपद घरही माहे
शिवि दधीचि हरिचन्द नरेशा। लियो परमपद तजो न दे
जनकादिक राजा जे भयऊ। राजकरत निर्भय पद लयऊ॥
इन्द्रिय वश घरही वैरागी। विषय तजै सो अति बड़ भागी
सब तज विष्णु शरण किन जाई। कत संसार दुःख अकुल
सर्व रूप नारायण जानो। निर्भय विष्णु चरण चित आनो
हे पशु इक अचरज मोहिं भारी। को हो तुम श्रृगाल तनु
अज हरि हर रवि चन्द्र सुरेशा। हो कोउ देव धरे मुनि वेश
रूप प्रकाश करो तुम स्वामी। जान परत मोहिं अन्तर्यामी॥
धर्म रूप प्रिय वचन उचारे। सुनत सकल दुख गये हमारे॥
हम हैं इन्द्र सुनहु द्विजराई। तव दुख देखि दया मोहिं आई॥
सत्य रूप नारायण मानो। सब संसार स्वप्नवत जानो॥
साधु गुरुको परणामा। प्रज्ञा ज्ञान सदा निष्कामा॥

पूर्ब्ब जन्मको भक्त जो, ताहि होय वैराग ।
हरि हरि हरि हरि नित रटै, सर्व विषयको त्याग ॥

इति षोड़श अध्याय ॥ १६ ॥

यह संसार महा दुखदाई । दुखही दुख नित देत दिखाई ॥
है सुख कौन जगतमें ताता । मोहिं समुझाय कहो सबबाता ॥
सबते कहा सर्व कल्याना । भीषम पिता कहो निज ज्ञाना ॥
निशिदिन क्षमा दया मन धरही । अरु सब इन्द्रिय निग्रह करही
सब संसार मृतक कर मानै । परमेश्वरहि सत्य कर जानै ॥
कहौं पुरातन इक इतिहासा । सुनहु ध्यान धर तज सब आसा
जो कुछ पुत्र पिता सों कहेऊ । सुनहु तात मेरे मन रहेऊ ॥
ब्रह्मपुत्र मेधावी भयऊ । पूछन ज्ञान पितापै गयऊ ॥
मोको कहा कर्म अब करनो । कैसे रहौं पिता सो वरनो ॥
कहा सु दिन दिन करौं विचारा । सो सब कहो सहित विस्तारा
प्रथम वेद पढ करहु सुकर्मा । पीछे ब्रह्मतत्त्व को मर्मा ॥
प्रथम राज्य सन्तत उपजाई । बहुरि करो तप बनमें जाई ॥
काल भुजङ्ग रहेउ मुँह बाई । दिन दिन बढ़ै रोग अधिकाई ॥
क्षण क्षण भङ्ग होत तनु ताता । तुम क्यों कहो स्वार्थकी बाता ॥
ऐसे आयु क्षणहि क्षण छीना । जैसे विकल थोर जल मीना ॥
यह तनु जात न लागे बारा । कोऊ थिर न रहै सँसारा ॥

जबलग नाहीं होत गिलानी । तब लग रोग ग्रसे नहिं आनी ।
जबलग नहीं कालसों दापा । तबलग वेग सँभारो आपा ॥
जबलग अति आपदा न आई । तबलग दूर करो भय भाई ।
जबलग देह देह नवराता । तब लग विष्णु सँभारो ताता ॥

जैसे जलमें बुदबुदे, उठ उठके गल जात ।
ऐसेही गल जायगो, एक दिना यह गात ॥

दारुण काल मृत्युको भर्मा । बालकपनते कीजै धर्मा ॥
ज्यों तरु फल पकपक गिरपरहीं । त्योंही काल सबन संदरहीं ।
बालकते तरुणापन भयऊ । तरुणापनसे वृध ह्वै गयऊ ॥
जैसे घर जीरण गिर परही । तैसे तनु घर सब सुख टरही ।
ममता कर अपनो सब मानै । आप समेत जात नहिं जानै ॥
जो मैं कहो सो मानो बाता । शिरपर काल न सूझै ताता ॥
जब आयुबल जात बिलाई । आवत काल न जानो जाई ॥
यह विचार कर विलम न कीजै । विष्णु चरण धर्महि मन दीजै
जबते भूल अपनपो गयऊ । तबते जन्म मृत्यु वश भयऊ ॥
सबही जात मृतक छिटकाई । एक धर्म अपने सङ्ग जाई ॥

होत न काहूको कोऊ, तात मात गुरु भ्रात ।
दो दिनकें साथी सबे, अन्त धर्म सँग जात ॥

जानो कालसिंह बलवाना । तुरत निकार लेत है प्राना ॥
ते हर हरिसौं कर नेहा । सदा न रहै खेदको देहा ॥
। पुत्र मित्र अधिकाई । अपनी अपनी कहत बनाई ॥

जिन जिनको तुम सगो विचारत । ठोंक ठोंकके सोइ पजारत ॥
पानी अग्नि जरत सब जहां । जठरागिनिमें राखो तहां ॥
खान पान पूरत सब साजा । सो कृतघ्न क्यों बिसरत आजा ॥
ऐसो रूप कहां ते आयो । बनो बनायो कहां समायो ॥
कौन बन्धु अरु को परिवारा । सब झूठो जगको व्यवहारा ॥
मारगमें पन्थी दिनचारी । ऐसे सब कुटुम्ब नर नारी ॥
घरमें हितू जानिये जोई । मरती समय सङ्ग जो होई ॥
होत कोउ काहूको नाहीं । माया मोह झूंठ जगमाहीं ॥

कोऊ काहूको नहीं, झूंठो माया मोह ।
धन्य वही जो त्याग सब, बसत गिरिनकी खोह ॥

हा हा तात तात कर रोवै । सर्प खाय मेंडक जिमि जोवै ॥
ऐसे मृत्यु ग्रसे सब कोई । पण्डित मुगध न छूटै सोई ॥
देह अनित्य जान अस लीजे । हरि हैं नित्य ताहि मन दीजे ॥
पुत्र वचन सुन उपजो ज्ञाना । परमातमा सत्यकर माना ॥
सर्व त्याग निस्पृह तब भयऊ । श्री गोविन्द चरण मन दयऊ ॥
लागो हरि हरि हरि हरि करनै । निशिदिन प्रभुकी महिमा बरनै
कभी कहै तुम त्रिभुवन स्वामी । कभी कहै तुम अन्तर्यामी ॥
कभी कहै तुम शिव अजदेवा । सुरनर मुनि नहिं पावत भेवा ॥
कभी कहै तुम जग निस्तारो । कभी कहै तुम मोहि उबारो ॥
कभी कहै तुम हे गिरिधारी । पूजो मनकी आश हमारी ॥

यहि प्रकार करिकै विनय, लगेउ करन पुनि ध्यान।
यह छवि मोहिं दिखावहु, कृपासिन्धु भगवान॥
सुन्दर श्याम पीत पट भ्राजै। शङ्ख चक्र कर गदा विराजै॥
परम मुदित नयनं अभिरामा। वदन प्रसन्न भक्त सुखधामा॥
शीश मुकुट कटिपर पट भ्राजै। पीताम्बर तनु अधिक विराजै
कम्बु, कण्ठ सुन्दर भुजचारी। हृदय भृगुलता सोहै प्यारी॥
करधनु शायक कटितट भाथा। जनसुखदायक श्रीरघुनाथा
चरण कमल कोमल अरुणारे। कलिमल सकल निवारण हा
हृदय धारि द्विज ऐसो ध्याना। परम उदार प्रगट भो ज्ञाना।
यहि छविसों प्रभु शारँगपानी। दीजै दरश मोहि प्रभु आनी
पुत्र पिता को ज्ञान बतायो। सो सब क्रमक्रम तुमहिं सुनायो
प्रज्ञा ज्ञान होत है ऐसे। पुत्र पिता उपदेशेउ जैसे॥
प्रज्ञाज्ञान विधान सब, कहेउँ तुमहिं समुझाय।
चित्त न भटकावहु कहूँ, भजहु कृष्ण यदुराय॥

इति सप्तदश अध्याय॥ १७॥

योगेश्वर जानै सब भेवा। मुनियन मध्य श्रेष्ठ शुकदेवा॥
ब्रह्म भाव मायाको त्यागू। केहि सुखसे उपज बैरागू॥
: गर्भ योगेश्वर जानो। ताके व्यास अपनपौ मानो॥
व श्रद्धासों रहेऊ। ताते व्यास वचन सो कहेऊ॥

क्षुधा पिपासा दुख सुखरागा। यह सब जीत करहु वैरागा॥
मदषट कर्म क्रोध परिहरहू। सबतज सत्यधर्म आचरहू॥
बन्धु मित्र पुत्रादिक जेते। कोऊ सङ्ग न लागहिं तेते॥
धर्म बिना नर सदा अनाथा। जीवन कर्म धर्म है साथा॥
काम क्रोध मद लोभ अपारा। दम्भ द्रोह निन्दा संसारा॥
सांचो शुद्धभाव मन धारो। ऐसे ब्रह्मचर्य्य आचारो॥

आदि ब्रह्म अद्वैत अज, अविनाशी अविकार।
ताहि भजो सब तजो भ्रम, जो चाहो निस्तार॥

हिंसा त्याग क्षमा मन आनो। निर्मल स्वर्ग पन्थ पहिचानो॥
हिंसादिक कुकर्म बेढंगा। त्यागो परधन परतियसङ्गा॥
सदा कुमति अवगुणसों प्रीती। यह सब है अधर्मको रीती॥
जहां न सुफल वृक्ष विश्रामा। जहां न परमेश्वरको नामा॥
धर्मातमा जहां नहिं कहिये। ऐसे ग्राम देश नहिं रहिये॥
मोह नींदमें सोवत रैहौ। आंख खुलै तब फिर पछितैहौ॥
नीच मीच का भय अति भारा। सावधान हो करो विचारा॥
जिनसों रीति प्रीति अति चाऊ। ते सब क्षणमें होत बटाऊ॥
जाति बन्धु मरघट लौं सङ्गी। सङ्ग न जात सगी अरधङ्गी॥
आगे आप अकेलो जाई। कोऊ सङ्ग न लागत धाई॥

तब रोरो पछितात हैं, मल मल दोऊ हाथ।
उस कुसमयमें होत हैं, दान धर्महो साथ॥

मिलत नहीं तेहि पथ विश्रामा। नहिं अवलम्ब एक तब य
कठिन पन्थ अतिकराटक जहां। अन्धकार नहिं सूझै तहां।
वहां न कोऊ होत सहाई। मारत यम तब अति अकुलाई।
मात पिता सुत वित अरधङ्गी। इस दुखमें कोउ होत न स
और न काहूको तहँ आशा। ज्ञान दीप तहँ करै प्रकाशा॥
सत्सँग दीप हृदयमें धरही। धर्म अनेक तेल तप करही॥
दया रुईकी बाती करिके। क्षमादान दीपक में धरिके॥
भक्ति अग्नि सों ताहि पजारै। बड़े यत्न सों उरमें धारै॥
यों दीपक बरिये चित लाई। जासों नीच काल मिट जाई।
निसन्देह फिर कीजै भक्ती। होय अधिक तब निश्चल भक्ती।

काल व्याल इस जीवको, डसत रहत दिन रात।
भजन सार संसारमें, और न दूजी बात॥

क्षणमें क्षणभङ्गुर तनु जाई। ताते वेगि समुझिये भाई।
कौन पिता को काका सुतहै। बस जगकी माया अद्भुत है॥
हिम ग्रीषम वर्षाॠतु आई। ऐसे दिन दिन आयु सिराई।
इन्द्रिन वश सुत वित सत भानै। हरिसों प्रीति रीति नहिं
जो निष्काम उग्र तप करहीं। शोक मोह दारुण दुख हरहीं
जरा आन जब तनुको गहई। देह सिथिल सुधि बुधि नहिं
सुनत ज्ञान मनमें नहिं धरहीं। ज्यों कर दीप कूपमें परहीं
.० ते पच्चिस को भयऊ। तऊ न ज्ञान रत्न मन दयऊ॥

ज्ञानहि करै पापको नाशा । ज्ञान हृदयम करै प्रकाशा ॥
जब उपजे मनमें सन्तोषा । ज्ञानहि ते पावे नर मोषा ॥

ज्ञान भानु जाके हृदय, करै प्रकाश अपार ।
ताको भव बाधा हरै, देय अच्चत फल चार ॥

ऐसे ज्ञान धर्म्म जे करहीं । मनमें ताको फल नहिं धरहीं ॥
ताहि धर्म्म ते उपजै ज्ञाना । सत्यवचन यह व्यास बखाना ॥
तुम स्वामी सब धर्म्म सुनायो । मिथ्या कर संसार दिखायो ॥
उपजायो मन ब्रह्मविचारू ॥ कियो हृदयमहं ज्ञान प्रचारू ॥
इन्द्रिय निग्रह अरु वनवासा । विन विद्या नहिं होत प्रकासा ॥
होय न ज्ञान विना सन्तोषा । तबलग जीव न पावै मोषा ॥
तपते पूर्व पाप सब टरहीं । ब्रह्मज्ञान जीवहि निस्तरहीं ॥
जो मधु अन्न मेलकर खाई । बढै चुधा सब रोग नशाई ॥
जीवन धर्म्म अर्थ अरिमाना । धर्म्महि को है केवल ज्ञाना ॥
ज्ञान विचार धरै सों ध्याना । लहै मुक्ति सों पद निर्वाना ॥

रहत विष्णु के निकट नित, सदा उन्हीं को ध्यान ॥
और न चित भटकत कहूँ, येही पद निर्वान ॥

नित प्रति ब्रह्मज्ञान को गाथा । पद्मासन कीजै मन हाथा ॥
मन वच क्रम हरिध्यान लगावै । सो नर अचल मुक्तिपद पाव
प्रकृति पुरुषको पावै भेवा । व्यासवचन समुझो शुकदेवा ॥
व्यास कहो शुक समझो यथा । तुम्हैं सुनाई न्टप सो कथा ॥
धर्म्म समेत सुनै जो कोई । निज मुक्तिहु पावै नर सोई ॥

जब यह ज्ञान चित्तमें लागा । तब शुकको उपजो वैरागा ।
इस प्रकार भये शुक वैरागी । भवसागर की माया त्यागी
सब मुनि जनमें आदर पायो । ब्रह्मज्ञानसे ध्यान लगायो ।
जो जो प्रश्न किये तुम राई । सो सब गाया कह समझाई
धन्य धन्य तू नृप बड़ भागी । मिले तोहि ऋषि मुनि वैरा

श्रेष्ठ कथा शुकदेवकी, सुनै सुनावै जोय ।
चला जाय वैकुण्ठ को, रोक सकै नहिं कोय ॥

इति अष्टादश अध्याय ॥ १८ ॥

भई अधिक श्रद्धा मम गाता । भीषम पिता कहो यह बाता ॥
जाते पाप दोष सब जाई । भूमि दान कहिये समझाई ॥
भूमि दई तिन दीनो सबूं । कनक आदि द्रव्यादिक सबूं ॥
मन्दिर वापी कूप तड़ागा । ताल ग्राम उपवन बन बागा ॥
अग्नि होम यज्ञादिक जेते । भूमि दानते सब फल तेते ॥
पृथ्वी कश्यपसों अस कहई । मोहिं देय सो सब फल लहई ॥
प्रभु वराह ह्वै लाये मोहीं । गुरु जान कर दीनी तोहीं ॥
महीदानदे किया महीशा । धन्य धन्य प्रभु हरि जगदीशा ॥
इन्द्रकही सुरगुरुसों बाता । पृथ्वीदान बड़ो है ताता ॥
ों यह ब्रह्माने भाई । सो मैं कहूं तुमहिं समझाई ॥
गेंहूँ खेती बहु फरही । हरी भूमिको दान जो करही ॥

...ख समेत खेतको दाना । जाय स्वर्गचढ़ सुभग विमाना ॥
...य्या सिंहासन शिर छत्ता । हय गज रत्न अमूल्य विचित्ता ॥
...सूरज चन्द्र पर्व जब बीतै । भूमि दानदे सब जग जीतै ॥
...थ्वी दै अन्हाय जो कोई । यज्ञ समान ताहि फल होई ॥
...न्द्र भूमि सुर गुरुको दीनी । कीरति सकल लोकमें लीनी ॥
...दाध्ययन विप्रको दीजै । अक्षय स्वर्गामृत फल पीजै ॥
ऐसे राजा तुमहूं देहू । सुकृत धर्म करो अब एहू ॥
पृथ्वी हरे पाप कह होई । मोसों पिता कहो सब सोई ॥
जो काहू भू लेय छिनाई । ताको दोष कहो समझाई ॥

पहिले पृथ्वी दान कर, पीछे लेय छिनाय ।
तिनकी गति कह होत है, कहो पिता समझाय ॥

जो छीने कोउ भूमि पराई । साठसहस सो नरकहि जाई ॥
पृथ्वी हरे पाप यह होई । कोटि जन्म रह नरकहि सोई ॥
...त जे भूमि विप्रको हरई । बनमें सिंह होय अवतरई ॥
दई भूमि जो लेय छिनाई । नीच भवन जन्में सो जाई ॥
सगरादिक दीनी भू जानो । राजा त्योंही तुम परिमानो ॥
विवाद में गिरगट तनु धारो । भलो बुरो कछु नाहिं बिचारो ॥
...जो जानै तो सांची कहई । नातरु मौन साधु चुप रहई ॥
श्रद्धा सहित कथा नित पढ़ई । श्रोता फल पावै यश बढ़ई ॥
भूमिदानकी कथा बखानी । सुनी आपने न्टप विज्ञानी ॥
भूमिदान से सबफल होई । भूमि समान दान नहिं कोई ॥

सर्वोपर आनन्द मय, भक्ति मुक्तिकी खान ॥
ताते सब तज कीजिये, हे नरेश भूदान ॥

इति एकोनविंशतितम अध्याय ॥ १६ ॥

भूमिदान को सुनेउ विधाना । का फल होय किये गोदाना ॥
मोपै पितु दयालु नित रहिये । धेनुदान की महिमा कहिये ॥
अति पवित्र सबते गोदाना । भिन्न भिन्न कर वेद बखाना ॥
विधि सों गऊदान जो करहीं । कुल समेत भवसागर तरहीं ॥
गऊ दूध है सुधा समाना । देय सु पावत अमिरत पाना ॥
बच्छा सहित जु कपिलागाई । कनक शृङ्ग पाटम्बर छाई ॥
अर्द्धप्रसूता गउ निरमेई । मानो सकल भूमि सो देई ॥
तरुणी सूधी नम्र दुधारा । बच्छा सहित सुकृत व्यवहारा ॥
दीज तहां सुखी जहँ होई । उत्तम द्विज कुलीन हो जोई ॥
अशुचि अधर्म मूर्ख अकुलीना । दुखी कुचाली कपटी दीना ॥

लोभी लम्पट लालची, कपटी अरु अज्ञान ।
ऐसे द्विज को भूल कै, कभी न दे गोदान ॥

विधि सों नृप कीजै गोदाना । पावो विष्णुलोक सुख नाना ॥
२ गुण पुत्र मित्र अधिकाई । विष्णुलोक लौं होय बड़ाई ॥
सुनहु पुरातन कथा । शापो पुत्र ऋषीश्वर यथा ॥
तप करै घनेरो । बेटा नाशकेतु ता केरो ॥

सेवत बहुत धर्म्म मन धरही । निशिदिन टहल पिताकी करही॥
कहेउ ऋषीश्वर वचन सुभावा । कुश फल फूल समिध ले आवा॥
तबलौं उद्दालक उठि गयऊ । पुत्रहि कुछ विलम्ब बन भयऊ॥
नासकेतु खाली फिर आयो । कुश फल फूल समिध नहिं लायो॥
रीतो देख भयेउ मन दापा । तबहिं पुत्रको दीनो शापा॥
ताते उपजो क्षोभ अकाजू । निश्चय हमहि देख तू आजू॥

शाप देत ऋषिराजके, आय गये यमदूत ।
पकर लै चले ताहि जब, तब बोलो ऋषिपूत॥

मैं नहिं जैहौं सङ्ग तुम्हारे । दुखी होयँगे पिता हमारे॥
सुनकर नासकेतुकी बानी । बोले उद्दालक मुनि ज्ञानी॥
तात तात कर रोये सोई । मैं जो कियो करै नहिं कोई॥
हे यमेश मेरो यह शापू । यम दिखाय लौटावहु आपू॥
जब मुनि शोक बहुत विध कियऊ । भोर होतही पुनि सो जियऊ
उठिके पितुके पावन लागो । मानो निशि सोवतते जागो॥
नासकेतु बोले करजोरी । सुनहु ध्यान धर विनती मोरी॥
सुनिये पिता स्वर्गकी बाता । मोहिं देख यम विहँसो गाता॥
जो जो मैं देखो सो सुनहू । भिन्न भिन्न सबके गुण गुनहू॥
जहां तहां विचरहिं सुर देवा । निशि दिन करहिं विष्णु की सेवा

कहीं तपहि आनन्द से, ऋषी मुनी अरु साध ।
कहीं लगावें प्रेम से, योगी योग समाध॥

बहुतिक तपैं गङ्गके तीरा। बहुत तपैं गिरि खोह गँभीरा॥
कहो प्रथम अपनी कुशलाता। कहिये बहुरि स्वर्गकी बाता॥
धर्म्मराय यह वचन सुनाये। तुम ऋषिराज भले यहँ आये॥
स्वर्ग देख फिर जाओ आपू। ऋषिको वृथा जाय नहिं श्रापू॥
हमसों कछुक मांग वर लेहू। जाय पिताको उत्तर देहू॥
हे प्रभु मेरे पाप नशाओ। धेनु दान फल मोहिं सुनाओ॥
गऊ दानको फल है जेतो। हौं सो देखन चाहौं तेतो॥
तब मोहि लियो बिमान चढ़ाई। दिव्य लोक मैं देखेउँजाई॥
दिव्य स्वरूप अप्सरा जहां। मधु अरु चीर सुधा जल तहां॥
बहु दधिकी तहँ नदी बहाई। मिश्रीके पहाड़ तेहि ठांई॥

जहां तहां सुन्दर भवन, स्वर्ण कलश रहे राज।
ध्वजा पताका मनहरण, द्वार द्वार रहीं साज॥

जिन दीना गोरसको दाना। तिनहिं परम सुख सुन्दर नाना
दान करै जो सहित विधाना। सर्बोपरि उत्तम गोदाना॥
जितने रोम गायके आहीं। इतने दिवस रहै सुख माहीं॥
वैतरणी की तारनहारी। गोसम और कौन हितकारी॥
जीते जो निज दूध पियावै। अन्त समय सुरपुर पहुँचावै॥
। धर्म्म होय अधिकाई। जो कोउ देय प्रीतिसों गाई॥
महातम कहेउ बखानी। सुनतेहि मिलै मुक्ति मन मानी
...नाकि ऐसि बड़ाई। प्रीति सहित जो अर्पै गाई॥

ं इकोत्तर स्वर्ग बसाई । आवागमन रहित होजाई ॥
व्य लोक फल पावै सोई । दान करै गायनको जोई ॥
महिमा सब गोदान की, वरणी सहज उपाय ।
भक्ति मुक्ति दायक सदा, सन्तत करै सहाय ॥

इति विंश अध्याय ॥ २० ॥

न महात्मय कहो अब ताता । उपजी श्रद्धा मेरे गाता ॥
पता विचार कहो अनुमाना । दानन मध्य बड़ो को दाना ॥
हिली कथा याद मोहिं आई । ऋषि नारद जो मोहि सुनाई ॥
हत शास्त्र सब वेद पुराना । सबते बड़ो अन्नको दाना ॥
न्नहि धर्म्म कर्म्म उपजावै । अन्नहि बुद्धि बल ज्ञान बढ़ावै ॥
न्न देहमें राखत प्राना । अन्नदान सम और न दाना ॥
न्न प्राण एकहि कर जाना । अन्न दियो तिन दीने प्राना ॥
न्न दानते शुद्ध शरीरा । अन्नदान धारै मन धीरा ॥
न्न दानते आवै ज्ञाना । अन्न दानते लागै ध्याना ॥
न्नदान सम दान न औरा । जिमि केशव देवन शिरमौरा ॥
अन्न दान आनन्दनिधि, अन्न प्राण आधार ।
अन्नहि को सब जगतमें, छाय रहेउ व्यौहार ॥
द्धा सहित अन्न जो कोई । देय प्रीति सों अति फल होई ॥
ाति परीक्षा कछु नहिं कीजै । क्षुधावन्त को भोजन दीजै ॥

भोजन समय जो आवै कोई। भूखो अतिथि आनिये सोई।
जो जन भोजन ताहि जिमावै। जग यज्ञ अन्त परमसुख पा
दधि घृत अन्न सहित मिष्टाना। श्रद्धा सहित करै जो दान
मिलै ताहि सुरपुर को वासा। पूरण होय सकल मन आस
कनकदान मोती मणि अङ्गा। और अनेक द्रव्य वहु सङ्गा।
सब दाननको जानो भेवा। सबसे बड़ो दान यह देवा॥
अन्नदानकी अकथ कहानी। कथा पुरातन कहौं बखानी
वनमहिं वांछु तपहि आचरही। शिष्यसुभट सेवा नित क

करत करत तप वांछुको, भई अधिक कृश देह।
सुभट चरण पूजत रहत, गुरुसों परम सनेह॥

कही शिष्य गुरुसों यह बाता। जीव क्षुधाते अति अकुल
मेरो वचन सत्य तुम मानो। क्षुधा दुःख प्रभु सकल ब
खड्ग त्रिशूल और सब धारा। इन घायनते क्षुधा अपारा॥
मुद्गर चक्र शरनके घाई। इनते क्षुधा अधिक अकुलाई॥
तोमर शक्ती गदा कृपाना। इनते कठिन क्षुधाके बाना॥
अतिक्रम होय क्षुधाके सोगा। मानो अनल यसे सब रोग
लागे क्षुधा सबै गण खारा। सोहै नही रूप शृङ्गारा॥
लागे क्षुधा बुद्धि नहिं रहई। धीरज ज्ञान ध्यान सब दहई
जो नहिं शीघ्रहि मिलै अहारा। भूलै सबही दश प्रचारा
तुमजो क्षुधा वृत्तान्त बखाना। सत्य सत्य स्वामी मैं जा

होत क्षुधा वाधा जबहि, विसर जात सब ज्ञान।
और कष्ट नहिं जगतमें, दूजो क्षुधा समान॥
बारोग जब तनु अकुलाई। दीजै औषधि अन्न मँगाई॥
न क्षुधा महिमा जो गाई। सबते अन्नदान अधिकाई॥
ड़ो अन्नते और न दाना। देव मनुज सबहीको प्राना॥
हुत बात का कहौं बनाई। आतुर प्राण अन्न बिन जाई॥
अश्वमेध यज्ञादिक जेते। अन्नदानसों लहिये तेते॥
अन्नदानसों पावै मोषा। मानस पितृदेव सन्तोषा॥
अन्नदान दायक कल्याना। सब धर्मनम धर्म्मप्रधाना॥
और दानको पलटो होई। याते उऋण होत नहिं कोई॥
ाते बड़ो अन्नको दाना। कहत शास्त्र सब वेद पुराना॥
एक इक कथा याद मोहि आई। चित दे सुनहु युधिष्ठिरराई॥
आंखो देखी कहतहौं, गुप्त बात कोउ नाहि।
अति अद्भुत लीला भई, पुरी द्वारकामाहि॥
क समय यदुपति सुखदानी। भये प्रीतिवश सुरति भुलानी॥
द्विजके तन्दुल लिये चबाई। पीछे अन्नदान सुधि आई॥
क इक मुठी दयो इक लोका। तबहु न गयो चित्तको शोका
पसे दूनों ताहि बनायो। तबहु रहेउ मनमें पछितायो॥
रि तौ अवगति अखिल अरूपा। कैसे भये प्रीति वश भूपा
ो मोहि पिता कहो समुझाई। जाते मम सन्देह नशाई
ित सबते पवित्र तुम कहेऊ। सो चिन्ता मेरे मन रहेऊ

सो समुझाय कहो तिल दाना। किहि विधि करे होय कल्यान॥
तिलको दान भलो है यथा। सुन इक नृपति पुरातन कथा॥
सुनत श्रवण उपजहि अह्लादा। धर्मराज द्विजवर सम्वादा॥

सो सब वर्णन करतहूं, सुनहु पुत्र धर ध्यान।
त्रिभुवनमें दूजो नहीं, तिलकेदान समान॥

अन्तरवेद गांव इक रहेऊ। तहां सुविप्र गेह कर लहेऊ।
एकहि रीति भांति गुण जहां। एकहि नाम विप्र द्वय तहां॥
अगस्तिकर्मा तिनकोनामा। गोत्र अगस्ति वेदविश्रामा॥
ताको यमकिङ्कर जु पठाये। वा धोखे वाको ले आये॥
वाके धोखे वह जब आयो। धर्मराय यह वचन सुनायो॥
विप्र आप मोहिं अधिक पियारे। मेटो यह सन्देह हमारे॥
जाके दिये बढ़ै अति धर्मा। मोसों देव कहो सो भर्मा॥
सुख कामना कवन बिधि होई। कवन पुण्य पावै गति सोई॥
जो उत्तम इतन सों डरहीं। संयम नियम व्रतहु सो करहीं॥
तिल पवित्र जानो अतिधर्मा। तिलकर होम यज्ञ सब कर्मा॥

तिलहै परम पवित्र अति, देय जो तिलको दान।
यमको भय आवै नहीं, होय परम कल्यान॥

माघमास के पहिले पच्छा। गोबरमें मल कीजै वच्छा॥
चारकोण विधि सों विस्तरही। अष्टकमलदल तापर धरही॥
.. उढ़ाय पत्र विधि कीजै। तनक तहां सोना धर दीजै॥
.. मोती फल गन्ध सुवासा। करिके प्रीति धरै दधि

लह पल अन्न भर धरही। व्रतकर दान तिलनको करही॥
दिन तिलहि करै आहारा। सुमिरै वासुदेव करतारा॥
धा प्रीति मान मन लीजे। जो तिलपद्म विप्रको दीजे॥
य जो विष्णु भक्तको जोई। जो चाहे फल पावै सोई॥
वै अर्थ धर्म अरु मोषा। मिटै ब्रह्महत्या द्विजदोषा॥
ो तिल गुड़ घृत द्विजन जिमावै। निश्चय परमधाम सो पावै

पितृ देव द्विज पाय तिल, मनमें होत प्रसन्न।
करत प्रशंसा रात दिन, तिल समान नहिं अन्न॥

छाया छत्र छांह सुख ठौरा। वस्त्रदान पाटम्बर औरा॥
दधि घृत सहित अन्न सुख हेता। कूप बावड़ी ताल समता॥
स्रक चन्दन तँबोल फलदाना। मिष्टवचन सादर सन्माना॥
राजा सकल धर्म आचरहू। धीरज ज्ञान हृदयमें धरहू॥
सकल ज्ञान दाता तिलदाना। तिलमहात्म्य मुनिवरन बखाना
तिलसमान कोइ दान न औरा। तिलको दान सकल शिरमौरा
यम संतुष्ट होत तिलपाई। सब नरकन में करत सहाई॥
तिलको दान देत जो कोई। यमपुर ताहि कष्ट नहिं होई॥
तिलकी महिमा तुम्हैं सुनाई। धीर धरहु चितमें नृपराई॥
अन्नदान सर्वोपरि बरनो। ताते अन्नदान नित करनो॥

इति एकविंश अध्याय॥ २१॥

मोसों पिता कहो समुझाई। सत्सङ्गति में कवन बड़ाई।
सत्सङ्गति कवने फल होई। मोहिं समुझाय कहो पितु सोई॥
सुनहु एक उत्तम इतिहासा। जाते होय स्वर्गको वासा।
धीवर मच्छ सहित प्रतिवादू। च्यवन सङ्ग उद्धार निषादू॥
मुनिको मार्ग जान नहिं परही। गङ्गामध्य सुतप नित करही।
कर निषाद वृत्ति व्यौहारा। गङ्गामें डारो तिन जारा॥
जब हो च्यवन जारमें परेऊ। देख निषाद अधिक मन डरेऊ।
मछुन महामुनि देखेउ जबहीं। सब निषाद तहँ आये तबहीं॥
सब मछुवन मिल विनती ठानी। क्षमहु हमार दोष मुनि ज्ञानी।
हमरो तो यह उद्यम पानी। तुम क्यों फँसे जालमें आनी॥
तुमहिं देख विह्वल तनु वानी। अब हम कहा करहिं मुनि ज्ञानी।
होहु न अति भय भीत तुम, धीर धरहु मनमाहिं।
हमहुँ सदा जलमें रहैं, तुमहिं तनक डर नाहिं॥
घबरायो मत धीरज धारो। सिद्ध करूं मैं काम तुम्हारो॥
राजा नहुषहि सार जनाऊं। तुमको अपनो मूल्य दिवाऊं।
समाचार जब नहुष जनाये। सुनतहि गङ्ग निकट सो आये।
नमस्कार कर बोले गाथा। आज्ञा कहा देहु मुनिनाथा॥
मेरो मूल्य निषादहि देऊ। इनको जीवन उद्यम एहू॥
सांचो धर्म विचारो गाता। राजा समझ हमारो बाता॥
करोरि और सब राजू। मूल्य तुम्हार देहु मैं आजू॥
मिथ्या बोल न बोलो। दे अब समझ हमारो मोलो।

ा नहीं मोलको मर्म। ऋषि सों कहो रहै ज्यों धर्म॥
ा भय सङ्कित भो जहां। गविजातु ऋषि आये तहां॥

कोटि भानु सम तेज जेहि, दश दिशि होत प्रकाश।
इत उत चितवत धरणि को, कबहुँ तकत आकाश॥

ा निर्मोलक मुनि जानहु। इतनो मूल्य और नहि मानहु॥
। धर्म न और अनेरो। है निज मूल्य गाय मुनि केरो॥
र मूल्य कहो गविजाता। राजा समझ आपने गाता॥
ल रूप गायकी रेनू। सब ते अति पवित्र है धेनू॥
ब समान नहीं कोइ औरा। जा गोबर पवित्र सब ठौरा॥
हूँ काल गो सुमिरन करहीं। ताको पाप दोष सब हरहीं॥
। गो देय गऊको ग्रासा। ताको विष्णुलोक निज वासा॥
। देवनको स्वरूप जो गाई। बेद धर्म ता चारो पाई॥
ई आपदा कुमति हमारी। तुम्हरे दर्शन करत सिधारी॥
म दुःखकाटन उपकारी। कुटुँब सहित हम शरण तुम्हारी॥
ऋ्गतिको महिमा गावै। मच्छन सहित सर्व सुख पावै॥
र पुराणन महिमा गाई। तीरथ रूप साधु हैं भाई॥
ृपहि संबोधन जस भयऊ। धर्म सहित अपने घर गयऊ॥
यह कथा सुनै चितलाई। ताको सकल पाप मिट जाई॥

इति द्वाविंश अध्याय॥ २२॥

मोसों पिता कहो समुझाई । सत्सङ्गति में कवन बड़ाई ।
सत्सङ्गति कवने फल होई । मोहिं समुझाय कहो पितु सोई
सुनहु एक उत्तम इतिहासा । जाते होय स्वर्गको वासा ॥
धीवर मच्छ सहित प्रतिवादू । च्यवन सङ्ग उद्धार निषादू ।
मुनिको मार्ग जान नहिं परही । गङ्गामध्य सुतप नित करही
कर निषाद वृत्ति व्यौहारा । गङ्गामें डारो तिन जारा ॥
जब ही च्यवन जारमें परेऊ । देख निषाद अधिक मन डरे
मछुन महामुनि देखेउ जबहीं । सब निषाद तहँ आये तबही
सब मछुवन मिल विनती ठानी । क्षमहु हमार दोष मुनि ज्ञानी
हमरो तो यह उद्यम पानी । तुम क्यों फँसे जालमें आनी ॥
तुमहिं देख विह्वल तनु बानी । अब हम कहा करहिं मुनि ज्ञानी

होहु न अति भय भीत तुम, धीर धरहु मनमाहिं ।
हमहुँ सदा जलमें रहैं, तुमहिं तनक डर नाहिं ॥

घबरायो मत धीरज धारो । सिद्ध करूं मैं काम तुम्हारो ॥
राजा नहुषहि सार जनाऊं । तुमको अपनो मूल्य दिवाऊं
समाचार जब नहुष जनाये । सुनतहि गङ्गनिकट सो आये ।
नमस्कार कर बोले गाथा । आज्ञा कहा देहु मुनिनाथा ॥
मेरो मूल्य निषादहि देऊ । इनको जीवन उद्यम एहू ॥
सांचो धर्म विचारो गाता । राजा समझ हमारी बाता ॥
लाख करोरि और सब राजू । मूल्य तुम्हार देहु मैं आजू ॥
राजा मिथ्या बोल न बोलो । दे अब समझ हमारो मोलो ॥

नो नहीं मोलको मर्म । ऋषि सों कहो रहै ज्यों धर्म ॥
ना भय सङ्कित भो जहां । गर्विजातु ऋषि आये तहां ॥

कोटि भानु सम तेज जेहि, दश दिशि होत प्रकाश ।
इत उत चितवत धरणि को, कबहुँ तकत आकाश ॥

ना निर्मोलक मुनि जानहु । इतनो मूल्य और नहिं मानहु ॥
धर्म न और अनेरो । है निज मूल्य गाय मुनि केरो ॥
र मूल्य कहो गर्विजाता । राजा समझ आपने गाता ॥
रूप गायकी रेनू । सब ते अति पवित्र है धेनू ॥
समान नहीं कोई औरा । जा गोबर पवित्र सब ठौरा ॥
हूँ काल गो सुमिरन करहीं । ताको पाप दोष सब हरहीं ॥
जो देय गऊको ग्रासा । ताको विष्णुलोक निज वासा ॥
देवनको स्वरूप जो गाई । बेद धर्म ता चारो पाई ॥
आपदा कुमति हमारी । तुम्हरे दर्शन करत सिधारी ॥
दुःखकाटन उपकारी । कुटुँब सहित हम शरण तुम्हारी ॥
तिको महिमा गावै । मच्छन सहित सर्व सुख पावै ॥
पुराणन महिमा गाई । तीरथ रूप साधु हैं भाई ॥
हि संबोधन जस भयऊ । धर्म सहित अपने घर गयऊ ॥
यह कथा सुनै चितलाई । ताको सकल पाप मिट जाई ॥

इति द्वाविंश अध्याय ॥ २२ ॥

केहि विधि सब तीरथ फल पावे । घरमें रहै धम क्यों आवै ॥
तुम मुनि सब तीरथ फल लहो । मनसा तीरथ मोसों कहो
राजा सुनो पुरातन कथा । लोमश कहो जनक सों यथा ॥
लोमश सब तीरथ जब न्हाये । विचरत जनकराय गृह आये
पूजा करो बहुत मनुहारी । बोले मीठे वचन विचारी ॥
जब यह जनक चलाई बाता । तुम कछु मोंहि पूछो अब त
तुम स्वामी जानत सब भेवा । मनसा तीरथ कहिये देवा ॥
सुनै चहौं प्रभु तीरथ धर्मा । मोसों कहो महा मुनि मर्मा ॥
तीरथ ज्ञान चमा मन धरही । निज तीरथ इन्द्रिय वशकर
ब्रह्मचर्य कोमल मनमाया । तीरथ सब भूतोंमें दाया ॥

तीरथ माता पिता गुरु, तीरथ जेठो भ्रात ।
तीरथ पितुके मित्र जे, उत्तम तीरथ जात ॥

तीरथ दोष रहित वैरागू । निज तीरथ हिंसाको त्यागू ॥
बड तीरथ इन्द्रिन सों युद्ध । निश्चय तीर्थ ज्ञान मन शुद्ध
जल अस्नान शुद्ध नहिं होई । जबलौं मन वश कर न को
क्रूर नास्तिक चञ्चल सोई । तीरथ गये शुद्ध नहिं होई ।
जबलग मन प्रसन्न नहिं भयऊ । तीरथ माहि गयउ
जलके जीव जलहि में रहई । तं तीरथ को फल नहिं ल
तातें निर्विकार मन रहई । सोई सब तीरथ फल लहई ।
जो नर सत्य ध्यान व्रतधारी । सो सब तीरथको अधिक

ज्यों मद वासन शुद्ध न होई । सहस वार किन डारो धोई ॥
तथा सकल तीरथ नृपराई । काम द्वन्द्व पाखण्ड न जाई ॥

गङ्गा यमुना नर्मदा, काशी औ केदार ।
चित्त शुद्ध तो शुद्ध सब, जगन्नाथ हरिद्वार ॥

जाय जो आदि गया कुरुखेतू । पावै सब तीर्थन कर हेतू ॥
इन्द्रिय वश निर्मल मन जहां । सब तीरथ घटहीमें तहां ॥
तीरथ ज्ञान ध्यान जल होई । राग द्वेष मल डारो धोई ॥
ज्ञान क्षमा तीरथ मन लावो । तब यह जीव परम पद पावै ॥
जहां साधु संगति को वासा । जहां परम भागवत निवासा ॥
जह हरिकथा नाम अविगाही । तेहि आश्रम सब तीरथ आही ॥
वासुदेव नारायण जेते । तीरथ रूप जानिये तेते ॥
जहां विष्णु श्रीवैष्णव तहां । तहां विष्णु सब तीरथ जहां ॥
जहँ हरिभक्त तहां भगवन्ता । जिनको आदि मध्य नहिं अन्ता ॥
ऊँच नीच हरि शरण जु आवै । सोई धन्य जु जग यश पावै ॥

जे नर हरि हरि करत हैं, सब छल छिद्र विहाय ।
भक्ति मुक्ति भागी तेई, पाप कलाप नशाय ॥

हरि की शरण शुद्ध सब होई । तीरथ हरि सम और न कोई ॥
श्वपच नीच हरि शरणजु आवै । होकर शुद्ध परमगति पावै ॥
ताको जाति जु उघटै कोई । जाय नरक निश्चय नर सोई ॥
जाति पांति बूझै नहिं कोई । हरि को भजै सु हरिका होई ॥
सन्तोषी वैष्णव जो होई । विष्णु रूपकर पूजै सोई ॥

तीरथ और भूमिपर जेते। धर्म्म सहित सो कीज तेते॥
जबलौं शुद्ध चित्त नहिं होई। तीरथवर तस फल नहिं
निर्म्मल मन प्रसन्न नहिं जबलौं। कोई कार्य शुद्ध नहिं
सुन यह कथा शुद्ध मन होई। ज्ञान ध्यान पावो सब के
मनसा तीरथ कहेउ बखानी। सुनहु नरेश महा विज्ञानी॥

इति त्रयोविंश अध्याय॥ २३॥

अब यह कथा बखानहु ताता। ब्रह्म दोष क्यों लागै गाता॥
चतुर पुरुष जानै सब कोई। बात न ब्रह्म दोष क्यों होई॥
यह विचार मेरे मन रहेऊ। तब मैं व्यासदेव सों कहेऊ॥
ब्रह्म दोष मुनि वर्णो यथा। तुम सों कहौं सकल सो कथा॥
द्विजहि दान दे फिर जो लूटै। ब्रह्म दोष ते ते नहिं छूटै॥
जो नर द्रव्य विप्रको हरहीं। अरु बिन काज साधुसों लरहीं॥
मामे साधु सन्त नहिं कोई। ताहि ब्रह्महत्या फल होई॥
विप्र साधुकी करै बुराई। पानी पियत बिडारै गाई॥
स्वारथ मात पिता परिहरही। हत्या ब्रह्म दोष सो करही॥
अन्ध पङ्गु रोगी अन्याई। इनको सरवस लेय छिनाई॥
दुखमें दुख उपजावै कोई। हत्या ब्रह्म दोष तेहि होई॥
विधा ब्रह्म जानौ यह भेवा। ब्रह्मा विष्णु रुद्र त्रय देवा॥
करै अवज्ञा जोई। ब्रह्महत्या निश्चय तेहि होई॥

सो विप्र जासु घर आवै । दुष्टवचन सो ताहि सुनावै ॥
सु निरादर करै जु कोई । हत्या ब्रह्म दोष तेहि होई ॥
य क्रूर गुरुसों अभिमाना । वनके जीव वृक्ष सम्भाना ॥
दोष ता नरको होई । ऐसे काम करै जो कोई ॥
तिक्रोधी हिंसा मन धरही । जानत बुरो परायो करही ॥
रि गुण कथा न भावै जाही । हत्या ब्रह्मदोष हो ताही ॥
ाश लगाय विप्र घर आवै । विमुख जाय कैसो फल पावै ॥
न कहै अरु दियो न जाई । ताको कहो कहा फल पाई ॥

भलो प्रश्न तने कियो, अहो युधिष्ठिरराय ।
भिन्न भिन्न मैं सब कथा, तोहिं कहों समुझाय ॥

कहिकै देय नाहिं जो ताही । ताको सुकृत सफल नहिं आही ॥
भूखो विप्र क्रोध जब करही । ताके दोष आप जर मरही ॥
जैसे अग्नि घास जरजाई । ब्रह्मदोष त्यों सुकृत नशाई ॥
कथा पुरातन वर्णों ताता । सुन शृगाल वानरकी बाता ॥
पहिले जन्म विप्र हो कोई । अब पशु भयउ पापते सोई ॥
इक शृगाल इक वानर जाती । एकहि बन तिनकी उत्पाती ॥
वनमें मृतक परो इक जहां । खान गयो गीदड़ तेहि तहां ॥
वानर बैठो वृक्ष सँघाता । लागेउ कहन जन्मकी बाता ॥
पहिले जन्म पाप तुम करेऊ । जबहि शृगाल रूप तुम धरेऊ ॥
मृतक भक्ष बुधि भई विहाला । कौन पाप तुम भये शृगाला ॥
पहिले देन विप्रको कहेऊ । बहुरो भवन आय दुरि रहेऊ ॥

तब मैं कछु विचार नहिं कीन्हो जब मोहिं विधि शृगाल तन्यो।
तेरा प्रथम पुण्य सब गयऊ। कौन पाप तू वानर भयऊ॥
यह सन्देह अधिक मोहिं ताता। वानर कहो आपनी बाता।
धर्म करत चञ्चल मन करेऊ। गुरु सों कपट क्रोध मन धरेऊ।
फल फूलनकी चोरी कयऊ। ताते मोहिं वानर तनु दयऊ।
ऐसे वचन परस्पर भयऊ। अपने अपने मारग गयऊ॥
ताते मन अभिमान न कीजै। अरु काहूको अंश न लीजै।
आपन सुकृत धर्म मन रहई। हरिहर सुमिर परमपद लहई।
जो यह कथा सुनै हर्षाई। ताहि नाहिं यम देय दिखाई॥

इति चतुर्विंश अध्याय॥ २४॥

बिन आमिष नाहिंन सन्तोषा। वेद शाखिदे मेटहिं दोषा
जिनको आमिष सदा अहारा। तिनको पिता कौन व्यौहारा॥
व्यास समान कौन सामर्था। जानै गुप्त वेदको अर्था॥
वेद सबै मिल मत जो कहई। मूरख समझ जान नहिं गहई।
वेद न आमिष खान बतावैं। झूंठे झूंठी बात बनावैं॥
हिंसा आमिष चितसे तजिये। नारायण नारायण भजिये।
पढ गुण मूरख मर्म न जाने। इन्द्रिनको स्वारथ पहिचाने।
शब्द भिन्न प्रति काई जैसे। आमिष अर्थ सुभृतिमें ऐसे॥
चलत कुपथ विषयी न विचारा। समझ न सको अर्थ
ऐसे ताहि खात नर कोई। निरखत जासु महाघिन होई॥

रक्त मूल मल वसाको, पूर्णपात्र सो जान ।
धिग धिग धिग उनको सदा, खात जे नर अज्ञान ॥

नको तनु आमिषसों पोषो । तिनको धर्म्मकर्म्म सब सोषो ॥
ह्वा अग्र स्वाद सब आही । विष्ठा होत वार नहिं ताही ॥
नकट वधिकको सुधि नहिं लहैं । मीन दौर वनशौको गहैं ॥
हत स्वाद पीछे अकुलाई । जब यम पकर पछारैं आई ॥
ह विचार मन डर उपजाई । आयु बढ़े नहिं आमिष खाई ॥
ामिष खात सबै गुण जाहीं । आमिषसम निषिद्ध कोउ नाहीं
जहि कुल मास खाय नहिं कोई । अति बलवान जानिये सोई ॥
ो अहार आमिषको करहीं । सो बहु रोग व्याधि पचि मरहीं ॥
ाको मांस खाय है कोई । सो ताको फिर खैहै सोई ॥
आमिष खेत माहिं नहिं होई । घास समान न उपजै सोई ॥

मांस होत हिंसा किये, हिंसाको बड़ पाप ।
पाप वंशको क्षय करत, सहत नरकसन्ताप ॥

ाण घातकर उपजै मांसा । खाये होत धर्मको नासा ॥
ांटा चुभत पीर तनु मानै । ऐसे दुष्ट औरको जानै ॥
ाहू डर उपजावै कोई । ताको डर सबही ठां होई ॥
जतने रोग पशुहिं संहरहीं । उतनी वार नरक नर परहीं ॥
ाथ दोप ले परिये कूपा । यह आगे हिंसादि स्वरूपा ॥
ार एक दूसरो कहई । एक विश्वासघातपर रहई ॥

अरु एक हाथ सँवारें धरई । अरु जो आमिष बिक्री करई ।
छठो रसोई रांधे आनी । अरु सातवों पसावै पानी ॥
बैठ आठवों रुचिसों खाई । यमपुर सँग आठसो जाई ॥
आठ प्रकार जु मारै कोई । आठोंको एकहि फल होई ॥

हिंसासम संसारमैं, दूजो पाप न और ।
अन्धा गूंगा होय सो, जन्म लेय जेहि ठौर ॥

जो ले मोल हते घर आनो । ताहि उधार देय जो जानो ॥
ताहि उधार दिये अति दोषा । धन की हानि न पावै मोषा
जिनके आमिष कुल चल आयो । धूरि खाय कर जन्म गमाय
मांसस्वादसों खायँ जु जितने । श्वान शृगाल बने ते तितने
सुखसो आमिष भषै जु कोई । वृक्षरूप तामस तनु होई ॥
वहुरो होय अधमगति सही । मोसों व्यासदेव सब कही ॥
हिंसा पाप दोषते डरही । मद अरु मांस दोउ परिहरही ॥
निरखत ज्ञान मोरे मन रहेऊ । यहै विचार बृहस्पति कहेऊ ॥
जे जन छांडें मद अरु मांस । तिनहि मिलै वैकुण्ठनिवासू ॥
स्वर्ग मनोरथ पावै सही । राजा सुन वशिष्ठ यह कही ॥

कैसी पीडा होति है, जब तनु लागत फांस ।
फिर नर कैसे खात हैं, मार पशुन को मांस ॥

साधु सभा ऋषि स्मृति सही । येही कथा नीति मिल कही ॥
येही धर्म्म सनातन ताता । सत कर मानहु मेरो बाता ॥
[illegible] दया सब धर्म्म समाना । सुवरण भूमि गायको दाना ॥

दया जीवपर सबसे सारा। पाराशरको यही विचारा॥
मुख्य जगतमें भोजन पाना। तजहु परन्तु मांसको खाना॥
सबसों हेतु करै जो कोई। हरिके मन भावै नर सोई॥
आमिष को त्यागै नर जबहीं। अश्वमेध फल पाव तबहीं॥
करै सदैव सनातन रीती। धर्म्महि कथा सुनै कर प्रीती॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै। धर्म्म सहित चारो फल पावै॥
आमिषको सम्पूर्ण विधाना। तुमसों वेदनुसार बखाना॥

इति पञ्चविंश अध्याय॥ २५॥

सुनवेकी श्रद्धा कर ताता। जनमेजय बूझी यह बाता॥
कैसे भीम सर्पवश रहेउ। कैसे वचन युधिष्ठिर कहेउ॥
मृगया भीम गयो हो जहां। देखेउ सर्प सोवतो तहां॥
देखत भीम अचंभे रहेऊ। अहि साहसकर ताको गहेऊ॥
बलकर भीम रहेउ पचिहारी। छूटे नही सर्प अतिभारी॥
ताको पौरुष अन्त न लहेऊ। तबहिं भीम इस्थिर ह्वै रहेऊ॥
राजा बैठे आसन जहां। असगुन देखन लागे तहां॥
तबतौ अति विस्मय मन भयऊ। भीम अकेलो बनमें गयऊ॥
तरुण बैस अति दारुण क्रोधा। ऊंच नीचको ताहि न बोधा॥
भीम कहूँ निश्चय भय खाई। जाते अशगुन देत दिखाई॥

कहा करौं कासे कहौं, कासों बूझूं भेद।
मन अधीर उर पीर अति, होत चित्तमें खेद॥

यह कह आप चले अकुलाई । पीछ सङ्ग पुरोहित जाई ॥
अर्ज्जुन नकुल और सहदेवा । देखत चिह्न विचारत भेवा ॥
टूटे टाटे वृक्ष जु पाये । जाना भीम हते ह्वै धाये ॥
ऐसे चलत खोज तिन लयऊ । सबके मनमें धीरज गयऊ ॥
तीनों भ्रातन कहेउ विचारा । भीम कुशल है सकल प्रकारा
भीम सर्प पकरे है जहां । ढूँढ़त ढूँढ़त पहुँचे तहां ॥
धौम्य पुरोहित सङ्ग जु गयऊ । अपने राजा आगे भयऊ ॥
पर्वतकी कन्दरा विकरारा । तामहिं देखो भीमकुमारा ॥
तुम पण्डित जानत सब बाता । सबते भीम बली अति ताता ॥
तुम क्यों भये सर्पवश ताता । मोसों कहौ सत्य सब बाता ।

तुम समान संसार में, और कौन बलवान ।
यहां आन कैसे फँसे, होकर बुद्धिनिधान ॥

दैत्य अपर बल गिनिये जितने । मोसों युद्ध जुरहिं नहिं तितने
सर्प दर्प मारेउ मम चाही । जानों नहीं कौन यह आही ॥
यह सुन अर्ज्जुन उठो रिसाई । वीर धनुष कर लीनेउ धाई ॥
लावहु वेग हमारे बाना । मारौं सर्प करौं खरियाना ॥
नकुल और सहदेव रिसाना । भयो क्रोध नहिं अङ्ग समाना ॥
सर्प हमारे भ्रातहि गहई । फिर भी वह जड जीवत रहई ॥
परे आपदा सहिये वीरा । कोप न कीजै अर्ज्जुन धीरा ॥
[illegible] भीम रहे पचिहारो । सो नहिं माने दाव तुम्हारो ॥

छांड़ो क्रोध धरो मन धीरा । यह कछु औरहि कारण वीरा ॥
तुम कत बन्धु देख अकुलाता । बूझन देहु सर्पसों बाता ॥

सर्प नही यह देव कोउ, राखो रूप छिपाय ।
भीमसेनसे बली को, दीनेउ मान घटाय ॥

कौन रूप का कियो उपाई । को तुम अहो कहो सत भाई ॥
क द्विजशाप मलिन तव गाता । कारण कौन गहेउ मम भ्राता ॥
हौ तुम्हार पुरुषा निज आही । अति प्रचण्ड जानत सबताही ॥
नहुष नाम राजा गम्भीरा । जोहै सकल धर्म गुण धीरा ॥
अति ऐश्वर्य राज मम भयऊ । तबहि अगस्त्य शापमोहिं दयऊ ॥
तुम राजा अपने व्योहारा । यद्यपि अतिप्रचण्ड संसारा ॥
तुमने कहा कियो अस पापा । जो प्रभु तुमहिं दयउ मुनि शापा
गौतम पाप इन्द्र दुरि गयऊ । इन्द्रलोक तब सूनो भयऊ ॥
चलेउ पलानि भेद यह जानो । हौं इन्द्रासन बैठेउ आनो ॥
इन्द्राणी सुर दुरि रहे जहां । कोप वचन हौं बोलेउ तहां ॥

जीतेउँ सब संसार हम, मिलेउ इन्द्रपद आज ।
रहेउ हमारे करनको, और कौन सो काज ॥

निन्नानवे यज्ञ कर लयऊ । अब हम त्रिभुवनपति प्रभु भयऊ ॥
पायो तीन लोकको साजा । इन्द्र समान भयो मम राजा ॥
शची हमार भेद जब पायो । गुरुसों मिल कछु मतो उपायो ॥
जब लौं काल न पहुँचे आई । तबलौं इन्द्र न देय दिखाई ॥
जबलौं गौतम शाप न देही । तबलग छल कर राखो एही ॥

तुम अवाह वाहन मँगवाओ। ता चढ़ नृप हमको ले जाओ।
अवाहवाहन है नहिं कोई। तेरे किये तुरन्तहि होई॥
यह सुन शची तहां छल कियो। मधुर वचन हमसों बोलियो।
होहु प्रसन्न वचन इक पाऊँ। तब मैं निकट तुम्हारे आऊँ॥
इन्द्र समान तुम्हैं जब मानू। लाओ एक अनूपम यानू॥
जाहि देख इक बारहो, मोह जाय संसार।
शीघ्र मँगावहु प्राणपति, मानहु वचन हमार॥
जब ऐसी पालकी मँगाओ। तापर कर गहि मोहिं चढ़ाओ॥
लेकर चलहि विप्र मुनि ज्ञानी। तब मैं बनूं तुम्हारी रानी॥
मैं मूरख यह भेद न जाना। नारिवचन अति प्रियकर माना॥
द्विजन सहित पालकी मँगाई। आप चढ़ो औ प्रिया चढ़ाई॥
विप्र अगस्त्य आदि मुनि जेते। ले पालकी चले सब तेते॥
क्रोधित हो बोले मुनि ज्ञानी। अजगर होहु नृपति अभिमानी।
जबहि अगस्त्य सर्प मोहिं कहेऊ। मुनिको शाप शीशधर लयऊ
उतर तुरन्त चरण मुनि गहेउ। दीन वचन मुनिवरसों कहेउ॥
ब्रह्म तेजको लखो न भेवा। छुटौं शापते कब मैं देवा॥
जब पग शिर धर विनती ठानी। तब कर कृपा कहेउ मुनि ज्ञानी
नगर हस्तिनापुर विषे, लेय धर्म्म अवतार।
ताहि युधिष्ठिर कहै सब, ज्ञानी परम उदार॥
सो राजा तव कुलमें होई। ताहि धर्म जानें सब कोई॥
नीति को जानन हारा। तेज पुञ्ज बलवान अपारा॥

तेरे वंश होयगो सोई। ताको यश वर्णै सब कोई॥
ताके वचन सुनत गति होई। ऐसा वचन कहै ऋषि सोई॥
ताते भीमसेन मैं गहेऊ। इस मिस आवैं मुनि जो कहेऊ॥
कहो वचन छूटै अहिदेहू। जो बूझों सो उत्तर देहू॥
सो सब बूझो जो जी चाहै। जो तुम्हरे मन चिन्ता आहै॥
बुद्धि समान कहो जो बाता। ताको उत्तर दैहौं ताता॥
तुमहिं देख उपजो अति नेहू। धर्म वचनको उत्तर देहू॥
तुम राजा जानो सब मर्मा। कहो कोइ उत्तम सो धर्मा॥

तात आपके सामने, कह न सकौ कछु सार।
पर कछु वर्णन करत हौं, अपनी मति अनुसार॥

सत्य शौच जप तप आचारौ। सम दम अरु धीरज मन धारौ॥
क्षमा दया कोमलता ज्ञाना। संयम सहित विचारो ध्याना॥
जानो परमेश्वरको मर्मा। सब धर्मनमें उत्तम धर्मा॥
को तप मोहिं सुनावो देवा। कहा सत्य समझावहु भेवा॥
दम्भ कहा सो कहिये ताता। कस जानिये शौचकी बाता॥
सत्य रु शौच परमतप अहहीं। दम्भ सदा मन वशकर गहहीं॥
कहा लाज कहिये नृपराई। का सन्तोष कहा समुझाई॥
कहा क्षमा कहिये यह बाता। कोमलता समझावहु ताता॥
लज्जा चितमें करत गिलानी। विषय त्याग सन्तोष जु जानी॥
दुख सुख सहै जु क्षमा पवित्रा। कोमलता कहिये समचित्रा॥

कहा ज्ञान कहिये नृपति, कहा वस्तु है शान्त।
दया धयान काको कहत, कहिये सकल वृत्तान्त॥
तत्त्व विचारै कहिये ज्ञाना। मनको प्रश्न शान्तकर माना॥
दया सोई सबको सुख दीजै। धयान विषय नृत रति मन कौ
सदा शत्रु वैरी निज कौना! को सब रोग व्याधिको भौना॥
कौन साधु कहिये नृपराई। यह सब मोहिं कहो समुझाई॥
वैरी सदा क्रोध यह जानौ। लोभ अनन्त व्याधिको खानौ॥
सबसों हेतु करै सो साधू। हिंसा मन निर्दयी अगाधू॥
जाकी संगत उपजै पापू। जाको नाम लेत सन्तापू॥
यह मोसों कहिये समुझाई। अक्षय नरक कौन विधिजाई॥
बोल विप्रघर करै निरासा। ताको सदा नरकमें वासा॥
नृप अधर्म मूढ़ मति रहई। झूँठ वचन सबहीसों कहई॥
वेदनकी निन्दा करै, हरै विप्र धन धाम।
डरै न हत्यासों कबहुँ, सरै न कोउ शुभ काम॥
उघटै धर्म परायो पापी। नित प्रति रहै शोक सन्तापी॥
ऐसे कर्म्म जु प्राणी करई। अक्षय नरक मध्य सो परई॥
झूँठी साखि लोभ तैं भरई। गुरुसों क्रोध कपट मन धरई॥
वेद पुराण प्रीति नहि करई। अक्षय नरक मध्य सो परई॥
अक्षत धरो पतिग्रह लेई। मांगे वुद्धि न औरहि देई॥
को भक्ति न करई। अक्षय नरक मध्य सो परई॥
पराये देखत रहई। निशिदिन दोष औरके कहई॥

र सुगुरुसों कपट सयाना । तिनहिं देख कीजै मनमाना ॥
ासो नीच गमन जो करई । तासों पितृ वैर मन धरई ॥
ीठी वस्तु अकेलो खाई । अक्षय नरकमध्य सो जाई ॥
र्म्म रूप नृप तेरी वाता । सुनत बहुत सुख मेरे गाता ॥
ाजा समझ वचन इक कहिये । देवलोक कौने विधि रहिये ॥
ाके अतिथि विमुख नहिं जाई । अरु हरिकथा सुनै चित लाई ॥
मित बोलै आगे ह्वै लेई । मीठो वचन बोल सुख देई ॥
ईश जान पूजै नर सोई । निश्चय देव लोक तेहि होई ॥
सोवत जागत यहै विचारा । होय सदा सन्तन उपकारा ॥
पर-उपकार-परायण रहई । देवलोक सो प्राणी लहई ॥
नारायण नारायण करई । भक्त साधु संगत मन धरई ॥
वेद धर्म्म को मारग गहई । नित आनन्द सो सुरपुर रहई ॥
कामिनि करै पुरुषकी सेवा । पतिको लखै कृष्ण समदेवा ॥

निशि दिन पतिके पदकमल, पूजै सहित सनेह ।
कोऊ रोक सकै नहीं, सुरपुर जाय सदेह ॥

रूपवन्त यौवन गुण सदा । अरु घर होय सकल सम्पदा ॥
परनारी माता सम जानै । द्रव्य परायो रज कर मानै ॥
जो ऐसो इन्द्रियजित रहई । कोमल वचन सबन सों कहई ॥
कछु अभिमान न मनमें लावै । सो प्राणी वैकुण्ठ सिधावै ॥
राजा सुनत तुम्हारी बाता । श्रद्धा प्रगट भई मम गाता ॥
श्रद्धासों कीजै सब बाता । कीजै सो श्रद्धा विख्याता ॥

अकुलीनो इन्द्रियजित होई । ताको हित सों पूजे कोई ॥
सकल धर्म्म निज उपजै जहां । तीरथ फल पावै सो तहां ॥
ज्ञान धर्म्म तप तेज बढ़ावै । जाते वेग परम पद पावै ॥
आगे इतने करे जु कर्मा । श्रद्धा विना सकल सब भर्मा ॥

योगासन धारण करै, बांधै वेद पुरान ।
क्षमा दया श्रद्धा विना, सब नटकला समान ॥

छूटो नहुष शापते जबहीं । भीमसेन छूट आये तबहीं ॥
भीमसेन राजा ढिग आये । परम प्रीति कर कंठ लगाये ॥
अमृत वचन सुने जब काना । देवरूप भये नहुष सुजाना ॥
साधु वचन सबको उपकारा । साधु समागम तारनहारा ॥
साधुन की महिमा अधिकाई । साधु वचन सब को सुखदाई ॥
धन्य सुदेश धन्य वे लोगा । धन्य धन्य सन्तन संयोगा ॥
तुम सम नृपति भयो नहिं होई । यश प्रसिद्ध जानै सब को
अब हौं धन्य धन्य महाराजू । जो मोपर प्रसन्न तुम आजू ॥
तुम पण्डित जानत सब बाता । कस मद भयेउ तुम्हारे गा
अबहूं मम संशय नहिं गयऊ । तुमको पिता गर्व क्यों भयऊ
यह सब भेद मोहि समझावो । मेरो सब सन्देह नशावो ॥

तुम ज्ञानी दानी परम, सन्तत शील सुभाव ।
को नहि जानत जगत मैं, तुम्हते पूर्ण प्रभाव ॥

सो प्रकृति होन गति सोई । जैसे जल शीतल अति होई ॥
तो प्रकृति देह सों अन्ता । रहेउ राजमें लिन महमन्ता ॥

ज्यों पानी विन चलै न नाऊ। त्यों राजाको गर्व सुभाऊ॥
मदिरा पिये उनर मद जाई। राज गर्व दिन दिन अधिकाई॥
कीजै जबहो राज गिराई। ताते स्वर्ग तिमिर फटजाई॥
लोभ अपार कामहू बढ़ई। तवते स्वग राज्य मद चढ़ई॥
मुनि अगस्त्य दीनेउ मोहिं डारी। तुमहू कीजो राज सँभारी॥
सदा द्विजनको पूजा करिये। सब दिन ब्रह्मतेजसों डरिये॥
जिन समुद्र चुल्लूभर पियो। तिनसों गर्व जाय नहिं कियो॥
द्विजसेवा कीजै चितलाई। यहै कृष्ण गीतामें गाई॥

प्रलय अग्निहू सों प्रबल, है साधुनको क्रोध।
जारि छार छिनमें करत, इनको कठिन विरोध॥

सहिये सदा साधुको क्रोधा। यह न कहै मैं हूँ अतियोधा॥
रहे न साधु क्रोध नर जोई। तासु सहाय करै नहिं कोई॥
साधु क्रोध है अति दुखदाई। ताते वचो यहै चतुराई॥
साधु सदा ईश्वरके प्यारे। सब दुख द्वन्द मिटावन हारे॥
यह कह नहुष स्वर्ग को गयऊ। राजाके मन आनँद भयऊ॥
मैं सब पिछली कथा बखानी। कही नहुषसों जो नृप ज्ञानी॥
जो यह कथा सुनै चित लाई। ताका सकल पाप जरि जाई॥
जनमेजय बूझी तैं जोई। भीम सर्पगति जैसी होई॥
सो इतिहास सकल मैं वरनो। द्विजसे द्रोह कबहु नहिं करनो॥
आदि जगतपति हैं द्विज देवा। ताते करहु द्विजनकी सेवा॥

इति षट्विंश अध्याय॥ २६॥

सत्यवचन कवने फल होई। मोको कथा सुनावहु सोई॥
बोले सत्य तजै नहिं धर्मा। अब मोहिं यहै सुनावहु धर्मा॥
तुमहिं सुनावहु बहुला कथा। बोलेहु सिंह धेनु सों यथा॥
मथुरा देश मध्य इक गाऊँ। चक्रावती नगर इक ठाऊ॥
सुफल वृक्ष शीतल जल औरा। मनवाञ्छित मनोहर ठौरा॥
अति रमणीक भूमि सुख देनी। जहां सिंह तहँ बहुला धेनी॥
गाय सिमिट चरन तहँ गई। बहुला सबते आगे भई॥
सुन्दर बन गहवर तहँ छाहां। बहुला धेनु गई पुनि ताहां॥
जब तिन जाय गहेउ निज कौरा। सिंह आय घेरो तेहिं ठौरा॥
आजु क्षुधाकर अति रिस मोही। बिन खाये नहिं छांड़ों तोही॥

भूख मोहिं लागी अधिक, मिलै न जबलों मांस।
तबलों हृदयेकी अगनि, लेन देत नहिं श्वास॥

बहुला रुदन मनहि मन कीना। मोहि दैव कुसमय दुख दीना॥
कहा करौं अब कछु न बसाई। मोबिन वत्स जिये कह खाई॥
मृत्यु हमारी पहुँची आई। पलहि कैसे देखौं जाई॥
कहत सिंहसों हे बनचारी। मानो तुम कछु कहन हमारी॥
जो तुम्हारि आज्ञा मैं पाऊँ। वत्सहि देख बहुरि फिर आऊँ॥
वत्सहि देख वहां नहि रहौं। तोसों सत्यवचन हौं कहौं॥
तू मोने छूटन पावै। तो घर जाय बहुरि नहिं आवै॥
वचन बोलि निबाही। ऐसो ज्ञान कहा नाहिं आही॥

। प्रसिद्ध जानै सब गाऊँ। बहुला धेनु हमारो नाऊँ ॥
नमें ग्वाल चरावैं मोहीं। मिथ्या वचन न बोलो तोहीं ॥
जानत सब मथुरा नगर, मधुवन गोकुल ग्राम।
झूठ न बोलो आजलों, सदा सत्यसों काम ॥
ो कछु है कहि हैं अब यथा। सिंह सुनो मेरी सब कथा ॥
ोसो सौंह लेहु जो जानो। जो तुम मेरे वचन न मानो ॥
अब प्रकार तब सोच मिटाऊं। जब मैं वत्साके ढिग जाऊं ॥
ोसों छल कर रहूँ न गेहू। सिंह सौंह मोते तुम लेहू ॥
ुखौ पिता माता परिहरहो। सेवा तिनकी कबहुँ न करहो ॥
हत्या ब्रह्मदोष तेहि होई। जो फिर यहां न आवै सोई ॥
ोध भार जो इक दुख सहई। एक तजै एकै संग्रहई ॥
ताको पाप दोष हौं पाऊं। जो नहिं सिंह वेग यहँ आऊं ॥
जीवन हतै अहेरै दण्ता। अरु मलेच्छके रहे जु सङ्गा ॥
ताको सकल पाप मैं पाऊं। जो हौं सिंह वेग नहिं आऊं ॥
छल बल कर लूटै पथिक, बहुरि देय तेहि मार।
सो हत्या मुझको लगै, जो मैं लाऊं बार ॥
गुरुसों कपट मसकरी खेला। ताड़ै गो पायनसों ठेला ॥
तुरँग शस्त्र सुत बेंचै गाई। चारों दुखी होय तहँ जाई ॥
इनको पाप दोष हौं पाऊं। जो हौं सिंह वेग नहिं आऊं ॥
वेद पुराण प्रीति नहिं करहो। झूँठो साख सभामें भरहो ॥
ताको पाप दोष हौं पाऊं। जो हौं सिंह वेग नहिं आऊं ॥

और दोष वरणौं सिंह यथा । चित दै सुनहु हमारो कथा ॥
प्रथम पिता कन्या दे काहु । पुनि दूसर सँग करै विवाहु ॥
सो सब पाप दोष हौं पाऊं । जो हौं सिंह वेग नहिं आऊं ॥
थाती लोप जु करहिं पराई । मित्रनको नित करैं बुराई ॥
अपनो दुष्ट जानकर तजही । वासुदेव गोविन्द न भजही ॥

लगै मोहिं अपराध सो, होय नरकमें वास ।
अहो सिंह जो मैं नहीं, आऊं तेरे पास ॥

मात पिता सों वैर जु ठानै । विद्या पढ़ तेहिं गुरु नहिं मानै ।
तीरथ जाय जु पाप कमावै । सँग साथिनको द्रव्य चुरावै ।
तिनको पाप दोष हौं पाऊं । जो नहिं सिंह वेग हौं आऊं
ऐसी सौंह गऊ जब खाई । तब तेहिं दीनी सिंह बिदाई ॥
तुम सब धर्म्म सधानो गाता । चलत सिंह समुझाई बाता ॥
धर्म्म समान सिद्धि नहिं कोई । अन्न भूमि दानादिक सोई ।
सत्य वचन सम धर्म्म न जापू । झूठ समान और नहिं पापू ॥
अपनो सत्य वचन उर धरिकै । सुतसों मिलहु शान्त चित करि
वहुला तब घरही को धाई । करत विचित्र चरित्र उपाई ॥
मन धर धीर पौर अधिकाई । थनपय स्रवत तहां सो आई ॥

वत्स देख उमड़ो हियो, बहत नयन जलधार ।
चाट चाट कर वत्सको, लागी करन पियार ॥

... रांभ गो बोली एहू । अस्तन पान वत्स कर लेहू ॥
नयन भर आयो नीरा । दुर्लभ भयो पुत्र यह तीरा ॥

बिन सुपुत धन जन नहि बढ़ई। बिन सुपुत कुल शोभ न चढ़ई ॥
जो सुपुत उपजै कुल कोई । ताते पुत प्रीति पर होई ॥
तुम्हरे सङ्ग अनहि मैं जहौं । माता सेवन यश मैं पैहों ॥
तुम्हरे सङ्ग न चलिहौं तबहौं । तुमते उऋण होहुँ मैं जबहौं ॥
भइया बन्धु कुटुम्ब सब सुखी । माता बिना पुत घर दुखी ॥
मात बिना छिन छिन दुख दूना । माता बिना सकल घर सूना ॥
मात बिनाको लाड लडावै । द्वन्द मेट आनन्द दिखावै ॥
मात सदा सुत पोषणहारी । पुत्र हेतु रह आप दुखारी ॥

मात-समान न प्रिय कोऊ, मातहि जीवन मूल ।
मातहि के तप तेजते, मिटत तापत्रय शूल ॥

मात समान न कोउ सुख देवा । निशि दिन करै पुतकी सेवा ॥
कहत वत्स अस बारम्बारा । तुम बिन जीवन वृथा हमारा ॥
जब विधि करै कठिन अति कोहा । तब मातासों होत बिछोहा
सो विधि आज वाम भो मोही । मोर सर्वसुख लीन्हो द्रोही ॥
हे सुत वृथा शोक किमि करही । मेरी आई तू क्यों मरही ॥
जल थल पुत प्रमाद न करिये । नदी ताल जल सम परिहरिये
मूरख अरु म्लेच्छते डरिये । इनसे पुत प्रीति नहिं करिये ॥
धीरज धर्म ज्ञान मन धारो । अब तुम सकल शोक निवारो ॥
तब बहुला माता पै गई । पुतहि ले ढिग ठाढ़ी भई ॥

विदा देहु मोहिं मातु अब, क्षमा करहु मम दोष ॥
वत्सनको सौंपत तुम्हे, करहु न इनपर रोष ॥

मेरो सुत यह दुख नहिं पावै। कोउ दुष्ट नहिं इसहि सतावै।
प्रतिपालन इसको नित कीजै। माता इसहि दगा मतदीजै
दूध पियाय इसहि तुम दीजो। दिनमें चार बार सुधि लीजो
बारबार सौंपत मोहिं याही। छोड़ पुत्रको तू कहँ जाही॥
बहुला सत्य सुनावहु मोही। ऐसी कहा विपति है तोही॥
करै जो तू बिछुरनकी बतियां। सुनत वचन दरकत हैं छतिय
नयन नीर भर बोलत गइया। कहा कहौं तुमसों मैं मइया॥
मैं बन चरन गईही जहां। सिंह आय मोहिं घेरो तहां॥
ताको वचन देय मैं आई। सत्य तजे नहिं होत भलाई॥
ताते हौं जाऊं तेहि पासा। बनमें सिंह न होय निरासा॥

जो निराश ह्वै सिंह कहुँ, त्यागे अपनी देह।
वृथा नरक रहनो परे, जाय गेहको गेह॥

खाय गाय तो कबहुँ न कहिये। सङ्कट परे प्राण नहिं रहिये।
काज विवाह तियासों बाता। सब स हरत विप्र सकुलाता॥
इतनी ठौर झूंठ जो बोले। ताहि न पाप कहत हौं खोल॥
झूंठो वचन बोलिये वहां। प्राण पराये उबरैं जहां॥
अपने काज सत्य नित बोलै। धर्म मर्यादामें नहिं डोलै॥
जानो ते जीवतही मरही। जितने सत्य वचन सब टरही॥
सत्यवचन गुण ज्ञान विचारा। सत्यवचन जीवन संसारा॥
बहुला अस उत्तर दीन्हो। नमस्कार सबहिनको कीन्हो।

अस कहि निकट गई जब गाई । सिंहहि भली बुद्धि तब आई॥
बहुलाके दर्शन गो पापा । जानो प्रथम जन्मको शापा ॥

पायो पिछले पापते, मैंने सिंह शरीर ।
धन्य धन्य माता तुम्हैं, मेंटो मेरी पीर ॥

दर्शन करत पाप मम गयऊ । वचन सुनत अचरज सों भयऊ ॥
धन्य सुनर भवसागर तरही । जो तुम्हार दर्शन नित करही ॥
धन्य सुठौर जहां गोरेनू । सब विधि धन्य धन्य तुम धेनू ॥
बहुला तोहिं भयो सन्तापू । अबलौं बहुत कियो मैं पापू ॥
बहुत जीव मैं मारे खाये । कौन नरकहौं परिहौं जाये ॥
कै हौं पर्वतसों गिरपरहूं । कैहौ अग्निमाहिं जरि मरहूं ॥
कै जल प्राण त्याग हौं भारी । जैहौं कौने नरक मँझारी ॥
ऐसो कौन पाप मैं कियऊ । जाते सिंहदेह विधि दियऊ ॥
कोटिन जीवन को मैं मारो । कैसे ह्वै है मोर उबारो ॥

तुम्हरे दर्शन करतही, दूर गये सब पाप ।
अब मुझको निश्चय भयो, मिटो हमारो शाप ॥

सतयुग तप त्रेता मख सारा । द्वापर पूजा विधि व्यवहारा ॥
कलियुग जीव दया हरिनामा । जाते ब्रह्मलोक विश्रामा ॥
हौं पशु देवशापते भयऊ । तेरे दर्श सकलश्रम गयऊ ॥
कीन्हेउ प्रथम योग अभ्यासा । अब मोको फिर भयो प्रकासा ॥
बहुला सत्सङ्गतिकी रीती । मेरे मन अब भई प्रतीती ॥
अबफिर योग ज्ञान मति भई । छूटो शाप परमगति दई ॥

बहुला बहुरि भवन निजआई। गोप गाय सब कर बधाई॥
वह निस्तरी पुत्र सुख भयऊ। बहुला सत्यवचन फल लयऊ।
राजा तेरे श्रद्धा प्रीती। उत्तम सत्यवचनकी रीती॥
कहै सुनै श्रद्धा सों जोई। सुख सम्पति यश पावै सोई॥

इति सप्तविंश अध्याय॥ २७॥

परहित वचन जो बोले आई। जीव दयाते लेय छुडाई॥
रचा करै साधुकी जोई। ताको पिता कहा फल होई॥
ब्राह्मण एक गृहस्थ आश्रमी। तिया सहित पालै निज धर्मा॥
करै यज्ञ सन्तत को जोई। वृद्ध भयो कोउ पुत्र न होई॥
बहुरि एक कन्या तेहि भई। वानप्रस्थ ह्वै यह मति ठई॥
वानप्रस्थ ह्वै सो बन गयऊ। इस्त्री सहित जाय तप कियऊ॥
माता पिता प्रीति अधिकाई। कन्या बडी होत जब आई॥
देख पिता के यह मन आई। कन्या वरको दीजै जाई॥
कछुक दिवस सोचत भये तबहीं। मरो पिता कन्याको जबहीं॥
कन्या तहां सयानी भई। माताहू ताको मर गई॥
कन्या शोक करै अरु रोवै। मेरो दुःख कौन अब खोवै॥

परी विपति पर विपति मोहिं, अपनो कोउ न दिखाय
कहां जाउ कासों कहौं, इकलो रहेउ न जाय॥

बार मो करै पुकारा। हौं अनाथ भई विपिन मँझारा॥

ीन्हेउ कौन पाप अधिकाई । मात पिता दोऊ न रहाई ॥
छन रोवै छिन गिर गिर जाई । वनमें परी अधिक अकुलाई ॥
न्या तहां अधिक दुख पायो । यम तब विप्र रूप धरि आयो ॥
पने दुःख अपनपो कीजै । पुत्री वृथा शोक नहिं कीजै ॥
ुख सुख और न काहू दीनो । सब कोउ पावै अपनो कीनो ॥
अपनो पाप आप भर लेहू । ताते औरहि दोष न देहू ॥
ेरे प्रथम जन्मकी कथा । सुनहु सुवृत्त कहौं मैं यथा ॥
ाणिका रूप परम सुखदैनी । हती प्रथम तू नगर उजैनी ॥
तेरी शोभा जाय न वरणी । सुन्दर रूप जगत वशकरणी ॥

शशिसम मुख चम्पकवरन, हरत सबनको चित्त ।
धनी सेठ आवत सदा, वर्षत निशि दिन वित्त ॥

ब्रह्मापुर द्विज इक अनुगामी । ताको पुत्र एक सो कामी ॥
सो द्विज सुत तेरे घर आयो । अपनो काम धाम विसरायो ॥
तोसों मोहिं प्रीति अधिकाई । मात पिता मोहिं कोउ न सुहाई ॥
तव घर विप्र पुत्र जब गयऊ । तासों कलहु परस्पर भयऊ ॥
उपजो क्रोध न सकी सँभारी । विप्र तनय तैं डारो मारी ॥
ताके मात पिता लिया नेहा । रोवत आये तेरे गेहा ॥
तिन सब शोक कियो अनिदापा । तब ताको दीनो तिन शापा
हौं जो मात पिता विन दीना । अरु हौं ज्यों भरता विन हीना ॥
ऐसो कठिन शाप तिन दीनो । मन में नेक तरस नहिं कीनो ॥

सो अब पाप आय नियरायो । ताहीने यह दुख दिखरायो ॥
जसो करै सु तैसो पावे । ताते दोष कोनको लावे ॥

जो कुछ लिखा लिलारमें, मेंट सके नहिं कोय ।
कोटि यत्न करते फिरो, अनहोनी नहिं होय ॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुरराऊ । तुम को हो कहिये सतभाऊ ॥
मेरो शोक मोह सब गयऊ । तुम्हरे वचन सुनत सुख भयऊ
धर्मराज निज जानो मोहीं । मैं समझावन आयों तोहीं ॥
तेरे प्रथम धर्म मन भायो । ताते विप्र रूप ह्वै आयो ॥
धर्मराज तुम जानो एहा । मेरे मन उपजेउ सन्देहा ॥
गणिका पाप दोषको खानो । क्यों अवतरी ब्रह्मकुल आनी ॥
अस मैं कहा धर्म तप कीनो । पुरुष अनेक तहां मन दीनो ॥
धर्मराज सो कहो बखानी । मेरे मनको जाय गिलानी ॥
अर्थ धर्म करता पहिचानो । तुमते दुरो नहीं सब जानो ॥
सकल धर्म तुमते नहिं छानी । मोसों कहिये सकल बखानी
जाते ज्ञान भयो तव गाता । सुनो सुवृत्त कहौं सो बाता ॥

तेरे पिछले जन्मको, कहौं सर्व इतिहास ।
जाते तेरे हृदयमें, भयो ज्ञानको भास ॥

काहूके उपजेउ निज ज्ञाना । तेहि साधु हरि अर्पेउ प्राना ॥
निज हरि चरन कमल मन लयऊ । सकल सुखनते निग्रह भ
स्वरूप जानो संसारा । तब मैं कीन्हेउ दर्श तुम्हारा ॥
उपजेउ ज्ञान अपारा । निकस कियो तिन ब्रह्म विचा

थ रूप विश्व आगाधू। तेहिं पुरमें आयो सो साधू॥
। उजैन उदै सो आयो। परमेश्वर संयोग बनायो॥
। स्वभाव बैठ सो रहेउ। काहूसों कछु वचन न कहेउ॥
धी रात गई जब जहँा। कोतवाल फिर आयो तहँा॥
टन मार तहँा दुख दयऊ। तब साधू छुड़ाय जो लयऊ॥
धुर वचन तिन तासों कहेउ। तुम स्वामी कत दुष्टन कहेउ॥
ाओ स्वामी आदर कीनो। झारि अंग अपने कर लीनो॥

। तुम प्रयंक बैठे रहो, सेवहुँ चरण तुम्हार।
मन इच्छा पूरण करौं, पूजौं विविध प्रकार॥

चुप कत रहे लोथको नांई। कछु आज्ञा मो देहु गुसांई॥
ेरे मन इच्छा कछु नाहीं। सुख अरु भोग वृथा सब आहीं॥
त्तम अन्न जो भावै जोई। इन्द्रिनको सुख ऐसो होई॥
ोभा सुख दुख मान गुमाना। मेरे सात्विक सदा समाना॥
ऊँच नीच घट बढ़ नहिं लेखौं। वासुदेव सबहीमें देखौं॥
। संशय भय छाँड़ो सब दोषा। ताते मान लियो संतोषा॥
ानत ज्ञान मौन ह्वै रहेउ। श्रद्धावान जान तोहिं कहेउ॥
धर्मरूप तेरी मति सारा। तेरे मन पर कार्य उदारा॥
ाला आज साधुकी करो। निज संसार दोषते तरो॥
देखी मति मै तेरी भली। तू मारग साधुनके चली॥

ा। पर सुखदाता परमहित, संतनके पद माहिं।
कि तिनकी महिमा कहनको, योगी जिह्वा नाहिं॥

चरण पकर पूछौं सन्देहा। जो तुम स्वामी करहु सनेहा॥
तुमहो साधु कृपालु उदारा। भव समुद्र नौका आधारा॥
कैसे परमेश्वर मन धरिये। क्यों संसार दोषते तरिये॥
कैसे जरै पाप अरु दोषा। कैसे रहे सदा सन्तोषा॥
दम्भ छांड़ि धर्म्महि आचारो। गुरुपद नारायण चित धारो॥
समता दया क्षमा सन्तोषा। इनते प्राण पाय है मोषा॥
साधुन की संगति मन दीजै। विष्णु जान सबसों हित कीजै
निश्चल मन कर हरि हरि करहो। सो संसार दोषते तरहो॥
काम क्रोध तृष्णाको खोई। पूरो इन्द्रीजित जो होई॥
जीत विकार कृष्ण मन धरहो। सो संसार समुद्र न परहो॥

तुलसी दल फल फूल जल, चन्दन धूप चढ़ाय।
पूजै शालग्राम नित, भवसागर तर जाय॥

अति गम्भीर हृदय जो होई। सूम दियो नहिं पावै कोई॥
लोभ मोह क्रोधादिक जहाँ। यह रिपु सबही जानो तहाँ॥
ऐसोंकी संगति नहि करिये। तो संसार दोपते तरिये॥
यह कह महापुरुष चल गयऊ। तोपर अति प्रसन्न सो भयऊ
सज्जन मिलत मलिनता गई। ताही पुण्य ब्रह्मकुल भई॥
सुनत सुवृता अपन सब वाता। अब यह तोहिं समझाऊँ त
धु समागम अति फल भयऊ। ताही पुण्य दर्श मैं दय
वचन सत्य कर माना। तब तेरे मन उपजेउ ज्ञाना॥

दे धर्म्म गयो निज लोका । तब सुव्रता भई निःशोका ॥
जेउ हृदय ज्ञान वैरागा । अति तप तेज बुद्धि बड़ भागा ॥
मिटो मोह ममता सकल, प्रगट भयो उर ज्ञान ।
ऐसो सन्तप्रभाव शुभ, गावत वेद पुरान ॥

इति अष्टविंश अध्याय ॥ २८ ॥

कोउ यज्ञ व्रत संयम करई । कोऊ धम अर्थ मन धरई ॥
कठिनौ ज्ञान बुद्धि वैरागा । कोऊ कहै मोक्ष को भागा ॥
कोऊ आराधे बहु देवा । कोऊ करै विष्णुकी सेवा ॥
कोऊ गुण ब्रह्माके साधै । कोऊ यन्त्र मन्त्र आराधै ॥
कोऊ शङ्कर शङ्कर करही । कोउ ध्यान गणपतिको धरही ॥
कोऊ शालग्राम मनावै । तुलसी दल फल फल चढावै ॥
इनमें कौन परम सुखदाई । भीषम पिता कहो समझाई ॥
मोसों पिता कहो निरधारा । काको पूजन इनमें सारा ॥
भली बात बूझी नृप आदू । नारद पुण्डरीक सम्वादू ॥
जो जो प्रश्न किये तुम सही । पुण्डरीक नारदसों कही ॥
कथा पुरातन वर्णौं ताता । नारद पुण्डरीककी बाता ॥
अन्तरवेद मधय्र इक गाऊँ । पुण्डरीक इक द्विज तेहि ठाऊँ ॥
विष्णु चरणकी शरणमें, रहै सदा लवलीन ।
अन्त न चित्त डुलावही, ज्ञानी परम प्रवीन ॥

ताके भक्ति ज्ञान वरागा। सबही लसत श्रेष्ठ बड़ भाग
पूरव संस्कार मतिसारा। शीलवान चित परम उदा
पृथ्वी दहिनाव्रत कर आयो। सब तीरथ देखे फल पा
समझ विचार देख तिन लीनो। सबही ते निरास मन कीनो
ह्वै विरक्त मन कियो विचारा। दुख समुद्र समुझेउ संसार
गण्डक क्षेत्र तबहि सो गयऊ। तहाँ जाय इस्थिर मन भयऊ
पूजा विष्णु ध्यान मन लायो। सब तज श्री कृष्णहि यश गा
पुलकित रोम प्रेम अनुसरिया। प्रेम लक्ष नामनमें धरिया॥
कबहूँ नृत्य करै उठिधाई। कबहुँ अनहद रहै समाई॥
कबहूँ प्रेम हृदय गहि भरही। कबहूँ नयन उमग जलढरही

कबहूँ हँसत गावत कबहुँ, कबहुँ मगन मन होय।
कबहुँ रटत गोविन्द हरि, कबहुँ देत सो रोय॥

ऐसे हरि चरणन मन लायो। प्रेम मगन आपा विसरायो
जेहि औसर आरति को आवो। तहँ तुलसीदल पु चढ़ा
बारम्बार हृदय भर आवै। परमेश्वरहि शुद्धता भावै॥
ताके चरण रेणु शुभ नोका। होय पवित्र चौदहौं लोका॥
सब विधि निर्मल जानो जहाँ। सुनकर नारद आये तहाँ॥
नारद ब्रह्मा विष्णु उछंगा। अति शुभ जटा कनक दुतिअंगा
कमलनयन प्रसन्न मुख नामा। परम स्वरूप कृपानिधि रामा
फिरत सदा हरिके गुणगावत। भाग्य उदय भो दर्शन पावत
.न पुण्डरीक छकि रहेऊ। सूरज अग्नि जाय नहि कहेऊ

गुग चरण गहे तेहि आई। नारद लीनो कण्ठ लगाई॥

अहो विप्र आनन्द निधि, ऋधि सिधिके दातार।
भली करी दीनेउ दरश, आये समय विचार॥

ह देख विहँसों मैं गाता। तुमहो ब्रह्मरूप गुण ज्ञाता॥
रो भेद जो अबहूँ पाऊँ। बार बार पूरण गुणगाऊँ॥
तुमहीं नारद आही। हरिको प्रिय हरि भावै ताही॥
हीं पूर्ण गुसांई भयऊ। जब तुम मोको दर्शन दयऊ॥
हरिके प्रिय आये जहाँ। हरिहू कबहूँ आवे यहाँ॥
तुमसों पूंछो इक बाता। कृपा दृष्टिकर कहिये ताता॥
संयम सबहीमें सारा। यह मोसों कहिये निर्धारा॥
न विचार कहा व्रत गहौं। सुन पुनि भिन्न भिन्न कर लहौं॥
पण्डित ऋषि वचन प्रमाना। साधनको मारग जो जाना॥
जो प्रश्न किये तुम ताता। मैं अजसों बूझी यह बाता॥

ब्रह्माने मोसों कही, भिन्न भिन्न समुझाय।
सो मैं तुमसों कहतहूं, जगत हेत सुखदाय॥

त पुराण गर्व निर्धारा। नारायण सबहीमें सारा॥
तज भज श्रीपति यदुराई। वृथा और कत करत उपाई॥
ौ आदि मध्य अरु अन्ता। नारायणके रूप अनन्ता॥
स्मृति प्रतिपादत जाही। नारायण सबहीमें आहीं॥
। मन्त्र एक यह आही। नारायण भजिये चितलाही॥
. मन्त्र अति उत्तम जानो। जपत सुरेश महेश भवानी॥

नमो नमो नारायण स्वामी। सत्य सनातन अन्तर्यामी॥
धन धन नारायण सुरराई। ब्रह्म जीव माया उपजाई॥
सब कामना मध्य निष्कामी। तुमहीं मात पिता गुरु स्वा
रँगकर वस्त्र जटा शिर धरहीं। काहेको बहु वेष जु करहीं

झोली खप्पड़ धारकर, घर घर मांगत अन्न।
इन बातनते होत नहि, नारायण परसन्न॥

नारायणसों कीजै प्रीती। यहै सर्व साधनकी रीती॥
नारायण पारायण होई। सबते उत्तम जानो सोई॥
यह सुन अति आनँदमन भयऊ। नारायण चरणन चित द
पुण्डरीक सों कहि सब भेवा। अन्तर्धान भये ऋषि देवा॥
तब गोविन्द प्रगट भे आनी। गरुड़ासन निर्भय सुखदानी
श्याम रूप अति उत्तम अंगा। पीत वसन थिर दामिनि अं
रुधिर बिलास कमलदल नैना। मन्द हँसन सुन्दर मुख बैन
चलत श्रवण कुण्डलगलगंडा। शोभित भुजा भोग भुवदंड
वनमाला कटि पट बहु रङ्गा। देखत लाजत कोटि अनंग
चरण कमल नखचन्द्र निवासा। फैलो दशहूं दिशा प्रकाशा

झोट मुकुटकी झलक लख, होत अधिक आनंद।
मन मन लज्जित होत शशि, निरख विमल मुखचंद॥

आवत कमल फिरावत हाथा। सिद्ध साधु सब सुर मुनि
श्रुनि प्रकाश कछुजात न कहेऊ। अंजलि जोरि थकित ह
म पुलक अति आनँद भरेऊ। दण्ड प्रणाम भूमिपर

[illegible] हरि वचन कहेउ गम्भीरा। हौं सन्तुष्ट भयो तव वीरा॥
[illegible]डरीक तू अति बड़भागा। जो तव चित मम चरणन लागा
[illegible]सों मित्र और नहिं भ्राता। हौं वर काम दाम सुखदाता॥
[illegible]हरे दर्श कर्म सब गयऊ। आनँदसहित ज्ञान मन भयऊ॥
[illegible] नहिं जानत अंतर्यामी। तुमही कहो प्राणपति स्वामी॥
कवि वचन प्रभु तुमसों कहेऊ। तुम तो मिले मांगवो रहेऊ॥
[illegible]व मायाते अजहूं डरहौं। तुमते बिछुर बहुरि नहिं परहौं॥

अज शृङ्गीऋषि देवऋषि, इन्द्र मारकण्डेय।
तव मायाको भेद कछु, यह जन जानत हेय॥

[illegible]निज सनेह कर हौं जो कहेऊ। तव निज रूप हमारो लहेऊ॥
[illegible]ह कह गरुड़ासन बैठारी। सत्य धाम ले गये मुरारी॥
[illegible]ब इन्द्र दुन्दुभी बजावै। हर्ष पुष्पमाला पहिरावै॥
[illegible]य जय शब्द स्वर्ग सुर गावैं। पुण्डरीकको दर्शन पावैं॥
[illegible]ो यह सुनै और जो कहई। ताको प्रेम भक्ति मन रहई॥
[illegible]द्ध चित्त कर गावै जोई। सकल धर्म फल ताको होई॥
[illegible]वृकोउ नृप बहुत विचारा। सब धर्मनमें है को सारा॥
[illegible]ण्डरीकको कथा सुनाई। सब में सार क्रिया यह राई॥

इति नवविंश अध्याय॥ २९॥

सावधान हो सुनिये ताता। अब हौं तनु त्यागौं गो प्राता॥

परम रहस्य भ्रात उपकारा । सात्विक पर्वत मध्य जु सारा॥
धर्म्म सहित मन बुधि सन्देहू । सब इतिहास सार सुन लेह
सावधान ह्वै समझो वीरा । तुमसों कहा कहो गम्भीरा॥
पुरुष एक हस्ती रपटायो । भज मैंमन्त जु बनमैं आयो॥
बनमैं उठो सिंह ललकारो । और दिशा तब भजो पुकारो
तब वह दिशा उठो अगलाई । तहां शोच कीन्हेउ अधिक
कन्या एक खड़ग लिये तहां । काटै शीश जाउँ भज कहां
इत उत चहूं दिशा भय भरेऊ । तब अकुलाइ कूपमें परेउ
परत वेल पकरी इक धाई । तासों अरुझि रहेउ लपटाई॥

महा अँधेरो कूपमें, सूझ परै कछु नाहिं ।
बहुत ध्यान धर लख्यउँ जब, द्वै मूषक तेहि माहिं॥

श्वेत श्याम मूँसे द्वै जानो । ता वेलीको काटै आनो॥
नीचे सर्प रहेउ मुहँबाई । टूटै वेलि गिरत सो खाई॥
तामहिं काटहि मच्छर डांसा । जाला पूरि रहे चहुँ पासा
देह रिपुनसों अति अकुलानो । फिरमो दुग्ध कलह को र
तहँ इक सरप मुहाल सुहाई । तामें मधु टपकत सुखदाई
सो मधु बूंद आन मुखपरो । चाटत जीभ बहुत रुचि करो
भूलेउ सब दुख कठिन कराला । परम प्रसन्न भयउ वहि क
ऐसे दुःख न मनमें आनै । मधुकी बूँद परमहित मानै॥
निशिदिन यह अभिलाषा करही । और बूँद मुखमें कब प
हा कलेश गान दिन महही । ता मधु बूँद मध्य मन रहै

चलत फिरत सोवत जगत, उसी बूँदमें ध्यान ।
कब मेरे मुखमें परै, त्रिभुवनको सुख खान ॥

खो यह अचरज अधिकाई । अस दुखमें सुख चाहत भाई ॥
ह नहिं कथा समझिये ताता । विद्यमान सब जानहु भ्राता ॥
ुम कछु मनमें और न आनो । सब जीवनकी यह गति जानो ॥
कौन पुरुष को हस्ती भयऊ । कहँ बन कहां सिंह निर्भयऊ ॥
कहा अग्नि धौ कन्या रूपा । कह बेलि कहा मूषक कूपा ॥
कहा काम जारनको दापा । माछर डांस कहा सन्तापा ॥
कह मधु बूँद जहां मन रहही । जाके काज कठिन दुख सहही ॥
बार बार म परसों पाई । भीषम पिता कहो समुझाई ॥
पुरुष रूप यह जीवजु आही । संशय गज रपटायो ताही ॥
सिह रोग तहँ बन संसारा । इन्द्रिय विषय भोग आहारा ॥

वात पित्त कफ ताप त्रय, ताको तेज अपार ।
खात रात दिन निडर ह्वै, कबहुँ न मानत हार ॥

चिन्ता शोक अग्नि तहँ जरई । जरत रात दिन कल नहिं परई ॥
कन्या खड्ग लिये जो धावै । सो यह जरा सबन को आवै ॥
इत उत फिरत जु हारा जीता । लोभ मोह कर अति भयभीता ॥
तृष्णा काम क्रोध भय डरई । अन्ध कूप सरिता में परई ॥
बेलि आयु अवलम्बन जहां । रात दिवस मूसे ह्वै तहां ॥
श्याम श्वेत दोऊ दिन राती । क्षण क्षण आयु निवरती जाती

दोष जराकर विक्रम रहेऊ । काल सुसप वाय मुख रहेऊ ॥
कन्या सुत कलत्र चहु पासा । यह तहँ काटे मच्छर डासा ॥
तृषा क्षुधाते उर जब जरही । चित्त माहिं व्याकुलता करही ॥
तहँ आमिष हिंसा दुरगन्धा । चारो फूट गई भो अन्धा ॥
काम बूँद मनमानो एहा । यामें नाहिन कछु सन्देहा ॥

काम सहत को बूँद है, सबहि नचावत नाच ।
सुर नर मुनि मोहे सकल, मानहु फिरत पिशाच ॥

मथुन ग्रसो सकल संसारा । तालग सहत कलेश अपारा ॥
सुःख किञ्चित् दुखपर्वत आही । तऊ मूढ फिर चाहत ताही ॥
बूँद दुख सुख अचल समाना । तामें भूल रहेउ अज्ञाना ॥
थिर नहि पुत्र पौत्र जग माहीं । यौवन रूप सदा थिर नाहीं ॥
थिर न रहै इन्द्रिय सुख भोगा । नहिं थिर सुजन मित्र संयोगा ॥
थिर यश धर्म्म क्षमा सन्तोषा । थिर हरिनाम होय जिहिं मोषा ॥
धृग धृग काम रहेउ मन लाई । धृग आपदा न छोडी जाई ॥
धृग अपनी कर मानै देहा । सो थिर नहिं क्षणमें हो खेहा ॥
विष्णु बिना धृग सबही कर्मा । पर उपकार बिना सो धर्मा ॥
यश कीरति बिन धृग संसारा । ज्ञान बिना धृग नर अवतारा ॥

धृग धृग सो कर्त्तव्य सब, जहां न हरिका नाम ।
धृग सो नर है प्रेत सम, कहै न मुखसों राम ॥

बिन हरि कथा सुनै नहिं काना । धृग विद्या जहँ बुद्धि न ...
धृग सुज्ञान नहिं जहँ वैरागा । धृग हरिनाम बिना जप ...

ती सब साधनको रीती । राम नामसों कीजै प्रीती ॥
स्थिर चित हरि सों हित करही । सो संसार समुद्र न परही
न्य धन्य ते नर अनुरागी । सब तज भये परम वैरागी ॥
न्य धन्य ते भक्त अनूपम । गावत हरी लखत हैं सब सम ॥
शि दिन वेद पुराण निहारैं । श्रीगोविन्द छबि उरमें धारैं ॥
त सदा गोपाल कृपाला । जय जय जय प्रभु दीनदयाला ॥
वत स्वर्गवास ते प्रानी । जहां सुरेश अमर विज्ञानी ॥
नमें कछु इच्छा नहिं राखत । नारायण नारायण भाखत ॥

भक्त सदा हरिके प्रिय, भक्तन सम कोउ नाहिं ।
भक्तन हित हरि तन धरत, मृत्यु लोकके मांहिं ॥

इतिहास सुनै अरु कहई । ताके ज्ञान धर्म्म मन रहई ॥
ज्ञान हरि यश सुन लेहू । श्रद्धा सुकृति दान सो देहू ॥
चित है जो सुनहिं सँभारी । अर्थ धर्म्म फल पावहि चारी ॥
मम पिता व्यास ऋषि राई । भारत कथा व्यास मुनि गाई ॥
की महिमा कौन बखानै । शिव अज इन्द्र भेद नहिं जानै ॥
होय वाचाल प्रवीना । दीनन के कुबेर आधीना ॥
, चढ़ैं पर्वतपर जाई । पापिन के कलि कलुष नशाई ॥
ममें रचै चतुर्दश लोका । हरै करै नित शोक विशोका ॥
टिन ब्रह्मा इन्द्र बनावै । कबहुं प्रलय कर सकल नशावै ॥
हमा अमित अपार अनादी । पार न पावत अजमनकादी ॥

वर्णत वर्णत हरि सुयश, उतरायण भयो सूर।
नृपति युधिष्ठिरको तबहिं, भयो सोच सब दूर॥
वैशम्पायन गावन लागे। जन्मेजय श्रोताके आगे॥
यहि विधि बहुत दिवस जब गयऊ। उत्तर रवौ प्रवेशत भयऊ
भीषम तबहीं चेतेउ ज्ञाना। अब तजि तनु कीजिये पयाना।
धर्मराजके पाहिं बखाना। राजा सुनो बात परमाना॥
शरशय्या बहुते दुख सहेऊ। उतरायन सूरज अब भयऊ॥
अब शरीर तजिहौं परमाना। धर्मराजसे बहुत बखाना॥
अब तो कली होव परमाना। संतत भूत विचारो ज्ञाना॥
येही कृष्ण देव परमाना। अन्तकाल गति श्रीभगवाना॥
हरिको छोड़ रहहु जनि राजा। कहौं बात तोरे भल काजा।
अबै तुम्हार जो होय उधारा। भीषम भाषे याहि भुवारा॥

अब वैकुण्ठे आव हरि, शून्य देव अस्थान।
केतिक दिनके अन्तमें, गमनब श्रीभगवान॥

नृपति युधिष्ठिरसे यदुराई। बहु प्रकार भीषम समुझाई॥
हरिते भीषम कहेउ बखाना। सर्व लोकपति हो भगवाना।
कृपा करो हम तजें शरीरा। विश्वरूप तुमही यदुवीरा॥
बहु प्रकारते अस्तुति कीन्हा। तुरत शरण तव कृष्णहि दीन्हा
सुदी अष्टमि शुभ जाना। तादिन भीषम करब बखान
१. मास पक्ष उजियारा। सातो तीरथ कहे विचारा॥

श्रीपति अरु जो पांचो भाई। सबै पितामह लिये बुलाई॥
विदा भये सबते प्रभु गाये। तजे शरीर परम सुख पाये॥
मातलि रथ तो इन्द्र पठाये। विष्णुदूत सँग लेने आये॥
रथ ऊपर भीषम बैठाये। स्वर्गलोकको राह सिधाये॥

परमहर्ष नारायण, भीषम तजो शरीर।
गये बैकुंठ विष्णु पुर, परम अनन्दित धीर॥

धर्मराज तब रोदन कीन्हा। क्रिया कर्म सबकर मन दीन्हा॥
कीन्हा कर्म वेद व्यवहारा। शास्त्रन शांती कर सञ्चारा॥
श्रीपति कहे राव सन वानी पुरी हस्तिनापुर महँ आनी॥
श्रीपति सङ्ग करहु सब काजा। करहु राज्य हर्षित मन राजा॥
मोरी भक्ति करो मन लाई। पुहुमी राज्य करो सुखदाई॥
हमको विदा दीजिये राई। हमहु द्वारका देखें जाई॥
हर्षित राजा करै बखाना। गति हमारि तुमही भगवाना॥
मैं अनाथ तुम जनके साथा। अस्तुति करत बहुत नरनाथा॥
माथो बँधुसँग द्रौपदि रानी। मिलेउ सबै सँग शारँगपानी॥
बहिनि सुभद्रा भेटेउ जाई। होकर विदा चले यदुराई॥

सात्यकि रथको साजेऊ, श्रीपति भे असवार।
सबते विदा होय हरि, द्वारावति पगु धार॥

हर्षित गये देव भगवाना। द्वारावती नगर परमाना॥
आये द्वारावति यदुराई। यदुवंशी हर्षित सब आई॥

धर्म्मराज राजा सुखकरही । सदाधर्म्म धर्म्महि हितधरही ॥
नगरलोग सब तहँके सुखी । स्वप्नहुतहँ सुनिये नहिं दुखी
पुत्न समान प्रजाप्रतिपाला । धर्म्मरूप श्रौधर्म्म भुवाला ॥
एही भांति राज्य नृपकरही । धर्मराज शोकित मनरहही
सजन सखा बंधुजन जेते । गुरू गोत्न कुल भीषम तेते ॥
तिन सबको मारे निज हाथा । यही शोच शोचै नरनाथा ॥
प्रजालोग तब करैं अनन्दा । जनु चकोर पाये निशि चन्दा ॥
भारत कथा पाप चयजाई । पढत सुनत हो हर्ष बधाई ॥

वैशम्पायन कथा करि, पुर हस्तिनाप्रकाश ।
जाते पावहिं परमपद, होत पापको नाश ॥
भारत कथा पुणत्र फल, करैं नारि नर गान ॥
शान्तिपर्व भाषारची, सबलसिंह चौहान ॥

इति त्निश अध्याय ॥ ३० ॥

इति शान्तिपर्व्व समाप्त ॥

महाभारत।

अश्वमेध पर्व्व।

गौरीनन्दनके चरण, विनवौं बारम्बार॥
जिनके चिन्तन करतही, विघ्न होयँ जरि छार॥
पाराशर ऋषिके तनय, व्यासदेव भगवान॥
आचारज इतिहासके, करो नाथ कल्यान॥
महरानी बानी सुमिरि, करौं कथा सुखदान॥
यज्ञपर्व भाषारचत, सबलसिंह चौहान॥

वैशम्पायन कह्यो बुझाई। यज्ञ कथा सुनु कुरु कुलराई॥
कियो युधिष्ठिर नृप तब शोका। भीषम भये जबहिं परलोका॥
कह्यो व्यास सन धर्म्मकुमारा। मारा गोत पाप बहु भारा॥
यज्ञरु योग जापका कर्म्मा। कैसे पाप छुटै हो धर्म्मा॥
सुनी बात तब कहे ऋषेशा। पातक खण्डव तोर नरेशा॥
परशुराम कहँ सब जगजाना। हने मातु आज्ञा पितु माना॥
माता द्विज वध हत्या पाये। अश्वमेध तब यज्ञ बनाये॥

यज्ञ कियो तब पातक हरै । तुमहू करौ यज्ञ अनुसरै ॥
रामचन्द्र दशरत्थ कुमारा । रावण वंश कियो संहारा ॥
विश्रवर्णा को सो सुत अहई । ब्रह्मवधन तो रामहि गहई ॥
वाजौ यज्ञ कियो प्रभु रामा । द्विज वध छूटि भये निःकामा ॥

अश्वमेध तुमहूं करौ, गोत्रहि वध दुख हेत ।
धर्मराज यह सुना जब, भाष्यो बात सचेत ॥

यज्ञ समर्थ जो धन मम नाहीं । कैसे यज्ञ होय जगमाहीं ॥
फलविहीन तरु पच्छि न जाई । धन विहीन तस पुरुष कहाई ।
विन धन धर्म कहौ कस होई । धनसे हीन पुरुष जग जोई ॥
कहै व्यास सुनु धर्मकुमारा । अर्थ चहो सुनु बात हमारा ।
पूर्व मरुत नृप यज्ञ बनाये । सुर नर मुनि जन हर्ष बढ़ाये ॥
दिये दान बहु विधि परकारा । किये अयाचक मग्न अपारा ॥
लै न सके तो तजि नृप गयऊ । गिरिहिमालयके बीचहि रहे
सो धन लेय यज्ञ प्रण ठानौ । धर्मराज सब भेद बखानौ ॥
द्विज धन लै कै यज्ञ बनाओ । यज्ञ करत तौ अपयश पाओ ।
व्यास कह्यो सुन धर्मकुमारा । सो सब द्विजन नहीं अधिकारा
पूर्व दैत्य बन राजा गयऊ । ताही मारि देव धन लयऊ ॥

सोई धन हरिचन्द्र नृप, दीन्ह्यो मुनिको दान ।
पाछे बलि राजा भये, सब धन ताको जान ॥

। बलि राजा दीन्ह्यो दाना । पाछे परशुराम जग जाना ।
प मुनि को दीन्हो दाना । ऐसे धन राजा को जाना ॥

दान देय खाही बिलसाही। ताको धन्य मुनी यश गाही॥
सो धन लै करु यज्ञ भुवारा। कछू दोष नहिं लागु तुम्हारा॥
राजा धर्म्म व्यास सन कहही। यज्ञ अश्व मोरे नहिं अहही॥
सुना व्यास तब कह अस बाता। आनहु अश्व आह सख्याता॥
भद्रावति पुर हय है राई। यौवनास्व राजा के ठाई॥
दश करोड़ दल हय को रक्षक। यज्ञ नहीं सो करै प्रत्यक्षक॥
ताही जीति अश्व लै आओ। धर्म्मराजते बात जनाओ॥
भीम आदि बान्धव हैं जेते। करि संग्राम थके नर तेते॥

मेघवर्ण वृषकेतु है, बालक औ पितु शोक॥
ता सन कछू न भाषिये, दोष देय सब लोक॥

सुनि क भीम कहत अस बानी। करबे यज्ञ अश्व धन आनी॥
होय प्रसन्न यज्ञ करु राजा। आनब धन अश्वहु जग काजा॥
हम सहाय जगतके तारण। केहि ते डरिय कौन सो कारण॥
राजा कह्यो सुनहु सब भाई। कत अकेल बाजी बहुताई॥
दश करोड दल राख तुरङ्गा। कैसे भीम करब रण रङ्गा॥
सुनिकै वृषकेतू तब कहई। आज्ञा देहु सङ्ग हम रहई॥
आनो भीमहि आज तुरङ्गा। यौवनाश्वको करिये भङ्गा॥
सुनते राजा कहे बखानी। कैसे कहन सको यह वानी॥
तोरे पितहिं धनञ्जय मारा। देखे मुख मनदुःख हमारा॥
तब वृषकेतु कहेउ सुनराजा। कीन्हेउ भला कर्णको काजा॥

सभा मांझ द्रौपदीकहँ, पराभाव सो दीन्ह ॥
एहि पापते तजेउ तनु, उन्हके गति तुम कीन्ह ॥
पार्थ बाणसे गङ्ग बहाये। ताते पिता धर्मपद पाये ॥
सुने भीमराजा सुख पाये। मेघवरन तब बात सुनाये ॥
भीम सङ्ग हम जैहैं तहां। भद्रावती नगर है जहां ॥
क प्रण तेज अश्वलै जाऊं। धर्मराज को यज्ञ कराऊं ॥
भीम पितामह कर्णको नन्दन। करि रण उत्कट हेवु तुरंगन।
सुनि हर्षित भये धर्मकुमारा। यज्ञभेद बहु पुण्य प्रकारा ॥
केते विप्र कौन मतिदाना। केते घृत साकल्य प्रमाना ॥
व्यास कहे मुनि वीश हजारा। लाख कलशहै घृत विस्तारा ॥
तीन लाख साकल्यहिं लाई। इन्दु कुंदनके अश्व बनाई ॥
पीत पूछ अरु वपु है श्यामा। चैत पूर्णतिथि कीजै कामा।
कञ्चन पत्र बांध शिर ताही। अपने नाम यज्ञपति चाही ॥
हम छोड़ाहै अश्व यह, जगत वीर कोउ और।
घड़ी एक जो गहि रखै, जीतव सो प्रणठौर ॥
करै अश्व लघुशंका जहँा। सहसन गऊ दान दे तहँा ॥
एकहिं सेज द्रौपदी साथा। साधन योग करो नरनाथा ॥
यावत अश्व गेह नहि आवे। तावत भोजन विप्र करावे ॥
वीचहि खड़ग राखिकै राजा। वर्ष दिवस सोवत यह साजा ॥
पासे मन जब जाई। वही खड़ग चितवै तबराई ॥
ध इन्द्रहि मन धारा। इस्त्री व्रत पालौ नहिं पारा ॥

सत्यकेतु नाम सुनु राऊ । अश्वमेध कै सबै नशाऊ ॥
व्यासगये कहि अपने थाना । राजा करहि हरीको ध्याना ॥
सुनत राउ तब चिन्ता करई । कठिन वरत आशा हरि धरई ॥
अभ्यन्तर आये भगवाना । द्वारपाल ते कहो बखाना ॥

कहो जाय राजापहँ, आये श्रीभगवान ।
सबै जानिकै आनहीं, कीजे जाय बखान ॥

प्रतीहार तब कह हरि पाहीं । तुव अटकावकि आज्ञा नाहीं ॥
कहे कृष्ण राती परमाना । कौने मत हम करों पयाना ॥
सुनि प्रतिहार तहाँ तब गयऊ । जहाँ धर्मनृप स्थित रहेऊ ॥
सुनि सब वचन बन्धु हरषाये । सहित द्रौपदी बाहर आये ॥
राजा हरिहिं कियो परणामा । चारों बन्धु मिले घनश्यामा ॥
विहँसि वचन तब राजा कहेऊ । चिन्ता मम तव मन महँ अहेऊ
तेहि पीछे रानी मिलि आई । भे अचिन्त तब पांचो भाई ॥
पञ्चाली भाषेउ परतक्षक । सदाभक्तके हौ तुम रक्षक ॥
सभामांह तौ लज्जा तारा । दुर्वासा छल मन विस्तारा ॥
सदा भक्तके रक्षा कारण । जगतमाँह कीन्हे तनु धारण ॥

सावधान बैठे सबै, परमहर्ष मन कीन्ह ।
धर्मराज नृप समझिकै, हरिसन भाषे लीन्ह ॥

यज्ञ हेतु हम चिन्ता कीन्हा । नाथ आय के दर्शन दीन्हा ॥
अश्वमेध हम कियो विचारा । जो आज्ञा कर नंदकुमारा ॥
कृष्ण कहे राजा के पाहीं । जगत मांह ऐसा को आहीं ॥

जाना मन्त्र भीम यह दीन्हा । उदर भरे कर उद्यम कीन्हा ।
दैत्यनिसंग भयो मन भंगा । कामी विवश सदासुख रंगा ।
जगत्त माहिं जो धर्म न जाना । महावीर हैं भक्त प्रमाना ॥
जानत नाहिं आप बल वाहीं । भक्त वीर सब देखा नाहीं ॥
रामचन्द्र यज्ञ निरमाये । चतुरङ्गिणिको सङ्ग पठाये ॥
शुक्रमती ग्राम इक अहई । श्रुतदेव तहं राजा रहई ॥
तहँ भा युद्ध महा भयकारी । पुनि बालक दोउ शरननमारै

चारों बन्धु वधे रण, कुश लव दोऊ वीर ।
तुम कत यज्ञ करै चहो, अस भाषे यदुवीर ॥

का तुमको तब रच्छा करिहै । को रण रचे अश्वको हरिहै ॥
सुनिकै भीम कहे तब बानी । अस कस भाषहु शारंगपानी
तोर ध्यान प्रथमे मैं गहेउ । पाछे मन्त्र राजपहँ कहेउ ॥
लम्बोदर तुमहीं जग माहीं । जगत मांह कोउ दूसर नाहीं
तुमतो इस्त्रीके वश अही । कहते कहत मौन ह्वै रही ॥
धर्मराजको भ्रम उपजायो । काहित काज नाश करवायो ॥
अश्वमेध हम तो अब करिहैं । ऐसे गोत्र पापसे तरिहैं ।
जेते वीर जगत मैं आहीं । मारो सबहिं महारण माहीं ॥
तुम हमार सर्वस हौ स्वामी । तुम सबही के अन्तर्यामी ॥
सुनिकै कृष्ण हर्ष अति पाये । तब राजा ते हर्ष सुनाये ॥

धर्मराज ते श्रीपती, भाषे बात विचार ।
पातक जो है गोत्रवध, इम कहँ देहु भुआर ॥

ँ तो पाप करौं सब भारी। सुखते कीजे राज्य अघारी ॥
ीम तबहिं इक उत्तर दीन्हा। पातक कौन आपु हरिलीन्हा ॥
ाप देहि जो तुम कहँ राजा। पाप बढे अरु धर्म अकाजा ॥
हापुण्य मखमें नत होई। तुम कहँ राजा देहैं सोई ॥
म तो यज्ञ करौं प्रण ठानी। करिहौं यज्ञ अश्व धन आनी ॥
ृषकेतू जो कर्णकुमारा। मेघवर्ण सुत प्राण अधारा ॥
ोरे संग दोय जन जैहैं। श्यामकर्ण अश्वहि ले ऐहैं ॥
करौं युद्ध घोड़ा लै आवौं। तबहिं वृकोदर नाम धरावौं ॥
धन जन सब जो है नृप पाहीं। लाओं शीघ्र हस्तिपुर माहीं ॥
ुम सहाय जोहौ जगतारण। तौ हम भरमहिं कौने कारण ॥

सुनिके हर्षे जगतपति, हर्षित आज्ञा दीन्ह।
अश्वमेध परवेश यह, सूक्षम भाषा कीन्ह ॥
जाको सुन जनमेजय, नाशै पाप पहार।
सोई यज्ञ कियेते, नर उतरै भव पार ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

ुनि राजा सो कथा प्रमाना। यामिन गत तो भये विहाना ॥
ेघवर्ण अरु भीम सयाना। वृषकेतू सँग कीन्ह पयाना ॥
ुन्ती नृप औ श्री भगवाना। इन सब कहँ कीन्हेउ परणामा
ाता कछु सम्बर लै दीन्हो। भीमसेन तब भोजन कीन्ह

सुने कुँवर तब कहे विचारा। कश्यप गोतरु कर्णकुमारा॥
धर्म्मराज यज्ञहि मन लाये। ताते अश्व लेन कहँ आये॥

यौवनाश्व तब अस कहेउ, तुम्हरे तो रथ नाहिं।
रथ लीजे मम पाससे, करो युद्ध रण माहिं॥

कर्णपुत्र तब कियो बखाना। मैं ता रथको युद्ध न जाना॥
राजा पुनि कह बाण चलैये। कर्ण पुत्र जब यह सुनि पये॥
तुम तो वृद्ध अहो मैं ज्वाना। तुम्हरे दरशकरैं भगवाना॥
राजा तब दश बाण चलाये। कर्णपुत्र निज शरन उड़ाये॥
तीन बाण राजाको मारा। निष्फल कीन्हे सबै भुआरा॥
अर्द्धचन्द्र कुँवरहि तब छांटे। चमर छत्र गुण शारँग काटे॥
तब राजा धनु पै गुणधारा। साठबाण वृषकेतुहि मारा॥
रक्तबाण कुँवरहि तब लीन्हा। तीन बाण रिस करि तजिदीन्हा॥
सारथि अश्व तजे तब प्राना। जूझे राजा सब दल जाना॥
अग्नि पवनके बाण चलाये। उड़िके सैन्य अग्नि जरि जाये॥

तब राजा दूसर रथहि, क्रोधित भये सवार।
वारिबाण तब भूपमणि, तहँ जो कीन्ह प्रहार॥

ताते सब जो अग्नि बुताये। बाणन्ह कर्णकुमार छिपाये॥
भीमसेन तब देखन पाये। राजा महामार मनलाये॥
कर्णपुत्र तब चक्र चलाये। काटे बाण विलम्ब न लाये॥
इक बाण नृपतिकहँ मारा। क्रोधित भो मद्रेश भुआरा॥
बाण कर्णसुत राई। कर्णपुत्रको मूर्च्छाआई॥

देखत भीम क्रोध तब पाये । गहिकर गदा क्रोध करि धाये ॥
काह कहब राजासे जाई । यह कहि भीम चले रिसि आई ॥
धावत जँघते पवन चलाये । हयगजरथ पैदल उड़िआये ॥
बहुते गज तहँ भये संहारा । जसे पुण्य पाप करु छारा ॥
यौवनाश्व राजाको मारा । ताको नाम सुवेश उदारा ॥

कुँवर हांक तब भीमको, क्रोधित दीन्हे आय ।
गदा घाव तब धायके, मारे भीम घुमाय ॥

क्रोधित भीमसेन फिर आये । सो वैरी फिरि भूमि गिराये ॥
तब सुवेश आपुहि संभारा । भीमसेन को भूमि पछारा ॥
भीम उठाये गजते भारे । राजपुत्रके ऊपर डारे ॥
मारेउ गदा घाव भूवारा । पड़े दोउ रणभूमि मँझारा ॥
राजा सुनो कथा अब आगे । कर्णपुत्र मूर्च्छाते जागे ॥
यौवनाश्वको मारेउ बाना । पांचशरन नृप मोहन जाना ॥
राजा मूर्च्छित परे मैदाना । कर्णपुत्र धर्म्मी करि ज्ञाना ॥
फेंट छोड़ि अम्बर तब लीन्हा । कुँवर पवन तब राजहिं कीन्हा ॥
भाषे जो भक्ती भगवाना । तब राजा पाये जिवदाना ॥
यहि अन्तर राजा तब आगे । रहु रहु कह तब बोलन लागे ॥

चेत पाय देखा तबै, कुँवर डोलावे पौन ।
देखत लज्जा भै नृपहिं, तब कीन्हाहै मौन ॥

गल लगाय तब भेंटा राऊ । तुमहीं हमरे प्राण बचाऊ ॥
सदा धर्मरत तब पितु रहेउ । ताके पुत्र कुँवर तुम अहेउ ॥

देश राज धन प्राण तुम्हारा। धन्यवीर हौ धर्म भुआरा॥
अवरन केर नहीं है कामा। चलो तहां जहँ भीम सुठामा॥
यौवनाश्व औ कर्णकुमारा। भीम पांह हर्षित पगुधारा।
कहे जाय तप युद्धन काजू। कर्णपुत्र मोहिं रच्चेउ आजू।
प्रथम किये मूर्च्छित मैदाना। तेहि पीछे दीन्हो जो दाना
अब है युत्तकाज कछु नाहीं। चलो भीम मेरे पुर माहीं॥
अब मेरे मन उपजो ज्ञाना। दर्शन जाय करब भगवाना॥
दशसहस्र गज श्वेत जु अहई। लै चल मखको राजा कहै

राजा यज्ञ अरंभेऊ, रच्चक हम को जान।
यहि प्रकार ते प्रीतिकरि, पुर कहँ कीन्ह पयान॥

प्रीति भये तब देखन पाये। मेघवर्ण हय लेकर आये॥
नगरमांह कीन्हा परवेशा। अन्तःपुर पठयेउ सन्देशा॥
आरति लै रानी कर साजा। अन्तःपुर आये तब राजा।
राजा कहेउ सुनो तुम रानी। वीरन्ह के आरति करु आनी
कण्ठ शत्रु जो अहै हमारा। सो तुम राखौ कर्ण कुमारा॥
पीछे भोजन पान कराये। हर्ष होय तब भोजन पाये॥
शयन किये रैनी सख्याता। गत भइ रैन भयउ परभाता
राजा उठि सेवकहि हँकारा। सबते बात कहे सञ्चारा॥
दल साजन को कर मनलाई। हर्षित सब हस्तिनपुर जाई

नगर लोग सब जेते, दल बल हय गज साथ।
नगर हस्तिनापुर चले, जहँ दर्शन यदुनाथ॥

यौवनाश्व माताके पासा । जाय तहां ये वचन प्रकाशा ॥
माता चलौ हस्तिपुर माहीं । कृष्ण चरण जेहि पुरमें आहीं ॥
धर्मराज यज्ञहि मन लाये । देश देशके नृप सब आये ॥
सदा धर्म्मरूपहि भगवाना । जाके चरण गङ्ग परमाना ॥
माता चलो ताहि पुर माहीं । जहँ वस नृपति युधिष्ठिर जाहीं ॥
तब माता कहि वचन सुनाई । कारण कवन तहां को जाई ॥
देव धर्म्म नाहीं हम जाना । वहां गये मम देश नशाना ॥
गोरस अन्न दासि अरु दासा । गये हमारे होहिं विनाशा ॥
कृष्ण युधिष्ठिरका दोउकरई । आपन पुर मिथ्या परिहरई ॥
जैसे गृह वेहैं मन दीन्हा । तैसे गृह आपन मन कीन्हा ॥

बहु प्रकार राजा कहे, माता मानति नाहिं ।
बांधि मातु कहँ राव तब, डारा डोली माहिं ॥

यहि प्रकार माताकहँ लीन्हा । तब राजा चलबे मन दीन्हा ॥
पुरके लोग चले सब सङ्गा । नृपति सदन हिय भरे उमङ्गा ॥
नाना धन जेते गज श्वेता । चले हर्ष नृप सबै सचेता ॥
दिवस पांच तो पन्थ सिराना । देश हस्तिना आय तुलाना ॥
योजन एक हस्तिपुर रहेऊ । राजापाहँ भीम तब कहेऊ ॥
इहां रहो राजा तुम भाई । मैं यह बात जनावों जाई ॥
यह कहि पुनः वृकोदर गयऊ । हस्तिनपुर प्रवेश तब कियऊ ॥
चारों बन्धु और भगवन्ता । इनकहँ मिलेउ सप्रेम तुरन्ता ॥
भाषेउ तब यह बात बुझाई । अश्व सहित लै आयउँ राई ॥

राजा सब परिवार समेता । आयउ तव दर्शनके हेता ॥
दरश चहै प्रभु तव चरणनको । जो तारन सुर नर मुनि जनको
तब नृप धर्मराज अस कहई । जाहु भीम द्रौपदि जहँ अहई ।
जाय कहहु अस वयन हमारा । तुम द्रुत नवसत करहु शृँगार
भूषण अलङ्कार सजु अङ्गा । वेगि चलहु कुन्तीके सङ्गा ॥
भीमसेन द्रौपदि पहँ गयऊ । पूछा कुशल कहन तबलयऊ ॥
कहेउ भीम सब कुशल हमारा । यौवनाश्व मम पुर पगुधारा ।
परभावति अति नैनविशाला । सखी सहसदश सङ्ग रसाला

तुरग सहित सब आयऊ, भूषण करहु बनाव ।
दरश तुम्हार चहत हैं, भेटहु आगे जाव ॥

भीम कहा तब सुनु मम प्यारी । विनु शोभा नहिं देव मुरारी
यहि अवसर नहिं यादवराई । विनु गोविन्द नहिं शोभा पाई
तब द्रौपदी भीम से कहीं । हैं हरि निकट गये नहि अहीं ॥
इतना कहत भीम सञ्चारा । नृपके पास देखि हरि खरा ॥
चले नृपति सँग चारो भाई । कृष्ण सहित शोभा बनिआई ॥
रथ चढ़ि चले युधिष्ठिर, गज चढ़ि चारो भाइ ।
चले नकुल सहदेव सह, पार्थ भीम समुहाइ ॥
यौवनाश्व दल साज बनाई । हय बनाय कर अग्र चलाई ॥
[illegible] पै अमरहुँ जाई । हनि निसान जनु घन घहराई ॥
[illegible] दल गरुअ भुआरा । महि डगमगै सैन्यके भारा ॥

ाय दोउ दल सन्मुख भयऊ। धर्मराज तव देखन लयऊ॥
खि नृपति मन कीन्ह विचारा। वढ़े नृपति हैं गरुत्र भुत्रारा॥
यौवनाश्व कहँ देखा, सुत पत्नी परिवार।
तबसे रथ उतरे नृपति, दोऊ मिले भुत्रार।

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

ाम्पायन ऋषि तव आगे। जन्मेजय सन भाषन लागे॥
ौवनाश्व तव लागे पाऊ। आशिष दीन्ह युधिष्ठिर राऊ॥
ुम मोरे जस चारो भाई। मिलेउ कृष्ण नृप दीन्ह दिखाई॥
रहु चरण उर करु सेवकाई। जेहि ते अहै हमार बड़ाई॥
ौवनाश्व प्रणयउ यदुवीरा। भो निर्मल बहु शुद्धशरीरा॥
मस्कार कुन्ती कहँ कीन्हा। नृप द्रौपदि सह आशिष दीन्हा॥
न्य तुरँग सब कहवे लयऊ। जेहि हित तीन वीर चलिगयऊ॥
ानि वृषकेतु कर्ण के बारा। जेहिते भयउ सुखी परिवारा॥
भावी धन्य हमार यह, पूर्व पुण्य बहु कीन्ह।
दर्शन नयन जुड़ानेऊ, नृपये कहवे लीन्ह॥
ुनि अर्जुन माद्री सुत आये। भे अनन्द तब अङ्कम लाये॥
अर्जुन नमस्कार तव कियऊ। अस्तुति करि तब कहवे लयऊ॥
मरे तुम जस धर्म नरेशा। अति गरिष्ठ जस देव महेशा॥
न्य देश जहँ बनहु नरेशा। हमरे भाग्यन यहां प्रवेशा॥

पुनि सुवेश पारथ ढिग गयऊ। करि प्रणाम तब कहवे लयऊ॥
वृषकेतू के कीन्ह बखाना। जिन्ह के करत मिले भगवाना॥
धन्य तहां जहँ वस भगवाना। विनु गोविंद नर प्रेत समाना॥
हरि सम दुर्लभ और न आना। कृष्णनाम नित करौ बखाना॥

धर्मराय यदुपति सहित, आनँद भये अपार।
मिल कर सब आवत भये, नगर कीन्ह पैसार॥

पहर एक जब निशि गत भयऊ। दामोदर तब कहवे लयऊ॥
सुनहु बात इक धर्मकुमारा। यज्ञकाज सब करहु सँभारा॥
चैत पूर्णिमा गत भो राजा। अब विशाख शुभ करिये काजा॥
मास विशाख नौमितिथि धरिया। तेहि दिन यज्ञ अरम्भनकरिय
तबहीं कृष्णकिये अनुसारा। यज्ञ करे कहँ यह व्यवहारा॥
कच्चा सुवरन सागर पारा। तहां विभीषण रहे भुआरा॥
तहँवांसे कञ्चन जो आवे। सोइ यज्ञ के यतन करावे॥
तब राजा मन विस्मय कीन्हा। कौन पुरुष कहँ यश यह दीन्हा॥
तब अर्ज्जुन अस कहवे लागे। राजा कहहु हमारे आगे॥
जेहि कारण तुम विस्मय करहू। सो आयसु मेरे शिर धरहू॥

तब राजा मन हर्षेउ, हँसिके वीरा दीन्ह।
अर्ज्जुन लीन्हो विहँसिके, चरण जु वन्दे कीन्ह॥

कृष्णहि किय प्रणाम कर जोरी। होहु सहाय जगतपति मोरी॥
[illegible]हीं कृष्ण किये अनुसारा। वेगि जीत फिरु पाण्डुकुमारा॥
अर्ज्जुन दक्षिण दिशिगयऊ। तहँ इक राक्षस भेंटत भयऊ॥

ाण्यो दैत्य भाजि कहँ जासी । मार्गों तोहिं मेलिके फांसी ॥
तब अर्ज्जुन तिष्ठित ह्वै कहई । कौन वीर तैं डाटत अहई ॥
तब दानव अस कहै प्रचारी । राय विभीषणके रखवारी ॥
तब अर्ज्जुन किय मन अनुमाना । मारों दैत्य करों यशमाना ॥
दैत्यशैल शिर ऊपर छावा । सन्मुख अर्ज्जुन सपदि चलावा ॥
अर्ज्जुन सपदि वाण कर लीन्हा । शैल काटि तो दुइ टूक कीन्हा
दैत्य भाजि लङ्काकहँ गयऊ । हनुमत सों भेटन तब भयऊ ॥
कह दानव सुनु पवनकुमारा । इक क्षत्रिय वड आउ जझारा ॥
तहँवां सों भागत मै आवा । तुम्हरे शरणहि जीव बचावा ॥

मैं जानत हौं राम है, की तौ लक्ष्मण आहि ।
भगि आये हम तुमपहां, जाहु खोज लेहु ताहि ॥

यह सुनि पवनतनय मन हसा । चलहु साथ नहिं कीजे य
कह दानव सुनु पवनकुमारा । हम नहिं जाउब साथ तु
शैल एक मैं उन्ह पर डारा । धनुष टँकोर कीन्ह वे
तिनके डरसे भगि मैं आवा । कैसे मुख मैं उन्हहिं
वन्दि चरण दानव गो तहां । नृपति विभीषण
तब कहि वचन ताहि समुझावा । सुनत विभी
तब हनुमत निज मन अनुमाना । पवनतन
पवनतनय तब ऊलन्दा, दर्शन प
सेतुबांध कहँ चलिउ, कहँ श्री

हनुमत कोपि कहै अस बाता। कौन वीर यह आहि विधाता
पूछेउ आये तुम केहि कारन। तब कह पारथ लाउ न बारन
कह अर्जुन सुनिये कपि वीरा। हम अर्जुन आहहि रणधीरा
ब्रह्म सहोदर वध हम कीन्हा। चिन्त सोइ युधिष्ठिर लीन्हा
बोलेउ राज्य छोड़ि बन जाहीं। भारी पाप भये हम पाहीं॥
छगुनत गये रात सब बीती। चिन्ता नृपहिं भयउ नहिं रीती
व्यास ऋषै तब पूछै लीन्हा। कारण ताहि यज्ञ उन्ह कीन्हा॥
तब राजा दोऊ कर जोरी। सुनहु व्यास मुनि विनती मोरी॥
गुरू सहोदर वध हम कीन्हा। भारी पाप हमे विधि दीन्हा॥
कहा व्यास सुन धर्म सुराजा। त्रेता कियउ राम मख साजा॥
रामचन्द्र त्रेतामहँ भयऊ। पूर्विल कथा कहय तब लयऊ॥
रामचन्द्र रावण वध कीन्हा। ता कारण यज्ञहि चित दीन्हा॥
ऐसन यज्ञ तुमहुँ जो करहू। तब यहि पापन ते उद्धरहू॥
व्यास ऋषय असकहिके गयऊ। तेहिके सेवक वनचर रहेऊ॥
रामचन्द्र तब किय अनुमाना। केहिविधि उतरव जलधिमहाना
तीन दिवस सागर तट रहेउ। तऊ न पथ सागरसन लहेउ॥
तब कोपेउ लक्ष्मण बलवीरा। खैंच श्रवणलगि धनुपै तीरा॥
करधरि जांबवन्त समुझावा। स्वामी उदधि आपु चलि आवा
सुनि लक्ष्मण मन धीरज भयऊ। ब्राह्मणरूप सिन्धुचलि
हे स्वामीका अवगुण मोरा। केहि हित बाण शरासन जोरा॥
ां सेवक तुव आदि गुसाँई। तुम मारहु मम काह बसाई॥

जो मोकहँ दीन्ह वड़ाई। उतरहि कपि तोका प्रभुताई॥
अरु नील जो कपिकर वीरा। औ सुग्रीव आहिं रणधीरा॥
अरु नील खेल लरिकाई। वाही समय ब्रह्मऋषि आई॥
न्ह अशीष दीन्हा मनलाई। सिंधु शिला तोहि देउ तराई॥
नल नील आहिं तुव साथा। आज्ञा देहु सुनहु रघुनाथा॥

सो अशीश तिन्ह पाये, कीजै का पररोष।
सो आज्ञा इन्ह दीजिये, बांधहिं सागर चोख॥

हनुमत सुग्रीव वुलावा। तुरत आय तिन्ह प्रभु शिरनावा॥
कपि कहा सबहि समुझाई। गिरि पहार तुम आनहु जाई॥
सब मिलि पहार ले आये। सेतु बांध तब तुरित बँधाये॥
मचन्द्र तब आज्ञा दीन्हा। चले वीर निर्भय मन कीन्हा॥
हि सिसु सागर बाँधेउ वीरा। तब तुअ लंक जरे रणधीरा॥
तुबन्ध चढ़ि जाय न देऊं। मैं हनुमत परतिज्ञा लेऊं॥

रामचन्द्र कर सेवक, पवनपुत्र हनुमान।
रण जीतेउ कौरव दल, देखों तुअ अनुमान॥

र्जुन बाण हाथके लीन्हा। तब हनुमन्तहि उत्तर दीन्हा॥
हि राम अतुलित वल दीन्हा। तौ समर्थ ममखोजे लीन्हा॥
म हनुमन्त पवनसुत जाये। बल अनुमान न मोसन आये॥
हु सागरहि करौं जरि छारा। कहु वाणन ते वांधो सारा॥
हहु मारि पौरुष तुव चरों। की तोहिं मारि सिंधु महँबूरों॥
ोपि वचन जब अर्ज्जुन कहेउ। हनुमत तव सन्मुख ह्वै रहेउ॥

कोपि पूंछ तब फेरा, हनुमत वीर रिसान।
दोऊवीर विचच्छण, दोऊ चतुर सयान॥

तब अर्ज्जुन धनुशर सन्धाना। हनुमत सन भाषेउ परमाना॥
एकहिं बाण समुद्रहिं नाखौं। तब निज नाम धनञ्जय राखौं॥
तब हनुमन्त कोपि कह बैना। देखब बाण तोर भरि नैना॥
मोर बांधते चढ़िके देखा। तोर बाण मोरे केहि लेखा॥
तोरों बाण तो हनुमत वीरा। नातरु सेवक हौं रणधीरा॥
जो तोरे जिय अस मन देऊ। तब अर्ज्जुनहुँ प्रतिज्ञा लेऊ॥
दोनो वीर पैज जब किये। डोलेउ नारायण तब हिये॥
धरे ध्यान तब श्रीभगवन्ता। जहांहुते अर्ज्जुन हनुमन्ता॥

यज्ञ विषय जहँ थे हुते, आसन टरु भगवान।
तबहिं कृष्ण तहँ ते उठे, भक्तिवश्य भगवान॥

उठे कृष्ण द्वारका वासी। सबै कृष्ण घट आहिं निवासी॥
एक रूप राखे मख पाहां। दूसर देह सिन्धु तट माहाँ॥
खैंचेउ बाण शरासन ताना। मारेउ शर पारथ सन्धाना॥
दोऊ वीर प्रतिज्ञा कीन्हा। कृष्ण चरण तव सुमिरे लीन्हा॥
उदधि पाटिगो आरहिंपारा। कह अर्ज्जुन सुन पवनकुमार॥
जो यह पाव तोरु हनुमाना। तौ न छुवों मैं धनु गुन बाना॥
कृष्ण चरित्र तबै यह कीन्हा। बांधक तरे पीठ प्रभु ...
तब हनुमन्त कोपि कह बाना। देखब बांध तोर मैं भ्राता

हनूमान बहु कोप करि, उछल बांध बलवीर ।
जहँवाँ हनुमत पग धरैं, हरि तहँ देहिं शरीर ॥
मत लज्जित ह्वै गयऊ । दौरि चरण अर्ज्जुन कहँ नयऊ ॥
त जो कञ्चन पावों । तब मैं हस्ती नगर सिधावों ॥
मत यह केतिक बाता । सुवरन आनि देहु मैं भ्राता ॥
र्जुन कहँ धीरज दयऊ । कहि यह वचन पवनसुत लयऊ
म अर्ज्जुनहि त्रिठावा । आज्ञा लै हनु लंकहि आवा ॥
। खोजे कञ्चन मेरू । कञ्चन खोज लेत चहुँ फेरू ॥
खोजत बीतेउ तीन दिन, हनुमत मन अनुमान ।
क्रोधित भे तब हनुवली, लङ्का सबै सकान ॥
ब भेद विभीषण पावा । जहां पवनसुत तहँवां आवा ॥
ल जोरि वीनती कीन्ही । कवन काज प्रभु आयसुदीन्ही ॥
हनुमन्त कहैं सुनु वीरा । कञ्चा सोन देहु रणधीरा ॥
विभीषण अंजनिपूता । तुम आपुही कीन्ह अजगूता ॥
ो लङ्का खोरि जराये । तहँ सो कञ्चन रहे न पाये ॥
बात सुनहू हनुमाना । रामचन्द्र सुमिरहु बलवाना ॥
हम तुम्हार सेवक अहैं, मोपर वृथा कोहाहु ।
जिउ हमार तुव आगे, जैसे शशिको राहु ॥
तो बात पवनसुत सुनेउ । परमज्योतिको सुमिरण
बौ यह तब भई तुरन्ता । काहे कोपेउ तुव हनुमन्ता ॥
म लात कंगूरन मारा । सो खसि परेउ समुद्र मँझार

सो कञ्चन समुद्र महँ अहई। मांगि लेहु यह वाणी कहई॥
तबहिं विभीषण विदाकरावा। तबहीं चला पवनसुत आवा॥
डाँटि दर्प जो कह हनुमन्ता। देहु रत्न नहिं बांधु तुरन्ता॥
ब्राह्मण रूप उदधि प्रगटाना। हनुमतसे छल कियउ महाना॥
हम नहिं जानहिं कञ्चन मेरू। काहे कोपि कहत चहुँ फेरू॥

हम नहिं जानहिं हनुमत, कञ्चन मेरु सुमेरु।
जो घट मोरे होहितौ, खोजि लेहु चहुँ फेरु॥

कहि यह सिंधु हँसो मदमाता। तब हनुमन्त कोपि कह बाता॥
जैसे लङ्का मैं जो डाहा। तैसे आज समुद्र उछाहा॥
पवनपुत्र तब मैं हनुमन्ता। नातो कञ्चन देहु तुरन्ता॥
नातो रारि होइ यहि ठाईं। देखि हो आजु मोरि मनसाई॥
तब हनुमन्त लँगूर उठावा। अवलोकत मीनहुँ डर खावा॥
तब कीन्हेउ अजगुत हनुमन्ता। विधी विष्णु तब कांपु तुरन्ता॥

देहु मोहिं कञ्चन नहीं, कह अस पवनकुमार।
ब्रह्मा विष्णु जु रखहीं, तौ मारों परचार॥

इतनी वात पवनसुत करिया। सिन्धु डरे मत्सहु खरभरिया॥
कह रावौ सुनु सिंधु गुसाईं। इहां मृतुत्र हम सब कर आंई॥
देहु सोन सबके जो रहई। रावो अस समुद्र से कहई॥
कह समुद्र जो हैं घट तोरे। आनिदेहु कस लावहु भोरे॥
उगलि मीन तब कञ्चन दीन्हा। करन उठाय सिंधु तब लीन्हा॥
पवन पुत्रके आगे आवा। करि विनती हनुमत समुझावा॥

ाहिं जानो धर्म दोहाई। क्षमा करहु अपराध गोसाई॥
व मंत्र कहां तो पावा. सो मोहि आपुहि आनि मिलावा
तबहिं पवनसुत हर्ष, कञ्चन लिये सुमेरु।
आनि दीन्ह अर्ज्जुन कहँ, अङ्कमाल किय फेरु॥
हनुमत अर्ज्जुन सन कहेउ। हम सेवक अब राउर अहेउ॥
सुमिरहु आवें तोहिं पासा। अरु हनुमत यह वचनप्रकाशा
रामचन्द्र के काजा। विमुख होहिं तौ मातुहिलाजा॥
तब अर्ज्जुन सम्बोधेउ, सुनहु वीर हनुमान।
हमहुँ तुरत अब जाहिंगे, जहँवां श्रीभगवान॥
मालिका अर्ज्जुन कियऊ। पुरहस्तिन कहँ मारग लियऊ॥
मन्त तब उहवां गयऊ। तब अर्ज्जुन हस्तिनपुर अयऊ॥
न्ह प्रणाम पार्थ तबजाई। कृष्ण लीन्ह तब अङ्कम लाई॥
न कुन्ती तब हर्ष कराई। द्रौपदि सँगलै आरतिलाई॥
प युधिष्ठिर अङ्कम कीन्हा। सहदेव नकुल चरण शिरदीन्हा॥
पांचो पाण्डव मुदित मन, कृष्ण युधिष्ठिर राय।
धन्य धन्य तुम अर्ज्जुन, यज्ञ संबोधे आय॥
न राजा अब कथा प्रमाना। पतिव्रता परपुरुष नजाना॥
राज नृपती सख्याता। पूछे व्यास ऋषी ते वाता॥
र्म अधर्म पुण्य अरु पापा। लक्ष्मी गृह कैसे अस्थापा॥
ारि वर्ण के धर्म प्रमाणा। अपने धर्म केरि निर्माणा॥
ह्मण क्षत्री शूद्र वईसा। चारो वर्ण धर्म परदीसा॥

जो जन जापन होम प्रमाणा। अपने धम करैं निर्माणा॥
षट कर्मन विप्रन परमाणा। इह सब विना विप्रकत जाना।
दान शौर्य अरु सत्य जुझारा। चत्री धर्म्म याहि परकारा॥
कृषी वणिज वैश्यहु करजाना। सेवन धर्म्म शूद्र परमाना॥

यहि प्रकार सुनु राजा, धर्म कथा परभाव।
रानी धर्म्म जो राजा, तोहिं कहौं अब राव॥

पति आज्ञा सनद्ध रह जोई। पर पुरषनसे रहे अगोई॥
सास ससुरको सेवा करै। वीथिन माहिं शोचि पगुधरै॥
इस्त्री धर्म्म इहै परकारा। अब अधर्म्म जो सुनो भुआरा।
कर्म्मन छहो हीन द्विज जोई। चत्री वंश और जो कोई॥
आपन धर्म्म जो वैश्य न जाना। दूसर कर्म्म करै परमाना॥
शूद्र गर्भ उत्तम ते करै। इहै अधर्म रूप सञ्चरै॥
ये गृह कहँ नारी जो जाई। बिना काज सूनो हो राई॥
पति के आज्ञा नहिं जो माना। अपर पुरुषते बात बखाना
विधवा होके करै शृँगारा। जानहु सब अधर्म्मके सारा॥
माता पिता पुत्र नहिं सेवा। चञ्चल पुरुष नारि जो भेवा

इहै सकल सुन राजा, कहौं अधर्म्म उपाय।
पुण्य पाप औ राजा, सुनो सत्य मन लाय॥

गुरुको शिष्य जान सम हरी। छेद वेद मनमाहँ न करी
है गुरु ब्रह्म रूप समाना। भिन्न भाव वाको नहिं जाना
॰। पवित्र सुकीरति रहै। मातासम परनारिहि कहै॥

...क नाहीं होत निराशा । कूप तड़ाग बाग परकाशा ॥
...पुण्य जगत महँ सारा । व्यास कहे सुनु पाण्डुकुमारा ॥
...कर्म कै सुनो विचारा । गुरुको आनहिं भाव निहारा ।
...नाहि सत सुकृत प्रकाशा । परनारीते सदा विलाशा ॥
...क जन निराश फिरजाई । ज्ञान धर्म हृदये नहि राई ॥
...अपवित्र सदा जो रहै । मिथ्या वचन सन्तसे कहै ॥
...द्रोह पावे न प्रसादा । यह सबते है परम विषादा ॥

यह सब पातक जगत है, परधन हर जो कोय ॥
सदा पाप मन वसत है, राजा सुनिये सोय ॥

...कोभाषों अस्थाना । सदा पवित्र जौन नर जाना ॥
...त वध कन्या जु कहावे । ताके दान धर्म फल पाव ॥
...तिव्रता नारी जो होई । सदा पवित्र रहति है सोई ॥
...ज वैष्णव अरु गुरुजन माना । देवालय बहु कर निर्माना ॥
...रु कौ निंदा नहिं करहीं । ताके गृह लक्ष्मी सञ्चरहीं ॥
... सुनु राजा कथा विछेदा । जहां लक्ष्मी तहां न भेदा ॥
...के सदा जुआ मन भावे । सुरापान में चित्त रमावे ॥
...दारन रति सबे सुहावे । धातु नाम जो सबै चुरावे ॥
...तक तेल घीव अरु धाना । मूल पुष्प फल काठ सम
...नवष्या संक्रान्ति सुहावे । एकादशी नारि मनलावे ॥

ग्रहण समय अरु श्राद्ध दिन, तिय सँग भोग
देव गुरू नहिं मानहीं, तहां न लक्ष्मी जाय ॥

व्यास कहै राजा के पाहा। यज्ञ अश्व जानहु नरनाहा॥
धर्मराज भीमहि हँकराये। जाहु द्वारका हरि हित भाये॥
आनहु कृष्ण सहित परिवारा। द्वारावति मधुपुरी मँझारा॥
सबहि सङ्ग ले आवौ जाई। राजा भीमहि कहा बुझाई॥
भीमसेन तब हर्ष प्रमाना। तब द्वारावति कियो पयाना॥
पहुँचे जाय कृष्णके द्वारा। जेंवतथे तहँ नन्दकुमारा॥
बहुविधि भोजन परसे आनी। पवन करत चारों पटरानी॥
जाम्बवती अरु रुक्मिणि बाला। सतभामा लच्मणा रसाला
जाम्बवती तब हास्य बखाना। नँद गृह भोजन भूलेउ खाना
च्चीर पियत बन महँ यदुराई। सो सब चितसे दीन्ह भुलाई

कौतुक नारी करत तहँ, सोनहि कीन्ह बखान।
तेहि अवसर तहँ पहुँचेऊ, भीमसेन बलवान॥

तब सतिभामा हरिते कहेऊ। आये भीमसेन तो अहेऊ॥
इन्हां न आवन दीजे नाथा। बूझे भीम कहत तब गाथा॥
कौतुक भीम करन तब लागे। ठाढ़ होय आंगन महँ आगे
कैधौं अशुचि होउँ भगवाना। कैधौं मैं पापी अज्ञाना॥
कहा सोदाइ हरीके आहे। ऐसा काम कीन्ह जो चाहे॥
जो वाकहँ हम देखन पावें। नाथा श्रवण हीन करवावें॥
जो कछु अटके कण्ठ तुम्हारे। देउ गदा ते वेगिहि टारे॥
कौतुक सुने हर्ष भगवन्ता। हँसिके भीमहि कहे तुरन्ता॥
तो भीमजु भोजन करहू। मनमें कछु रोष नहि धरहू॥

भीमसेन तब भाषेउ, जो तुम भये भुआर ॥
जानो हरि हम जेंयँ भे, आपुन करो अहार ॥

सुनिकै कृष्ण हर्ष मन लाये । बांह गही भीमहिं बैठाये ॥
भोजन पान तुरत करवाये । किय आचमन परम सुखपाये ॥
उठे भीम निमन्त्रण दीन्हे । बांचेउ कृष्ण हर्ष तब कीन्हे ॥
तब श्रीपति अक्रूर बुलाये । पुनि अनिरुद्ध प्रद्युम्न मँगाये ॥
कृतवर्मा तुरन्त हँकराये । सुनि सात्यकी सारथी धाये ॥
तबते कहा कृष्ण यदुराई । साजहु दल हस्तिनपुर जाई ॥
बाजिमेध यज्ञहिं परवाना । देखहु जाय ताहि अस्थाना ॥
सुनिकै सबहिं हर्ष अति पाये । आगे पुरके लोग सिधाये ॥
वर्ण वर्ण हय चढ़ि सबधाये । श्वेत वाजिपर श्रीहरिआये ।

वर्ण वर्ण सब हय चले, कौतुक होत अपार ।
बल वसुदेव बुझायके, भाषे नन्दकुमार ॥

रक्षाकरो नगरके माहां । रहो द्वारका कह यदुनाहा ॥
तब वसुदेवजु बोलन लागे । प्रेम अर्थ श्रीपतिके आगे ॥
साधूलोग धर्म्म जो जाना । तब तो सँगलीजै भगवाना ॥
नारीवश कामी जन होई । दुष्ट लोग जेतिक हैं सोई ॥
तिनके सङ्ग गमन जनि करहू । वचन मोर तुम हिय में धरहू ॥
यह कहिके तब बिदा कराये । कृष्णचलेउ बहु हर्ष बढ़ाये ॥
रानी सबै कृष्णके सङ्गा । हर्षित गात चले श्रीरङ्गा ॥
भीम करत हांसी मग माहीं । देखत बहुत नारिके पाहीं ॥

वर्णी वर्णी सब चलि भे तहां । आये एक सरोवर जहां ॥
कुञ्ज अनेक हंस वहुताई । नाना भँवर तहां गुंजराई ॥

कौतुक प्रेमकथा हरी, कहे रुक्मिणी पांह ।
भानु अस्त जब लीन्ह है, सदा भँवर रस चाह ॥

निशिके मांह हर्ष तव पावे । प्रात विकसिके पतिहिं दिखावे ॥
दुस्त्रीके मन थिर ना रहे । सुनि प्रत्युत्तर रुक्मिणि कहे ॥
यहां न पक्षपात कछु राखों । सत्यवचन प्रभु तुमसन भाखों ॥
भौंरा तो बालक सम अहई । माताके हिय भीतर रहई ॥
बालक सम रोदन सो करई । माताहिय अन्तर सञ्चरई ॥
प्रेम सहित सुत गोद लगावै । प्रीतिहेतु मन चञ्चल धावै ॥
जब रुक्मिणि यह बात जनाई । सुनतहि कृष्ण परमसुखपावै
रहे रातभरि हरिपुनि तहां । अनुपम पाथ सरोवर जहां ॥
तबहिं चले आये यहि भांती । मिले हरीके बाल सँघाती ॥

नाना कौतुक सभासब, करत श्यामको देख ।
परम अनंदित हर्षहिय, आनि सखा सब पेख ॥

पाछे सब गोपी तब आई । हर्षित दर्श कृष्णको पाई ॥
नाना कौतुक भाव बनाई । चले अनेक संग मन लाई ॥
सब संग मिल चल भगवाना । तब यमुना तट आय तुलाना
तहँ उतरे प्रभु श्रीयदुराई । नगर लोग सब भेंटेउ आई ॥
ब्राह्मण अरु वन्दीजन नाना । पावनगुण गावत सविधाना ॥
नारी देखहिं घनश्यामा । संन्यासीको करैं प्रणामा ॥

कि सावधान इत रहो। धर्मराज को पुर महँ कहो ॥
निशि भो विगत प्रात जब भयऊ। सबै राखि हरि अंकत लयऊ
अश्व चढ़े सब जन ले साथा। पुर हस्तिन गौवने यदुनाथा ॥
नाना कौतुक अस्तुति, पन्थ मांह विस्तार।
बहुत होत भये नाटक, सूक्ष्म किया विचार ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

वैशम्पायन कथा सुनाये। राजा गृह तब श्रीपति आये ॥
तब अन्तःपुर गे यदुराई। राजा देखि परम सुखपाई ॥
धृतराष्ट्रक अरु विदुर बन्धुगन। कृष्ण मिलेउ पारथसह सबजन ॥
भेट कृपाचार्य्यहि से कीन्हा। धर्मराज तब पूंछन लीन्हा ॥
आए सङ्ग वंश परिवारा। कहे कृष्ण सब आउ भुआरा ॥
पिता और हलधरको ताहीं। रक्षाको राखो पुर माहीं ॥
सुने धर्म राजा सुख पाये। अन्तःपुर तो श्रीपति आये ॥
कुन्ती और सुभद्रा भेटी। पञ्चाली भेटी दुख मेटी ॥
पीछे धर्मराजपहँ आये। धर्मराज अर्ज्जुनहिं बुलाये ॥
कुन्ती आदिक जेती नारी। निपुण काज करकर शृङ्गारी ॥
सबै सङ्ग ल चलिये, जेहि थल सब यदुवंश।
धर्मराजके वचनका, सब नर करहिं प्रशंस ॥
चले सबै सङ्गहि हरि लीन्हे। आगे सबन अश्व

राजा चले सबै दल सङ्गा। नारी सब तौ परम अनङ्गा॥
आये सबै यमुन तट जहां। सब यदुवंशी उतरे तहां॥
देवकि और रोहिणी आई। कुन्ती चरण परी सो जाई॥
रुक्मिणि अरु सतिभामा नारी। कुन्ती चरण परी व्यवहारी
पाञ्चाली हरि जन तिहि परशी। यहि परकार त्रिया सब द
सतिभामा परिहास कर तहां। परम कथा सतिभामा कहा
पञ्च पुरुष वश तुम कस कीन्हा। तब पञ्चाली यह वर दीन्ह
तुम कछु बोल हरी ते कहो। कैसे पुरुष कीन्ह वश चहो।
आपन तन मन दीजै वारी। तबहिं कन्त वश करै सो नारी

एक पुष्पके अर्थ तू, सखिकै दीन्हेउ कन्त।
कैसे प्रीतम होत वश, मुँह की प्रीति अनन्त॥

यह प्रकार ते कौतुक नाना। सखिन सबै आपन हठठाना॥
सतिभामा देवन सन कहा। करन अश्व पूजन सब चहा॥
देवन कहा कृष्णके पाहा। श्रीहरि कहा धर्म नरनाहा॥
मातु अश्वको पूजन चहई। आज्ञा कह नारायण कहई॥
धर्मराज सब वीर बोलाये। समाधान कै सब समुझाये॥
क्रिया अश्व पूजी घर आवैं। तब तुव कार्य पूर मन भावैं॥
तब वीरन सब साज बनाये। श्यामकरनके सङ्ग सिधाये॥
सब जन अश्वहि पूजन लागी। कौतुक प्रेम हर्ष शुभ भागी
। अनुशल्य तहां विकराला। जहां अश्वको पूजैं बाला॥
वधौं शालमहँ आई। लेउँ वैर मारौं यदुराई॥

यह विचारिकै राक्षस, घेरेउ जाय तुरङ्ग ।
शोर भयो तिय यूथमहँ, वीर भये सब भङ्ग ॥

ख बांधि वह हमहीं राखा । समाधान अपने बल भाखा ॥
ा कहे पारथते बाता । हरे अश्व सबके सख्याता ॥
ा गर्व करि यह लै गयऊ । आजु काल दैत्यन यह भयऊ ॥
थराजसे कह ब्रजराजा । अश्वहरनसे भै मोहिं लाजा ॥
हिं वीर तुव हारहिं क्षत्री । यौवनाश्व क्षत्रीपति अत्री ॥
श्व लीन्ह अब का करु चहिये । ता कारण सबहीते कहिये ॥
ब श्रीपति वीरा कर लीन्हे । क्षत्रिन शीश नीच तब कीन्हे ॥
ाहूके साहस नहिं चीन्हे । कामदेव तब वीरा लीन्हे ॥
गहि अश्व क्षणक महँ लाओं । कामदेव तब नाम कहाओं ॥
ामदेव चढि रथपर धाये । नाना अस्त्र शस्त्र सजवाये ॥

प्रद्युमनकेरे हाथ तब, वीरा श्रीपति दीन्ह ।
वीर सबै चुप भवन गे, वृषकेतुहि सँग लीन्ह ॥

र्णपुत्र रथ चढिके धाये । कामदेवके साथहि आये ॥
क दीन अरु शंख बजाये । दैत्यराज सुनि क्रोधित धाये ॥
रहु काम कहे जब बाता । कर्णपुत्र देखेउ सख्याता ॥
अनुशल्य काम परचारा । बहु प्रकार ताही तुतकारा ॥
निकट नारि पुत्रके पाहीं । चले तेज तोरत धक नाहीं ॥
ा क्रोधकरि दैत्य भुवारा । पांच बाण कामहिके मारा ॥

लगत बाण तब भयो अचेता। उडि हरिपहँ छाड़े तब खेता।
देख क्रोध किय नन्दकुमारा। तुरत कामको चरण प्रहारा॥
तिनके बहु अवगुण प्रभु कहा। कर्म कमीन जन्म लिय चहा
गर्भपात काहे नहिं भयऊ। हारे समर प्राण नहिं गयऊ॥

गर्भपात जो होते, कै मरते रण देश।
काटे होत कुनाम मम, भाषे श्री हृषिकेश॥

सुनत भीम अस गुन मन लाई। ऐ प्रभु काम भागि नहिं
बाण तेजते तुर उडि आये। वरवश काम आपपहँ धाये॥
सब दोष क्षमिये अब कामा। हम लै सङ्ग जातहैं धामा॥
कामहि सङ्ग भीम लै धाये। गदा घात बहु वीर उड़ाये॥
भीमन गदा घात दल मारा। हाय पाय चूरण करि डारा
रथ गज दल पैदल असवारा। कोटिन गदा रथिनको मा
कर्णपुत्र तब भीमते कहई। आप समान जगतको अहई॥
तुम लायक दल है यह नाहीं। दूत क्यों अस्त्र गहे रण म
सुने भीम हर्षित ह्वै कहई। काम परा भय सङ्कर रहई॥
तुम मारो रिपुको दल सारो। हम राजहिं मारब परचा

भयो क्रुद्ध कहि भीम यह, तब राजा शिर धाय।
काल सरिस शर मारेउ, भीम मुरछि गिर जाय॥

मूर्च्छित भीम देखि जगतारन। आये दूत रणको पगु ध
क्रोधित दारुक रथ लै आये। हांकमारि राजापहँ आये
तब अनुशल्य हांक कर दीन्हा। मैंहौं दूनको वध है की

काम रणमहँ मैं मारा । अब बल देखौं नन्दकुमारा ॥
दैत्यराज परचारा । भारी बाण कीन्ह परचारा ॥
बाण तुरङ्गहि लागे । रथके अश्व तुरन्तहि भागे ॥
देख रथ श्री भगवाना । तब हरिको आगमन बखाना ॥
पापी हौं भगवाना । आप गये मैं भेद न जाना ॥
न्त कन्या जो होई । रजस्वला असनान करोई ॥
न पुरुष जो तजिके भागे । गर्भपातकी हत्या लागे ॥

मोर देशके सबनहीं, अरु मम पावन कीन्ह ।
दीजै दर्शन नाथ मोहिं, सुनि हरि दर्शन दीन्ह ॥

श्री हरि तौ आगे आये । तब अनुशल्य हर्षि पहुँचाये ॥
न बाण तब प्रभुहि चलाये । एकहि शरते काटि गिराये ॥
के बाण क्रोधते काटे । औरहु एक बाण तब डाटे ॥
के तनु में लाग्यो बाना । मूर्च्छित भये तहां भगवाना ॥
चढ़ाय सारथि लै आयो । भागे सैन्य चेत तब पायो ॥
राज जब देखे नैना । हाहा शब्द करे तब बैना
प्रिया अरु रुक्मिणिरानी । मूर्च्छित देखा शारँगपानी ॥
न करती हरिकी रानी । हा हा शब्द भये घन बानी ॥
चेते आगे यदुराई । सबहि समोधि परम सुख पाई ॥
सतिभामा कहेउ रिसाई । कछुक चेत जानेउ यदुराई ॥
प्रद्युम्न मूर्च्छित भयऊ । बलि अनुशल्य मलेच्छनकियऊ ॥

तुम भागे केहि हेतु प्रभु, कह सतिभामा बात।
चण्डि रूप अब धरब मैं, दैत्य वधब सख्यात॥

यहि अन्तर श्रीपति तब आगे। महाक्रोध हिरदैमहँ लागे॥
गहे अस्त्र रथ हो चढ़ि धाये। युद्ध भूमि रण भोमहि आये॥
वृषकेतुहि कर शारँग धारा। सप्त बाण अनुशल्यहि मारा॥
तब अनुशल्य चारि शर मारा। वृष्यकेतु रण काटि प्रचारा॥
चारो बाण बहुरि कर जोड़े। मारेउ रथके चारिउ घोड़े॥
एक बाणते सारथि मारा। रथ सारथि पैदल संहारा॥
तेहि क्षण सूरज देखन पाये। हय रथ तब वेगही पठाये॥
चढ़ि रथ कर्णपुत्र सन्धाना। शरन छांह अनुशल्य छिपाना॥
सारथि अश्व तुरत संहारा। क्रोधित भो अनुशल्य भुआरा॥
क्रोधवन्त दैत्यन पति धावा। तब करगहि वृषकेतु फिरावा॥

कर्णपुत्र क्रोधित भये, अनुशल्यहि गहि लाय।
सन्मुख देखत कृष्णके, पन्द्रह बार फिराय॥

फिर अस कहा सुनो जगनायक। यह तुरङ्ग हरनेके लायक॥
श्रीपति भाषे धन्य कुमारा। जो अनुशल्य वीर कहँ मारा॥
ऐसो बात कहन हरि लागे। यहि अन्तर अनुशल्यहु जागे॥
जब देखा तहँ श्री भगवाना। नाना अस्तुति हर्ष बखाना॥
कर्णपुत्र कहँ धनि कर लेखे। तव प्रताप मैं श्रीपति देखे॥
जो जगदीश्वर भगत उधारे। ध्रुवहि अचल पद कर सञ्चारे॥

स्तुति करत बहुत तहँ राऊ। सुनि श्रीकृष्ण बहुत हर्षाऊ॥
नुशल्या किरपा हरि कीन्हा। हर्ष गात आलिङ्गन दीन्हा॥
णि कर गहि कर हरि लाये। धर्मराजके दर्श दिखाये॥
म्मुख हाथ जोरि भै ठाढ़े। धर्म वचन कह अति सुख बाढे॥

भीम आदि मम बन्धु जे, तुम हो तिनहिं समान।
यज्ञ अश्व प्रतिपालहु, राजा कहेउ बखान॥

ब अनुशल्य कही अस बाता। देहौं शीश भुजा सख्याता॥
षे प्रभु अरु धर्मभुवारा। धन्य धन्य हो कर्णकुमारा॥
ब प्रताप अनुशल्यहि पाये। परमहर्ष तब राजा आये॥
ाढे राजा धर्म नरेशा। सहित अश्व पुरको परवेशा॥
तुरङ्ग गज पैदल सारा। नृप हस्तिनपुरका पगुधारा॥
हुँचे जाय नगरके माहीं। वीर आदि जेते सब आहीं॥
ह बली गण जेते आये। अर्घ्य देय आसन बैठाये॥
ोजन पान सबन करवाये। ऐसे दिन तब बीस गँवाये॥
त्र पूर्णिमा पुरब प्रमाना। तबहीं यज्ञ होय निर्वाणा॥
बै विप्र तहँ यज्ञ बनाये। द्रुपदसुता नृप तबहिं नहाये॥

गांठि जोरि राजा तबै, बैठि यज्ञमहँ जाय।
मणि सुवर्ण बहु दान दै, उठीं युवति जन गाय॥

ा दान जो कछु विविधाना। तेहि प्रकार तह दीन्हो दाना॥
ाय शब्द घन मानो गाजे। पूजा अश्व वेद तब साजे॥

तामहँ लिखे युधिष्ठिर राजा। अश्वमेध यज्ञहि तिन साजा।
ऐसो क्षत्री को जग आही। गहे अश्व को निज बल बाही।
यह लिखिके पारथहि बोलाये। अश्व सङ्ग तब भूप पठाये
यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा। प्रदुमन है अरु कामकुमारा॥
अपनी अनी सङ्ग क लीज। तबहि गमन अश्वहि सँग कीज
पारथ सुनत हर्ष तहँ पाये। धर्मराजको शीश नवाये॥
माथ मुकुट अरु गांडिव हाथा। और सेन क्षत्री सख्यात
दल साजे सेनापती, जहँ लगि सब सरदार।
भेंटे सबै सुपार्थ कहँ, अरु धृतराष्ट्र भुआर॥
सब तो विदा भये सुख पाये। पाछे शीश मातुकहं नाये॥
अश्व सङ्ग नृप आज्ञा दीन्हा। पारथ कह माता सों लीन्हा
कुन्ती कह केतक दल संगा। निज बलते गमनहु रणरङ्गा।
पारथ कहेउ सबै सरदारा। श्रीपति अरु हैं कामकुमारा॥
यदुवंशी ये सोहहिं संगा। यदुनन्दन दीन्हो मम संगा॥
कुन्ती कहा सुनो मन दीन्हे। कर्णपुत्रकी रक्षा कीन्हे॥
तासों यज्ञ सफल नहिं पैहौ। जो पुत्रन कहँ कहूं जुझैहै
यह कहिकै तब आज्ञा दीन्हा। पारथ चरणवन्दना कीन
चले पार्थ तब हर्षित गाता। कर्णपुत्र पुनि चले सख्यात
भद्रावती कुँवरकी रानी। सुनि पति विदा होत बिलख
पिग अनुरागिनि नारि तब, कहत पार्थसों बात।
जहँ इच्छा तहँ जाइये, जिव हमार लै साथ॥

महँ कादरता नहिं करहू । मम लज्जा माथे पै धरहू ॥
पुत्र वामासों कहई । जो सब तीर्थ पुण्य पै अहई ॥
पिड तिरिया गति पाव । हरौ नाम यमदूत वरावै ॥
सब तो जो झूंठ बखानहिं । तो हम भागहिं रण संग्रामहिं
चले कहत रह सोई । आपन सेना संग लगोई ॥
पति और भीम उठि धाये । पारथको पहुँचावन आये ॥
देश गे तजा तुरङ्गा । नाना दल पारथ के सङ्गा ॥
तुरङ्ग तेज पशु जाई । तौ पारथ परसे यदुराई ॥
राज माथे कर दीन्हा । श्रीपति काम बुलाइहि लीन्हा ॥
मेरो सब धन प्राना । तुम रक्षा कीजो सज्ञाना ॥

यह कहि सौंपा कामको, पारथही यदुराय ।
भीमसेनते पारथ, विदा भये सुख पाय ॥

संग पारथ चलि आये । श्रीपति पुनि हस्तिनपुर आ
कृष्ण हस्तिनपुर आये । पारथ अश्व संग तब धाये
बाणन होत अघाता । चले वीर पारथके साथा ॥
अनुभल्य कर्णसुत चाला । मेघवर्ण यौवन भू
सुवेग जो प्रद्युमन वीरा । अनिरुध वीर जो है
समूह चले जो साजा । महा घोर तब
वीर हैं हर्षित नाना । सबही वीर भगत
बली सब हैं राऊ चले वीर

दल चतुरङ्ग पन्थ नहिं पावै। आगे अश्व तेज पग धावै।
पाछे सेना वीर अपारा। हय सँग चले वीर विस्तारा॥
हय गज रथ जो पैदल नाना। चत्री महावीर जग जाना॥
दिशि दक्षिण प्रथमहि सो धाये। छलबल महावीर सग ताके

पवन वेग दिशि दच्छिण, चला तुरन्त तुरङ्ग।
हर्षित सब सेनाधिपति, करत कुतूहल रङ्ग॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

राजा सुनो ऋषी तब कहई। महिसरस्वती नगर इक अहई॥
नालपुञ्ज तहँका नरनाहा। प्रथमहि अश्व गयो चलि ताहाँ
राजनि नाम प्रदीप कुमारा। कुञ्जमहांतिय रूप अपारा॥
नदी नर्मदा तटसों अहई। तहां अश्व गो मुनि अस कहई॥
कुञ्ज माहि इस्त्री जब पाये। तहँ पर वीर देखि मनलाये॥
पढ़ि पत्रहि तिरियन समुझाये। धर्मराजके हय यहँ आये॥
हैं रक्षक पारथ धनुधारी। सुनि नारी सब गृह पगु धारी॥
तबहि कुँवर रण कर मन धरेउ। दल लै पारथ सन्मुख खरे
तब सब चलो देखन धाये। कर्णपुत्र तहँ आगे आये॥
भाषे रणमहँ काह विचारो। पाछे पारथ पास सिधारो॥

पांच बाण हनि कर्णसुत; मारे चारि तुरङ्ग।
पुनि सारथि रथ काटिकै, कियो वीरपन भंग॥

धगासो शर राजकुमारा । क्रोधित कर्णपुत्र कहँ मारा ॥
र्णपुत्र मूर्च्छित मैदाना । तब अनुशल्य चलाये बाणा ॥
रन छांह छपि राजकुमारा । जुरे वीर दूनो सरदारा ॥
लध्वज सुनि दल लै आये । बाणावरि कर पुत्र छुँड़ाये ॥
ब दलकहँ तब मारे बाणा । पार्थ हांक करि क्रोध बखाना ॥
ोधयुक्त सुनि पारथ पायो । पांच बाण लै क्रोधि चलायो ॥
क बाणते राजा काटे । तब पारथ क्रोधित शर छांटे ॥
ीलध्वज तब मूर्च्छा पाये । जागे महा युद्ध मन लाये ॥
ग्नि बाण तब राजा मारा । पारथ दलमें भयो सँहारा ॥
। गज दल पैदल असवारा । जरे लगे सब करैं पुकारा ॥

मारि पार्थ तब वरुण शर, पावक अस्तुति ठानि ।
हाथ जोरि कै पार्थ तहँ, बहु प्रशंस उर आनि ॥

दा कृपा तव हमरे पाहीं । रथ धनु बाण दिये तुम आहीं ॥
बकह दुख यह हमको दीन्हा । वारेक महँ सेना वध कीन्हा ॥
ब कह पावक ऐसी वानी । पारथ तुम तो भये अज्ञानी ॥
दा रहत संग जगके तारण । अश्वमेध कीजै केहि कारण ॥
म राखे राजा कर माना । ससुर हमार महिप जगजाना ॥
न्मेजय पूंछत मन लाई । नीलध्वज कत ससुर कहाई ॥
ंमें नृप कन्या तेहि दीन्हा । वैशम्पायन कह मन लीन्हा ॥
ीलध्वजके ज्वाला रानी । श्याम नाम कन्या भै आनी ॥

भद्र तरुणी तब पूंछहिं राऊ। चाहो वर सो हमें सुनाऊ।
कन्या कहे मनुष नहिं काजा। देव श्रेष्ठ वर देहु जु राजा॥
बोले नृप इच्छा कहा, अरु संयम परवान।
जो मन आवत पुत्रि तव, हमते कहो बखान॥
कन्या कहेउ चारकै करनी। कीन्हे पाप छले ऋषि घरनी॥
सर्फ काम वश हुइ अज्ञाना। ऐसे सँगते शुभ धमधाना॥
दूजो पति जो नारी करे। कुम्भीपाक नरकमहँ परे॥
अग्नीमाहँ मरेते जरहो। ताते दुइ पति नहिं अनुसरहो॥
यहि कारण तनु अग्निहि दीजै। वचन मोर पितु यह सुन त
पुरजन राजा अचरज माना। कन्या करै अग्निको ध्याना॥
राजा कहा सर्व जो खाहीं। सात जीभ ताके मुख आहीं॥
मुख अरु चर्म त्यागि मुख कैसे। नदी नार नीचे बह जसे
हरका शीश तेज यश गङ्गा। पृथ्वीमहं तिन कीन्ह प्रसंगा॥
काहू बात न कन्या मानी। समाधान कै तबहीं आनी॥
चन्दन घृत अरु चिनी लै, तिल जो मधुको राव।
लौंग जायफल सोमकी, आहुत होम कराव॥
वेदवाक्य मन्तर अहिवाना। विप्ररूप तब अग्नि तुलाना॥
राजापाहिं हर्षि पगु धारा। देखि विप्र तब पूंछ भुआरा
तो हो देव कहांते आये। तब ब्राह्मण अस वचन सुनाये
कन्या स्वाहा हमको दीजे। ताते आये नृप सुनि लीजे
नृपति कहै सो पावक चहई। विप्र कहे हम पावक अ

जा कह प्रतीत मोहिं कीजै। अग्नी रूप आपनो लीजै ॥
सो कहा यही विधि जबहीं। पावक रूप प्रकट किय तबहीं ॥
इ प्रतीत तब अस्तुति लाई। कन्याकी तब मौसी आई ॥
ो कहि द्विज चेटक यह करै। प्रकट रूप अग्नीको धरै ॥
ाजा कहै आप गृहमाहां। परखाये कैसीजै ताहां ॥

ताके गृह पावक गये, रूप घरा बहु भार।
चीर कंचुकिहि जारत, और शीशको बार ॥

राजा पहँ वह रोवत गई। राखिलेहु यह पावक अहई ॥
अस्तुति करि नृप आदि बुझाई। तबहि व्याहको बात चलाई ॥
मेरे गृहमें संतत रहो। आवै रिपु तेहि जारत रहो ॥
ऐसे वचन करो परमाना। तब राजा दियें कन्यादाना ॥
राजा गृहमें पावक रहई। वैशम्पायन राजहि कहई ॥
सो वाचासे सेन जराई। ताते पारथ अस्तुति लाई ॥
पारथसों पावक तब कहई। पयनिधि बहुत कछू अब अहई ॥
अब देखो दल तुमहो नैना। उठि है सबै तुम्हारी सैना ॥
सबै उठे जब पार्थ निहारा। राजा पहं पावक पगु धारा ॥

कहे जाय तब नृपतिसन, पारथ मित्र हमार।
मिलो जाय नहिं जीति हो, जेहि सहाय कर्तार ॥

पारथ मित्र कहें वैसाई। मोहि खवायो अन्न पुराई ॥
वचन सुनत राजा खुश भये। तब रानीको पूंछन गये
मिलन मंत्रसे कोपी रानी। जब राजाको बोली बान

नाहर गऊ सर्प शिव सन्ता। मूस मजारी सङ्ग अनन्ता॥
सदा प्रीति उनमें जहँ रहै। ऐसो तेज मुनीको रहै॥
द्युतिहि देखि के मुनि कहा, बोलि धनञ्जय चाह।
पारथ प्रद्युमन सात्यकी, यौवनाश्व नरनाह॥
कर्णपुत्र सँग ले गये तहां। ऋषि आश्रम है वनमें जहां॥
पार्थ जायतहँ बात जनाये। धर्मराज यज्ञहि मन लाये॥
रक्षाहित हम सब दूत आये। वनमें अश्व शिला अटकाये॥
कौन उपाय अश्व अब छूटै। गोत्रबन्धु को पातक टूटै॥
तब ऋषि लहै पार्थ सज्ञानी। गीता सुनिके भये अज्ञानी॥
जो तुम काज करन को चाहौ। अस जनि कहौ नारिते चा
कहो कि गोत्रबन्धु संहारा। जो पालै सो मारनहारा॥
सर्व शरीर पुरुष रह महौ। गेह लिलार सुनी अस कहौ॥
ज्ञान पाय भूलो जो पारथ। अश्वमेध तौ करत अकारथ॥
पारथ कहा विष्णुकी माया। कोई जगमहँ अन्त न पाया।
पारथ के सुनि वचन अस, तब ऋषि कहै प्रकाश।
शिला चरित्र जो कौतुक, हर्ष धनञ्जय पास॥
संज्ञा पपीचण्ड इक रहई। ताकी कन्या चण्डी अहई॥
उद्दालकको दीन्हेउ खाहीं। लै नारी आयो गृह माहीं॥
पतिसेवा सिखवै सेवकाई। चण्डी सुनत क्रोध तब पाई।
पतिसेवा को मोहिं जो कहा। मोसों नाहिं प्रयोजन अहा
पुनि भाषे पूजा मन लाओ। चण्डि कहै का हेतु सुनाओ

ो पुत्रते मोर न माना । तोरा वचन करौं परमाना ॥
क बार मज्जन लगि जाई । कहे कमण्डलु दीजै लाई ॥
नतहि नारि क्रोध भयो भारो । डारेउ फोरि भूमिढ़े मारो ॥
तिके सङ्ग शयन नहिं करई । पतिकी हँसी करत सो फिरई ॥
ट त्रियाते मुनि दुख पाये । सुनत कमण्डलु मुनिपद आये ॥

दुर्ब्बल देखि उदालक, पूछेउ मुनि मनलाय ।
कौन हेतु दुबल भलो, कहो मुनी समुझाय ॥

ब उद्दालक बोलत भयऊ । तिरियादुष्ट विधाते दयऊ ॥
ोरकहा मनमें नहिं धरई । अपने मनका कारज करई ॥
पद जु श्राद्ध समय दुखपावें॥ केहि विधि पितृ श्राद्धमहँ आवें
ब हँसि कह्यो कमण्डलु वानो । उलटो बात कहो नहिं ज्ञानी ॥
ो कछु कार्य्य करण तुम चाहो । उलटे वचन नारि ते कहो ॥
मि तो गौतम तीर्थहि जैबे । फिरत समय यहि मारग ऐबे ॥
स कहि मुनी कमण्डलगऊ । तिरियहि आपु हीन मत दयऊ ॥
ालहो श्राद्ध पिताको अहई । प्रात कलण्डलु आवन चहई ॥
ातें श्राद्ध कर्म्म नहिं होई । केहि विधि आव कमण्डलु सोई ॥
नतहि नारी क्रोधित भई । बोलो बान कन्त मति गई ॥

द्विजहि बुलाओ प्रेमकरि, देव पिण्डको दान ।
उत्तम होवे श्राद्धविधि, मैं करिहौं निरमान ॥

ा उलटिकै श्राद्ध प्रचारा । श्राद्ध कर्म्म यहि विधि ु
ा कछु वचन कहै मधि नाटीं । नो न वान तिय मानति

ऐसे श्राद्ध सिद्धि करवाये । इतना कहि मुनि नाम नशाये ।
मुनि कछु कार्य्य करनको कहई । प्राणजायँ वरु तिय नहिं क
बात भूलिकै मुनि सञ्चारो । ल पिण्डा गङ्गा में डारो ॥
सुनत बात क्रोधित ह्वै नारी । लै पिण्डा घूरे महँ डारी ॥
देखि क्रोध मुनि शापेउ भारी । पाहन होहु जन्म हत्यारी ॥
जब पारथके दर्शन पैहो । शीघ्र शापते तब तनि जैहो ॥
शिला भई तब मुनिकी नारी । फेरो कर सुन बात हमारी ॥
करि प्रणाम पारथ शुभ कीन्हा । जातहिं हाथ शिलामहँ दी

छूटा अश्व चला तब, पाहन ते भइ तीय ॥
उद्दालक तिय लै चले, परम हर्ष ह्वै जीय ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

वैशंपायन कथा सुनाये । पारथ अश्व चले मन लाये ॥
छूट शिला ते अश्व सिधाये । पञ्चज पुरी अश्व तो आये ॥
हंसध्वज राजा पुर माहीं । पांच पुत्र राजा के आहीं ॥
सुन्दर सेरन सबल कुमारा । तीजे नाम सुरथ सञ्चारा ॥
चौथा पुत्र सुरथ परवाना । सबते छोट सुधन्वा माना ॥
दूत जाय राजहिं समझाये । अश्व सङ्ग पारथ हैं आये ॥
सुनि राजा मन चिन्ता आई । तब सब सेनापतिहिं बुला
सब ते कहन लाग अस बैना । अब लौं दीख न पङ्कजनैना

लखौ आज हरि आनँदकंदा । पारथ पास सदा यदुनन्दा ॥
नगर माहिं कोऊ जनि रहहू । लाओ सबहिं दरश हरि करहू ॥

हर्षित ह्वै सब आयकै, कह्यो सुनो नरनाह ।
जो नहिं आवै युद्ध हित, भुँजब कराहै माह ॥

राजा चले सबै दल साजा । बाजन लगे अनेकन बाजा ॥
विद्रथ चन्द्रकेतु तब आना । चन्द्रसेन सँग दल परमाना ॥
चन्द्रदेव औ वरत सिधाये । यह पांचो राजा सँग भाये ॥
सबह सेनापति लै साथा । रणको चलत भये नरनाथा ॥
पांच सहस इकसौ रथ आये । सहस निशान तोप लदवाये ॥
गजके ठाट पचास हजारा । लच्च सहस्र रहैं असवारा ॥
सब दल चढ़ि मैदानहि अयऊ । पाछे कुँवर सुधन्वा गयऊ ॥
दल मधि तेल कराहन भरी । पावक लाय तप्त तब करी ॥
जोनहिं आवे दलमहँ कोई । मांझ कराह मृत्यु तेहि होई ॥
शङ्खलिखित प्रोहित दुइ भाई । वाचा हेतु सर्वसो जाई ॥

चले सुधन्वा हर्ष हिय, माताको शिरनाय ।
कृष्ण दरश गति पाइ हौं, माता कहेसि बुझाय ॥

तहँते गये कुँवर परमाना । पाछे गये बहिनिके धामा ॥
बहिनीकर लै आरति कीन्हा । तब वीरनते बोलन लीन्हा ॥
बहिनि भेटिकै बाहर आई । तिया प्रभावति देखन पाई ॥
प्रिया कन्त सन कह वरि नारी । ताहि छोड़िकहँ चले सिधारी ॥
नारी एक सदा व्रत आही । चलिये भवन देहु रनिचाही ॥

कुँवर कह्यो दिवस न होहो रति। तव नारी व्याकुल ह्वै विनव
ऋतु अस्नान कीन्ह मैं नाथा। रतीदान दै करो सनाथा॥
विन अपराध पुरुष तिय त्यागा। गर्भ वधेकर हत्या लागा॥
बहु प्रकार नारिहि समुझाये। मिलना कठिन बहुरि सुरझायें।

विवशहि रस भे कुँवर तब, बिलसे तत्क्षण धाम।
सुचित भये रतिदान दै, चले पार्थ संग्राम॥

कुँवर कह्यो सुनु वचन हमारो। को पीछे रह प्रश्न विचारो॥
ताको भुजहुँ कराहन माहीं। याही प्रण कीन्ह्यो मन माहीं॥
तव नारी कह रति दै जैये। पीछे दरश तिहारो पैये॥
विवश कुंवर नारीके परे। टोप सनाह उतारी धरे॥
रति रस हेतु तबहिं तौ साजा। इत दलमाहिं हंसध्वज राजा।
पूछन लाग सबनके पाहीं। देखियत कुंवर सुधन्वा नाहीं॥
सुधि कराह भूला मैं जाना। वेगि दूत तहँ करो पयाना॥
गहिकर केश कुंवर लै आओ। ताहि कराहे माहिं जराओ॥
राजादूत चलन मन दीन्हा। करि रति कुंवर शीघ्र शुचि कीन
बांधि अस्त्र रथ भे असवारा। हर्षित चलिभा राजकुमारा॥

यहि अवसरमें दूत सब, देख्यो कुंवरहि जाय।
राजा आज्ञा जो दियो, कुंवरहि कहो बुझाय॥

सुनतहि शोच गाज अनुपरेऊ। दूतन पाहि वचन अनुसरेऊ
आज्ञा तात कहँ परमाना। यह कहि कुंवरहि कीन पयाना॥
तहि गये पिताके आगे। क्रोधित ह्वै नृप बोलन लागे॥

पारथ हरिके दर्शन कारण । आये नहीं मूढ़ मति धारण ॥
मेरी आनि कुंवर नहिं माने । सुनत कुंवर कर जोरि बखाने ॥
पुत्र पतोहू तुम्हरे अहई । रती दान जल्दी यक्ष चहई ॥
तेहि ते मोहि ह्वै गई अबारा । कीजै जो कछु होय विचारा ॥
राजा दूतहि कह्यो बुझाई । तैलहि तप्त करो अब जाई ॥
अब तो नात पुत्र का नाहीं । पूछो जाय पुरोहित पाहीं ॥
सुनतहि तैल तप्त तब कीन्हा । प्रोहित पाहि पूछ सबलीन्हा ॥

तबहिं पुरोहित अस कह्यो, अब पूंछतका जानि ।
पुत्र हेतु माया विवश, ताते पूंछत आनि ॥

वचनहीन राजा तब भयऊ । अब हम यहां रहव नहिं कहेऊ ॥
जाय दूत राजापहँ कहेऊ । राजाके मन चिन्ता भयऊ ॥
राजागे प्रोहितके पासा । विनती करिके वचन प्रकासा ॥
करि विनती प्रोहित दोउ भाई । अपने सँग ले गयो लेवाई ॥
तैल तप्तहै पावक जैसो । मन्त्री पाहिं कहै न्टप ऐसो ॥
मध्य कराह सुधन्वहि डारो । तैलके मध्य जरायके मारो ॥
मन्त्री गयो कुंवर के पासा । करुवो वचन जाय परकासा ॥
हमते कछु नहिं बनत विचारा । आज्ञा तात जो कीन्ह तुम्हारा ॥
मधि कराह डारौ छिन आना । सुना कुंवर तब कीन्ह बखाना ॥
वचन तातका करो प्रमाना । मन्त्र मोहिं भावै नहिं आना ॥

शोच किये का होत अब, परवश जनि कोइ होय ।
अब काको शंका करौ, कुंवर कह्यो अस रोय ॥

तेल कराह अग्नि सम ताता। कुँवर कह्यो धीरज धरि बाता॥
मोसन घाटि भई जगतारन। आयेते हरि दरशन कारन॥
ध्रुव प्रह्लाद और पंचारी। तुहीं विभीषण लिये उवारी॥
दीनदयालु राखि अब लीजै। महिमा प्रगट आपनी कीजै॥
जैसे ग्रहते गजहिं छुड़ाओ। ताही विधि अब मोहिं बचाओ॥
ऐसो सुयश रहे संसारा। कूदा कराहे राजकुमारा॥
करि अस्नान अस्तुती कीन्हा। तुलसीपत्र शीशपर दीन्हा॥
बहु प्रकार हरि अस्तुति ठानी। कह्यो अल्प महिं बहुत बखानी॥
नृप आज्ञा मन्त्री प्रतिपाली। दीन्ह कराह कुँवर को डाली॥

पावक उठा कराहसों, देखहिं सब दल बीर।
त्राहि त्राहि सबहिन कही, राखि लिये रघुवीर॥

रोवहिं दलके सब सरदारा। कुँवरहिं राखि हमैं किन मारा॥
शीतल तेल भयो सख्याता। कुँवर वदन भयो कंजप्रभाता॥
केशव कृष्ण जपत यहि नामा। प्रोहित सङ्ग करै नृप ग्रामा॥
कुँवरहिं देखि पुरोहित कहै। जाते अग्नि बरायनि रहै॥
कीधौं तेल तप्त नहिं आही। की कछु जरी कुँवर मुखमाही॥
दूतन कह्यो झूठ सब अहई। केवल नाम कृष्णको कहई॥
प्रोहित तबहिं प्रतिज्ञा धारी। नरियर एक कराहे डारी॥
परत कराह फूटि छितराई। प्रोहितके माथे लग जाई॥
... प्रोहित बहुत लजाना। भक्त द्रोह मैं कियो निदाना॥

धनि धनि कुँवर सुधन्वा, तोर हृदय हरिवास ।
परा कराहेमों कहा, मिले कुँवरके पास ॥

विप्र आय अंकहि भरि लीन्हा । अस्तुति बहुत कुँवरकी कीन्हा
कुंवर प्रताप विप्र सुख परेऊ । भक्ति प्रभाव वदन नहिं जरेऊ ॥
ऐसी महिमा प्रभुकी बाढी । प्रोहित कुंवर दुहुँनकहं काढ़ी ॥
कुंवर साथ लै गये नृप आगे । प्रोहित तबहिं कहन असलागे ॥
नृप तुव पुत्र भक्त मैं जाना । इनके हृदय वास भगवाना ॥
सुनि राजा तब सुतहि बुलायो । उठि नृप दौरि अंक लपटायो
राजा कुंवर दुहुंन सुख पायो । बहुत प्रशंसा करि बैठायो ॥
पितुके दोष धरहु नहिं मनमें । मैं दल गमन करौं अब रणमें ॥
हर्षित कुंवर तात पग परशे । करि प्रणाम प्रोहितके दरशे ॥

रणको चले कुंवर तब, रथ पर ह्वै असवार ।
गहौ तुरङ्ग तुम जाय अब, सबते कहा भुआर ॥

तौरन जाय अश्व हरि लाये । युद्ध करनको राव सिधाये ॥
कुंवर सुधन्वा सबके आगे । वाद्य जुझाऊ वाजन लागे ॥
तब दल समाधान करि रहेऊ । तब पारथ प्रद्युमनसे कहेऊ ॥
हमरो हय जो हरि लै गयऊ । अस वलधारी नृप सब भयऊ ॥
यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा । नीलध्वज कृतवर्म सरदा ।
कामक हे अब उचितक अहई । औरो सबहि अस्त्रक
मेरो तात संमतो अहौ । आप युद्ध कत कीन्हो ~ .

कर्णपुत्र तब कह यह बाता। तुम इक बीर प्रलयके घाता॥
इतहि रहो तुम हम रणजाहीं। इतना कहि आये रणमाहीं

कर्ण पुत्र अरु नृप सुवन, दोउ भये इकठांव।
राजपुत्र तब पूंछता, कर्णपुत्रके नांव॥

कह वृषकेतु कर्ण मम ताता। कश्यप कुल जो कह सख्याता
वृषवर नाम हमारो अहई। सुनिकै बात सुधन्वा कहई॥
बन्धुकुन्द मुनि गोत्र हमारा। नाम सुधन्वा वीर अपारा॥
दोउ वीरन तो रण प्रण ठाना। क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुबाना
नृपति पुत्रके मारे बाना। सारथि रथ सब किय भंगाना॥
मूर्च्छा पाय क्षणकमहं जागे। बाणन बृष्टि करन तब लागे

दूसर रथ सारथि लिये, पुनि आये वहि ठाम।
कर्णपुत्र तब चढ़्यो रथ, सुमिरि कृष्णका नाम॥

कर्णपुत्र बहु जय रण लीन्हा। विपुल वीर क्षणमहं वधकीन
हना सुधन्वा बाण रिसाई। कर्णपुत्रको मूर्च्छा आई॥
कर्णपुत्र रण मूर्च्छित जाना। तब प्रदुमन हांके मदाना॥
तुर्तहिं काम पञ्च शर मारे। सारथि हय पैदल संहारे॥
विशिख लग्यो तव खसे तुरङ्गा। जोती ध्वज छत्रहु भे भंग
यह देखतहिं सुधन्व रिसाना। क्रोधवन्त ह्वै गहि धनु बान
तीनि बाण सारथि संहारा। सिंहनाद करि राजकुमारा॥
८ भयो रथ खण्ड तुरङ्गा। दण्ड छत्र तो भे रदभङ्गा॥

दोनों वीर भिड़े रण करणी। कबहूं गगन कबहुं कै धरणी॥
गदा गदाते क्षत बहु लागे। मूर्च्छे दोउ कुंवर तब जागे॥

कामदेव मूर्च्छित रहे, कुंवर रथहि चढ़ि जाय।
साहस छोहिणि सैन्य दल, मारत कुंवर रिसाय॥

दौरि तबै कृतवर्मा धाये। तुरत कुंवरपर बाण चलाये॥
राजपुत्र बाणनते मारा। और बाण अश्वहि संहारा॥
एक बाणते सारथि मारा। रणमहं गर्जै राजकुमारा॥
तब कृतवर्मा साजि सिधाये। देखतहीं अनुशल्यहु धाये॥
तीक्ष्ण राज बाण विस्तारा। सो अनुशल्य कुंवर पर डारा॥
मूर्च्छित कुंवर परे रण माहीं। बहुतै दल मारे गै ताहीं॥
हाहाकार करत सब भागे। राजपुत्र यहि अन्तर जागे॥
क्रोधित कुंवर बाण तब मारा। मूर्च्छा भइ अनुशल्य भुवारा॥

क्रोधवन्त ह्वै राजसुत, मारे बाण अपार।
हय गज रथ पैदल कटे, पारथ दल संहार॥

पारथ दल तब भागन लागा। तात्क्षण वीर सात्यकी जागा॥
विपरित बाण क्रोध करि छांटे। पञ्च बाणते धनु गुन काटे॥
दोनों वीर लड़त मैदाना। दोनों मानहुं देव समाना॥
रक्त भिजे जनु टेसू फूले। देखत रूप वीर सब भूले॥
शेल चक्र कुंवरहि धै मारा। मूर्च्छे सात्यकि रणहि मंझारा॥
मूर्च्छे सात्यकि सब दल भागे। तब अर्ज्जुन रथ हांक्यो आगे॥
कहा टेरि सुनु राजकुमारा। मोर नाम अर्ज्जुन धनुधारा॥

भीषम द्रोण कर्ण संहारा। बड़ बड़ वीर और सरदारा॥
कुंवर कहा पारथ जगतारण। सब रथ जिते वीरता कारण॥
हरिसे सारथि साजिकै, आये हौ रण माहिं।
ताते भाषत पार्थ यह, जीति तुम्हारी आहिं॥
तुमहि जीति हौं लेकरि काजा। करि हैं यज्ञ हंसध्वज राजा॥
सुनि पारथ तब बाण चलाये। दशही बाण कुँवर बिचलाये॥
काट्यो बाण कुँवर भयो क्रोधा। राजकुमार महाबल योधा॥
वरषे बाण सके का भाषन। सौते सहस सहसते लाखन॥
पारथ पावक बाण चलाये। कुँवरके दलको बहुत जराये॥
वरुण बाण कूंवर तब मारा। अग्नि बुझी बाढ़ी जल धारा॥
वर्षाकी जनु उपमा पाये। पवन बाण तब पार्थ चलाये॥
जल गयो सूखि उड़न दल लागा। राजहिं दीख पुत्र रिसपाग
तीस बाण क्रोधित ह्वै छाटे। ध्वज पताक पारथके काटे॥
कह्यो कुंवर अब पारथ कहिये। सारथि गिरे सारथी चहिये
हरि सारथिको सुमिरही, जो चाहै कल्याण।
नातरु वाम विधाता, अन्तकाल तव प्राण॥
पारथ सुनिकै जोती गहेउ। रणदल मांझ जान अब चहेउ॥
महाकष्ट आयो परमाना। पारथ तब सुमिर्‍यो भगवाना॥
सुमिरतहीं तुर्तहिं हरि आये। जोती गहे पार्थ सुख पाये॥
तब पारथने कीन्ह प्रमाना। राजकुंवर तब करै बखाना॥
आपन भाग्य बड़ा मैं जाना। तुम्ह दर्शन दीन्हा भगवाना॥

अस्तुति करिकै शारँग गहेउ । वचन एक पारथ तब कहेउ ॥
कृष्ण समान पाय हौं सारथ । आज देखि हौं तुव पुरुषारथ ॥
पार्थ कहो शर तीन हमारा । ताते करब तोहिं संहारा ॥
कुंवर कह्यो तीनहुँ शर कटिहौं । खण्ड खण्ड करि मस्तक बटिहौं
कह्यो पार्थ जो तोहिं न मारौं । अपने पितृ नरकमहँ डारौं ॥
इतना सुनि द्वै वीर रिसाने । क्रोधवन्त ह्वै शारँग ताने ॥

कुंवर कह्यो शर तोर मैं, जो न हतौं सुनु बात ।
तौ मम वास अधोगति, कुंवर कहै सख्यात ॥

राजपुत्र तब बाण चलाये । हरि समेत रथ माहिं बचाये ॥
हाथ मारि सो पाछे गयउ । पारथते हरि बोलत भयउ ॥
तव पुरुषारथ देखौं पारथ । वध परतिज्ञा कीन्ह अकारथ ॥
एक नारि कुंवरक व्रत आहै । ऐसी बात कौन निर्वाहै ॥
हम तुमते यह व्रत नहिं होई । कौन पुण्यते मारब सोई ॥
राजकुमार बाण तब छाटे । हय गज रथ पैदल तब काटे ॥
कह्यो कुंवर गोवर्द्धन धरेउ । गाय गोपको रच्छा करेउ ॥
पारथको अब राखौ हरी । सुनत क्रोध पारथ तनु जरी ॥
एक बाण पारथ कर लीन्हा । तामहँ पुण्य जगतपति दीन्हा ॥
गोवर्द्धन धरि जो फल भयउ । सोइ पुण्य हरि शरको दयउ ॥
धाये देखन देव सब, रहत काहि प्रण आज ।
दोउ वीर हैं भक्त हरि, काह करौ व्रजराज ॥

मारे पारथ बाण तुरन्तहिं। कुंवर बात यह कह भगवन्तहि॥
जो नहिं शर कटिहै ह्वै पापू। यह कहि बाण चलाये आपू॥
अर्द्धचन्द्र तब बाणन मारा। पारथको शर काटि पवाँरा॥
अचरज सबै देवतन माना। तब पारथ लिय दूसर बाना॥
रामऽवतार पुण्य जो कीन्हा। सो सब पुण्य बाणको दीन्हा॥
पारथ बाण करै सन्धाना। कुँवर कहै सुनिये भगवाना॥
पुण्य तोहारे पारथ बाना। मैं प्रण काटे तृणहि समाना॥
परनारी ते जो रति भाखो। बिन काटे सो पातक पाओ॥
पारथ बाण तजे जो भारी। करु सन्धान कुँवर धनुधारी॥
ऐसे बाण क्रोधकरि छांटे। पारथ काहि वोहु शर काटे॥

शङ्खध्वनि तब कुंवर करि, देवन अचरज पाय।
पारथ शर हरि सैन्य सब, काटे तृण सम भाय॥

कह श्रीकृष्ण पार्थ सुनि लीजे। रहो युद्ध शङ्खध्वनि कीजे॥
हरिपारथ तब शङ्ख बजाये। पाछे श्रीपति कह मन लाये॥
लेहु बाण सुनु बात हमारा। यही बाण वध होय कुमारा॥
पारथ बाण हाथ लै लीन्हे। मध्यकाल वधि पश्चिम दीन्हे॥
श्रीपतिशर मन्त्रावलि कीन्हे। सोइ बाण श्रीपति करदीन्हे॥
फरपर आप चले भगवाना। पारथ सो शर करु संधाना॥
कुँवर कहै जाने जगतारन। फर पर बैठि कै आवत मारन॥
रो प्रण सुनिये प्रभु सोई। हरि हर नाम भेद कछु होई॥

जो नहिं यह शर काटि गिरायो । तौ यह पाप जगत महँ पायो
पारथ मारे क्रोधित बाना । तीन लोक शर देखि सकाना ॥

कुँवर तेज तब बाणको, मारि मांझ शर माहि ।
काटयो बाण सुपार्थ को, रच्छ काल जेहि आहि ॥

सबै देवतन अचरज माना । पंख सहित आधा उड़ि आना ॥
आधा बाण लग्यो तब जाई । राज पुत्र शिर काटि गिराई ॥
जूझ कुँवर जगत यश पायो । हरिके चरण शीश उड़ि आयो ॥
कृष्णहि कृष्ण जपत शिर रहई । धाय कबंध अस्त्र कर गहई ॥
शीशहि गहे हँसत भगवाना । पारथ शर कीन्हा संधाना ॥
श्रीपति शीश हाथ में लीन्हा । राजाके रथ डारि सो दीन्हा ॥
तब हंसध्वज शिर लै हाथा । रोदन करत ठोंकि कै माथा ॥
बहु विलाप तो कर भुआरा । ताको नहिं कीन्हा विस्तारा ॥
तब राजा शिर चुम्बन कीन्हा । प्रभुके रथहिं डारि सो दीन्हा ॥

हर्षित ह्वै हरि शीश गहि, दीन्हो गगन चलाय ।
तहँ शिव शङ्कर पाय शिर, मालामुण्ड बनाय ॥

दूसर पुत्र सुरथ है नामा । पितुके सन्मुख कीन्ह प्रणामा ॥
तात शोक वारन अब कीजै । हमैं युद्धको आज्ञा दीजै ॥
पितुको आज्ञा हर्षित पाये । रथपर चढ़ि रण हेतु सिधाये ॥
शंखध्वनि करि धनुष टँकोरा । मानहु प्रलय गाज घनघोरा ॥
कह कत जैहो पारथ वीरा । मेरो बन्धु मारि रणधीरा ॥
हरि एणर दृढ जन्मको दीन्हा । मेरो बन्धु तबहि बध कीन्हा ।

यहि प्रकार सब कहा सुनाई । पारथपाहिं कह्यो यदुराई ॥
बन्धु शोकते व्याकुल आश्रो । अब यासों नहिं जीतन पाश्रो ॥
पारथ कह्यो कौन रणधीरा । सहसन वधे एक दिन वीरा ॥
आप सहाय जगतके नायक । सुरथ कहा मम जीतन लायक ॥

कृष्ण कहा पारथ सुनौ, सुरथ शूर सतवन्त ।
ताते प्रदुमन आदि ले, लड़हु कहा भगवन्त ॥

सब वीरन मिलि कुंवरहि घेरा । मारु मारु कहि सबहिन टेरा ॥
पारथके पाछे यदुराई । आगे वीर घनेरे जाई ॥
योजन त्रय पाछे हरि आये । आगे वीरन गे अटकाये ॥
सुरथ कह्यो पारथ है काहा । सुने वीर हांके रणमाहा ॥
हम सन रण जो करिये आछो । हरि पारथको पूछो पाछो ॥
सुनतहि सुरथ क्रोध तब पाये । वीरन ऊपर बाण चलाये ॥
ऐसे बाण क्रोध करि मारै । पैदल रथ अरु अश्व सँहारै ॥
बाणमई जूझे रणमाहा । सबको मोहित कीन्हो ताहा ॥
सबै जीति गयो पारथ पहा । रहु रहु हांक मारि कै कहा ॥
क्रोधित मारे बाण हजारा । ध्वज अरु छत्र काटि महि डारा ॥

पारथ मारे बाण सौ, काटे राजकुमार ।
लागे वर्षन बाण तब, मानहु सावन धार ॥

पारथ शर अवसर नहिं पावै । ऐसो सुरथ बाण झरि लावै ॥
तब पारथसों भाख्यो यदुपति । देखौ रथी सुरथकी यह गति ॥
बन्धुशोक तेहि मारन चहई । इतना सुनि तब पारथ कहई ॥

मारो पार्थ सुरथ रथ बाना । धसि गयो रथ पाताल समाना ॥
मारो सुरथ पार्थ रथ बाना । लगत बाण रथ स्वर्ग उड़ाना ॥
तब श्रीपति औरौ हनुमाना । राखे रथ सम्भारि प्रमाना ॥
पारथ बाण क्रोध करि छोड़े । मारे रथके चारहु घोड़े ॥
काटे सारथि छत्र निदाना । कुँवरहि कह्यो पाय मैदाना ॥
मैं मारो पारथ रथ बाना । राख्यो हरिहि और हनुमाना ॥

कुँवर बाण फिरि मारेऊ, रथ पारथके माह ।
औ भाष्यो कहु पारथ, अब रथ डारौं काह ॥

सुनतहि पार्थ पञ्च शर मारा । मूर्च्छित भो तब राजकुमारा ॥
क्षणक एकमहँ चेतन पाये । चढ़ि रथ शर शोणित लपटाये ॥
अर्द्धचन्द्र औ कर्ण वराहा । तब प्रणाम करि पारथ काहा ॥
जो नहि रथते तोहिं गिराओं । तौ मैं वास अधोगति पाओं ॥
यह कहि पार्थ क्रोध शर छांटे । ध्वजा पताक सुरथके काटे ॥
मारेउ सुरथ जु बाण तुरन्ता । काटे ध्वजा दण्ड बलवन्ता ॥
क्रोधवन्त पारथ शर छाटे । रथ रथवान पताका काटे ॥
तबहिं सुरथ क्रोधानल जरेउ । लेकर गदा पार्थसे लरेउ ॥
दुइ सहस्र तबहीं रथ मारा । एक लक्ष मारे असवारा ॥
गज अरु हय बहु पैदर मारा । पारथ दूसर बाण प्रहारा ॥
गदा सहित कर काटिहौं, सुरथहि कहा रिसाय ।
महा साहसै करि कहीं, सुनु पारथ यदुराय ॥

युगल बाण पारथ तब मारा। दूनहुँ जांघ काटिके डारा॥
कटे जांघकर शंका नाहीं। युद्ध करे लुढ़कत महिमाहीं॥
पारथ एक बाण तब लीन्हा। तामहँ शक्ति देवतन दीन्हा
मारे बाण काट शिर जाई। पारथके शिर लाग्यो आई॥
पारथ तहां रहे मुरझाई। शीश परयो चरणन यदुराई॥
पारथको श्री हरिहि उठायो। तासों वचन कहन मन ला
पारथ कह्यो धन्य मैं जाना। मोको मूर्च्छित किय मैदाना।
यहि शिरको परशे जो कोई। महाशूर क्षत्री सो होई॥

यहि प्रकारते सुरथको, मारेउ पारथ वीर।
ऋषी कहत राजा सुने, जन्मेजय रणधीर॥
अश्वमेध फल पावई, मन वाञ्छित फल सोय।
भाव भक्ति जिय लावई, श्रद्धा सुन रण कोय॥

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

तब श्रीपतिने गरुड़ हँकारा। आये गरुड़ तुरन्त सँचारा॥
हरि कह शिर प्रयाग लै जैहो। राखि शीश प्रयागमहं अइहौ
गरुड़ कह्यो प्रभु तीर्थ अपारा। गङ्गा यमुना चरण तुम्हारा॥
उत शिर लैजाऊं केहि काजा। तबहीं वचन कहे ब्रजराजा॥
सुनौ बात किय विनय कुमारा। मम भण्डार प्राग निज भा
सुनत गरुड़ शिरको लै चलेऊ। भये मार्गमें कौतुक भलेऊ॥

हर गौरी तु गगनमहँ आये। जात गरुड़को देखन पाये॥
भृङ्गीदूतहि शङ्कर कहा। वह शिर लै आओ मम पहा॥
तब हँसि पूंछहिं सती भवानी। कहौ भेद सब हमहिं बखानी
शङ्कर तब हँसिकै कह्यो, सुरथहि राजकुमार।
पारथ मारे रण विषय, सो शिर लिये सिधार॥
हरि आज्ञा प्रयागके माहीं। शीश धरैको खगपति जाहीं॥
सोई शिर जो हमपहँ आवै। मुण्डमालके मध्य लगावै॥
याको अनुज सुधन्वा अहई। ताको शीश प्रथम मैं गहई॥
अब जो शीश सुरथको पाऊं। मुण्डमाल शिव सुघर बनाऊं॥
भृङ्गी चले गरुड़पहँ आये। जाके वचन कहन तब लाये।
देहु शीश नत लिहौं छिनाई। सुनतहिं गरुड़ क्रोध अति पाई॥
पवन पक्ष हरि दूत उड़ाई। हरको दूत हरै पहँ आई॥
श्वासपवन ते गरुड़ उड़ाये। उड़तहिं उड़त प्रयागहिं आये॥
गरुड़ शीशको डारिकै, लौटि कृष्ण ढिग आय।
नन्दी ताहि उठाय कै, दीन्ह शंभुको लाय॥
महादेव मुण्डमाल बनाये। सुरथ जूझ नृप देखन पाये॥
तब रणको नृप कियो पयाना। देखत उतरे श्री भगवाना॥
हाथ उठाय कहा भगवाना। राजा राखो शारँग वाना॥
तनको शोक छांड़ि अब दीजै। मेल मिलाप पार्थसे कीजै॥
राजा सुनत हर्ष तब पाये। धाय कृष्णके पद लपटाये॥
जो मैं कष्ट कृपाकर देखो। एत शोक मेरे केहि लेखो॥

तब पारथ से बांह मिलाये। पारथ मिले हर्ष अति पाये॥
पांच दिवसमें अश्व छुड़ाये। श्रीपति हस्तिनपुरहि सिधाये॥
धर्म्मराजसों श्रीहरि कहेऊ। सबही राजधर्म्म कहिदयेऊ॥
अश्व छूट तब पार्थ सिधाये। हंसध्वजको संग लगाये॥

उत्तर दिशि अब अश्व चलु, महाभयानक देश।
महाकुंज कानन विषे, अश्वहिं कीन्ह प्रवेश॥

सरवर एक अश्व तब गयऊ। प्रविशत जल अश्विनिसो भयऊ॥
केतिक दूर गयो दुखपागे। सरवर एक और है आगे॥
ताको जल हय कीन्हो पाना। अश्विनिते भयो बाघ प्रमाना॥
सभय अचम्भौ पूछहि राऊ। याहि अर्थ मुनि हमैं बताऊ॥
अश्व अश्विनी भो केहिकाजा। व्याघ्र भयो कत पूछै राजा॥
फेरि अश्व ह्वै हैको नाहीं। सुनि मुनि वैशम्पायन काहीं॥
सतयुग माहि देवि तप साधे। वहि सर तट शंकर अवराधे॥
शंकर हेतु तबहिं मन लावा। असुर एक पापी मति भावा।
कहे तबै कत करू अज्ञानी। चलौ संग करिवे हम रानी॥
सुनत शाप तब देवी दीन्हा। भस्म तुरन्त दैत्यको कीन्हा॥

सर परशै जो परुष कोइ, तिया होत परनाम।
यही शापते राजन, अश्विनि अश्व ललाम॥

रक्त वर्ण मुनि सतयुग रहेउ। दूजे सर अस्नानहि गहेउ॥
करि स्नान ध्यान मन लाये। सरवरको शापित भै पाये॥
यहि सरको जल प्रविशै जोई। निश्चय बाघ सो प्राणी होई

ाहि सर माहिं अश्व जब गयऊ। बाघरूप ता कारण भयऊ॥
ारथ महो शोध तो पाये। तबसो हरिको चरण नवाये॥
ारो पाप सिंधु भगवाना। अश्विनि प्रभु करहू निरमाना॥
बहीं दलहि ध्यान मन लयऊ। राजा सुन प्रसन्न मन भयऊ॥
ागरो दोश अश्व को गयऊ। श्यामकर्ण आलंकृत भयऊ॥
हर्षित भे तब चले चलाये। इस्त्रीराज्य सो पहुँचे आये॥

त्रियाराजको त्रिया सब, पुरुष नहीं है ताहँ।
गन्धर्वराज शापदिय, पुरुष न जन्मे चाह॥

कीन्ह भोग तब गँधरव देखा। महाक्रोध दैत्यन वध लेखा॥
दैत्यको मारि देश कहँ शापा। पुरुष जन्म पर होय न पापा॥
जो पुरुष भोग मन धरई। गये तीस दिन निश्चय मरई॥
यहि प्रकार ते शाप रिसाई। तब गन्धर्व स्वर्गपुर जाई॥
तब ते देश रूप यह भयऊ। श्यामकर्ण हय तहंपर गयऊ॥
देखन एक त्रिया तह आई। श्यामकर्ण सो हरि ले जाई॥
धर्मराजको हय यह अहई। पारथ रक्षक नृपते कहई॥
परिमल नाम रजा इक अली। हँसिकै कहेसि कीन्ह तो भली॥
ले हयशाला बाँधेउ जाई। साजि त्रिया दल युद्धहि आई॥

हय गज पैदल रथन चढि, चली सकै जो तीय।
चन्द्राननी कठोर कुच, रूप विधाते दीय॥

पारथ पाहं परीमल कहई। अबहूँ आश अश्वकै अहई॥
जो ना नजहु भोग करु आई। युद्ध करै तो कालहि खाई॥

तबहिं सबै दल मोहित भयऊ। कर्णपुत्र तो सुधि महँ रहऊ।
पारथ कह्यो सुनहु हो तिया। तुम्हरेपहँ गये पुरुष न जिया।
परिमल कहै काल तव आये। युद्ध माहिं जय को धौं पाये॥
सतते भोग करौ मन लाई। सुखमें करौ परम सुख पाई॥
युद्ध करौ जय पैहौ नहीं। सुनिकै अस्त्र पार्थ तब गही॥
मोहन बाण हने तब पारथ। हँसौ तिया कह भये अकारथ॥
सुर नर मुनी शंभु उर धरें। देखत हमहिं तासु मन हरें॥
मोहन बाण करहि का मेरो। पारथ आज काल है तेरो॥

मोहन बाण हमार है, देखत मोहत शंभु।
मोहन बाण तुम्हार जो, हमको करत अनंभु॥

नई बैश नवयौवन वारी। मृगनयनी सरोज रतनारी॥
जब पारथ क्रोधित शर गहेऊ। तब देवन नभ दुन्दुभि महेऊ॥
यह कहि पञ्चबाण तब मारे। और सहस्रन बाण प्रहारे॥
तिरिया वधे पाप हो पारथ। प्रीति करौ तो होवे स्वारथ॥
पारथसन तो प्रीति विचारो। परिमल ते जो वचन उचारो॥
यज्ञहि होत योग मन लइये। लैकै दल जो मम द्रूत अइये॥
नातो पुरी हस्तिना चलिये। फिरब तुरन्त मोहिं प्रतिपलिये।
लै धन द्रव्य सैन्य परमाना। पुरी हस्तिना करिय पयाना॥
छुटा अश्व पार्थ तब चलेऊ। चलौ वीर संग सब भलेऊ॥

ऐसे तरु देखे सबै, फूले सुरभि प्रमान।
औ मनुष्य सम फल लगे, अचरज भयो महान॥

देखत सबहिन अचरज माना । देखत चले अश्व परधाना ॥
एक नैन देखा वँग देशा ! देश विदेश और प्रविदेशा ॥
गजके श्रवण न सम हैं काना । एक देश देखा परमाना ॥
तीनि नैन अरु तीनै नाशा । एक देश ऐसा परकाशा ॥
एक देश नरसिंह स्वरूपा । भोग गन्धरब सुख अनुरूपा ॥
यहि सब देश अश्व तो गयऊ । जीते सबै अश्व तब भयऊ ॥
चलत अश्व आये पुनि तहां । भीषम नाम दैत्य यह जहां ॥
एक चक्रवर्ती पुर आना । तहँको अश्वहि कीन्ह पयाना ॥
मेद्र हाथ दो मोहित अहई । सुनी बात यह नृपते कहई ॥
अर्जुनादि सब लाय तुरङ्गा । जासु बन्धु तोरा पितु भङ्गा ॥

पिता शत्रु तुव आवत, वधो ताहि महराज ।
रणमें धाओ बाण लै, यज्ञ करो जगसाज ॥

चारि मासके व्रत हम अहई । निराहार है तुमते कहई ॥
मदिरा रक्तासव नहि खाये । बालक यती भाइ जे पाये ॥
जटा धारि अस्नान अहारा । कार्तिक कन्या भक्त अपारा ॥
अब तो बारन कीन्हे चहों । वधौं पार्थही ताते कहौं ॥
भीषम सुनिके क्रोधित भयऊ । युद्धहि हेतु चलन मनदयऊ ॥
चटिन दलते दैत्य सिधायो । लङ्काको निशिचरि बहु आयो ॥
तिनि एक दीख हनुमाना । भाग भाग सो करै बखाना ॥
ह अन्तरके जाना भाई । पलमहँ लङ्कापुरी जराई ॥

सुने एक अरु कहे बुझाई। नरके मारे कौन बड़ाई॥
मानुष मारे रावण राऊ। मै कुचते सब सैन्य गिराऊ॥
ओरौ भाषो एक तो, तोरौं कुच सम बेल।
कुचको अग्रह मारहू, योजन दूकका मेल॥
यह कहि स्वर्गमाहँ सो जाई। पारथको दल गो भहराई॥
बहुते दल तो मारो जाई। दलपर जाय प्रगटतो भाई॥
लेकर दल तो आगे आये। पारथ पाहँ कहे समुझाये॥
तोको इतिक भीम सँहारौं। पिता बैर लै यज्ञ सँवारौं॥
यह कहि बाण वृष्टि करलाये। वृत्त पहाड़ अनेक चलाये॥
लत्तबाण तब पारथ मारा। पर्वत वृत्त अस्त्र भो छारा॥
वह दैत्यनी बड़ो दुख दीन्हा। पारथ वीर बाण तब लीन्हा॥
मारे रथ पैदल असवारा। दैत्यन दल तो बहु संहारा॥
प्राणहिं अन्त भयउ जब जाना। तब राक्षस माया निर्माना।
बाघ सिंह औ गऊ सम, सैना भयो प्रमान।
भीषम वह अचरज भयो, तपा रूप परवान॥
माया ते पारथ तव कहेऊ। येह दैत्य दुखदाई अहऊ॥
पारथ तौ माया सब जाना। तुर्तहिं बधे ताहि परमाना॥
छूटे प्राण दैत्य तव गयऊ। महाहर्ष पारथको भयऊ॥
सब सेना को पल महं मारा। जीते रणमहं पाण्डुकुमारा।
मार दैत्य जब सब हर्षाना। पारथ रथ बैठे हनुमाना॥
चले अश्व तौ किये पयाना। पारथके सँग दल बहुनाना॥

यौवनाश्व नीलध्वज राऊ । हंसध्वज वृषकेतु सिधाऊ ॥
मेघ वर्ण आहे अनुशाला । कामदेव अरु सुत गोपाला ॥
चले अश्वके पाछे जांय । अश्वचला तौ तेज पराय ॥
चले अश्व तब आये तहां । मणिपुर नाम ग्राम इक जहां ॥

सत्यशन्त सब चत्रिगण, एक नारि व्रत वेश ।
सब राजा कर देत हैं, अर्ज्जुन पुत्र नरेश ॥
पर उपमा नहिं जातकहि, जनु कैलास समान ।
ऐसो शोभा देखि तहँ, पुर इन्द्रासन जान ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

वैशम्पायन करै बयाना । पुर उपमा नहिं जातबखाना ॥
पारथ संग बीर जो रहई । बड़े बलीहैं सब मिलि कहई ॥
अश्व छुड़ावत कष्ट प्रमाना । तत्चण देखे मृत्यु निशाना ॥
गीध उड़े पारथ शिर लागे । सबहि देखि तौ संशय पागे ॥
नगर लोग अश्वहि तब देखा । गौ राजा ते कहैं विशेखा ॥
सुनतहि राजा वीर पठाये । श्यामकर्णको तुर्त मगाये ॥
बन्धन पत्र शीर पर रहेऊ । पठये राव जान सब अहेऊ ॥
तब राजा मन्त्री सन कहेउ । धर्म्मराजको हय यह अहेउ ॥
पारथ ताको रच्चक आहौ । मेरे पितु अस राजा काहौ ॥
तातें मन्त्री कहै विचारौ । कौनौ बुद्धि करौं अब भारौ ॥

तात भङ्ग मम तात करु, शापे तो कह तात।
ग्राह भई ता कारणे, पारथ अति सकुचात॥
पारथको स्पर्श जब लीन्हा। ऐसे लिया व्याह तौ कीन्हा॥
छांड़ि गये होते जो ताता। अब हम भेट करब सख्याता॥
करि मन प्रेम सुबुद्धि विचारा। आने अश्व कौन परकारा॥
मन्त्री कहै अश्व लै मिलो। राजा कहै मन्त्र यह भलो॥
तब राजा बहु साज बनाये। नाना द्रव्य अनेक मँगाये॥
नाना राग रङ्ग तब ठाना। श्यामकर्ण लै किये पयाना॥
गजते उतरि राव तब गयऊ। पारथ चरण माथ तब दयऊ॥
म अब पुत्र तोहार प्रमाना। चित्रांगदा गर्भ निर्माना॥
सम्पति राज्य लेहु अब ताता। कीजै कृपा जन्मकर दाता॥
पारथके दलका सरदारा। सब पारथ सों कहै सुसारा॥
पारथ मिलो न पुत्रते, देखौ सुतकर देश।
शीश चरण दै मुनि रहे, मणिपुर मती नरेश॥
पारथ उपजो क्रोध अपारा। नृपके हृदय लात इक मारा॥
भाषत तोहिं लाज नहिं आवै। वैश्य गती मम पुत्र कहावै॥
मोसे जन्म तोर नहिं अहई। मेरो सुत ऐसे नहिं कहई॥
सुत अभिमनुग्रहि जानु हमारा। चक्रव्यूह इकला संहारा॥
नाच गान गन्धर्वको काजा। राजा भै तुहि नेकु न लाजा॥
अश्वहि गहे सर्व मन लाये। भय आतुर तब देखन पाये॥
इन भौ तोहिं शरणन लागे। देखत भय आतुरते पागे॥

बभ्रुवाहन सुनत रिसाना। क्रोधवन्त ह्वै वचन बखाना॥
और सही सब जो तुम कही। एक बात तौ जात न सही॥
कहेउ वैश्य सुत मोकहँ मारी। तौ मम मातु भई व्यभिचारी॥

अबतौ अश्व न देव हम, सुनु पारथ यह बैन।
वैश्यनते हय लेउ अब, देखों चन्नी नैन॥

यह कहि अश्व बांधि लै गयऊ। तब रण हेतु युद्ध मन दयऊ॥
नृपको दल निकरो अति भारी। आगे भये वीर धनुधारी॥
अश्वहिं राखि गेह नृप आये। महाक्रोध युद्धहि मन लाये॥
तात जानि अश्वहि मैं दयऊ। महा गर्वते गारी दयऊ॥
अब आवत हौं युद्ध हि करेऊ। सुनत क्रोध अनुशल्या जरेऊ॥
नऊ बाण अनुशल्या मारे। क्रोध बभ्रुवाहन उरधारे॥
धनुष सँभारा सौ शर छाटे। तीनि बाण ते इन्ह दल काटे॥
तब राजहिं भो क्रोध अपारा। लगे बाण वर्षन जलधारा॥
भीजे रक्त दोऊ सरदारा। ऋतु वसन्त टेसू परकारा॥
चारि बाण राजा तब मारे। रुण्ड मुण्ड महि परे विकारे॥

पांच बाणते सारथी, काटे ध्वजा निसान।
हाथ धनुष तब कटपरो, अनुशल लागे बान॥

भयो क्रुद्ध अनुशल्य भुआरा। और रथहि भये असवारा॥
क्रोधित ऐसे बाण चलाये। रथ समेत ते काम वहाये॥
शर सारंग करै सन्धाना। मारै राव सहस इक बाना॥
तिन्हहि गदा लै राजा धाये। जाय जाय अनुशल्यहू नाये॥

तापाछे नौ बाणहि मारा। मूर्च्छा भो अनुशाल्व भुआरा॥
सारथि लेक तुरतहि आये। पाछे कामदेव तब धाये॥
रहुरहु करिकै शर दश छाटे। अयुत शरनते राजहिं काटे॥
दोनहुं वीर लगे शर मारन। सौते सहस हजार हजारन॥
अश्वरु गज रथ पैदल जूझे। बाणन विना और नहिं सूझे॥
रुण्ड मुण्ड तब भे बहुताई। रक्त नदी तहं बहु बढ़िआई॥
नदी तरङ्ग बहत है भारी। योगिनि सब तौ करैं धमारी॥

कामदेवने रण कियो, रक्त बहायो खेत।
रुण्ड मुण्ड मय मेदिनी, नाचहिं योगिनि प्रेत॥

जबहिं काम ऐसे शर ठाना। तौ मणिपुर पति क्रोध रिसाना
क्रोधित ऐसे बाण चलाये। रथ सकेत तौ काम छुपाये॥
कामहि तन सब झांझर भयऊ। ऐसी मार कामको दयऊ॥
दोनों वीर तजे क्रोधितशर। होन लगी अति मार परस्पर॥
राजा मारेउ बाण रिसाई। मोहित कामदेव भे आई॥
सांग गदा तब लेकर छाटे। तीनं बाण ते गद नृप काटे॥
दोनों शर मारहि रिसिआई। तब दोनों मूर्च्छित भे जाई॥
क्रोधित राजा मारेउ बाना। मूर्च्छित भयो काम मैदाना॥
मूर्छित काम बहुत दल मारे। रुण्ड मुण्ड महि परे विकारे
विकट कवन्ध रूप तब धावं। योगिनि गण तो मङ्गल गावें

हाथ चरण शिर कहुँ परे, कहूं रुण्ड कहुँ मुण्ड।
नाना अस्त्र सुहाय महँ, मारत धावत रुण्ड॥

वीर अनेकन पारथनन्दन । पारथको दल कियो निकन्दन ॥
तब अनुशल्व चेत भो धाये । प्रद्युमन चेतत आगे आये ॥
हंसध्वज नीलध्वज राई । यौवनाश्वकी सैन सिधाई ॥
मेघवर्ण आदिक सरदारा । वह अकेल मणिपुरी भुआरा ॥
सबै वीर मिलि शर तो छाटे । पारथ पुत्र सबै शर काटे ॥
जूझे वीर खेत तों लाखन । महा मारु भै सकि को भाषन ॥
सुर तुरङ्ग जूझी नहि परेऊ । कायर प्राण प्रथमता हरेऊ ॥
लड़ि लड़ि शूर तजे तब प्राना । गये अमरपुर बैठि विमाना ॥
सुरकन्या सङ्ग रस सुख पाये । अपनी देह अवनि दिखराये ॥
कुञ्जर अश्व पदातिक नाना । जूझे बहुत न जाय बखाना ॥

जैसे लवकुश रामते, मारु भई विपरीति ।
पारथ सुत अरु पार्थ ते, युद्ध होत यहि रीति ॥

राम कथा सब मुनि तब कहेऊ । जैसे रण तहँ होते भयेऊ ॥
पारथ नन्दन बाण प्रहारा । मूर्छित भो अनुशल्य भुआरा ॥
औरौ बाण कामको लागे । मूर्च्छित भये नेकु नहि जागे ॥
नीलध्वज मूर्च्छित मैदाना । यौवनाश्व लीन्हे तब बाना ॥
क्रोधवन्त तब बाणन छाटे । पारथ पुत्र मांझ तौ काटे ॥
पारथसुत तब मारे बाना । यौवनाश्व मूर्च्छित मैदाना ॥
तब सुवेग अमरष भरि धाये । मणिपुर पतिपर बाण चलाये ॥
पञ्चबाण नर राजा काटे । बाण सुवेग और तब छाटे

मूर्च्छित भये मणीपुर राऊ। पलकमाहँ चेतन तब पाऊ॥
चेत भये तब मारेउ बाना। तब सुवेग मूर्च्छित मैदाना॥

मेघवर्ण तब धायऊ, कर ले शारँग बान।
महायुद्ध तब लागेऊ, राजा सुनहु बखान॥

मेघवर्ण पुरुषारथ करेऊ। दल अनेक खेतनमहँ परेऊ॥
जबहिं मणीपति मारेउ बाना। मेघवर्ण मूर्च्छित मैदाना॥
मेघवर्ण मूर्च्छा जब पाये। तब हंसध्वज राजा धाये॥
रहु रहु करि मारे तब बाना। मणिपतिको छाये मैदाना॥
ऐसे शर तब राजा मारे। रथ सारथि पैदल संहारे॥
हंसध्वज कीन्हो प्रभुताई। पांच चोहिणी मारि गिराई॥
क्रोधित भये मणीपुर राऊ। हंसध्वजपर बाण चलाऊ॥
रथ सारथी सुकीन्ह निदाना। हंसध्वज मूर्च्छित मैदाना॥
जेते वीर सबै बध भयऊ। वृषकेतूसों पारथ कहेऊ॥
जैसे पुत्र हस्तिना देशहि। कहो जाय सुधि धर्म्मनरेशहि॥

कहो जाय वृत्तान्त सब, अश्व राधिकारोन।
जो तुम जूझे रण विषे, कहै जाय सुधि कौन॥

तुम जूझे कुन्ती दुख पैहै। हमहिं शाप दै प्राण गँवैहै॥
जब पारथ यह कहे बखानो। तब देखा है मृत्यु निशानो॥
पारथ उपर गृद्ध उड़ि आये। रुण्ड छांह लखि पारथ पाये॥
कर्णपुत्र तुम शीघ्र सिधाओ। यह सब कष्ट जाय समझाओ।
[illegible] नृप यज्ञ कराई। मोपर काल आय नियराई॥

देखन यज्ञ नयन नहिं पाये । यह बड़ शोच मोर मन आये ॥
दण्ड सहस्र छत्र जेहि लागे । सोइ चला राजाके आगे ॥
यज्ञ माहँ दीन्हा नहिं दाना । नृप ने कीन्ह शेष अस्थाना ॥
गङ्गा जल नहिं रानी भरेऊ । यही शोच मोरे जिय धरेऊ ॥
जाहु तुरन्त कर्णके नन्दन । कहौ जायकै जहँ जगवन्दन ॥

कर्णपुत्र तब अस कह्यो, जो रण तजि हम जाहिं ।
मम प्रपितामह स्वर्ग ते, टूटि परें भुवि माहिं ॥

रहे सुयश सब यहि संसारा । यहि ते भल जो मृत्यु विचारा ॥
ताको जन्म सफल है पारथ । जो तन धन देवहि परस्वारथ ॥
तन धन निष्फल ताको गयऊ । पर उपकार विमुख जो भयऊ ॥
जीतें यश बड़ाई पावें । जूझें स्वर्ग लोकको जावें ॥
उत्तम देह पार्थ परमाना । मणिपुर नृप है तृणहि समाना ॥
बहु प्रकार पारथ समझायो । कर्णपुत्र के हृदय न आयो ॥
शारंगबाण हाथ करि लीन्हा । रथ चढ़ि तबहि हांक तो दीन्हा
मोर वीर सम हमें न जानो । अब हमते रण तुमहीं ठानो ॥
यह कहि तीन बाण फटकारा । लगे मणिपती गात भुआरा ॥

तब सँभारि मणिपुर पती, मारे बाण प्रचण्ड ।
सहित अश्वके सारथी, काटि किये नौ खण्ड ॥

कर्णपुत्र क्रोधहि तब पाये । एक लक्ष नव बाण चलाये ॥
रथ सारथि काटे पल माहा । दोनों वीर बड़े बल बाहा ॥
पारथपुत्र बहे तब बैना । तो सम वीर न देख्यों नैना ॥

कर्णपुत्र शर ऐसे मारा। पर्वत पवन छाय अँधियारा॥
रवि कुबेर औ यमके बाना। ते सब कुँवर करें सन्धाना॥
लेकर शंभु बाण तब अस्त्रहि। ताते हते पताका छत्रहि॥
मणिपुर-नृपति हने अस बाना। कर्णपुत्र नभ कियो पयाना
रविमण्डल में पल इक रहेऊ। पितु प्रपिताके दर्शन भयेऊ॥
तबहिं वीर वसुधापर आवा। पारथ सुत तब वचन सुनावा॥

विनतासुत जिमि इन्द्र वध, तैसे हति तुव प्रान।
सुनत क्रोध भो कर्णसुत, मारे राजहिं बान॥

तब मणिपुरपति स्वर्गहि गयऊ। सूर्य्य तेज महं छिपि सो रहेऊ
वहँ ते जब हौं कीन्ह पयाना। तो सम वीर न देख्यो आना॥
तब फिरि गये सूर्य्यके पाहा। अङ्ग अङ्ग जर जर नरनाहा॥
पुत्र सुपुत्र कहे रिसि आई। हंसध्वजको वधि प्रभुताई॥
ताते स्वर्ग देखाथो तोहीं। अजहूं वीर न चीन्ह्यो मोहीं॥
मणिपुर पति तब वसुधा आये। वृषकेतूपर बाण चलाये॥
कर्णपुत्र स्वर्गहि महं गयऊ। पाछे प्रगट भूमि महँ भयऊ॥
कबहुं अकाश कबहुं धर धरणी। पार्थ ठाढ़ देखत रण करणी
बाण लगे तनु मांस उड़ाये। अन्तरिक्षमहं पक्षी खाये॥
पांच दिवसलों तब रण कीन्हा। रैनि दिवस सांसहु नहिं लीन्ह

मारे बाणजु क्रोधकर, मणिपुरपती नरेश।
काटि शीश वृषकेतु कर, भये युद्ध कर शेष॥

उठो कबन्ध अस्त्र तो धरेऊ । शिर पारथके रथपर परेऊ ॥
हय रथ पैदल सुभट सम्भारे । देखा पार्थ रुदन सञ्चारे ॥
हाहा कर्णपुत्र धनुधारी । सुन्दर मुख बलिजाउं तुम्हारी ॥
कुन्ती नृप भाई यदुराई । इन सब ते का कहिहौं जाई ॥
बहु प्रकारते रोदन करही । विविध भांति विलाप सञ्चरही ॥
हा हरि सारथि कीन्ह हमारा । आवत को नहिं दोष तुम्हारा॥
कर्णपुत्रका वदन निहारी । मोहित भये पार्थ धनुधारी ॥
शीश गोद ले मुर्छे पारथ । रसना रटै श्रीपती सारथ ॥
देखे मूर्छित पारथ आई । बभ्रुवाहन परम सुख पाई ॥

मूर्छित जाने तातकहं, धनुषहि अय उठाय ।
कछुक वचन कहि मणिपती, भाषत कटुक सुभाय ॥
सुनिये राजा श्रवण दे, ताको करौं बखान ।
शोच किये का काम है, गहो धनुष कर बान ॥

इति अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

वैशम्पायन करैं बखाना । पारथ पुत्र कहेउ परमाना ॥
हम देखनको तव तुम कहेऊ । ता कारणते प्रण हम गहेऊ ॥
[illegible] परत नहिं चलिय कोई । वैशम्पायन हय [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] न ऐसे । कर्णपुत्र यहं देख्यो जैसे ॥
[illegible] [illegible] हम देखहु सञ्जाता । करौ युद्ध ऐसो कहि बाता ॥

यह सुनि कर तब पारथ जागे। महा खंभार क्रोधमें पागे॥
बाण धनुष तब कर में लीन्हा। क्रोधित ह्वै रथचढ़ि शुभकीन्हा॥
करिकै क्रोध कहा यहपाहीं। रे मणिपुरपति जैहै काहीं॥
मेरो दल तुमने सब मारा। तोहिं वधौं अब पाण्डुकुमारा॥
औरो वहुत बात कहि आये। बाण वृष्टि तो पारथ लाये॥

क्रोधित पारथ वीर तब, बाण वृष्टि झरि लाय।
रथ गज हय पैदल घने, त्रासित सब भहराय॥

कृतवर्माको उत्तम साथी। अश्वत्थामा नामा हाथी॥
भीम उपर कुञ्जर जब धायो। बीचहि अर्जुन मारि गिरायो॥
प्रलय काल महं शङ्कर जैसे। पारथ अस्त्र प्रहारत तैसे॥
पारथ बाण करै सन्धानहि। देखे कोइ न मर्महि जानहि॥
छूटत बाण न देखे पायो। तब देख्यो जब मारि गिरायो॥
मणिपुरपति तब विचले जाई। पारथ लगे कोटमहँ आई॥
बाण घावते गढ तब तोरे। शरके घाव कँगूरा फोरे॥
नगर नारि नर रानी भागी। भर ते पावक पुरमें लागी॥
जबहीं पारथ किय प्रभुताई। क्रोध भये मणिपुरके राई॥
मारे बाण मणीपुर राऊ। चारों हयके लागो घाऊ॥
तीनि बाण पारथ को मारे। एक बाण ते छत्र सँहारे॥
सात बाण मुच्छे तब वीरा। बेरथ भये पार्थ रणधीरा॥

तब दोऊ जन भूमिमहँ, युद्ध करत विपरीत।
महामार को कहि सकै, देखत सब भय भीत॥

ारथने जेते शर छूटे । मणिपुरपति तुर्तहि सब काटे ॥
तब बभ्रूवाहन रण कीन्हा । अस्त्र अनेक जु देवन दीन्हा ॥
द्रोण आदि जो अस्त्र सिखाये । सारथि भे हरि सदा बचाये ॥
सो सब अस्त्र होत हैं कैसे । कृपिणीके घर भिक्षुक जैसे ॥
मम माता है सती प्रमाना । ताको दोष दीन्ह अज्ञाना ॥
ताखुहि दोष दीन्ह अज्ञाना । निश्चल होत ताहिको बाना ॥
यह अपराध वृक्ष है गारी । अजहूं सुधि नहि लीन्ह तुम्हारी ॥
सुमिरि बोलावहु श्रीभगवाना । तब लगि हम नहिं मारहिंबाना॥
सुनि पारथ क्रोधित शर मारा । मणिपति घायल भये अपारा ॥
तब बभ्रूवाहन शर मारा । बाणनते ह्वैगो अँधियारा ॥

प्रबल बाण तब मारेऊ, मणिपुरपती भुआर ।
पारथ तब मोहित भयो, भूले घात प्रहार ॥

कोपि पार्थ तब बाण चलाये । पै नहिं सकहिं पुत्र विचलाये ॥
गङ्गा शाप तुलानेउ आई । विसरा बल औ बुद्धि नशाई ॥
क्रोधवन्त मणिपुरके नाथा । लीन्हे अर्द्धचन्द्र शर हाथा ॥
ग. बैर लै ज्वाला रानी । अर्द्धचन्द्र शर आप समानी ॥
दहै बाण लै धनु सन्धाना । तेज मनो द्वादशहू भाना ॥
देखत शर पारथ अकुलाना । लखबाण बहु किय संधाना ॥
लाखन बाण लगे तब मारन । पै वह बाण लगै नहिं टारन ॥
[illegible] बाण कण्ठमह आई । तजे [illegible] शीश [illegible] ॥

कार्तिक शुदि एकादशी, उत्तरा मङ्गलवार।
सांझ समय जूझे जहां, पारथ पाण्डुकुमार॥
पारथ वध राजा तब धाये। शङ्खध्वनि करि हर्षमनाये॥
हर्षवन्त बहु बाजन बाजैं। बन्दीजन तब अस्तुति साजैं॥
नगर माहिं तब भूपति चलेऊ। नाना शकुन होत सब भलेऊ
तब अन्तःपुरको शुभ कीन्हा। रानी उतरि आरती लीन्हा॥
राजा सुनि तब आनँद मानो। जीते सुत बहु हर्ष बखानो॥
दासी एक जाय कहि तहां। चित्राङ्गदा उलूपी जहां॥
महावीर है पुत्र तुम्हारा। पारथको कीन्हा संहारा॥
सुनत दोउ मूर्छित भुविपरी। दासी सब तब विस्मय करी॥
राजा पाहिं कहा तब जाई। माता दोउ मूर्छा खाई॥
सुनतहि राजा अचरज पाये। देखन मातुहिं तुर्त सिधाये॥

कोइ चन्दन कोइ पवन करि, हाहा करत पुकार।
अस देखा दोउ मातुकहं, मणिपुरपती सुआर॥
अलङ्कार बिन विधवा जैसे। मातुहिं जाय दीख नृप तैसे॥
माताकहं तब भूप उठाये। औरो वचन कहे मन लाये॥
हर्ष माहिं दुख भो का जाना। माता हमसों कहौ बखाना॥
मेरो सुयश सुनौ अस माता। पारथ कहं मारे सख्याता॥
हंसध्वज नीलध्वज राजा। यौवनाश्व प्रद्युमन रण गाजा॥
अनुशल्या रणधीर जुझारा। और महाबल कर्णकुमारा॥
अलङ्कार पहिरो हे माता। देखत हैं अब मङ्गलदाता॥

सुनत वचन माता तब कहई । हे सुत तू पापी बड़ अहई ॥
पारथ कन्त हमारो अहई । मेरो सुत ह्वै पापहि कहई ॥

मेरो भूषण सकल तुव, ताहि उतारेउ आज ।
अब भूषण पहिरावतो, नेक न आवै लाज ॥

जननाशि धर्म्महिं दुख दीन्हे । कुन्तीकहँ पारथ बिन कीन्हे ॥
युद्ध समय पूंछेउ नहिं मोहीं । पापी पापबुद्धि भई तोहीं ॥
हम अब कन्तहि संग सिधावैं । रे पापी मोहिं कन्त देखावै ॥
यह कहि दोउ तिय बाहर गई । विस्मय राय बहुत विधि भई ॥
तब उलुपी भाषण अस कहई । एक परीक्षा पियकै अहई ॥
आप विलोकत हैं अब रोई । है उपाय करि सकै जो कोई ॥
मणी सजीवन अहै पताला । प्राण सजीव होय तत्काला ॥
जीवहि पारथ जो मणि आवै । सुनत बभ्रुवाहन सचु पावै ॥
हमरे पितुसन शङ्कर हारे । बलसम भो को सर्प विचारे ॥
मैं पताल चलि मणि लै आओं । जीति नाग अब तें तजि आओं ॥
सुनत मातु कह हेतु बुझाई । पुत न करु यह बड़ि लरिकाई ॥
विषम विषैल तेज प्रत्यक्षक । पन्द्रह कोटि नाग जहँ रक्षक ॥

सौ मुख कोइ दुइसै वदन, कोइ वदन सौ तीन ।
चार पांच छः सात सौ, वदन आठ सौ कीन ।

नागन बैर मणी है प्राना । परस्वारथ जिय देतको दाना ॥
तातें एक मैं मन्त्र उपावौं । अपनो भूषण पितहि पठावौं ॥
कहि मन्त्रि बोलिकै लीन्हा । सबै आभरण साथहि दीन्हा ॥

कहियो जाय पिताके पाहीं। तुव दुहिता विधवा भइ आहीं
मणी देहु तौ तात बचायो। कह्यो तबहिं इकलो जब पायो
ताता को जो सहोदर कहेऊ। खलुके रहो रहा नहिं चहेऊ॥
पुण्डरीक मन्त्री कह बाता। नाश होय तनु पार्थ सख्याता॥
पिण्ड लगै तो मणि का करही। कैसे प्राण फेरि सञ्चरही॥
मैं डसि जाउँ पिण्ड तो रहई। सुनत बभ्रुवाहन तब कहई॥

बड़े बड़े सरदार सब, कर्णपुत्र औ तात।
जाहु डसौ यह कहैं सब, मणिपति कह सख्यात॥

तब मन्त्री सबकहँ जो डसेऊ। हर्षित होय पतालहि धसेऊ॥
पंच पेंड़ दाडिमको अहहीं। ताहि देखि अब मोते कहहीं॥
यज्ञ माहिं जो पारथ मरहीं। पांचौ पेड़ आपुते जरहीं॥
जौनि परीक्षा मृतके पाओ। तो हम तुम मिलि प्राण गँवाओ॥
देखहु जाय जरे तरु आहैं। तब रोदन करि चलि पिय पाहैं॥
हा हा कन्त पुकारत चली। सङ्गहि उलुपी रोवत भली॥

देखा जाये शीश भुइँ, दोउ तिया लगि पावँ।
शीश लगाये हृदयमहँ, देह परी केहि ठावँ॥

रोदन करत कन्तको देखी। बहुत विलाप न जाय विशेखी॥
हा हा कन्त किरात सँहरेहू। राहु वेधकै द्रुपदी हरेहू॥
द्रोणहि हेतु द्रुपद लै धायो। नृप विराटके गऊ छोड़ायो॥
पावक मरण होत नरनाथा। वन अखण्ड जारेउ हरि साथा॥
इन करें अरु बान सँचारी। सुन मम शीश काटि महि डारी।

माता कह सुनिये अब राई। दीजै कठिन चिता बनवाई ॥
तजिहौं कन्त सङ्ग मैं प्राना। सुनि रोदन करि पुत्र बखाना ॥
पितुको जानि अश्व लै गयऊ। मिलत तात गारी मोहिं दयऊ ॥
सो माता अब कहा न जाई। यहिते क्रोध हृदय मम आई ॥
जन्मत हमैं मातु वध करती। शोकसिन्धु केहि कारण परती ॥

विभव विलास हुलास रस, विन पारथ केहिकाज।
निश्चय अब पावक जरौं, स्वामी सँग लै साज ॥

सेवक बोलि नृपति अस कहई। रचौ चिता जारन हम चहई ॥
चित्राङ्गदा सुनत तब कहऊ। आपुहि जरौ हेतुका अहऊ ॥
लै भूषण तौ चली प्रवेशा। प्रथम गये व्यालनके देशा ॥
सुतल तलातल सब परमाना। देखे जाय लोक तहँ नाना ॥
नागसुता सब धर्म्म सुशाला। देखत पहुँचे सप्त पताला ॥
गङ्गधार देखन जब पाये। तब गङ्गापहँ शीश नवाये ॥
बहुरि अन्हाय देवकुल पूजा। पूजत हरहि और नहिं दूजा ॥
नागसुता सब देखहिं नाना। मदनरूप लखि चित्त लोभाना ॥
पूजि देवता तुर्त सिधाये। सुधाकुण्ड तब देखन पाये ॥
नागयूथ तहँ रक्षा करहीं। हरित वदन जे उपमा धरहीं ॥
ताहि देखिकै अग्र सिधारा। पहुँचे शेषनाग दरबारा ॥
कर्कोटक जहँ मन्त्री अहई। हरित दशांते शोभित रहई ॥

भरी सभा महँ मन्त्री, दीन्ह आभरण डारि।
तव दुहिता विधवा भई, भाखै वात विचारि ॥

सो कन्या मणिहेतु पठाई। जाते पार्थ जिये सुखदाई॥
सुनिकै शेष अचम्भौ माना। सबै कथा जो पूछि प्रमाना॥
कैसे पार्थ तज्यो है प्राना। पुण्डरीक सुन कियो बखाना॥
धर्मराज यज्ञहि निर्मांये। हय रक्षक अर्जुनहिं पठाये॥
बहुत देश जीतत जब आये। तब मणिपुर जो अश्व सिधाये॥
बभ्रूवाहन पार्थ कुमारा। गह्यो अश्व जब सुने भुआरा॥
पिता जानि मिलने जब गये। तब पारथ बहु गारी दये॥
तात क्रुद्ध ह्वै रण अनुसारा। सब दल संहित पार्थको मारा॥
तुव कन्या सब विनय प्रमाना। है सरवर संजीवन जाना॥
मणी देहु तौ बचिहै पारथ। नातौ सब जो भये अकारथ॥

शेष कहे विस्मयबदन, धृतराष्ट्रक की बात।
सुन मन्त्री आश्चर्य्य है, पार्थ मृत्यु उत्पात॥

मणी देहु औ अमृत भाई। जाते पार्थ प्राण बचिजाई॥
सुनतै सबै नाग रिस ताता। एकहि बदन कहे सब बाता॥
धृतराष्ट्रक राजा ते कहेऊ। पृथ्वीनाथ एक मणि अहेऊ॥
पुरी पताल नाग जहँ मरई। कहो बात तव कत सञ्चरई॥
यह मणि मृत्युलोक कहं जाई। औषधि मन्त्र होब कत राई॥
तेज हमार हीन विष होई। भय हमार मनिहै नहिं कोई॥
ताते मणी दीन्ह नहिं चही। सुनतै शेषनाग तब कही॥
मणि दीजै ह्वैहै यश मेरो। और काम तो होय घनेरो॥

तो कहै देव नहिं राजा । मणी गये नाशै तव काजा ॥
ुप बांधिके नागन खैहै । गरुड़ दुष्ट आवत दुख पैहै ॥
शेष कहै मणि दीजिये, पारथ हरिको दास ।
आये दूत सु आश करि, कैसे करहुँ निराश ॥
ाल वत्स जब ब्रह्मा हरेउ । माया रूप कृष्ण सब करेउ ॥
प एक विधि रहे भुलाये । सो पारथके आय सहाये ॥
मणि देहों जग यश रहई । सुनत बात मन्त्री अस कहई ॥
ो विनाश नागन कुल कीजै । मृतुअ लोक तो मणि यह दीजै
न्यो हेतु कहा सब यही । राजाके मन विस्मय रही ॥
म हम कछु कहें नहिं बाता । अहिके भवन गये सख्याता ॥
ण्डरीकके शेष बुझायो । हमते कछू नहीं बनि आयो ॥
ं हैं कृष्ण जगतके तारण । तुम पताल आये केहि कारण ॥
ेषनाग तो कह मन दयेऊ । आशा भङ्ग दूत तव भयऊ ॥
ं निराश चले पुनि तहां । नर नारी मग जोहत जहां ॥
रोदन करतीं लिया सब, विस्मयमन बहुराय ।
मग जोहत अभ्यन्तर, दूत पहूँचे आय ॥
ां कह्यो सबै समुझाई । पुरी पताल मणी नहिं पाई ॥
ार दीन मन्त्री नहिं दीन्हा । सुनत बभ्रु वाहन रिस कीन्हा ॥
ागरब राजा ते कहई । मृतुअभुवनको मणी न अहई ॥
ोज पताल हनि सर्प हिलाऊं । बभ्रुवाहन तब नाम
दन हरण शम शङ्कर होई । जौलों सर्वहि जो सावै

इतना कहि किय रणके साजा। ले दल चले युद्धके काजा॥
पहुँचे जबहिं शेष सुनि पाये। तब मन्त्री सन कहा बुलाये।
आये रणहि मन्त्रका अहई। सुनत बात मन्त्री तब कहई॥
हम तो जाब करन रण साजा। मारहुँ सबहिं शोच का राजा
इतना कहि धृतराष्ट्र सिधाये। नाग सैन्य तब अद्भुत आये॥
हय गज रथ पर भे असवारा। विषम विषैल चले मणिआरा॥

दोय तीनसौ चार मुख, विषधर वीर अपार।
गहे अस्त्र आये सबै, अगणित पार्थकुमार॥

देखत पारथ कुँवर रिसाना। वर्षन लागे अद्भुत बाना॥
नागहिं अस्त्र विषम फुफकारा। मानुष जूझैं होत सँहारा॥
सेलह साँग मारेउ असि बाना। मारौं सर्प वीर बलवाना॥
विषके तेजहि दल अकुलाना। जूझानल तब बहुत रिसाना
सहस एकइस दल वध भयऊ। बभ्रुवाहन नाम तब लयऊ
धृतराष्ट्रकसो मारे बाना। क्रोधवन्त ह्वै काल समाना॥
न्यूर मोरको अस्त्र चलायो। ऐसे बहुत नाग बिचलायो॥
महामारु तब प्रगटी भारी। मारे गये बहुत विषधारी॥
पुनि सब नागन कीन्ह दरेरा। दशो दिशामें नरदल घेरा
बभ्रुवाहन तब बहुत रिसाना। क्रोधित मारे मधुको बान

मधू प्रश्न करिके तबै, मारत पिलके बान।
चाम मांस औ हाड़जे, छेदे उभय प्रमान॥

सो मारु भई घमसाना। तबहिं नागदल सब महराना॥
ारन गये क्रोध करि बाना। आगे हेतु कहा सोमाना॥
ावहूं मणी तुरन्तहि दीजै। शेष कहा मन्त्री अस कीजै॥
ोषनाग उर हर्ष जु कीन्हा। मणि अमृत दोऊ ले दीन्हा॥
मलन हेतु सो सब पगधरेउ। गृहमें मन्त्री रोदन करेउ॥
री पाण्डव दुष्ट हमारा। मणि अमृत गै करै विचारा॥
ष्ट दुर्बुधी दो सुत अहई। तब ते बात तात सन कहई॥
महँ ऐसो पुत्र तुम्हारा। जिये पार्थ कैसे संसारा॥
ाश जाहु राजासँग धाई। हम कछु तवहीं रचब उपाई॥

शिर आनवमैं पार्थ का, रुण्ड रहै मैदान।
देखौं कैसे सुधामणि, करि देही जिवदान॥

र कहि तात तुरन्त सिधाये। दूनो बन्धु मणीपुर आये॥
द कोउ जानै नहि पाये। पारथको लै शीश सिधाये॥
ञ्जविपिन महं मलिके डारा। शीश नहीं तब त्रिया निहारा॥
ादन करै त्रिया बहुरूपा। मणिपति मिलै धायके भूपा॥
ोणि प्रगुन दीजै तौ हाथा। हर्षित चलै मणीपुर नाथा॥

तेलकुण्डमहं पार्थ अरु, सवन करे अस्नान।
चढ़ि गर्दभ दच्छिण दिश, कीन्हा रैनि पयान॥

सो वर्तन सुलाल है फूला। पारथ स्वप्न देखि भयशूला॥
रोदन करि कुन्ती सञ्चारे। श्रीपति कीन्हा पारथ मारे॥
चले भीम तब कुन्ति डेरानी। हरी गरुड़ पर आसनठानी।
पार्थ हेतु चल शारँग पानी। मणिपुर चले पहूँचे आनी॥
देखा रण श्मशान समाना। तम्बू एक देख भगवाना॥
अगणित रानी रोदन करहीं। कृष्णारु भीम तहां पग धरहीं
देखा हरि पारथके रुण्डा। रोदन करैं तिया विन मुण्डा॥
कह तब हरिहिं कौन रण राना। को पारथको कौन निदान
हा पारथ करि कही बखानी। रोये भीम कुन्ति पटरानी।
तबहीं भीम कहा अस बानी। ऐसो कोन वीर जग जानी॥

मेरे देखत अब्ब हरि, बधे पार्थ रणधीर।
जाहि कुशल सो प्राण लै, ऐसो को यदुवीर॥

बभ्रुवाहन रोदन करि कहई। हम तो पुत्र पार्थकर अहई॥
कर्म्म दोष हत्या हम पाये। तातहि अपने हाथ गिराये॥
अमृत हरि पताल ते लाये। अभ्यन्तर शिर कोउ दुराये॥
ताते भीम गदा परिहारो। मेरो शीश चूर्ण कर डारो॥
मैं दर्शन श्रीहरिके पाये। जगके भय मो मन नहिं आये।
श्रीपति हमैं मृत्यु अब दीजे। मेरो पाप उऋण अब कीजै
चित्रांगद तब रोदन करही। कुन्तीके चरणनमहँ परही॥

ोकित कुन्ती परि मुर्छाई। शेष कहा सुनिये यदुराई॥
दुवंश बूड़त अब कैसे। तुमहि कियो रक्षा उपजैसे॥
नके हरि चिन्ता उर पागे। सबै लोग तब बोलन लागे॥

ब्रह्मचर्य्य जो पुण्य हम, कीन्ह जगत मों भार।
तौ आवै शिर पार्थको, चोर होउ संहार॥

हतै तुर्त शीश तब आये। मन्त्री दुष्ट नाश तब पाये॥
य शीश कन्धापर धारे। हरि मणिहाथ कहै सञ्चारे॥
रमं पारथ मणि तब राखे। उठत पार्थही श्रीपति भाखे॥
ागे शीश उठो तब कैसे। चुम्बक माहि लोह लग जैसे॥
युमन वह मणि धरि जगवन्दन। रहु रहु करि तब उठे अनन्दन
ाणव रण धीर कुमारा। यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा॥
सध्वज नीलध्वज राऊ। जागे सबै चेत तब पाऊ॥
ारथ आदि सबै जब जागे। धाय कृष्णके चरणन लागे॥
रवक शेषनाग तो भयऊ। शेष अनन्द बहुत विधि लयऊ॥

नाना कौतुक बाद्य तब, होत अनन्द अपार।
पैदल सैना पार्थ ले, सुनत नगर पगुधार॥

मोहन लज्जा पाये। सभा माहि नहि मुख देखराये॥
पाप पितुको बध ऐसो। पाप याहि छूटै धौं कैसो॥
ारट लेई यहीं ननु काशी। हिम प्रयाग जाइहीं प्रकाशी॥
पापका छूटन अहई। सुनिके भीम बोधि तब कहई॥
र रन शोच नहि कीजै। हम जो कीन्ह अवट सुनिलीजै॥

भीष्म पितामह मैं संहारा। द्रोण गुरु अपने कर मारा॥
हरि दर्शनसों पाप नशाना। तुव दर्शन पाये भगवाना॥
पारथ गहे तबहिं सुत हाथा। गहि बैठारे अपने साथा॥
पुरमहँ भई अनन्द बधाई। परमहर्ष माने यदुराई॥

पांच दिवस आनन्द बहु, बीते मणिपुर देश।
प्रात समय सब आयहू, बोलत भये ऋपेश॥

कह्यो भीमते श्रीयदुराई। चित्रांगदहि लीन्ह सँग लाई
शेषसुता तौ सङ्ग सुजाना। कुन्ती औ मम मातु प्रमाना
अब तौ जाहु हस्तिना देशहि। हम हस्तिनके संग विशे
सुनतै सबको सङ्ग करि लयऊ। भीम बिदा तब हस्तिन भ
शेषनागको पूजा दीन्हे। शेषागमन पतालहि कीन्हे॥
भीमसेन हस्तिनपुर गयऊ। सबै बात तो कहवै लयऊ॥
विस्मय हर्ष तु धर्म्मकुमारा। वैशम्पायन कथा सँचारा॥
पांडु विजय यह पुण्य कहानी। बाढ़ै धर्म्म पापकी हानी॥
तब जन्मेजय पूछन लागे। कीनी कौन देश नृप आगे॥
कहा भयो कैसो रण भारी। वैशम्पायन कही बिचारी॥

वैशम्पायन भाषेऊ, रहस कथा सुनु राय।
मणिपुरते हय छूटेऊ, चले वीर सँग धाय॥

इति नवम अध्याय॥ ९॥

बभ्रूवाहन सँग है पारथ। वैशम्पायन कहै यथारथ ॥
चलत पंथ महँ कौतुक भायो। ताम्रध्वज हय देखन पायो ॥
मोरध्वजको पुत्र जुझारा। अपनो अश्व करै रखवारा ॥
मोरध्वजहि यज्ञ निर्मांये। पारथको हय देखन पाये ॥
पारथको हय गहि सो पाये। पठै सचिव तौ अर्थ सुनाये ॥
बहुत शुद्ध मन्त्रीकौ बाता। ताम्रध्वज हर्षित सुनि गाता ॥
हरै अश्व दलको संहारा। कहै कुँवर तो काज हमारा ॥
संवत मध्य यज्ञ तो करै। अष्टम यज्ञ अश्व तब हरै ॥
हरै अश्व तौ हर्ष अपारा। तब पारथ दल परी पुकारा ॥
हरेउ अश्व तब रव रव भारी। तब पारथते कह बनवारी ॥

महाबली मोरध्वज, सब राजा कर देत।
बभ्रुवाहन कह सत्य है, हम कर देत सचेत ॥

कहेउ कृष्ण नर्मदके तीरा। इनके तात यज्ञ करि धीरा ॥
इनते जीति सकै नहिं कोई। यद्यपि सैना साजै जोई ॥
गीध व्यूह दल करी प्रमाना। अनुशल्या रह कन्ध स्थाना ॥
हंसध्वज नयनन महँ राखो। और काम अनिरुद्धहि भाषो ॥
सात्यकि पुत्र पच्छके माहां। मेघवर्ण दल रच्छक ताहां ॥
पारथ सुत औ कर्णकुमारा। दोनों चोंचनके रखवारा ॥
ऐसे दल संयुत करवाये। मोरध्वजपहँ कृष्ण सिधाये ॥
करि प्रणाम ताम्रध्वज कहै। आपै युद्ध हेतु मन गहै ॥

आपुहि युद्ध करिय मनलाई। मोको नाहीं भ्रम यदुराई॥
अर्द्धचन्द्र शर सेना करई। अगणित ताम्रध्वज सञ्चरई॥
सत्रह बाणन हाथ लै, मारयो विरह अनङ्ग।
तीनि बाण तब श्याम के, मारे ताकि अभङ्ग॥
पांच बाण दारुकको मारे। घायल भयउ न ज्योति सम्हारे।
रणमहँ गर्जा सिंह समाना। मारा सात्यकिके तब बाना॥
कृतवर्महिं मारे नौ बाना। सहस बाण प्रद्युम्न समाना॥
बाण सहस्र कामसुत ताना। अनिरुध क्रोधे काल समाना॥
रह रह अब सह बाण हमारा। यह कहि बहुत बाण संचारा।
करिकै क्रोध बाण तब छाटे। मोरध्वज ता बीचहिं काटे॥
पांचबाण ताम्रध्वज मारा। मारे चारो तुरँग तुषारा॥
व्याकुल भये क्रोध रण ठयऊ। पारथदल सब घायल भयऊ
प्रद्युमनके रथको तब तोरा। तब अनिरुद्ध क्रोध शर जोरा।
तब दोनों वसुधा लरे, महामारु तौ ठान।
मल्लयुद्ध तब ठानेऊ, अनिरुध गिर मैदान॥
औरो रथ ताम्रध्वज चढेऊ। महामार युद्धहि मन बढ़ऊ॥
हरि ते भाषै अनिरुध गिरेऊ। तब देखत वृषकेतू फिरेऊ॥
मारि हांक तब बाण प्रहारा। ताम्रध्वजको रथ सञ्चारा॥
जौने रथ ताम्रध्वज आवै। कर्णपुत्र सो मारि गिरावै॥
तबहो क्रोध ताम्रध्वज भयऊ। काल समान बाण तब लयऊ।
हे शर मूर्च्छित कर्णकुमारा। पांचबाण तब तेहि संचारा।

ाते मूर्च्छित भो अनुशला । देखत बभ्रुवाहन तब चला ॥
ाचबाण रहु रहु करि मारा । तामध्वज रथ काटि पँवारा ॥
ौवनाश्व पारथ सुत मारे । ताम्रध्वज सो काटि पँवारे ॥
्रोधित बाण छांड़ि तब दीन्हा । बभ्रुवाहन मूर्च्छित कीन्हा ॥

रहो कृष्ण रण माहिं अब, सहो हमारो बाण ।
सत्नी भागेउ देखतै, पारथ दल भहरान ॥

सबै वीर देखत हैं ताहीं । ताम्रकेतु डारत रणमाहीं ।
देखत पारथ वीर रिसाना । ताम्रध्वज कहँ मारेउ बाना ॥
नवो बाण पग अश्वन मारे । और बाणते रथ संहारे ॥
औरे रथहिं भये असवारा । नवो बाण पारथकहँ मारा ॥
और बाण ते रथ संहारा । औरे रथहिं भयो असवारा ॥
तवहीं क्रोध करै बहु लीन्हा । बाण वृष्टि पारथपर कीन्हा ॥
ते अस देखि सुचित तहँ भयऊ । शङ्खध्वनि पारथ तहँ कियऊ ॥
ताम्रध्वज को रथ संहारा । औरे रथ चढ़ि श्यामकुमारा ॥
क्रोधवन्त वाणन तब मारा । पारथके सारथि संहारा ॥
और बाण पारथ के लागे । मूर्च्छित भे पुनि पारथ जागे ॥
महामारु पारथ पर दीन्हें । एक सहस्र मारि रथ लीन्हें ॥

ताम्रध्वज को सबै दल, पारथ शर भहरान ।
तबहूँ ताम्रध्वज बली, छांड़ा नहिं मैदान ॥

पारथ मारा बाण रिसाई । ताम्रध्वज रथ मारि गिराई ।
औरहि रथ पर भो असवारा । पारथ ऊपर बाण प्रहारा

पारथ के शर प्रबल समाना। शोहिणि दुइ दल गिरे प्रमा
अयुतबाण ताम्रध्वज मारा। पारथ क्रोधित बाण सँचारा।
धनुषै गुन काटे तब पारथ। दोय सहस्र मारे रथ सारथ॥
सात दिवस लग दिन अरु राती। ऐसी मारु भई बहु भांती॥
ताम्रध्वज शर हते रिसाई। पारथको रथ चला उड़ाई॥
ऊपरते रथ भुवि करि थामा। हस्तकमल पर लीन्हे श्यामा॥
भुवि पर जब राखे यदुराई। तब ताम्रध्वज कह बिलखाई॥
मैंने तो उड़ाय रथ डारा। राखे कर धरि नन्दकुमारा॥

श्रीपति गदा घाव करि, औ करि चरणप्रहार।
मूर्च्छा रहि पल एकलौं, जागे राजकुमार॥

तीनि बाण हरिको तब मारा। कह हरि पार्थ करो संहारा॥
हम तुम आजहि इन को मारैं। यहि अन्तर श्रीकृष्ण विचारं॥
मारे रिस करि पारथ बाना। बहुरि क्रोध भे पार्थ रिसाना॥
क्रोधवन्त ह्वै बाण चलाये। ताम्रध्वज गुन काटि गिराये॥
तब ताम्रध्वज कहे रिसाई। अब पारथ राख्यो यदुराई॥
जौनहिं रथपर पारथ आये। सारथि भे तब रथहि बचाये॥
ताम्रध्वज हरिको हनुमाना। पारथ दल तब सब भहराना॥
हय गज रथ पैदल हैं जेते। वहि रणमें विचले सब तेते॥

ताम्रध्वजको सबै दल, क्रोधित ह्वै भगवान।
गहे चक्र तब चक्र धर, महा मारु तब ठान॥

रथ ते वेगि उतरि कै धाये । तीनि लोक तब शङ्का पाये ॥
डगमगानि भुवि सब संसारा । एक च्चोहिणी दल संहारा ॥
तब सुचित्र बहु घातैं करै । आय धाय श्रीकृष्णहिं धरै ॥
दहिने हाथ गहे तब धाये । वामकरपदहि शीश चढ़ाये ॥
पारथ जाना मिले प्रमाना । ताम्रध्वजहि क्रोध तब माना ॥
वाम चरण पारथकहँ मारा । हरिपर गिरे सुचित्र कुमारा ॥
हरि अर्ज्जुन तब मूर्च्छित भयऊ । लैकर अश्व चलन मन दयऊ ॥
हर्ष गात अपने पुर चलेउ । दूनो अश्व सङ्ग हैं भलेउ ॥
मोरध्वज तब देखन पाये । दूजो अश्व कहांते लाये ॥

ताम्रध्वज औ मन्त्रि ने, भाषेउ सकल वृतान्त ।
धर्म्मराज कर अश्व है, रच्चक कमलाकान्त ॥

रच्चक पारथ श्री भगवाना । सब दल मोहित किय मैदाना ॥
सुनहु ताम्रध्वज राजा कहई । धृक धृक सुत तू मेरो अहई ॥
हरिको तजे अश्व ले आये । धृक जीवन तोहिं गुरु पढाये ॥
यहु प्रकार ते डाटन लागे । इत पारथ हरि मूर्च्छा जागे ॥
भ्रुवाहनादि सरदारा । चेतन भये सबै विस्तारा ॥
पारथ कहै कहां यदुराई । अश्वहिं लये कहां सो जाई ॥
हमहूं को चलिये लै तहां । सुनी बात तब श्रीपति कहा ॥
रत्नपुरी मोरध्वजराऊ । वह ल अश्व गयो परभाऊ ॥
परमबली है भक्तहमारा । मायाकै कीजै सञ्चारा ॥
वृद्ध द्विज हम तुम हो बालक । यहि विधि चलौ कहैं गोपालक

न्टपका सत्त देखाइहौं, तुमको पारथ वीर ।
बाल वृद्ध मायाकरी, चलो न्टपतिके तीर ॥
सेन राखिके दोउ जन आये । रत्नपुरी निशिमाहिं सिधाये ॥
नर नारी कौतुक लख नाना । प्रात होत न्टप पहँलो आना ॥
यज्ञशाल मो राजा अहई । दूनो अश्वहि देखत रहई ॥
जाय विप्र जब आशिष दयऊ । तब राजा यह बोलत भयऊ ॥
बिन प्रणाम तुम आशिष दयऊ । मोको महापाप द्विज भयऊ ॥
द्विज कह कछू पाप नहिं राजा । याचक द्विजको है यह काजा
करि प्रणाम तब राजा कहई । कहो विप्र मन-कामन अहई ॥
विप्रन कहो मध्यपुर ग्रामहि । कृष्ण शर्म्मा है मेरो नामहि ॥
अपने सुत को व्याह बनाये । पुत्र वधू ले तुमपहँ आये ॥
मार्ग माहिं घन कानन अहई । तहां सिंह मेरो सुत गहई ॥
मैं विलाप बहु विधि किये, सिंह नेक नहिं मान ।
मोहिं न पकरो शिशु गहेउ, ताहि चहत अब खान ॥
सिंह कहै आय् जेहि अहई । ताको हम नाहीं द्विज गहई ॥
जो चाहत हौ पुत्र बचावा । तौ दीजै जो मम मन भावा ॥
एक वस्तु मांगा हम पासा । जाते हम आये करि आसा ॥
मोरध्वज राजा तब कहई । मेरे देश सिंह नहिं अहई ॥
तब राजा पूछन यह लागे । तुमते सिंह कहो का मांगे ॥
जो मांगै सो हमैं सुनाओ ।जामैं तुम अपनो सुत पाओ ॥
मिथ्या होय न बात हमारी । तब द्विज यह बाणी संचारी ॥

मोरध्वजको अर्द्ध शरीरा । मोहिं दै सुतकहँ ले द्विज बीरा ॥
तब हम कहा सिंह सुनु बीरा । मोहित न्टप कत देत शरीरा ॥
तबहिं सिंह कह सत जो ह्वै है । देहै देह कछ ना कहै ॥

तातें न्टप मैं आयऊं, अपने सुतकी आश ।
धर्म्मराज साहस सुनो, सो तो तुम्हरे पास ॥

मोरध्वज हर्षित ह्वै कहेऊ । लेहु शरीर विप्र जो चहेऊ ॥
कछु नहि दुःख करौ सञ्चारा । यह ब्राह्मण है इष्ट हमारा ॥
सुनतहिं जग मों द्विज हैं जेते । हाहा शव्द पुकारत तेते ॥
काल स्वरूप विप्र इक आवा । नगर निवासिन बहु दुख पावा ॥
खम्भ दोय तहँ तबहीं गाड़ो । राजा तहां जाय भो ठाड़ो ॥
करि अस्नान तुलसिदल लयऊ । कृष्ण ध्यानमहँ अति मन दयऊ
तबहिं म्लेच्छ राजा ते कहेऊ । करवत शिर देखौ जो गयेऊ ॥
मृग पच्ची रोवत पुर भारी । तब रानी गइ कहै विचारी ॥
कुमुदावती तु रानी कहई । अर्द्ध अङ्ग स्त्री द्विज अहई ॥

हर्ष गात द्विज भाषेऊ, सिंह कहा समुझाय ।
वाम अङ्ग जनि लायेऊ, दहिना लाओ जाय ॥

वाम अङ्ग पतिवर्ता आहै । तातें सिंह तुम्हैं नहिं चाहै ॥
यहि अन्तर ताम्रध्वज आये । करि प्रणामतौ द्विजहि सुनाये ॥
पितुको अङ्ग पुत्र सो अहई । मेरो तनु लीजै यह कहई ॥
सुन्दर तनु जो पुष्ट सोहाई । तबहिं विप्र यह वचन सुनाई ॥

सिंहहि कहा और नहिं काजा। लाओ तनु मोरध्वज राजा॥
इस्त्री पुरुष चीरि हैं देहा। विस्मय नहिं आनन्द सनेहा॥
मङ्गल करिकै देह चिराओ। दहिने अङ्ग विप्र लै आओ॥
इस्त्री पुरुष हर्ष तव करी। करवत लै राजहिं शिरधरी॥
इन्द्र आदि देवन गण जेते। नृप सुत देखन आये तेते॥
नगर लोग सब देखहिं नाना। इस्त्रीपुरुष तु हर्ष निदाना॥

उलटे आरा नयन कर, अर्द्ध शीश गयो चीर॥
बाम नैन मोरध्वजहि, तुर्त चलो तब नीर॥

देखतहीं द्विज कह नृप पाहीं। कादर दान लेत द्विज नाहीं॥
देत शरीर तु रोदन करैं। याहि दान हम कैसे धरं॥
वरु पुत्रही सिंह ल खाऊ। यह कहि चले तुर्त द्विजराऊ॥
संगहि पारथ करिकं चलेऊ। लोग सबे तहँ देखत भयेऊ॥
तब रानी करवती उतारा। गहे दाबि शिर हाथ भुआरा॥
कहहीं बात नाथ सुनि लीजे। विप्रकाहि संतुष्ट करीजे॥
तेज शरीर विमुख द्विज जाई। अहो कन्त द्विज लेहु मनाई॥
तब राजा कर शिर धरि लहई। पाछे बात विप्रसों कहई॥
अहो विप्र विनती सुनि लीज। पाछे आप गमन जो कीजै॥
करवत नहिं दुःख हमारे। बहुत दुःख जो विमुख सिधारे॥

वाम अङ्ग रोदन कर, हम निष्फल संसार।
दक्षिण अङ्गहि हर्ष बहु, मैं द्विज काम सँवार॥

सुनतहिं बात हर्ष द्विज पाये । हर्षित राजहिं रूप देखाये ॥
चतुर्भुजा ह्वै दर्शन दीन्हा । मांग मांग वर बोलै लीन्हा ॥
दे शरीर सन्तोषा मोहीं । जगमें भक्त देखियत तोहीं ॥
धन्य पुत्र ताम्रध्वज तेरो । सब दल जीति लियो जिन मेरो ॥
तब राजा अस्तुति बहु करई । पाछे विप्र चरणमें परई ॥
माथे हाथ मृतकके दीन्हा । सर्व कलेश नाशतब कीन्हा
राजा कह विश्वम्भर देवा । मांगहु वर सुनौ हरि भेवा ॥
जैसि परिच्छा हमरी लयऊ । इस्मौ सुत चिन्ता नहिं भयऊ ॥
कलिमहँहोय जु भक्त तुम्हारा । ऐसन याचहु तेहि जगतारा ॥
यह कहि धन अरु सम्पति दयऊ । दूनहु अश्व आप सँग लयऊ ॥

यह भाषे जगहेतु कहँ, पाय दर्श भगवान ।
करै यज्ञ हरि दृश लहि, होय तदा कल्यान ॥
अश्वहिदल नृप संगलै, चले मोरध्वज राव ।
भक्त परीच्छा लेन को, तब हरि कीन्ह उपाव ॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

दूनो हय लै पारथ चले । वैशम्पायन बोलत भले ॥
दल समप चलि आयो तहां । सरस्वति पुरी नगर है जहां ॥
वीरभानु तहँ नाम नरेशा । दोनों अश्व करैं परवेशा ॥
पुरके लोग धर्म्म अनुरूपा । आये अश्व सुन्यो तब भूपा ॥

पञ्चबीरको आज्ञा दयऊ । तबहीं अश्व नृपति पहँ गयऊ ॥
सुरभ सुलभ अरु नील प्रमाना । कुबले बल पांचो बलवाना ॥
पांच वीर रणमों गह गहई । तब मणिपुर पति रहु रहु कहई ॥
शङ्ख नाद तब वीरन कीन्हा । धनुषबाण हाथे सब लीन्हा ॥
वर्षन लगो बाण की धारा । दोउ दल जूझे वीर अपारा ॥
रथ गज अश्वरु पैदल लाखन । जूझनलगे सके को भाषन ॥

यहि अन्तर यम आयके, सैना वधे हजार ।
यह नृप यम जो माता, भाषे नन्दकुमार ॥

ताते सैना इह वध कीन्हा । तब पारथ पूछै कह लीन्हा ॥
यम को कत नृप कन्या कीन्हा । सुनतै कृष्ण कहे तब लीन्हा ॥
राजाके मालिन भौ वारी । योग स्वयम्वर भूप विचारी ॥
राजा पूछहि कन्या कहौ । मांगहुवर जो मनमें चहो ॥
देवनाग अरु मनुज सुरारी । जो बर चाहो कहो कुवारी ॥
कन्या कहै तात ते वाता । यमराज को चाहत ताता ॥
कालहि पाय त्रिया जो मारे । अन्त जन्म तो गृह पगुढारे ॥
तबे कन्त दूसर तौ होई । महापाप ताते है सोई ॥
ताते प्रथमहि यमको वरो । एक पुरुष दूसर परिहरो ।
नृपकन्या नृपपर मनसाधे । निशि वासर यमको आराधे ॥

नारद यह तौ जानिकै, यमपुर गो हरषाय ।
कन्याका वृत्तान्त सब, कह्यो धर्म्मसन जाय ॥

व पुण्य जानौ सम राजा। मालिनि सुधि बिसरे केहिकाजा
वित्त कन्या सो अहई। सारस्वतपुर नृपको रहई॥
व्रत सो मनमहँ धरई। यम राजाको चाहत वरई॥
य करौ अब ताको व्याहा। तब यम भाष्यो नारद पाहा॥
पु जाहु हम पाछे ऐहैं। वैशाख मासमों हमहूँ जै हैं॥
तपच्छमों ऐहौं सही। नारद सुना चले तब जही॥
स्वत नगरै तब गयऊ। सबै बात राजा सों कहेऊ॥
हकै नारद सुरपुर गयऊ। शुक्लपच्छ वैशाख बु भयऊ॥
राज सब वीर बोलाये। सबै लोग तब तुरतहि आये॥
आहैं सबके सरदारा। शुक्र प्रमेह विकार अपारा॥

सवन रोग सों यम कहै, चलो सङ्ग वरिआत।
व्याह हमारो होत है, सारस्वत पुर जात॥

सब रोग कहैं यह बाता। पुण्य धर्म्म है हां बहु ताता॥
हमार नहीं सञ्चारा। तुरत तेज बल जाव हमारा॥
हि कहा पापी नर जेते। रूप कुरूप देखि हैं तेते॥
वान जेते नर अहई। रूप अनूप देखिहैं कहई॥
को पीड़ा कर बहु भाई। ताको भेद कहौ समुझाई॥
वधे कर पातक जाही। ब्रह्म अंशते च्चय भय ताही॥
ावरि गौतम इक माशा। परशे च्चयी रोगको नाशा॥
द्रव्य हर वरी सतावे। तासु शरीर विषूचिक आवे॥
ो नाम खण्ड है भाई। अजया कञ्चन सुख नहिं जाई॥

कञ्चन भूषण श्रद्धया, दान दिये ते आय।
गर्भपातके पाप ते, गहत जलन्धर जाय॥

एकोत्तर सौ तुला जु करई। लच्च छत्र दीन्हे सो हरई॥
रस अरु द्रव्य जु चोरी करई। ताको व्याधि अरुचित धरई॥
कञ्चन दान करैं ते जाई। गौव देहि कहे यमराई॥
वेश्या सङ्ग हर गुरु नारी। सन्निपात पीड़ाके धारी॥
पङ्क उधारनको धन हरई। यम राजाको चाहत बरई॥
श्रुति दै भूषण भेटत दाना। दोनहु व्याधि तुरन्त पराना॥
भूमिदान दीन्ह सो जाई। पुनि द्विज भोजन जाय छोड़ाई॥
अरुचक तौ ताही गै धरई। लाखन द्विज भोजन परिहरई॥
आशा भङ्ग पन्थ त्रटपारी। शूल व्याधि तेहि होती भारी॥

पच्चो कोटिन नाश कर, बेंचत है जो होय।
हेमयज्ञ वैष्णव द्विजहिं, दान दिये च्चय होय॥

वरदान कादर हुचको होय। लच्च होम मह नाशै सोय॥
साजुयोग जो दारे होई। चुगुल रोग पावत है सोई॥
तेलकुण्ड दाना इक मासा। तब सो व्याधि होति है नासा॥
निन्दा सन्त रोग मुख पावै। लच्च दान दै ताहि भगावै॥
पर नारी देखत जो धावहि। नैन रोग ते बहु दुःख पावहि॥
गुरु हतने को ध्यान जो धरही। नैन रोग तुर्तहि परिहरही॥
अंश छोड़ावे घेघा होई। पञ्च रतन दीन्हे छै होई॥

देखत दान सूम मुरझाही । मिरगी रोग होत है ताही ॥
कृष्ण धेनु कञ्चन कर दाना । मृगी रोग जाता चै माना ॥

यज्ञ स्थित जो ढाह तनु, डारत बन्दी माहि ।
शिव पूजै अति हेतु सों, तब सो व्याधि नशाहि ॥

यही प्रकार और बहुतेरे । नाना व्याधि पुरुष तनु घेरे ॥
यहि प्रकार ते सबहि बुझाये । तब सब सारस्वत पुर आये ॥
राजा हर्ष गात ह्वै कहई । कन्यादान देन तो चहई ॥
मेरे रिपु सों करहु लराई । यह बाचा तौ कीन्हो राई ॥
तब कन्या दीन्हो यह दाना । पारथपाहँ कहैं भगवाना ॥
तै वाचा ते रण हरिलाये । ताते युद्ध हेतुको धाये ॥
आप सबै रण को मन दीजै । युद्ध जीति अश्वहि को लीज ॥
पारथके रथ पर हरि आये । युद्ध हेतु सबही मन लाये ॥
बीरवर्म्म राजा तब आये । पारथ सों तब बात सुनाये ॥
करो युद्ध पारथ मन लाई । महा मारु ह्वै है प्रभुताई ॥

जो सेना सरदार सब, मैं जानत बल तासु ।
सुनी बात क्रोधित वदन, पारथ वचन प्रकासु ॥

छांड़ो अश्व कहैं हम राजा । ना तौ महामार अब साजा ॥
बर्म्मा बीर कहन अस लागे । अश्व कहां अब पहो मांगे ॥
दुर्भ्मा अश्व लै मख मैं करहूँ । तुम्हें समेत कृष्ण कहँ धरहूँ ॥
मोरे रण लायक नहिं पारथ । पारथ सुनो क्रोध पुरुषारथ ॥
मारे पारथ बाण अपारा । बर्म्मा बीर काटि शर डारा ॥

तब सौ बाण पार्थकहँ मारा । साठि बाण तब नन्दकुमारा ॥
पांच बाण मारे ध्वजराई । लग्यो बाण तब मूर्च्छा आई ॥
जब राजाके सारथि आये । तब पारथ बहु बाण चलाये ॥
पारथ शर तब वर्षत नाना । बीरवर्म्म मारे बहु बाना ॥
पारथ कृष्ण दृष्टि नहिं आये । बाण बुन्दते वर्षा लाये ॥

पारथ मारा बाण तब, कोटि बाण संजाय ।
सात बाण तब राजहीं, मारे पार्थ रिसाय ॥

नृप करि क्रोध साठि शर मारा । सौ शर लागे नन्दकुमारा
चारि बाण अश्वहिपर दयऊ । तबै अश्व आतुर ह्वै गयऊ ॥
बीरवर्म्म तब कह यह बाता । मोरे जयकर पाव सख्याता ॥
भीषम द्रोण कर्ण संहारा । ते शर काम न आव तुम्हारा ॥
सुनिकै हरि भाष्यो हनुमानहि । नृप रथ तुम लै जाहु अका
घोर सिन्धु रथ डारो जाई । सुना हनू तब चले रिसाई ॥
लै रथ अन्तरिच्छ कपि गयऊ । बीरवर्म्म बहु बल तब कियऊ ॥
कूदि पार्थ रथ ध्वजको गहेऊ । लै रथ अन्तरिच्छ पुनि कहेऊ
जहां स्वर्ग माहीं हनुमन्ता । पारथ रथ लै गयो तुरन्ता ॥

हनूमान सन भाषेऊ, लीजे रथहि हमार ।
हम लै आये पार्थ कहँ, सहितै नन्दकुमार ।

कहिये रथ लै डारों कहां । क्षीरसिन्धु लक्ष्मी है जहां ॥
हनुमत कह्यो धन्य तुम राजा । सुयश तुम्हार जगतमों बाजा

साधु भक्त औ बली कहाये। बीरबर्म्म तब बाण चलाये॥
मैं तौ नाम सुना है तोरा। लै रथ जान सके नहिं मोरा॥
यह कह एक मुष्टिका दई। हनूमानके पीरा भई॥
हरि राजा पारथ हनुमाना। तब सब वसुधा आय प्रमाना॥
देखत श्रीपति हाथ प्रहारे। बीरबर्म्म मूर्च्छित विकरारे॥
जागत भक्ति हृदय महँ भयऊ। तुर्त कृष्णके आगे गयऊ॥
प्रभु कृपालु भक्तन भयहारी। आयों शरणै कृष्ण तिहारी॥
तुम दर्शन करि पातक भागे। प्रेम भक्ति हिदयमहँ जागे॥

तब राजा अस्तुति करी, धनुष बाण दिय डार।
करि प्रणाम घोड़ा लिये, आगे किये भुआर॥

पारथ सन भाष्यो यदुराई। इनते जय काहू नहिं पाई॥
बीरबर्म्मको जीतन पायो। मोरि भक्ति है प्रीति बढ़ायो॥
पारथ कह जो तुम्हैं मनायो। तासों जगमें जयको पायो॥
मिले पार्थ श्रीकृष्णहि राजा। भांति भातिके बाजन बाजा॥
सब दल लैकै नगरहि गयऊ। दिन इक द्वै बीतत जब भयऊ॥
देश भूमि तब आगे कीन्हा। अष्ट भार मुक्ताहल दीन्हा॥
सात सहस्र हाथी तो दयऊ। औरहु अश्व अनेकन लयऊ॥
छूट अश्व तौ सङ्ग नरेशा। भरमत फिरा अनेकन देशा॥
नदी एक महँ पैठ तुरङ्गा। तटहीं तट पारथ दल सङ्गा॥
पारथ भये अश्व तौ जाई। तबै सर्व दल पार सिधाई॥

परमानन्दित सब दल, पारथ हयके सङ्ग।
वैशम्पायन यह कहत, पारथ परम अनङ्ग॥
चले अश्वके संग सब, नाना वीर नरेश।
आय देश सब जीतिकै, चन्द्रहासके देश॥

इति एकादश अध्याय॥ ११॥

वैशम्पायन राजहि कहा। चलो अश्व तब आगे रहा॥
चन्द्रहास राजा जहँ रहई। तहां अश्व चलि भो मुनि कहई॥
कित गो अश्व शोच सब पाये। यहि अन्तर नारद मुनि आये॥
पारथ पांह कह्यो समुझाई। कुन्तलपुरहि अश्व तब जाई॥
चन्द्रहास जो भक्त कहाये। बड़े कष्ट राजा तब पाये॥
दुष्टबुद्धि वैरी तेहि अहे। रक्षक सदा श्रीपती रहे॥
बहुत कष्ट महँ कृष्ण बचाये। यही प्रसाद राज पद पाये॥
तब पारथ कह विनती लाई। चन्द्रहास गुण कहो गुसांई॥
नारद कह भल समय सुहाये। कथा सुनै का हेतु सुनाये॥
अश्व कहां खोये मन लाई। तब पारथ बोले बिहँसाई॥

कुरु पाण्डवके युद्धमहँ, एक पलकके माहि।
गीता कृष्ण बखानेऊ, सुना ज्ञान हम ताहि॥

सुनत कथा नारद तब कहहीं। कद्दिदल देश धर्म नृप रहहीं॥
के गेह जन्म इन लयऊ। जन्मत तात मातु मरिगयऊ॥

के धाइ कुंडलपुर आई । वर्ष तीनिपर सोउ मरिजाई ॥
ीनि वषको बालक अहई । षट अङ्गुलि बायांपद रहई ॥
ाको लोग दया करि राखैं । लच्छण राज सबै तो भाखैं ॥
ुष्टबुद्धि मन्त्री गृह माही । एक दिना सो बालक जाही ॥
ा दिन द्विज उन भोजन दयऊ । सो दिन बालक तहँवां गयऊ ॥
ूप देखि मन्त्री सुख पायो । करि बहु प्रीति अग्र बैठायो ॥
द्विज मुनि तो कहते यह बाता । बालक न्टप होवो सख्याता ॥
ाजा ह्वै हे आशिष दयऊ । दुष्टबुद्धि तब चिन्तत भयऊ ॥

सब विप्रनको बिदा करि, मनमों करै विचार ।
मदन असल दो पत्र मम, पै यह होत भुआर ।

यह बालक राजा मुनि कहई । ताते मन बहु चिन्ता गहई ॥
ुनिकै वाक्य झूठ नहिं सहेऊ । बोलि चँडालहिं मन्त्री कहेऊ ॥
ालक हति चिह्नहि लै आवो । धन सम्पति मोते बहु पावो ॥
लै चण्डाल बाल बन गयऊ । दधि पावन शिशु मुखमों लयऊ ॥
गोली खेलै सुख मों रहै । तब चण्डाल हतनको चहै ॥
हरि माया मोह्यो चण्डारा । पूर्व पाप कहँ जनु अवतारा ॥
ाल वधे अघ का गति होई । बालक कहँ मारौ जनि कोई ॥
ाम पाद षट अंगुलि देखी । काटि लीन तौ देखि विशेखी ॥
दुष्टबुद्धिको दीन्हयो जाई । धन सम्पति चण्डालहि पाई ॥
भरे झूठ विप्रन मुख वानी । बालक हते होति रजधानी ॥

दुष्टबुद्धि आनन्दित, बालक बनमहँ रोय।
पशु पच्छी बन जन्तु सब, करि मनुहार सुजोय॥
सो बन गयो शिकारहि राजा। नाम कलिंद भक्त रघुराजा
ते बालक देखनको पाये। हर्ष गात लै गोद चढ़ाये॥
दुष्टबुद्धिके सेवक सोई। पाछे शिशु हर्ष मन होई॥
सच्चावती तासु तिय आही। बालक लेकर दीन्ह्यो ताही
पुत्र सरिस प्रतिपालन कीन्ह्यो। गुरुको सौंपि पढ़ै कह दी
जैसे हरि प्रह्लाद पुकारे। कृष्ण ध्यान इन तैसे धारे॥
गुरु तब जाय कुलिंदहि कहई। तुव सुत बाउर हरि हरि कहई
औरहु कछू बात नहिं अहई। तब कुलिंद गुरुसों अस कहई॥
सात वर्षमहँ विद्या दैहौं। यज्ञ रु जाप पवित्र सिखैहौं॥
जादिन तें सुख पायऊ, राजा शिशु धन वृद्धि।
कृष्ण सदाहीं जपत शिशु, सर्व तासुकर सिद्धि॥
सात वर्ष मों यज्ञ कराये। पुत्रहिं तबै पढ़न बैठाये॥
वेद पुराण शास्त्र तौ पाये। चत्री व्रत सब अस्त्र सिखाये॥
पारथ मनहि हर्ष उपराजू। ऐसे भक्तहि देखब आजू॥
पन्द्रह वर्षके भये कुमारा। दुर्ग विजय कीन्हा संचारा॥
वहुतक देश जीति धन लाये। अपने देश अनेक बसाये॥
द्विज वैष्णव तौ अगणित राखे। ग्राम भूमि दे प्रीतिहि भाखे॥
ग्राम ग्राममहँ देवल दीन्हा। कूप तड़ाग बाग वहु कीन्हा॥
घर घर सबै जपैं भगवाना। श्रवण करैं सब वेद पुराना॥

सबही व्रत एकादशि अहहीं । परमानन्द प्रजा सब रहहीं ॥
दुर्ग विजय करि गृह पगधारे । आरति हर्षित मातु उतारे ॥

रूप देखि सब मोहित, गृहमें गयो कुमार ।
कह कुलिंद कुन्तलपुरी, आहै भूप हमार ॥

तिन्हकहँ वस्तु पठाये कञ्चन । बारह सेर सीप गृह रञ्चन ॥
सेर षष्ट रानी सचिवन ते । सो सुत जाहु सेवकहि गनते ॥
पत्री लिखि दीनी ता हाथा । औ कञ्चन दीन्हा है साथा ॥
गयो पंथ में पहुँचे ताहा । जा दिनव्रत एकादशि आहा ॥
करि अस्नान ध्यान मन दयऊ । तब मन्त्रीके गृहको गयऊ ॥
भीगे वस्त्र देखि सञ्चारा । मन्त्री कुशल पूंछि विस्तारा ॥
कहै कुशल तो सबै संदेशा । और वस्तु तब दीन्ह प्रवेशा ॥
पत्री पढ़ी सुनी सब बाता । दुर्ग विजय देवस सख्याता ॥
तब भोजनकहँ मन्त्री कहई । सर्व प्रकार भवन मम अहई ॥
चन्द्रहास भाख्यो द्विज पाहीं । एकादशी अन्न ना खाहीं ॥

प्रातकाल है द्वादशी, पारण कीन्हो जानि ।
बिदा होन जब लागेऊ, मन्त्री कहा बखानि ॥

चन्दनपुर हम देखन जाई । विदा मांगि नृपते चलि आई ॥
राज्य कार्य्य मदनहि जो दीन्हा । चन्दनपुर मंत्री शुभ कीन्हा ॥
जाय दीख चन्दनपुर थाना । वही ग्राम कीधौं है आना ॥
देखत मन महँ चिन्ता भयऊ । तब कुलिंदके गृहको गयऊ ॥
वह आनन्द कुलिंदहि करही । तब मन्त्री पूछन मन धरही ॥

जब तुम्हरे गृह बालक भयऊ। मोहिं खबरि काहू नहिं दयऊ।
कहै कुलिन्द नहीं तिय जाये। कानन विचरत बालक पाये।
छठई अँगुरी काटी कोई। बालक व्याकुल बनमहँ रोई॥
हम लै आये पालै आनी। मन्त्री सुनत बुद्धि हैरानी॥
जाना निश्चय बालक जो है। चाण्डाल नहिं मारा सो है॥

अस्त्र शेल सम लागई, मन आनन्द न पाव।
केहि विधि बालक मारिये, काधौं मन्त्रहि आव।

करिहौं झूठ मुनिनकी बानी। चन्द्रहासते कहा बखानी॥
कागज मसी कलम लै आओ। लै पत्री तुम मम गृह जाओ॥
चन्द्रहास जानीकै दयऊ। मन में मन्त्री शोचत भयऊ॥
प्रगटहि वधे द्वंद्व बहु होई। गरलहि देकै मारे सोई॥
पत्री लिखे मदन को ताहा। सोसति मदनपुत्र तौ आहा॥
यही हेतु पत्री लिखि दयऊ। चन्द्रहास गति दर्शन भयऊ॥
शील पराक्रम पण्डित सोई। हम संपतिको ठाकुर होई॥
कछू विचार हृदय नहिं कीजै। तुतैं विष याकहँ सुत दीजै॥
सबही काम सिद्ध तब होई। कागजमांहि छाप करु सोई॥
चन्द्रहासको पाती दीन्हा। मम गृह जाहु बोल अस लीन्हा॥

पत्रीकर में लैतबै, कहै पितहि बिरतन्त।
पाछे मावापहँ गये, बिदा होन सुत सन्त॥

माता तबहीं आरति कीन्हा। रचक देव कहै तब लीन्हा॥
पद्मनाभ ऊदर हैं माधो। दोषहरण नरसिंह हि साधो॥

ाटि मधुसूदन मखपति जानू । मुख नारायण रच्छ प्रमानू ॥
च्छस्थल माहीं ऋषि केशो । सब तनु रच्छक पवन नरेशो ॥
सौ लेकर गृह को ऐहैं । मनोकाम तुरतै सिधि पैहैं ॥
रि प्रणाम माता को चले । ह्वै सवार हय मोदित भले ॥
तौ पाग माहिं तब कीन्हे । उत्तम हार शीश सों लीन्हे ॥
न्द्रहास तब उपमा पाये । मानहु दूलह व्याहन आये ॥

कुन्तल पुर पहुँचे तबै, बाहर ग्राम सुदेष ।
मध्य दिवस आये तबं, जहँवां बाग विशेष ॥

शीतल छाहँ जु देखन पाये । चन्द्रहास विश्राम कराये ॥
गज अरु अश्व अम्ब तरु बाधे । तृण अरु जल दै हर्षित साधे ॥
पांचौ जने शयन मन दये । यहि अन्तर यह कौतुक भये ॥
नृपकन्या तौ अनुपम बामा । पञ्चक मालिन ताके नामा ॥
मन्त्रीकी कन्या तौ अहै । सङ्गहिं सखी अनेकन रहै ॥
वहि सर माहिं सबै तो गई । तूरि पुष्प न्हातौ फिर भई ॥
कौतुक न्हान सबै तो कियऊ । पाछे पग गृहको तब दयऊ ॥
पाछे विषया चली विशेखी । तहँवा चन्द्रहासको देखी ॥
रूप देखि मोहित भयो भारी । वही ठांव विलमी घरि चारी ॥
शश्वहि किये प्रणाम बनाई । हे प्रिय जनु विधि देहु जगाई ॥

पुरुष निकट गइ नारि तव, देखतिरूप अवाय ॥
पिता हाथकी पत्रिका, तासु पागमहँ पाय ॥

छाप खोलिक पाती पढ़े। महाशोच तो मनमहँ बढ़े॥
विषदै यहिको तुरतहि मारैं। तब का बन जब सबै बिगारैं॥
रूप देखि भइ मोहित नारी। मनमा तब इक युक्ति विचारी॥
नख कनिष्ठते कज्जल लीन्हा। जहँ विष तहँ विषया के दीन्हा॥
पूरब विधि तो छाप बनाई। बांधे पत्र प्रथम जहँ पाई॥
चली सखिनमहँ मिलि सो जाई। नाना कौतुक सखिन बनाई॥
पूर्व देखि तब रही लोभाई। लागी कौतुक करैं सोहाई॥
तब कन्या अपने गृह गई। सांझ पहरकी वेरा भई॥
चन्द्रहास उठिकै मुँह धोवै। खाये पान मगन मन होवै॥
गजारूढ़ ह्वै चलते भये। मन्त्री गृह अभ्यन्तर गये॥

द्वार द्वार प्रतिहार तो, छठे द्वार महँ जात।
सप्तम-द्वारे शूर हैं, अष्ट द्वार सख्यात॥

तिन तो जाय मदन सों कहा। चन्द्रहास द्वारेमहँ रहा॥
वेद पुराण सुनै तो आहा। सुनत तुरन्त चले उठि ताहा॥
बाहर आय भेट हियलाई। भीतरको सो गयो लिवाई॥
कुशल प्रश्न पूछे मन दीन्हा। सबै कुशल कहने तब लीन्हा॥
गूढ़ पत्र तव तात पठाये। यह पत्री पढ़ि बूझहु जाये॥
पढ़ने मदन सभा महँ लागे। सो सति मदन लिखाहै आगे॥
यही हेतु पत्री लिखि दये। चन्द्रहास गति सुन्दर लये॥
कौन पराक्रम पण्डित सोई। हम सम्पति कर ठाकुर होई॥

कछू विचार हृदय नहिं कीजै। तुरतहिं विषया ब्याहि सो दीज
पूरण कार्य्य सिद्धि तब होई। मदन पढ़ै चिट्ठी महँ सोई॥

हर्षित मदन हृदयमहँ, तुर्त ज्योतिषी लाय।
सर्व सुयोग सुमङ्गल, लग्न विबाह धराय॥

विषया तहां मनाव भवानी। चन्द्रहास वरदे कल्यानी॥
ततिथा व्रत करिहौं मैं तोरी। तुम जो आश पूजावहु मोरी॥
अन्तःपुरै मदन तब गये। सब बिरत्तान्त मातुपहँ कहे॥
गोधन समय व्याह परमाना। चन्द्रहास वर विषया बामा॥
विषया ते सब सखिन सुनाई। सुनतै विजया लज्जा पाई॥
लग्न भये तब बाजन बाजे। मङ्गलचार सखीगण साजे॥
चन्द्रहासको तब अन्हवाये। विषयाको शृङ्गार बनाये॥
विविध प्रकार लग्न धरवाये। ब्राह्मण प्रोहित तहां बोलाये॥
गोत पूंछि कह तब मन लाई। चन्द्रहास तब बात सुनाई॥
माता पिता गोत हरि अहई। लै कुलिन्द पारावति कहई॥

शाखोच्चार उचारि कै, वेद जो विविध प्रमान।
शास्त्रधर्म्म कुलधर्म्म मत, मदन देत है दान॥

कन्यादान मदन तब कीन्हा। गज तुरङ्ग मणि मुक्ता दीन्हा॥
रजत सुवर्ण वहुत तेहि दीन्हा। सब भण्डार शून्य तो कीन्हा
होम करी गँठि बन्धन भयऊ। भांवरि सात अग्निपर दयऊ॥
दक्षिणा ब्राह्मण सबहिन पाये। यहि प्रकार ते व्याह कराये॥
सब द्विज और पुरोहित आये। दान देय सब विदा कराये॥

मङ्गलचार युवति जन गाये। बहुत गुणी जन मँगता आये
विष देवायके मारन चहई। हरि सहाय तो नारद कहई॥
केवल हरिही सदा मनलाये। विष देते विषया सो पाये॥
परमभक्त प्रभु कपट न करई। एक पिता भक्ती मन धरई
ताहि सदा हरि रक्षक अहई। काह करै विष नारद कहई

मङ्गलदायक वही प्रभु, नारद कहा बखानि।
वैशम्पायन भाषेऊ, सुनत दुःखको हानि॥

दुष्टबुद्धि चन्दनपुर माहां। तब कुलिन्दको पाये ताहां॥
प्रजा लोगको दण्डै ताहा। महाकष्ट चन्दनपुर माहा॥
बहु प्रकारते कष्ट दिखावे। यहि विधि सबसों धन मँगवावे॥
मठ देवालय देखत जरई। महाकष्ट कालिदहि करई॥
लूटि मारि लीन्हा जब देशा। तब कुलिदको भई अँदेशा॥
मन्त्री महा हर्ष मन भयऊ। जाना शत्रु नाशि अब गयऊ॥
इक दिन बसि दूजे दिन गयऊ। तीजे अन्त भोर जब भयऊ
हर्षित ह्वै चण्डोल सवारा। तुरत आपने पुर पगुधारा॥
सौ तीन सौ कहार सो आये। तेहि चँडोल सम पवन चलाये
मारग मांहि सर्प्प यक रहई। विषया खाकी बातें कहई।

मूँह कलश मो हम हते, देखा विषया व्याह।
बूझा नहिं सो मन्त्रिने, चला हर्ष मनमाह॥

वाद्य शब्द सुनियै मनभङ्गा। विधना कीन्ह छलको भङ्गा॥
इके निकट पियादे भयऊ। जहँ मङ्गल जन तहँवां गयऊ

याह अर्थ सबही तहँ कहेऊ । मन्त्री सुनत क्रोध उर दहेऊ ॥
भाषे चन्द्रहास है जाना । मङ्गल जन भाषे परमाना ॥
आगे जात द्विजनको देखा । आशिर्वाद देत द्विजपेखा ॥
चन्द्रहास वर भाग्यन पाये । सुनतहि मन्त्री मारन धाये ॥
गाठि गहे बहु क्रोधित पागे । देखत सब विप्र तब भागे ॥
काहु यज्ञमे सूत्र उतारो । काहू कुश पैंती अखडारो ॥
आगे द्विज गृह मन्त्री आये । चित्र विचित्रहि देखन पाये ॥
इस्त्री धूप दीप लै आई । तब मन्त्री पूछा मनलाई ॥

कहा देय कह पायऊ, मङ्गल कौन उपाय ।
चन्द्रहास कहँ पायऊ, इस्त्री कहैं बुझाय ॥

पूछे काह तासु कह दीन्हा । इस्त्री सबै निवेदन कीन्हा ॥
धन रतनन दे कन्या दीन्हा । सुनत क्रोध मन्त्री तब कीन्हा ॥
क्रोधवन्त मन्त्री चलि आगे । वर कन्या तौ चरणन लागे ॥
क्रोधित नयन सो देखत अहई । सत्य असत्य न एको कहई ॥
आप बैठिकै मदन बुलाये । धिक धिक करि तब बात सुनाये ॥
पतौ पढ़िकै काम न कीन्हा । मदन जोरि कर बोल लीन्हा ॥
धन अरु रत्न अश्व गज दयऊ । सब भण्डार सून तव भयऊ ॥
सुनतै अधिक क्रोध उर भयऊ । जा वनवास तु आज्ञा दयऊ ॥
मदन कहा मम दोष न दीजै । का अपराध प्रगट तेहि कीजै ॥
एक घाटि भइहै मैं जाना । नहीं कुलिन्द बुलायो माना ॥

आज्ञा दीन्ही जाहि हम, लाओ चरण मनाय।
तुमने लिखा सु सत्य है, जरहु काहि मन लाय॥
सुनतै मन्त्री बहुते जरई। कर मींजे औ हाहा करई॥
मन्त्री कह वह पत्री लाओ। बांचि अर्थ तौ हमैं सुनाओ॥
मदन तुरन्त पत्नि लै आये। विषया नाम तु तुर्त बताये॥
देखत पत्री विस्मय भयऊ। बहुत बोध तौ पुत्रहि दयऊ॥
विधिका लिखा मिटै नहिं भाई। आन करत आनै हो जाई॥
करि सन्तोष तु पोथी लीन्हा। चन्द्रहास तब विनती कीन्हा॥
जनि कछु संशय करु मनमाहीं। तुम तो हमरे पितु सम आहीं॥
कपट रूप भाष्यो तब बाता। मनहि विचारै वध सख्याता॥
यहि हतिकै कन्या विधवाओं। करि छल येहि तुर्त मरवाओं॥
बोलि चँडाल कहै यह वानी। प्रथमहि कपट करेहु अज्ञानी॥
अब तौ मानहु बात मम, लै करवान कृपान।
पुर बाहर है चण्डि गृह, छिपि रहिओ सज्ञान॥
सन्ध्या जाय मारियो ताहीं। बहुतै धन पैहौ मम पाहीं॥
तब चण्डाल जाय छिपि रहेऊ। चन्द्रहास सों मन्त्री कहेऊ॥
हमरे कुलकी चण्डी आहा। पूजहु जाय कियो है व्याहा॥
सन्ध्या समय अकेले जैयो। चण्डी कहँ पूजा दै ऐयो॥
सुनत बात तौ पूजन चलेऊ। मदन गये राजा गृह भलेऊ॥
कुन्तल राजै सपना पाई। गालव प्रोहितको समुझाई॥
विना शीश देखा परछाहीं। कहौ बुझाय कौन फल आहीं।

गालव कहै असङ्गल अहई। अन्त निकट आये मुनि कहई॥
और परीक्षा बहुत बताई। जाते मृत्यु जान सब राई॥
बहुत अरिष्ट तु सुने भुआरा। ताको नहीं करे विस्तारा॥

कुन्तल न्रपति मदनते, कही बात समुझाय।
चन्द्रहासको राज्य दै, हम तप कानन जाय॥

कन्यादान राज पद पाये। तुरतहि चन्द्रहासको लाये॥
गोधुलि बेरा सब चलि आंहीं। आगे और लग्न है नाहीं॥
सुनतहि मदन तुरन्त सिधाये। मगमहँ चन्द्रहासको पाये॥
धूप दीप नैवेद्य सुहाये। कहँ लै चल्यो पूंछि मनलाये॥
चन्द्रहास कह मन्त्रि पठाये। छकसर चण्डी पूजन आये॥
मदन कह्यो हम पूजैं जाई। तुमहिं तुरन्त हँकारत राई॥
चन्दन पुष्प जो हमको दीजै। आप विजय राजा पहँकीजै॥
लै नैवेद्य मदन तब चलेऊ। चन्द्रहास न्रप गृह गयो भलेउ॥
मदन कहै अब असगुन भयऊ। मनमहँ अतिशय चिन्ता कियऊ

तब नरेश अभिषेक करि, दीन्हा कन्यादान।
राज्यदेश भण्डार सब, दीन्हें हर्ष प्रमान॥

राज्य देश संकल्पहि दीन्हा। राजा वनहि गमन तब कीन्हा॥
मदन गये चण्डी गृह माहीं। मृत्यु भवन ह्वै गो तब ताहीं॥
चाण्डालन तब कीन्हे घाऊ। भूल खड्ग लै घाव लगाऊ॥
मदन तबहिं चण्डीते कहा। हमको बलि दीन्हे तुव अहा॥
परस्वारथ किय मैं गो मारा। माता पूजत तुम्हने मारा॥

मैं नहिं महिषासुर हौं माता। रक्तबीज नहिं अमन सख्याता
और निशुम्भ नहीं हौं माई। परमज्योति तुम सुन मन लाई।
यह कहि प्राण अन्त तब भयऊ। सो चण्डाल सबै गृह गयऊ
चन्द्रहास राज्यासन पाये। मन्त्री गृहले लिया सिधाये॥
दूत जाय मन्त्रिहि समुझाये। कहे जाय सब बात बुझाये॥

राजा कन्यादान दिय, करि नृप बनै पयान।
मन्त्रि बात तब सुनतही, लागे शैल समान॥

चन्द्रहास जब आये आगे। कन्या सहित चरण तब लागे॥
मन्त्री पूंछ चण्डि गृह माहीं। गये हते कीधौं पुनि नाहीं॥
चन्द्रहास कह मदन सिधाये। हमहि नृपतिके भवन पठाये॥
चन्द्रहास कहि गृह को गयऊ। पुत्र शोक मन्त्रीकहँ भयऊ॥
रोवत चलि भो चण्डी पाहां। अन्धकार रजनी भइ ताहां॥
पुनि श्मशानमहँ आये जबहीं। भूत प्रेत सब भागे तबहीं॥
बरने चिता काठ यक लाये। तेहि उजियार चण्डि गृह आये॥
डारि काठ तब पुत्र उठाये। ग्रीव लगाय रुदन मन लाये॥
मण्डपमाहँ खम्भ यक आहा। मारे शीश खम्भके माहा॥
मृतक भयो मन्त्री परमाना। यहि अन्तर तब भयो बिहाना॥

द्विज पूजनकहँ गयो जब, देखा गृह मो जाय।
मन्त्री मदन परे हते, चण्डी मण्डप आय॥

विप्र जाय राजाते कहऊ। चन्द्रहास तहँपर तब गयऊ॥
अस्तुति चण्डीकी करई। कुण्ड खनाय यज्ञ सञ्चरई॥

घृत चीनी यव तिल तब लीन्हा । वेद मन्त्र आवाहन कीन्हा ॥
चण्डीपहँ राजा अस कहई । तूतौ शक्ति मातु जग अहई ॥
मोरे हेतु पूजने आये । मोते रिस करि बलि यह खाये ॥
यह कहिकै तब होम शरीरा । सर्व शरीर होमि नृप बीरा ॥
पाछे माथ उतारन चहई । काढि खड़ग हाथेमहँ गहई ॥
गह्यो हाथ तब हर्षि भवानी । चन्द्रहास यह वचन बखानी ॥

पाछे मांग्यो भूपने, ये दोउ देहु जिआय ।
चन्द्रहास यह भाषेऊ, सुनहु चण्डिका माय ।

तब हँसि चण्डी कह मृदुबानी । अचल भक्ति होइहि सज्ञानी॥
बालापनका चरित तुम्हारा । सो कहि मैं गावत संसारा ॥
मुँदौ नयन मैं देउँ जिआई । सुनत नयन मूँद्यो तब राई ॥
मन्त्री मदनहि दिये जगाई । अन्तर्द्धान चण्डि ह्वै जाई ॥
नयन खोलिकै राजा देख्यो । उठे दोउ तब हर्ष विशेख्यो ॥
तीनहुँ जन तब मग्नहि गयऊ । चन्द्रहास अस राजा भयऊ ॥
तब पारथ पूछै मन लाई । फेरि कुलिन्द मिले किमि आई ॥
पारथ सों नारदमुनि कहई । चन्दनपुर कुलिन्द दुख सहई ॥
जो कछु धन होते परमाना । सब दे दियो द्विजन को दाना ॥

कहि विचार पावक दहन, मरै पाय दुख पाय ।
संशय यह तब मन्त्रि सन, कहा दूत कोइ जाय ॥

तब मन्त्री चन्दनपुर गयऊ । बहु प्रकार अनुहारी कियऊ ॥
चन्द्रहास चन्दनपुर गयऊ । देखि कुलिन्द हर्ष मन भयऊ ॥

सब समेत कुन्तलपुर आये। परमहर्ष ते राज रजाये॥
वर्ष तीनि राजा तप कियऊ। चन्द्रहास को सुत तब भयऊ॥
विषया सुत मकरध्वज नामा। पद्म नेत्र सुन्दर परमाना॥
पञ्चक औ मालिनी विद्वानी। दोनों गर्भ दोउ सुत जानी॥
बाल दशा बीते जब ताही। शालग्राम साध व्रत आही॥
शिला महातम उत्तम अहई। शालग्राम निराञ्जन लहई॥
मृत्यु समय चरणोदक पावै। पापी तरि वैकुण्ठ सिधावै॥
निरमायल जो भक्षत कोई। देव पितृ सन्तुष्टित होई॥
दानी दाता द्वीपन राऊ। चन्दन लेपन मुक्ति उपाऊ॥

शालग्राम जहां रहैं, देव पितृ सब ताहिं।
सर्व तीर्थ जल पुण्यती, चरणामृतके माहिं॥

तुलसी सम तौ तरु नहिं आहीं। विष्णु समान देवता नाही॥
तुलसी मञ्जरि हरिको पाशा। देखत पाप होत हैं नाशा॥
ऐसे चन्द्रहास नृप भयऊ। सबै कथा तुमते कहि दयऊ॥
नारद देवलोक कहँ गयऊ। सुनत पार्थ आनन्दित भयऊ॥
दल लेकर कुन्तलपुर आये। राजा अश्वहि देखन पाये॥
पत्र पढ़े राजा सुख पाये। धर्मराजको अश्व जु आये॥
आज देखिबे श्रीपति नैना। चन्द्रहास हर्षित कह बैना।
मकरध्वजते दान जनाई। पूरब दिवस निकट भो आई॥
रचे जग होहै नाशा। लैके अश्व मिलो हरि पासा॥

पन्द्रह दिन पर्यन्त हय, रचा कीन्ह्यो राव।
पाछे मिलने हेतु तब, चन्द्रहास नृप आव॥
तिलक सुतुलसी माल विराजै। मोरपंख रथ ऊपर छाजै॥
तब श्रीपति देखे कहँ पाये। होय चतुर्भुज तुरत सिधाये॥
गरुड़ चढ़े दरशन वहि दीन्हे। चारो भुजते अंकम लीन्हे॥
चन्द्रहास चरनमें परेऊ। बहु प्रकार ते अस्तुति करेऊ॥
तब राजासे कहे भगवाना। इनके हृदय मोर अस्थाना॥
आकर मिलो भक्त यह अहई। तब पारथ श्रीपति तेकहई॥
भारत माहँ कहे यदुराई। प्रणको शुन आये दुखदाई॥
ताको मिलो कहो का राजा। चत्री धर्म होत है लाजा॥
तब हरि भाषे यह तनु मेरा। मिले आयकै हर्ष घनेरा॥
प्रभु प्रतापते नृपति सो, भाषे श्री यदुराय।
सुनत बिहँसिकै पारथ, मिले तुरन्तहि जाय॥
प्रेम हर्ष भै अंकम गहेऊ। चन्द्रहास राजाते कहेऊ॥
मो मन करना हतो लराई। पै इक वर्ष आय नियराई॥
युद्धहि रचे यज्ञ कर भङ्गा। ता कारण मिलाप तुव सङ्गा॥
जहँ श्रीपती तहां रण कैसो। यह अचरज मनमांह अँदेशो॥
अश्व रुध न राजा तव जाना। राजा दीन्ह चरण भगवाना॥
श्रीपति राजा ता सुत किये। प्रेम हर्ष आनन्दित भये॥
तीन दिवस रह तेहि पुर माहां। छूटो अश्व चलो पुनि ताहां॥
चन्द्रहास कहँ तब सँग ली । बालकते जिन रचा कीन्हा॥

ते पुर छंडि रहब घर माहीं। कृष्ण सङ्ग सना करि जाहीं॥
लै दल चन्द्रहास तब चलेऊ। पारथ सङ्ग चले सुख भलेऊ

प्रेम हर्ष नारायण, पारथ परमानन्द।
चन्द्रहास सङ्गहि चले, विष्णु भक्त सानन्द॥
चला अश्व भर्मत फिरे, नाना देश विदेश।
अस न कोई नर जगत महँ, पकरै अश्व नरेश॥

इति द्वादश अध्याय।१२ ॥

वैशम्पायन कहैं बखानी। चला अश्व विधिवत परमानी॥
जौने जौन देश हय गयऊ। सबै नृपति पारथ वश भयऊ॥
पाछे अश्व चले जग माहीं। सिन्धुमांह परवेश्यो ताहीं॥
पारथ तब शोचन मन लागे। दीन वचन भाषे हरि आगे॥
कहो कृष्ण का करौं उपाई। तब पारथसों कह यदुराई॥
बुब हंसध्वज पुत्र तुम्हारा। मोरध्वज हम पञ्च भुवारा॥
ये सब रथी उदधि महँ चलहीं। दरशन मात्र रिपूदल भलहीं
पांचौ रथ सागरमहँ गयऊ। जलमें रथ चलते तब भयऊ॥
छाये मकरा देवल छाये। पशु पची तहँपर बहु आये॥
देख पुनि तहँ दालभ मुनिवर। वटको पत्र धरे शिर ऊपर॥

जङ्घा भेदो ताल भ्रू, औ बहु च्हे भुअङ्ग।
नमस्कार गे कीन्ह तब, पांचौ रथ इक सङ्ग॥

पारथ कहै गेह किन करहू । ऐसा कष्ट हेतु केहि धरहू ॥
मुनी कहै दुख गृहमें अहई । इस्त्रीग्रहण पाप बहु रहई ॥
क्षण क्षण माहिं कष्टहै नाना । पैहैं पाप झूंठ परवाना ॥
पातक नहीं धर्म्म पुनि नाना । पाप पुण्य कर बहुत बिधाना ।
सुत नारी कब देखब नैना । माया विष्णु सर्व सुख चैना ॥
ताते थोरे जीवन काजा । ताते गृह कीजै नहि राजा ॥
मार्कण्डेय वशिष्ठ सभागे । लोमश आदि कहन अस लागे ॥
प्रलय समय हम देखा जेते । पारथ बात कहत हैं तेते ॥

एक वट तरे आरहे, तासु एकसौ डार ।
एक पत्रके ऊपरे, बाल रूप करतार ॥

बालरूप वटपत्रहि पहई । पद अँगुष्ठसों चाटत रहई ॥
तै प्रभु जाना मैं मनमाहा । एही कृष्ण सन्त जग आहा ॥
अब मोको आलिङ्गन दीजै । धर्म्मराजको यज्ञ सुकीजै ॥
श्रीपति कहैं मुनी सों बाता । महा मुनी तुम हौ सख्याता ॥
एक बार करि गर्व जु नाना । हरि माया इक पवन उड़ाना ॥
मोहिं समेत गयो ल तहां । अष्टमुखी ब्रह्मा है जहां ॥
उन्ह पूछा तुमको अह अहो । इन कह ब्रह्मा जानत रहो ॥
उन्ह कह अष्ट वदन हैं मोहीं । कह ब्रह्मा मुख कह को तोहीं ॥

अष्ट वदन ब्रह्मा हम, तुमहो कौन प्रकार ।
यहै रूपतो बोलतो, भयो पवन सञ्चार ॥

दूनो ब्रह्मा गे तब तहां। सोलहा मुख ब्रह्मा हैं जहां॥
उनहु एक परकार सुनाये। तीनौ ब्रह्मा पवन उड़ाये॥
बत्तिस वदन पाहँ तब गयऊ। उनहु रारितो यहिविधि कियऊ॥
चारो ब्रह्मा पवन उड़ाये। चौंसठ मुख पाहीं पहुँचाये॥
उनहू रारि करै मन लाई। पांचौ ब्रह्मा पवन उड़ाई॥
एक सौ अट्ठाइस मुख जहां। उनहू गर्व बात तौ कहा॥
छाहौ ब्रह्मा उड़िगे तहां। लच्चानन ब्रह्मा रहते जहां॥
तिनने सबको ज्ञान सिखायो। यह दालभ मुनि कथा सुनायो॥
ऐसो ब्रह्मा मान गमाये। बकदालभ मुनि सबै बताये॥
मुनिको लै चण्डोल चढ़ाई। अश्व दोउ लाये यदुराई॥

चले अश्व तब लेके, बकदालभ मुनि साथ।
वैशम्पायन कहत हैं, सुन जन्मेजय नाथ॥

चले अश्व तब आये तहां। जयद्रथको बालक है जहां॥
दूतन कहा हमारे देशा। अर्ज्जुन कृष्ण कीन परवेशा॥
जो पारथ जयद्रथहि मारो। सुनत सुवन तेहि भये भुवारो॥
सभामाहि मृतक तौ भयऊ। ताकी माता रोदन ठयेऊ॥
रोदन करत हरी पहँ आई। पारथ हमैं महादुख दाई॥
पतौ पुत्र मारयो दुइ सही। देखत दयावन्त हरि कही॥
चलो पुत्र तव देखौं जाई। सभामाहँ पहुँचे यदुराई॥
[illegible] नृपनि अचेतन परेऊ। औ हरि हाथ शीश पर धरेऊ॥

पुत कहतै भय त्यागो । सुनतहि बात तुरत सो जागो ॥
हर्षित भै महतारी । पुत्रहि लै पारथ पगढारी ॥
पारथ विनय कीन्ह बहु, नेवता दीना भाल ।
पुत सहित हर्षित मन, चले यज्ञके काल ॥
ाति कहत पार्थके पाहीं । वर्ष तुलान चलो गृहमाहीं ॥
अश्व गये वनवारी । सबै नृपनसों कहा मुरारी ॥
ध्वज हंसध्वज राऊ । वीर ब्रह्म मोरध्वज नाऊ ॥
हास अनुशल्या अहई । यौवनाश्व वेगहि तब कहई ॥
केतु औ काम कुमारा । सबसों भाषो श्रीभर्तारा ॥
तौ जात अग्रगृह आछे । तुम सब मिलिकै आवहु पाछे ॥
कहि हरि हस्तिनपुर गयऊ । आनन्दित तब अर्जुन भयऊ ॥
ा सुनत हर्ष मन माना । हरिको दै आलिङ्गन दाना ॥
जहांपर भै रण करणी । करि विस्तार सबै हरि वरणी ॥
भीम आदि पाण्डव सबै, परशे सबै मुरारि ।
रुक्मिणि आदि नारि जहां, तहां गये वनवारि ॥
न सङ्ग हरिगै जहँ नारी । सतभामा परिहास विचारी ॥
ा कौतुक भये अपारा । ताको नहीं करें विस्तारा ॥
हरि भीम नृपतिपहँ आये । चले अग्र राजा समुझाये ॥
राष्ट्रक आगे तब कीजै । आगे हो पारथ कहँ लीजै ॥
ती आदि सहित गन्धारी । औ जेती श्रीपतिकी नारी ॥
नि कर ब्राह्मण चलेऊ । कीन्हा गवन लोग सब भलेऊ ॥

दधी दूब अच्छत औ माला। यह सब लेइ चले द्विजपाला॥
आरति बहुतै भांति सँवारी। चलीं साजि च्चत्रिनकी नारी॥
शङ्खध्वनि तहँ होत अपारा। नाना भ्रमर करत गुञ्जारा॥
उतते अश्व अघ हैं दोऊ। बकदालभ्य सङ्ग हैं सोऊ॥

भूप भूप सब भटत, मिलत सबै सरदार।
इस्तीसे इस्ती सबै, लेत अहैं इकबार॥

मिलिकै सबै नगर महँ गयऊ। धर्म्मराज आनन्दित भयऊ॥
राजा सब तब करैं जोहारा। पुण्य प्रतापी धर्म्मकुमारा॥
सब राजाको करि सन्माना। यज्ञ रचा तब वेद विधाना॥
अश्वमेधको मण्डप साजे। अष्ट द्वार तहँ सरस विराजै॥
वेलि पर्ण औ पुष्प बनाये। यज्ञ साज सबही निर्मांये॥
बकदालभ जो वर्णे धर्म्मा। लागे मुनी यज्ञके कर्म्मा॥
वामदेव वशिष्ठमुनि आये। पाराशर मुनि अति सिधाये॥
भरद्वाज ऋषि गौतम आये। मुनि अङ्गिरा आइ मन भाये॥
आठौ मुनी दयाके पाला। वरन कीन्ह है धर्म्मभुआला॥
छौछन भे न्टप द्रोपदि रानी। हरिणा सिंह गहे कर जानी॥

धौम्य पुरोहित यह कह्यो, जइये गङ्गातीर।
निज तिरिया लै जाइये, भङ्ग न गङ्गा नीर॥

तिरियन सङ्ग चले सब भलेउ। अरुन्धती वसिष्ठहु चलउ॥
कृष्णसङ्ग औरुक्मिणि रानी। प्रभावती प्रद्युम्न प्रमानी॥
ऊषा अरु अनिरुधकै जोरी। भीम सुसङ्ग हिड़म्बी गोरी॥

षकेतु भद्रावति रानी। मोरध्वज कुमोदनी दानी॥
ौवनाश्व चन्द्रावति चली। नीलध्वजहिं नन्दनी भली॥
ेद पढ़ैं द्विज सबै सिखाये। नारद सत्यभामा गृह आये॥
हे बात रुक्मिणि हरि प्यारी। गांठ जोरि जल हेतु पधारी॥
तब सतभामा मुनिते कहई। सदा कृष्ण मेरे ढिग रहई॥
तहां हरी मुनि देखन पाये। ऐसे अष्ट नारिपहँ आये॥
गोपिन गृह कह देख न जाई। तहँवां देखा श्रीयदुराई॥

सतभामा श्रीजाम्बमति, रुक्मिणि नारी सङ्ग।
गांठी जोरी चले हरि, भरन हेतु जल गङ्ग॥

जलके हेतु तु सबे सिधाये। तब राजा नारदपहँ आये॥
हरी सहित जेते हैं राजा। गङ्गा माहँ करैं जल काजा॥
प्रथम शीश पर रुक्मिणि धरेउ। पाछे और सबन सच्चरेउ॥
व्यास आदि जल पूजन करेउ। कञ्चन कलश नीरसों भरेउ॥
चलीं नीर ले सब नृप रानी। अरुन्धती रुक्मिणी वखानी॥
कलश भार दुखदायक अहई। सुनिये बात जाम्बवति कहई॥
करपर घर तौ कृष्ण पहारा। शीश न धरै कलशको भारा॥
बहुतै कौतुक रुक्मिन कीन्हो। आये सबै गङ्ग जल लीन्हे॥
ंदध्वनिके कलश उतारा। युवती गावहिं मङ्गलचारा॥

श्याम कर्ण जल पान करि, रानी नृप अस्नान।
द्रौपदि रानी धर्म्मसुत, जैसो यज्ञ विधान॥

धोती पहिरि मुनी सब आये। उत्तम चन्दन अङ्ग लगाये॥
पारथ भीम देत हरि दाना। राजा सबै किये अस्नाना॥
दक्षिणा भये यज्ञके हेता। सब कहँ पूजन कियो सचेता॥
वेद उचार मन्त्र तब कीन्हे। धौम भीमते बोले लीन्हे॥
बायें श्रवण अश्वको मारा। ताते चले क्षीरके धारा॥
तब सबहीं विस्मयके माना। धौम कह्यो भीमहि सुनकाना॥
मारौ अश्व होइ द्वै खण्डा। तबही भीम गहे कर खण्डा॥
तबहीं भीम क्रोध करि छांटा। दोय टूकके अश्वहि काटा॥
शिर उड़ि रविमण्डल महँ रहेउ। सुघर अश्व जग जीवन कहेउ।
हयके हृदय आप हरि मारा। चलौ हृदय तब रक्तक धारा॥

अश्व ज्योति हरि अङ्गमों, प्रविशत भे तब जाय।
परा अश्व वसुधा विषे, भौ कपूर तनु आय॥

सो कपूर धराहै आगे। व्यास होम करनेको लागे॥
कुण्ड माहिं तब आहुति दीन्हे। तबहीं व्यास कहनकहँ लीन्हे
इन्द्र आगमन परिश्रम करो। तबहीं इन्द्र बचन अनुसरो॥
इन्द्र कह्यो पावक मुख मेरो। आहुति दें सब देव घनेरो॥
अश्वलिखा आहै गुरु पारा। होम करो द्विज वेद उचारा॥
सो कपूरते आहुति दयऊ। तब सब जग संतुष्टित भयऊ॥
यज्ञ धर्म्म आगममें लागे। धर्म्मराजके पातक भागे॥
कृष्ण गह्यो सब राजा ठांय। यज्ञ धर्म्म लीजै तन आय॥

ाब आगे कलियुग जो ऐहै । कोइ न ऐसो यज्ञ करैहै ॥
ापति देव सन्तुष्टित भयऊ । सबै यज्ञके पातक गयऊ ॥

शेषस्नान भुवाल तब, कीन्हा रानी सङ्ग ।
सहस दण्ड धरि छत्र तब, ताने नृपशिर रङ्ग ॥
भयो यज्ञ सब पूरणा, भागे पाप अनन्त ।
जहां आप ठाकुर रहे, तहां सबै हर्षन्त ॥

ाशम्पायन कथा सुनाये । तौ सब राजा तहां न आये ॥
ार्म्मराज हर्षित मन भयऊ । श्रीहरिको आलिङ्गन कियऊ ॥
ाछे देन लगे सब दाना । जो कछु होवे यज्ञ विधाना ॥
ासहि भूमि दान तो दयऊ । साठ एक बकदालभ भयऊ ॥
क हस्ति अरु एक तुरङ्गा । कञ्चन माल एक ता सङ्गा ॥
ुक्ता अञ्जलि गऊ हजारा । सेवक चारि तु दिये भुआरा ॥
कक द्विज तो एतिक पाये । करि मख सबै दरिद्र भगाये ॥
ाज सौ चार तुरङ्ग हजारा । प्रति दिन दीन्हो भूप उदारा ॥
ाक्षिनको भूषण पहिराये । वैष्णव ब्राह्मण खुशी कराये ॥
ाम रु हर्ष धर्म नृप जाना । सिंहासन बैठे भगवाना ॥

अश्वमेध मख पूरण, हरि करि दीन्ह्यो राउ ।
तीन लोक सन्तुष्टित, देवन आनँद पाउ ॥

ाके नृपति मुनीजन आये । षट्रस भोजन अमृत जिमाये ॥
ारि भोजन तब अचमन कीन्हा । खरिका शोधन केशव दीन्हा
ाहि अन्तर ब्राह्मण दो आये । झगरत धर्म्मराजपहँ धाये ॥

एक कहै भूमी मोहिं दीन्हा। इनने खेत जुवल करि लीन्हा।
कहै धान्य बाटी कर लीजै। लेउँ मैं कैसे सो कहि दीजै॥
दूसर कहै भूमि है तेरी। सबै धान्य है है कत मेरी॥
कृष्ण कह्यो धर्म्मजके पाहीं। है अन्याय कुटो है नाहीं॥
तीन मास बीते कलि ऐहै। आपन न्याय आप करि लैहै॥
तुम जो दीन बांटि के आधा। ऐसे कगो कपट दुख दाधा॥
यह कह घरको दीन्ह पठाये। पाछे राजन विदा कराये॥

जहां देश है जाहि कर, तहँ तहँ गये नरेश।
अश्वमेध भारत कथा, काटे पाप कलेश॥

विधि संयोग आय बन आवा। वैशम्पायन कथा सुनावा॥
राय युधिष्ठिर कहबै लहेउ। मम अस मख काहू नहिं कहेउ
एही बीच नकुल इक आवा। मध्य उच्छिष्टहि बुड़की खावा
तन मन देखि बुड़े पै सोई। च्रण बूड़े च्रण ऊपर होई।
यह अचरज तहँ देखत भयऊ। यहि विधि पहर एक सो गय
कृष्णदेव सो राजा कहई। यह चरित्र देखो कस अहई॥
कूंठ माहिं बूड़ उतराई। तन मन देखि बहुत पछताई॥
ऐस नकुल मैं कबहुं न देखा। कञ्चनमुख कबहूं न परेखा॥
तबहीं कृष्ण कहा समुझाई। यह वृत्तान्त कहौं मैं गाई॥
पूरब कथा सुनो नरनाहा। जाते एहि मुख कञ्चन आहा॥
सो वृत्तान्त कहौं म ताहीं। जो नृपती तुम पूछेहु मोहीं॥
पूर्व जन्म इक ब्राह्मण रहेऊ। बहुत दुःख तनु व्यापित भयऊ

सुत पत्नी द्विजके संग आहा। चारौं प्राणी रहैं सँग माहा॥
परम दरिद्र दुखित सो रहई। तीरथ व्रतसो फिरि फिरि करई॥
नेम धर्म्म बहुते सो करई। अस ब्राह्मण शुचिवन्ता रहई॥
चारो प्राणी बहु शुचिवन्ता। निशि बासर ध्यावत भगवन्ता॥
भिक्षा मांगि विप्र लै आवै। अर्द्ध अन्न सङ्कल्प करावै॥
याही विधि बहु दिवस गँवावा। व्यासदेव तब नृपहि सुनावा॥
चारों प्राणि विप्रसो रहेउ। एकते एक धर्म्म बहु कहेउ॥

एक दिवस चलि यात्रा, पत्नी सह द्विजराव।
ऋषि अनङ्ग तहँ भूपती, सबही कृष्ण सुनाव॥

चला यात्रा विप्र नहाई। चारि दिवस सो अन्न न पाई॥
क्षुधावन्त ब्राह्मण तब भयऊ। पञ्च दिवस याही विधि गयऊ॥
छठयें दिवस नगर इक आयो। विधि संयोग तहां कस भायो॥
जवकर खेत तहां इक अहई। मारग बीच तहां सो रहई॥
जव काटी किशान लै गयऊ। जव इक पारा तहंपर रहऊ॥
तब द्विजसुत ब्राह्मणिसों कहेउ। चुनहु आय बुद्धी यह रहेउ॥
सुत सहित द्विज बीनै लीन्हेउ एकक जव चुनि राशि जो कीन्हेउ
जब सब चुनी बनावन गयऊ। तबहीं विप्र कहत अस भयऊ॥
आधो आधा द्विज तब किहेउ। आधा अंश हाकिमहि दिहेउ॥
आधा अंश गृहस्थ विचारी। जो उबरा सो लिब्बो सँभारी॥
सो ब्राह्मणि लेगे जत सारा। जवको चूरन कीन सुसारा॥
सत्तुपीसि ब्राह्मणि लै आई। ब्राह्मणि दोना पांच बनाई॥

पांचो पत्र कीन्ह द्विज जबहीं । एकक पत्र चार लिय तबहीं ।
इकसो अभ्यागतकहँ राखा । अस धर्मिष्ठ कृष्ण तो भाषा ॥
जबहीं भोजन चाहे लीन्हा । अस्तुति आय विप्र इक कीन्हा ॥
तब द्विज चरण पखारा जाई । बहु आदर आन्यो बैठाई ॥
हर्ष सहित द्विज पत्र जु दीन्हा । तबहीं द्विज कृष्णार्पन कीन्हा ।
कह्यो विप्र सन्तुष्ट न भयऊ । आपन पत्र जो ब्राह्मण दयऊ ॥
उनहु पत्र द्विज याचन कीन्हा । चारौ पत्तर जेवै लीन्हा ।
करि प्रसाद अँचवा पुनि सोई । नीर प्रवाह पुहुमिमें होई ॥
एक नकुल तहँ आव पियासा । ठौर कुँवाके नीर प्रकास ॥
नीर उच्छिष्ट मुखै जब पीहेउ । कञ्चन मुखहि तहांतक भयज ॥

अस कौतुक तहँ होत भा, सुनौ राव चितलाय ।
पुनि उच्छिष्ट पानी पियत, सब सुवर्ण हो जाय ॥

नकुल मनहि मन करै हुलासा । अब विधि मोर जो पुरवै आसा ॥
सुना नकुलने यह सदभाऊ । राय युधिष्ठिर यज्ञ कराऊ ॥
बहुत ऋषै आये मखशाला । औरौ बहु आये महिपाला ॥
बड़ बड़ ऋषी तहां चलि आये । प्रेम पुनीत देख मन भाये ॥
औरौ देवमुनी जन भारी । तिनके सँग आये बनवारी ॥
उनकर जूँठ परा तहँ होई । तनु मोरा कञ्चन हो सोई ॥
यह गुण जानि नकुल तहँ आवा । जूँठ माहि तनु आप बुड़ावा
सो जु देह सुवरण नहि होई । तब तब बुड़की मारे सोई ॥
यह गाथा जब कृष्ण सुनाई । सुनतहि मानभङ्ग भो राई ॥

य युधिष्ठिर गर्व गमावा। लज्जा वशहै शीश नवावा॥
ऋषिकहँ लज्जा आवा। मान महातम सुनत गमावा॥

यह चरित सुन राजा, कृष्ण कहा समुझाय।
सबके मान जु भङ्गभे, रहे ऋषी शिरनाय॥

ष्ण साथ लिय सब परिवारा। द्वारावती नगर पगुधारा॥
म हर्ष आनन्द उपाये। कृष्ण द्वारका पहुँचे जाये॥
शम्पायन कहैं बखानी। अश्वमेधहै पुण्य कहानी॥
खी सुनै दारिद्र पराई। रोगी रोग तुरत क्षय जाई॥
नःपुत्री सुनते सुत पावे। पुरुषन सुनत ज्ञान उपजावै॥
हस्रन धेनु देइ जो दाना। सर्व तीर्थ करते अस्नाना॥
पर्व अठारह सुन फल होई। अश्वमेध जानो फल सोई॥
यह चरित सुनिजै मनलाई। यमके दूत निकट नहिं जाई॥
कथा सुनत देते जो दाना। प्रापति देव होंय भगवाना॥
पाण्डव विजय कहै अनुसारा। यह संक्षेप करे विस्तारा॥

पाण्डव विजय कथा यह, पुण्यश्लोक बखान।
अश्वमेध संपूरण, सुनु राजा सज्ञान॥

अश्वमेध मख पातक हरता। राजा सुनौ श्रीपती करता॥
कर श्रद्धा नर सुनै पुराना। तापर रह प्रसन्न भगवाना॥
श्रद्धा जाकै मनमहँ नाहीं। सुन अनसुनी एक सम ताहीं॥
मनसा फल प्रापति तब होई। यही सत्यक जानो सोई॥

मनमों धर ज्ञान गुरुदेवा। मनमें पार होत नर सेवा॥
श्रद्धा मन जानौ परवाना। ताते परब्रह्म पहिचाना॥
काम क्रोध मद अच्चय चाहा। भावै ज्ञान कहो का ताहा॥
का कामीके आगे ज्ञाना। काह क्रोधते भक्ति बखाना॥
का लम्पटके आगे धर्मा। कामी काह पुण्यका कर्मा॥
जैसे ऊसर बीज बोवाये। तैसे यह सब भेद बताये॥

भारत गाथा हिय धरे, होत पुण्य परवेश।
मनमें भक्ति न जासुके, सो नहिं फल उपदेश॥

इति त्रयोदश अध्याय॥ १३॥

इति अश्वमेधपर्व्व समाप्त।

महाभारत।

आश्रमवासिक पर्व्व।

जयति जयति रघुवर श्रीरामा। भक्त जननको पूरण कामा॥
वन्दौं गुरु गोविन्द सब ताता। वन्दौं पुनि श्रीपितु अरु माता॥
वन्दौं अज इन्द्रादिक देवा। बारबार शिवकी करि सेवा॥
श्रीशक्तिहि प्रभु शारद देवी। सविधि काव्यजनकी जो सेवी॥
वन्दौं व्यासादिक मुनि नारद। हनूमान जो ज्ञान विशारद॥
सबलसिंह यह भारत भाखा। श्रीप्रभु जब अरके दै राखा॥
औरंगशाह दिलीपति राजत। मित्रसेनि भूपति तहँ गाजत॥
ये नृपके पुरुषन महँ गाये। सबलसिंह चौहान बनाये॥
सम्वत सत्रह से इक्यावन। शुक्लपच्छ दशमी बुध सावन॥
तब मैं कथा अरम्भन कीन्हा। व्यासदेवको सुमिरण कीन्हा॥

लच्मीके पति जौन हैं, हैं लच्मी वश जाहि।
सलच्मण जामें मिलैं, वन्दतहौं मैं ताहि॥

श्रीहरिव्यापक जपत सब, तेहिते वन्दिय सर्व।
सबलसिंह चौहान कह, आश्रमवासिक पर्व॥
नृपवर यज्ञ सरावत भयऊ। कछुदिन अधम शंभुवलिगयऊ।
नृपवर यज्ञ सुभग श्रमभवा। तादिन सभा अनूपम हुवा॥
द्विजन पूजि सह भाइन बैठो। ठौरहि ठौर भूप जन ऐंठो॥
कथा वार्ता विविध प्रकारा। सुरन पूजि नृप कीन्ह जुहारा॥

प्रथमहिं पूजिय गणपतिहि, जाको सेवा सर्व।
सबलसिंह चौहानकह, भाषा आश्रमपर्व॥

सबजन नृप बैठे आसन प्रति। होइनि यज्ञ ठौर होके अति॥
ताहि समय द्व पायन आये। नृपसब वन्दि भ्रात मुद पाये॥
सिंहासनोपर नृप वर राजत। नृत्य होत बाजन बहु बाजत॥
बैठे भूप सकल पृथिवीके। अर्ज्जुन भीम युधिष्ठिर नीके॥
बभ्रूवाहन नृप अनुशाला। नीलाम्बुज-आदिक महिपाला॥
आरो बहु बैठे तहँ राजा। विविध तँबूर तबल जहँ बाजा॥
सकल भूप तहँ रहे बखानी। कहा हुते बलि शारँग पानी॥
कहमुनि सुनु नृप वचन सोहाये। तुवहित हेतु कहत हम गाये॥
रहे दूरिके राय, जे आये नृप यज्ञमहँ।
जे नगीचके आय, निज निज नगरनको गये॥
पष्ठमास की वात, यज्ञान्तर नृप ह्वै गयो।
रहे दूरि नृपतात, द्व पायन सह भूप मगा॥

नाच होइ तहँ त्रिविध प्रकारा । मुख मोरहिं जोरहिं सब तारा॥
उछरहिं और केश छिटकावहिं । कुच देखाइकै भूप रिझावहिं ॥
द्वादश षोडश वर्ष कि नारी । करहिं नृत्य नटनी सुकुमारी ॥
तासु आभरन कौन बखाने । पहिरे कर्ण मोतिया साने ॥
त्रिवली तरल तरङ्ग सोहाई । अभिगम्य नाभि मनोहरताई ॥
कटिकर किंकिणि तहँ छबिछाई । पग नूपुर झनकार सोहाई ॥
कुचयुग चक्रवाक जनु साजै । मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजै ॥

नाचैं नारी मनहुँ रति, अलक झलक छवि होत ।
चन्द्रवदनि मृगिनैनि शिशु, भ्रुकुटी कुटिल उदोत ॥
कुन्दकली समदांत, अधर अनूपम चिबुक तिल ।
कुच सुचक्रकभांत, तिलप्रसून नासा सुभग ॥

यहिविधि नृत्यहोत दिनराती । नृप समाज देखत सुनिपांती ॥
द्वैपायन नृप गे आश्रम को । रैनि व्यतीत मिलन कोकीको ॥
यहि विधि होत रात दिन उत्सौ । आवत देशन केर वकीलौ ॥
जीतत हारत सकल वकीला । करत सुभग हितनृपगणमीला ॥
बभ्रूवाहन नृप दुःशाला । जीवनाथ आदिक महिपाला ॥
करिकरि सैन साजि सब राजा । बिदामांगि गे सहित समाजा॥
ले जनवास विदा रानिन ह्वै । चलेनृपतिसबश्रीशिवसुतह्वै ॥
करत बड़ाई धर्म्मज केरी । निज निजधाम गये नृपफेरी ॥
इहां हस्तिपुर धर्म्मज राजा । नित नव मङ्गल मोद समाजा ॥
बहुत वर्ष बीते सुखदाई । आगे नृप सुनु कथा चलाई ॥

यक दिन कृष्णचन्द्र बलरामा। पुत्र पौत्र आदिक वर वामा॥
आये धर्म्मराजके धामहिं। यथा उचित सब कीन्ह प्रणामहिं॥
वास कीन्ह श्रीप्रभु बलनागर। कुन्ती भगिनि द्रुपदिमिलि...
यहि विधि बीति गये कछु काला। रहे कृष्ण गे हलधर बाला॥

कृष्णचन्द्र नारिन सकल, बलसँग दीन्ह पठाइ।
आपु रहे हस्तिननगर, भ्रातादिक सुख पाइ॥

यहिविधि कृष्णचन्द्र सुखदाई। रहे हस्तिना मास गँवाई॥
यकदिन द्वै ब्राह्मण तहँ आये। तिन्ह बोलाय तिन्ह बात जनाये॥
इनको भूमि लीन्ह जोतन हित। जोतत रहत सुनो हे नृपनित॥
तामें मिलो सघन भण्डारा। हमरो हक नहिं ताहि पुकारा॥
सो हम धनहिं कृष्ण नहि लीजै। यादव पांडु न्याय करि दीजै॥
हमसों अन्न देवते कामा। गड़ो मिलो सो याकर जामा॥
यह सुनि बोलेउ द्विजवर दूसर। नहिं हमार धन उपजो ऊसर॥
हमसों वर्ष दण्डसों रहई। और मिलै सो याकर अहई॥
नाहीं होत अन्न जब याके। तबहूं लेत दण्ड हम साके॥
उपजै जो करोरि धन भाई। तबहूं वहै मिलत है राई॥
उपजो जौन अवनि धनराजा। हमसों नहीं कछु है काजा॥

नृपवर सुनि द्विजवर वचन, कृष्णपाहिं दै ताहि।
कृष्णचन्द्र भाष्यो तिन्हैं, षटमास निरवाहि॥

षट मास महँ तुम द्विज आयो। धर्मराय मुख न्याय करायो॥
यह सुनिगेद्विजनिजनिजधामहिं। सभावन्दिनितप्रतियहकामहिं॥

सुनु आगे नृपसुत अब कथा। मैं गुणगाइ कहत भइ यथा॥
एकदिन आज्ञा नृपसों लीन्हा। द्विजन बुलाइ दान बहुदीन्हा॥
ह्वैके बिदा सुभद्रा पासहि। द्रुपदिहि मिली बहुरिकै सादहि॥
मिलि नृप भीमपार्थसोंभेंटत। मन्त्रिहि नकुल मिलिहि संभेटत॥
कर्णपूत गांधारी मातहिं। तौ पितु अंध और बहु जातहिं॥
मिलत सबनसों चाल न कीन्हा। रथह्वै वेगि द्वारकहि चीन्हा॥
मिलन सबन यदुवंशिन आछे। गये प्रथम मन्दिरकहँ पाछे॥
इत नृप धर्म्मराज शुभ करई। चलै न मारग सत्य न टरई॥
बीते कछुक दिवस इमि ईछे। आये व्यास शिष्यसह पीछे॥
देखि नृपति बन्धुन सह वन्दे। अश्वासन लखि व्यास अनन्दे॥
कहा व्यास सुनुधर्म्म महीसो। कहेउ दास कारण सबहीसो॥
मम आगम तोहिं लागतफीको। जाते होउ दास नृपही को॥
धर्म्मजसुनत वन्दि हँसिदीन्हों। कहेउ कृपालव सब सुखकीन्हों॥
भ्रात न मारि राज्य हम पावा। तव प्रसाद घोड़ा फिरि आवा॥

अब कछु दिनसों महामुनि, लखत अन्य अपकार।
मिथ्या वाक्य प्रसाद अति, और सकल आकार॥
ताहि समय सुनु तात, करत वतकही व्याससों।
आयो द्विज तव रांत, बोलि न्याय लागे करन॥

भाष्यो द्विज है भूमि हमारी। अन्न छांड़ि सब लेव करारी॥
याके हाथ भूमि क्रय नाहीं। करि किरिया लेवै हम आहीं॥
सुनिबोलेउ द्विज दूजो बानी। लेवै छीन कहत शिर आनी॥

याको भूमि वित्त सो चहिये। और मिलै मोको नृप अहिये॥
यह सुनि सबहिन धिक धिक बोले। वृक्ष हले धरणी नग डोले॥
डरके मारे पुर तिहुँ कांपै। जल समुद्र उछले अरु तापै॥
धर्मज सुनत आँगुरी चापी। पवन चली वसुधा सब कांपी॥

सुनि धर्मज कंपन लगो, भे प्रमुदित भूपाल।
रामकृष्ण कहिक गिरे, भे सचेत पुनिहाल॥

आधो अर्द्ध दीन्ह कै राजन। तब लागो पूंछन महराजन॥
अहो व्यास मुनिकारण कहिये। नहिं तो चित्त अनलसों दहिये॥
कहो व्यास यह कलियुग लागो। धर्म्म धर्म्म नृप धर्म्महि त्यागो॥
ताते आपु बद्रि पहँ जैये। गलि हेवार हरि आश्रम रहिये॥
कलिमें सकल गोतवध करि हैं। पाप तिहारे ऊपर धरिहैं॥
कलियुग नगर हेतु हम भाखा। दोष झूंठ तव ऊपर राखा॥
ऐसे व्यास कहेउ बहु ज्ञाना। व्यास धर्म बिन जाको आना॥
व्यासगये निज आश्रम काहीं। कहेउ धर्म्म अब रहिबे नाहीं॥
चलो कृष्णपहँ मांगि रजाई। जो उत्तर दिशि चाहो जाई॥
सुनि अर्ज्जुन अतिशय सुखमाना। भीम नकुल मन्त्री हर्षाना॥
वेगवन्त अर्ज्जुन रथ साजा। तापर चढ़े युधिष्ठिर राजा॥
चारि बन्धु भूपति सँग लीन्हे। हरिपुर ओर गमन नृप कीन्हे॥
चले अलौकिक देखत शोभा। जितहिं जात तितही मनलोभा॥
कतहूं शिक्षित पण्डित बालक। कतहूं जात सैन रिपुघालक॥
कहूं लरत जग अतिहित तारे। उज्ज्वल गिरि समान भँभारे

माल महिष उष्ट्रादिक नाना । लड़त शब्द फाटत ते काना ॥
कहत धनुर्व्विद सूरति छोजत । पुरबाहर ह्वै कोउ कोउ देखत ॥
कोउ नृतनाटक करत रिझावत । वारमुखी नाचैं गुणगावत ॥
मालीगण सींचत कहुँ बागन । मधुकरकाम अंधसह रागन ॥
कहुँ कहुँ होंत युद्धके साजा । आवत नृपन पल जहँ राजा ॥

को कवि करै बखान, जहां रहैं श्रीब्रह्म प्रभु ।
असको लिभुवन आन, जो न भजत श्रीप्रभु असहि ॥

कहुँ विवाह चूड़ा कर नादी । गावत मङ्गलचार सदादी ॥
सर अरु बाग नदीतट पावन । भ्रमती नारी काम लजावन ॥

कोकिल पिक अरु मोरगण, सुमन सहित ऋतुराज ।
रहत सदा हरिकी कृपा, हो नित प्रति यह काज ॥
यहि विधि लखत सबन्धु नृप, करत मिलन सब पास ।
रामकृष्ण कहि मिलत सब, कुशल कहत हम दास ॥

कहेउ कृष्ण नृप कहु केहि काजा । आये सकल बन्धु महराजा ॥
व्यासवचन अरु न्यायबतायो । कलियुग घोर पापमय आयो ॥
जानचहत उत्तरदिशि प्रभु हम । कीन्हगोत्तवध हम नाहीं कम ॥
जो आज्ञा आगे प्रभु केरी । हम तो पलक कोर प्रभु हेरी ॥
भाष्यो कृष्ण सुनो हे राजन । कलियुग अहै घोर यहि काजन ॥
तुम्हैं गोत्र वध पाप न ह्वै है । पुनि कलियुगवासी नहिं छ्वैहै ॥
कहिहैं धर्म्मराज जो कीन्हा । पाप पुण्य उनहं नहिं चीन्हा ॥

व्यास कहेउ यहि हेत, कलिबासी जो जन करत।
दोष तुम्हें जो देत, पाप लहै तुव सोइ सुनो॥
कलियुग ऐहै घोर अपारा। तामें चलै न कछुक अचारा॥
वृद्ध श्वान मम भू गिहराई। मानहिं मातु पिता नहिं गाई॥
यौवन मदवश करहिं कुकर्मा। तजिहैं देश लोक कुल धर्मा॥
ब्राह्मण जोतहिं हलतजिपूजा। जो तजिदिवसकरहिं निशिपूजा॥
वीर्य्यहीन क्षत्री ह्वै जैहैं। तबहीं म्लेच्छ नृपति ह्वै ऐहैं॥
वैश्य देव द्विज सेवा हीना। कहिहैं शूद्र ब्रह्म हम चीन्हा॥
क्षत्री भूमि हीन ह्वै जैहैं। बूझो नृप कब कलियुग ऐहैं॥
भाद्र मास शुभ पक्ष तम, त्रयोदशी रविवार।
अबते बाकी मास षट, कलियुगकर अवतार॥
जब कलियुग गङ्गाकहँ जाना। तब ह्वैहैं अति अवगुण नाना॥
नारि धर्म जो विधवा करिहैं। कन्या गर्भ कुमारहि धरिहैं॥
कहँलौं कहौं प्रभाव भुवाला। संकर वर्ण होइ कलिकाला॥
कछुदिन करहु राज्य नृप आछे। इमसहचलबकछुकदिन पाछे॥
अब तुम नगर जाइयो राजन। प्रथमैं कहेउ कियेउ जब साजन॥
सुनि नृप प्रभुके वचन वर, मिले सबहि भूपाल।
अर्ज्जुन रहिगे द्वारकहि, आये सब जन हाल॥
नगर आइ भूपाल सुहाये। पौत्रहि बोलि सुकण्ठ लगाये॥
माताको सब बात जनाई। कृपाचार्य सुनते दुख पाई॥
[illegible]रजधरि कुन्ती यह भाखा। पति संगगमनमोहिंविधि रा[illegible]

पुत्र बिना कस रहिहौं राई । जावा चहत सुतहि तुमहाई ॥
कलियुग केर प्रभाव बतावा । तब कछु हृदयज्ञान भरि आवा ॥
कलियुगपुत्रजो पियअबआयो । ताते मान मोहिं नहिं भायो ॥
हम सबको तिलअञ्जलि दीजे । उत्तर पन्थ गमन तब कीजे ॥

चलत कृष्ण आपहु कहे, तब लग माता जाय ।
आये अर्ज्जुन तेहि समय, गये मातु लग धाय ।

कुशल प्रश्न सब यदुकुल केरी । अर्ज्जुन कही कथा जस हेरी ॥
कहेउ कृष्ण नृपरहोकछुकदिन । सुनिनृपभयेप्रशंसतछिनछिन ॥
है कारज अब ह्वै हैं पारथ । मातुजाबयहसबविधि स्वारथ ॥
सन्ध्या भई सबन शुभ कीन्हा । भोर अन्हाइ दान सब दीन्हा ॥
क्रिया कराई सुविर सुहाये । गहे हुते बहु दिन अब आये ॥
ताही समय आगमन कीन्हा । पुरजनसहितनृपतिवर चीन्हा ॥
बन्दि चरण सब जन तब ईछे । चरण धोइ आसनपर पीछे ॥

कुन्ती द्रुपदि भगिनि प्रभु, तुव पितु मातु सबंदि ॥
आशिष दीन्हों मुदित मन, श्रीवर विदुर अनन्दि ॥

सन्ध्या देखि क्रिया नित कीन्हे । भोजनकीन्ह सबनमुदलीन्हे ॥
ताहि समय नृप बन्धु सयाना । विदुरहि कहेउ पौढ़िये आना ॥
करहु तात अब तुम विश्रामा । यह सुनि कहेउ विदुरनिजकामा ॥
विदुर वचन भूपति सों बोले । चाहत मिलन भ्रात मन डोले ॥
आज्ञा दियो धर्म्मको राजन । विदुर चले मिलिबेके काजन ॥

किंकरजन लेगे विदुर, चरण गहेउ कहि नाम।
सुनत नाम नृप उठि मिले, सह संजय अभिराम॥
विदुर मिले सह नारि, बार बार धीरज कहत।
दीन्हेउ जो मुख चारि, ताको प्रभुता है महत॥

हाहा विदुर कहत भूपाला। असकहिदम्पतिठोंकतभाला॥
हाय विदुर मम सुत सब जूझे। अजहुँ छुद्रितनु प्रान असूझे॥
नात गोत्रजन सों भयो हीना। पुत्र हीन हम अबहूं दीना॥
मरत न फटत हियो है भाई। मम सम भयो न होनेउ आई॥
अस कहि दम्पति रोवनलागे। अस सुनि जनमेजय नृप आगे॥
धीरज दियो विवध परकारा। दियो ज्ञान भू एक अकारा॥
तब बोले नृप अन्ध सुजाना। कहँ कहँ गये बन्धु द्रुत आना॥
द्रुतते गये सुनहु नरपाला। रहेउ उजैनि जहां महकाला॥
चर्म्मवती अरु तीर्थ अनेका। सोमनाथ वसि भयो अशोका॥
गङ्गाद्वार बास तब कीन्हा। आय नैमिषारण्यहिं लीन्हा॥

बैजनाथ को परस पुनि, कियो जनकपुर वास।
जगन्नाथमें जायकर, पूजो मनकी आस॥

वाराणसी तहां ते आये। विश्वेश्वरके दर्शन पाये॥
गये हिमालयकहँ भूपाला। अलकापुरी लख्यो सुख शाला॥
व्यासाश्रम दश वर्ष बिताये। तहँ ते चित्रकूट कहँ आये॥
तहँ सत्संग ऋषिन कर लीन्हा। ब्रह्मघाट आये कर चीन्हा॥
तहँते गये बड़े सो देशहि। भुवनेश्वर किय दर्श विशेषहि॥

रामनाथकर दरश सुहाये। तात तहांते द्वतको आये॥
लहि मैत्रेयपास कछुशुभगति। तुमहिं देखिबे आय गयेसति
तब सुधि बिसरति हुती न नेको। देखत तुमहि सुखी नहिं एकं
चलौ भ्रात तप हेतु महावन। जहँ थल अहै व्यासकर पावन॥

सुन नृप दुःख न मानिये, देखे तीर्थ अनेक।
हरि बिनु जग सूनो सब, तेजवान वह एक॥

सोई जल सोई थल जानो। सगुण निर्गुण तैसेहि मानो॥
सोई पृथ्वी सोइ आकासा। आपुइ स्वामी आपुइ दासा॥
आपुहि राजा आपुहि रानी। सोई अग्नि सोइ है पानी॥
सोई धन सोइ चोर कराला। सोई मरत सोइ है काला॥
सोइ है हीन सोइ है पावन। सोइ है राम सोइ है रावन॥
हरि आपुइ नर आपुइ नारी। आपु गृहस्थ आपु ब्रह्मचारी॥
आपुहि पिता आपुही माता। आपुहि पुत्र आपुही भ्राता॥

आपुहि गुरु कवि आपही, आपुहि शिष्य सुजान।
आपुहि विद्या चतुर्दश, आपुहि गुण गणज्ञान॥

आपुहि पण्डित आपुहि ज्ञानी। आपुहि महिप आपुही रानी
आपुहि ग्वाल आपुही गाई। आपुही आपु चरावन जाई॥
आपुहि भँवर आपुही फूला। आपुहि ज्ञान बिना जनमूला॥
राज रङ्क दूजो नहिं कोई। आपुइ आपु निरञ्जन होई॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका। तैसे जाने ब्रह्म विवेका॥
यहि प्रकार जाको मन लागे। जरा मरण नाशै भ्रम भागै॥

योग समाधि ब्रह्म चित्त लावै। ब्रह्मानन्द सुनहि तब पावै॥
सोइ बैकुण्ठ सोई है नरका। सोइ है शोक सोइ है हरषा॥
मातु सोई पितु सुत सोइ, सोई नृपति सोइ रङ्क।
एक रूप जानौं सुखद, नृप मति करये शङ्क॥
बोले विदुर सुनहु हे राजा। दुखवश देखि परत केहिकाजा॥
कहा अन्ध नृप सुनि हे भाई। भीम वचन मोहिं सहो न जाई॥
बार बार मुहिं दे दुदकारे। कहै न आओ निकट हमारे॥
तैनेही सब काम बिगारा। घरमें प्रगटयो शत्रु हमारा॥
खाय हमारी जूण्ठ जुठाई। अब हमहीं सों करत खुटाई॥
दासीसुतसों लाभ न होई। कोटि उपायकरो किन कोई॥
सुन अस वचन फटत ममछाती। यहै शोच मोको दिनराती॥
मौन साध चुपको ह्वै रहिहौं। अपने मनकी कासों कहिहौं॥
और सकल सुखदेत, भीम कहत मोहिं कटु वचन।
सो न सहब मन लेत, को भाषै हरिकी रचन॥
विदुरजाहिजिमिनृपकटभाषत। श्वानसमाननृपतिवुवभाषत
जैसे लकुट हनत नर नायक। भीम कहत नृपसे तुव लायक॥
खात शूद्रगृह लाज न आवत। हीन वंश अजहूं होरावत॥
ताते करौ चलो तप जाई। नातरु लहौ अधिक दुखभाई॥
सुनि कटु वन तपहिं कहँ ईछे। विदुर सुनाय ज्ञानसह पीछे
सुनो बन्धु जगकर व्यवहारा। जामें बँधो सकल संसारा॥
सुखदुख स्वप्न जानियो राजा। यह सब देह नेहके काजा॥

इन्द्री है अर मन बहक, देह सुरथ रथवान।
याके वश भर्मत फिरत, जीव न कछु है आन॥
कह सञ्जय मतिमान, रूपहि देखा साधुको।
ताविन कछु नहि आन, जड़ चेतन उत्पत्ति सत॥
भई व्यतीत सुरैनि तब, भयो ज्ञानको भार।
धर्म्मनृपति आवत भयो, वन्दत पितु हित ओर॥

नृपति भीम अर्ज्जुन तब बन्दे। नकुल देव सहदेव अनन्दे॥
नाम कहेउ तब पाण्डव चीन्हों। गद्गद ह्वै दम्पति शिषदीन्हो॥
कृपाचार्य मिलि विदुरहि भेटत। सञ्चय मिलो तापत्रय मेटत
मिलि युयुत्सु आदिक बहुतेरे। औरो सकल बसैया नेरे॥
कर्णपुत्र नृपहृदय लगायो। मेघवर्ण मिलि दुसह नशायो॥
बैठे निजनिज आसनपर सब। अन्ध नृपति गद्गद बोले तब॥
होहो पुत्र धर्म्म सुखदाता। किय प्रतिपाल मोर अरु माता॥
दुर्योधन आदिक सब जूझे। तबसों तुम मोको अति बूझे॥
बिसरो दुख पुत्रन वध मोहीं। रोमहिं रोम अशीशत तोहीं॥
मम सुत तुमहिं दुःखबहुदीन्हो। फल पायो ते आपन कीन्हो॥
अब मम देह सकल जरजरसै। भइ बलहीन दीन गति दरसै॥
सरिता निकट वृक्ष मोहिं जानो। तुर्त उखरिबो शङ्क न मानो॥

आज्ञा दीजे जाइँ हम, दम्पति भ्राता साथ।
कर्म मुक्ति हित बनै कछु, उतहित धन जो हाथ॥

न्टप सुनियय बंधुनसहदुखश्रति। बोलत भे तव ज्ञानचतुर्गी
हमरे तुम सबके सुखदाता। केहिविधि कहौं जाहु अस बाता
पुनि पितु जाहु नीक कत हेतू। होय सुभग सह मङ्गलसेतू॥
तब कुन्ती बोली बिलखाई। हमहूं चलब सङ्ग तुव राई॥
सुनते सब काहुन समुझावा। कुन्तीके मन नेकु न आवा॥
तब धृतराष्ट्र कहन अस लागे। धर्म्मराज राजाके आगे॥
पुत्र मात सम्बन्धी जोई। जाना है औरौ सुन सोई॥
पिण्डा श्राद्ध सबनको करिकै। भोर जाब पुनि सब ब्रत धरि

सुनि धर्म्मज गुण ऐन, बन्दि सबनि पितुपदपदुम।
आये निज निज ऐन, नित्य क्रिया भोजन कियो॥

न्टप ह्वै शुचि सहदेव बुलाये। तिन न्टप आयसु सुखद सुना
लै बन सबन वस्त्र पट नाना। गज रथ वाजी उष्ट्र विताना॥
अरु भोजनके साज अथोरा। लै मतिदृगपहुं जाहु करोरा॥
यह सुनि किंकर सकल बुलाये। जो जेहि लायक ताहि सुना
निकरत मुखमानी किंकर जन। लै सबगये मिलो अतिश्रक
लादि साज न्टप मन्दिरमों सब। होन लाग तबसाजसकल

निशा भयो पुनि वित्तमों, गये धर्म्मके राज।
पितहिं वन्दि लागे करन, सबजन सब विधि साज॥

होम भयो पिण्डा न्टप दीन्हा। जसविधि वेद कहेउतसकीन्ह
भोजन श्राद्ध यथाविधि कीन्हो। दान अथोर विप्र न्टप दीन्
याचक सकल अयाचक भयऊ। इकदिन एक निशा इमि ग

अरुणोदय लखि चालनकीन्हा। दान दयासों ब्राह्मण दीन्हा।
आशिषदै निज धाकन आयो। जन्मेजय सुनि मुनि सबगायो॥

कुन्ती मिलि गन्धारि ती, विदुरसहित मिलि धर्म्म।
सबन मिलत आगे चले, पुरजननसह जिमि सम॥
पुरजनमहँ सुरराज सम, नृप धर्म्मज सहभाय।
नारी नर सब बिकल ह्वै, हा हा हा कहि राय॥

नृप धृतराष्ट्र सबन समुझावा। मिलिसबहिनयोजनथकआवा॥
धर्म्मराजकहँ आशिष दीन्हा। सञ्जयकहँ प्रबोध तब कीन्हा॥
सब काहुन पलटायो राजा। गांगे मिले अर्द्ध महराजा॥
माया मोह तोरि तृण इव सब। आगे चले सुनहु नृपवर अब॥
बिदुर कन्ध धरि कर नरपाला। पति कन्धा गन्धारी वाला॥
ता पाछे कुन्ती धरि हाथा। चले नवाय गंगकहँ माथा॥
करि मज्जन अरु बहुकर दाना। चले बनहि चारिउ जन माना॥
यहिविधि करत वासमगमाहीं। चलेजातनितभय दुखनाहीं॥
व्यासाश्रम मिलिसबमुनिजूहन। भे प्रसन्न भोजन फलमूहन॥
व्यासहिंमिलत अधिक सुखपावा। कहमुनिभलीकीन्ह जोआवा॥
जैमिनि शुक अरु बकदालंभी। औरी मिले मुदित मुनि नंभी॥
कह नृप लहेउ दुःखमैं ताता। सुत जूझन आदिक बहु वाता॥
कह मुनि प्रथम तुम्हैं समुझावा। नेकुहृदयमहँ ज्ञान न आवा॥

निज तनु तूल भराइकै, निज कर अग्नि लगाय।
दोष देय तब ईशको, कह्यो ऋषै समुझाय॥

तातें करु तप भूप, हृदय राखि अव्यक्त प्रभु ।
देखि चराचर रूप, जो त्रिभुवनमहँ एक रस ॥
करन लगे तप नृप औ रानी । विदुर आनि करि ज्ञान सुहानी ॥
भै अद्भुत सदृश्य यमराजा । मग्न फिरत वन और न काजा ॥
उत नृप धर्म्मराज दुख पावत । लख्यो तबै ऋषि नारद आवत ॥
उठे सभासद मुनिकहँ वन्दे । लख्यो धर्म्म नृप बहुत अनंदे ॥
अर्घ्य देइ आसन बैठारयो । मुनि समीप अस वचन उचारयो ॥
त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ मुनीशा । फिरत रहत तुम सदा अहीशा ॥
तुम मुनीश सर्वज्ञ प्रभु, जानत मन भगवान ।
कहो खबरि कछु विदुरकी, सबलसिंह चौहान ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

विदुर विरक्त फिरत वनमाहीं । त्यागो तनु गे हरिपुर काहीं ॥
तो पितु और दोउ पटरानी । गई अग्नि जरि मरि गुणखानी ॥
भये विकल सुनि बन्धुनृपाला । जोगतिहोतबिकलजिमिकाला ॥
रोवत बार बार हाहा कहि । मूर्च्छित ह्वै कै गिरत अवनिमहि ॥
यह देखत बोले मुनि नारद । सुनु नृपवर विज्ञान विशारद ॥
मरण भयो न कछु यह जाना । समुझनहेतु कहेउ अस राना ॥
है पितुभक्त सदृश कोइ नाहीं । परपितु मानतसम पितु आहीं ॥
२ चलि दरश करो पितु केरा । नातरु काल आयगो नेरा ॥

यह कहिकै नारद ऋषै, चले ब्रह्मपुर ओर।
अब आगे सुनु नृप कथा, वरणौ सकल बहोर॥
तुरत तयार नृपतिवर भयऊ। बन्धुसहितनृपमिलि अब गयऊ॥
पति औ नारी सकल समाजा। नगरमहाजन अरु द्विजराजा॥
चले सकलजेहि राजत पुरमों। बाणा सदृश यह लागत उरमों॥
छले नृपाल भुआल, सहित बन्धु पुरजन सकल।
ठौर ठौर रखपाल, राखि चले हस्तीनगर॥
नृप तव नगर राखि रच्छकगन। चलेसबनसह दुखितनृपतिबन॥
तीरथ करत वास भगवाना। चले बनहि जहँ कुरुपतिराना॥
गये व्यास आश्रमके पासा। भै पदत्रान बिहीन सदासा॥
मिलतऋषिन कहँ बिविधबिधाना। गयेजहां हैं व्याससुजाना॥
मिले व्यासकहँ वन्दन करि करि। वारवारशिरपदमहँ धरि धरि॥
दै अशीश नृप कहँ मुनिराया। कृपा कटाच्छ सवनपर दाया॥
मिले पिता द्वै मातन काहीं। नाम सुनाइ कहेउ कछुनाहीं॥
सकल मोहवश जल नैननमहँ। को अस कहै दशानृप भै तहँ॥
दै अशीश सबकहँ सवन, वैठे सब जनराय।
वैशम्पायन कहत हैं, जन्मेजयपहँ गाय॥
दुर्लभ देखि रायकहँ राजा। सहमवु नहि दुर्वल तपकाजा॥
बोले नृपवर गद्गद वानी। कहँ हैं विदुर कहेउ तव गनी॥
कुन्ती कह भै परमहंस सो। ढूंढ़न चले अकेल वन सो॥
देख्यो भागि जात वनमाहीं। गोहरायो टिटुवे तेहि नाहीं॥

तदपिवृक्ष आश्रित चीन्हेंजब। नयन नीरभरिरहेउ ठाढ़ि तब।
चरण गहेउ धर्म्मजके राजा। ताहि समै दुन्दुभिवर बाजा॥
विदुर त्याग तनु ताही औसर। गे यमराज विदुर ह्वैके बर॥
देखि धर्म्मन्टप बन्धु बोलाये। कहि सबकथा नयन छल छाये॥
दाहन चहेउ तबै वाणीभय। जीवन्मुक्तविदुर यमकह हय॥

यम राजाको अङ्ग है, विदुर भक्त भगवान।
धर्म्मराज हिय सुमति भौ, परबोधिक सुनि कान॥
आयो राजा धर्म्म, कहेउ कथा सब विदुरकी।
कीन्हों विधिवत कर्म, निजकर राजा अन्धवर॥

रहे वनहिं कछुदिन शुभ बीतत। महादुःखलखिमुनिवरचीतत
पूछेउ सबसों को केहि चाहत। जासों होत उऋणमों दाहत॥
कुन्ती कहेउ कर्ण मैं देख्यो। गन्धारी यामातहि लेख्यो॥
सुभद्रा आदिक सुतकहँ भागत। पितु सुतबन्धुपतिहिशरणागत
सबै कौशिकी तट लै गयऊ। तपप्रभाव सब आवतभयऊ॥
दिव्य दृष्टि अन्धहि नारीसह। सुनत लगायो कह हाहा तह॥
कोउपति मिलत महामुद छाये। कोउकोउ पुत्रन हृदयलगाये॥
कोऊ भाइ बापहि लावत। दुख मिटि ग कोउ मङ्गल गावत॥
रैनि एक सुखसे सब बीतत। अरुणोदयलखिसबजनचीतत॥
फांदे सब वन न्टप छल माहीं। रहे न एकौ धौ कोउ माहीं॥
सकल मोहवश नारि अपारा। धसीं जलै करि घोर चिकारा॥
कोउ वनमहँ ढूँढ़त भागत। कोउकोउप्राणतजतभैलागत॥

कोउकोउव्याघ्रादिकधरिखायो । जलमहँ धसिसबप्राणगँवायो
कोउकोउ शून्य होम मखशाला । जरीं अग्निमहँ जे वरबाला ॥

सब काहुँन तनु त्यागि करि, गई पतिनके साथ ।
व्यास कहेहु यह धर्म्मसों, अब भल तबहिं अनाथ ॥
आये सुनि नरपाल, जहां होमशाला नृपति ।
सुनु अब कछु सुन हाल, वैशम्पायन कहत भे ॥

धर्म्मनृपति मख करत रहे तहँ । मखशाला रह व्यासकेर तहँ ॥
अग्नि प्रचण्डशिखा अतिबाढ़ी । अर्द्ध नृपति अङ्गहि तहँडाढी
कुन्ती चलन चहेउ उठि तहँते । अचविहीन नृपतिवर जहँते
धर्म्मविचारि जरी संग तिनके । रामकृष्ण कहि कहि वेजिनके
कोऊ ऋषि अरु पांडुकुमारा । रहे न तब कोउ उठवनहारा ॥
धाय नृपति यह दशा निरेखी । कीन्हो रुदन सुनत जिनदेखी
रोय उठे सहनृप बन्धुन जन । और नगरवासी आये वन ॥
रोवहिं कुन्तिहि गन्धारी कह । हाय हाय कहि अन्धनृपतिसह
लेकर अस्थि सुदम्पति केरी । लीन्हे अस्ति ढूंढ़ि माकेरी ॥
कीन्हे कर्म्म सविधि गङ्गातट । जहँ पवित्र वन मोहिं एकवट ।
कीन्हतिलांजलिदेयसविधिविधि । चलेधीरधरिनगरनृपनिसि
करिवन्दन ऋषिव्याससवनको । चलेमगहिमहँ श्रमनहिमनका
वास चलन करि मगन सब, नृपराजन सहभाय ।
नारीसंग सुभद्र सह, द्रुपदी सह दुखपाय ॥

आये नगर नृपाल, दियेतिलांजलि दिवसनिशि।
एकादश सुखपाल, दिये बाजि नारी सवन॥
द्वादशमें दिन भूपमणि, दीन्हों दान अथोर।
बास लसो दम्पति तबै, सहक्रान्ती सब ओर।

पायोबास सुखद सब काहू। मिटेउ दुःख प्रबलित जो राहू॥
धर्मराज जो विदुर कहायो। निजपुरवास न्याव मनलायो॥
जन्मेजय सुनि भाषन लागे। सम्पुट जोरि सुनीशन आगे॥
नाथ कहौ यम केहि अपराधू। भये मनुज गुणवर अरु साधू॥
बोले मुनि राजाके आगे। गद्गद वचन रावके पागे॥
एकमण्डवी ऋषी सोहावन। कर बहुतप पवनमधि पावन॥
बहु सत कर चोरी कर लाये। तहँ बन मध्य मोर करि पाये॥
तहँ बन डारि सकल तबभागे। उनन्टप आपु उदय लखिजागे।
धन विहीन लखि रचक डांटे। तिनके चोप रह्यो नहि काटे॥
चरण चिह्न देखत ते दौरे। धन देख्यो देख्यो मुनि बौरे॥
धन लदाइ मुनि बूझन लागे। अरे चोर क्रोधहि अति पागे।
धरे मौनव्रत मुनि नहि बोले। धन सहायकरि गयो नृपतोले।
नृप देखत अति क्रोधहि पागे। कहिकटुवचन कहनअसलागे
सूली देहु चढ़ाय सुचोरहि। दिय चढ़ाइ तब मुनिवर ओरहि

सूलीपर बैठे ऋषै, धरे तत्त्वको ध्यान।
पाय सब ऋषि तबै, आये ऋषिके थान॥

खग मृग रूप न धार, आये मुनि बूझन लग्यो।
पाप कौन अस चारि, जो ऋषिवर अति कष्टहो॥
हरि इच्छा अस कहि दयो, सबसों मुनिवर गौन।
राय सुनत कीन्हों कुटै, आयो यमके भौन॥

हे यमराज कहौ केहि पापन। लख्यो घोरदुख सुनु सोइ दापन॥
कह यमराज सुनौ मुनि राजा। लख्योकष्टअतिसुनु सोइकाजा॥
हे पतङ्ग गुदवालो कीन्हो। तेहिकारण इतनो दुखलीन्हो॥
यहसुनि क्रोधित ह्वै ऋषिबोले। अग्निशिखामुखअग्निहि बोले॥
शूद्रसदृश तुव प्रकृति जनावत। शूद्रयोनि जन्मज तुम पावत॥
सुनि यमराज चरणगहि लीन्हों। ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हों॥
ह्वै शूद्र मुख भाषन कीन्हों। हरिके भक्त और सिखदीन्हों॥
पुनि यमराज होइ हो आई। आये मुनि कहि अतिसुखपाई॥
विदुर व्यास तप बलते राई। भैहैं शूद्र प्रथम मैं गाई॥
बोले जन्मेजय भूपाला। व्यास रच्यो नरवश सबबाला॥
बनमहँ देहत्यागि तिन्हकीन्हों। मायरतप यह चाहत चीन्हों॥
बोले मुनि तपबल ऋषिव्यासा। कीन्ह देखु अमरावतिवासा॥
मैं जानों नृप तुव मन ईछत। ताते आवत पिता परीछित॥
ताहि समय नभ गहगहबाजन। आवतदेखि विमानदिगाजत॥
किन्नर देव नृपति सँग आवत। बाजन बेणु अप्सरा गावत॥
नवल नारि नलनी कच राजन। कुचयुगकनकफूलमकुदाजन॥

चमकत मोतिन जोरि मुख, हँसत फँसत चित दून।
लाजत देखत जाहि रति, सति न रहत शुभ जून ॥
यहि विधि सुभग सुजान, आयो रथ बगमेलमें ।
मिले पतिहि दै यान, बार बार वन्दत उदित ॥

मिले देव किन्नर सब राजा। बाजे हरि तन आनँद बाजा ॥
मिले परीचितकहँ सब न्टपगण। नामगोत्रसुत सहपुरजनजन ॥
तब जन्मेजय द्विजन बोलाये। आशिष पाय प्रसन्न जनाये ॥
देव सकल पितु सह उठि ईछे। मज्जन करवायो सब पीछे ॥
द्विजन बोलि बहुदान दिवायो। ब्रह्मदेव सब रसन जवायो ॥
सिंहासनपर पूजा कीन्हों। चरणधोय चरणामृत लीन्हों ॥
सुभग सुगन्धित माला दीन्हो। शय्या दै आश्वासन कीन्हो ॥
तब पश्चिमलखिअस्तदिवाकर। द्विजभूपन मिलि मिलेपुतवर ॥
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे। चढ़े प्रथम पुनि मुनिकहँ वन्दे ॥

बाजे किंकिणि चारु ध्वनि, नाचन लागीनाद ।
जाइ पहूँच्यो इन्द्रपर, तनक न लागो बार ॥
तब जन्मेजय भूपवर, मुनि अस्तुति अनुरागि ।
सूत शौनकादिक कहत, निशाबीति सब जागि ॥

अरुणचड़ अरुणोदय लागत। श्रोता वक्ता भव जन जागत ॥
मज्जन करि आसन प्रति आये। जन्मेजय दमि अर्ज सुनाये ॥
कहो तात सत्र कथा सुहावन। पापनशनि समपुण्य बढ़ावन ॥
शत्रुनशनि मित्रनिसुखदानी। मलिनाशनि मुनिमहजिमिवानी

पलता कल्याय सुतासी । कुन्दकली लचखित कुन्दासी ॥
वनसी जीवात्मा वासी । परमतत्त्व परतत्त्व तमासी ॥

जीवन धनसी ईशसी, पीस सदृश गुणदाय ।
सो अब भाष्यो महामुनि, कलिजन पाप नशाय ॥

मुनिवर भाष्यो वैन, राजा सुनु धरि ध्यान यह ।
सब सुखको जो ऐन, पढ़त सुनत सुखनवल नित ॥

यकदिन राजा धर्म्म, भोर उठे श्रीकृष्ण कहि ।
कीन्हों नित कृतकर्म, बन्धुनसह राजत सभा ॥

हिसमय कलियुगसुधिआई । देह दशा धर्मज दुख पाई ॥
ह पारथ हरिपुर अब जैये । उत्तर चलौ कृष्णपहँ लैये ॥
ब पिताके हित ह्रत रहेऊ । ते सब गाय सविधिते कहेऊ ॥
ब रहिबो नहिं उचित सुभाई । ताते लावहु श्रीहरि जाई ॥
र्जुन सुनत सुभग रथ साजा । भीमहिं मिलेसबहिंपुनिराजा ॥

वेगवन्त अर्ज्जुन चले, जहाँ वसत भगवान ।
आश्रमवासिक पर्व्व कहि, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

आश्रमवासिकपर्व्व समाप्त ।

मुशलपर्व्व।

श्रीगिरिजा गणपति सुमिरि, वरणि भक्ति हनुमान।
मुशल पर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान॥
जन्मेजय मुनिसों जवन, भाष्यो मुनि शुभगाथ।
ताहि सुभग भाषा करौं, धरि शिर निज प्रभु पाथ॥

वन्दौं गुरु गोविन्दके पायन। जिन प्रसाद हूज सुखदायन।
सुमिरौ अवधनाथ सीतापति। नारद शारद सुमिरि महाम
सुमिरौंआदिकाव्यघटव्यासहि। जाकीसविधिभांतिमोहिंश्रा
ईश्वर रूप जानि जगतीको। सुमिरा राम आदि शिव नीव
संवत सत्तहसे शुभ तीशा। भाद्रमास सप्तमि रजनीशा॥
औरँगशाह दिलीपति नायक। सबलसिंह तब हरिगुणगायक॥
वशम्पायन कहत सुनाई। सुनहु सार्थ कुलवर नृपराई॥
जब धृतराष्ट्रादिक सज्ञानी। गै हरिपुर सह कुन्ती रानी॥

इत अर्ज्जुन गे द्वारकहि, कुशल हेत सुख पाय।
मार्ग मिले नारद सुमुनि, रथमों लियो चढ़ाय॥

विविधभांति भाषत शुभगाथा। जातचले अर्ज्जुन मुनि साथा॥
पहुँचे निकट द्वारका ग्रामा। मिले अमृतह्वौ श्रीबलरामा॥

अनिरुध सांबप्रद्युम्नसुआदी । औरौ चले देखि मिलनादी ॥
देखि पार्थ नारद मुनिराई । उतरे रथ मिलने हित धाई ॥
यदुवंशिन प्रणाम तब कीन्हो । नारदमुनि आशिष तब दीन्हो ॥
पग वन्दे पारथ हलधरके । हिये लगाय कहतहौं नीके ॥
जे घे कृष्ण पुत्र अरु नाती । बन्दे चरण मिले सब जाती ॥
कुशल प्रश्न इन उत सब पूछे । मिले सात्यकादिकछलछछे ॥
यहिविधिमिलत पार्थसुनिरामा । राजहिं मिलिगेजहँसुखधामा ॥
सम बन्दे तहँ मुनिवर ईछे । अर्ज्जुन कृष्ण मिलै तहँ पीछे ॥
अर्घ्यपाद्य मुनिवरकहँ दीन्हा । विधिवतपूतिसुआशिषलीन्हा ॥
लै अन्तःपुर गे मुनि पारथ । मिले पार्थ सब तियन यथारथ ॥
मुनिको सबन दण्डवत कीन्हा । मनभावतआशिषशुभलीन्हा ॥
पटरानिन सेवा मन दीन्हो । पार्थ कृष्ण मुनि भोजन कीन्हो ॥

भोजन करि बीरा लयो, सुभग सुगन्धित लेपि ।
तब सोये बर पार्थ भट, बूझेउ नारद सोपि ॥
आगम कहौ मुनीश, केहि कारण आवन भयो ।
कह नारद सुनि ईश, ब्रह्मा पठयो आपुपहँ ॥

मानुष उमिरि अधिक ह्वै गयऊ । अजहुँनआवनहरिकर भयऊ ॥
प्रभहर काल हरत नहिं आवत । यदुकुलकनहुँजीवनहिंजावन ॥
तब प्रसाद पितु मातु तुम्हारे । उग्रसेन आदिक जे टारे ॥
तेउ मरत न सुनहु कृपाला । ब्रह्मा है यहि हेत बिहाला ॥

कहति सृष्टि नइ नीति चलाई । केहिकारण मोहिं दोष बनाई
चतुर्मुखा केहि कारण भाषत । देवनमें सरिता करि राखत ।
हौं पुनि उनहीं केर बनावा । अन्त खोज प्रभु हमहुँ न पावा ।
तौ निज कर क्यों नाहिं बनावत । हमरे ऊपर दोष धरावत ।
व्रजमों गाय गोप उन कीन्हो । तब प्रथमै हम परचो लीन्हो ।
ताते अब यह उचित न तुमको । हँसव न उचित प्रतुमैं हमको
ताते कृपा करहु बनवारी । पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी ॥
औरौ कही बात करजोरी । कहँलौं कहौं अनुग्रह तोरी ॥
हँसिकह प्रभु भौ घोर नेवारा । तुम सर्वज्ञ मुनीश उदारा ॥
कह मुनि भार अथोर अपारा । यदुकुल मरिहि न काहुहि मारा
करिय नाथ अब कछुक उपाई । जाते नाथ लोक निज आई ॥
कह हरि गन्धारी सुत जूझे । तब अस पुनि सञ्जयसों बूझे ॥

श्री हरि पच्छी पाण्डुके, जयकी आशा छूटि ।
अन्ध दीन्ह मेरे लिये, शत सुत बिधने लूटि ॥
कहा कृष्ण सिरजै तबै, सुनु माता अस कौन ।
हारि यहां मेटन चहै, मनमानी किय जौन ॥
यह सुनि क्रोधा लुब्ध ह्वै, शाप गन्धारी दीन्ह ।
अबते छत्तिस वर्षमें, जो मोकहँ तुम कीन्ह ॥

करि असमत गन्धारी शापा । निजकुल हते सुनिजकर पापा ॥
कह मुनि द्विज सुशापते नाशा । गुणगावत मुनि चले अकाशा
ब्रह्मा पास कही जो हेरी । यदुकुल नाश आइहे फेरी ॥

हि विधि बीतिगये कछु काला। आगे सुनहु नृपति जो हाला॥
क दिन ब्रह्मा अति दुख पायो। अजहुँ न काशी श्रीप्रभु आयो॥
स मन समुझि देव ले साथा। गये द्वारकहि जंह ब्रजनाथा॥
रि परिक्रमा नाय करि शीशा। प्रस्तुति करत देव दिगईशा॥
हि पाहि शरणागतवत्सल। हे कृपालु पालन श्रीअत्सल॥
नानाथ देवकीनन्दन। मैं तुव शरण भक्त पालनजन॥
य गोविंद बासी वृन्दावन। जयति देव जय जगजन वन्दन॥
य जय जय माधव असुरारी। तारण तरण गौतमी नारी॥
शरथसुत जयजयजगपालक। जनकसुता बारनहरिबालक॥
रशुराम निज रूप सानिहर। वनहिं बासकिय नाशतिशिरखर॥
ग मारीच बधन सीता छल। वानरसङ्ग सहित हनुमतबल॥
तु बांधि रावणको मारो। अवधपुरी प्रभु भक्त उधारो॥
ंसादिक सब दुष्ट सँहारण। चलिये निजपुर श्रीजगतारण॥
प्रभु भक्तवछल बनवारी। हँसि तब मधुर गिरा उच्चारी॥
लव कछुक दिन में हे देवा। यह सुनि लगे जनावन सेवा॥

सुनि ब्रह्मा सहपुर सकल, गे प्रसन्न तब सर्व।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा मूशल पर्व॥

इति प्रथम अध्याय। १॥

———

गे निज धाम देव समुदाई। अब नृप कथा सुनहु जो गाई।
दूत सुपारहु सुत पारथ जागे। कृष्णचन्द्र सन बूझन लागे।
पठयो मोहिं युधिष्ठिर भूपा। जो प्रथमहिं प्रभु मन्त अरूपा।
द्रुतसों जाव चलन जब चहे। तब कुन्ती माता वश रहे॥
अब पौत्रहिं द राज्य सोहाई। जान चहत उत्तर नृपराई॥
चलन हेतु प्रभु तुमहूँ भाखा। चलहु नाथ अब काहे राखा॥
यह सुनि धर्मबन्धु की बानी। सुनु नृप बोले शारँग परनी॥

चलब कछुक दिनमें सुनहु, रहौ इतै कछु काल।
सुनु अस कहि राखत भये, श्रीप्रभु करिकै जाल॥

रहे बहुत दिन आदर लहिकै। अति मुद सहित वारता कहिकै॥
एकदिनहरि असकह्यो बिचारी। नाश होइ केहिविधिपरिवारी॥
ताहि समय नारद मुनि आये। हरि गुण गावत आदर पाये॥
तिनसों बूझेउ यदुकुल नायक। नाश यत्न भाषो जेहि लायक॥
नारदकह बिन शाप दिवाये। देखि न परत कि युद्ध मचाये॥
यह भाषत नारद सुनु राई। ताहिसमय ऋषि मुनि गण आई॥
आये व्यासशिष्य सब साथा। हमहुँ इतै सुनिये नर नाथा॥
शृङ्गीऋषि भृङ्गी मुनिनायक। देवल कपिल आदिसुखदायक॥
सनतकुमार सप्तऋषि राजा। दुर्वासाऋषि सहित समाजा॥
विश्वामित्र वसिष्ठादिक मुनि। अरु कौंडिन्य सुनौ भाषतगुनि॥

अरु भृगुनायक अङ्गिरा, पाराशरऋषिराय।
देखि कृष्ण आदिक सकल, परे पाँय सहुपाय॥

उग्रसेन सह कृष्ण, पायँ धोय भोजनदयो।
हलधर कीन्ह्यो प्रश्न, केहि कारण आगम सबन॥

ले मुनिवर व्याससुहावन। अशनदेहु इत कछुदिन पावन॥
ातुर्मास बर्षाऋतु पावन। देह अशन यहि हित सब आवन॥
ब इतै सबमुनि सुखदायक। करब सुतप जो आज्ञापायक॥
ह हलधर मम भाग्य अपारा। महा महामुनि जो पगुधारा॥
हो देवहम अशन सोहावन। टिकयो मुनिन्ह अपावन पावन॥
ित प्रति भोजन सुभग बनाई। बिलग मुनिन्हप्रति देतपठाई॥
ाहिविधिकछुकदिवसन्हपबीते। यकदिन सब शिकार हित रीते
ाद्युम्नादि साम्ब सुत नाती। लै आज्ञा हय चढ़ि सबभांती॥
ेलि शिकार मारि मृग रूरे। पुरहि पठाय चले मुद पूरे॥
ाये मुनिवर जेहि बनबासा। बैठे हैं जहँ ऋषि दुर्वासा॥
ोउकहमुनिभोजनहितं आये। मांगत भीख कतहुँ नहिंपाये॥
मलो पेट भरि इतै अहारा। परे ताहिते ये शठ द्वारा॥
कु नहिं जानत हैं मुनि कोई। जो विधि लिखा होतहै सोई॥

कोउ कहत सर्वज्ञ निधि, कृपा यत्न मुनिराज।
नृपन चाहियो दानशुभ, मुनिवरभोजनकाज॥
निन्दो मति सबकोय, इनको मानतकृष्णबल।
जो विश्वास न होय, कत न परीक्षा लेहु तुम॥

रत ग्राम को दूत पठायो। मूशल काढ़ि एक लै आयो॥
यो सुरा सब यादव बालक। भयेमस्त हरि इच्छासा पक॥

बांधिसाम्बहिय काढ़ि सुहावन । मूशल राखि मध्य हियरावन।
सुभग नारि गर्भिणी बनाई । केश सूल गहना पहिराई ॥
गेन्दनके तहँवा कुच कीन्हे । सेन्दुर दे शिर बेन्दी दीन्हे ॥
बिछुवा आदि अभूषण जेते । कहँ लौं कहौं किये सब तेते ॥
जाय बन्दि मुनिवर दुर्वासा । बैठि वचन अस कीन्ह प्रकासा॥
हे मुनिवर सर्वज्ञ निधाना । पुत्री पुत्र जात नहिं जाना ॥
जो कृपालु ह्व तुरत बतावो । अतिशुभसुयश जगतमहँपावो ॥
ध्यान धरो मुनिवर तहँ देखे । छल समुझो कछु और न देखे॥
क्रोधित मुनिवर बोले बैना । सुत सुख देख्यो यह कुलनैना ॥

बोले मुनिवर क्रोधकरि, होय सत्य यहबैन !
याही सुतके होतही, मरै कृष्ण सह सैन ॥
सकुल संहरिहैं सर्व, जिन टिकाय अपमान किय ।
अस सुनिये नृप पर्व, मरै रुक्मिणी जवन सिय ॥

यह सुनि सकलभभरि तबभागे । मनहुँ सिंह कोउ सोवत जागे
मुनिहि सकोप बकत बहु बैना । दूत आये सब निजनिज ऐना
सकल बात सब काहु न पावा । जुरि समाज सब नृपपहँ आवा
सुनत कृष्ण अति भये प्रसन्या । उग्रसेन सह शोचित अन्या ॥
शोचत वसुदेव अरु बलरामा । बारबार कहि शिवहरि नामा ॥
तब नृप मन्त्री ज्ञाति बोलाये । उद्धव सात्यकादि सब आये ॥
शोच समत करि यह ठहराये । बोलि लोहार सहस्रन आये ॥

ाल काढ़ि छोरि तब लयेऊ । चूरन करि समुद्रमहँ वहेऊ ॥
ते भयो सु खर उत्पन्या । औरौ सुनौ कछुक न्टप अन्या ॥
ऽ चूर जो लोह बहायो । शापसत्य हित मीन सु खायो ॥
नहि ताहि पकरिकै लावा । बालि नाम धीमर जो आवा ॥
रेउ हृदय निकारेउ लोहा । तीक्ष्ण धार थोथमहँ सोहा ॥

सुनु न्टप भावी मिटै कस, अरु श्रीकृष्णप्रताप ।
जो न चहत श्रीकृष्ण प्रभु, करत कोटि कह शाप ॥

कु दिन बीतिगये यहि भांती । आनँदजात दिवस अरु राती ॥
प्रभु कृष्ण वृत्ति असजागी । द्वारावती शाप नहिं लागी ॥
समनसमुझि वृत्तिभगवाना । चहहुँ प्रभासकरिय असनाना ॥
हसुनि सकलबुलाय सुबासी । भोर चलनकह आनँदरासी ॥
हसुनि उद्धव हरिपहँ आये । नमस्कार करि अस्तुतिगाये ॥
नि रोवन लागे हाहा कहि । कब म रहौं नाथ दुख यहसहि ॥
ब मनसें हो निजपुर जैहो । नाथ लौटि नहि द्वारहि ऐहो ॥
ातें रहो जहां हम पैये । जोमन चहो नाथ सो हैये ॥

कहौ नाथ का करिय हम, जाते होहुं सनाथ ।
अस कहि लागे रुदन तब, धरेउ चरणपर माथ ॥
भाष्यो श्रीप्रभु बैन, करत शोच तुमहो कहा ।
धरि पद निज हिय ऐन, करौ जाय तप वद्रिका ॥

ह देखतहो जोन सकल जग । सो जानहु सबजाहि एकमग ॥
हस गज द्रव्य पुत्र अरु दारा । सो सब जानु झूठ व्यवहारा ॥

मरणकाल कोउ काम न आवत। कवि कोविद म स
मम नाभीते कमल भयोजब। ताते ब्रह्मा भयो सुनहु तब॥
ताते भई सृष्टि विस्तारा। मैंहूं धरेउँ बहुत अवतारा॥
चारि वेद श्वासनते गाये। मुखते द्विज भुज चत्रिय जाये॥
वैश्य जानु पद शूद्र बनावा। याहीमें सब जग बिलमावा॥
तब श्रीकृष्ण कृपा अति कीन्हे। ब्रह्म देखाय दुःख हरिलीन्हे
औ यह कह्यो सुनो उद्धव तुम। अब तुम जाउ बद्रिकाको गुम
नाश होन चाहत अब द्वारा। किहेउ दिवसप्रतिभजनहमारा
वृत्त योनिते मनुज होत जब। सुमिरण मेरो उचितसुनहु तब
सुनि उद्धव तब शीश नवायो। परिक्रमा करि तुरत सिधायो
इत यदुवंशी भोर भये जब। चले प्रभास कालप्रेरित तब॥
सजि सजि साज चले सब कोई। पुरजन कृष्णसहित बलजो

कहँलगि कहिये सुनहुन्टप, चले सहित यदुनाथ।
सात्यकि कृतवर्मा सहित, यदुजन पुरजन साथ॥
उग्रसेन बसुदेव बिन, रह्यो न कोइ पुरमाहिं।
अर्जुन राख्यो कृष्णप्रभु, सुखद सु गहिके बाहिं॥
उद्धव ज्ञान बुझाय, बद्रीदिशि भेजेउ तिन्हैं।
उद्धव दुःख नशाय, ब्रह्म मिले करि नेह वर॥

पारब राखि नगर रखवारी। आपु चलन हित कीन्हतयारी
दारुक अरु पारथसों कहेऊ। आयो कालहि नारिसह रहेऊ

सब प्रभाचेल सुख पाई । तहँ नारद मुनि बीणा बजाई ॥
(ना)रद आयसु दीन कृपाला । जाहु नगर द्वारकहि विशाला ॥
(सि)खवो तात मातु न्टपजाई । मोह-मूलको शूल नशाई ॥
(त)हँ नारद अस ज्ञान सिखावत । भूमि अकाशहि निजदरशावत ॥

वृक्षयोनिते मनुज तनु, पायो पुनि हरिपूत ।
ताते अजहुँ न सुमिरियो, होन चहतहौ भूत ॥
पारब्रह्म हरिसुत लयो, पूर्व भाग्य मुनिराज ।
भक्ति मुक्ति मांगी नहीं, अब आवतिहै लाज ॥
मुनि बोले इति बैन, तुवहित हेतहि कहतहम ।
यक इतिहास गुने न, नौयोगीश्वर जनकको ॥

(न)ौयोगीश ऋषभ सुत आये । जनक देखिकै शीश नवाये ॥
(प)ाद्यासन कीन्हेउ बहुभांती । सिंहासन दीन्हो मन माती ॥
(कृ)पा कीन्ह मम भाग्य अपारा । ऋषभदेव सुत जो पगधारा ॥
जैसे कियो पवित्रमोहिं चरणन । तैसे पूछत करिये बरणन ॥
तब बोले योगी वर बैना । निज इच्छित तुम पूछत हैना ॥
कहा जनक कर सम्पुट करिकै । कौन वस्तु इस्थिर विनभरिक ॥
जो यह धन इस्त्री अरु बालक । आज्ञा करिकै ध्रवकुलपालक ॥
तातें मुनि कछु इस्थिर नाहीं । धनदकुशासन सब मरिजाहीं ॥
ताते शोक होत है भारी । है इस्थिर को कहौ विचारी ॥
जाम घट न बढ़ै कछु ऐसौ । इस्थिर नाम न कहिये तैसौ ॥

बोले कश्यप नामक योगी। प्रथमभयो हरिहर यश भोगी॥
बहुसुखप्राप्त उन्हें मिथिलेशा। जे हरिभक्तिते त्यागि अँदेशा

भक्त सदा आनंद रहत, त्याग जगतको मोह।
बात बात में हरि कथा, काहू सौं नहिं द्रोह॥

पुत्र दार धन सब परिवारा। भाग्यमान जिमि अलवकरारा॥
जे लपटे पुत्रादिक नेहा। ते जब मरे बिकल सन्देहा॥
ताते नाश वस्तु है जोई। अलग रहै सुख पैहै सोई॥
हरि नरतन यहि हेतु धरतहैं। गाय जाहि नर नारि तरत हैं॥
जो मन लाग एकधा नाहीं। थोरा थोरा कीजिय ताहीं॥
जिमि भूखा जन ज्यों ज्यों खैहै। त्यों त्यों तृप्त तासुके ऐहै॥
जोकोउमगनितप्रतिचलिहैंनर। एक दिवस वो जाहिं पहुँचिवा
जो न चलै वह पहुँचौ कैसे। हे मिथिलेश भक्ति है तैसे॥
माया थोरी थोरी छूटै। भक्ति थोरही थोरी जूटै॥

पारब्रह्म जो एक है, आद्यो ब्रह्म स्वरूप।
सोई तौ थिरता सुनौ, और झूठ है भूप॥
योगी कहि भे मौन, कर जोरेकह जनक तब।
कहिये तप मित भौन, भक्तिरूप किमि होतहै॥

तब हरिनाम दूसरो भाई। सुनु नृप कहत सुलक्षणगाई॥
कबहुँ हँसत जब होइ प्रसन्नित। कबहुँ रोष लक्षण उनके द्रत॥
हँसन हेतु यह सुनहु बिदेहा। करत भक्ति पर तुम हरि नेहा॥

रते सगुण गाय जाते जन । भवसागर तरिजाहिं जौनवन ॥
ाय ध्यानधरि तरियवु जाते । ये लक्षण हंसने मन माते ॥
ाधन कर लक्षण यहि काजन । सो अब सुनहु कहतमैं राजन ॥
ायु हमारी बीती भारी । फँसो रहो ममता अवतारी ॥
ानु हरि भक्ति बीति गै सोई । हे जनकेश देत वय रोई ॥
ाक्ति और सुनु तीन प्रकारा । उत्तम मध्यम और नकारा ॥
ाकल चराचर देखिय जौने । चौरासी लक्षित न्टप तौने ॥
ाक सों लखत ब्रह्म सब माहीं । हैं लक्षण ये उत्तम आहीं ॥
ाधु सङ्गति सतपथ चलिये । हैं ये लक्षण मध्यम पलिये ॥
ानिये तेज बराबरि सबमें । नहिं समुझात विदेह वे जगमें ॥
ाव निकृष्ट लक्षण ये सुनिये । माया मोह फँसे हैं दुनिये ॥
ाहू पहर असमरण पूजा । ते करि लेहि निकृष्टित मूजा ॥

जबलगि तृष्णा नहिं छुटत, तो लगि नहिन विरक्त ।
दूसर योगीश्वर कहे, तब लगि विषयासक्त ॥
तीनि प्रकारित भक्तिके, सुनु लक्षण मिथिलेश ।
हाथ जोरि पूछन लगे, मेटहु नाथ कलेश ॥
माया जाको नाम, नारायणमें लीन है ।
को है विलग अकाम, तौन नाथ वर्णन करौ ॥

ान्तरिक्ष जो तीसर योगी । सुनिये न्टपति रामयश भोगी ॥
ाया हरिकी देहा जानो । ताको त्रिगुण रूप है मानो ॥

सात्विक राजस तामस जोई। मारण उत्पति पालन सोई॥
बिनु हरि माया कर भ्रमजाला। काम क्रोध मद लोभ कराला॥
नाहिन छूटि सकत कोउ राजा। चहिये करिबो उत्तम काजा॥
महाप्रलय ऊपर हरि रचना। चाहत जबहिं सुनहु नृपबचना॥
तब मायाकी ओरहि देखत। माया महातत्त्व को पेखत॥
महत्तत्त्व सब उत्पति करिकै। सब जग देत बराबरि भरिकै॥

नाशकरन चाहत जबहिं, मूशलधारा वर्षि।
सुनो करत माया सहित, पारब्रह्म तहँ हर्षि॥
तेहिते हरि ईहा सुनो, मायाकर व्यवहार।
समुझ बहुरि को उचित है, सुनुजनकेशउदार॥

जो माया हरि ईहा कहिये। संसारी किमि उतरन चहिये॥
मायाते छूटै किमि योगिनि। तुमहौ वैद्य बताइ अरोगिनि॥
पर बुधि नाम चौथ है जौने। जब जान्यो हरि ईहा तौने॥
माया हरि इच्छा जब जानौ। तब हरि ईहा एकै मानौ॥
हरि परिक्रमा करै नर जोई। पावै सफल अफल नहिं होई॥

ब्राह्मण लक्षणसहितहै, ब्राह्मणको मति पौन।
नहिं सो ब्राह्मण शूद्रसम, ताहि कहत मतिहीन॥
ऐसो जानौ जनक नृप, चारि वर्णकी चाल।
पारब्रह्मको जानिबो, नातरु सोई काल॥
पारब्रह्म जानो जिन्हैं, सो पायों मो लीन्ह।
नातरु है सब अन्यथा, जन्म विधाता कीन्ह॥

बोले जनकराय कर जोरी। को अस विना हृदय जो होरी॥
कौन जीव सोवत हैं नाहीं। जल थल नभ अकाशके माहीं॥
बोले पञ्चम योगी बैना। हृदय तात पत्थरके हैं ना॥
सोवत मीन सुनो न्टप नाहीं। और सकल श्रमवश ह्वै जाहीं॥

जगमें गरुआ कौन अति, अति ऊंचोहै कौन।
बोले षष्टम योगिवर, अति वरबुधिको भोन॥
मेरौ गिरिते गरुहै, मात सुनो न्टप बात।
आसमानते ऊंचअति, जानो है निज तात॥
कैसे मन नहिं लाग, विषयामें मन सबनकर।
बोलेउ मुनि अनुराग, सप्तम सुखद सोहावनो॥

जैसे कृपा कृष्णकी होई। मन लागे हरि यह गुनु सोई॥
जेते रोवां जानौ तन में। तेते रोकन हारे जनमें॥
पाप पुण्य कछु जगमें नाहीं। कर्म्म भोगवत है सब याहीं॥
बोले तब जनकेश उदारा। काके बीज जगत विस्तारा॥
कह मुनि पारब्रह्म को जानौ। बीज कौन काको को मानौ॥
परदादाके दादा जाये। दादाके पितु निज तव भाये॥
ताके सुत यह देह भई सुनु। को ताको अस मकै भृप गुनु॥

कहेउ जनक यह बात, कहौ कर्म्मव्यवहार अब।
कह मुनि सुनु न्टप तात, कर्म्मआदि व्यवहार सब॥
कहौ पूर्व निष्ठा द्विधा, ज्ञान योग सन्धार।
साखिन कह योगीनकह, कर्म्मयोग व्यवहार॥

अनारम्भ के कर्मते, होत न नर निष्कर्म्म।
सर्व त्यागसङ्कल्पते, मिलत न सिद्ध सुधर्म्म॥
मनसा इन्द्रिन रोकि जे, करत न तत्त्वविचार।
रहत लगाये बिषय में, मनसो मिथ्याचार॥
अस कहिकै योगी सकल, गये ब्रह्मपुर ओर।
पीछे नारद मुनिगये, सकल मुनिनशिरमौर॥

अब नृप सुनहु कथा मन लाई। वहां टिके यदु यदुकुलराई
गडे वितान अमोलिक लाखन। राखन लगे सूरप्रभु माखन
वस्तु अमोलिक भांतिन केरी। बाजहिं ठौर ठौर प्रति भेरी॥
सेना देखि लगत भय हियमें। तबहि विचारे श्रीप्रभु जियमें
सबते कहेउ चलिय अस्नाना। करि अस्नान कीन्ह सबजाना

प्रभासक्षेत्र अस्नान करि, निशिहि टिकेउ यदुवंश।
उत सुदेव मिलि सुनु नृपति,। खैंच्यो निज निजअंश

हलधर सह पुनि होत विहाना। सुरापान करि गे अस्नाना।
भे मदमत्त उछाड़ैं कूदैं। और हनैं पुनि आंखी मूंदैं॥
देहिं परस्पर गारि प्रचारी। नाहीं हँसहिं देहिं करतारी॥
पितु सुत नहि घरनी हो वारा। लाजहीन लपटहिं अनुदार
लटपटाहिं धरणीहै गिरहीं। भाजत लड़हिं दौरितेहिधरहीं
करहिंजलहि अस्नान सोहावन। आपुवीरदल लागो आवन
नपुनि जलउछालसबकरहीं। डण्ड ठोंकि पितुसुतसों भि

एक पकरि बोरहिं जल माहीं । बूड़हिं रोवहिं छांडहिं नाहीं ॥
एकहि डारि सुजलके माहीं । चढ़हिं सहस्र सहस्रन ताहीं ॥
उत सात्यकि कृतवर्म्मा जूटे । भिरहिं प्रचारि केश शिरछूटे ॥

लरहिं भिरहिं यहि विधि सुनहु, रहो न काहू ध्यान ।
शापवश्य राजा सुनो, को सुत को पितु आन ॥
जल उछालकरि वीर, आये निज निज पक्ष लखि ।
जहँसात्यकि कृतधीर, ह्वै समाज उमहत दोऊ ॥

तब सात्यकि कृतवर्म्म बखाना । भागेसि शठ नत काल निराना ।
मग सहाय पाण्डव रण जीते । मारे दुर्योधन भट रीते ॥
सो मैं शतु आउँ कत तेरे । भागि बचो नहि हनत सबेरे ॥
ताते अजहुँ मानु शठ बानी । नत अब होन चहत कुलहानी ॥
कह छत्र होत अधम केहि धोखे । निज कर बधब हनब शर चोखे
मानि कृष्ण प्रभुकेरि रजाई । नत मारत वहु पांडव राई ॥
अजहूं सात्यकि जीह सँभारो । नत अब शरण देन शिरमारो ॥
सुनिसात्यकिकोपितह्वै मनमों । मानहुँजीति चले रणि रणमों ॥
अरे अधम सात्यकि कहेउ, सोवतते बहु मारि ।
सन्नहजित पाण्डवसुवन, अजहुँ वकत बश हारि ॥
तब सात्यकि भटयुद्ध, पारथ गुरुको ध्यानधरि ।
लै हथ्यार हित युद्ध, तदपि मध्यआवत भयो ॥
तब हन वह अति कोपित नैना । शठ धर्मानिस देख्यो नैना ॥

भूरिश्रवा हनि डारन चहेऊ। ताहि समय वरपारथ रहेऊ।
भुजाकाटि तब हत तुम कीन्हा। यह धर्म्मातम तब हम चीन्हा
असकहि सहपच्छी वर बीरा। लै हथ्यार आयो तेहि तीरा।
सात्यकि पच्छ सहित लै हाथा। वज्रनाभि भजिगो तजि साथा
जायबचो अनिरुध सुतभागी। शापवश्य लागी तब आगी।
तब सात्यकि प्रचारि निजपच्छी। कतल करि सेनानिज अच्छी
वाक्य वादि करिकरि उतकर्षा। लागे करन मूलशर वर्षा॥
चहुँ दिशि बाणगदाअसिधारा। भिरेबीर करिक्रोध अपारा।
तदपि न जूझो कोउ बरबीरा। टूटिगिरे हथियार व तीरा।
तब सब समुदफेन खर लीन्हा। ताते मारु भयानक कीन्हा।
सुरामस्त भटजूझैंगिरिगिरि। उलटिपलटिलपटैंपुनिभिरिभिरि
भाजत लखहिं प्रचारहिं फेरी। मारहिं सुभटफेनु तेहिघेरी।

शापकृष्ण मंसा प्रबल, अबला मनुष्य उपाउ।
जे गदादि जूझे नहीं, ते जूझे खर घाउ॥
जूझि गिरे बहुबीर, जे रहिगे प्रभुपहँ चले।
योगाभ्यास गँभीर, तनु त्याग्यो जे सहसबर॥

कृष्णाचन्द्र तब भागि पवांरे। रहे जीनते युद्ध विचारे॥
मरे जूझि एकानहिं वाचे। मन क्रम रहे शूर सब सांचे।
इत तहँ श्रीप्रभु कृपानिधाना। बैठे पीपल वृक्ष सुजाना॥
बैठि कीन्ह शुभ आसन। लीला कीन्हसुभगहितदासन।

धरे जानुपर चरण कृपाला । ताहि समय आयो बहुकाला ॥
जान्यो नयन मृगाकरि सोहत । लैकै धनुष बाण मन मोहत ।
बालिनाम वानर त्रेता कर । धीमर रूप छांड़ि दीन्होभर ॥
चरणमध्य चमकत तहँ जानौ । आयो लेन शिकार गिल्यानौ
देखि कृपालु कृष्ण भगवाना । वन्दि चरण तब ऐंच्यो बाना ॥
कह कृपाल बदला तुम लीन्हो । रथहि चढ़ाय परमपद दीन्हो
उत अर्ज्जुन सब रथहि चढ़ाई । रानिन सबहिन लीन्ह चढ़ाई
दारुक पास कहो अस बाता । लै रथ जाहु अ[illegible] तुम ताता ॥
पाछ हम आवत सह नारिन । जाते होइ न श्रम कंसारिन ॥
दारुक हांकि सुभगरथगयऊ । उतरिरथहिहरिचरणननयऊ ॥
उतरत दारुकके नरपाला । हय समेतरथउड़िगोहाला ॥
यह लखि दारुक विस्मय पावा । सब चरित्र तब कृष्णाय तावा
यह सुनि सूत परेउ गिरि धरणी । तवहरि कहो दुःखको हरणी
तुम धरिध्यान त्यागु तनुजाई । अर्ज्जुन पास कहेउ अस जाई ॥
कछुक दिवस में बुड़िहै ग्रामा । कहेउजांइलै निजनिज सामा

गीता ज्ञानहि राखि हिय, जाय बद्रिकाधाम ।
अब आयो कलियुग प्रबल, इतै न रहिबो काम ॥
ऐसे कहते कहत हरि, गहगह हने निशान ।
चले ब्रह्मपुर आपुप्रभु, किंकिणिनादविमान ॥
यहि विधि कृष्ण कृपाल, गये धाम निज निज सुनहु ।
दारुक गयो हताल, अर्ज्जुन सो सब यों कहेउ ॥

सुनि अर्ज्जुन सह यदुकुल नारी । रोवहिं गिरहिंमुर्च्छि सुकुमारी
दारुक जाय कतहुँ तनुत्यागा । तब सबहिनकर मुर्च्छा जागा।
सह नारिन गै जहँ रणपावन । देखि भूमिगो को कत आवन।
पटरानी अरु यदुकुल नारी । अति दुख बूड़ि मरीं कछु बारी।
कछुक चिता रचि धरिसुतनाती । पतिसह जरतभई सब जाती
गईसकलमिलिनिजनिजअंशन । अनिरुधसुतबिनरहेउ न वंशन
इत अर्ज्जुन पुनि धीरज धारा । बज्रनाभ सहगे न्रपद्वारा ॥
पढ़ै सुनै जो कथा सुहावन । वंश वृद्धि होवै अति पावन ॥

पाप नशै कीरति बढ़ै, व्यास गिरा परमान ।
भणित पर्व मूशल कथा, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

इति मुशलपर्व्व समाप्त ।

स्वर्गारोहण पर्व।

प्रथमहिं गुरुके चरण शुभ, सुमिरौं शीश नवाइ।
जाकी कृपा कटाक्षते, सकल विघ्न मिटि जाइ॥
महादेव पदकंज पुनि, सुमिरों दोउ कर जोरि।
जो अभिलाषा बढ़ी मन, सो पुरवो प्रभु मोरि॥
गिरीशक्ति मैं विनवौं तोहीं। माता पार लगावो मोहीं॥
हरिलीला वरणौं मन लाई। सो तुम अक्षर देहु मिलाई॥
महावीर सुमिरौं सबलायक। भयभंजन मनवांछितदायक॥
अगणित विघ्नहरण हनुमाना। सो भरोस मैं मन अनुमाना॥
दिहिनि मोहिं मन प्रभुउपदेशू। सो कहिहौं हिय सुमिरि गणेशू।
कहौं हृदय गुरुको धरिध्याना। तेहिते पावों निर्मल ज्ञाना॥
अगहन मास पुनीत सुहावा। बुधवासर हरिनिधि शुभ पावा॥
संवत सत्रहसै इक्यासी। ताहि समय हरिक्या प्रकासी।

हरिको रूप सकल जग जामा। करि सबहिनकहँ दंडप्रणामा।
द्रुम स्वरूप एक ईश बखानौ। तीनि लोक सो शाखा जानौ।
चारिहु युग सो पत्तसमाना। शुभ अरु अशुभ युगलफलजाना।
सबलसिंह कर जोरि युग, सब सन्तन शिरनाइ।
अस्तुति करत गणेशको, अच्चर देहु मिलाइ॥
सोमवंश हस्तिनपुर राजा। नृपति युधिष्ठिर तहाँ विराजा॥
कीन्हेउ महभारत अतिभारी। गुरु औ बन्धु सखा सबमारी॥
दुर्योधनको जीति भुवारा। पाछे कीन्हेउ यज्ञ पसारा॥
शिरीकृष्णकी आज्ञा पाई। कीन्ह यज्ञ कछु वरणि न जाई॥
राज कीन्ह बहु काल सोहाई। पाछे नृपके मन अस आई॥
गोतघात कीन्हें बहुतेरा। कस होई भवसिन्धु निबेरा॥
व्यासदेव सों द्वै कर जोरी। सुनौ नाथ अब विनती मोरी॥
जेहि प्रकार हरिलोकहि जाई। सो प्रसङ्ग प्रभु कहो बुझाई॥
तब ऋषि व्यास विचारकरि, बोले वचन विनीत।
जाय हिमालय गलो तुम, तब तनु होय पुनीत॥
जो हिवार तनु त्याग कोई। मन वांछित फल पावै सोई॥
कोटि जन्मके पाप कमाये। गलत हिवार पार तिनपाये॥
व्यास कहान्टप सुनु इतिहासा। जो सुनु होय सकल भ्रमनास
एक ग्राम इक पण्डित रहई। नितउठि एक नृपतिके जहई॥
श्रीभागवत सो जाय सुनावै। दच्छिणा लै अपने घरआवै॥
दिवस तेहि मारगमाहीं। मिला नाग तेहि पण्डितकाहीं

रखानो बोल्यो शिरनाई। पण्डित दीनदयाल गोसाई॥
तुमहि भागवत आजु सुनावो। हरिलीला अमृत रसगावो॥

नागवचन सुनि पण्डित, मनमहँ कीन्ह विचार।
हरिलीलापर प्रीतिलखि, तब कीन्हों उच्चार॥

अध्यायक तब पण्डित बाँचा। मनक्रमवचनताहिलखिसांचा॥
कथासुनाय बिदा जब भयऊ। इक मोहर तेहि दच्छिणादयऊ॥
विप्रहि बहुरि कहेउ शिरनाई। यकाध्याय मोहि नित्तसुनाई॥
गयो विप्र तब अपने ग्रामा। रहेउ नाग सो अपने धामा॥
नित उठि विप्र भूप घरजाई। श्रीमत कहै न्टपहि समुझाई॥
फिरती बार नाग गृहआवै। यकाध्याय नित ताहिसुनावै॥
एक अशरफी सो नित देई। पण्डित महा मगन ह्वै लेई॥
कछुक दिवस यहि विधिगैबीती। पण्डित नागकेरि शुभरीती॥
सुनत कथा भा ज्ञान अपारा। नाग सुमिरि मिथ्या संसारा॥

पण्डितसों शिरनायकै, नाग कहेउ मृदुवयन॥
वचन एक मैं माँगहूँ, मोहिं देहु गुणअयन॥

एवमस्तु तब पण्डित कहेऊ। जो तुम कहो तौन मैं दयेऊ॥
नाग कहेउ विप्रहि समुझाई। बद्रिकआश्रम चलौं गोसाईं॥
शिएल अशरफी मोरे धामा। सो लै जाहु नाथ निजग्रामा॥
सकल अशरफीतब द्विजलिन्हा। लैकै नाग गमन तब कीन्हा॥
कछुकदिवसमहँ तहँ चलि आये। बद्रीपति जहँ धाम सुहाये॥

जाय शम्भुके दरशन कीन्हा। तबसो नाग उतर फिरिदीन्हा॥
निकट हेवारेकहँ अब चलहू। जो मैं कहौं तौन तुम करहू॥
विप्र निकट तब गयो तुरंता। नाग सुमिरि तब लक्ष्मीकन्ता॥
कह्यो विप्रसन सुनहु गोसाई। मोहिं शीतमहँ देहु चलाई॥
विप्र चलायो नागकहँ, गिरो हिवारे जाइ।
विप्र चल्यो घर आपने, हँस्यो नाग ठठ्ठाइ॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

तबफिरि विप्र उतर असदीन्हा। जो तुम हँस्यो चहहुसो चीन्हा॥
तिन तब कह्यो सुनहु द्विजराई। हँसके भेद मिलै इक ठाईं॥
काशीपुरी शंभु अस्थाना। तहँके राजा परमसुजाना॥
तेहिते जाइ पूछि तुम लेहू। अनते जाइ कह्यो जनि केहू॥
तबहिं तुरत द्विज गमनत भयऊ। कछुक दिवसमहँकाशिहिगयऊ॥
पुरी मनोहर देखत रहई। दरशन करत सकल अघ दहई॥
तुरतहि चल्यो शंभु दरबारा। प्रदच्छिणा दै विप्र उदारा॥
उठि तब चलेउ भूपदरबारा। करि प्रणाम राजा बैठारा॥
प्रथम कथा द्विज कह्यो बुझाई। सुनौ नृपति यह चरित सुहाई॥
नाग हिवारे जेहिविधि गयऊ। हँसके भेद जौन कछु रहेऊ॥
सो वह भेद बतावहु, सुनौ भूप रणधीर।
तब मैं निजगृह जाइहौं, मिटै हृदयकी पीर॥

तब नृप कह्यो सुनहु द्विजराई । वैष्णव तीन रहैं इक ठाईं ॥
महि प्रदक्षिणा करत सोहाये । फिरत फिरत आश्रम इक आये॥
करत प्रसाद रहैं इक तीरा । तीनिउ जने ज्ञान मतिधीरा ॥
तहँवां एक श्वान चलिआवा । तेहिका दे तिन भोजन पावा ॥
भोजनकरि वै चलिभै आछे । श्वान चला तब तिनके पाछे ॥
तब तिन कह्यो ताहि समुझाई । हम निर्वाह सुनोरे भाई ॥
जन्मभूमि यह होय तुम्हारी । रहो श्वान अस हृदय विचारी ॥
तब वह कहै लाग अस बूझौ । मोकहँ परत यहै अब सूझौ ॥
जहां मिलै मम उदर अहारा । सोई है निजधाम हमारा ॥
यह कहि चलेउ तासु सँग सोई । नित तिनके सँग भोजन होई ॥
यहि बिधि महि प्रदक्षिण दयऊ । तीनिउ जने हिवारे गयऊ ॥
पाछे श्वानलागि तहँ गयऊ । तीनिउ जने अमरपद लयऊ ॥

कुत्ताकेरे श्रवणमहँ, रहे किलना दुइ लाग ।
कुत्ता गलेउ हेवारमहँ, तिनहुं कीन्ह तनुत्याग ॥

तहँ हिवारे के प्रभुताई । किलना दोऊ नृप भे आई ।
जगन्नाथपुर एक विराजा । यक मकसुदाबाद के राजा ॥
सो होंइ वह श्वान सुहावा । कार्णाएरी नचिर मे पावा ॥
तिन्ह नाम हँसा अस जानी । ब्राह्मण रहे बडे विज्ञानी ॥
वै छवि आइ तनु त्यागी । तीटयो विप्र कौन मम लागी ॥
[illegible] हँसा सुनहु द्विजराई । मैं [illegible] निज [illegible] गाई ॥

यह इतिहास व्यास अस कहेऊ। सबलसिह संक्षेपहि लहेऊ
सुनौ युधिष्ठिर अस मनजानौ। गलौ हिवारे मन क्रम वानौ
यह सुनि तब सहदेव विचारा। कह्यो भूप सुनु कहा हमारा
जो गुरु कह्यो सत्यासो वानौ। चलौ जहां हैं शारँगपानौ॥
यदुनायक सों आज्ञा मांगौ। चलौ हिवारेमहँ तनु त्यागौ।
तुरत व्याससों आज्ञा लीन्हा। द्वारावती गमन नृप कीन्हा
अर्ज्जुन जाय तुरत रथ साजा। तेहिपर चढ़्यो युधिष्टिर राजा
अतिशोभित रथ वरणि न जाई। किङ्किणिध्वनिसुनिदेवसिहा

पांचौभाई चढ़े तब, श्रीगुरुचरण मनाय।
सिन्धु तीर द्वारावती, तहां पहूँचे जाय॥

द्वारावती निकट नृप गयऊ। तब रथत्यागि पियादे भयऊ॥
जहँ श्रीकृष्ण बिराजहि धामा। तहँ नृप कीन्ह्यो दण्ड प्रणाम
धर्म्मतनय संपुट करि हाथा। अस्तुति करत नमाइहि माथा

नमामि शैलधारणं। अनेक गोपतारणं॥
सुरेशमान मर्द्दनं। नमामि श्रीजनार्द्दनं॥
नमामि कंसमर्द्दनं। चणूर गर्व गञ्जनं॥
गयन्दप्राण रञ्जनं। गिराह गर्व भञ्जनं॥
प्रह्लाद प्राणरक्षकं। सुरारि दुष्ट भक्षकं॥
समुद्रपुत्रिनायकं। गजेन्द्र सुःख दायकं॥
महीश कष्ट टारणं। फणीश मान मारणं॥
सुमच्छ कच्छवपुधरो। सवंश शङ्ख मधुहरो॥

वराह रूप धारि कर। मही लई उबार कर॥
स्वरूप धारि नरहरी। सुजन प्रह्लाद जयकरी॥
नमामि रूपवामनं। ब्रह्माण्डकीन्ह पावनं॥
नमामि गरुड़वाहनं। भजन्तकामदाहनं॥
नमामि चक्रधारणं। सुधेनुदुःख हारणं॥
सुरेन्द्र मान भञ्जनं। अपार दुष्ट गञ्जनं॥
सदैव भक्त कारणं। अनन्त रूप धारणं॥
मुकुन्द जगतपालकं। गोविन्ददनुजघालकं॥
सुक्षीर सिन्धुशायनं। सुसर्व यश गुणायनं॥
नमामि शरण आयहौं। व्रजेन्द्र दरश पायहौं॥
यहि विधि अस्तुति कीन्ह, पाणिजोरिकै धर्म्मसुत।
कृष्ण अङ्कभरिलीन्ह, करिदाया बहुविधिमिलेउ॥
सबलसिह तजि मोह, जो सुमिरै हरिनामवर।
सोई नर अति सोह, जन्म जन्म सुख पावही॥
बैठ तुरत नृपहि बैठारी। बोले वचन सन्त भयहारी॥
कहौ कुशल नृप हमहि सुनाई। हस्तिनपुर कै सब कुशलाई॥
आयो सकल भाइ किमि आजू। सो महिपाल बतावहु काजू॥
तब बोले नृप दोउ करजोरी। सुनहु सुरारि विनती मोरी॥
हमसे व्यास कह्यो अस बाता। तुम नृप अगणित गोत्रनिपाता॥
कोटिन यज्ञ करहु जो, नाहिं कटहु सन्ताप।
दान अनेकन देहु नृप, यह हत्या नहिं जाय॥

सो यदुनाथ कहो समुझाई। जेहि विधि हम भव पारे जाई॥
तब बोले श्रीयदुकुल नाथा। कर्म अकर्म सबै विधि हाथा॥
एक बात समुझावहुँ तोहीं। जस स्वरूप समुझि परतहै मोहीं॥
आयो कलियुग महाअनीती। अब न कोय निज इन्द्रियजीती॥
ब्राह्मण नहिं करिहैं शुभकाजा। सजिहैं शूद्र तपस्या साजा॥
दाया धर्म रहित ह्वै जाई। साधु निरादर जहँ चलिजाई॥
कलियुग तीरथ रहे छपाई। विरला कोउ तीर्थका जाई॥
कलियुग गौवैं दूध न देहैं। कन्या बेंचि सकल धन लेहैं॥
दाया रहित सकल संसारा। कोउ न आतम करहि विचारा॥
मेघवृष्टि करिहैं अतिथोरा। मण्डल खण्ड वृष्टि चहुँ ओरा॥
राजा प्रजा त्रासि धन लेहैं। बोइ किसान अंश नहिं देहैं॥

करिहैं राज्य मलिच्छ सब, चलो सब विधि हीन।
धर्महीन ह्वै जाइहैं, तेहिते ह्वैहैं चीन॥

कन्या द्वादश वर्ष प्रसूता। षोड़श वर्ष जाइ है पूता॥
अर्थ लागि नर धर्महि करहीं। विना अर्थ नहिं दाया धरहीं॥
कलियुगकर्म विविध परकारा। वर्णत होइहै ग्रन्थ अपारा॥
सो संक्षेप कह्यौं समुझाई। आगिल चरित सुनहु मनलाई॥
श्रीकृष्णहि जब कह्यो बुझाई। तब राजाके विस्मय आई॥
विविध भांति मन कीन्ह विचारा। अब नाहीं होई निस्तारा॥
कृष्णकहँ करि परनामा। चढ़ि रथ चलत भयो निजधाम

आयो तहँवां पांचो भ्राता। जहँवां रहै कुन्तिमा माता॥
पुत्रन देखि कुन्तिमा कहई। काहे वदन सूख तव अहई॥
कहा नृपति माता सुनहु, कलियुग भा विस्तार।
सवत्तसिह श्रीकृष्ण प्रभु, भाष्यो सबै विचार॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

कहा नृपति मातहि समुझाई। उत्तर पन्थ जाब सब भाई॥
सुनत कुन्तिमा नृपके वचना। हृदय शोच भरि आये नयना॥
केहि कारण मम पुत्र विछोहू। यह मन समुझि भयो अतिमोहू
फिरि धीरज धरि कह्यो विचारी। सुनहु पुत्र यह बात हमारी॥
भूमिहेतु तुम भारत कीन्हा। रणमहँ लोह गुरुनसन लीन्हा॥
दुर्योधनकै सेन सँहारी। गुरु औ बन्धु गोत सब मारी॥
मारेउ कर्ण दुशासन वीरा। विश्वकर्मन हत्यो रणधीरा॥
भीष्मचार्य धर्मध्वज मारेउ। अश्वत्थामा बन्धु सँहारेउ॥
वीर कलिङ्ग जौन धनुधारी। कुंवर लक्ष्मण हत्यो प्रचारी॥
विविधभांति संग्राम करि, जीतेउ वीर अनेक।
पाइ एकछत्र राज्य तब, रह्यो भीमकी टेक॥
सुनि माता के वचन विनीता। तब नृप बोल्यो गिरा पुनीता॥
सुनु माता अब कलियुग माहीं। राज्य करै कर पौरुष नाहीं॥
कोउ काहि भ्राताशिर धरिहौं। उत्तरपन्थ गमन अब करिहौं॥

राज्य परीक्षित देहु सुहाई । करिहै मातु तोरि सेवकाई ॥
यह सुनि भीम परीक्षित नाये । बोले नृपसन वचन सोहाये ॥
तुम बिन नाथ मोहिं सुखनाहीं । बन्धुहीन नहिं राज्य सोहाहीं ॥
तव नृप पुत्रहि हृदय लगावा । धीरजदीन बहुत समुझावा ॥
सत्य वचन सुतकह्यो विचारी । चलौ धर्म सदा अनुसारी ॥
दाया राख्यो मन करि धीरा । पाल्यो प्रजा सदा तुम वीरा ॥

दाया राख्यो हृदयमहँ, कहेउ सो किहेउ प्रमान ॥
राजधर्म लक्षण कहे, ऐसे वेद बखान ॥

भीमसेनसों कह्यो भुवारा । वेगिकरौ अभिषेक विचारा ॥
अगणित स्यन्दनतुरत सजाये । औषधिमूल फूल सबलाये ॥
दूतन बोलि तुरत जल मांगा । साजे वेगि अनेकन नागा ॥
विविध भांति बाजन बजवाये । व्यास आदि सबऋषै बोलाये ॥
विप्रन कीन्ह वेद उच्चारा । जयजयशब्दभयो अनुसारा ॥
महादिव्य सिंहासन आवा । मणिनजटितबहुभांति सोहावा ॥
व्यासदेवकी आज्ञा पाई । राज्य परीक्षितको बैठाई ॥
व्यासदेव तव तिलक करावा । सब भूपन आ माथ नवावा ॥
पौतहि राज्यभूप जब दीन्हा । सबहिन विविधनिछावरिकीन्हा ।
तबहिं नृपतिमातहि शिरनाई । पांचौ भाइ चले हर्षाई ॥
गङ्गातीर तुरत नृप आये । मणि मुक्ता बहुभांति लुटाये ॥

बोले विप्र अनेक विधि, दीन्ह दान बहुभांति ।
स्यन्दन हय गज बसन मणि, वर्णत वरणि न ज़ाति ॥

वायु वेग साज्यो रथ पावन । ऊंचध्वजा अति परम सुहावन ॥
सहित द्रौपदी पांचो भाई । तिहिपरन्टपतिव्यचो हर्षाई ॥
उत्तर मुख तुरतहि रथ भयऊ । नगरलोग व्याकुलह्वै गयऊ ॥
रोवहिं पशु पच्छी सब नाना । महा वियोग न जाइ बखाना ॥
अब केहिके शरणागतरहिहैं । होइहि तास भागिकह जहिहैं ॥
तब सबहिन समुझाय नरेशा । कहि सब कलियुगको उपदेशा ॥
धर्मराय सबकहँ समुझावा । उत्तर दिशहि विमान चलावा ॥
ब्रह्मचर्य व्रतयुक्त सुहाये । हरिद्वार के ढिग न्टप आये ॥
को छबि हरिद्वारकी कहई । दर्शन करत महाअघ दहई ॥
घाट सोहावन रत्न जड़ाये । जहं बहु देव रहैं नित छाये ॥

हरि चरणन दर्शन करो, ब्रह्मकुण्ड अस्नान ।
शिरीकृष्णपद सुमिरितब, न्टप फिरि कीन्हपयान ॥

हरिद्वार उत्तर चलि आये । वीरभद्रके दर्शन पाये ॥
करि दर्शन न्टप आगे गयऊ । तपकानन प्रमुदितमनभयऊ ॥
त्रिविध मुनिनके धाम सुहाये । भूपति देखि महासुख पाये ॥
भरत दरश कीन्ह्यो हरषाई । लक्ष्मणचरण विलोकी नाई ॥
करिपददक्षिण सुमिरि मुरारी । सुरप्रयाग देख्यो भयहारी ॥
फिरि न्टपति तहँवां चलि आये । शिव आश्रमजहँवेदन गाये ॥
शङ्कर दरश हेतु मन ठाना । सो गिरिनाथ हेतु मन जाना ॥
छिपे शंभु महिमा उरमाहीं । ढूंढन लगे तिन्हहि हरनाहीं ॥
कह न्टप सुनहुबचन मम ताता । कहँगे शंभु कहौ मो त्राता ॥

कह सहदेव विचार करि, सुनहु भूमिपति बात।
यहैजानि छपि रहे शिव, हम कीन्हे कुलघात॥
सुन्यो भीम महिषासुर जबहीं। क्रोध कीन्ह वायूसुत तबहीं॥
जो महिषा उर छिपै महेशू। तौ तुम सुनहु मोर उपदेशू॥
मम चरणनके बीच निकारी। तब दर्शन देहैं कामारी॥
भूप कह्यो सुनु भीम कुमारा। क्रोधकिये नहिं काज हमारा॥
शङ्कर दीनबन्धु जगदीशा। सरनरमुनिसबनावहिंशीशा॥
धर्मराय तब अस्तुति ठाना। पांचौ भाइन यह मत माना॥
जय जय शङ्कर जन भय हारी। दीनबन्धु भयहरण पुरारी॥
जय शिवशङ्कर शरण भयहरण व्यापक रूप अनूपा।
पाणित्रिशूल दरिद्र दवन प्रभु कृपासिन्धु सुररूपा॥
सुरमुनिपालक खलकुलघालक जय कृपाल वृषकेतू।
जय त्रिपुरारी प्रभु कामारी जासु नाम भवसेतू॥
अङ्गविभूति अभूषण सोहैं लख सुरन रमुनिमोहैं।
कण्ठे शेष गरलकृत भक्षण गङ्गजटा शिर सोहैं॥
हमहिं कृतारथ करनहेतु अब दरशन देहु कृपाला।
सबलसिंह पुनि पुनि नृप विनवै जय जय दीनदयाला॥
जयशिवसबलायक सबजगनायक गञ्जन विपतिसमूहा॥
गुणऔगाह थाह नहिं पावत गावत सब सुर यूहा॥
यहि विधि विनती कीन्ह, धर्मराज करजोरि तहँ।
तबहर दरशन दीन्ह, तब केदारपति परशि नृप॥

परशि केदार भुवाल, विनयकरत महिभाल धरि।
जय जय शंभु कृपाल, प्रभुमोहि पार लगाइये ॥
नमामि ईश ईश्वरं। सुपाहि मे प्रमेश्वरं ॥
नमामि आशुतोषणं। समस्त लोकपोषणं ॥
अनेक रूपधारणं। विभञ्जलोक कारणं ॥
गिरीश रूप आगरं। त्रिलोकमें उजागरं ॥
कृपाल माल शोभितं। शरण शरण शरण नितं ॥
नमामि गङ्ग धारणं। अनेक भय निवारणं ॥
सव्यापकं विभुं प्रभो। गुणाकरं कृपाल भो ॥
दयालु दीन नायकं। सुसन्त सुःखदायकं ॥
कराल काल भक्षकं। स्वभक्त दीन रक्षकं ॥
हिमेशपुत्रि नायकं। सुसर्व सिद्धि दायकं ॥
निरंकार रूप नाथ। अथचारि प्रभो हाथ ॥
शैलनाथ शिवनाथ। नागेश्वर रामनाथ ॥
शीशगङ्ग चन्द्रभाल। कण्ठमाहि नागमाल ॥
दरश दियोजानिदीन। मैं तौ सबज्ञ हीन ॥
बार बार हाथ जोरि। राखो अभिलाष मोरि ॥
बार बार विनती करी, भूप दखवन कीन्ह ॥
मन वांछित वर पायो, शंभु आशिषहि दीन्ह ॥
पौं भाइ बहुरि शिरनाई। आगेकहँ रथ दीन चलाई ॥
लै नद्भिकारमको ताई। आगेति पदन नाकम जाई ॥

शैलावत पर्वत पर आयो । महा ऊँच नहिं मारग पायो ॥
ताहि तोरि तहँ पवनकुमारा । रजकर शृङ्ग तोरि महिडारा ॥
निर्मल पन्थ कीन्ह बलवाना । आगे चलत भक्तभगवाना ॥
विष्णवती गिरि देख्यो जाई । मारग तहां भीम नहिं पाई ॥
बायें हाथ तोरि तिहिं दयऊ । तहां पन्थअति निर्म्मल भयऊ ।
तिहिपर चढ़िगै पांचौ भाई । शिखर विमानवती नियराई ।
तहां एक अति दैत्य प्रचण्डा । आगे आइ मिला बरबण्डा ॥
देखि नृपहिं अतिहर्षितभयऊ । वचनक्रोधअतिशीतलकहेऊ ॥
सफल जन्म मम भयो भुवारा ।शत्रु दरशमोहिंमिलेउतुम्हारा ॥
सज्जन शत्रु आजु गृह आवा । मिटा कोटिदुख दरुण दावा ॥

आजु जन्म मम सफल भा, सज्जन रिपु गृह पाइ ।
देहुयुद्ध धर्मराजमोहिं, कहै लाग गोहराइ ॥

कहा भूप सुनु निशिचर राजा । मैं छांड्यो सब लौकिक काजा
ब्रह्मचर्य हम पाचौ भाई । व्रतसुयुक्त नहिं युद्ध सोहाई ॥
अस्त्र सकल अर्ज्जुन धरिदीन्हे । अगमपन्थमहँ काहु न लीन्हे ॥
शङ्कर दरश कीन्ह हम जबहीं । भीमहु गदा दीन्ह धरि तबहीं ॥
पण्डित है भाई सहदेऊ । नकुल न जान युद्ध कर भेऊ ॥
यहिमा लरनहार नहिं कोई । हमसों युद्ध कबहुँ नहिं होई ॥
यह सुनि मेघनाद असकहई । विना युद्ध नहिं देबै जाई ॥
देहु युद्ध मोहिं नृप रणधीरा । पुनि पुनि कहै निशाचर वीरा ॥
सुनिकै भीम क्रोधभरि आयो । धर्म्मरायसों वचन सुनायो ॥

आज्ञादेहु नृपाल मोहिं, निशिचर हतौं प्रचारि ।
भूपति कहेउ भीमसेन, राखहु क्रोध सँभारि ॥
कहा पन्थ कहँ जो कोउ रहई । तजै क्रोध शास्त्रौ अस कहई ॥
हरि जन कहँ रिस कबहुँ न आवै । द्वादश षष्ठ पुराणे गावै ॥
दैत्य नृपतिकहँ बहुत प्रचारा । नहिं आवा कछु हृदय रुँमारा ॥
मेघनाद तब गर्जत भयऊ । जनु घनघोर महाध्वनि ठयऊ ॥
प्रलय समान ठोंकि भुजदण्डा । कीन्हेसि नाद महापरचण्डा ॥
झपटि द्रौपदीको लै गयऊ । भीमहृदयअतिविस्मयभयऊ ॥
कहा भूप सन पवनकुमारा । नाथ भयो अपमानहमारा ॥
पाञ्चाली को दैत्य अब, लै गा अपने धाम ।
धिकधिक जीवन जन्म मम, जो न कीन संग्राम ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

असकहिभीम क्रोधभरि आयो । मानहुँ सोवत सिंह जगायो ॥
ताल ठोंकि पर्वत लै धायो । जहँवा असुरधाम तहँ आयो ॥
कोटिन दैत्य महा बरियारा । धावै गर्जन विविधप्रकारा ॥
शिखरप्रहार भीम तब कीन्हा । मानहु वज्रघातकरि दीन्हा ॥
पवननतय अतिभुजबलजोरा । महन निशाचर गर्हिगरफोरा ॥
मेघनाद कहँ भूमि पछारी । हाहाकार भयो अतिभारी ॥
मारिनिशाचर तपसिन कीन्हा । तबहि द्रौपदी आनिप्रदीन्हा ।

धन्य पवननन्दन बलवाना। अपनि प्रतिज्ञा कियो प्रमाना॥
धन्य महाबल अतिभुजजोरा। राख्यो भीमसत्य तुममोरा॥

धन्य धन्य पाण्डव सुवन, द्रुपदी कौन बखान।
पांचौ भाइन सुमिरि हरि, पुनि फिरि कौन पयान॥

वशम्पायन कहि समुझाई। सुनु जन्मेजय नृप मन लाई॥
कथापुनीत सुनत दुखभागे। पांचौभाइ चले पुनि आगे॥
यूप कूप आगे शत वीरा। देखत कोप भीम रणधीरा॥
कहा कूपै सुनु पाण्डुकुमारा। सुनहु नाथ अब कहा हमारा॥
क्रोध ढील अरु पन्थ सुहाये। हमहूं दरश तुम्हारे पाये॥
अशुभवचन कूप जब कहेऊ। सुनतभीम तबशीतलभयऊ॥
आगे चले युधिष्ठिर राजा। बेनवती देखिनि नृपसाजा॥
देवसुता तब आगे आई। दोउ करजोरि कहा शिरनाई॥
धन्य धर्मध्वज राजकुमारा। अबकछुसिखवनसुनहुहमारा॥
उत्तर पन्थ नाथ दुख भारी। महाशिखर आगे भयकारी॥

इहवां रहहु नरेशतुम, करहु विविधविधि भोग।
सुरपुरते अति सरिससुख, छूटै जक्त वियोग॥

कहेउ भूप सुनु कन्या वानी। वेद चारि अस कहैं बखानी॥
राजप्सरा लोक तिन त्यागा। हरिचरणनतिनकर मन लागा॥
तिन सम धन्य और नहिं कोई। हरिहि पियार सदा वै सोई॥
अन्त समय केवल पद पावैं। फिरि यहि जगत बहुरि नहिं आवैं

मैं निजपुर त्यागो अस जानी । कहत भयो नृप अति मृदुबानी ॥
बेनवती समुझाय भुवाला । बहुरि सुमिरि निज इष्ट गोपाला ॥
धरा शिखर ऊपर चढ़ि आये । महागहन नहिं मारग पाये ॥
भीम हृदय तब कीन्ह विचारा । धरा शिखर अति ऊँच अपारा ॥
सब पर्वतते अति विस्तारा । ताके शृङ्ग तोरि महि डारा ॥

धरा पर्वतन तोरिकै, कीन्हीं पन्थ पुनीत ।
हरिहर सुमिरत बन्धु सब, आगे चले विनीत ॥

भद्रकालि कन्या तहँ रहेऊ । देखि पाण्डवन मोहित भयऊ ।
आगे आइ नृपति शिर नाई । मृदुलवचन अति कह्यो सोहाई ॥
धन्य देव राजन शार्दूला । सत्यवादि शुभ सुकृती मूला ॥
विविध विलास महा अस्थाना । करहु भोग नृप परम सुजाना ॥
देवनकन्या परम सुहाई । सो तुम्हारि करिहैं सेवकाई ॥
इन्द्रपुरी सुख सरिस सुहाये । सो पैहौ नृप नित मन भाये ॥
करहु विलास त्याग निज हेतू । रहौ नाथ सब बन्धु समेतू ॥
इतर पन्थ गहन बहुतेरे । तहँवां पन्थ न पैहौ हेरे ॥
देइ सुतन तब रूप देखावा । देखि भूपके नहिं मन भावा ॥

भद्रकालिसों धर्मसुत, बहु विधि कहेउ बुझाइ ।
इन्द्रपुरीसों सरस सुख, जो मैं चलिहउँ बिहाइ ॥

हम जाइब श्रीपतिके धामा । हमको नहीं भोगन कामा ॥
भद्रकालि समुझाइ नरेशा । आगे चलेउ अगम जहँ देशा ॥
शिखर अनन्त महा विस्तारा । [illegible] सो ऊँच अपारा ॥

चढउ युधिष्ठिर पाँचौ भाई। सङ्ग द्रौपदी पन्थ न पाई॥
आगे भीम पन्थ तहँ कीन्हा। गिरिके शृङ्ग तोरि तव दीन्हा॥
नांघि अनन्त शिलापर गयऊ। वद्रीपतिकहँ देखत भयऊ॥
दूरिहिं ते प्रदक्षिणा कीन्हा। ठाकुरके दर्शन नहिं कीन्हा॥
अस्तुति कीन्ह नृपति हर्षाई। जय कृपालु सन्तन सुखदाई॥
जय जय भवतारण असुर संहारण जयति चक्रवरधरस्वामी।
महिभार विभञ्जन सुरमुनि रञ्जन जय कृपालु अन्तर्यामी॥
जय गदापद्मधर आनन्द निधि हर जासुचरणसे श्रीगङ्गा।
प्रगटी संसारा जगविस्तारा कीन्हे पाप सकल भङ्गा॥
जय दुष्ट निकन्दन जय जगवन्दन तुम भस्मासुर भस्मकरी।
प्रह्लादउवारे असुर विदारे रूपधार नरसिंहहरी॥
प्रभु तुम सवलायक रिधिसिधिदायक जिनकरमनरतपदकञ्जा।
सुमिरै निशिवासर हरि हरि हर हर मदमायाके दलभञ्जा॥
मधुकटभमारेउ महिविस्तारेउ खरदूषणके बल भञ्जा॥
वन मच्छ कच्छनर वामन वपुधर सुरसन्तनको दुखगंजा॥
सकल चराचर रूप तुम्हारा तुमही प्रभु यह जग विस्तार
कोई न पावै पारा।
निगमागम निशि वासर गावै शेष शारदा शङ्कर ध्या
वीते कल्प हजारा॥
गुण अवगाह थाह नहिं पावै अपनी मतिभरि सहि नहि ग
को कवि करै वखाना।

ाहि पर नाथ दयाकर हेरेउ तेहि को मतिको मोह न घेरेउ
सो चरणन लिपटाना ॥
बार बार करजोरि धर्मसुत सहित द्रौपदी और अनुजयुत,
अस्तुति करत सुजाना।
ानवांछित फलसो दीन्हेउ मोहि जय कृपालुप्रभु मैं यांचेतोहि
यह वर मन अनुमाना ॥
भिर नृपबन्धु सहित गये तहंवां ऋषिय समूह बिराजै जहंवां
कीन्हेउ दण्ड प्रणामा।
लोमशादि मुनि सकल बिराजैं निज निज वेहिन ऊपर राज
तेज ज्ञानके धामा ॥

गौतम औ जमदग्नि मुनि, भरद्वाज सुखधाम ॥
भृङ्गीऋषि श्रृङ्गीऋषी, जिन जाने हरिनाम ॥

ारस उद्दालक मुनि ज्ञानी। औ कौण्डिन्य महा सज्ञानी ॥
ोमाऋषै गर्गऋषि तहँवां। मार्कण्डेय सहित हैं जहँवां ॥
ुरगुरु कपिल देव तहँ आजा। विश्वामित्र करहिं तपसाजा ॥
ूर्यवंशके गुरु तहँ देखे। राजै धर्म धन्य करि लेखे ॥
ामादिक अरु ऋषयवशिष्टा। ये सब बैठे सकल सरिष्ठा ॥
ाल्मीकि सम ऋषी अनेका। ऋषिदल भज जे परमविवेका ॥
ृगुनायक अरु भारद्वादी। और सकल परमारथवादी ॥
ब्बीमुनि तहँ ज्ञान निधाना। कुम्भज आदि सकल सज्ञाना ॥
ारमहंस देखत मन मोहे। मानहुँ वेद धरे तनु सोहे ॥

सनक सनन्दन सनतकुमारा। शौनकादि नारदहि निहारा॥
जान्यो सफल जन्म मम होई। ऋषि समूह जब देख्यो सोई॥
सब कहँ कीन्ह्यो दण्डवत, धन्यजन्म निज जानि॥
सबलसिंह नृप बन्धु युत, चरण परेउ तब आनि॥
तब ऋषि बोले गिरा सुहाई। आशिष दीन्ह नृपहिं बैठाई॥
नारदऋषि बोले तब बानी। सुनहु धर्मनन्दन विज्ञानी॥
करतेउ राज सकलसुखनाना। अबहीं काहेक कियो पयाना॥
वैतरणी अति दूरि भुवाला। मारग अगम बसै बहुकाला॥
तहँको पहुँचब कठिन नरेशा। काहेक तज्योरुचिर अति देशा।
हस्तिनपुरी महासुख सोहै। जेहिके देखत सुरगण मोहै॥
सुनि नारदके वचन सुहाये। भूप जोरिकर वचन सुनाये॥
मोरि भाग्य अति बल ऋषिराई। जो तवचरण विलोक्यों आई।
नृपकर जोरि मुनिनके आगे। अस्तुति करन लगे अनुरागे॥
नमामि सिद्धि दायकं। मुनीश सन्त नायकं॥
त्रिवेद रूप आगरं। सुब्रह्मपुत्रनागरं॥
सर्वज्ञ नाथ ब्रह्ममय। नमो नमः कृपाल जय॥
सुब्रह्म विष्णु शंभुरूप। अग्नि सूर्य चन्द्ररूप॥
सनाथ नाथ वेदरूप। हरो कलह कलाप कूप॥
नमामि विश्वलोचनं। नमामि पाप मोचनं॥
दियो सदर्श आयकै। लियो हृदय लगायकै॥
कृपा करो कृपा करो। दयानिधान भय हरो॥

अहो भाग्य अवगाह, देख्यों चरण मुनीश तव।
छुटिगै कोटिन दाह, सबलसिंह नृप कहेउ अस॥

सुनहु ऋषय कह बहुरि नरेशू। जेहि कारण मैं छोड़ेउँ देशू॥
आयो कलियुग महा प्रचण्डा। अब सबके उर बस पाखण्डा॥
नीति विचार करै नहिं कोई। विविध अनीति जगतमें होई॥
नारदऋषि तब बोले वयना। सुनहु महीप सकलगुण अयना॥
भल कीन्हेउ तुम यह मत ठाना। जो उत्तरपथ कियो पयाना॥
नारद कहन लगे विज्ञाना। सुनहु महीप हृदय धरिध्याना॥
यहि तनु अमितअनीतिहिरहहीं। अपनीवृद्धिसकल वे चहहीं॥
अस्थि मांस नारी त्वच जोरा। काम क्रोध तिहि मा बरजोरा॥
माया मोह साज भय सङ्गा। इनके विविध प्रकार तरङ्गा॥
॥रजो तमो औ सतगुण आवै। इन सबजीव विविधविधि भावै॥

ये सब करहिं कर्म वश, जीव कहै हम कीन्ह।
नारद भाषत ज्ञान यह, तेहिते इनमहँ लीन्ह॥

चिन्ता हर्ष बसै तनु माहीं। बहु विधि नींद वश्य ह्वै जाहीं॥
प्राकृत कर्म जीव कहँ लागै। होइ सुखी जो इनकहँ त्यागै॥
कर्म अकर्म उभय जग करई। तेहिते देह अनेकन धरई॥
इन्द्रिय स्वाद भूलि जग माहीं। हरिशरणागत आवत नाहीं॥
दश इन्द्रिनके दशै विचारा। वे निशि वासर चलै अपारा॥
नैनन रूप रूप वश करई। देखेको इच्छा बहु धरई॥

श्रवणन शून्य सुनै कछुजवहीं । जीवहि आदु करै वश तबा
जिह्वा पर रस रसको चाहै । नासा गन्ध गन्ध वश राहै ॥
त्वचा वसत अस्पर्श सोहाई । शीत तपनि दुखसुखहि बता
औरो इन्द्रिनके अति स्वादा । सोवै चहैं गयर मर्य्यादा ॥
औरो चारि अवस्था गाढ़ी । तिन बहु भांति जीवकहँ दाढ़ी
वालक होय युवा ह्वै जाई । वृद्ध होय तनु जाय पराई ॥
योनि लच चौरासी जोई । कर्म निबन्ध करै जिय सोई ॥
यहिप्रकार जिय हरिकहँ भजई । रहत अधीन सङ्ग कस तजई ॥
तीनि अवस्था वेद बखाना । जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति जाना ॥
पांच पचीस तत्त्व वलवाना । इन सँग जीव भयो अज्ञाना ॥
शोधि मनै नहिं ध्यावै पावै । इनते गांसि नादपर लावै ॥
त्रिकुटी संयम चढ़ै गगनमा । सुरति बांधि देखो निजतनमा ॥
पांचौ शब्द होयँ झनकारा । सोइ साहब त्रिभुवनते न्यारा ॥

प्राकृत सङ्ग छोड़ाइ, मनकहँ गांसि विचारि करि ॥
हरिपद सुरति लगाइ, फिरि न परै भ्रमजाल नर ॥
समदरशी ह्वै जाइ, एकरूप सब जगत लखि ॥
कहु नारद समुझाइ, सबलसिंह भव तरै सोइ ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

जब नारद राजहि समुझावा । तत्त्व ज्ञानको भेद बतावा ॥
प बहुरि हर्षि शिरनाये । सहित द्रौपदी पन्थ सिधाये ॥

आबू शिखर गये सब भाई । तहँवां दैत्य मिले समुदाई ॥
कोटिन निशिचर यूथ घनेरे । राजहिं आइ पन्थमहँ घेरे ॥
मांगहिं युद्ध गर्जि घनघोरा । प्रलयकाल रव भै चहुँ ओरा ॥
ह्वै गयंद हय रूप देखावैं । ह्वै के हरि कहुँ गर्जत आवैं ॥
घात रूप भयङ्कर देखी । नृपति भीमसों कहेउ विशेखी ॥
ध न कीन्हेउ पवनकुमारा । अब मन सुमिरहु जक्तउदारा ॥

वासुदेव भगवान प्रभु, हरि कृष्ण गोपाल ॥
गोपीपति गोविन्द कहि, आगे चलेउ भुवाल ॥

तहँवां शीत प्रबल अति भयऊ । तुरत द्रौपदी तनु गलि गयऊ ॥
पंचाली तनु तजि अनयासा । जाइ कीन्ह वैकुण्ठ निवासा ॥
देखि भीम अति शोचबढ़ावा । दोनों नयन नीर भरिआवा ॥
हा देवी तुम तनु तजि दीन्हा । तुम सम वर्त्त न काहू कीन्हा ॥
जस रोहिणी चन्द्रमहिं जाना । जस रुक्मिणी कृष्णकहँ माना ॥
तस अर्ज्जुनकहँ मानेहु देवी । निशिदिन चरण नृपति केसेवी ॥
तव व्रत राखा कृष्ण मुरारी । उभय सभामहँ होत उघारी ॥
भीमहिं बाढ़ा शोच अपारा । तब समुझायो धर्म्मकुमारा ॥
भीमसेन तुम तजहु कलेशू । निगमागमकर अस उपदेशू ॥
भारत भयो द्रौपदी हेतू । जूझि गये सब गुरुन समेतू ॥
तेहिकारण तनुगत ह्वै गयऊ । धरहुधीर राजहिं असकहेऊ ॥
ज्ञान मिटै उर करत अँदेशा । धर्मसुवन बहुविधि उपदेशा ॥

जनअर्दन यदुनाथ कहि, शिरीकृष्ण कुलकेतु ॥
आगे बढ़ेउ नरेश तब, पांचौ भाइ समेतु ॥
कछुक दूरि आगे जब गयऊ। कञ्चनपुरी विलोकत भयऊ॥
रत्नखम्भ सब जड़ित सोहाये। कञ्चनके कपाट बहु लाये॥
देवन कला विविध परकारा। जिनके रूप न कोउ संसारा॥
रति रम्भा उर्वशी लजाहीं। और तियाको लेखे माहीं॥
शिव हरि शक्ति गने को भाई। जगतमातु उपमा किमि लाई॥
रूप राशि कन्या सब धाई। धर्मतनय सौं कह्यो बुझाई॥
अहहु भूप तुम शीलनिधाना। राज्य करौ हमरे अस्थाना॥
विविध भांति सुखकरहु नरेशा। देव सुतनकर अस उपदेशा॥
पांचो भाइ रहौ सब जानी। बोलीं सकल वचन रससानी।
तव राजैं सब वचन सुनाये। हम तौ राजभोग तजिआये॥
श्रीपति पुरुषहि इच्छा जागी। तब हमचलेसकलसुखत्यागी॥
राज विषयरस भोग हैं, मैं त्यागेउँ अस जानि॥
श्रीकृष्णक पदपङ्कज, मति लागे भयहानि॥
असकहि भूपचलतपुनिभयऊ। नाम अनङ्ग शिलापर गयऊ॥
शीत प्रवल कछु वरणिन जाई। सहदेव तनुतहँ गयो बिलाई॥
कीन्ह भीमतहं अति अपघाता। बुद्धिवन्त नहिं देखिय ताता॥
कह्यो भीम भा वन्धु विछोहू। यह सुनि नृपहि भयो अतिकोहू॥
ज्योतिष सकल विशारदभाई। सकलशास्त्रमतिवरणि नजाई॥

वेद निधान सकल गुण भूरे । चलौ धर्म अस्त्रके पूरे ॥
अहहबन्धु गत भे केहि पापा । सुमिरि भीम अति कीन्ह विलाप
राय युधिष्ठिर तब समुझाये । कूर्मशिला ऊपर चढ़ि आये ॥
अतिघनघोर शिलातवकीन्हा । नकुलहि आयतोपितेहिलीन्हा ॥
कीन्ह कोलाहल तेहिभयकारी । अतिप्रज्वलितशीतल्योंडारी ॥
तहंवां नकुल देह गलिगयऊ । पवन तनयके अति दुखभयऊ ॥

रूपराशि मम बन्धु दोउ, सकलगुणनकी खानि ॥
रोवहिं अर्ज्जुन भीम सब, बल औ शील बखानि ॥

नृपति ससेत चणककरि शोचू । आगेचल्यो छांड़ि सब शोचू ॥
नाम गोमती शिला पुनीता । तेहिपरप्रबल अमित अतिशीता ॥
गर्जि धनञ्जय कहं लै लीन्हा । गजपुरनाथ शोच तब कीन्हा ॥
अहह बन्धु तुम यज्ञ कराई । घोड़ा लायहु भूमि फिराई ॥
तुम्हरे बल विप्रनकहं दाना । दीन्हयों मैं जो मो मनमाना ॥
महा धनञ्जय कृष्ण पियारे । तुम राजनके गर्व प्रहारे ॥
तुव भुजबल सुरनाथ गयंदा । पूजि कूजि मैं कीन्ह अनंदा ॥
तुम विनु दिशाशून्य सब भयऊ । अहह बन्धु कहंवां तुम गयऊ ॥
धृक मम जन्म युधिष्ठिरकहेऊ । जो मम बन्धुनाशहै गयऊ ॥
चणक शोच फिरि शोचविहाई । आगे चलत भये द्वै भाई ॥
वैतरणी जहं नदी सोहाई । तिहि अस्थान गये द्वै भाई ॥

वैतवती जहं शिला वड़, गर्जा प्रलय समान ॥
तिहितर तोपि गयो पुनि, वायुसुत बलवान ॥

नृपति युधिष्ठिर शोच बढ़ावा । श्वानस्वरूप तहां इकआवा ॥
ताहि देखि नृप कहेउ विचारी । अहो श्वान कहं वासतुम्हारी
उत्तर पन्थ स्वर्ग भयकारा । तुम कहुं देख्यहु भीमकुमारा ॥
अर्ज्जुन भीम नकुल सहदेवा । कहो श्वान कछु इनकर भेवा ॥
यह सुनि श्वानकह्योमृदुबानी । सुनहु युधिष्ठिर नृप विज्ञानी ॥
वैतरणी यह नदी पुनीता । कृष्णस्वरूप कहत अस गीता ॥
मज्जन करहु पाप मिटि जाई । फिरि नहिं जगतजन्मनियराई ॥
नरतनु मोह लोभ सँग लागे । माया रजगुण तीनि अभागे ॥
यह नर देह मूत मल झोरी । यहिमा पांच तत्त्व हैं जोरी ॥
कामादिक विष्ठा लपटानी । करु अस्नान नृपति असजानी ॥
यामें मज्जन करै जो कोई । पलटै देह देवतनु होई ॥

श्वान कहेउ समुझाइकै, करहु नृपतिअस्नान ॥
सकल पाप तब छूटही, आवै स्वर्ग विमान ॥

तुरत नृपतिमज्जनतबकियऊ । छुटिगा मोह ज्ञानवर भयऊ ॥
भूपश्वानकी अस्तुति कीन्हा। तुम मम पिता ज्ञान मोहिंदीन्हा
माता बन्धु सखा तुम मोरे । यहिविधि नृपति कहत करजोरे ॥
तिहिक्षण आवा विष्णु विमाना । तेजपुञ्ज रवि किरणिसमाना
को शोभा तेहि थानकि कहई । शेष शारदा तेउ ठगि रहई ॥
मुक्तनके गुच्छा चहुँ ओरा । मणिनसिंहासन तिहिपर जोरा ॥
महा पुनीत रत्नमय सोहा । जाने धर्मसुवन जिन जोहा ॥
ववधि सुगन्ध लपेटिसोहावा । लेकै विष्णु तहँतइ आवा ॥

धर्मतनयसन कहेसि बुझाई। चढ़हु विमान नाथ अबआई॥
चढ़िबैकुण्ठहि चलो भुवाला। तहँभोगहुसुख विविधविशाला॥
सकल देव जहँ श्रीभगवाना। मुनिजनतहां वसतहैं नाना॥
विविधतपस्याजिनमहिकीन्हा। तिनहिंनिवासतहांविधिदीन्हा

विष्णु दूतके वचनसुनि, कहा न्टपति करजोरि॥
श्वान चढ़ावो यानपर, प्रभु विनती सुनि मोरि॥

विना श्वान नहिंचढ़ौं विमाना। नहिं वैकुण्ठ करौं प्रस्थाना॥
न्टपवाणी सुनि सूर्यकुमारा। कह्यो धन्यसुतज्ञानतुम्हारा॥
चढ़हु तात हरिरुचिर विमाना। मैं तव पिता नहीं मैं श्वाना॥
धन्य युधिष्ठिर देवन कहेऊ। सुरतरुसुमनवृष्टि नभ करेऊ॥
धर्मराज सुररूप देखावा। राययुधिष्ठिर पदशिरनावा॥
धन्य जन्म मम भयो सोहावा। पितातुम्हार दरश मैं पावा॥
नेम क्रिया सब सफल हमारे। तात चरण अब देखि तुम्हारे॥
नमोस्तुते कहि बारहिंबारा। हरिविमानपरचढ़ग्रो भुवारा॥
विष्णु विमान बैठि जब राजा। तवहरि गणन अभूषणसाजा।
मुकुट मनोहर शीश बंधावा। पीताम्बरपटआनि ओढ़ावा॥
नवभूषण भुज बांधि बहूटा। कङ्कण आनि हाथमहँ जूटा॥
हरिस्वरूप जस वेदन गाये। विष्णुगणनतस न्टपहिवनाये॥
रुचिरछत्र शिर ऊपर ताना। ढोरत चमर उड़ान विमाना॥

यहि विधि न्टपहि विष्णुगण, क्षणमहं लैगे धाम।
जे छल छांड़ि भजहिं हर, तिनहि देत गति राम॥

हरिगण नृपहि धामलै आये । श्रीनिवासके दर्शन पाये ॥
देखि भूप दोनौं करजोरी । जय दयालु राखहु रुचि मोरी ॥
जय सच्चिदानन्द घनश्यामा । यह सुनि आपु उठे श्रीरामा ॥
श्रीनिवास हृदयमहं लाये । गहि भुज अपने ढिग बैठाये ॥
नृप बैकुण्ठ विराज्यो जाई । वैशम्पायन कथा सुनाई ॥
जनमेजयसुनि अतिसुखपावा । मुनिकहं बहुरिहर्षिशिरनावा ॥
कथा पुनीत सुनत दुखभागा । आगे बहुरिकरहुअनुरागा ॥
मुनिअभिलाषनृपतिकौ जाना । फिरि आगे तब कीन्ह बखाना ॥
हरिपुर नृपति जाइ सुख पाई । तहां विलोक्यो चारिहु भाई ॥
सहित द्रौपदी रूप अनूपा । द्रोणाचार्य सहित सब भूपा ॥
देवरूप तहं भीष्मपितामह । कर्णसहित राजहिहरिधामह ॥
दुर्योधन आदिक बलवाना । जिनजिन भरत युद्ध रणठाना ॥
कुरुक्षेत्र पर जूझे जेते । हरिपुरमध्य विराजहिं तेते ॥
नृप वैराट सहित सुत देखा । औरहु बहुत करैको लेखा ॥
गान्धारी माता तहं देखा । माद्री सहित धरे शुभवेखा ॥
जयद्रथ नृप अहिवरणकुमारा । सबहिनकहं तहं देखि भुवारा ॥

भारत महं जे जूझे, स्वर्ग निवासहि झारि ।
विविधभांति सखपायो, धर्मज सहितनिहारि ॥

पुर बैकुण्ठ पांडवा गयऊ । सुनि जन्मेजय कहं सुखभयऊ ॥
बारम्बार जोरि युग पानी । ऋषिते कह्यो भूप मृदुबानी ॥

आनन शशि तव नाथ पुनीता । अमृतमय यह गिराविनीता ॥
हर्षित हृदयसुनिअतिसुखभयऊ । नाना भांति लाभ मैं लहेऊ ॥
यह तनु कल्प पाण्डवन केरा । सुनि छूटै चौरासी फेरा ॥
व्यासदेव भारतमहं भाखी । यहिके चारि निगम हैं साखी ॥
जो कोउ सुनै कपट करि दूरी । पाइहि सिद्धि सकल सुखभूरी ॥
जो नर याकहँ झूंठ विचारी । होइहि अधम नरक अधिकारी ॥
क्षत्री सुनत समर जय पावे । जो विश्वासमानि यह गावे ॥
ब्राह्मण पढै सुनै छल त्यागी । वेद निधान होय बड़ भागी ॥
जो नर नारि सुनै मन लाई । तेहि कर पापसकलमिटिजाई ॥
अन्तकाल निर्भय हरिलोका । जाइ बसै तजिके यमशोका ॥
काशी प्राग गया अस्नाना । तसफलयहसुनि व्यासबखाना ॥
दान अनेक देइ जो कोई । तस फलहोय सुनै यहसोई ॥

शङ्कर शारद शेष, चारिहु वेद सहस्र षट ।
सबकर अस उपदेश, भजु हरिचरण बिहाय छल ॥
सबलसिंह मतिहीन, व्यास कहत तस कहेउ हम ।
प्रभु तारत जन दीन, सोइ मनकर्म्म भरोस करि ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

स्वर्गारोहण पर्व्व समाप्त ।

इति महाभारत अठारह पर्व्व समाप्त ।